राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—सुनील अरोड़ा I.A.S.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १७६

महाराजा तखतसिंह री ख्यात

सम्पादक

डा० नारायणसिंह भाटी

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९९३ ई०

प्रथमावृत्ति ५००

मूल्य १२२.००

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—सुनील अरोड़ा I.A.S.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १७६

महाराजा तखतसिंह री ख्यात

सम्पादक

डा० नारायणसिंह भाटी

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९९३ ई०

प्रथमावृत्ति ५०० मूल्य १२२.००

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—सुनील अरोड़ा I.A.S.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १७६

महाराजा तखतसिंह री ख्यात

सम्पादक
डा० नारायणसिंह भाटी
निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान,
चौपासनी, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR
१९९३ ई०

प्रथमावृत्ति ५००   मूल्य १२२.००

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिलभारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्गमयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक
सुनील अरोड़ा I.A.S.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १७६

महाराजा तखतसिंह री ख्यात

सम्पादक
डा० नारायणसिंह भाटी
निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान,
चौपासनी, जोधपुर

राजस्थान राज्याज्ञानुसार
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९९३ ई०

अनुक्रमणिका

निदेशकीय

भूतपूर्व जोधपुर रियासत के इतिहास लेखन हेतु 'महकमा तवारीख' द्वारा मारवाड़ से सम्बन्धित समस्त ख्यात, वात, हकीकत, तवारीख, हाल, विगत संज्ञक विशाल ऐतिहासिक सामग्री को एकत्र किया गया था जिसके आधार पर पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने "मारवाड़ का इतिहास" लिखा किन्तु उसमें समस्त सामग्री का ज्यों का त्यों उपयोग करने का अवसर नहीं था। उक्त सामग्री सन् ६०-६१ ही में पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग से प्रतिष्ठान को हस्तान्तरित कर दी गई थी।

प्रस्तुत ख्यात उसी सामग्री में उपलब्ध "महाराजा तखतसिंहजी री ख्यात" को पुरातन ग्रन्थमाला के १७६वें पुष्प के रूप में शोध-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

महाराजा मानसिंह की बणसूर शाखा के चारण भैरूंदान पर विशेष कृपा थी, जिन्हें ताजीम तथा पांव में सोना पहिनने के साथ-साथ ठाकुर की उपाधि प्राप्त थी। ये मारवाड़ के पचपदरा परगना के पारलाऊ गांव के रहने वाले थे। इन्हीं के छोटे पुत्र बणसूर फतैदान को महाराजा तखतसिंह को मोडासा—अैमदनगर से जोधपुर लिवाने के लिये भेजे गये विशिष्ट व्यक्तियों के दल के साथ 'खवास पासवानों' के सीगे के अन्तर्गत भेजा गया था। बणसूर भैरूंदान ही के ज्येष्ठ पुत्र का नाम चैनदान था—इन्हीं के पुत्र का नाम जादूदान अथवा जादूराम था। जादूराम ने ही महाराजा तखतसिंह की ख्यात का संकलन किया जिसकी नकलें करते समय प्रतिलिपिकारों ने "जादूराम की बही" का उल्लेख किया है।

वर्तमान ख्यात को यद्यपि ख्यात नाम से ही लिखा गया है किन्तु इसमें प्रतिदिन की गतिविधियों एवं प्रमुख घटनाओं का तिथिवार लेखन इसे "हकीकत बही" अथवा "रोजनामचा" की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देता है। हकीकत बही में महाराजा की दैनिक दिनचर्या का उल्लेख प्रमुख रूप से होता है और इसी कारण इसमें तत्कालीन सामाजिक एवं आर्थिक दशा तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की चर्चा भी विशेष रूप से उभर कर सामने आती है। विद्वान् सम्पादक ने अपनी भूमिका में इन पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

ख्यात के सम्पादन कार्य हेतु मैं विद्वान् सम्पादक डा० नारायणसिंह भाटी को अपना आभार प्रकट करते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे प्रतिष्ठान को अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान करते रहेंगे।

ख्यात के मुद्रण हेतु भारत प्रिण्टर्स (प्रेस) के व्यवस्थापक भी धन्यवाद के पात्र हैं।

दिनांक 15 जून, 1993 सुनील अरोड़ा

भूमिका

राजस्थान के इतिहास-लेखन में ख्यातों का अपना महत्त्व है। 16वीं शताब्दी के पहले के इतिहास की जानकारी के लिए शिलालेखों, सिक्कों, संस्कृत काव्य-ग्रंथों व फारसी तवारीखों पर निर्भर रहना पड़ता है, वहीं डिंगल का प्राचीन काव्य भी कुछ सहारा देता है, परन्तु 16वीं शताब्दी में आते-आते ख्यात-लेखन की परम्परा का प्रारम्भ हो जाता है और 19वीं शताब्दी तक यह क्रम बराबर चलता है। राजस्थान के जितने भी आधुनिक इतिहासकार हैं उन्होंने ख्यातों से पर्याप्त सहायता ली है। यहाँ तक कि पं० ओझा की पुस्तकों की पाद-टिप्पणियाँ भी ख्यातों के उल्लेख से मुक्त नहीं हैं। इसका कारण यही है कि राजस्थान के राजवंशों की ख्यातें जहाँ प्रारम्भ से लेकर 19वीं शताब्दी तक यहाँ के राजवंशों का व्यवस्थित ब्यौरा प्रस्तुत करती हैं, वहीं उस काल की राजनीतिक घटनाओं के अलावा सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक प्रसंगों पर भी प्रकाश डालती हैं। इसके अतिरिक्त कई ऐसी घटनाओं का उल्लेख भी इन ख्यातों में मिलता है जो अन्य साधनों में उपलब्ध नहीं होता है। इस प्रकार ये ख्यातें अपने आप में इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गई हैं और अब तो इनके महत्त्व को अनेक दृष्टियों से देखा-परखा जाने लगा है।

इन ख्यातों में घटनाओं के संवत् और तिथियों का जहाँ तक प्रश्न है, 15वीं शताब्दी के पहले की ये तिथियां काफी भ्रामक रही हैं, परन्तु उसके बाद अधिकांश तिथियां सही पाई गई हैं। जो कुछ त्रुटियां उनमें अब देखी जाती हैं वे प्राय: लिपिकार की भूल के कारण भी हुई हैं। इन ख्यातों का मुख्य आधार जहाँ उस समय में लिखे जाने वाले रोजनामचे व हकीकत बहियें आदि रही हैं, वहीं चारणों, भाटों और बहुश्रुत लोगों से सुनी हुई बातें भी इनका आधार

रही हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जो भी परम्परागत साधन-स्रोत उस समय उपलब्ध थे उनका उपयोग इन ख्यातकारों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य और सूझबूझ के अनुसार किया है।

जहाँ तक डिंगल काव्य का प्रश्न है वह भी इतिहास का बहुत बड़ा साधन-स्रोत है और उसका सृजन प्रायः समसामयिक ऐतिहासिक घटनाओं और वीर-पुरुषों के क्रिया-कलापों को लेकर किया गया है, इसीलिए उसे साख (साक्षी) की कविता कहा गया है। नैणसी ने अपनी ख्यात में इस प्रकार की कविताओं का न्यूनाधिक प्रयोग कुछ सन्दर्भों में किया है और उसके बाद की ख्यातों में भी ऐसी कविताएं बराबर देखने में आती हैं। दयालदास की ख्यात में उसके लेखक दयालदास सिंढायच ने डिंगल गीतों और अन्य छन्दों का बहुतायत से उपयोग किया है। ये ख्यातें राजस्थान की प्रायः सभी भूतपूर्व रियासतों के संम्बन्ध में छोटे-बड़े रूप में मिलती हैं, परन्तु मारवाड़ से सम्बन्धित ख्यातों की संख्या सर्वाधिक हैं।

भूतपूर्व जोधपुर रियासत के इतिहास के लिए नैणसी की ख्यात में राठौड़ों की वंशावली और विविध बातों के अन्तर्गत जोधपुर रियासत के कुछ शासकों और ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण मिलता है, प͘ ु इस रियासत का इतिहास नैणसी ने 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' के प्रारंम्भ में परगने जोधपुर के अन्तर्गत राव सोहाजी से लेकर जसवन्तसिंह (प्रथम) तक दिया है। इसके अतिरिक्त अन्य छः परगनों के प्रारम्भ में भी ऐतिहासिक विवरण दिया है। इस प्रकार उसने मारवाड़ के इतिहास के बारे में प्रचुर परिमाण में जानकारी प्रस्तुत कर दी है। इसके बाद की ख्यातों में मुरारीदान की ख्यात, मुंदियाड़ की ख्यात, तिंवरी पुरोहितजी की ख्यात, जोधपुर राज्य की ख्यात आदि विशिष्ट ख्यातें हैं। इनमें जोधपुर राज्य की ख्यात काफी विस्तार से लिखी गई है। इसका लेखन-कार्य महाराजा मानसिंह के समय में प्रारम्भ हुआ था और महाराजा तखतसिंह के समय तक बराबर चलता रहा। महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के बाद के शासकों का ब्यौरा जहाँ पहले के शासकों की अपेक्षा अधिक विस्तार के साथ मिलता है वहीं महाराजा मानसिंह और तखतसिंह के सम्बन्ध में पूरी जानकारी इतनी अधिक विस्तार से दी गई है कि इन्होंने स्वतन्त्र ख्यातों का रूप धारण कर लिया।

महाराजा तखतसिंह की ख्यात संवत् 1900 से प्रारम्भ होती है और संवत् 1929 पर समाप्त होती है। इस ख्यात में जहाँ तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं का तिथिक्रम से यथास्थान ब्यौरा दिया गया है वहीं महाराजा की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों और प्रत्येक माह में घटने वाली घटनाओं का उल्लेख भी किया गया है। इस प्रकार यह ख्यात राजनीति, प्रशासन, जागीर-व्यवस्था, अंग्रेजों से सम्बन्ध, अर्थ-व्यवस्था, साहित्य और कलाओं का सृजन, रीति-रिवाज, धर्म और संस्कृति आदि विषयों की जानकारी का एक प्रामाणिक स्रोत है। यहाँ इन बिंदुओं पर कुछ विस्तार से विचार प्रस्तुत करना अपेक्षित होगा।

राजनीति

ख्यात का प्रारम्भ तखतसिंह की गद्दीनशीनी से होता है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि महाराजा मानसिंह के एक मात्र पुत्र युवराज छत्रसिंह की मृत्यु मानसिंह के जीवन-काल में हो गई थी। अतः मानसिंह ने अपने सामन्तों और अंग्रेज सरकार के सामने यह इच्छा व्यक्त की कि उनकी मृत्यु के बाद ईडर से तखतसिंह को उनके गोद लेकर जोधपुर की गद्दी पर बैठाया जाय। अतः संवत् 1900 में जब मानसिंह की मृत्यु हुई तो ईडर से तखतसिंह को बुलाकर गद्दी पर बैठाया गया। इसमें अंग्रेज सरकार की प्रमुख भूमिका रही थी, इसलिए महाराजा तखतसिंह आजीवन अंग्रेजों के वफादार बने रहे। इस ख्यात में इस आशय के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि पहले की अपेक्षा अंग्रेजों का दखल यहां के प्रशासन में बराबर बढ़ता गया। महाराजा मानसिंह ने परिस्थितिवश मजबूर होकर अंग्रेजों से संधि तो कर ली थी, परन्तु वे बराबर सतर्क रहते थे कि उनका प्रभाव राज्य-कार्य में बढ़े नहीं। इसके फलस्वरूप उन्हें अंग्रेजों का कोपभाजन भी बनना पड़ा, परन्तु अब परिस्थितियां बदल गईं। अंग्रेजों के दखल के बढ़ने के दो मुख्य कारण थे। पहला तो यह कि राजस्थान की रियासतों पर अब उनकी पकड़ काफी मजबूत हो गई थी। दूसरा यह कि तखतसिंह मारवाड़ के रहने वाले नहीं थे, अतः यहां के सामन्त उन पर हावी न हों और गद्दी को कोई आंच न आये, इसलिए वे अंग्रेजों को सदा प्रसन्न रखने का प्रयास करते थे।

सन् 1857 के पहले अंग्रेजों की कम्पनी (ईस्ट इण्डिया कम्पनी) सरकार का राज्य था। कम्पनी की ओर से नियुक्त गवर्नर जनरल कलकत्ता में अवस्थित था। उसके नीचे अलग-अलग भागों में गवर्नर नियुक्त थे। राजपूताने की

रियासतों की राजनीतिक गतिविधियों का नियमन एजेन्ट टू गवर्नर जनरल करता था, जिसका कार्यालय आबू में था। उसके अधीन राजपूताने की प्रत्येक रियासत में पॉलिटिकल एजेन्ट नियुक्त थे। महाराजा मानसिंह की जब मृत्यु हुई तो उस समय कैप्टन लडलो यहां पॉलिटिकल एजेन्ट था। रियासतों की राजनीतिक गतिविधियों के साथ पॉलिटिकल एजेन्ट ही सम्बन्ध-सूत्र स्थापित करता था और यहां के प्रशासन पर भी नजर रखता था।

गवर्नर जनरल और शासक

सामान्यत: वाइसराय का सीधा सम्बन्ध शासक से नहीं था, परन्तु यहाँ की रियासतों के बारे में ए. जी. जी. के मार्फत वह आवश्यक निर्देश देता था और साथ ही यहां के महत्त्वपूर्ण मसलों पर निर्णय लेने का अधिकार भी उसे था। यदा-कदा गवर्नर जनरल का दरबार राजस्थान[1] या इसके आस-पड़ौस[2] में होता था तो यहां का शासक भी इस दरबार में अनिवार्य रूप से उपस्थित होता था। राजा की मृत्यु हो जाने पर उसके वारिस को गद्दी पर बैठाने से पूर्व गवर्नर जनरल की स्वीकृति आवश्यक थी। सन् 1857 की क्रान्ति के बाद इस नियम में ढील दे दी गई और यह अधिकार राज-परिवार को दे दिया गया।

ए. जी. जी. (बड़ा साहब) और शासक

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि ए. जी. जी. का सम्बन्ध शासक से पॉलिटिकल एजेन्ट के मार्फत था, परन्तु महत्त्वपूर्ण राजनीतिक निर्णयों का अधिकार ए. जी. जी. को ही था। इसलिए इस ख्यात में मारवाड़ के शासक की राजनीतिक गतिविधियों पर ए. जी. जी. के नियन्त्रण के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी मिलती है। जहां तक औपचारिक सम्बन्धों का प्रश्न है, जोधपुर का शासक आबू ए. जी. जी. से मिलने जाता तो ए. जी. जी. आमों के बगीचे तक शासक को लेने सामने आता।[3] जोधपुर में जब ए. जी. जी. आता तो शासक स्वयं काफी दूर तक सामने जाता और जब शासक ए. जी. जी. के स्थानीय निवास-स्थान पर मिलने जाता तो जोशीजी की बुर्ज तक ए. जी. जी. के दो सेक्रेटरी शासक के सामने उसे लिवा लाने के लिए आते। शासक की वर्षगांठ

---

1. महाराजा तखतसिंह री ख्यात, पृष्ठ 468-69
2. ख्यात, पृष्ठ 376
3. ख्यात, पृष्ठ 183

पर शासक का वकील, जो आबू पर रहता था, वह मेवा तथा फलों की डाली आदि बड़े साहब को भेंट करता था।[1] बड़ा साहब जब भी किसी कार्य से मारवाड़ की सीमा में से गुजरता था तो शासक का बड़ा मुत्सद्दी उसका सम्मान प्रकट करने जाता था।[2]

बड़े साहब का मुख्य कार्य यहां के शासकों की राजनीतिक गतिविधियों के सम्बन्ध में था। जहां तक मारवाड़ का प्रश्न है तखतसिंह के समय में यहां जागीरदारों और शासक के बीच के कई मसले फैसले के लिये उसके पास उपस्थित हुए, जिनका उल्लेख इस ख्यात में किया गया है। असन्तुष्ट जागीरदारों का एक गुट नींबाज ठाकुर की अगुवाई में बड़े साहब के पास आबू गया था।[3] इसी प्रकार आउवा ठाकुर भी अपनी शिकायत लेकर आबू पहुँचे।[4] आबू पर राज्य का स्थायी वकील रहता था जो ऐसे मसलों पर शासक की ओर से पैरवी करता था। मारवाड़ के बड़े ठिकानों के भी स्थायी वकील प्रायः वहां रहते थे, जिससे वहां की गतिविधियों की सूचना जागीरदारों को बराबर मिलती रहे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि उस समय अंग्रेजी जानने वालों की रियासत में बड़ी कद्र थी। एक बार किसी राजनीतिक मसले की पैरवी के लिये अंग्रेजी जानने वाले वकील की आवश्यकता पड़ी तो जोधपुर की जेल में बंदी आसोपा सूरतराम, जो अंग्रेजी का जानकार था, को जेल से मुक्त कर यह काम सौंपने की तजवीज करने का विचार करना पड़ा।[5]

इसके अलावा राजपूताने की रियासतों के आपसी सीमा-विवादों का निपटारा भी बड़ा साहब करता था। उदयपुर वालों ने गोडवाड़ का मसला उठाया था और दावा किया था कि गोडवाड़ पर उदयपुर रियासत का हक है।[6] बड़े साहब को पूर्ण अधिकार था कि वह राज्य से किसी भी प्रकार की जानकारी मंगवा सकता था। ख्यात में उल्लेख है कि उसने एक बार नागौर की हकीकत

---

1. ख्यात, पृष्ठ 101
2. ख्यात, पृष्ठ 60
3. ख्यात, पृष्ठ 128-29
4. ख्यात, पृष्ठ 129
5. ख्यात, पृष्ठ 84-85
6. ख्यात, पृष्ठ 180

मंगवाई थी ।[1] ख्यात में उल्लिखित घटनाओं से पता चलता है कि उस समय ए. जी. जी. एक ओर जहां जागीरदारों को सन्तुष्ट रखने का प्रयास करता था, वहीं दूसरी ओर उन्हें शासक के प्रति वफादार रहने की बात भी कहता था ।[2]

अंग्रेज यह जानते थे कि रियासत के प्रशासन में जागीरदार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इसलिए उनका असन्तोष अधिक बढ़ना खतरनाक है। महाराजा तखतसिंह ने जब बगड़ी जब्त करने के लिए उस पर फौज भेजी तो बगड़ी वालों ने अपने वकील के मार्फत बड़े साहब के सामने उज्र पेश किया । इस पर उसने जोधपुर के वकील को बुलाकर कहा कि महाराजा से कहो कि वे बगड़ी से फौज हटा दें क्योंकि जागीरदार उनके तम्बू रूपी राज्य की खूंटियें हैं । इनके उखड़ने से राज्य कमजोर होगा ।[3]

महाराजा तखतसिंह अंग्रेजों के वफादार थे और सन् 1857 की क्रान्ति में तो उन्होंने अंग्रेजों की अच्छी मदद की थी इसलिए ए. जी. जी. उनसे प्रसन्न था । अत: एक दो अवसरों को छोड़कर बाकी अवसरों में फैसले शासक के हक में हुए । ए. जी. जी. रियासतों के शासकों के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता था, परन्तु कुछ ऐसे दिलचस्प प्रसंग भी इस ख्यात में आये हैं जब उसे ऐसे मामलों में भी हस्तक्षेप करना पड़ा ।

जयपुर के शासक रामसिंह की सगाई तखतसिंह की पुत्री से की गई थी । इसके बाद रामसिंह की सगाई रीयां वालों के यहां भी हुई । रामसिंह ने पहले रीयां जाकर विवाह करने का विचार किया । इस पर तखतसिंह ने एतराज किया कि उनके यहां सगाई पहले हुई है, इसलिए रामसिंह पहले शादी करने यहां आयें । मसला ए. जी. जी. के सामने प्रस्तुत हुआ, जिस पर ए. जी. जी. ने रामसिंह को निर्देश दिया कि वह पहले जोधपुर आकर शादी करे ।[4]

ए. जी. जी. का कार्यालय आबू पर था परन्तु राज्यों के जागीरदारों आदि के विभिन्न मसलों की सुनवाई सर्दी की मौसम में वह अजमेर कार्यालय में आकर करता था ।

---

1. ख्यात, पृष्ठ 194
2. ख्यात, पृष्ठ 190, 193
3. ख्यात, पृष्ठ 57
4. ख्यात, पृष्ठ 167

पॉलिटिकल एजेन्ट और राज्य के सम्बन्ध

जोधपुर में पॉलिटिकल एजेन्ट की नियुक्ति सर्वप्रथम महाराजा मानसिंह के समय में की गई थी। उस समय शासक और कम्पनी सरकार के बीच जो भी अहदनामा हुआ था, उसकी कारगुजारी की पैरवी करना इस पद का मुख्य कार्य था, परन्तु ज्यों-ज्यों समय निकलता गया, उसका दखल राज्य-कार्य में भी बढ़ता गया। पॉलिटिकल एजेन्ट प्राय: कम्पनी के सैनिक अधिकारी ही हुआ करते थे, परन्तु वे अच्छे प्रशासक और राजनीतिक परिपक्वता लिए हुए होते थे। पॉलिटिकल एजेन्ट के पास उसके कार्यालय के कार्यकर्ता भारतीय ही होते थे, जिनमें एक व्यक्ति अंग्रेजी का ठीक जानकार होता था। ये लोग कम्पनी सरकार और पॉलिटिकल एजेन्ट के प्रति वफादार होते थे और राज्य की सारी गतिविधियों से उसे अवगत करा दिया जाता था।

शासक और पॉलिटिकल एजेन्ट के बीच औपचारिकतायें निश्चित थीं और आने-जाने, मिलने-बैठने एवं विभिन्न अवसरों पर सम्मान प्रकट करने के कायदे निश्चित थे।

इस ख्यात से पता चलता है कि राजनीतिक मसलों और जागीरदारों तथा अन्य प्रबन्धात्मक समस्याओं पर पॉलिटिकल एजेन्ट और शासक के बीच बराबर विचार-विमर्श चलता रहता था। विशिष्ट त्यौहारों, शासक की वर्षगांठ (साल गिरह)[1] अथवा बाहर से अंग्रेज अफसरों के आने पर पॉलिटिकल एजेन्ट के यहां मेवा तथा फलों की डाली भेजी जाती थी।[2] कभी-कभी किले पर भोजन का निमन्त्रण भी उसे दिया जाता था। इस ख्यात में ऐसे भी उल्लेख आये हैं जब बड़े जागीरदारों के यहां भी पॉलिटिकल एजेन्ट ने दावत स्वीकार की है। शासक या बड़े जागीरदार के यहां कोई गमी होती तो पॉलिटिकल एजेन्ट शोक प्रकट करने जाता था। इसी प्रकार कम्पनी सरकार के किसी बड़े अधिकारी की मृत्यु होने पर शासक और जागीरदार भी पॉलिटिकल एजेन्ट के निवास पर शोक प्रकट करने जाते थे।

जोधपुर का पॉलिटिकल एजेन्ट मुख्य रूप से जोधपुर का ही कार्य देखता था, परन्तु वह कभी-कभी मालानी का कार्य भी देखने जाता था।[3] उस समय

---

1. ख्यात, पृष्ठ 101
2. ख्यात, पृष्ठ 55
3. ख्यात, पृष्ठ 291

मालानी की एक विशिष्ट राजनीतिक स्थिति थी। बीकानेर, जैसलमेर आदि पड़ौसी रियासतों के साथ राज्य की सीमा-विवादों सम्बन्धी सुनवाई के लिए पॉलिटिकल एजेन्ट स्वयं मौके पर जाता था।[1] राज्य में बड़ी चोरी, डाका होने पर ऊपर से आदेश मिलने पर पॉलिटिकल एजेन्ट स्वयं राज्य की फौज के साथ चोरों का पीछा करने के लिए जाता था।[2]

पॉलिटिकल एजेन्ट मेहनत और संयम का जीवन जीता था और उसका कार्यकाल दो-तीन साल से अधिक यहां नहीं रहता था। कई एजेन्ट तो कम समय में हो यहाँ से बदल दिये गये। साथ ही पहले रहे हुए पॉलिटिकल एजेन्ट पुनः नियुक्त होकर भी आये। पॉलिटिकल एजेन्ट भेंट के रूप में खाने-पीने की वस्तु तो ग्रहण कर सकता था, परन्तु रुपया व कीमती वस्तु वह स्वीकार नहीं करता था। ऐसा करने पर वह दण्ड के भागी होता था।[3] प्रत्येक पॉलिटिकल एजेन्ट अपनी ओर से पूरा प्रयास करता था कि उसकी सरकार में जनता का विश्वास बढ़े और राज्य में किसी प्रकार का उपद्रव या अराजकता न हो।

राज्य प्रशासन

राज्य में दीवान, बख्शी, किलेदार के अलावा अलग-अलग विभागों के अध्यक्ष के रूप में दरोगा का पद था। यहां यह उल्लेखनीय है कि मारवाड़ राज्य में अंग्रेजों के आगमन से पहले प्रधानगी का पद सर्वोच्च था, परन्तु ख्यात के वृत्तान्त से पता चलता है कि प्रधानगी का पद या तो समाप्त कर दिया गया था या नाम मात्र का ही रह गया था। अतः अब प्रधान का अधिकांश कार्य किलेदार व दीवान के बीच में बँट गया था। अब किलेदार का पद पहले से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया था। वह न केवल सेना का संचालन करता था अपितु राज्य में उठने वाले उपद्रवों आदि को दबाने के लिए भी उसे ही जाना पड़ता था। सन् 1857 की क्रान्ति में जब आउवा ठाकुर ने बगावत की तो किलेदार अनाड़सिंह के नेतृत्व में फौज आउवा भेजी गई और अनाड़सिंह वहां काम आया।

दीवानगी का पद प्रधान के अभाव में स्वतः ही महत्त्वपूर्ण हो गया था। परम्परा से प्रधान मारवाड़ का कोई बड़ा जागीरदार होता था और शासक के

1. ख्यात, पृष्ठ 350
2. ख्यात, पृष्ठ 345
3. ख्यात, पृष्ठ 339

पश्चात् राजनीतिक दृष्टि से वह सबसे शक्तिशाली होता था। दीवान प्राय: बनियों में से हुआ करते थे, जो राज्य की राजस्व व्यवस्था को प्रमुखतया देखते थे और संकटपूर्ण स्थिति में शासक के निर्देश पर अन्य कार्य भी करते थे, परन्तु प्रधान के अभाव में दीवान राजनीतिक दृष्टि से अधिक महत्त्वशाली हो गया था। इस परिवर्तन के पीछे यह तथ्य भी रहा होगा कि महाराजा तखतसिंह ईडर से आकर गद्दी पर बैठे थे, इसलिए उन्होंने प्रधानगी के पद को कोई महत्त्व नहीं दिया क्योंकि इससे जागीरदारों का वर्चस्व बढ़ जाने का खतरा था। ऐसे कुछ उदाहरण इस ख्यात में हैं जहां जागीरदारों ने जब भी शासक के विरुद्ध गुटबाजी की है तो दीवान उस समस्या का समाधान शासक के लिए कर रहा है।[1]

दीवान की नियुक्ति प्राय: बड़ी रकम लेकर की जाती थी[2] और बाद में भी माहवारी रकम उसे शासक को अदा करनी पड़ती थी। इसके फलस्वरूप दीवान सदा ही राज्य में से अधिक से अधिक रुपया बटोरने में तत्पर रहता था। जब अधिक रिश्वत या बड़ी खायकी की शिकायत शासक के पास पहुँचती तो उसे अविलम्ब पदच्युत कर दिया जाता था। कई बार तो उसकी हवेली पर छापा मारकर सारा धन राज्य-कोष में जमा कर लिया जाता था। ऐसे उदाहरण भी हैं जब दीवान को जेल की हवा खानी पड़ी और भारी रकम देने के बाद ही उसे मुक्ति मिली।[3] परन्तु हास्यास्पद बात यह है कि रकम की अदायगी के बाद उसे ही दीवानगी के पद पर पुन: नियुक्त कर दिया जाता था, इससे प्रशासन में बड़ी अस्थिरता रहती थी। जैसा कि पहले कहा जा चुका है दीवान के पद पर बनिया जाति के लोग ही नियुक्त होते थे, परन्तु ऐसे कुछ उदाहरण भी हैं जब अन्य जाति के लोगों को भी दीवानगी दी गई है। महाराजा तखतसिंह ने अंग्रेज अफसर मि. टेलर को बुलाकर यहां दीवानगी का पद दिया था।[4] यद्यपि वह थोड़े समय के लिए ही रहा। इसी प्रकार मुंशी हाजी मोहम्मद को भी कुछ समय के लिए दीवान बनाया गया था[5] और संवत् 1926 में दीवानगी का पद मरदानअली को भी दिया गया था।[6]

---

1. ख्यात, पृष्ठ 129
2. ख्यात, पृष्ठ 179
3. ख्यात, पृष्ठ 182, 184, 209
4. ख्यात, पृष्ठ 338
5. ख्यात, पृष्ठ 450
6. ख्यात, पृष्ठ 467

राज्य में हाकिम का पद भी बड़ा महत्त्वपूर्ण होता था। अलग-अलग परगनों के हाकिम हुआ करते थे और उनकी नियुक्ति भी निश्चित रकम के आधार पर की जाती थी। ये लोग भी पूंजी इकट्ठी करने में लगे रहते थे और दीवानों की तरह इनकी भी कई बार दुर्गति होती थी।[1]

जोधपुर शहर के प्रबन्ध के लिए कोटवाल की नियुक्ति होती थी और उसे शहर की व्यवस्था के सम्बन्ध में पर्याप्त अधिकार भी होते थे। फौजदारी व दीवानी अदालतों के लिए अलग-अलग दीवानों की व्यवस्था थी।[2] सायर चौकी की व्यवस्था के लिए और हवाले के लिए अलग से व्यवस्था थी। हवाला इजारे पर भी दिया था। सं. 1905 में रूघनाथ को हवाला इजारे पर दिया गया था और यह निर्देश दिये गये थे कि पांच व्यक्तियों की एक समिति के सहयोग से वह कार्य करेगा और दस से बीस रुपये की तनख्वाह के हवलदार नियुक्त कर सकेगा।[3] पुरोहितों, जोगियों आदि की डोलियों के गांव हवाला टैक्स से मुक्त थे, परन्तु इन्होंने इन पर भी टैक्स लगाया। इससे इन्होंने धरना दिया, परन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई।[4]

मारवाड़ के प्रशासन में वैसे तो महाराजा सर्वशक्तिमान थे, परन्तु समय-समय पर यहां के जागीरदार प्रशासन की खामियों की तरफ शासक व पॉलिटिकल एजेन्ट का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास अवश्य करते थे। यहां के प्रमुख जागीरदारों ने मिलकर एक अर्जी पॉलिटिकल एजेन्ट को दी, जिसमें शासन में सुधार के सम्बन्ध में तेईस कलमें लिखी हुई थी। पॉलिटिकल एजेन्ट ने वह पत्र अपनी इस टिप्पणी के साथ महाराजा को भेजा कि इस पर अमल करने के लिए विचार किया जाना चाहिए। इस पर महाराजा ने कहा कि चार-पांच दिन बाद विचार करेंगे।[5] इस प्रकार महाराजा टालमटोल करते रहे। मारवाड़ के जागीरदारों में पोकरण ठाकुर का सिरायतों में विशिष्ट स्थान था, अतः उन्होंने भी व्यक्तिगत तौर से महाराजा से मिलकर प्रशासन

---

1. ख्यात, पृष्ठ 87-88
2. ख्यात, पृष्ठ 463
3. ख्यात, पृष्ठ 105
4. ख्यात, पृष्ठ 131
5. ख्यात, पृष्ठ 132-33

में आई खामियों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया और ऐशो आराम में लगे रहने तथा प्रशासन की ओर कम ध्यान देने के लिए बहुत कुछ कहा ।[1] यह वास्तविकता थी कि महाराजा प्रशासन को इतना समय नहीं दे पाते थे, जितना कि उन परिस्थितियों में अपेक्षित था ।

प्रशासन में डावड़ियों और बडारनों का भी काफी दखल था । इससे भी प्रशासन में ढिलाई आती थी । औरतों के इस प्रशासनिक दखल के सम्बन्ध में किसी ने एक व्यंग्यात्मक दोहा कहा था—

नारो बाघा ढेलड़ी, हंसा मेना नाम ।
महाराजा तखतेस रे, करे जिनावर काम ।।

ढेलड़ी नामक वडारण को तो परगने डीडवाना की कोटवाली भी प्राप्त हुई थी ।[2] और तो और आउवा ठाकुर जब क्रांति के समय बागी हुए थे तो उनकी जागीर जब्त कर ली गई थी और बहुत कुछ प्रयास करने के बावजूद भी जागीर बहाल न हो सकी । आखिर उन्होंने रिश्वत देकर ढेलड़ी को प्रसन्न किया और उसकी मार्फत जागीर का निपटारा हुआ ।[3]

ख्यात में ऐसे कई उदाहरण आये हैं, जिससे पता चलता कि है सती-प्रथा पर अंग्रेजों ने सख्त पाबंदी लगा रखी थी । अंग्रेजों के प्रभाव के कारण अंधविश्वासों का दूर किया जाना सम्भव हो रहा था ।[4] चोरी करने वालों को सख्त सजा दी जाती थी वहीं जारी करने वालों को मौत की सजा तक दे दी जाती थी ।[5] उस समय राज्य में और बाहर डाक भेजने के लिए डाक चौकी की व्यवस्था थी ।[6]

जागीरदार और शासक के सम्बन्ध

जैसा कि पहले संकेत किया गया है कि अंग्रेजों की यह नीति रही थी कि जागीरदारों की जो कदीमी जागीरें हैं उनमें शासक भी हेर फेर नहीं करे,

---

1. ख्यात, पृष्ठ 414
2. ख्यात, पृष्ठ 462
3. ख्यात, पृष्ठ 479
4. ख्यात, पृष्ठ 25
5. ख्यात, पृष्ठ 471
6. ख्यात, पृष्ठ 235

क्योंकि इससे राज्य में असंतोष और उपद्रव हो जाने की स्थिति बनने की आशंका थी और इससे अंग्रेजों के शासन को भी आँच आ सकती थी। अत: किसी जागीरदार की मृत्यु पर नाबालगी के समय में जागीर की व्यवस्था और वारिस न होने पर गोद बैठाने के सम्बन्ध में परम्परागत नियमों को प्राथमिकता दी जाती थी। इस प्रकार के मसले बड़े नाजुक होते थे, परन्तु उसमें अंग्रेज अधिकारी और शासक दोनों काफी समझ-बूझ से काम लेते थे। किसी जागीरदार की जागीर किसी गलती के कारण जब्त होती तो उसे बहाल करने का अधिकार भी शासक को ही होता था।[1]

शासक से मिलने के लिए आने से पूर्व जागीरदार को स्वीकृति लेनी होती थी और जब वह जोधपुर से अपने गांव जाता तो इसके लिए भी स्वीकृति लेनी अनिवार्य थी। महाराजा जब भी रियासत में किसी कार्य से या शिकार आदि मनोरंजन के लिए जाते तो रास्ते में पड़ने वाला जागीरदार उसकी स्थिति के अनुसार वह शासक का सम्मान करता था और नजराना आदि भेंट करता था। कई बार जागीरदार के यहाँ शासक का पहुँचना उस जागीरदार के लिए भारी पड़ जाता था।

एक बार जब पॉलिटिकल एजेन्ट तथा महाराजा जालोर की ओर गये और आहोर ग्राम में पड़ाव किया तो उनके साथ करीब 5,000 का अमला था। मुत्सद्दियों ने ठाकुर को डरा धमकाकर 13,000 रुपये नजराने का रुक्का लिखवा लिया और दो घोड़े तथा एक हाथी का नजराना तय किया गया। आहोर के कामदार जीवणचंद ने जब अमले में साथ आये आउवा ठाकुर को यह बात बताई कि आहोर ठाकुर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह इतना नजराना दे सके, इसलिए आप पॉलिटिकल एजेन्ट से मिलकर 13,000 रुपये का रुक्का वापिस ले लेवें। पहले तो आउवा ठाकुर खुशालसिंह महाराजा की नाराजगी के भय से कुछ हिचकिचाया, परन्तु अपना कर्त्तव्य समझकर उसने पॉलिटिकल एजेन्ट को सारी बात बताई। इस पर एजेन्ट ने कहा कि इसमें हमारी बड़ी बदनामी होती है, इसलिए राज्य के वकील को बुलाकर नजराने का रुक्का लौटा देने का उसने आदेश दिया।[2]

1. ख्यात, पृष्ठ 354
2. ख्यात, पृष्ठ 154-55

जब भी बड़े जागीरदार की मृत्यु होती तो उसकी मातमपोशी के लिए शासक उसकी हवेली पर अवश्य जाता था।

जागीरदार की मृत्यु के बाद जब उसका वारिस गद्दी पर बैठता तो उससे हुकमनामे की रकम वसूल की जाती थी। यह रकम पुरानी बही देखकर उसके अनुसार या फिर जागीर के बारह महीने की पैदावार ली जाती थी।

जोधपुर राज्य का पड़ौसी राज्यों से सम्बन्ध

इस ख्यात में प्रसंगानुसार जोधपुर राज्य के पड़ौसी राज्यों से सम्बन्ध पर जहाँ प्रकाश पड़ता है, वहीं उस समय की राजनीतिक स्थिति की भी जानकरी मिलती है। सांभर का इलाका मारवाड़ और जयपुर रियासत की सीमा पर है और इसके सम्बन्ध में यदा-कदा सीमा-विवाद होते रहे हैं। इस ख्यात में उल्लेख है कि होली के अवसर पर एक बार जयपुर राज्य के कुछ लोग होली का जश्न मनाते हुए कुण्ड चौक तक आ पहुँचे, जो मारवाड़ की सीमा में समझा जाता था, परन्तु उसी समय आवश्यकता इस बात की हुई कि क्या कोई ऐसा प्रामाणिक दस्तावेज है जिसके आधार पर यह स्पष्ट दावा किया जा सके कि जयपुर वालों ने अनधिकृत रूप से मारवाड़ की सीमा में दखलंदाजी की है। महाराजा तखतसिंह ने जब इस सम्बन्ध में अधिकारियों से पूछताछ की तो उन्होंने बताया कि ऐसा दस्तावेज सूरतराम के पास ही मिल सकता है। वास्तव में सूरतराम ने लाकर वह दस्तादेज पेश किया,[1] जिससे मारवाड़ वालों का दावा उचित ठहरा।

इसी प्रकार मारवाड़ के गोडवाड़ इलाके के कुछ हिस्से पर उदयपुर वालों ने अपना दावा पेश किया था[2], क्योंकि पहले यह इलाका मेवाड़ का ही भाग था, परन्तु महाराजा विजयसिंह के समय में यह जोधपुर के अन्तर्गत आ गया था। इस पर ए. जी. जी. ने फैसला दिया कि गोडवाड़ का भू-भाग जायज ढंग से जोधपुर राज्य के अधिकार में आया है, इसलिए अब इस पर विचार करना उपयुक्त नहीं है। इसी प्रकार बीकानेर तथा जैसलमेर और मारवाड़ की सीमाओं के बीच में भी छोटे-मोटे विवाद होते रहते थे और उनका निपटारा अंग्रेज अधिकारियों के बीच-बचाव से होता था।

1. ख्यात, पृष्ठ 101
2. ख्यात, पृष्ठ 180

जोधपुर राज्य की सीमा पर ही अवस्थित सिरोही राज्य आर्थिक और प्रशासनिक दृष्टि से सदा कमजोर रहा है। इस ख्यात में एक जगह उल्लेख आया है कि सिरोही के शासक के निवेदन पर जोधपुर के शासक ने अपना सैन्य-बल भेजकर वहाँ के भील व मीणों के उपद्रवों को शान्त किया था।[1]

ख्यात में सन् 1857 के विद्रोह का वृत्तान्त

इस ख्यात में सन् 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध होने वाले उपद्रव के सम्बन्ध में काफी विस्तृत सूचनाएं मिलती हैं। इसके पहले अंग्रेजी सत्ता को हिला देने वाले शेखावाटी के प्रसिद्ध वीर डूंगरसिंह और जवाहरसिंह की कारगुजारी और फिर आगरा के किले में उनका कैद होना तथा तत्पश्चात् वहाँ से निकल भागना आदि सूचनाएँ यथास्थान पर दी गई है।

सर्वप्रथम पॉलिटिकल एजेन्ट ने ही जोधपुर महाराजा को आम दरबार में इसकी सूचना दी थी। इन दोनों ने नसीराबाद की छावनी को लूटा था और रात को बूड़सू गांव में विश्राम कर आगे निकल गये थे, क्योंकि बूड़सू गांव मारवाड़ राज्य की सीमा में पड़ता था इसलिए अंग्रेज अधिकारी महाराजा तखतसिंह पर भी नाराज हुए। ख्यात में लिखा है कि आम तौर पर ए. जी. जी. दरबार की वर्षगांठ पर आबू स्थित दरबार के वकील के यहाँ मनाये जाने वाले वर्षगांठ समारोह पर उपस्थित होता था, परन्तु इस बार उसने नाराजगी जाहिर करने के लिए इसमें शामिल होने से इन्कार कर दिया।[2] समरथराज ने जब महाराजा को यह वृत्तांत लिखा तो महाराजा ने अविलम्ब बूड़सू ठिकाना जब्त कर लिया। ए.जी.जी. ने शासक को निर्देश दिया कि हार्ड कासल व मैसन सेना सहित डूंगजी-जवारजी को गिरफ्तार करने के लिए आ रहे हैं। इनकी हर प्रकार से मदद की जाय, तब महाराजा के निर्देशानुसार पंवार अनाड़सिंह उनकी सहायता के लिए दल-बल सहित मेड़ता की ओर गया।[3] अन्ततः वे पकड़े गये।[4] इनमें से जवाहरसिंह बीकानेर राज्य में पकड़ा गया और डूंगरसिंह सं. 1904 काती वद अमावस्या को शेखावटी-तोरावटी में पकड़ा गया।[5]

---

1. ख्यात, पृष्ठ 187
2. ख्यात, पृष्ठ 71
3. ख्यात, पृष्ठ 72
4. ख्यात, पृष्ठ 78
5. ख्यात, पृष्ठ 78

इन्होंने तभी आत्म-समर्पण किया जब उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि तुम्हें जोधपुर में ही रखा जायेगा और अंग्रेजी सत्ता को नहीं सौंपा जायेगा। डूंगरसिंह को जोधपुर के किले में सलेमकोट में रखा गया और प्रतिदिन खासा-रसोड़े से उसके लिए शराब व भोजन की व्यवस्था कर दी गयी थी। इसका देहांत यहीं पर सं. 1907, आषाढ सुदी 2 को हुआ था और दाह-संस्कार श्मशान-भूमि कागा में किया गया।[1]

ख्यात में सन् 1857 के विद्रोह का मुख्य कारण मेरठ की छावनी के सिपाहियों द्वारा बन्दूक के कारतूसों पर चमड़ा लगा होने की बात कहकर कारतूस लेने से इन्कार करना, इस पर तकरार होना और सिपाहियों के द्वारा अंग्रेज अधिकारियों के बाल-बच्चों को मार डालना आदि घटनाएँ हैं।[2] इस पर अंग्रेजों ने एक इश्तिहार साया किया और कुछ ही समय में क्रांति की आग चारों ओर फैल गयीं। इस क्रांति में यद्यपि जोधपुर के शासक महाराजा तखतसिंह ने बराबर अंग्रेजों की सहायता की, परन्तु यहाँ के प्रमुख ठिकाने आउंवा और उसके सहयोगी गूलर, सिणली, आलणियावास आदि ने अंग्रेजों के विरुद्ध जो दुर्द्धर्ष संघर्ष किया वह स्थान-स्थान पर काफी विस्तार से ख्यात के पृष्ठों में आया है। उस पूरे वृत्तांत को यहाँ प्रस्तुत करना समीचीन नहीं होगा। अत: इस क्रांति की मुख्य घटनाओं के जो उल्लेख उस ख्यात में आये हैं, उनके सन्दर्भ संक्षेप में प्रस्तुत हैं—

(1) जोधपुर महाराजा को जब उपद्रव की सूचना मिली तो महाराजा ने अजमेर स्थित अंग्रेज अधिकारियों को फौज खर्च के लिए फौरन आर्थिक सहायता भेजी।[3]

(2) जोधपुर राज्य की फौज भी अंग्रेजों की सहायता के लिए भेजी गई, इसमें कोई 2,000 सिपाही थे।[4]

(3) महाराजा ने अंग्रेजों को अपनी पूरी सहायता के लिए भली-भाँति आश्वस्त भी किया।[5]

---

1. ख्यात, पृष्ठ 130
2. ख्यात, पृष्ठ 230
3. ख्यात, पृष्ठ 234
4. ख्यात, पृष्ठ 235
5. ख्यात, पृष्ठ 236

(4) जयपुर राज्य की फौज के बदल जाने की आशंका से अंग्रेज अधिकारियों ने जोधपुर राज्य की फौज की शरण ली ।[1]

(5) मालानी के लोगों ने अंग्रेजों को सहायता देना स्वीकार नहीं किया, इस पर उन्हें धमकी दी गई कि मालानी का अधिकार जोधपुर महाराजा को सौंप दिया जायेगा ।[2]

(6) इस बीच आबू में भी गदर की आग भड़क उठी, वहां के अधिकारियों तथा उनके परिवार को विद्रोहियों ने मार डाला ।[3]

(7) क्रान्तिकारी लोग आउवा पहुंचे और उन्हें गढ़ में शरण मिली। इस पर अंग्रेजों से संघर्ष हुआ, जिसमें जोधपुर का पॉलिटिकल एजेन्ट मैसन आदि मारे जाने की घटनाओं का विस्तृत वृत्तान्त ।[4]

(8) कोटा में भी उपद्रव की लहर का वृत्तान्त ।[5]

(9) रेवाड़ी में उपद्रव होना ।[6]

(10) एरनपुरा में क्रान्ति की आग का फैलना ।[7]

(11) जोधपुर महाराजा द्वारा बडलू और आसोप पर फौज भेजना तथा आसोप के ठाकुर द्वारा समर्पण और आसोप ठाकुर के बयानों को कलमबंद किया जाना ।[8]

(12) क्रान्तिकारियों का जयपुर में दखल ।[9]

(13) क्रान्ति की आग का टोंक और शेखावटी तक पहुँचना ।[10]

(14) मेवाड़ भी क्रान्ति की हलचल से प्रभावित ।[11]

---

1. ख्यात, पृष्ठ 236
2. ख्यात, पृष्ठ 237
3. ख्यात, पृष्ठ 241
4. ख्यात, पृष्ठ 241 से 248 तथा 254, 257, 258, 264
5. ख्यात, पृष्ठ 249, 261, 262, 265
6. ख्यात, पृष्ठ 251
7. ख्यात, पृष्ठ 252
8. ख्यात, पृष्ठ 253, 255
9. ख्यात, पृष्ठ 266
10. ख्यात, पृष्ठ 266 से 268
11. ख्यात, पृष्ठ 268

(15) उपद्रवियों की शक्ति कमजोर होने पर शांति के प्रयासों के लिए अंग्रेजों द्वारा इश्तिहार साया करना ।[1]

(16) गूलर ठिकाने के लोगों ने आर्थिक तंगी के कारण कई स्थानों पर लूटपाट की ।[2]

(17) ठिकाना गूलर व धनकोली वालों ने माफी के लिए अर्जी प्रस्तुत की ।[3]

(18) आउवा वालों ने कोलिया आदि कई स्थानों को लूटा, जिससे मारवाड़ की जनता भयभीत होने लगी और जोधपुर शहर के दरवाजों पर विशेष पहरे की व्यवस्था की गई ।[4]

(19) उपद्रवियों ने लाडनू को लूटा, इस पर एरनपुरा छावनी तथा जयपुर राज्य से अंग्रेजों के निर्देशानुसार चढ़ाई की गई ।[5]

(20) गूलर वालों ने किशनगढ़ इलाके के दो गांव लूटे ।[6]

(21) आउवा का वकील आउवा ठाकुर का पत्र लेकर सूरसागर स्थित पॉलिटिकल एजेन्ट के पास आया ।[7]

(22) उदयपुर के पॉलिटिकल एजेन्ट ने आउवा ठाकुर को सूचित किया कि वह उसके वहां उपस्थित हो जाए तो वह उसे बरी करा देगा ।[8]

(23) आसोप व गूलर वालों का बीकानेर में पड़ाव और उनकी खर्ची का प्रश्न ।[9]

(24) आउवा ठाकुर खुशालसिंह की उदयपुर में मृत्यु ।[10]

---

1. ख्यात, पृष्ठ 273
2. ख्यात, पृष्ठ 278
3. ख्यात, पृष्ठ 280
4. ख्यात, पृष्ठ 282
5. ख्यात, पृष्ठ 283, 284
6. ख्यात, पृष्ठ 300
7. ख्यात, पृष्ठ 264, 304
8. ख्यात, पृष्ठ 320 से 323
9. ख्यात, पृष्ठ 412
10. ख्यात, पृष्ठ 419

ख्यात में लिखा है कि क्रान्तिकारी जब मारवाड़ की सीमा में से निकलते थे तो जोधपुर महाराजा की ओर से भेजे गये सैनिक उनके पीछे-पीछे चलते रहते थे और खून-खराबे के भय से उनसे युद्ध नहीं करते थे। इस समय में राज्य में काफी भय व्याप्त था और प्रशासनिक अव्यवस्था भी फैल गई थी।

जोधपुर महाराजा ने अंग्रेजों की खूब सहायता की थी और अंग्रेजों के कई परिवारों को यहां सुरक्षा प्रदान की थी, जिससे अंग्रेज इनसे बड़े प्रसन्न थे।

ख्यात में सामाजिक व सांस्कृतिक जानकारी

ख्यात में 19वीं शताब्दी के मारवाड़ की सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों सम्बन्धी अनेक सूचनाएँ यथास्थान पर आई हैं। इसमें जोधपुर में मनाए जाने वाले विभिन्न धार्मिक पर्वों और उत्सवों का अनेक स्थलों पर वर्णन आया है। साथ ही ऐसे अनेक सामाजिक रीति-रिवाजों का भी वर्णन मिलता है, जिससे उस समय के लोगों की धारणाओं पर प्रकाश पड़ता है। उस समय में लड़के और लड़की में कितना भेदभाव बरता जाता था, इसका उदाहरण राजघराने तक में मिलता है। ख्यात में लिखा है कि युवराज जसवन्तसिंह के पुत्री पैदा होने की सूचना जब नाजर हरकरण के मार्फत महाराजा के पास पहुँची तो महाराजा ने उसे उपालंभ (ओळभौ) दिया।[1]

उस समय में मृत्यु-भोज[2] की प्रथा बड़ी प्रबल थी। राजघराने में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर किये जाने वाले मृत्युभोज का उल्लेख अनेक स्थानों पर इस ख्यात में आया है। कुलीन व्यक्तियों की मृत्यु पर उनकी बैकुण्ठी भी निकाली जाती थी।[3]

तालीम की डावड़ी पारवती बाई की मृत्यु पर मृत्युभोज की व्यवस्था पोकरण की हवेली में की गई थी।[4]

इसी प्रकार तालीम की डावड़ी कुरजी की मृत्यु पर 16 मन खांड (चीनी) की जलेबी बनवाई गई थी।

---

1. ख्यात, पृष्ठ 224
2. ख्यात, पृष्ठ 478
3. ख्यात, पृष्ठ 425
4. ख्यात, पृष्ठ 98

उस समय में सती प्रथा भी थोड़ी बहुत प्रचलित थी, परन्तु अंग्रेजों ने इस पर प्रतिबन्ध लगा रखा था।[1]

उस समय में तीर्थ यात्रा पर जाना बड़ा पुण्य का कार्य समझा जाता था। महाराजा तखतसिंह जब गंगाजी गये तो उनके साथ 15,000 आदमियों का अमला था। जिससे अन्य लोगों को भी गंगा स्नान का पुण्य-लाभ हो गया। राज्य में नाथ,[2] वैष्णव[3] तथा संत-फकीर आदि सब के प्रति लोगों की आस्था थी। महाराजा तखतसिंह स्वयं वैष्णव धर्मावलम्बी थे। ख्यात में कृष्ण मन्दिर के महाराजश्री की पधरावणी का वर्णन कई स्थानों पर आया है, जिसमें उनके प्रति श्रद्धा-भाव के साथ-साथ उन्हें अर्पित किए जाने वाली रकम का भी उल्लेख है।[4]

ख्यात से प्रतीत होता है कि महाराजा का निजी जीवन पूरी तरह ऐश्वर्य और विलास में पगा हुआ था, परन्तु उनकी धार्मिक आस्था भी बड़ी गहन थी और दान-पुण्य भी मुक्तहस्त से किया करते थे। एक स्थान पर सूर्यग्रहण के अवसर पर तुलादान करने का भी उल्लेख है।[5] ख्यात में ब्रह्मभोज का अनेक स्थानों पर उल्लेख है।[6] एक स्थान पर सहसभोज का भी उल्लेख आया है।[7]

धार्मिक सम्प्रदायों में कभी-कभी आपस में झगड़े भी हो जाते थे,[8] परन्तु कुल मिलाकर वातावरण सौहार्दपूर्ण था।

महाराजा स्वयं भगवान के दर्शनों के लिए मन्दिरों में जाते थे। भगवान श्री कृष्ण के हिंडोले के दर्शन के लिए चौपासनी मन्दिर में जाने का उल्लेख इस ख्यात में है।[9] वैष्णव धर्म की मान्यता इसी से प्रकट है कि बालकिशनजी के मंदिर के गुसांईजी जब जामनगर से लौट कर आये तो सिरे बाजार से उनकी सवारी हाथी पर निकाली गई और कुचामन ठाकुर चंवर करने के लिए उनके

1. ख्यात, पृष्ठ 225, 405
2. ख्यात, पृष्ठ 159
3. ख्यात, पृष्ठ 19
4. ख्यात, पृष्ठ 41, 45, 146, 147
5. ख्यात, पृष्ठ 76
6. ख्यात, पृष्ठ 46
7. ख्यात, पृष्ठ 49
8. ख्यात, पृष्ठ 196
9. ख्यात, पृष्ठ 341

पीछे बैठे ।[1] मंदिरों की प्रतिष्ठा समारोहपूर्वक की जाती थी[2] और ऐसे अवसरों पर खूब व्यय किया जाता था। नाजर हरकरण ने जब मन्दिर बनवाया तो महाराजा स्वयं दर्शन करने के लिए पधारे ।[3] रानियों ने भी कई मंदिर बनवाये, जिसमें राणावतजी का बनवाया हुआ मंदिर प्रसिद्ध है ।[4]

जैसा कि पहले कहा जा चुका है ख्यात में तीज-त्यौहारों का स्थान-स्थान पर वर्णन है। इनमें दशहरे का वर्णन और रामचन्द्रजी की सवारी आदि का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।[5] इसके अतिरिक्त नौ-रात्रि स्थापना,[6] आखातीज,[7] गवर का मेला,[8] शीलसातम,[9] नाग-पंचमी,[10] गणेश चौथ[11] आदि का भी यथा-स्थान वर्णन इस ख्यात में आया है।

दशहरे के अवसर पर तो देवी चामुण्डा, हिंगलाज माता और नागणेचियां की पूजा के अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्रों और अश्वों की विधिवत पूजा होती थी[12] और दशहरे का दरबार भी लगता था। होली, दीपावली आदि त्यौहार भी बड़ी घूमधाम से मनाये जाते थे। धार्मिक मेलों में वीरपुरी का मेला जहाँ महत्त्वपूर्ण था वहीं बड़ली के भैरुजी का मेला भी उत्साह के साथ भरता था।

इस ख्यात में विभिन्न विवाहों का काफी विस्तार से वर्णन किया गया है। स्वयं महाराजा ने अनेक विवाह किये थे, इन सब का यथास्थान वर्णन हुआ है। साथ ही राजकुमारों व कुंवरियों के विवाह का वर्णन भी है। एक स्थान पर तखतसिंह की राजकुमारी को दिये गये दहेज की पूरी सूची दी गई है जिससे न केवल उस समय की दहेज-प्रथा पर प्रकाश पड़ता है, अपितु उस समय प्रचलित गहनों व अनेक प्रकार के वस्त्रों व घरेलू उपयोग की वस्तुओं की भी

---

1. ख्यात, पृष्ठ 344
2. ख्यात, पृष्ठ 332
3. ख्यात, पृष्ठ 76
4. ख्यात, पृष्ठ 216
5. ख्यात, पृष्ठ 29, 55, 93
6. ख्यात, पृष्ठ 51
7. ख्यात, पृष्ठ 141
8. ख्यात, पृष्ठ 40
9. ख्यात, पृष्ठ 51
10. ख्यात, पृष्ठ 74, 89
11. ख्यात, पृष्ठ 133
12. ख्यात, पृष्ठ 179

जानकारी मिलती है।[1] इस प्रकार के वर्णनों में उस समय में प्रचलित विवाह-सम्बन्धी रीति-रिवाजों का भी विस्तार से उल्लेख हुआ है। उस समय जहाँ बाल-विवाह प्रचलित था वहीं खांडा-विवाह प्रथा भी थी, जिसके अनुसार दूल्हे के स्थान पर उसकी ओर से भेजे गये खांडे से दुल्हन तीन फेरे पीहर में खा लेती थी और फिर चौथा फेरा यहाँ आने पर दूल्हे के साथ लेती थी। इस प्रकार विवाह सम्पन्न होता था। महाराजा तखतसिंह व युवराज जसवन्तसिंह दोनों के खांडे-विवाह का वर्णन इस ख्यात में है।[2]

ख्यात में कला, साहित्य और संगीत

जोधपुर की शासक-परम्परा में कलाओं के प्रति उनका गहरा लगाव रहा है। वे साहित्य और संगीत के पोषक रहे हैं। महाराजा तखतसिंह के समय में यद्यपि पुरानी परम्पराओं में कुछ परिवर्तन आ गया था, फिर भी उनका एकदम ह्रास नहीं हुआ था। उनके समय में बाघजी भाट, कविराजा मुरारीदान, चैनदान जैसे कई अच्छे साहित्यकार विद्यमान थे। बारहठ चैनसिंह को तो उन्होंने 'षट् दरसण' अदालत का अध्यक्ष नियुक्त किया था।[3] ख्यात में एक जगह उल्लेख है कि महाराजा एक बार जब मुरारीदान की हवेली के सामने से गुजरे तो मुरारीदान उपस्थित हुआ, तब महाराजा ने वहां रुककर घोड़े पर चढ़े हुए ही एक घड़ी तक उससे बातचीत की। यह एक असामान्य बात है, परन्तु इससे महाराजा का साहित्य-सृजकों के प्रति प्रेम झलकता है।[4] इसी प्रकार जोशी शंभुदत्त, जो बड़े विद्वान थे, के संग्रह की पुस्तकें महाराजा ने उनके घर पर जाकर देखी और बड़े प्रसन्न हुए।[5]

महाराजा के समय में देशी और अंग्रेजी तमाशों का खूब उल्लेख हुआ है। ये तमाशे एक प्रकार से लोक-नाटक होते थे, जो उस समय के आमोद-प्रमोद के भी प्रमुख साधन थे। ये तमाशे जहां किले में राजघराने के सम्मुख आयोजित होते थे, वहीं आम जनता के लिए गिरदीकोट आदि खुले स्थानों पर भी इन्हें दिखाया जाता था।[6] होली के अवसर पर तमाशों की खूब धूम रहती थी और महाराजा स्वयं 'खारिया ढाबा पातसाह' को बुलाकर उसका तमाशा देखा करते

1. ख्यात, पृष्ठ 174
2. ख्यात, पृष्ठ 139, 186
3. ख्यात, पृष्ठ 385
4. ख्यात, पृष्ठ 472
5. ख्यात, पृष्ठ 391
6. ख्यात, पृष्ठ 424

थे ।[1] इतना ही नहीं मुकनचन्द ने होली का तमाशा अपनी हवेली पर करवाया तो उसके निमन्त्रण पर महाराजा स्वयं उसकी हवेली तमाशा देखने गये ।[2] इसी प्रकार रासधारियों के रास का प्रदर्शन दौलतखाने के चौक में होने का उल्लेख है ।[3] इन्हें महाराजा ने 100 रुपये इनाम भी दिये । होली पर डंडिया गैर का आयोजन भी उल्लास के साथ होता था ।[4]

विभिन्न उत्सवों, त्यौहारों और खुशी के अवसरों पर संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी । इसके अलावा भी यदा-कदा संगीतकारों की महफिलें होती रहती थी, जिसमें स्थानीय संगीतकारों के अलावा अतिथि संगीतकारों को भी अच्छा इनाम-इकराम दिया जाता था । महाराजा मानसिंह के पहले से चली आ रही संगीत व तालीमखाने की परम्परा यथावत् जारी थी, जिसका प्रमाण हमें तालीमखाने की डावड़ियों के मृत्यु-भोज आदि के उल्लेख से भी मिलता है ।

महाराजा स्थापत्य-कला के भी प्रेमी थे, उन्होंने किले में अपनी रुचि के अनुसार महलों को संवारा और नागौर के महलों में भी मरम्मत करवाई ।[5] उनकी रानियों और कर्मचारियों ने मन्दिर आदि बनवाये, इनका उल्लेख पहले किया जा चुका है । उन्होंने चोकेलाव के बाग के पास एक छोटा कुआ बनवाया और हरबोला बावड़ी से देवड़ीजी के तालाब तक एक नया बाग भी बनवाया ।[6]

आमोद-प्रमोद के साधन

उस समय में लोक-नाटकों का काफी प्रचलन था, जिसका उल्लेख हम पहले कर आये हैं । इसके अलावा विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर आमोद-प्रमोद लोक-गीतों के माध्यम से हुआ करता था । महाराजा को शिकार का बड़ा शौक था और वे प्रायः शिकार के लिए मारवाड़ के कई स्थानों पर दूर-दूर तक जाया करते थे ।[7] मींढों की लड़ाई देखने का भी शौक उस समय प्रचलित था ।[8] बाग-बगीचों में गोठें (प्रीतिभोज) होती ही रहती थी । वर्षा ऋतु में तालाब में उल्टे घड़े तैरा कर उन पर रखे दीपक की लौ को गोली से उड़ाना आदि निशानेबाजी के खेल भी प्रचलित थे ।[9]

---

1. ख्यात, पृष्ठ 335
2. ख्यात, पृष्ठ 381
3. ख्यात, पृष्ठ 139
4. ख्यात, पृष्ठ 50, 66
5. ख्यात, पृष्ठ 149
6. ख्यात, पृष्ठ 216
7. ख्यात, पृष्ठ 159
8. ख्यात, पृष्ठ 115
9. ख्यात, पृष्ठ 107

ख्यात में आर्थिक महत्त्व के संकेत

ख्यात में आर्थिक महत्त्व के अनेक संकेत मिलते हैं। मारवाड़ में हर तीसरे वर्ष अकाल तो पड़ता ही है, परन्तु अनाज के अभाव में जनहानि न हो, इसके लिए उस समय निरख बांधने की व्यवस्था थी।[1] जिसके अनुसार बाजरी, गेहूँ, मूंग, मोठ, घी और तिलहन के सामान्य भाव निश्चित कर दिये जाते थे और कोई व्यापारी यदि अधिक भाव पर बेचता था तो उसे कड़ा दण्ड दिया जाता था। सं० 1926 में भयंकर अकाल पड़ा तो सिंध से कणक (सफेद गेहूँ) मंगवा कर एक रुपये की सवा दो सेर कणक बेचने की व्यवस्था की गई थी।[2]

उस समय शादी-विवाह, मृत्यु-भोज आदि अवसरों पर फिजूलखर्ची इतनी होती थी कि जागीरदारों व मध्यवर्गीय लोगों की आर्थिक हालत कमजोर बनी रहती थी। ख्यात में उल्लेख है कि जागीरदार लोग अपने गांव नाथों के यहाँ गिरवी रखकर उनसे रुपये ब्याज पर उधार लेते थे और जब समय पर रुपया अदा नहीं होता था तो राज्य के आदेश से गांव जब्त कर नाथों के तालके कर दिये जाते थे।[3]

वैसे उस समय खाने-पीने की चीजें काफी सस्ती थी। महाराजा के सेवक राजमल ने जब चोकेलाव में महाराजा को उनके अमले सहित गोठ दी तो केवल 500 रुपये ही खर्च हुए। राज्य की ओर से व्यापार बढ़े, इसके लिए कुछ व्यवस्था की जाती थी। खास तौर से मेलों आदि के अवसरों पर दुकानें आदि लगाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाता था। कभी-कभी नई दुकान खुलने पर सरकार की ओर से आर्थिक सहायता भी देने का उल्लेख है।[4]

रियासत में पहले स्थानीय सिक्कों का प्रचलन था, परन्तु सन् 1857 की क्रांति विफल होने के बाद जब भारत का शासन सम्राज्ञी के अधीन हो गया तो सिक्कों पर विक्टोरिया का नाम अंकित होने लगा।[5]

युद्ध के समय अंग्रेजी सरकार को भी रुपयों की जरूरत पड़ गई थी तो उसने चार रुपये प्रति सैकड़ा की दर से ब्याज पर जनता से रुपया उधार लिया था।[6] इसी प्रकार सिरोही राज्य के बन्दोबस्त के लिए जोधपुर से आठ आना

1. ख्यात, पृष्ठ 330
2. ख्यात, पृष्ठ 467
3. ख्यात, पृष्ठ 219
4. ख्यात, पृष्ठ 219
5. ख्यात, पृष्ठ 264
6. ख्यात, पृष्ठ 189

मिति ब्याज की दर पर रकम प्राप्त करने की तजवीज की गई थी। उस समय राज्य कर्मचारियों को साधारण वेतन मिलता था और निम्न वर्ग के लोगों की आर्थिक हालत अच्छी नहीं थी। राज्य की अधिकांश आय राज-परिवार के सदस्यों, ठिकानेदारों, उच्च अधिकारियों और कम्पनी सरकार पर खर्च की जाती थी।

स्थानीय हस्तकलाओं और काम-धंधों को प्रोत्साहित करने के लिए कोई विशेष प्रयास तो नहीं होते थे, परन्तु सुनार, कंसारा, मोची आदि अपने परम्परागत हुनर में प्रवीण थे। ख्यात में ऐसा सन्दर्भ भी आया है कि विशेष अवसरों पर ये लोग महाराजा को अपनी वस्तुएँ भेंट करते थे तो उनकी प्रशंसा की जाती थी और कुछ इनाम भी इन्हें मिलता था।[1]

ख्यात की निष्पक्षता

ख्यात में अंकित तथ्य वणसूर जादूदान और जोशी आईदान के द्वारा लिखे गये हैं। जो तखतसिंह के समसामयिक हैं और अधिक संभावना इनके राज्य-कर्मचारी होने की ही है अतः ये तथ्य प्रायः सही हैं। इस ख्यात के लेखन में कितनी निष्पक्षता है यह पक्ष भी विचारणीय है। सामान्य प्रसंगों के अलावा इस ख्यात में ऐसे प्रसंग आए हैं जहाँ तथ्यों को नजरअंदाज भी किया जा सकता था, परन्तु ऐसा नहीं किया गया है। इन प्रसंगों में महाराजा की प्रशासन में ढिलाई और विलासिता में समय नष्ट करने पर पोकरण ठाकुर की लताड़। आहोर ठाकुर से 13,000 रुपये का नजराने का रुक्का जबरदस्ती लिखवाना और पॉलिटिकल एजेन्ट द्वारा रुक्का वापिस दिलवाना, महाराजा बनने के कुछ समय बाद डावड़ी राधा को पासवान बनाने पर स्व० महाराजा मानसिंह की रानी भटियाणी का गंभीर रूप से नाराज होना और बडारण ढेलड़ी का राज्य-कार्य में स्पष्ट हस्तक्षेप आदि हैं। जो एक प्रकार से तत्कालीन महाराजा और राज्य कर्मचारियों की कार्य-पद्धति और रीति-नीति की विकृतियों को प्रस्तुत करती हैं। ख्यात में अंग्रेजों की प्रशंसा भी नहीं है, परन्तु उनकी प्रशासन-पटुता और तत्परता स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। सन् 1857 की क्रांति के तथ्य वस्तुनिष्ठ हैं वहीं अंग्रेजों द्वारा बर्बरतापूर्ण ढंग से क्रांति को कुचलने की घटनाएँ भी स्पष्ट वर्णित हैं। कुल मिलाकर ख्यात के वृत्तांत काफी संतुलित हैं।

ख्यात का महत्त्व

इस प्रकार यह सम्पूर्ण ख्यात विक्रम की 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मारवाड़ की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक परिस्थितियों पर

1. ख्यात, पृष्ठ 94

विस्तार के साथ प्रकाश डालती है। इस काल में राजनीतिक दृष्टि से अंग्रेजों का जो वर्चस्व रजवाड़ों पर बढ़ा था, उसके मूल्यांकन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सामग्री इस ख्यात में है। साथ ही सन् 1857 की क्रांति के सम्बन्ध में भी इसमें प्रामाणिक सूचनाएँ अंकित की गई है।

ख्यात की भाषा-शैली

ख्यात की भाषा सरल और प्रवाहमयी है। इसमें राजस्थानी का मारवाड़ी आधारित मानक स्वरूप प्रयुक्त होते हुए भी अरबी, फारसी के प्रशासनिक शब्दों के परिवर्तित स्वरूप का व्यवहार स्वाभाविक रूप से हुआ है। इसकी शैली की सबसे बड़ी खूबी यह है कि हर बात स्पष्ट रूप से व नपे-तुले शब्दों में कही गई है। कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मारवाड़ीकरण के साथ हुआ है, जैसे लंदन का ननण, सेक्रेट्री का सिकतर, शेक्सपीयर का सगसपीर और लार्ड का लाठ।

राजस्थानी ख्यात-परम्परा में बातों पर आधारित ख्यातों के अलावा उन्नीसवीं शताब्दी में लिखी गई शासकों की ख्यातों के दो रूप देखने को मिलते हैं—पहला घटनापरक और दूसरा रोजनामचा-परक। महाराजा मानसिंह की ख्यात-लेखन का आधार समय के क्रम से होते हुए भी मुख्य घटनाओं पर आधारित है, परन्तु महाराजा तखतसिंह की ख्यात प्रत्येक माह के अनुसार महाराजा की दिनचर्या के हिसाब से लिखी गई है। यद्यपि इसमें महत्वहीन तिथियों को बिल्कुल छोड़ दिया गया है फिर भी वर्णन पद्धति तिथियों के अनुसार ही चली है। इसीलिए इसमें प्रतिवर्ष पड़ने वाले त्यौहारों, उत्सवों और मेलों तथा महाराजा की वर्षगांठ आदि का वर्णन प्रत्येक वर्ष में हुआ है।

ख्यात का प्रारम्भ सं० 1900 से महाराजा मानसिंह की मृत्यु और तखतसिंह की गद्दीनशीनी से हुआ है और सं० 1929 में महाराजा तखतसिंह की मृत्यु के पश्चात् समाप्त हुआ है। ख्यात का मुख्य स्रोत सं० 1920 से 1925 तक बणसूर जादूदान की बही है। सं० 1926 से 1928 तक का वर्णन जोशी आईदान की बही तथा 1929 का वृत्तांत पुनः जादूदान की बही से लिया गया है।

इस ग्रंथ का सम्पादन दो हस्तप्रतियों के आधार पर किया गया है—

प्रति (क)—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ग्रंथांक—15629, पत्र सं०—255, प्रति पृष्ठ पंक्ति—20-22,
प्रति पंक्ति अक्षर—21-22, आकार—32×25 सेमी०

प्रति (ख)—राजस्थान राज्य अभिलेखागार संग्रह, बीकानेर
फोटो कापी सं०—$^{2}\frac{7}{8}{}^{9}$, पत्र सं०—521, प्रति पृष्ठ पंक्ति—30-31
प्रति पंक्ति अक्षर—20-21, आकार—42×29 सेमी०

मूल प्रति (क) के अन्त में ग्रंथ का लेखन-संवत् और लिपिकार आदि का नाम नहीं दिया गया है। इस मूल प्रति का वृत्तांत संवत् 1929 की जेठ वदि के प्रारम्भ में समाप्त होता है। इस ख्यात का मूल लेखक एक व्यक्ति नहीं है। जैसाकि ऊपर इंगित किया गया है, इसका वृत्तांत वणसूर जादूदान और जोशी आईदान की बहियों से नकल किया गया है। जिससे प्रतीत होता है कि प्रतिलिपिकार ने इन दो बहियों की नकल ही उतारी है, परन्तु अपनी ओर से सम्भवतः कोई वृत्तांत नहीं मिलाया है। अतः उसने ग्रंथ के अन्त में लेखन संवत् नहीं दिया है। जहाँ तक इस पूरी ख्यात की प्रतिलिपि के समय का प्रश्न है, क्योंकि ख्यात का वृत्तांत संवत् 1929 की जेठ वदि के प्रारम्भ में समाप्त होता है, अतः प्रतिलिपि का संवत् इसके पश्चात ही अनुमानतः 20-25 वर्ष बाद का रहा होगा।

इन दो प्रतियों में से (क) प्रति को मूल प्रति रख कर (ख) प्रति के ऐसे अंश पाठांतर के रूप में परिशिष्ट-1 में दिये गये हैं, जिनमें (क) प्रति से कुछ भिन्न या अधिक सूचनाएं अंकित हैं। परिशिष्ट-2 में अध्येताओं की सुविधा के लिए नामानुक्रमणिकाएँ भी दे दी गई हैं।

महाराजा मानसिंह व तखतसिंह की ख्यातों का सम्पादन-कार्य मुझे राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के विद्वान निदेशक डॉ० फतहसिंहजी ने कई वर्षों पूर्व सौंपा था। महाराजा मानसिंह की ख्यात के प्रकाशित हो जाने के बाद भी यह ख्यात कई कारणों से शीघ्र प्रकाशित नहीं हो सकी, परन्तु अब इसके प्रकाश में आ जाने से मुझे आशा है मुख्यतः मारवाड़ राज्य और सामान्यतः 19 वीं शताब्दी के राजस्थान पर शोध-कार्य करने वाले विद्वानों के लिए एक उपयोगी साधन-स्रोत उपलब्ध हो सकेगा।

इस ग्रंथ को राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान से प्रकाश में लाने के लिए प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ० पद्मधर पाठक और प्रकाशन विभाग के अधिकारियों का मैं हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस कार्य में पूरी रुचि के साथ सहयोग किया। डॉ० विक्रमसिंह राठौड़ और श्री भंवरलाल सुथार को भी साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने इस ग्रंथ के परिशिष्ट-1 को तैयार करने आदि में मेरा हाथ बंटाया।

—नारायणसिंह भाटी

संवत् १९०० का विवरण

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

श्री नाथजी साय छै

महाराज श्री मानसिंघजी बैकुंठ वास कीयो संमत १९०० रा भादवा सुद ११ पाछली रात रा जिण दिन सूं लगाय महाराज श्री तखतसिंघजी संमत १९२९ माह सुद १५ तांई राज कीयो जठा तांई री ख्यात।

संमत १९०० रा भादवा सुद १२ नै सूरज ऊगां[1] नाजर सालगरांम जनांना में जाय अरज करी—श्री हजूर साहब बैकुंठ पधारीया। जद रांणीजी श्री चौथा देवड़ीजी नांव श्रेजन कंवर देवड़ा अखैसिंघजी री बेटी गांव निमज रा जिका पिंडां नै उणां री डावड़ी[2] राधा नै पड़दायतीयां[3] च्यार फूलवेल जी, सुखवेलजी, चनंणरायजी, रीधरायजी जुमले जणियां छव ने सत आयौ सु श्री हजूर वीस तथा पचीस दिनां सूं मंडोर विराजता हा, सो किला सुं सतियां री असवारी सिरे बजार होय मंडोर श्री भैरूंजी रा मिंदर कनै नै बाग री पोळ बारणे ऊभा रया जितरे श्री हजूर साहबां रो खासो[4] बाग मांय सूं पधार गयौ। तरै श्री देवड़ीजी साहब श्री हजूर साहबां रौ सरीर देख सिंघवी सुखराज वनराजोत नै फुरमायौ—श्रीजी साहबां रौ सरीर ईसो किण कियौ? जदे सुखराज अरज कीवी कै आप सूं किसो छांनो है[5], जद पाछो फुरमायौ—श्रीजी साहबां रौ सरीर करण वाळां रौ ने म्हांसूं विछोवो[6] राखियो जिणां री लुगायां[7] रै ईणीज तरै[8] विछोवो रहिजो। इतरा आखर[9] फुरमाय सिंघवी सुखराज नै एक

---

1. सूर्योदय होने पर 2. दासी 3. पर्दे में रहने वाली रखेलें 4. विशेष प्रकार की पालकी 5. आप से क्या छिपा हुआ है 6. वियोग 7. स्त्रियाँ 8. इसी तरह 9. अक्षर।

रूपियौ दियौ । अर पछै उठा सूं मंडोर रै सिरे बजार हुय नागाधरी[1] ऊपर थड़ा[2] में असवारी पधार थड़ा में बिछायत १ हाथ ऊंची गादी, लारै मोटो तकियो नै पसवाड़ै २ तकिया मीसंद[3] मुखमल री हुई । सो डावे पसवाड़ै श्रीजी रै तो श्री देवड़ीजी विराजिया नै पड़दायतियां च्यारूं सांमे बैठी । अर डावड़ी राधा श्री हजूर साहबां रै लारै मोरछल लियां लारै ऊभी थी । अर सड़ा[4] रै लांपो[5] लगायो सो सारांई-उराइंउ दीसबो किया । जितरै अेक ऊपर सूं बंद तूट एक लकड़ो पड़ण लागौ । तरै डावड़ी राधा डावा हाथ ऊपर झेल लियौ[6], पड़ण दियौ नहीं ।

पछै नीमा सांम रा[7] मुतसदी उमराव खास पासवांन तो जोधपुर नै रवांनै हुवा, नै उठै जोसी वेदीयां पोरायत वगैरे रो सदामंद रैण रो सरसतो है[8] सु रात रा उठै हीज रया । सुद १३ नै तियौ[9] ने साथरवाड़ो[10] गिड़दीकोट में हुवौ नै उणहीज दिन अजंट लडलू साहब मातमपोसी करावण[11] ने गिड़दीकोट में आया । सो सारा उमराव मुसदी, षवास, पासवान हा जिणां नै खातिरी कीवी[12] । पछै कयौ कै हम नै श्री महाराज साहबां से सात मुलाखात राइकैबाग कीवी जिसमें खूब तेकीकात कर लीवी सो फितूर[13] है सो तो फितूर हीज है । उसका कोई सखस नांव लेवेगा तो चिन्हागढ भेजा जावेगा । अै समाचार सुणतां ही सारा लोगां नै तसल्ली आय गई । नै फितूर पंथी हा सो किताक तो पंचोळी जीतकरण जोसी खेतसी वगैरे तो सुद १२ नै ही बिनां भदर हुवां फितूर कनै परा गया हा । नै बाकी रा फितूर सांमल हा जिणां रा सारां रा ससत्र ढीला पड़ गया[14] । अर श्री नागणेचियांजी रो सेवग बिरधीचंद रो बेटा रांमजीड़ो नै दौड़ो जिकां नै गधा रा चुला सु नवचौकिया में बेसांण भदर कराया[15] अै भदर हुवा नहीं जिण सूं ।

अर पछै बारै दिनां रौ कांम सारो गिड़दीकोट में सरू रयौ नै औसर[16] री मिठाई करावण री भोळावण जोसी हंसराज, सिंभुदत्त रा नै हुई । और उणी बारै दिनां में भाटी परतापसिंघ फितूरपंथी[17] थो, सो गांव खेतासर तुंवरां रै हो जिण में आय अमल कर लियौ । जद तुंवरां अठे आय मुसायबां नै कयौ जद अठा सूं प्रतापसिंघ नै पकड़ण नै घोड़ा मेलिया, सो नास गयौ[18] ।

---

1. नागद्रह 2. स्मारक स्थल 3. मसनद 4. अर्थी 5. अग्नि 6. ऊपर ही पकड़ लिया 7. ठीक संध्या के समय 8. परम्परा है 9. मृत्यु उपरान्त तीसरे दिन की रश्म 10. मृत्यु के उपरान्त शोक व्यक्त करने हेतु जमीन पर बैठने व सोनें की रश्म 11. शोक व्यक्त करने को 12. आश्वस्त किया 13. राज्य का बनावटी दावेदार धोंकलसिंह 14. जोश ठंडा पड़ गया 15. सिर के बाल कटवाये 16. मृत्यु भोज 17. धौंकलसिंह का पक्षधर 18. भाग गया ।

पछै कारज[1] ग्रासोज वद ६ रौ ठेरियौ[2] खांड मण ६००) छवसौ मण गळी। ग्रर पांच मिठाई हुई। जिण ऊपर सिरदार छड़ीबंद जोधपुर ग्राय हाजर हुवा। वद ६ रो कारज हुवां पछै वदी ७ नै तळेटी रा मेलां में मांयला मेलां रै डागळै[3] चौक में बिछायत होय नै उमराव मुतसदी, खवास पांसवांन जनांना कांमदार वगैरे सैर रा ठावा-ठावा[4] महाजन चौधरी वनेचंद वगैरे सारा भेळा हुवा नै ग्रजंट लडलू साहब ही उठै ग्राया। सो ग्राय गालीचो विछियौ जिण ऊपर बैठा। सो बैस नै सारां नै कयौ कै ग्रब महाराज साहबां रै गद्दीनसीन करणां जिसकी सब जणै सला करकै हमकूं कहौ। जद बगड़ी ठाकुर सिवनाथसिंघजी कयौ—ईण में सला करणी कांईं जरूरत है। जो हकदार महाराज श्री भीवसिंघजी रा बेटा है जिका ग्रासी। दूजां रो कांईं दावो है। तरै बात सुण साहब पाछौ कयौ के ये सषस फितूर[5] कें वासते कैता है, सो लिखमीचंद ईनका पटा ग्रबी जवत करो। ग्रै समाचार सुण नै बगड़ी ठाकुर तो चुप हुवा। नै पछै सिरदार ग्राउवो, पोकरण ग्रासोप, रायपुर, निबाज, कुचामण, षैरवो, भादराजण, रास वगैरे कांमेतियां सुधा[6] मांयला मैलांण में जाय सला कर पाछा घड़ी ग्रेक सूं ग्राय बैठा। नै पछै ग्राउवा रौ वकील ग्रास तेजकरणजी कयौ के सारा ही सिरदारां री सला ग्रा है कै श्री बड़ा हजूर साहब री मरजी मोडासा सूं गोद लेण री ही, सो म्हांने मोडासा सूं गोद लाणौ मंजूर है। तरै साहब फेर कयौ तुम कूं सब जणां कूं मंजूर है जिण ऊपर सगळा[7] ही उमराव, मुतसदीयां, षवास, पासवांनां सगळा कयौ के हम लोगों कूं सब जणां कूं मंजूर है। जद पाछौ कयौ कै तुम सब लोग किले पर जाय कै श्री माजी साहबां से मालम कराय पीछा जवाब जळदी लावौ। जद मुतसदी, खवास, पासवांन सिरदारां रा वकील नै जनांना कांमेती सारा गढ ऊपर जाय ज़नांना दोढी ऊपर करावण मुदे नाजर सालगराम नै दोढीदार जनांनी दोढ़ी रो कोटेचो जैतकरण नै ईतला देकर डावड़ी ग्रषु नै छांगांणी राधा किसन री बेटी जियां नै खालसा री डावड़ी मनरूप री बहू चंपा नै बुलाय कर सब हाल तळैटी रा मैलां में वरतीयो[8] सो मालम करायौ। उस मालम होणे से श्री माजी साहबां छव ही सिरदारां ने मोडासा से गद्दीनसीन करणा मंजूर किया जब उस रोज तो स्यांम[9] होय गई ग्रर दूसरे रोज सब ही जणां नै जायकर ग्रजंट साहब नै कयौ कै श्री माजी साहबां नै मोडासा से गोद लाणा मंजूर है। जद

---

1. बारहवां दिन (मृत्यु भोज का दिन) 2. निश्चय हुग्रा 3. छत 4. खा़स-खा़स
5. धौकलसिंह 6. कर्मचारियों सहित 7. समस्त 8. घटित हुग्रा 9. संध्या।

साहब कयौ—श्री माजी साहब कूं अर तुम लोगां कूं सबकूं मंजूर है तो यां से मोडासे आदमी मेलो जिस कूं तयार करो सो हम भी बड़ा साहब सूं रपोट करते हैं। जिण पर मुसायबां वकीलां वगैरे कही कै सराधां[1] का सात दिन बाकी है जिसमें तो यां से आदमी रवांनै होय नहीं, नै सुद १ के रोज यां से रवांनै होय जायगा। जद साहब नै कया व्होत अछा।'

पछै संमत १६०० रा आसोज सुद १ ने ईतरा जणा मोडासे तथा अैमदनगर ने रवांनै हुवा जिणरी विगत—जनांनी दोढ़ी सूं :—

१ नाजर सालगरांम
१ दोढ़ीदार कोटेचो जैतकरण
१ वाकानवेस व्यास गोरूरांम

सिरदारां रा भला आदमी ठीकांणा ४२ बयाळीस रा ठावा[2] आदमी बयाळीस[2] मुतसदी—

१ दिवांण मुहता लिषमीचंद रो बेटो मुकनचंद
१ बगसी सिंघवी फौजराज री तरफ सूं सिंघवी जसरूप
१ वकील रावराजा श्री रिधमल री तरफ सूं श्री फतैकरण काका रौ बेटौ भाई
१ सिंघवी गंभीरमल री तरफ सूं भं. आलमचंद
१ व्यास हरषचंद री तरफ सूं प्रो. रिस रूपचंद
१ पटानवेस गोरधन रूप री तरफ सूं भाई नांनमल
१ रसोवड़ा रो दरोगो छांगांणी मूलचंद

षवास पासवांन—

१ धांधल पीरदांन
१ गैलोत भगवांनदास
१ सोड माधौदास
१ षीची जवांन सिंघ
१ दोढ़ीदार पेमकरण सोभावत
१ वणसूर फतैदांन भैरूदांन रो

इणां साथै आदमी घोड़ा ऊंट रथ पाळा आदमी वगैरे कर आदमी चढ़ियो पाळो २००० दोय हजार आसरे हा[3]।

श्री मांजी साहबां रो षास रूकौ इण मजमून लिषीजियो—'लालजी छोरू श्री तखतसिंघजी मोती जसवंत सिंघजी सूं म्हारा वारणा[4] बांचजो तथा श्री

१. देखें—परिशिष्ट में पाठ-भेद

T 1. श्राद्ध 2. प्रतिष्ठित 3. लगभग 4. अभिवादन।

जी साहबां रो फुरमावणो[1] थांनु षोळे लेण रो हुवौ थो नै हमार म्हांरौ ही फुरमावणो हुवौ नै सिरदार उमराव मुतसदीयां वगैरे सारां रौ पीण थांनै षोळे लेण री ठेरी है[2] सो थे सिताब[3] आवसो' ईण रूका हेठै छव ही श्री माजी साहबाँ रा दसखत लंबरवार[4] हुवा । विगत श्री माजी सारी—

१ माजी श्री बड़ा भटीयांणीजी वीकंमकोर रा
१ माजी श्री तूंरजी खेतासर रा
१ माजी श्री बड़ा देवड़ीजी नीमज रा
१ माजी श्री तीजा भटीयांणीजी जाखण रा
१ माजी श्री चौथा भटीयांणीजी गाँव सिरपुर
१ माजी श्री पाँचवा भटीयांणी जी गाँव ओसियाँ रा ।

नै भाई नथराज रै पटै गाँव गोठड़ो नागौर रो । नै ईण मुजब सारा उमराव मुतसदी षवास पासवाँनाँ री अरजी लिखीजी—

'स्वस्ति श्री अनेक सकळ सुभ ओपमा विराजमांनानं श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री श्री तखतसिंघजी महाराज कंवर जसवंतसिंघजी री हजूर मैं समसत सिरदार मुतसदी, षवास, पासवानां री अरज मालम हुवै । अपरंच खास रूको श्री माजी साहबां रो लिखावट मुजब सारा जणां रै आप नै षोळै लेण री ठैरी है सो वेगा पधारसी । ईण मजमून री अरजी लिख नीचे आखर[5] सारां रा जुदा जुदा अेक पाठा रा पांना तीन चेप नै कराय मेली । तिण री नकल अजंट साहब आपरा दफतर में ले लीवी । नै वे सारा जणा तौ आसोज सुद १ नै रवाना हुय गया था, नै अरजी आसोज सुद ५ डाक में रवांनै हुई पछै काती वद ७ नै मारवाड़ रा बन्दोबस्त मुदे[6] सिरदारां हाकमां नै कागद लिखीजिया--थे पींडां जावतो राखजो[3] ।

नै काती वद ६ भौम नै ईडर सूं चुवांण सूरजमल मुडोती रौ ठाकुर अजंट साहब रै नांवे मही कांठा रा अजंट लांग साहब री चीठी ले आयौ तिण रै साथै षटळो[7] घोड़ा ५० ऊँट २० रथ २ डावड़ीयां वगैरे रै वेसण नै, सो सूरजसागर डेरौ कर चीठी साहब नै बंचाय उजर कीयौ कै हक षोळै का ईडर का है[8] । तरै साहब मुसायबां नै बुलाय नै मुकालबो करायौ[9] । तरै ईडर वाळां कही-म्हां कनै षलींतो

---

1. कहना 2. निश्चय हुआ है 3. तुरन्त 4. क्रम से 5. हस्ताक्षर 6. लिये, हेतु 7. अमला, समूह 8. गोद आने का हक ईडर वालों का है 9. वाद-विवाद कराया ।

है सो तो श्री माजी साहबां कनै पेस करावो नै म्हांरी तरफ सूं कांण री दसतूर[1] कराय दो तो आज चढ़ जावां[2]। तरै माजी साहबां नै षलीतो मालम करायौ। तरै पाछौ फुरमायो—ईडर वाळां नै कै देवौ के संमत १८७५ में थांरा राजा अठे षोळै आवण रो उदम[3] कीयौ थो जद सूं थांरा ठिकांणा ऊपर श्रीजी साहबां री बेमरजी रही। हमे थे षलीतो लाया सु भालां नहीं[4]। षलीतो लिखण वाळां री भोळप[5] छै सो अब थे थांरै ठिकांणै जावौ। ईण तरै फुरमायौ तरै चढ़ गया।४

पछै काती वद में तळेटी रा मैलां में कमेटी हुई। जद अजंट साहब कयौ कै रयासत में खरच तो जादा है अर जमां कम है सो जमा खरच बरोबर चाहीये। जद आ बात मुहता लिषमीचंदजी विचार मन सूं हीज मुतसदीयां रा महीना वरसोंदा[6] रूपीया च्यार लाख री थी जिकी, नै जोगेश्वरां रा ने गवैयां रा पींडतां रा गांव तांबापत्र था सु सारा ही जबत कर दिया। अर श्री माजीयां रै नै पड़दायतीयां रै कसबे जोधपुर रा वेरा[7] किताकां रै था सु ही जबत कर दिया। तरै सारां ही मिळ श्री माजी साहबां नै कवायौ नै मुहता लिषमीचंद नै ओळंभो[8] दिरायौ कै थांनै मालक बिनां[9] आजीवकावां जबत कर देणी मुनासब नहीं है। तरै कसबा रा वेरा तो बाल[10] राखीया। नै बाकी री जबतां यां कीवी सो सारी सही रही५।

उणी अरसा में कुचांमण रा ठाकुर रणजीतसिंघजी अजंट साहब नै कही कै श्री नाथजी रा मिंदरां भोग बन्द हुवां नै केई दिन हुवा सो सरू हुवा चाहीजे जिण ऊपर साहब कयौ के तुम ईक रोजा बांध देवौ[11] जिसमें गुजर करेंगे।

अर उण ही दिनां रा अर सांमे दिवांण ने पूछीयौ के मोडासे अेमदनगर से डाक आई? तरै दिवांण कयौ—डाक आज आई जिण में लिखी कै म्है अठै था जिण दिन ही महाराज श्री तखतसिंघजी मातमपोसी करावण नै म्हांरै डेरै पधारिया। सुपेद पाग चोके रो सुपेद जांमौ, दसतूर मुजब बात कीवी। नै काती वद २ ने म्हांनै फुरमायी के अेक अजंट साहब रो षलीतो हिन्दी में आणों जरूर है। तरै उठा रा लिखणा सूं अठै साहब पिंडत गौरीदतजी नै बुलाय हिन्दी में षलीतो

---

1. शोक प्रकट करने का दस्तूर 2. विदा हो जावें 3. उद्यम 4. स्वीकार नहीं करेंगे 5. भूल 6. वार्षिक 7. जागीर में दिये हुए कुंए 8. उपालंभ 9. महाराजा की अनुपस्थिति में 10. बहाल 11. एक-एक दिन बारी से भोग की व्यवस्था करदो।

लिखाय वकील नै सूंप दीयौ। तरै वकील आपरा कागदां में घालियो तरै पोक-रण ठाकुर दिवांण साहब ने कयौ—औ दसतूर नहीं। तरै साहब कहि कै लिफाफा तुड़ाय के दसतूर हुवै ज्यूं करौ। तरै लिफाफो तुड़ाय नै दिवांणां रा कागद में षलीतो बिड़ायो[1]। षलीतो ईण मजमून लिषीजियो—

'स्वस्ति श्री सरब ओपमा विराजमांन सकल गुण निधांन राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री तखतसिंघजी बहादुर जोग्य कपतांन ज्यांन लडूलू साहब बहादुर लिखावते सिलांम वंचावसी। अठा रा समाचार भला छै आपरा सदा भला चाहीजे। अपरंच आप कूं महाराज मांनसिंघजी की गोद लेण के वासते सब सिरदार, उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन, जनांना कामेती मिलकर कहा कै महाराज तखतसिंघजी कूं गोद लेवेंगे। सो हमकूं भी मंजूर है। सो आप खुसी से जोधपुर पधारिये। सो महाराज तखतसिंघजी तो राज के पाट[2] बैठेंगे। अर कंवरजी कूं भी साथ लेते आणा। सो हम भी गवरनर जनरल साहब कूं लिखेंगे। सो जरूर मंजूर करेंगे।

और आपके मिजाज की खुसी के समाचार लिखावसी। संमत १९०० रा काती वद ६ संन अंगरेजी तारीख १४ मी अगटूंबर १८४३ ईसवी री मिती रो'। नै श्री माजी साहबां रो रुकौ वेगा आवण रो लिखीजियौ। सु इण सांमल बिड़ीजीयो[3]।

जोधपुर बिचै नै अमदनगर बिचै दिवांण डांक बैठाई— घोड़ा, ऊंट, रथ रेषळां री पांच-पांच कोस में बैठाणी। नै श्री हजूर रौ कूच काती वद १२ नै हुवौ गांव बरेव सोढां रो नै बड़नगर मुकांम दोय हुवा। नै सुद १ तांई देखण नै लोक घणा भेळा होय गया। तिण सूं सुद १ नै बड़नगर सूं कूच कर नै दरकूचां सुद ६ च्यार घड़ी दिन लारला गांव सालावास डेरा खड़ा हुवा जठै दाखल हुवा[६]।

पछै उठै सरवेत[4] राजधांनी रा मुसदी, षवास, पासवांन सारा हाजर हुवा रात रा रूसनाई हुवां सारां री निजर निछरावळ हुई। नै सुद ७ दिन उगतां ही षीड़किया पाग सपेद जांमो वगैरे सारी पोसाख राज री रीत मुजब पधराई[5]। नै उठा सूं घोड़े असवार होय आसरी बावड़ी कनै डेरा खड़ा हुवा जठै दाखल हुवा। अर अजंट साहब पेसवाई में गया। सु बिछायत होय अध घड़ीक तांई दोसती री

1. दिवान के कागजों के साथ खलीता लिफाफे में बन्द करवाया 2. राज्य-गद्दी 3. उपरोक्त पत्र के साथ में बन्द किया गया 4. समस्त 5. पहनी, धारण की।

वातां हुई । सिरदार, दिवांण, मुतसदी वगैरे सारा हाजर था । पछै उठा सूं अंबा-बाड़ी रा हाथी मुकना मंगल गज ऊपर असवार हुवा । लारै पोकरण ठाकुर बभूतसिंघजी बैठा अर असवारी रो लोक तथा सहैर रो लोक घणो भेळो हुवौ सो आस री बावड़ी बिचै नै राईकेबाग बिचै लोक ही लोक दीसण लाग गयौ । पछै राईकेबाग डेरा खड़ा हुवा जठै दाखल होय तासळी पधरीजी[1] । सारो साथ उठै ही जीमिया । पछै तीसरा पोहर रा हाथी गणेस गज रै हौदे विराजिया । लारै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा । सु मेड़तिये दरवाजै सिरे बजार होय असवारी फतै पोळ पधारी परंतु फतै पोळ बडा हजूर देवलोक हुवां पछै मंगळ रैती[2] तिण सूं उण दिन निमा सांम रा[3] असवारी पधारी तरै धाय भाई देवकरण किलादार थो सु कूंचियां लाय पोळ खोली तरै उठा सूं श्री हजूर खुले खासे विराजिया । वड़बेड़ा कळस वगैरे सदाबंद दसतूर मुजब वंदिजिया[4] सो घड़ी अेक रात गयां दोढ़ी रै मारग पधार फतै मेहल में दाषल हुवा ।

पछै सारां री निजर निछरावळ हुई । निजर हुतां उमरावां री हुवां पछै रावराजा बहादुर श्री रिधमलजी निजर करण लागा तरै मुहता मुकनचंद जी अरज करी के पैला निजर करण रो दिवांण रो सरसतो है । तरै इणरी दसतूरी सूं तेतिक[5] कराई । सुं पैली निजर करण रो दिवांण रो नीसरियो । तरै पैली निजर दिवांण लिषमीचंदजी री हुई । पछै रिधमल जी री हुई । तोपां री सिलकां १२७ हुई ।

काती सुद ८ जनांना में श्री माजीयां साहबां कनै मोती मैल री दोढ़ी हुय पधारिया । सो मातमपोसी वगैरे मिठास री वातां पौर सवा तांई कीवी । पछै तीजा पौर रा सूरसागर पधारिया । अजंट साहब जोसीयां री बगेची तांई सांमा आया । पछै सूरसागर पधार घड़ी १ तांई दोसती री बातां कीवी । पछै पाछा उठा सूं चांदपोळ हुय फतै पोळ रै मारग गढ़ दाखल हुवा ।

काती सुद ९ अजंट साहब कीले ऊपर आया । सो फूल मैल में बिछायत होय उठै विराजिया । पौर अेक इकंत रया[6] । पछै अजंट साहब सूरसागर गया । पछै सैर बाले दरबार होय मुसदीयां सगळां री तथा षवास पासवांनां री तथा छोटा चाकरां नै परणियो सालगरांम दोढ़ीदार नै सोभावत पेमकरण ओळखाय नांवे पर नांवे निजर निछरावळ कराई ।

---

1. भोजन किया 2. बंद रहती थी 3. ठीक संध्या के समय 4. वंदन की रश्म हुई 5. तहकीकात 6. एकांत में रहे ।

काती सुद १० श्री हजूर साहव श्री माजी साहब कनै पधारिया । तरै फुरमायौ के ठावा[1] चाकर जणां ३ तीन श्रीजी री बंदगी में कलकते गया है सु उणां रै नांवै खास रूका खातरी रा लिखीजिया चाहीजे । जद रूका तीन श्री माजी साहबां रा खास दसखतां रा नै नीचै श्री हजूर साहबां रा दसखत नै नीचै मिती श्री माजी साहबां रा दसखतां री सिंघवी कुसलराजजी व्यास सुरतरांम जी मुहता लिषमीचंदजी जणा तीनां रै नांवे अेकण मसौदे जिण री नकल—

आसोपा व्यास सुरतरांम सूं म्हांरी दिलासा खातरी वाचजै । नै थे श्रीजी री बंदगी पोंछण सारूं गया । नै श्रीजी थांनै सुभचितक जांण नै मेलिया हा । नै विसवास सूं दिन निकलवो किया[2] जितै आ हुय गई । सो तो नाजोर बात सूं जोर नहीं । नै हमै लालजी श्री तखतसिंघ जी पधारिया है सो थे श्रीजी रा मरजीवांन हो सो उण मुजब हिज वरतण राखसो[3] । तूं खुसी रहिजे मैं थारै कांनी री लालजी नै कहिसूं । हमै वे उठै बैठा है सो बुलावणा जिण माथै लाल जी पूठी अरज करी सु हमार तो चार रात उठै ही रखावौ, राज पूरो जमै जितै, सो हमै थे उठै हीज रहिजो । मैं बुलावां जद आईजो ।

श्री माजी साहबां थांनै लिखी है सो थे घणा खुसी रहिजो नै फेर श्रीजी साहब रा सांमधरमी छौ.........परवांणे रैजो मांरी खातरी है । ....

मिति काती सुद १० ।

अे रूका तीनूं काती सुद ११ नै भोजनसाळ में बैठां, फीर अंबावगसजी आया सूं अेक रूको तो सिंघवी सुखराजजी नुं दियौ नै अेक रूको मुहता सिवचंदजी नुं दियौ नै अेक रूको व्यास नरोतमरांमजी नै दियौ । सो अदब बजाय माथै चढ़ाय लिया नै अरज कराई कै बिनां अरज करायां आप धणीयाप फुरमाय चाकरां नै याद रखाया सो विरद इसो हीज है ।

पछै उण ही दिन साहब वकीलां नै कयौ के अब मुलक का बंदोबसत ईनसाफ सब श्री महाराज साहब के हाथ से होणा मुनासब है । पछै काती सुद १३ मुहता लिषमीचंदजी सूरसागर जाय साहब नै कयौ के आगे म्हे फड़दां बणाई ही जबतां बाली री[4] तिण रो कांम आपरी मदद रयां चलसी । जद साहब कही बोत अछा । हमारी मदत है । जरां उण ही दिन मुहता लिषमीचंदजी गढ़ ऊपर आय नै पोकरणा विरांमण दोढ़ीदार प्रोहित वालजी रा वंस रा वीरधीचंद, कीरपारांम, वनु नंदु धुनो जैतमल वगैरे सारां री श्री हजूर में अरज

1. प्रतिष्ठित 2. दिन व्यतीत होते गए 3. व्यवहार रखोगे 4. गांवों की जब्ती तथा बहाली की सूचियें ।

कर दोढ़ी मने कराय दीवी[1]। नै पणीया सरूपरांम, सालगरांम री दोढ़ी मनै नहीं कराई।

काती सुद १४ मु० मांनीरांम गंगारामोत नै सिंघवी जवांनमल, सिंभुमलोत नै सिंघवी पनराज चैनकरणोत ईतरा जणां ऊपर फितूर सुं सटपट राखण रौ टैलो[2] आय गयौ तिण सूं पकड़ण रो हुकंम दियौ नै उणां नै खबर लाग गई तरै भाग नै श्री नटवरजी रै मिंदर तीनूं आसांमी जाय बैठा। तरै मिंदर रे दोळी चौकी बैठाया दीवी। जिण रो गुसांईजी महाराज रे पूरो धरमसंकट रयौ। तरै कुचांमण ठाकुर रणजीतसिंधजी गढ़ ऊपर जाय अरज कीवी के सरणा री मरजाद रही चाहिजे। अर ईंणा दोढ़ीदारां री बिनां कसूर दोढ़ी मनै हुई है सो बुलाय लिया चाहीजे। नैं रावराजा रिधमल पिण ईण दोनूं वातां रो अरज कीवी जिण सूं हुकम हुवौ सो मिंदर री चौकी उठ गई। नै दोढ़ीदारां री दोढ़ी खुलासे हुय गई[3]।

नै सोझत रा महाजन रै मांग रौ झगड़ौ हो सो हाकमी दफतरी मुता बछराज रै थी। सो ना तो उण रौ इनसाफ कियौ ना उण रो जोधपुर में पतो लागण दियौ, जिणरी अरज रावराजा बहादुर श्री रिधमलजी श्री हजूर में कीवी। तरै फूल रै झरोखै विराज उण महाजन नै फतैमैल में बुलाय रूबरू हकीकत आप सुण नै उणरौ ईनसाफ कर नै बछराज नै मोकूब कियौ[4]। जिण सूं दुनियां में बड़ी नामबरी हुई। अर सैर सारै नै मुलक सारै जांण लीवी कै जिसा महाराज वखतसिंघजी न्याव करता जिसा ही अै महाराज न्याव करसी।

संमत १६०० रा मीगसर वद १ जै मींदर समाधां जै चांमंडाजी नागणेचियां रै मिंदर हुई नै भेंट सरसता मुजब हुई। पिंडां पधार भेंटां करी। पछै मीगसर वद ३ नै अेमदनगर सूं जनांनौ लावण रो हुकम दिवांण रा बेटा मुकनचंद नै हुवौ। नै सिरपाव कड़ा, मोती कंठी वगैरे हुई। सु वद ५ नै चढ़िया। इतरा जणा लेवण नै साथै गया—

नाजर १, साळगरांम १, कोटेचो वभूतकरण १, खालसा री डावड़ियां ४ च्यार, मनरूप री बहू वगैरे नै उवाकानवेसणी में बाईरांमजीं री बेटी कुंनी वगैरे।

---

1. ड्योढ़ी पर उपस्थित होने पर पाबंदी लगा दी 2. आक्षेप 3. ड्योढ़ी पर हाजिर होने पर रोक हटा दी गई 4. पद से हटा दिया।

मीगसर वद ६ रावराजा रिधमलजी नै बैठण रो कुरब हुवौ। नै छोटा बेटा राजमल नै पालषी १, कड़ा १, मोती १, मोतियां री कंठी १, सिरपेच नै राव पदवी ईनायत हुई। रिधमल रै बड़ा भाई तेजमल रै षोळै दियौ तिण सूं।

और दिन तीन पैली बड़ो साहब सदर लेन तो हवा षावण कैंप री वीलायत नै गयौ जिण नै पोंछाय सिकतर[1] फीरंच साहब आबूजी सु पाछो आवतो बड़ा साहब रा वकील वगैरे रा षटला समेत पाली सु आयो तिण री पेसवाई में सांमा कोस १ तांई कुचांमण ठाकर रंणजीतसिंघजी, नींबाज ठाकर सवाईसिंघजी, बषसी सिंघवी फौजराजजी, वकी(ल) रिधमलजी गया। साहब परवारो सूरसागर लडलू साहब कनै गयौ। नै उणी दीनै श्री महामिंदर सु फेरणीयो[2] फतेषां घोड़ा ३ तीन श्री हजूर में नीजर लायौ नै फेर नै हाजरी दीवी। जीण नै रूपीया ३६, (१५) फेरणीयां नै (११) चरवादारां नै। ईनांम रा तथा चरवादारां नै दीया।

१ घोड़ो नटवो गुदार कागडो, १ घोड़ो चीतो भंवर, १ वांण पचकल्याण कमेत। सो चीतो रांणावत गंभीरसिंघजी नै ईनायत, बांण कीलादार अनाड़सिंघ नै ईनायत, नटवो १ असवारी में रयौ।

मीगसर वद १३ नागौर री हाकमी मेहता सिरदारमल रै नांवै हुई।

मीगसर सुद ६ श्री लिषमीनाथजी महाराज घोड़ा नव सूं पांचूं सूं सूरसागर री पोळ रै बारणे उतर नै साहब सूं ईतला कराय मुलाकात कीवी। जद साहब कयौ—तुमारा आणा कैसे हुवा? जद पाछौ कयौ—आपके पास आये हैं। सो हमारा ठिकांणे बैस जावे जैसा आप बंदोबसत करावै। जद साहब पाछौ कयौ – तुमने बोत नादांनी करी सो विगर इतला चले आये। सो अब यां से जलदी चढ़ जावो नहीं तो तुमारे हक में ब्होत बुरा होगा। जद उठा सूं चढ़ छांगाणियां री बगेची में दिन ४ रया नै तासली वगैरे री सरबंरा[3] सारी बड़ी माजी श्री भटीयांणीजीसा रै नोरा सूं आई। नै पांचवे दिन इणां रै पटा रो बिकानेरी रो गांव पांचु थो जठै चढ़ गया।

मीगसर सुद १० सुकर श्री हजूर साहब राजतिलक विराजिया। दिन घड़ी १४ चढ़तां मोरत[4] थो, कुंभ लगन में, अर इण रीत सूं हुवौ जिण रो

---

1. सेक्रेटरी 2. घोड़ों को तालीम देनें वाला 3. भोजन आदि की व्यवस्था
4. मुहूर्त।

विगत—पैले दिन सुद ६ रौ तो श्री हजूर साहबां रै व्रत हुवौ। नै सभा मंडप काठ रौ बंगलौ हुवौ। नै च्यारां कांनी तोरण लाग मंडप हुवौ। नै सरबतोभद्र मंडळ मंडियौ नै ग्रै सांति[1] नै आदले विधि पूरबक सारो होम हुवौ। नै सिणगार चौकी ऊपर विछायत होय अदगजो बिछीज ऊपर सिंगासण नारां[2] वाळो सोना रौ पधरीजिया। नै सुम्यांनो सोना रा वांसां वाळो जरदोजी रा कांम रो मोतियां री झालर वाळो सिंघासण ऊपर खड़ो हुवौ। सो होम पूरणाहुति कराय नै श्री हजूर साहब सिणगार चौकी ऊपर सिंघासण ऊपर विराजिया। पछै व्यास हरषचंदजी तिलक कीयौ। नै मोतियां रा आषा चेपीया[3]। पोसाष केसरिया पाग वगैरे पधरावण नै नेजवार सिरपेच मोतियां री फूलमाळा वगैरे सारो जवारात तथा गैणो पधरावण ने हो[4] सो तिलक हुवां पछै बगड़ी ठाकुरां तरवार बंधाई। पछै जोसी वेदीयां मंत्रां सूं राज्याभिषेक कियौ। पछै पैली तो उमरावां री निजर निछरावळ हुई। पछै दिवांण मुतसदी, षवास, पासवांन, जनांना कांमेती वगैरे सारां री निजर निछरावळां हुई। नै तोपां री सिलका १२० हुई।

पछै उणी हीज बखत मुदियाड़ रा बारठ चैनसिंघजी नै लाषपसाव ने री सदामंद मुजब सिलांमति बोलीज किताक पांवडां तांई पोंछावण रो सरसतो हुवौ। नै उण हीज दिन दिवांण मुहता लिषमीचंदजी रो बेटा मुकनचंदजी नै किलादार, धायभाई देवकरण रा बेटा परतापकरण नै कड़ा, मोती, पालषी, नै रांवराजा रिधमलजी रा भाई फतैकरण नै कड़ा मोती हुवा।

मिगसर सुद १३ सिरदारां री आसांमियां रै मातमपोसियां[5] हुई। भादराजण ठाकुरां बखतावरसिंघजी री, लाडणू ठाकुरां मंगलसिंघजी री, आउवै ठाकुर कुसाळसिंहजी री, माजी री नै भेसवाड़े ठाकरां…………, नै जुसरी ठाकुरां रै माजी री जावले ठाकुरां………… री, नै कपतांन वगैरे री जुमले जगा पनरे हुई। मिगसर सुद १४ नै जोधपुर सैर री कोटवाळी पंवार सेरकरण अेमदनगर रा रै हुई।[७]

संमत १९०० रा पोस वद ७ अेमदनगर सूं जनांना सिरदार सारा आया, तिणां री विगत—

१ महारांणीजी श्री राणावतजी साहब इलाके देवलीया रा उमराव गांव धमोदर रा ठाकुर रोडसिंघजी री बेटी।

---

1. गृह-शान्ति 2. नाहर 3. मोतियों के अक्षत ललाट पर छिपकाये 4. पहना हुआ था 5. शोक व्यक्त करने के लिये सम्बन्धित व्यक्ति के निवास स्थान पर जाना।

१ रांणीजी श्री भटियांणीजी गांव ओसीयां रा भाटी देवीसिंघजी री बेटी ।

१ रांणीजी श्री चावड़ीजी ईलाषे गुजरात गांव बणासो तथा बणासा री भायप में ।

१ पड़दायतजी श्री लछरायजी ओसीयां रा पोउ आसु री बेटी । नै उणां रा बाभा मोतीसिंघजी जनम अेमदनगर रो ।

ईतरा जणा आया । जिणां रै डोळ, पालषी किला ऊपर सूं सांमा मेलिया, सो विराज किले दाखल हुवा ।

पोस सुद ९ गांव पूंदले नवो तलाब बंदावणो सो देखण नै श्री हजूर साहब नै अजंट साहब पधारिया ।[८]

पोस सुद १३ लाठ साहब रो षलीतो आयो जिण री तोपां री सिलकां हुई, तरै गोलमदाज अेक उड गयौ ।

पोस सुद १५ दिवांण सूरसागर जाय अजंट साहब नै कयौ—म्हांरा सूं कांम चालै नहीं । तरै मुनसी फजर रसूल नै मेल अरज़ कराई—इण कनै कांम कराणो होय तो खातर करा दिरावो[1] अर दूसरा कूं दिराणे की मरजी होय तो दूसरां कूं देवौ । जद दिवांण नै बुलाय नै खातर कर दीवी ।[९]

संमत १९०० रा माह वद ११ साहब अजंट वकीलां नै बुलाय नै कयौ— हमारी तो बदली हो गई । सो हमारी अेवजे गीरांट साहब आवेगा । सो वो वेमार है सो उसकी अेवज क़पतांन फिरंच साहब रेहेगा । नै हम जैपर जावेगा । अै समाचार वकील आय श्री हजूर में मालम कीया । जद दिवांण नै मेल सीसटाचार करायौ । नै दूजै दिन मिजमांनी रौ फुरमायौ । सु वद १२ मिजमांनी हुई । नाच-कूद, रंग-राग हुवा । पछै जैपुर री अंजट साहब सीष कीवी । नै सिरदारां मुतसदियां री भोळावण दीवी ।[१०]

माह सुद १ दिवांण मु० लिषमीछंद रै बाप लारै सैर सारणि हुई. जिण री षांड मंण ४३०) गळीजी ।

---

1. इसको आश्वास्त कर दो ।

माह सुद ५ अजंट फिरंच साहब आयौ नै सदामंद मुजब पेसवाई हुई। पछै दूजै दिन साहब किले ऊपर आयौ। मामूली पेसवाई हुई। मिठास री वातां कीवी।

पछै उण हीज दिन श्री हजूर साहबां रौ ब्याव[1] विकमकोर रा भाटी दलकरणजी री बेटी सूं हुवौ। जिण रौ विनायक पैले दिन गाजा-बाजां सूं मांयलाबाग में थापत हुवौ। नै सुद ६ निमा सांम रा किला सूं परणीजण नै मांयलेबाग श्री हजूर री असवारी पधारी जिण में सिरदार, मुतसदी, षवास, पासवांनां जलूसी पोसाष कर असवारी में हाजर हुवा। पछै परणीजिया। पछै पाछा म्हाडोळ में जनांना समेत विराज नै सिरे बजार होय आतसबाजी छूटतां बड़ा हंगामा सूं किले दाषल हुवा। तरै तोपां री सिलकां हुई। जिण सूं कीणी तोप रो दाट सीलगतो हुवो मुगधड़ा वागर केई वरसां रा सांमांन री किला में थी जिण में जाय पड़ियौ। सो वागर लग गई। सो बुजावण रै वासतै श्री चावंडा माताजी रा टांका रौ नै ईमरत वाव रो नै आतमारांमजी रा टांका रा जळ सूं बुजाई। सो दिन तीन च्यार दिनां सूं बुजी नै मजूरी रा रूपीया हजार आसरे लागा।[2] नै उणीज दिन सुद ६ नै पाछली रात रा धन लगन में ओसियां वाळा श्री भटीयांणीजी रै महाराज कंवार जोरावरसिंघजी जनमीया। जिण री सिलकां उछब वगैरे महाराज श्री मांनसिंघजी रै महाराज कंवार श्री सीधांनसिंघजी हुवा तिण रो उछव हुवो जिण सरसते उछव हुवौ।[११]

माह सुद ११ बड़ा हजूर श्री मांनसिंघजी री सालग्रै[3] रो उछव[4] थो। सो सदामंद मुजब लांग, डोडा दिरीजिया। नै निजर निछरावळ हुई।

नै उण ही दिन मुता लीषमीचंदजी रै औसर हो सो म्होर श्री हजूर मंगाय दोढ़ी धराय दीवी।[5]

लिषमीचंद रो मनसोभो[6] श्री हजूर साहब नै हवेली पधरावण रो हो[7] सो मोकूब रयौ[8] नै सुद तेरस री साढी वारै न्यात जीमी।

---

1. विवाह / 2. करीब एक हजार रुपये लगे 3. साल गिरह 4. उत्सव 5. दिवानगी जब्त कर ली 6. विचार 7. हवेली में बुलाकर स्वागत करने का था 8. स्थगित रहा।

संमत १९०० रा फागण वद १ षींवसर रा ठाकुरां नै पालषी, कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी नीवाजस हुई।

फागण वद २ भोम नै महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी रो दसोटण रो उछव[1] सदावंद दसतूर मुजब हुवौ।

फागण वद ३ बुदवार दिवांणगीं सिंघवी गंभीरमल रै हुई और सीरपाव ईण मुजब हुवौ—

१ घोरों लपां रौ जांमो कड़ाबल
१ दुपटो कोरदार
बाकी कड़ा, मोती, कंठी, सिरपेच, पालषी वगैरे हुवा।[१२]

फागण वद ४ गुर नींमां सांम रा श्री गंगसांमजी कुंजविहारीजी, मोतीबाई रै मिंदर श्रीजी सा दरसण नै पधारिया।

फागण वद ५ भृगु मूता लिषमीचंदजी पोकरण हवेली सरणै बैठा। नै बेटा मुकनचंदजी नींबाज री हवेली बैठा।

फागण वद ६ रास ठाकुर भींवसिंघजी नै घर री सीष हुई। तरै ईण मुजब ईनायत हुई—

कड़ा १, मोती, मोतियां री कंठी १, हाथी, पालषी।

फागण वद १२ गुर अजंट फीरंच साहब किले पर आया। श्रीजी साहबां सूं २ घड़ी इकंत रया।

फागण सुद १ सोम श्री हजूर साहबां री असवारी नाळे री बारी हुय सूरसागर पधारिया। सो अजंट साहब सूं २ घड़ी बातां कीवी। पछै पाछा पधारिया। नै अजंट साहब साथै आया, सो सहैर में तळेटी रा म्हैलां पधारिया और अजंट साहब कैई कै महाराज साहब अदालत का कांम यां होना चाहिऐ। कांहु कै दादु फीरीयादू[2] किले पर पोंहच नहीं सकते। जद श्री हजूर साहब पिण मंजूर फरमाया। साहब सूरसागर गया और श्रीजी साहब किले दाखल हुवा।

---

1. पुत्र जन्म के दसवें दिन होने वाला उत्सव 2. दाद फरियाद करने वाले।

संमत १६०० रा फागण सुद ४ श्री हजूर साहबां री असवारी बखत सागर री नेहर बंधे जठै खासे विराज पधारिया । नै अजंट साहब पिण साथै था, सो निजर गुधराय[1] नीमां सांम रा किले दाखल हुवा और बाद में रात रा फागण रा तमासा हीर-रांझो वगैरे हुवा ।

फागण सुद ५ जनांनो फाग हुवौ । नै सूरजपोळ तांई जावतो हुवौ ।

फागण सुद ८ अजंट साहब बहादुर किले पधारिया और सीरदार, मुतसदी वगैरे सारा हाजर हुवा और मरदांनो फाग हुवौ ।

फागण सुद १४ कोटै महारावजी श्री रांमसिंघजी जैसलमेर परणीजण गया था, सो श्री हजूर साहबां सूं मुलाषात करण री षेवट कर रया था सो रावराजा रिधमलजी री अरज सूं मंजूर हुई । सो कोटे महारावजी गांव मेलांणे डेरा था सो उठां सूं जोधपुर आया सो श्री हजूर साहब ३२ भेरां रा षासा[2] में वीराज उमराव, मुतसदी, षवास, पासवांन वगैरे हाजर था ।

जलूसी असवारी कराय माई मुरातब[3] समेत सेषावतजी रा तलाव सु पांवडा १० आगै सांमा पधारिया । मुलाकात हुई, दसतूर मुजब तोपां री सिलकां हुई ।

और पाछा पधारतों आगे तो षासो महाराज साहबां रो, नै लारै महारावजी रौ । सो मारावजी रा डेरा तो राईकेबाग और उदैमिंदर बिच में था जठै सीष कर नै टळ नै दाषल हुवा । नै श्रीजी साहबा किले दाखल हुवा ।

फागण सुद १५ महारावजी घोड़ै असवार हुय जलूसी असवारी सूं सिरे बजार हुय सूरसागर गया । और अजंट साहब मीया रै बाग कनै बड़ला रौ रूंष है जठै पेसवाई में आया । पछै साथै सूरसागर दाखल हुवा । १ घड़ी तक विराजिया रया । मांमुली वांतां हुई । पछै पाछा सिरे बजार रै रस्ते डेरां दाखल हुवा ।

संमत १६०० रा चैत वद २ कोटे महारावजी जलूसी असवारी कर रूपे रै खुले खासे[4] विराज सिरे बजार हुय किले आया । खासो सिणगार चौकी रै परली तरफ बोळीयो[5] नै श्री हजूर साहब दोढ़ी तांई सांमा पधारिया । पछै मांय

1. देख कर 2. एक प्रकार की बड़ी पालकी जिसे ३२ कहार उठाते थे 3. एक विशेष प्रकार का लवाजमा 4. खुली पालकी 5. छोड़ दिया गया ।

पधार फतै म्हैल में बिराजिया बरोबर, जिण में कोटा रा महारावजी बैठा, डावी बाजू

चैत वद ३ श्रीजी हजूर साहबां री असवारी महारावजी रै डेरै पधारिया और महारावजी डेरै सूं पांवडा २५० अंदाज सांमा पधारिया। नै उणीज दिन महारावजी रै फौज री मिजंमानी सीरै रै जीमण री गिरदी कोट में हुई। षांड मण ५०) गळी। नै उठैईज सारां नै जिमाया। नै महारावजी पींडां गोळ री घाटी ऊपर किले आया। फतै मैल में पांतीयो हुवौ, भेळा अरोगिया। पछै महारावजी सीष कर डेरा पधारिया। और श्री हजूर साहबां री असवारी कोटे वालां रै डेरै पधारिया था जद मल्लां[1] री कुसती और तवायफां री हाजरी हुई। तरै मल्लां नै तो १,४००) नै तवायफां[2] नै २००) ईनाम रा दिरीजिया।

चैत वद ८ सील रौ पुजापौ तथा घुड़लै रौ मेळौ देखण नै श्री हजूर साहब अजंट साहब नै साथै ले तळैटी रा म्हैलां पधारिया। झरोकां में विराजिया रया सो पाछा रात पोहर १ गयां किले दाखल हुवा। नै अजंट साहब सूर-सागर गया।

चैत वद १० श्री हजूर साहब तळैटी रा म्हैलां पधारिया नै अदालतां री कारवायां री हाजरी लीवी।

चैत वद ११ अजंट साहब किले आया। नै सांम रा ४—पाली, सोजत, जैतारण, मेड़तौ सांरूगनार नै रादाकीसन नवा सेठ रै सायरां ईजारै हुई।

संमत १९०० रा चैत सुद ३ गिणगौर रो मेळो देखण[13] नै श्रीजी साहब किले पर सूं गोळ रै घाटी रै रस्ते हुय तीजा मंदिर री रावटी पर विराजिया। तवायफां वगैरां कनै घूमरां दिराई और रावराजा रिधमल रां बेटा फौजमल रै कड़ा, मोती, सिरपेच कीवी। सोने री जिनोई साटां, बैठण रौ कुरब नै पालषी हुई और दफतर री दरोगाई पंचोळी छोगालाल रै हुई।

चैत सुद ५ श्री हजूर साहबां री असवारी प्रभात रा गांव देईजर रो तलाब देखण नै घोड़े सवार हुय पधारिया। नै पाछा पधारतां बालसमंद विराजिया। नै तलाब में फूल नालेर नषाय गोळी पांवचाई।[3] और उठै हीज सारा साथ नै मिठाई मंगाय जिमाया। नै तासली पधरीजी। २ पौर विराजिया। पछै उठा

---

1. पहलवान 2. नर्तकियें आदि 3. तालाब में नालियर तथा फूल आदि तैरा कर बन्दूक से निशाना लगाया।

सू चीर जांमो मंडी पोड़ाई। सेर गज हाथी पर असवार हुय सूरसागर पधारिया। साहब पेसवाई में दसतूर मुजब सांमा आया। १ घड़ी तक विराजिया। पछै अजंट साहब साथै नै घोड़ा सवार हुय बाईजी रै तळाब रो कमठो[1] देख गोळ रै घाटी मारग किले दाखल हुवा २ घड़ी रात गयां। और अजंट साहब सूरसागर पधारिया।

चैत सुद ६ गुर सिंघवी कुसलराज नै सदर लैन साहब संमत १८९६ में मुलक बारै काढीया हा[2] सो अबारा कलकते बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री बखत में ३ जणा– १ सिंघवी कुसलराज, १ व्यास सूरतरांम, १ भंडारी लिषमीचंद। सो लिषमीचंद तो कासी में रांमसरण हुवो। नै बड़ा साहब थरसबी री चोठी ले कुसलराज अठै आय पैला तो अजंट साहब सू मिळीया नै पछै श्री हजूर में मुजरो हुवौ। नै सींजा रा गवरां री बोळावणी मांयलाबाग में हुई। जठै गोळ री घाटी ऊपर खुले खासे विराज मांयलेबाग दाखल हुई। और पातरियां, भगतणियां री घूमर दिराई। नै पछै अजंट साहब साथै नै घोड़ा असवार हुय सिरे बजार रै रस्ते किले दांखल हुवा। अजंट साहब सूर-सागर पधारिया।

चैत सुद १२ गुसांईजी श्री गोपीनाथजी माहाराज नै लालजी श्रीक्रसन जीवणजी माहाराज नै खुला खासा में विराजमान कर किला पर दाखल कराया। नै श्रीजी साहब सिणगार चौकी तक सांमा पधारिया। नै गालीचां उपर पग मंडां कराया, और दौलतखांना रा चौक में गालीचां ऊपर विछायत सदाबंद मुजब हुय विराजिया। नै श्री हजूर सू भेंट हाथी, पालषी, कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी। नै भेंट रा कुल ६३६) आया। नै सारां नै दुपटा गुसांईजी महाराज दिया।

भादराजण ठाकुर ईंदरभांणजी नै घर री सीष हुई जद हाथी, पालषी, सिरपेच, कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी वगैरे ईनायत हुवा।

चैत सुद १३ अजंट फिरंच साहब लाठ साहब रो पलीतो हजूर साहबां रै नांवै जोधपुर री मुबारकी रो लायो सो पेस कियो।

संमत १६०० रा वैसाख वद १ मुहता लिषमीचंद नु लेखो हिसाब पूछण वास्ते गढ़ ऊपर बुलाया सो हाजर हुवो।

---

1. निर्माण कार्य 2. मारवाड़ से निष्कासित कर दिया था।

गांव छींपीयो खाली करावण वास्ते राज री फौज गई, सो मांय आवण दिया नहीं। जिण ऊपर विसेस ताकीद हुई सो सांवठी फौज विदा कीवी। सो खाली कराय लियौ। नै खालसै कर लियौ। नै जागीरदार २ जिणां रा कीसा सूं खालसै हुवो नै दोयां नै जुदा-जुदा गांव दिया। ठाकरां रणजीतसिंघजी नै मेड़ता रौ गांव भैरूंदो ठाकुर रिड़मलसिंघजी नै जोधपुर रौ गांव पल्यासणी दे नै झगड़ौ मिटायौ।

वैसाख वद २ तथा ३ सोभावत उमेदकरण नै सिरपाव पालषी, कड़ा, मोती, कंठी, सिरपेंच सोने री साटां अेमदनगर जावण री सीष हुई जद ईनायत हुई। सो वद ५ नै अेमदनगर नै रवांनै हुवा।

वैसाख वद ८ श्री हजूर साहवां री असवारी षासे विराज नाळे री बारी रसते हुय पैला तो माजी रै बाग १ घड़ी विराजिया। पछै सूरसागर पधारिया। नै उठै सूं पाछा पधारतां रांमेश्वरजी रा दरसण किया। नै उठै सूं पाछा भूतेश्वरजी रा दरसण किया। भेंट निछरावळां कीवी। नै उठै भूतेश्वरजी री गाळ[1] में श्री जवरेश्वरजी रो मींदर जठै अेमंदनगर रा गुसांई उदैपुरीजी विराजता था, जिणां कनै पधारिया १ घड़ी तांई वातां हुई। पछै उठै सूं घोड़े असवार हुय नाळे री बारी रै रस्तै पधारता था, सो पनां रौ कांठलो[2] श्रीजी साहबाँ रै पधरावण नै थो सु तूट नै पड़ गयौ। सो सोध नै लाया। जिणां नै ईनांम दियौ — २ तथा ४ नग लादा न्हीं।[3]

वैसाख वद ६ रायपुर ठाकुर माधौसिंघ नै हाथी, पालषी, कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी सिरपेच ईनायत हुवो। घर री सीष लीवी, जिण सूं।

संमत १६०० रा वैसाख सुद ३ पोहोकरण ठाकुर वभूतसिंघजी नै परधांनगी रो सिरपाव हुवो। हाथी, पालषी, कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी वगैरे। अौर कांमेती भायल कुसालसिंघजी नै कड़ा, मोती हुवा। अौर बधारै रा गांव रो हुकम हुवो।[4]

वैसाख सुद ५ नींबाज ठाकुर सवाईसिंघजी नूं नींवाजस घरां रै सीष री हुई। कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी, सिरपेच, हाथी, पाळषी। नै कांमेती जोसी फतैचंद नै कड़ा, मोती।

---

1. दो पर्वतों के बीच का संकरा स्थल 2. गले में पहिनने का आभूषण 3. मिले नहीं
4. मौजूदा जागीर को बढ़ाने का हुक्म हुआ।

वैसाख सुद ८ श्री हजूर साहबां री असवारी घोड़े असवार हुय फतैपोळ मारग श्री बालकिसनजी रै मींदर पधारिया सो दरसण री जेज थी[1], सो आगे श्री गंगासांमजी रै मींदर दरसण कर आगे मेवासा वाळां रो आसण वीसनपुरा में हो जठै पधारिया। नै म्है संकरगीरीजी रै भेंट ७१५) किया।

वैसाख सुद ९ तथा १० अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ी ४ ईकंत रया। पछै पाछा सूरसागर गया। सुद १३ श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर मारग हुय सुरज वेरे पधारिया। बाग में विराजिया नीमांसींमो पाछा किले दाखल हुवा।

वैसाख सुद १४ श्री नरसींगजी रा दरसण करण वास्ते किले सूं घोड़े असवार हुय कचेड़ी रै डागळे विछायत हुई जठै विराजिया। ४ घड़ी रात गयां पछै पाछा किलै दाखळ हुवा।

संमत १९०० रा जेठ वद २ श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर हुई। सो अजंट साहब सूं ४ घड़ी ई सांमे सला हुई। पाछा किले ६ घड़ी रात गयां दाखळ हुवा।

जेठ वद ४ रावराजा रिधमळ, बषसी फौजराज, सिंघवी गंभीरमल, धायभाई देवकरण ईणां तालकै खिज़मतां[2] औदा था, जिण रा सारा जबती रा कागद लिखीजिया।

जेठ वद १४ तथा १५ अजंट साहब गढ ऊपर आया, ईकंत रेया। जेठ सुद २ बाईजी साहबां रौ तळाब बंदीजणो सरू हुवो नै अजंट साहब री पूरी ताकीद हुई।

जेठ सुद ४ श्री हजूर असवारी सूरसागर पधारिया। ईकंत घड़ी ४ रया। पाछा पधार मुहता लिषमीचंद नै याद फुरमायौ, सो हाजर हुवो। सुभ निजर सूं बतलावण संसेप[3] हुई।

जेठ सुद ५ दिवांणगी रौ दुपटौ मुहता लिषमीचंद रै हुवो नै वकीलायत रिधमलजी सूं जबत हुई।

जेठ सुद ६ श्री हजूर साहबां रो षलीतो हिंदी, अजंट रै नांवै लिखीजियो। कै वकील रिधमल नै बेमरजी रो वेफायदा रो जांण मोकुफ[4] कियौ है।

---

1. विलंब था 2. सेवा, कार्य 3. संक्षेप में 4. पद से हटा दिया है।

जेठ सुद ७ जोधपुर रै किलै री किलेदारी धायभाई देवकरण सूं जबत हुय अैमदनगर रो पंवार अनाड़सिंघजी ताळकै हुई। नै धायभाई तालकै सीढीयां री दरोगाई थी सो भी जबत हुय, धांधल पीरदांनजी रै हुई। नै धायभाई श्री बाईजीसा रौ नोरो बाईजीसा रौ तलाब ऊपर है जठै सरणै जाय बैठो। नै दफतर री दरोगाई जोसी प्रभुलालजी रै हुई। नै जोधपुर री हाकमी भंडारी सिवचन्द लिषमीचंदोत रै हुई। नै वाभा लालसिंघजी रै पटै गोडवाड़ रो गांव सादड़ी पटै थी सो जबत हुवो।[१४]

जेठ सुद ९ श्री हजूर साहबां री असवारी श्री मदनमोहनजी रै मिन्दर दरसण नै पधारिया। सो उठै अरज हुई कै आसोपा महाराज श्री भींवसिंघजी रा राज में पधारी जरां ७१८) रोजीना श्रीजी रै भोग सारु जोधपुर री सायर सुं सरु हुवा। सो ईणां वरसां में ७१५) हीज आवे है बाकी ३) न्हीं आवे सो पाछा सरू हुय गया चाहीजै। जद हुकम फुरमायौ कै ठाकुरजी री सेवा में हरज नहीं पड़ी चाहीजे। जद ७१८) पाछा सरू हुवा।[१५] और उठै सूं माजी रै वाग चांदपोळ बारै १ षाषी[1] रेतौ थो जठै पधारिया और उठा सूं पाछा किले दाखल हुवा।[१६]

जेठ सुद १२ वुधवार अजंट साहब किले ऊपर आया। नै श्री हजूर में अरज कीवी कै वकील विनां कांम नहीं चलता है।

जेठ सुद १३ तथा १४ वकीलायतां हुई—

१ अजंट साहब री भंडारी सिरीचंद रतनचंदोत रै हुई। सुभ समा रो पेच १, दुपटो केसरियौ १ ईनायत हुवा।

१ बड़ा साहब री वकालायत सिंघवी सुखराज वनराजोत रै हुई।

वकीलायतां हुई सुण अजमेर सु राजमल भाग सापुरै परो गयौ।

जेठ सुद १५ वाभा च्यारू वभूतसिंघजी १, लालसिंघजी १, सिवनाथ सिंघजी १, सरूपसिंघजी १ सांमल होय गांव सादड़ी रै वासतै पड़ुतर मोषळो[2] कियौ पिण मंजूर हुवो नहीं। तरै अठा सूं वाभा अजमेर जावण नै तयार हुवा सो बारै डैरो कर अजंट साहब सूं जाय मिलिया। जद साहब अजंट कयौ— अेक अेक कूं दस हजार का पटा थोड़ा न है। सात जणां का सितर हजार हुता

1. फकीर 2. खूब।

है सो थोड़ा नहीं है। चाकरी नहीं कुछ रेष भरणी नहीं। जब इणां पाछो उजर कियौ कै जो श्री बड़ा महाराज साब बैकुंठ बासी हमकूं दे गये उसमें हम जमीन आंगळ[1] भी नही छोडणे चाहते हैं। ईण तरै रा पडुतर कर वाभा तो अजमेर नै चढ़ गया। हाथी २, घोड़ा ४००, पाळा तथा ऊट, रथ वगैरे कर आदमी ७०० री भीड़-भाड़ सू अजमेर बडा साहब सूं मुलाकात कीवी। नै अजमेर में डेरो कर दियो। नै अठै लारै पैला महिना में तो श्री हजूर सिवजी गैलोत री बेटी जसोदा नै पड़दै घाली श्री मांजीसा बरजतां उपरांयत होय[2] जिण सुं तो आपस में आगे षंच पड़ीज'थी नै वाभा अजमेर जावण सूं कर जादा वेराजीपौ जाहार में आय गयौ। अर श्री माजी साहब पिण अठा सूं साहब रै नांवै रूकौ वाभां री भोळावण[3] रो लिखीयौ जिण में ईण मुजब मजमून—

अपरंच राजा छोरू वभूतसिंघ १, लालसिंघ १, सिवनाथसिंघ १, सरूप सिंघ १, थांरै कनै आया है। अै श्रीजी साहब रा फरजन है[4] और ईण राज में यांरो हक है सो ईणां नै श्रीजी साहब दे गया जिणमें कांमेतियां रा कैणा सूं श्रीलालजी हरषत[5] घालै है जिण वासतै उठै आया है। सो ईणां री मदत कराय ईणां रे हरषत पड़ण देसो नहीं।

संमत १९०० रा असाढ वद ५ अजंट साहब गढ़ ऊपर आयौ। घड़ी १ ईकंत रयौ, नै वद ६ सिंघवी सुखराज अजमेर नै चढ़ीयौ नै साथै रियां रा ठाकुर नै जावण रौ हुकम लिखीजियौ। सो रियां सूं सांमल हुसी। नै वद ७ आगले वकील साहा रिधमळजी सूरसागर था। सूं उठा सूं परबारा चौपासणी सरणे जाय बैठा। नै सिंघी गंभीरमळजी पोकरण जाय बैठा। वद ११ श्रीजी री असवारी सूरसागर पधारी सूं पाछी दोय घड़ी रात गयां किलै दाखळ हुई।

असाढ़ वद १४ बाड़मेर रो जाकिसन (जॉक्सन) साहब वगैरे जणा ३ आया। सो केई दिन रया।

श्री हजूर री असवारी सांढियां री हाजरी लेण नै बखतसागर कांनी पधारिया। सु पधारतां तो खासे असवार था नै पाछा पधारतां हाथी सेर गज ऊपर असवार होय किले दाखल हुवा। नै जाकिसन साहब वगैरे जणा ३नां नै अजंट साहब किलो दिखावण नै लाया। नै उणी दिन रूको १ भंडा०

---

1. एक अंगुल जितनी 2. श्री मांजी साहिब के मना करने पर भी 3. सिफारिश के आशय का 4. औलाद 5. हरकत, बाधा।

सीरीचंदजो रै नांवै पूगो जिण में लिखियौ—रावराजा बहादुर पदवी आज सूं जबत हुई है। सो आगा सूं सहा (साह) रिधमल लिखजो। नै साहब ने ही इतला कर दीजो।

असाढ वद (अमावस) पोकरण ठाकुर पोकरण री सीष करी तिणां नै दुपटौ १ ईनायत कियौ। असाढ सुद १ बाड़मेर वाळा साहब री जाफत[1] हुय नै सीष हुई।

कवराज भारतदांनजी रै षटदरसण री अदालत हुई।[2] तागीरायत (उतरी) वणसूर चैनदांनजी री।

संमत १६०० रा असाढ़ सुद २ नै जाकिसन साहब चढियौ तरै श्री हजूर साहब मिलण नै सूरसागर पधारिया।

सुद ३ लगात दिनां में वाभा राजसिंघजी १, सोवन सिंघजी १, सजन सिंघजी रा कांमेतियां नै बुलाय मुहता लिषमीचंदजी कयौ कै म्हारां कैणा सूं थांरा सिरदार अजमेर गया नहीं। सो थांनै हमै ईण मुजब पटो लिख देसुं नै आगला गांव थारै पूगता कर देसूं

१. राजसिंघजी रै गांव नागौर रौ दियावड़ौ तो आगे। नै फेर गांव ४ गोढवाड़ रौ गांव भादरलाउ नै जोधपुर रा गांव विरांमी, सूरपुरो, पालड़ी, जुमलै गांव पांच।

१. सोवनसिंघजी रै जोधपुर रो गांव वरणो सोभत रा गांव सवराड १, पीपलाद १, गोडवाड़ रौ गांव डायलांणो जुमला गांव ४।

१. सजनसिंघजी रै जोधपुर रा गांव काकेळाव, साळोड़ी आगै पटे हुवोड़ा था।

असाढ़ सुद १३ तथा १४ नै श्री हजूर साहबां री असवारी छड़ी सूरसागर पधारी। सो घड़ीक विराज नै पाछा गढ़ दाखल हुवा।

संमत १६०१ रा प्रथम सांवण वद ५ अजंट साहब किला ऊपर आया सो पाछा रात घड़ी दोय गयां सूरसागर गया। प्रथम सांवण वद ११ तथा १२

1. खातरी 2. वह अदालत जिसमें चारणों, ब्राह्मणों, भाटों आदि के मुकदमे निपटाये जाते थे।

राईकेबाग श्री हजूर साहब पधारिया । प्रथम सांवण वद १३ धायभाई देवकरण श्री बाईजी रा नोरा सूं चौपासणी जाय बैठो थो। तिण रै ऊपर पेसकसी रा रु० १,००,०००) अेक लाख (डंड) ठैर श्री हजूर में मुजरो हुवौ। नै धाय भाई रौ कुरब लवाजमो सारो बाल हुवो नै पटा रा गांव सुण १ नागोर री वगैरे री उठांतरीयां हुई[1] । नै काका रा बेटा भाई जैतकरण वभूतकरण वगैरे गांव पाल मांडाई वगैरे पाछा बाल हुवा ।

प्रथम सांवण सुद ४ तथा ५ माजी श्री देवड़ोजी साहबां देवलोक हुवा । नै दुतीक सांवण वद २ रो कारज हुवो । षांड मण ४००) गळी । सो भीड़-भाड़ जादा हुई । सो आदमी दस किचरीजिया जिणमें अेक दोय आदमी मरण गया ।

सिंघवी गंभीरमल रै पोकरण री हवेली में रुपोया ४०,०००) चालीस हजार ठैर नै मंजूर हुवो नै गांव भागासणी पटै हुवौ ।

संवत १९०१ रा दुतीक सांवण वद ३ अजंट साहब किले गया सो किले जाय बड़ा साहब रा लिखणा सूं तथा मन सूं अरज करी कै बखतसागर ऊपर मेळा कराणा चाहिजे । जद साहब रा केणा सूं बखत सागर ऊपर मेळो भरा-वण रौ हुकम परगनां ऊपर हासल माफ रा कागद लिखीजिया । नै जिंडो (झण्डौ) बखतसागर ऊपर षड़ौ हुवौ नै सहैर रा महाजनां वगैरे सारां री दुकानां हुई । नै मेळौ भरीजियौ ।

दुतीक सांवण वद ४ श्री हजूर री असवारी कायलांणे घोड़े असवार होय शस्त्र बंधाय केसरिया पाग पधराय[2] नै पधारी सो आखो दिन[3] कायलांणे विराजिया । पाछा घड़ी च्यार रात गयां किले दाखल हुवा ।

दुतीक सांवण वद ६ नसीराबाद री छावणी सूं अंगरेज जणा छव घोड़ा, ऊंट खरीदण नै आया । नै श्री हजूर साहबां री असवारी जलूसी फतैपोल होय बखतसागर ऊपर डेरा खड़ा हुवा, जठै दाखल हुवा । पछे छव साहब तौ वै'नै सातमा अजंट साहब अै सातूं साहब साथै । नै श्री हजूर साहब घोड़ै असवार होय नै बखत सागर निजर गुदराय नै जालौरी दरवाजै होय सिरे बजार होय किले दाखल हुवा । नै अंगरेज आपरै डेरै रह गया ।

---

1. जब्त थे से बहाल हुए 2. धारण कर 3. पूरे दिन ।

दुतीक सांवण वद ११ नै छव तो नसीराबाद रा अंगरेज नै अजंट साहब नै गढ़ ऊपर जाफत[1] हुई। भगतणीयां पातरीयां रौ नाच कूद हुवो।

दुतीक सांवण सुद ६ सोमवार श्री हजूर साहब घोड़े असवार होय नाळां री बारी रै मारग वीरपुरी रौ मेळो देखण नै पधारिया रावटी तांई। पछै रावटी सूं मेळा सांमल असवारी चांदपोळ होय किले दाखल हुवा, घड़ी रात दोय गयां।

संमत १६०१ रा दुतीक सांवण सुद १० श्री हजूर री असवारी कुचांमण ठाकुर रणजीतसिंघजी री ठाकुरांणी री मातमपोसी करावण नै पधारिया। पछै उठा सूं नवनाथ चौरासी सीधां रे मिंद्रां में कुलषेत्र (कुरुक्षेत्र) वाला स्रवणनाथजी रो डेरो थो सो उठै पधारिया, घड़ीक विराजिया अर पछै पाछा पधारतां श्री कुंजबिहारीजी रै मींदर पधार दरसण किया। नै श्री महादेवजी अचलेश्वरजी रा दरसण कर घोड़े असवार होय गोळ री घाटी रै मारग किलै दाखल हुवा।

सुद १२ अंगरेज छत्र आया, सो पाछा नसीराबाद नै चढ गया। सुद १५ मेळा रौ झिंडौ, दुकांनां बखत सागर ऊपर था सो सारा उठाय सहैर में लाया। नै राखड़ी[2] रो सिरे दरबार हुवो, दौलतखांना रा चौक में।

संमत १६०१ रा द० सावण सुद २ सहैर में धांन मंडी मैं श्री गंगस्यांमजी रा मिंदर सांमा चौतरो पको संमत १८५६ में हुवो थो तिण मांय पुतळी भाटा री सूरे री रुपीयौड़ी में आखर खुदियोड़ा कै हमै आगा सूं सहैर में वजार री दुकांनां रौ भाड़ो लारला दिनां में लिरीजियो है सो हमै नहीं लेणौ। और १६०० सै सूं डंड नहीं लेण री सनंद पंण हुई। सो श्री हजूर रा फुरमावणा सूं चौतरो पड़ाय मंडी में चौक करा दियौ। नै पुतळी नै उठाय सायर में धराय दीवी।[17]

वद ३ सुकर नै श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर पधारी। सो साहब सूं घड़ी दोय बातां कर पाछा गढ़ दाखल हुवा।

भादवा वद ५ नागपंचम रो मेळो देखण नै श्री हजूर साहब बालसमंद पधारिया। उठै पोर दोय विराजिया। पाछा पधारतां घोड़े असवार होय

---

1. गोठ 2. रक्षाबंधन।

चांदपोळ लोढां री गळी नवचौकियां रै मारग फतैपोळ होय घड़ी पांच रात गयां गढ़ दाखल हुवा ।

वद ६ असवारी चोकेलाव में नवो बाग लगावणो जिण रो कमठो निजर गुदराय रांणीसर में पधारिया । उठै बड़ला निचे विराज तळाब में फूल नाळेर नषाय बंदुकां बाही[1] तथा छुड़ाई सूं पोर अेक विराजिया । पछै पाछा चोकेलाव रै मारग होय किलै दाखल हुवा ।

भादवा वद ७ सूंरै री पुतळीयां सायर में धराई थीं सो श्री गंगसांमजी रा मिंदर रा चोतरा में रुपाय दीवी ।

भादवा वद ६ नै वाभा बभूतसिंघजी १, लालसिंघजी १, सिवनाथसिंघजी १, सरूपसिंघजी १ अजमेर गया था, सो उठा सूं बड़ा साहब रो षलीतो लेनै अठै आया । नै परबारो डेरो सूरसागर कियौ । षलीता रौ मजमून ईण मुजब—

"अपरंच वाभा हमारे पास आये सो ईन सै मुलाकात कर किला या मेष जिण दिखाया । अछी तरै पिछै आपके पास भेजे हैं, सो ये कौन हैं के जो श्री वैकुंठवासी महाराजा श्री मांनसिंघजी के हुकम से आप गदीनसीन हुवे हैं। उन महाराज साहब के ये अंस[2] है । सो ईनका जुदा जुदा हाल दरियाफत कर पटा लिखाय दिया जावे ।"

वाभा डेरौ कियां पछै साहब कयौ—अपनी अपनी हवेलियां मैं जाय डेरौ करौ । यां किस वासते तकलीफ देखो । तरै वद ११ आप आप री हवेळियां में जाय डेरा किया ।

पछै उणीज दिन च्यार घड़ी दिन लारला रा श्री हजूर खुले खासे विराज सिरे बजार होय मुहता लिषमीचंदजी री हवेली पधारिया । सो पौर अेक विराजिया रया । निजर रा रूपीया १०,०००) किया । नै श्री हजूर सूं निवाजस ईण मुजब हुई—कड़ा १, मोती १, मोतियां री कंठी १, सिरपेच १ । नै श्री हजूर सूं सोना री साटां रो नै ताजीम रो फुरमायौ । तरै दिवांण अरज कीवी कै मारवाड़ में तो दिवांण सिवाय कुरब है नहीं सो म्हारै तो ईण सवाय चाहीजै नहीं ।

भादवा वद १२ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया । घड़ी दोयेक ईकंत रया ।

1. बंदूकों से निशानेबाजी की 2. अंश, औलाद ।

वद १३ महाराव रिधमलजी तो चौपासणी सरणे जाय बैठो। जिणां कनै मुहता रूपरांमजी वगैरे नै मेलिया सो रुपीया पईसां रौ हांकारो भरियौ नहीं। जरां हुकम दियौ कै फौज मेल पकड़ लावौ। जद फौज नै तोपां वगैरे चौपासणी ऊपर वहीर हुय जाय, हाजर हुई। तरै श्री गुसांईजी महाराज नै पूरौ संकट हुवो।[१८] नै श्री स्यांमजी री सेवा ले श्री गोकळजी पधारण री तयारी कर लीवी। आ खबर बीकानेर महाराज नै लागी। जद उठा सूं विनती पना ले भला आदमी महाराज नै बिकानेर पधरावण नै आया। तो पण रिधमलजी तो पेसकसि देणी कबूल करी नहीं। जद दिवांण अरज कीवी कै जात लोढ़ा नै राज में चाकर राखण रौ गाधोतरो रूप गयौ चाहीजै।[1] जद श्री हजूर फुरमायौ —कै तो समझ जासी नहीं तरै रुपाय देसां। अै समाचार सुण रिधमलजी नरम पड़ नै निबाज, आउवा रा वकीलां री नै भाट वागजी नै मुहता रूपरांमजी मारफत रुपीया १,६५,०००) पेसकसी रा देणा कबूल किया। अर आजीवका गांव चावंडियो, पीलवो, खिजमतां जिलो रावराजा बहादुर री पदवी वगैरे जबत था सु सारा बाल हुणा ठेरीया।

भा० सुद ३ नै सुद ७ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ी तीन ईकंत रया नै पछै रावराजा बहादुर महा० रिधमळजी नै मुजरो हुवो।

सुद ८ श्री हजूर री असवारी तबेले पधारी। घड़ी दोय घोड़ा फिराया। नै पाछा रात घड़ी दोय गयां किले दाखल हुवा।

भा० सुद ११ जुलणां नुं श्री हजूर री असवारी पधारी। सो गुलाब सागर ऊपर श्री नाथजी रो मिंदर है जिण ऊपर डागळै विराजिया। नै पाछा श्री ठाकुरजी री रेवाड़ियां साथै घोड़े असवार होय सिरे बजार होय फतैपोळ रै मारग घड़ी च्यार रात गयां गढ़ दाखल हुवा।

सुद १२ ढंढोरो फिरियौ कै सिरदार, मुतसदी, षवास, पासवांन सारा ही मंडोर श्री महाराज साहबां[2] रै थड़ै[3] दरसण नै जाईजो नै भेंट, निछरावळ कीजो।

सुद १५ हाथी सात वोपारी लेने आया। सो श्री हजूर में खरीद हुवा। नै किमत रा रू० ६०००) दिरीजिया।

---

1. एक प्रकार की अश्लील शपथ 2. महाराजा मांनसिंहजी 3. स्मारक।

संमत १६०१ रा ग्रासोज वद १ ग्रजंट साहब वकील नै कयौ कै विद्यासाळ सैर में है जिस कूं सराय कर रखी है। नै हरेक ग्रादमी उतरता है। सो नवी विद्यासाल कराणी चाहिये जिसमें लड़के सैर के सब पढ़ै। ग्रर पढ़ाणे वाळे सैं संस्कृत या फारसी या ग्रंगरेजी इलम पढ़े सो ईलम वधे। ग्रा कराणे कविराउ, दीवांण, बषसी ग्रर उमराव हाकम वगैरे ग्रर सैर से हुंडीवाळ सबके ऊपरं विराड[1] घाल मकांन नवा चाहिजे सो साहब रा केणा मुजब विराड़ रुपीया दस तथा पनरे हजार रो मेळ। कमठा री भोळावण जोसी प्रभुलालजी हंसराज जी नै हुई।

बद ११ बड़ा हजूर रो पैलो सराध[2] सो श्री हजूर हाथ सूं सारीयौ नै विरांमण भोजन ४०० कराया।

ग्रासोज वद १२ श्रीं हजूर री ग्रसवारी नाळा री बारी रै मारग होय श्री माजी रे बाग पधारिया। नै सूरसागर सूं ग्रजंट साहब ग्राया सो घड़ी ग्रेक विराज विद्यासाळ मोटी चौड़ी करावणी जिण रो हुकम दे उठा सूं सिरे बजार होय सोझतिया दरवाजा कांनी पधार नै पछै पाछा गोळ री घाटी रै रसते होय किले दाखल हुवा।

ग्रासोज वद १३ तथा १४ श्री बालकृष्णजी रा मिंदर कनली[3] घाटी धान मंडी में जावण री जठै पोळ मिंदर करायौ जगां संमत १८८८ में कराई ही सो ग्रजंट रा कैणा सूं पड़ाय नाषी।[4]

बद ७७ (ग्रमावस) श्री हजूर री ग्रसवारी काळी बेरी कानी पधारी ग्रौर साथै साहब ग्रजंट गया। नै पाछा नाला री बारी रै मारग दाखल हुवा।

ग्रासोज सुद ४ जैपुर महाराजा रामसिंहजी रै टीको देवण नै ग्रासोपा उत्तमरामजी नै मेलिया। साथै जावला रा ठाकुर केसरीसिंघजी ने मेलिया।

ग्रासोज सुद ५ श्री हजूर साहब एकला हाथी ग्रसवार होय ग्रजंट कनै पधारिया, पछै दोनों ही ग्रजंट ग्रौर हजूर सामिल होय पाछा सहर में पधारिया।

साहब रो भी मास ४ सूं मनसोबो हो के जायगा पड़ाय मारग चौड़ो कराय सड़क बंधाय देणी। जिण बाबत ग्रासोप वाळां तो ग्रागे पड़ूतर कियो ही

---

1. चंदा 2. श्राद्ध 3. [illegible] वाली 4. गिरा दी।

हो के गढ़रे साथै म्हांरी हवेसी हुई है सूं पैली गढ़ री भींत पड़सी नै पछै म्हांरी भींत पड़सी । सु इण वात सूं अटकियौड़ी[1] तौ थी नै आज श्री हजूर साहब अजंट साहब नै कह कर सारी मोकूफ[2] रखाया दीवी ।

आसोज सुद ६ श्री हजूर री असवारी घोड़ा नै घोड़ियां रै तवेले पधारिया पछै कंटाळिये ठाकरां संभुसिंघजी री मातमपोसी कराय, पछै पाछा गौ खाने पधार इंदर विमान रथ वगैरे निजर गुजराय, गोळ री घाटी होकर गढ़ दाखल हुवा ।

संमत १९०१ रा आसोज सुदि ९ विजय दसमी नै रावण मारण नै श्री रामचंद्रजी री असवारी पधारी । जिण साथै श्री हजूर साहब हाथी री अंबा-वाड़ी[3] पर विराजिया साथै पोकरण ठाकर वभूतसिंघजी मोरछल लेकर बैठा । नै सूरसागर सूं अजंट साहब पण हाथी पर बैठकर आयो । सो नायां रै बड़ नीचे सामिल होय सिरे बजार होय जालौरी दरवज्जा बारै पधारिया । सो किताक सिरदार तौ असवारी में सामिल था नै किताक सिरदार उठै आय सामिल हुवा । पछै श्री हजूर साहब घोड़े असवार हुय बाईवळ ऊपर पींडां बरछी बाही और पछै लोग भैंसा नै मार लियौ । पछै जालौरी दरवाजा रै मारग मूंडा आगे आतस-बाजी छूटतां फतेहपोळ होय गढ़ दाखिल हुवा । पछै तोपां री सिलकां १२५ हुई ।

सुद १४ असवारी तथा अजंट रामबावड़ी ऊपर पधार बाग लगावण री तजबीज विचारी । और हुकम हुवौ—रात पोहर १॥ गयां किला सूं तोप छोडणी, जठा पछै सहर में कोई फिरण पावै नहीं सायत किणी रै दाई नै बुलावणी हुवै तथा कोई बहुत जरूर काम हुवै तो दीवड[4] तथा कांकड़ो लेकर जावे ।

काती वद ३ श्री बड़ा हजूर[5] रा फूलां साथै गयाजी[6] जावण रो पं० काळूरामजी नै मुजरो हुवौ । नै सिंघवी समरथमल नै कोटे टीको ले जावण रो मुजरो हुवो ।

संमत १९०१ रा काती वद ५ बूड़सू री हवेली मातमपोसी करावण नै पधारिया ।

दूतीक ५ असवारी हाथी री अंबाबाड़ी में विराजिया नै लारै खवासी में आउवे ठाकर बैठा । और चौपासणी पधार श्री गुसांईजी रै और लालजी

1. रूकी हुई 2. स्थगित 3. अंबारी 4. दीवट 5. महाराजा मानसिंह 6. गया तीर्थ

महाराज वगैरे रे सरसता मुजब भेंट कराई। आखो दिन उठै ही बिराजिया सबब रिधमळजी रै उठे बैठां रुपैया १,६५,०००) ठहरिया जिणरी पाछी खातर करणी[1]।

काती सुद ७ श्री हजूर री असवारी सूरसागर पधारी।

काती सुद १३ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणे पधारिया। सारो दिन उठै विराजिया आथण[2] रा पाछा पधारतां विदीयासालां रो कमठो निजर गुदराय कमठा री दरोगाई जोसी हंसराजजी नै भौळाई।

वद १४ दिवाळी रो दरबार दोलतखाना रा चौक में हुवो। नै मसंद[3] ऊपर विराजिया। नै श्री चौपासणी रा, नै महामिंदर रा दुपटा पधरीजिया। नै निजर निछरावळ सारां री हुई। पछै श्रीजी साहब पांतिये[4] भोजनसाळ में विराजिया। उमरांव सारा बैठा नै भोजनसाळ रै सांमै ओझाजी री साळां रै डागळै आतसबाजी छूटी। पछै सिरदारां नै सीष दे पोर १ रात गयां मांय पधारिया।

काती सुद ६ सैयद मेमदअली वगैरे जणा ४ सिणगार चौकी ऊपर अणाटी फेरि[5] सो निजर गुदरावण नै षावका दोढी ऊपर रै झरोखे विराजिया। नै अेक अेक जणा नै ईनांम रा रुपीया २०) वीस दिरीजिया। जु. रु. ८०)।

संमत १६०१ रा मिगसर वद ३ बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी रा फूल श्री गंगाजी में पधरावण नै जाय नै अगाड़ी गयाजी करण नै जाय सो हुकंम हुवो। फूलां री सारा ही जणा भेंट, निछरावळ करो। ईतरा जणा साथै गया—

पं० कालूरामजी १, व्यास सुरतरांम जी १, नै नागौर रा गांव में ह १, नै अळाय १, अडवड रा जागीरदार नै नाजर दौळतरांमजी १, नै व्यास प्रोहित वेदीयो केवळरांम वगैरे

सरूपचंद/अनाड़सिंघ

मिगसर वद ६ चंडावळ खैरवा रा ठाकुरां नै सीष हुई नै छोटी हथणी ऊपर अेकल असवार होय रांम बावड़ी ऊपर बाग लागै जठै पधार नै भैरवा री भिड़क देख पाछा नाळा री वारी रै मारग किले दाखल हुवा।

---

1. पुनः आश्वस्त करना 2. संध्या समय 3. मनसद 4. भोजन हेतु पंक्तिबद्ध रूप में बैठना 5. चक्राकार घूमने का खेल

मीगसर वद १४ पोकरण रा ठाकुरां नै सीष हुई। सुद १ आउवा रा ठाकुरां नै सीख हुई।[१९]

संमत १९०१ रा पोस वद १ जैपुर रा राजाजो री तरफ सूं श्री हजूर रे टीको ले ईतरा जरणा आया—

पचेवर ठाकुर १, हलदियो सीरीनारांयरण नै मीर बगसी १, घोड़ा ४, हाथी १ पाळा वगैरे आदमी च्यार सौ। सुं जिरणां री पेसवाई में दिवांरण मुहता लिषमीचंदजी १, आसोप ठाकुर सिवनाथसिंघजी १, नै रास ठाकुर भीवसिंघजो १, हाथियां ऊपर बैठ नै गया। सेषावतजी रा तळाब कनै मिलाप हुवौ। नै जैपर वाळां रौ डेरो उदयमंदिर में करायौ।

पोस वद ६ गुसांईजी श्री गोपीनाथजी महाराज श्री नटवररांमजी रा मिंदर में लीला विसतारि[1]।

पोस वद ८ श्री रांरणावतजी साहबां री डावड़ीयां नै कांमदार भंडारी सरूपचंद जालौर रो सो बजाज री दुकांन कपड़ौ लैरण नै गया हा। नै उठै अजंट साहब री सुपारस सूं दिली रो विरांमरण गौड़ राव हरदयाळसिंघ रो बेटो वजोरसिंघ दिवांणी फौजदारी दोनुं अदालतां रौ कांम करे, जिरण रा आदमी बजाज री दुकांन गया सो उठै डावड़ी रे टिलो लगाय दियौ[2] तरै भंडारीजी ओलंभो[3] दियौ जिरण ऊपर आदमीयां बाथे होकर उभा[4] तरै कोटवाळां नै समचो[5] दियौ। तरै चांतरा सूं सांवठा आदमी ले कोटवाळ आयौ, जितरै उरणां रौ डेरौ तलेटी रा मेलां में थो, सो मांय बड़ गया अर संभ गया[6]। नै अजंट साहब ने कवायो सो सांमी अजंट साहब कोटवाळ ऊपर तकरार कीवी।

पोस वद ११ जैपुर सूं टीको ले आया। जिरणां नै गढ़ ऊपर मुजरो हुवो। नै दसतूर मुजब सारो कांम हुवो। नै उरण बखत अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। सो मुनसी फजररसूल नै पिंडत गौरीदत नै साथै लाया।

पोस वद १३ सोम नै श्री हजूर री असवारी श्री नटवरजी रे मिंदर गुसांईजी श्री गोपोनाथजी री मातमपोसी करावरण नै पधारिया। सरसता मुजब विराज किले दाखल हुवा।

---

1. कृष्ण लीला की गई 2. स्पर्श कर दिया 3. उल्हाना 4. हाथापाई पर उतर आए 5. सूचना 6. सन्नद्ध हो गये

पोस वद १४ बड़ा साहव थगसबी साहब अजमेर सु ं आवे जिण रैं सांमै विसलपुर तांई इतरा जणा गया—दिवांण मुहता लिषमीचंदजी १, बखसी सिंघवी फौजराजजी १, नै सिंघवी कुसलराजजी १, आउवे ठाकुर कुसालसिंघजी १, रायपुर ठाकुर माधौसिंघजी १ ।

संमत १६०१ रा पोस सुद २ तथा ३ श्री हजूर री असवारी साहब रै सांमै हाथी रैं हौदे विराज पधारिया षवासी में लारै आउवै ठाकुर कुसालसिंघजी बैठा । सो सेषावतजी रे तळाब सू ं पांवडा दस उली कांनी हाथियां रै हौदे मिळाप हुवो । उण दिन सू ं पेसवाई में ईती दूर जावण री बधी,[1] आगे जैपोळ, लषणा पीळ बिचै हुती, चेवणाउ वगैरे बारला डेरां सू ं बडा हजूर रा बखत में हुई सो पांच सौ पांवंडा डेरां श्री हजूर विराजे जिण सू ं हुती, हमै इजाफे सरू हुई । तोपां री सिलकां हुई । नै डेरा सूरसागर हुवा ।

पोस सुद ४ वड़ो साहव १, नै अजंट साहब १, नै सीकतर १, नै बाड़मेर रौ जाकीसन साहव १, चारूं जणा दोय हाथियां ऊपर बैस नै गढ़ ऊपर आया । नै श्री हजूर साहब, जाकीसन साहब बाड़मेर सू ं आया । जिण मुदे पेसवाई में चंवांणां री साळ तांई सांमा पधारिया पछै वातां करता मैलां दाखल होय सरसताई[2] विछायत मसंद री हुय नै साहब लोग गालीचा ऊपर बैठा । सो घड़ीक तांई सोषायांई वातां कर पाछा सूरसागर गया ।

पोस सुद ५ दिवांण बषसी वगैरे मुसायव साहब रै डेरै गया जिणां नै बड़े साहब कयौ—श्री माजीसा कू ं नाराज कीहुं कर रखी है ? जिण ऊपर ईणां पाछौ कयौ—माजी साहब रौ हुकम लोपां नहीं[3] । नै फेर माजी सा फुरमावै सो कांम होय सके है । सो माजी सा कीहुं नाराज है सो आप पूछावौ । पछै अै तो सीष कर गढ़ ऊपर गया । नै श्री माजी साहब रा कांमेतीयां अंबाबखसजी नै व्यास सुरतरांमजी साहब री साथ हा जिणां नै बुलाय नै कयौ—श्री माजी सा नाराज कीहु है अर कया चाते हैं सो कहो । जिण ऊपर अंबावगसजी केहौ कै तरै तरै सू ं म्हांरा काम बिगड़ रया है नै हतक[4] हुय रही है । अवल तो जनांना दोढ़ी री सिरे पोळ रै बारणे साळ है जठै जैपुर जोधपुर उदैपुर तीन ठिकांणा री वेटी रा कांमेती उठे बैठे । उण सवाय कोई बैठे नहीं । जठै धमोधर रा ठाकुर

1. पेशवाई में जाने की सीमा में वृद्धि हुई 2. हमेशा की तरह 3. आदेश अमान्य नहीं करते 4. अपमान

री बेटी कांमेती नारकरण उठै आय वैठे जिण में म्हां लोकां री हतक है । नै मैं उठै बैठां हां सो श्री बाईजी साहब रा कांमेतीपणा सु' बैठां । माजी साहब रा कांमेती होय नहीं बैठां । जिण ऊपर साहब कही— अेसी छोटी बातां के वासते हमकू' नहीं कैते । जो असल बात होय सो लिख कर देवो जिण ऊपर पाछौ कयौ—श्री माजी साहब सू' अरज कराय नै कालै आप कनै हाजर हुसां ।

पछै उणां ही दिन रात घड़ी च्यार गयां कीलेदार पंवार अनाड़सिंघजी व्यास सुरतरांमजी रै घरै गया, नै कयौ – कै माजीसा नै छोड नै[1] श्री हजूर में म्हारी साथ चालो परा सो पटो हजार सात रो तो श्री हजूर साहब दें देसी । नै पीढ़ी दर पीढ़ी उतरे नहीं जिण रा सिरदारां रा आखर कराय देसी । तरै पाछौ कयौ कै विनां श्री माजी साहब रै नै श्री हजर साहबां रै राजीपो हुवां बिनां हूं श्री हजूर में चालू' परो तो औ लोक परलोक दोनु बिगड़ जाय, जिण सू' कर चालू नहीं ।

नै श्रीमाजी साहबां नै जो राजकरणो हुतो तो श्री महाराज कंवर नै लावतां हमै श्रीमाजी सा कांही चावै के कोई मोटो कांम हुवे जिको श्री हजूर साहब जाय पृछै कै औइ कांम करां, कांई मरजी है ? तरै माजी सा फुरमावे कै लालजी थांरै तुलै ज्यु' करो ।[2] ईतरा में राजी सीवाय इंणां रै कीं चाहीजै नहीं । तरै किलादार पाछौ कलों के श्री हजूर सा श्रीमाजी सा कनै पधार सी सो राजीपो होय जाय, सो थे पण अरज कराय दो । तरै उणी बखत अरजी किलादार बैठां ही लिख नै वाभा श्री बभूतसिंघजी रे उठै पुगाई । सो उणां री डावड़ी रै मारफत मालम हुई । प्रबात सवां पछै[3] दूजे दिन अबाबगसजी साहब कनै गया सो इतरी बातां रो राजीपा में करार ठेरियो—

१. अवल तो जालोर आयसजी श्री लाडूनाथजी रा रूपिया २,२८,०००) राज में मंगाय श्री रूघनाथजी महाराज नै षोळै[4] बेसांण दिया, सो श्री लाडूनाथ जी महाराज री ठाकराणीयां नोरे बैठी है नै श्री जोरनाथजी रा बेटा भूरनाथजी नै षोळै लियां चावै सो ओ कांम हुवौ चाहिजै । दुसरो, आयसजी श्री लिषमीनाथजी महाराज बीकानेर रै गांव पांचु विराजिया है सो संवत १८६६ में जो बड़ा हजूइ साहब आयसजी श्री देवनाथजी महाराज ने गांव पटो सायर वगैरे भेट

1. माजी साहिबा का पक्ष त्याग कर 2. आप जैसा उचित समझो वैसा ही करो
3. प्रभात होने के पश्चात् 4. गोद

करी जिण मुजब आजीविका हुय अठै पधराया चाहिजे । नै सेवा मिंदर श्र जी साहबां रा कासीजी श्री विंद्रवंद तक है जठै भोग पुजापा रो महीने री महीने पुगण रौ बंदोबसत हुवो जहिजे । नै फौजदारी दिवांणी अदालत रा कांम ऊपर वजीरसिंघ है जिण नै मुलक बारै काढ़ीयौ चाहिजे । कीहुं के ईण रा आदमियां जनांनी डावड्डीयां नै जनांना कांमेतियां सूं हुजत करी जिण सुं, नै उणां आदमियां नै संगीन सजा मिळी चाहिजे । नै वाभां नै श्री बड़ा हजूर पटा दिया सो जबत है सु पाछा बाल हुय गया चाहिजे । तरै साहब अै बातां रौ श्री हजूर साहबा कनै करार कर नै राजीनांवो कराय दियौ, आपस में श्री माजी सा रै ने श्री हजूर साहब रै ।

पोस सुद ६ श्री हजूर री असवारी जलूसी षासे विराज नाळा री बारी रै मारग होय सूरसागर पधारिया । सो बड़ा साहब नै अजंट साहब जोसियां री बगेची रा बुरज सूं उगुण[1] पांवड़ा दस आस रै सदमंद मुजब सांमा अया । पछै श्री हजूर घोड़ै असवार होया नै तोपां री सिलकां हुई । पछै डेरै पधारिया घड़ी दोयक उठै विराजिया । पछै उठा सूं पाछा घोड़ै असवार हो चांदपोळ दरवाजै होय फतैपोळ रै मारग हुय किलै दाखल हुवा ।[२०]

सुद ६ प्रथम अंगरेजी महीने जनवरी री तारीख १६ सन १८४५ ईसवी नै मिंसतर गिरांट हेड साहब जोधपुर री अजंटी रा कांम ऊपर आया जिणा री पेसवाई में दिवांण रो बेटो मुहता मुकनचंदजी १, सिंघवी कुसलराजजी १, भंडारी सीरीचंदजी सिरदारां में रास रायपुर रा ठाकुर मुलाषात सेषावतजी रा तळाब सूं पांवड़ा २०० आसरै पैली कांनी मिलाप हुवौ मीम[2] पीण साथै थी । उठा सूं साहब तो सूरसागर गया नै सिरदार मुसदी आप-आप री हवेलीयां गया ।

पोस सुद ६ दुतीक गीरांट साहब गढ़ ऊपर आया सो श्री हजूर साहब पेसवाई में चुवांणां री साळ तांई सांमा पधारिया । सो मुलाषात हुतां टोपी उतारी । पछै मैलां दाखल हुवा । सो घड़ीक बात कर पाछी साहब नै सीष दीवी । सो सूरसागर दाखल हुवा । सुद १० बड़ा साहब वगैरे साहब लोग ५ री जाफत गढ़ ऊपर हुई । नाच-कूद वगैरे हुवौ नै आतसबाजी छूटी । रात पौर गयां डेरै गया ।

---

1. पूर्व दिशा की ओर 2. मेम, पत्नी

पोस सुद ११ श्री हजूर साहब हाथी असवार हुवा नै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा, सो सूरसागर पधारिया । सो उठो सू गीरांट साहब, फिरंच साहब हाथी ऊपर चढ़ जोसीयां री बगेची रा बुरज सू उगुरा पांवडा पांच सात सांमा आया । उठै मुलाषात हुय हाथी बरोबर कर सूरसागर पधारिया । सू बड़ा साहब बारली पोळ तांई सांमा आया पछै ईकंत घड़ी २ रया । पछै पाछा उणीज मारग[1] किलै दाखल हुवा । पोस सुद १४ बड़ा साहब नै अजंट साहब वगैरे चारूं साहब री मिजमांनी पोकरण री हवेली हुई । नाच कूद हुवौ । नै मीठाई री छाबां डेरै मेली ।

पोस सुद १५ चारूं साहब गढ़ ऊपर सीष री मुलाकात करण मुदे आया । घड़ी दोय तांई बातां कर पाछी सीष करी सो सूरसागर गया ।

संमत १६०१ रा माह वद १ बड़ा साहब अठा सू चढ़ियौ सो डेरा गांव सूरपुरै हुवा । सु नागौर हुय कुचांमण होय मकराणे किसनगढ़ होय अजमेर गया ।

वद २ बड़ा साहब रो वकीळ सिंघवी सुषराजजी नु निवाजस पालषी १, कड़ा १, मोती १, मोतियां री कंठी १, सिरपेच नै कांमेतियां कंवरचंदजी नै कड़ा १, मोती १ ईनायत हुवा । अर अजमेर रो लालो नायकी बगस नै कड़ा १, मोती ईनायत हुवा पं० कवरचंदजी रै गांव मांनपुरो परबतसर रौ पटै हुवौ । नै गुलैचो मांणकचंद बीकानेर रो हमार जैपुर में कांम करै जिण नै वैसण रौ कुरब नै कड़ा मोती वगैरे सिरपाव हुवौ ।

माह वद ५ सिंघवी सुषराजजी नै बड़ा साहब रै सांमल होण'रो मुजरो हुवौ ने तीनूं भायां रै गांव ३ हुवा । सिंघवी मेघराजजी रै जोधपुर रो गांव कुड़ी, सिं० कुसळराजजी रै गांव लुणावौ गोढ़वाण रो, सुखराजजी रै सोझत रो गांव सउपुरो । नीबाज, वासणी, मनांणे रा सिरदारां नै मुजरो होय सीष हुई ।

माह सुद ५ मिंदर श्रीनाथजी रो पाट उछव[2] हौ सो व्यास हरषचंदजी श्री हजूर री तरफ सू भेंट नौछावर करण नै गया । सुद ६ गुसांईजी श्री टीकमजी महाराज रै करज जादा होय गयौ जिण सू श्री हजूर गढ़ ऊपर पधरावणी कराय रूपीया ५००) तो भेंट हुवा नै बाकी जनांना सिरदार, मुसदी, षवास, पासवांनां रो पैला ओळीयो मंड गयौ थौ[3], सो वे रूपीया न्यारा भेंट हुवा ।

1. उसी मार्ग से 2. महोत्सव 3. भेंट की सूची पहले ही तैयार कर दी गई ।

सुद ७ जोसी सावंतराम रै ग्रैरणपुर री छावणी री वकीलायत हुई। नै ग्रदालतां सारां ऊपर फिरंच साहब री सुपारस सूं राव हरदयालसिंघ रौ बेटौ बजीरसिंघ थो जिण नै मोकुब कर[1] ग्रदालतां दूजां रै हुई तिण री विगत—

१. दिवांणी ग्रदालत सिंघवी मेगराजजी म्हेता परतापमलजी

१. फौजदारी ग्रदालत ग्रासोपा उतमरांमजी १ भंडारी सिवनाथजी रै।

इण महीना में पाटण सूं तो म्हैता गोपालरावजी नै वडौदा सूं माधौराव नै पिंडत जैसंकर नै नाग्र इमरतलाल, भाट कंनीरांमजी री तथा भाट वागजी री मारफत ग्राया नै डेरा च्यार जगा हुवा।[२१]

माह सुद ६ ग्रसवारी कायलांणे पधारी। सारो दिन उठै विराजिया। नै नीमा सांम रा गढ़ दाखल हुवा। सुद १३ श्री हजूर री ग्रसवारी किला में श्री हींगळाजजी श्री नागणेचियांजी रै जनांना समेत गठजोड़ो बांध नै जातां दीवी। सुद १४ नै जनांना समेत मंडोवर श्री हजूर साहब जातां दीवी। नै सिरे बजार होय पधारिया। म्हाडोळ ४, नै पाळषीयां २, रथ ३० सो पाछा घड़ी च्यार गयां गढ़ दाखल हुवा।

माह सुद १५ ग्रजंट साहब री वकीलायत पं० मुनसी राधालालजी रै हुई। नै तागीरायत भंडारी सीरीचंदजी री।

संमत १६०१ रा फागण वद २ सोम श्री हजूर री ग्रसवारी कायलांणे नार री सिकार मुदे हुई। सो नार ग्रोदी[2] कनै ग्राय भीड़क नै भाग गयौ सो पाछी ग्रसवारी गढ़ दाखल हुवा।

फागण वद १० दफतर री दरोगाई ग्रासोपा सवाईरांमजी रै हुई।

वद ११ श्री हजूर साहब री ग्रसवारी कायलांणे पधारिया सो नार नै पकड़ लाया।

फागण सुद ३ श्री हजूर साहब डाढी छंटाई जिण रो उछव हुवो। सो ग्रजंट साहब नै जाफत ग्रमला[3] समेत दीवी। ग्रौर महामंदिर रा मालक ग्रायसजी श्री लिषमीनाथजी बीकानेर रै गांव पांचु था रूपीया ग्रेक लाख ठेराय ग्रठै बुलाया। नै पटो तथा दूजी पैदास संमत १८६६ में महाराज श्री मांनसिंघजी

1. पदच्युत कर 2. शिकारी की सुविधा के लिये बनाया गया ऊंचा स्थल 3. कर्मचारी वर्ग

प्रवांनो कर कर दीवी थी जिकां प्रवांनां मुजब पैदास बाल राषण रो दाखलो देनै नवो परवांनो कर दियौ ।

नकल प्रवांनां री तथा महाराज रै इण माफक भेंट हुवा है—

गांव दोय थबुकड़ो नगरीयौ सुधो नै दईजर १, नै वेरा २ । ग्रेक तो बडलावाळो नै ग्रेक तारासर नै सायर ने षेड़ो छदांमी रो तांबा पत्र चैत वद ४ री मीती रो हुवौ जिण माफक पोंचसी ।

जोधपुर री सायर सूं रूपीया १००) ग्रेक सौ । गांवां राव सीवांनां रा हासल रा० म० १३ रा पावसी

ग्रनरा कोठार सूं —
उछवां री भुजाई
दसरावा री
'५ बाट, '४ गुळ, '१।। चावळ, '२।। घ्रित, '२ मुग, '१।। ग्राटो ।[1]
दिवाळी री सरेजन—
होळी री —
'३।। बाट, '१।।६ घिरत, '३।। गुळ, '१।। ग्राटो, '१।। चावळ
ग्राषा तीज[2] री—
'५ खीच, '२।। गुळ, '४ मूग, '२ घ्रित, '५ ग्राटो, '१। बड़ीयां, '। चंवळा री फली

हसम खुराक रोजांना घोड़ा १ रै मूंग '६, घ्रित '।, ...'।, मीरची '—
बलधां रे धांन—'४, घ्रित '।।, पषालीया रै धांन '२

....

....

.... नै जायगावां[3] तीन ग्रायसजी री सीर में थी सो श्री हजूर में निजर कीवी जिका ईण मुजब ईनायत हुई—

ग्रायसजी श्री भींवनाथजी री जायगा गोळ में थी सो किलादार ग्रनाड़सिंघजी नै सिंघवी जसराजजी रो नोरो लेने साहुसा रा तकीया कनै हवेली कराई । सो रांणावत गंभीरसिंघजी नै तिजी नवचौकिया में दमजी व्यास रा

---

1. 'मरण का चिन्ह है 2. अक्षय तृतीया 3. मकानात

चौक में पिंडत चीमनीरांमजी कनै मोल लीवी तिका कोटवाळ सेरकरणजी नै ईण मुजब हुय नै पाछा महामींदर आय बैठा। फागण सुद ६ गढ ऊपर आयसजी श्री लिषमीनाथजी री पधरावणी हुई। दसतूर मुजब भेंट हुई। नै गांव सायर वगैरे आजीवका पाछा बाल[1] हुवा।

सुद १० श्री हजूर री असवारी चौपासणी पधारी नै श्री लिषमीनाथजी साथै था जिणां रै श्री गुसांईजी म्हाराज रै बरोबर गादी बिछीजी।

सुद १२ दौलतखानां रा चौक में डंडीयां री गैर हुई सो मुसदी, षवास, पासवांन रमीया। सो श्री हजूर फतैमैल में षुरसी ऊपर विराज निजर गुदराई।

सुद १४ फाग री असवारी हाथी रे हौदे विराज सिरे वजार होय पधारी सो जगा जगा रंग रा कढ़ाव भरीजिया। गुलाल री नै गुलाब रा फुलां री दड़ीयां बावता थका नै मुढा आगे रंग रा बंद छूटता थका महामींदर दाखल हुवा। नै उठै पीण रंग रा हौद भरीजिया था बाग में सो कुसी हुई। नै पछै नीमा सांम रा घोड़े असवार होय गोळ री घाटी रै मारग किले दाखल हुवा।[२२]

फागण सुद १५ होली रो सिरे दरबार दौलतखांना रा चौक में हुवौ। बिछायत बिछ अदगजा ऊपर सोना रो सिंघासण नारां वाळो पधरीजियौ। सो उण ऊपर विराजीया, मिंदरां रा दुपटा सेलीयां पधरीजी। तिलक आरती हुई, निजर निछरावळ सगळां री हुई। पछै घड़ी रात च्यांर गयां दरबार बोळियौ[2]।

ईण महीना में वाभा च्यारां रे पटा हुवा विगत—

वभूतसिंघजी रै जोधपुर रो गांव देईषेड़ो १, जालेली सुधो सोभत रो गांव सुरायतां १, मेड़ता रो गांव झितिया।

लालसिंघजी रै मेड़ता रा गांव हरसोर १, पुंदलो १, तोलवादर १, नै परबतसर रो गांव सनेड़ियौ १।

सीवनाथसिंघजी रै जोधपुर रा गांव सेवकी बड़ी १, विठुतां १, बड़ीयौ १ नै नागौर री गांब सीणोद।

सरूपसिंघजी रै जोधपुर रा गांव मालावास १, धांणा मघरे १, नै नागौर रो गांव इंदांणो १।

---

1. बहाल 2. समाप्त हुआ

संमत १६०१ रा चैत वद १ छारोली ने षारिया ढावा रा मेळा मैं पोकरणा विरांमणां रै पातसा निकळे सो पातसा तो फिरतो थो नै डेढां रो रांणो बणे सो पातसा सूं सेट-भेंट[1] हुण लागा। जद डेढां नै वरजिया सो डेढां मांनी नहीं। तरै दोय च्यार जणां नुं सभा दीवी तरै चोंतरै जाय पुकारिया, जिण ऊपर कोटवाळ आदमी १०० रै हाथ में बांसड़ा दे नै बांमणां नै वांसां सुं कुटाया। जिण ऊपर विरांमणां पातसा रो तमासो विखेर घर हजार दोय अेकट कर लियौ कै मेळे जावणो नहीं। नै तमासो करणो नहीं।

चैत वद ३ दोढ़ी ऊपर हेलौ प्रड़ीजियौ कै दिवांण, बषसी तथा मुसायब री हाजरी साजण नै बिनां उणां रा ताळकदारां बिना राज रो चाकर जावण पावै नहीं।

चैत वद ८ सील रो मेळो देखण नु श्री हजूर री असवारी हाथी विराज तळेटी रा मैलां में झरोखे विराजिया। नै अजंट साहब ने पीण उठै बुलाया जित रे हलकारां दुवारै अरज हुई कै पोकरणा विरांमणां रो छोकरो ही आज मेळा में आयो है नहीं, कारण के छारोळी रै दिन कोटवाल डेढां री मदत कराय बांमणां नै बांसां सूं कुटाय मेळो बिखेर दियौ। तरै श्री हजूर साहब कोटवाळ नू बुलाय ओळंभो फुरमाय नै कयौ—विरांमणां रो राजी नांवो लाव। नै व्यास हरषचंद ने साथ ले जाव नै पाछौ पातसा वणाय नै कढावौ तरै कोटवाळ उणी वखत हरषचंदजी नै साथै ले जाय बांमणां सूं हाथा-जोड़ी कर गुंनो माफ कराय पाछौ पातसा कढ़ावण रौ हांकारो भराय मेळा में टाबरां नै लाया।

चैत वद १२ नै कोटवाल बांमणां रा मोळा में जाय पातसा बणाय कोटवाळ साथै फिर उछव करायौ।

सुद ३ श्री गवरां रो मेळो[2] देखण नै श्री हजूर हाथी ऊपर विराज गुलाब सागर ऊपर पधार निज मिंदर रे पोळ ऊपर झरोखा में विराजिया।

सुद ४ श्री हजूर साहब श्री चांवंडा माताजी रा दरसण करण नै पधारिया। नै रूपीया ५) भेंट किया। पठा ऊपर तोपां रा चरख तयार हुवा सो निजर गुदराया।

सुद ५ असवारी राईकेबाग मंडोर पधार बाळसमंद दाखल हुवा।

1. सामना. 2. गनगौर का मेला

सुद ८ नै गवरां री भोळावणी रो मेळो देखण नै असवारी सिरे बजार हुय पधारिया। नै सुद ९ नै हाथी, घोड़ां री पूजा श्री हजूर सा पिडां कीवी। नै सुद १४ जांणीवांण रा ठाकुरां अमरसिंघजी री मातमपोसी करावण नै पधारिया।

समत १९०१ रा वैसाख वद १ तथा २ नै जैसलमेर रा रावळजी गजसिंघजी जनांना समेत श्री गंगाजी गया था सो पाछा श्रीजी द्वार होय पाली, रोयठ, काकांणी होय आज डेरा झंवर हुवा सो दरकूचां जैसलमेर दाखल हुसी। लोक हजार दोय आसरे—घोड़ा, हाथी, रथ, गाडीयां, पालषी, पाळा वगैरे।

वद ३ जोधपुर रा महाजन हुंडीवाळ वगैरे सारा नै मुजरो होय खातरी फुरमाई। वद ४ गुलर रा टाकुर नै आथूणा षावका में मुजरो हुवौ। वद ८ कूंपावत करणसिंघजी रै गांव कुचेरो संमत १८९८ मैं नै उण हीज दिन नीबाज ठाकुरां रा काका सिवनाथसिंघजी रै आयसजी श्री लिषमीनाथजी री अग्या सूं गांव आगेवो १, नै पाटवो १ पटै हुवा। न कुचेरा में राजा रा चाकर सिंघवी भंडारी वगैरे रैवै जिकां नै करणसिंघरी मां मर गई, जिणरो नोतो मांगियो[1] सो उणां ईनकार कियौ जिणां सूं जासती[2] कीवी। तरै सारा जणां जोधपुर आय पुकारिया जिण सूं कुचेरो आज जबत होय, जोसी परभूलालजी तंग हुवौ। नै उणां नै खातर कर सीष दीवी।

वैसाख वद १४ लगाय सुद ५ तांई जनांना में पटा लिखीजिया तिण री विगत—

श्री रांणावतजी सारै २५५००)
५०००) १ गांव सालावास जोधपुर रो
३०००) १ गांव तनावड़ो जोधपुर रो
३०००) १ गांव हेमावस जोधपुर रो
१५००) १ गांव चाठेळाव जोधपुर रो
१०००) गांव डेगाई
३०००) १ गांव नंदवांण रो
६०००) १ गांव सादड़ी गोडवाड़ रो
१०००) १ गांव ढीकाई जोधपुर रो

1. मृत्युभोज के लिये जनता से खर्च के रुपये मांगे 2. ज्यादती

२०००) १ जोधपुर रो गांव खारियौ भदावतां रो

श्री रांणावतजीसा रा बाईजीसा रै १२०००)

८०००) १ जोधपुर रो गांव मालकोसणी

४०००) १ सोझत रो गांव चीरपटीयौ

३७५००)

श्री वडा भटियांणीजीसा रै—

१३,०००) १ जैतारण रो गांव छीपीयौ

३,८००) जोधपुर रा गांव बेराई

१,२५०) १ जोधपुर रो गांव हीरादेसर

१८०५०)

श्री चावड़ीजीसा रै—

३१००) १ जोधपुर रो गांव दांतीवाड़ो

६२५ जोधपुर रो गांव मंडीयौ

३०००) जोधपुर रो गांव तिलवासणी

७०००) मेड़ता रो गांव बगड़ १३७२५)

श्री लाडी भटियांणीजीसा रै—

८०००) जोधपुर रो गांव धवो

३०००) जैतारण रो गांव आसरलाई

१४०००)

माजी श्री बडा भटियांणीजी रो कांमेती पं० अंबाबगसजी रै जोधपुर रौ गांव माडपुरियौ, रेख ५००)

सुद ३ आखातीज रौ सिरे दरबार दौळतखांना रा चौक में हुवौ नै पांतीयौ[1] भोजनसाळ में सदामंद मुजब हुवौ।

वैसाख सुद ७ श्री हजूर री असवारी मंडोवर मेळे पधारिया। बाग में दोय पौर विराजिया। छूट रा चाकरां[2] रै मिठाई खरीदाय उठै जिमाया पछै पाछा घोड़े असवार हो चांदपोळ दरवाजा रै मारग होय गढ़ दाखल हुवा।

सुद ८ आयसजी श्री लिषमीनाथजी री पधरावणी माजी श्री बडा भटियांणीजी रै नोरे हुई। भेंट रा रु० २,०००) आया।

1. पंक्तिबद्ध भोजन की व्यवस्था 2. अस्थायी अथवा छोटे नौकर

वैसाख सुद १४ गढ़ में सारा देवतां री पूजा हुई। नै सैर में सारा देवतां री पूजा हुई। नै मंडोवर में सारा देवतां री पूजा हुई। सो पूजा करण नै व्यास, प्रोहित, कोटवाळ मुसरफ गया। नै पुजापो चोतरा सूं गयो। सुद १५ व्यास हरषचन्द री व्यास पदवी तागीरायत हुई।[२३]

संमत १९०१ रा जेठ वद ३ श्री हजूर री असवारी चोकेळाव पधारी। उठै बंदूकां छुडाई लला कोटड़ी रा छोरा किनका उडानता तिणां रा नीसांणा किया। तरै उणां रा किनका फाट गया। तरै नवा दिरीजिया।

वद ४ जोसी परभुलालजी ने आम दरबार में फुरमायौ—कांम दिवांण करै है नै छतीस कारखांनां रौ कांम हुवै है जिण रो तूं निगै राखजे, गैरवाजबी कांम होवण दीजै मती। हुवै जिसी मालम कर दीजै।[1] थारो भरोसो जांण भोळायो है।[२४]

वद १३ बिलाड़े श्री आईजी विराजे जिणां रौ दिवांण सीरवी सीवदांनजी री मातमपोसी करावण नै रायपुर री हवेली श्री हजूर पधारिया। नै पाछा पधारता गउषांनो तबेलो निजर गुदराय गोळ री घाटी रै मारग किले दाखल हुवा।

वद १५ जनांना दोढ़ी रो दोढ़ीदार कोटेचो जैतकरण ऊपर पेसकसी ठेरी सो कींक तो रूपीया भरीजिया नै बाकी रूपीया मिळिया नहीं, जिण सूं जनांना दोढ़ी रै बारणे तरवार गळे घाली।[2] तरै उठा सूं उठाय नै तळेटी ले जावता सो जैपोळ कनै आवतां देह वरतीजी।[3]

जेठ सुद १३ बुंध श्री हजूर साहवां री वरसगांठ रो उछत्र दसतूर मुजब हुवौ। नै आसोपा सवाईरांमजी नै दुपटौ ईनायता हुवौ नै खातरी हुई। नै प्रो० चिमनांरांमजी नै खजाना री दरोगाई हुई। नै तोपां रो सिलकां २५ वरस मुजब हुई।[4]

संमत १९०१ रा असाढ़ वद ३ अपील अदालत री दरोगाई लाला दौळतसिंघ नथमल रै नै व्यास गुमांनांरांम रै सांमल हुई। असाढ़ वद ६ कोटा

1. वस्तु स्थिति से अवगत कराते रहना 2. तलवार से अपने गले पर प्रहार किया
3. मृत्यु हो गई 4. जितने वर्षों की उम्र उतनी ही तोपें छोड़ी गई

सूं भला आदमी आया । नै सौगायत ने घोड़ो १., खासो सांमांन समेत ने षळीतो लाया, सो मुजरो हुवौ, नै डेरौ उदैमींदर हुवौ ।

वद ८ झितड़ा रा म्हेंत कंनीरांमजी री मातमपोसी करावण नै श्री हजूर री असवारी उणां रै डेरै पधारी । वद १३ झितड़ा रा म्हेंत भगोतीदासजी गढ़ ऊपर आया । काच-मैल में आसरिवाद हुवौ नै रू० ५०) भेट हुवा ।

सुद २ म्हांराणीजी श्री रांणावतजी रै आगे श्री महाराज कंवार नै श्री बाईजी तो हुवोड़ा हा परंतु अठै आयां पछै आसा रही[1] जिण कारण सूं अगरणी रौ उछव गाजा बाजां सूं हुवौ नै साधां जनांना मुतसदीयां वगैरे री सरु हुई ।

सुद १० व्यास पदवी व्यास मदनजी रिणछोड़दासजी भाउजी वालां रै हुई । पैदास व्यास पदवी रै मांय सूं रुपीया ३९,०००) वरस ३ रा निजर करण रो रुको लिख दियौ । तरै सिरपाव, पालषी, कड़ा, मोती कंठी वगैरे हुवा ।

असाढ़ सुद १५ ठाकुरजी श्री गंगसांमजी रै पोसाषी कोर गोटां री तथा सोना रूपा रा छत्र तथा फुटकर गैणो, वासण वगैरे हो जिणां री मौजुदायत[2] सं० १८३३ में लिरीजी जठा पछै लिरीजी नहीं सो आज तांई री मौजुदायत लेण नै व्यास गुमांनीरांमजी नै सिंघवी समरथमलजी नै मेल हाजरी लीवी । सो माल हजार ४०००) आसरे निसरियौ जिण री दिवांण मालम कीवी । तरै हुकम हुवौ मिंदर रा मुंडा आगे चोंतरा है सो पड़ाय नै दुकांनां कराय काढो ।[3] सो भाड़ो मिंदर तालकै लागसी । सो उण दिन हीज दिन दुकांना रो कमठो सरू हुवौ ।

संमत १९०२ रा सांवण वद १ अजंट गिरांट साहव लाठ साहव रो षलीतो लेनै आया जिणमें मजमून ईण मुजब कै हम अगटूंबर के महीने आगरा दिली तरफ आवेंगे सो वासते ईतला के लिखा है । उण दिन साहव मुनसी फजर रसूल नै साथै लेने आया । दोसती री वातां करी नै तोपां री सिलकां हुई ।

वद ५ सोभावत उमजी अेमदनगर सूं पाछा आया । नै वद ६ नै मुजरो हुवौ ।

वद ८ कोटा सूं पिंडत सुखाराम नै तुंवर प्रतापसिंघ आया । जिणां नै सीष हुई ।

---

1. गर्भ रहा 2. स्कंध-गणन 3. दुकानें बनवा दो

वद १० अजंट साहब किले आया। कोई हिंदी कागद बचावण मुदे नै पिंडत गौरोदतजी नै साथै लाया। वद १२ असवारी सूरसागर पधारी।

वद १३ श्री हजूर साहब हुकंम दियौ कै सईकड़ां आदमी दौलतखांना रा चौक में जांमा षिड़कीया पागां बांध भेळा होय जावै है सो अै कांई खावे है जिण ऊपर म्हैता गोपालरावजी अरज कीवी कै यां चाकरां रै छोटा मोटां रै वरसोदां महीना सालूणी वगैरे लाख च्यार रा पावता हा वरस १ में, सो आप पधारतां पेली मुहता लिषमीचंद जबत कर दिया सो हमें आप सुभ निजर कराय इणां रो निभाव[1] हुवै जिसो बंदोवस्त कराय दिरावै। अै इता आदमी राज ऊपर हीज है। इणा रे दूजो कोई धंधो है नहीं, तरै श्री हजूर सू फुरमायौ कै इणां सारां री नांव परनांवे हाजरी होय अर पांच सू लगाय पचीस तांई री प्रत दफतर में सभ गया चाहीजे औ हुकंम दियौ।

सांवण वद " (अमावस) नै देवासा रौ उछव महामींदर हुवौ सो श्री हजूर सायबां री असवारी पधारी। श्रीनाथजी रै भेंट ७) नै नौछावर २) हुवा। सिरदार मुसदी वगैरे साथै हा, जिणां सारां भेटां कीवी। पछै श्री हजूर साहव ने श्री आयसजी महाराज साथै पधार चनण मैल में विराजिया। सो नीमा सांम रा असवारी पाछी गढ़ दाखल हुई।

श्री बड़ा महाराजाजी रा फूल गंगाजी में पधराय नै आगो संग गयाजी नै बहिर हुवौ तिण में आदमी २००० आसरे हा जिण में कासी सू लगाय गयाजी तांई मरी पड़ी[2] तिण में आदमी २०० आसरे भागा[3] जिण में पं० कालूरामजी नै नीवी रा ठाकुर लिछमणसिंघजी उठै चलीया[4] नै पाछा सांवण में आया तिणां रै सांमै श्री हजूर साहब मांयलाबाग तांई पधारिया।

सावण सुद म्हे[5] जादा हुवौ तिण सू रांणीसर पदमसर रौ नाळो फूट पांणी निकळ गयौ जिण री मालम हुई तरै श्री हजूर सा असवारी कर पधार निजर गुदराय नै पाछी मरमत कराई।

सांवण सुद १५ राषड़ी रौ दरवार दौलतखाना रा चौक में हुवौ सोना रा सिंघासण ऊपर विराजिया। सिरदार मुसदियां वगैरे री निजर निछरावळ

1. निर्वाह 2. महामारी का प्रकोप हुआ 3. मर गये, कम हो गये 4. देवलोक हो गये 5. वर्षा

हुई। नै श्री गुसांई महाराज रा नै श्री आयसजी महाराज रा दुपटा सेलि राषड़ियां पधरीजिया। नै आस प्रोहित री राषड़ी पधरीज नै पछै षटदरषण मातर री राषड़ियां पधरीजी। पछै रात पौर आसरे गयां दरबार वोडीयौ।[1]

संमत १९०२ रा भादवा वद ५ नाग पांचम रै मेळे असवारी मंडोर पधार पाछा बालसमंद पधार पोळ ऊपरले झरोखै विराजिया नै मेळो निजर गुदरायौ।

वाद ८ वडा महाराज श्री मांनसिंघजी रा वाभा राजसिंघजी रौ व्याव अषैराजजी रै तळाव हुवौ, सोढा सालमसिंघजी री बेटी सूं। सुद १ विलाड़ा रा महाजन चौधरी अठै आया, ईजारदार बेवाजवी षेचल करे जिण मुदे। उणां नै सिणगार चौकी ऊपर बुलाय दोढी ऊपरला षावका रा झरोखा में विराज उणां री हकीकत सुणाय षातरी कराय पागां बंदाई।

सुद ७ आचारि बंकटाचारिजी महाराज री पधरावणी म्हेता गोपालरावजी री, भाट वागजी री अरज़ सूं हुई सो भेंट रू० ५००) हुवा नै उमराव मुसदियां री भेंट जुदी हुई सो सारा रूपीया हजार अैक आसरे आया।

सुद १० श्री हजूर साहव दोढ़ी ऊपरला षावका रै झरौखे विराज जात पोकरणां रा षांप पांप रा ठावा-ठावा पंचां नै बुलाय नै कांमेतियां रा मुढा सूं कवायौ कै श्री बड़ा हजूर साहवां रा गया सराध होय पाछा कांमेती आय गया है सो म्हांनै त्रिम भोज देणो है। सो मावो-मा[2] राजी-वाजी होय आपस रौ षीसो मेट दो जद सारां ही पाछी अरज करी कै सला विचार नै मरजी हुसी जीहु करण में आवसी पछै।

सुद १३ नै पंचमिद्रां में मंडी में कोटवाळ पंचां नै भेळा किया, रात रा। सो जोसी प्रभुलालजी रै कुतका नै न्यात में जिमावण रौ उदम[3] घणा बरसां सूं हो सो प्रभुलालजी आ बात कबूल कीवी कै वोरा सवाईरांम रा बेटां नै न्यात में जिमाय देणो, तरै चतांणी व्यासां जीमणो अंगेजीयौ[4] नै कुतका नै ही जिमावणो अंगेजीयौ। तरै जोसी प्रभुलालजी श्री हजूर में अरज करी कै न्यात सारी नै भेळी कर नै सगळां कनै कवायौ कै आज पेलड़ा झगड़ा टंटा सारा जाजम हेटे दे देवो[5] सो बाकी रां तो सारां मंजूर कर लियौ नै चोवटिया जोसी नै चतांणियां

1. समाप्त हुआ 2. आपस में 3. उद्यम 4. स्वीकारा 5. समाप्त कर दो

में चौधरी जिवाला बाळां वोरा रै नै कुतका रै भेळे जिमणो अंगेजीयौ नहीं। सारा नाकारो दे दियौ, पीए जोसी प्रभुलालजी गोपालरावजी नै सांमल ले अरज कीवी कै बाकी रा तो राजी हुय गया है नै दोय षांप रा घर तीनसेक आसरे रया है जिणां नै हूं राजी कर लेसूं। आप ब्रिम भोज करावे। तरै आ बात पकी, ब्रिम भोज करण री ठैर गई। सो भादवा सुद १५ नै मुहता लिषमी चंदजी नै हुकंम हुवौ कै ब्रिमभोज री तयारी करो।

संमत १९०२ रा आसोज वद २ नै ब्रिमभोज सीरा रौ हुवौ जिण रा चौका गढ़ में इण मुजब हुवा—

झरणा रा मुढा आगला चौक में तो पोकरणां विरांमणां रो नै छव न्यात रौ चोकेळाव में, सेवगां रौ नाजर चेनारांमजी रा डेरा में, नै उपादिया जोगेश्वरां रौ नाजर दौलतरांमजी रा डेरा में हुवा, नै सांचोरा नै पुरवीयां चोकेळाव में अेक षुणा[1] में, नै सिरीमाळियां रौ राणीसर में हुवा नै दिषणा- रा कंणकती बंद[3] नै रूपीया २) दोय दिरीजिया।

आसोज वद १२ वड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी रो सराध श्री हजूर सा हाथ सूं सारीयौ।

समत १९०६ रा सुद ६ लगायत सुद ८ तांई सिरदार आप रा गांवां सूं बुलावण रा षास रुका लिखोज नै याद फुरमाया तिके हाजर हुवौ किया, तिणां नै मुजरो हुवौ कियौ।

सुद ९ दसरावा रो दरबार दौलतखांना रा चौक में हुवौ सोना रा सिंघासण ऊपर विराजिया। मिंदरा रा दुपटा सेलो पधरीजिया नै व्यास, प्रोहित तिलक आरती कीवी पछै निजर निछरावळ होय दरवार बोड[4] फतैमैल में पधारिया। पछै भोजनसळ में पांतीये ठावा-ठावा[5] सिरदारां नै साथै ले विराजिया। रात पौर आसरे गयां पांतीयौ बोड सिरदारां नै सीष[6] हुई।

सुद १० अंबाबाड़ी रै हाथी ऊपर श्री हजूर विराज लारै पोकरण ठाकुर बैठा नै मुंढा आगै हाथी ऊपर आयसजी श्री लिषमीनाथजी विराजिया। नै अजंट साहब पण बाजु रा हाथी ऊपर बैठा सो-सिरे बाजार होय जलुसी सूं

1. कोना 2. दक्षिणा 3. जो भी कमर में कणगती धारण करता हो 4. समाप्त कर 5. मुख्य-मुख्य 6. विदा।

जाळोरी दरवाजा बारै पधार घोड़े असवार होय वाहिवाल ऊपर बुरछी बाय पाछी असवारी मुंढा आगे आतसबाजी छूटतां सिरे बजार होय किले दाषल हुवा । तोपां री सिलकां १२० हुई ।

समत १९०२ रा काती वद ६ महाराणीजी श्री राणावतजी रै महाराज कंवार हुआ घड़ी १ दिन लारला रा, तोपां री सिलकां १२५ हुई ।

काती वद ७ अजंट साहब आपरा मुनसी फजर रसूलजी नै पींडत गौरी-दतजी नै गढ़ ऊपर महाराज कंवार हुवां री बधाई देण नै मेलिया । जिणां नै श्री हजूर सूं २ मदिलां नै २ दुसाला ईनायत हुवा नै वकीलां रा डेरा में साहब ने अमला समेत जाफत दीवी, महाराज कंवार हुआं री षुसी री ।

वद " (अमावस) दीपमाळका रौ दरबार दौलतखांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ ।

संमत १९०२ रा सुद १ असवारी अनकूट रा दरसण करण नै श्री मदनमोवनजी, श्री बालकिसनजी, श्री गंगस्यांमजी, श्री कुंजविहारीजी रै मींदरां दरसण करण पधारिया भेंट सदामंद मुजब हुई ।

काती सुद १ श्री हजूर साहवां री असवारी सूरसागर पधारी सो अजंट साहब जोसीयां री बगेची तांई सांमा आया । पछै सूरसागर पधार घड़ी च्यार तांई विराजिया । पछै पाछा नीमा सांम रा गढ दाखल हुवा ।

सुद ६ मुहता लिषमीचंदजी सूं दिवांणी तागीरायत हुई ।[1] मोर री डबी मंगाय दोढी धरीजी नै कांम री भोळावण बगसी सिंघवी फौजराजजी नै जोसी प्रभुलालजी १, भंडारी सिवचंदजी लिषमीचंदोत नै हुई । नै अजंट साहब अजमेर री तरफ जावे सो डेरा सेषावतजी रै तळाव कियौ सु वकील अमला सुधा जावसी ।

संमत १९०२ रा मिगसर वद १ श्री हजूर साहब बगी में विराज सांढियां री हाजरी लेण सारू जाळोरी दरवाजा रै मारग होय बखतसागर री तरफ पधार हाजरी ले पाछा कायलांणे पधारिया । नै पाछा निमा सांम रा किलै दाखल हुवा ।

---

1. जब्त हुई

वद १० जोसी प्रभुलाल सँस भोज बिसनु जिग्य[1] करण री अग्या मांगी । नै श्री हजूर साहबां रो षास रुको दुवायती रो लिषायौ, मारफत मेहता गोपालरावजी री ।

मिगसर वद १२ श्री दरबार में पंवार धीरजी घोड़ा नव श्री पुसकरजी सूं ले आयौ । नै डेरो राईकेबाग कियौ जठै असवारी पधार घोड़ा निजर गुदराय नै घोड़ा फिराय पाछी सवारी गढ़ दाखल हुई । नं सुद १ नीमा सांम रा आचारि ताताचारजजी गढ़ ऊपर आया तीणां रै भेंट रु० ५०) हुवा ।

संवत १९०२ रा मिगसर सुद ६ नै जोसी प्रभुलालजी व्यासां री पोळ जाय संसभोज करण री अग्या मांगी थी सो आज लीधी ।

संमत १९०२ रा पोस सुद ५ अजंट साहब अजमेर गया था सो पाछा आया नै इणां रै भाई साथै आया, सो सूरसागर दाखल हुवा । सुद ७ अजंट साहब नं भाई दोनु जणा घड़ी तीन दिन लारला श्री हजूर में आया सो दोढी ऊपरला षावका में बिछायत हुई । जठै बैठा सो सांपीयात वातां हुय निमा सांम रा सीष हुई । सो सूरसागर गया ।[२५]

सुद ८ अंगरेजां रै नै सीषां रै झगड़ौ थो जिण में अंगरेजां री फते हुवां रा समाचार आया जिण री सिलकां तोपां री हुई २१ ।

पोस सुद ११ असवारी सूरसागर री हुई । सो अजंट साहब जोसीयां री बगेची तांई सांमा आया पछै सूरसागर पधार घडी दोय तांई बिराजिया । सु सोषीयात वातां कर पाछा किले दाखल हुवा । सुद १५ अजंट साहब नै उणां रा भाई री जाफत बालसमंद हुई । सु मिठाई तथा कोरी जीनस[2] कोठार सूं मिळीजी ।

संमत १९०२ रा माह वद ७ दीवाणगी भंडारी सिवचंदजी लिषमीचंदजी रा रै नै दफतर री दरोगाई भंडारी सिरीचंदजी रतनचंदजी रा रं हुई मारफत म्हैता गोपालरावजी री तिण रा दुपटा ईनायत हुवा । और उमेद..................
दीवांण दफतर रो दरोगो नै षजांची प्रो० चीमनीरांमजी नै जोसी प्रभुलाल
....

1. विष्णु यज्ञ 2. बिना पकाई सामग्री ।

माह वद ११ श्री हजूर री असवारी जोसी प्रभुलालजी रै सैंस भोज रो जिग्य हुवै जठै बत्तीस मेरां रै षासो विराज जलूस सूं पधारिया नै प्रभुलालजी नु सिरपाव कड़ा १, मोती १, मोतियां री कंठी वगैरे हुवा नै भायां नै कड़ा दुसाला हुवा नै लुगायां नै पीण पोसाषां ईनायत हुवा। नै गांव दोय जनांणो नै व्रिजया-सणी जोसीजी रै हवाले था, सु आज सूं पटै हुवा। नै माह वद १६ लगाय सुद ५ तांई जीमण आठ किया। मिठाई रा नै दीषणा रा कणकतीबंद रू० ४) च्यार दिया सो दीषणा रूपीया ४२,०००) लागा। मुकरड़े[1] रूपीया अेक लाख सारा लागा। पीण न्यात रा घर तीन सौ आसरे जीमीया नहीं।

माह सुद १४ अजंट गीरांट साहब किला ऊपर आय अरज करी कै लाहौर वाळां सूं हमारे लड़ाई बड़ी जबर हुई जिसमें हमारी सिरकार री फतै हुई। ईस मजमून का षलीता लाठ साहब का आपके नांवे है सो बचाय सुण लेवें। सो षलीतो बचाय खुसी री तोपां री सिलकां १०० आसरे हुई।

और पुस्तक प्रकास रै बारणे चसमां दौलतषांना रै बरोबर करावण रो हुकंम हुवौ जिण रो आज कमठो सरू हुवौ।

समत १९०२ रा फागण वद २ श्री हजूर साहबां रौ व्याव गांव झालामंड रांणावत गभीरसिंगजी रै काका री बेटी बैंन सूं हुवौ। श्री हजूर हाथी रै हौदे विराजिया। नै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा। नै उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा जांन में साथै था। सु जांन जोधपुर बणाय नै झालामंड जलूस सूं पधारिया सो परणीज नै पाछली रात रा डेरा दाखल हुवा।

वद ३ रात रा मैलां में पधार रात सारी मांहे रया। रंग, राग, गीत-गाळियां वगैरे हंगांम सारी रात रयौ नै श्री बडा रांणावतजी पैलां ही उठै पधार गया हा। जीमण भात सरसता मुजब दुतरफा हुवा।

वद ४ झालामंड सूं श्री हजूर कूच कर राईकेबाग पधार म्हाडोळ में जनांना सुधा विराज सहैर में सिरे बजार होय गाजा वाजा सूं नै आतसबाजी छूटतां थकां नै मुढा आगै पातरियां, भगतणीयां गावती थकी गढ़ दाखल रात घड़ी च्यार गयां हुवा। नै तोपां री सिलकां १२२ हुई।

---

1. कुल

वद ३ नै अजंट गीरांट साहब नै झालामंड बुलाया हा सो उणी दिन डेरां दाखल हुवा नै रांणावत गंभीरसिंघजी री तरफ सूं जिनस वगैरे सरभरा[1] हुई। पछै घड़ी दिन च्यार लारला रा अजंट साहब श्री हजूर में आया। मुलाषात होय सोषीयात बातां हुय पाछा डेरां गया।

फागण वद ७ श्री हजूर साहबां रा व्याव री मिजमांनी री जिनस में वो मिठाई वगैरे अजंट साहब रै सूरसागर मेली सो उठै तयारी कराय जीमानै गढ़ ऊपर आया सो षाबका में विछायत मसंद री हुई जठै बैठा नै नाच हुवौ नै खुसी री वातां हुई। पछै अंतरपांन री मनवार होय सीष हुई। वद ८ भंडारी मिलाप चंद रै अफील[2] री अदालत हुई।

वद १४ अेमदनगर कांनी रो गांव देतरोली रा मळजणा ८ रां सिणगार चौकी रा चौक में लड़ाई हुई। नै श्री हजूर सा षाबका रा झरोखा में विराज निजर गुदराई नै ईनांम रा रूपीया ५०) दिरीजिया। नै उणां ही दिन आउवा, निबाज रा ठाकुरां नै घरां री सीष रौ मुजरो हुवौ।

संमत १९०२ रा फागण सुद १ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। नै पिंडत गौरीदतजी नै साथै लाया। सो उण रा हाथ सूं लाठ साहब रौ षलीतो दिरायो जिण में लिखी—अंगरेजी सिरकार री फौज नदी सतलज उतर पंजाब में दाखल हुई, जिण री खुसी रो मंदिल पाग १, दुसालो १ गौरीदतजी नै इंनायत हुवौ।

फागण सुद ११ दौलतखांना रा चौक में फाग करायौ। उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन सारा हाजर हुवा सो पैला तो रंग रा पांणी सुं खेल हुवौ। पछै श्री हजूर साहब गुलाल री दड़ियां सिरदार मुतसदीयां में बाही। घड़ी दोय तांई पछै फूलां रा चौसरा सांरां नु इंनायत हुवा। पछै तीजा पोर रा फाग बोड मांय पधारिया। फागण सुद १३ फाग री असवारी हुई। सो हाथी रै हौदे विराजिया। षवासी में आसोप ठाकुर सिवनाथसिंघजी बैठा। नै रंग रा कड़ाव बजार में जगा-जगा भरीजिया नै बंब छूटतां थकां सिरे बजार होय मांयलेबाग दाखल हुवा। पछै पाछा नीमा सांम रा गढ़ दाखल हुवा।[२६]

सुद १४ डंडीयां री गैर[3] दौलतषांना रा चौक में हुई। आयसजी श्री लिषमीनांथजी नै श्री हजूर साहब ने मुसदी, षवास, पासवांन ठावा-ठावा रमीया

1. खातिरदारी 2. अपील 3. डंडिया नृत्य

सो गैर रात आधी गयां बोत हुई ।[1] पछै श्रीजी साहब मांय पधारिया । सुद १५ होळी रो सिरे दरबार सरसता मुजब हुवौ ।

संमत १९०२ रा चैत वद ४ आचारीजी श्री त्राताचारीजी अठै आया सो आज पाछी सीष सारू किलै ऊपर बुलाया सो षावका रा मैल में विराजिया नै भेंट रा रू० ६००) हुवा नै मुसदी, षवास, पासवांन नै हुकंम हुवौ सो सारां भेट कीवी । रात घड़ी सात गयां सीष हुई ।२७

वद ८ सील रो पुजापो गढ़ ऊपर सूं सदामंद मुजब कागे गयौ, नै नीमा सांम रा गुडला रो मेलो सरसता मुजब हुवौ । वद ९ पोकरण रा ठाकुरां नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ ।

वद १२ अलवर कांनी रा नट आया तिणां रो तमासो लिषणापोळ बारै चौक में हुवौ । श्री हजूर फूल मैल में विराज निजर गुदरायौ । नै ईनांम रा रू० २५०) दिरीजिया ।

चैत सुद १ संमत १९०२ नौरतां[2] री थापना[3] री पूजा बाड़ी रा मैलां में श्री हजूर पधार नै पिंडा कीवी । चैत सुद ३ श्री गवरां रो मेलो सदामंद मुजब गुलावसागर ऊपर हुवौ । सो श्री हजूर साहब जलूस सूं सिरे बजार होय पधारियां ।

सुद ८ वोळावणी रो मेळो देखण नै श्री हजूर साहब मांयलेबाग पधारिया । पोळ ऊपरला झरोखा में विराजिया । पछै श्री गवर री असवारी हुतां पैली उठा सूं असवारी हुई सो गढ़ दाखल हुई ।

संमत १९०२ रा वैसाख वद १ षावका रा मैल में लांबीयां रा ठाकुर नै मौसर[4] हुय घड़ीक बतलावण हुई । वद २ रास रा ठाकुर नै मौसर होय घड़ी दोय बतावण हुई । वद ३ पालीयासणी रा पीरजी री तरफ सूं उणां रा गुरभाई गेबीनाथजी चेती दसरावा रा जवारा लेने आया सो षावका रा मैल में बदिजीया । वद ९ तथा १० श्री हजूर सूं व्रिम भोज हुवौ । बारली विदीयासाळ में, जिनस षांड रो सीरो ।

सुद ३ आषातीज रौ सिरे दरबार दौलतषांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ । सुद ५ रास १, षींवाड़ो १, वासणी १ रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ नै

---

1. समाप्त हुई 2. नवरात्रा 3. स्थापना 4. मिलने का अवसर

बतलावण हुई । सुद ६ महाराज श्री भीवसिंघजी री पड़दायत गंगरायजी रांमसरण हुवा जिणां नै दाग कागे हवौ । वैसाख सुद ७ मेळौ देखण नै श्री हजूर घोड़े असवार होय सांमे मेळे पधारिया । पछै रावटी सूं घोड़ा घाटी रै मारग होय नागौरी दरवाजे होय गढ़ दाखल हुवा । नै चंडावळ रौ वकील सांदु नाथुदांन अंगरेजां सूं षेवट कर अजंट साहब नांवै भोलावण लाय नै षेजड़ला रा ठा० रा काका गुलाबसिंघ नै साथै आया । नै दोनु अजंट साहब सूं मिळीया नै पछै मु० लिषमीचंद री सला सूं अजंट साहब नै केणो कर मेहता गोपालराव नै साहब कना सूं कवाय नै अठा सूं कढाय दियौ । सु जेठ सुद १४ सु रवांनै हुवौ ।

सुद १३ लूंकड जालमचंद अमरचंद रा री दुकांन पाली जोधपुर में है जिण ऊपर दिसावरां री हुंडीयां सांवठी आई । नै रुपीयौ सभीयौ नहीं तरै वोरां रो तगादो[1] हुवौ सो श्री हजूर सूं वोरां री षेचल नहीं होण रो हुकंम दिरीजीयो नै खातरी रो दुसालो ईनायत हुवौ ।

संमत १९०२ रा जेठ वद ४ षीची उमेदकरण ने बगड़ी कांनी फौज दे मेलियौ जिण नै मुजरो हुवौ । जेठ वद ९ सिरोही सूं उठा रा भला आदमी चवांण समरथसिंघजी प्रोत डुगो आया । तिणां नै षावका रा मैल में मुजरो हुवौ । उणां थोड़ीसीक वार अरज कीवी पछै सीष हुई ।

सुद १ फतैमैल में हवद पांणी सूं भरीजियौ । नै जांबते हुवौ । नै मांयली छूट वाळा[2] हाजर रया । बाकी रां नै बारै लिया पछै घड़ी दिन लारला रा जाबतो खुलियौ । सुद २ श्रीजी साहब दोय घड़ी दिन लारला रा श्री चांवंडा माताजी दरसण करण नै पैदल पधारिया नै भेंट रु० २) हुवा । पछै तोपां बुरजां ऊपरली निजर गुदराई नै पछै मसीत कनै धांन रा कोठार निजर गुदराय मैलां दाखल हुवा ।

संमत १९०२ रा जेठ सुद ३ कुचांमण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ, वतलावण हुई । सुद ४ असवारी सूरसागर रो बाग निजर गुदरावण नै पधारी सो निजर गुदराय पाछा दाखल हुवा । सुद ८ श्रीजी साहबां री बरसगांठ रो समोरथो हुवौ । सुद १० कुचांमण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ नै बतळावण हुई । सुद १२ मेड़तिया दरवाजा बारै सेषावतजी रा तळाब नै राईकाबाग बिचै

---

1. तकाजा 2. अन्दर रहने की जिन्हें इजाजत थी

पलटण रा लोक रै रैण सारू छावणी करावणी जिण रो कमठौ सरू हुवौ। सुद १३ श्री हजूर साहबां रा बरसगांठ रो सिरे दरबार दौलतखांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ।

संमत १९०२ रा असाढ़ वद ३ श्री हजूर साहबां री असवारी जनांना समेत बाळसमंद पधारिया। सो उठै ही विराजणो हुवौ। वद ५ तथा ६ श्री हजूर री असवारी रांणीजी श्री लाडी रांणावतजी री जात देण नै मंडोर पधारी। सो जात दे पाछा बाळसमंद दाखल हुवा। वद ८ घड़ी दिन च्यार लारला रा असवारी हुई। सो सूरसागर पधार निमा सांम रा गढ़ दाखल हुवा। नै वद ३ लगायत वद ८ तांई दिन ५ बाळसमंद विराजिया सो असवारी रा लोक सारां नै मिठाई रा टका दिरीजिया। वद १३ श्री लाडी रांणावतजी री जातां गढ़ ऊपरला देवतां री देण सारू पधारिया। सो जातां दिरीजी।

असाढ़ सुद ४ ईडर रो गांव पिंडासण रा जागीरदार अजीतसिंघ नै षाबका में मुजरो हुवौ। सुद ६ रांणीजी श्री लाडी भटियांणीजी रै जनांना दोढी अगरणी रौ उछय हुवौ। सुद ९ गुलाब सागर रा पठा ऊपर नाजर हरकरणजी मिंदर करायौ जिण री प्रतीसटा[1] हुई। सुद ११ असवारी घोड़ा फेरण मुदे हुई। सो घोड़ा फेर छावणी रौ कमठो निजर गुदराय नै सेषावतजी रो तळाव निजर गुदराय नागौरी दरवाजा रै मारग होय गोळ री घाटी होय किले दाखल हुवा। म्हैतो धनराज नै मुहता लिषमीचंद री अरज सूं अेमदनगर महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी नै पढावण नै मेलीयौ नै खरच रो महीनो रू० ५०) रो हुवौ।

संवत १९०३ का विवरण

संमत १९०३ रा सांवण वद १४ श्री हजूर री असवारी घड़ी २ दिन चढियां हुई। सो सोझतीये दरवाजे होय रातेनाडे अगाड़ी पधारिया सो उठा सूं सागी माताळी री भाखरी पधार श्रीमाताजी रा दरसण किया। भेंट रू० ५) नै नौछावर रू० २) किया। पछै उठा सूं असवारी गांव झालामंड पधारिया सो पोळ रै बारणे रांणावत गंभीरसिंघजी आय मुजरो कियौ नै उठै मैलां में दाखल हुवा। नै तासळी पधरीज सुष फुरमायौ अर साथै लोक थो जिणां रै गंभीरसिंघजी मिठाई मेली। पछै अपोढी होय तासळी अरोग निमा सांम रा घोड़े असवार होय पाछा किले दाखल हुवा रात घड़ी छव गयां।

---

1. प्रतिष्ठा

संमत १९०३ रा सुद १ अजंट गीरांट साहब आबूजी सूं आया जिणां रै सांमे दिवांण वखसी उमराव सदामंद मुजब पेसवाई में गया ।

सुद २ गोढवाड रा महाजनां रै नै सुनारां रे घोड़े चढण रो मेंजर[1] थो जिण मुदे महाजन अठै आया जिका सिणगार चौकी कनै हाजर हुवा । श्रीजी साहब षाबका रै झरोखे विराजिया सो महाजनां मोर १) तोला निजर नै नौछावर रू० २) किया । सो दोढीदार पेमकरण ले खजांने मेलिया नै उण हीज दिन अजंट साहब किले आया । मांमूली पेसवाई हुई । षाबका में विराजिया घड़ी दोय तांई बातां हुई । पछै सीष होय सूरसागर गया ।

सुद ४ श्री हजूर साहब री असवारी सूरसागर पधारी सो अजंट साहब पेसवाई में सांमा जोसीयां री बगेची तांई आया पछै सूरसागर पधार घड़ी दोय विराज पाछा गढ़ दाखल हुवा । सांवण सुद ९ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया, षाबका में बिछायत होय बैठा, घड़ी तीनेक वातां हुई ।

सुद ११ श्री हजूर हींडोरां रा दरसण करण नै ईतरा मिंदरां—श्री महाप्रभुजी १, श्री मदनमोवनजी १, श्री बालकिसनजी १, श्री कुंज बिहारीजी १, श्री मोतीबाई रै मिंदर १, श्री लाल बाबाजी नाजर हरकरणजी रै मिंदर सो दरसण कर पाछा गोळ री घाटी रै मारग गढ़ दाखल हुवा । सुद १५ राखड़ी रौ दरबार फतै मैल में सुमेनो खडो होय मसनंद री बिछायत ऊमराव, मुसदी, षवास, पासवांनां री निजर निछरावळ हुई । नै व्यास प्रोहित तिलक आरती कीवी । नै मिंदरां रा दुपटा पधरीजिया नै सारां री राखड़ियां बंदीजी सदामंद मुजब सैदाना[2] घुरीया[3] सो रात घड़ी २ गयां दरबार बोड मांय पधारिया ।

संवत १९०३ भादवा वद ५ रांमकरण रांमनांमी रो चेलो नागौर वाळा नै षावगा में मौसर हुवौ । नै घोड़ी १ बड़ी गुलदार कागड़ी निजर कीवी ।

अजंट साहब नै मीम दोनुं मेळौ (नाग पंचमी) देखण नै षरबूजा वेरी री पोळ ऊपर बैठ मेळो देखियौ ।

वद ७ रांणीजी श्री लाडी भटियांणीजी रै बाईजी हुवा ।

---

1. मनाई 2. वाद्य विशेष 3. बजे

सुद ११ जुलणाई ग्यारस नै श्री ठाकुरजी आनंदधनजी री असवारी रेवाड़ी जुलण नै गुलाब सागर ऊपर पधारिया सो झूल नै पाछा निमा सांम रा गढ़ दाखल हुवा ।

भादवा सुद १२ बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री छमछरी रौ उछब मंडोर हुवौ जठै उमराव, मुतसदी, षवास, पासवांन जनांना कामेती पातरियां भगतणियां कलावत वगैरे नै सैर रो लोक सारा गया । सो भेंट नौछावर प्रसाद हुवौ । नै गवईया, कलावत भगतणियां पातरियां रात उठै रया नै जागण हुवौ ।

संमत १९०३ रा आसोज वद ७ बाड़मेर वाळा जाकीसन साहब अजमेर सूं आया तिणां रै श्री हजूर सूं मिठाई मेवा री डाली मेली । नै घास मुगधणो दही दूध, माषण वासण वगैरे री सरभरा हुई । वद ८ अजंट साहब नै जाकीसंन साहब दोनूं गढ़ ऊपर आया । सरसता मुजब मुलाखात हुई । वद १० जाकीसंन साहब रात पोर गयां बाड़मेर नै चढ़िया । वद ११ अजंट साहब निमा सांम रा गढ ऊपर आया सो घड़ी दोय तांई बतलावण होय पाछा सूरसागर गया । वद १२ बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी रो सराध[1] दौलतखांना श्री हजूरसा हाथ सूं सारोयौ ।

संमत १९०३ रा सुद १ श्रीजी साहब बाड़ी रा मैलां में पधार थापना री श्री माताजी री पूजा हाथ सूं कीवी । सुद ३ मुहता लिषमोचंदजी अषैचंदोत नै दिवाणगी रौ दुपटौ गुलाबी चिलांदार दिन पोर सवा चढियां हुवौ तिण रो सवब भंडारी सिवचंदजी रै कैणा सूं रेष रा रुका लिखीजिया नहीं, तरै लिषमीचंदजी अरज कराई हूं रेष रा रुका लिखाय देसूं । तिण मुदे इंणां रै हुई । आसोज सुद ९ दसरावा रौ सिरे दरबार दौलतखांना रा चौक में सदामंद सरसते हुवौ ।

सुद १० विजै दसमी नै रांवण मारण नै श्रीरामचंद्रजी री असवारी लवाजमा जलूसी सूं रथ में विराज सिरे बजार होय सिवाणची दरवाजा बारै पधारी नै श्री हजूर साहबां री असवारी हाथी रै हौदे विराज षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा । सो जलूसी असवारी कर जालौरी दरवाजा बारै पधार रांवण मारियां । पछै घोड़े असवार होय वाहीवाल रै बुरछी लगाय नै पाछी असवारी

1. श्राद्ध

सिरे बजार होय गढ़ दाखल हुवा नै बुरछी लगाई। उण बखत में घोड़ा चमकीया। सो मुहता लिषमीचंदजी रै पग रै लागी। सो पांच सात दिन हवेली में रया। पछै गढ़ ऊपर आया। सुद १३ तथा १४ म्हैता विजैमलजी नै धणकोली फौज देनै मेलीया जिणां नैं चढण रो मुजरो हुवौ।

संमत १९०३ रा काती वद ११ अफील री अदालत में दरोगो लालो दौलतसिंघ थो तिण री अेवज जोसी हंसराजजी हुवा। नै दिवांणी अदालत में दरगो किरपाकिसन थो जिण री अेवज लाला दौलतसिंघजी मुकर हुवा। काती वद अमावस दीपमालका रौ सिरे दरबार दौलतखांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ नै भोजनसाळ में सदामंद सरसते पांतीयौ हुवौ।

संमत १९०३ रा सुद २ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया सो घड़ी दोयेक बतलावण हुई। सुद ४ पोकरण १, रायपुर १, खैरवा रा ठाकुरां नै मोसर हुवौ। सुद ६ तथा ७ अजंट साहब आगरे जावे जिण री सीष करण नै गढ़ ऊपर आया घड़ी तीनेक बतळावण हुई। पछै अंतरपान होय सीष हुई। सुद १० नै खीची उमेदकरण जेठ वद ४ संमत १९०२ में बगड़ी फौज ले गयौ थो सो पैली तो बगडी वाळां सूं पेसकसी ठैरावण रो सवाल कियौ सो उणां मंजूर कियौ नहीं जिण ऊपर बगड़ी खाली करावण रै वासते लोक भेळो कियौ नै मोरचा घालणा सरू किया। जिण ऊपर अेक आउवा रा ठाकुर विनां सारा सिरदार अेकट कियौ जिण में सला मुहता लिषमीचंद री जिण ऊपर सिरदारां कयौ—श्री माजीसा नै सांमल लेवो। तरै मुहता लिषमीचंद किणी अैमदनगरयां कनै अरज कराई कै श्री लाडी भटियांणीजीसा नै श्री माजी साहब सूं नेरा (न्यारा) कर लीरावो नहीं तो इणां रौ पटौ हजार वीस उपजतां रो है सु माजी सा दाब लेसी। आगे चौथा भटियांणीजीसा रो ही पटौ दाब लियौ। अै तो सगा भतीजी है सो दाबे जिण रो इचरज[1] कही। तरै श्री हजूर सा लाडी भटियांणीजी नै न्यारा राख लिया। नै श्री माजीसा कनै जावण दिया नहीं तरै श्री माजीसा श्री हजूर सूं फेर नाराज होय गया। तरै मुहता लिषमीचंद वाभा श्री लालसिंघजी रौ कांमेती मुहता मनोरदास इणां रो सगो पोता पूनमचंद रो सुसरो जिण री मारफत श्री माजीसा सूं अरज कराई कै सदरलेन साहब हिदसथांन में आय गया है सो आगरे पांचांदसां में[2] आवसी सो सिरदार सारा सांमल है सो आपरो वकील सदरलेन साहब कनै मिळाय देवो। नै सिरदारां रा

---

1. अश्चर्य 2. पांच-दस दिनों में

वकील पिण सांमल होय जासी। जद श्री माजीसा श्री बाईजीसा रो कांम जैपुर में पं० सोभाराम दौलतपुर रो करै जिण नै श्री माजीसा अठा सूं साहब बड़ा रै नांवे षलीतो लिख सोभारांम नै बड़ा साहब कनै मेल दियौ। सो सोभारांम अलवर रा डेरां जाय षलीतो दे मुलाषात कीवी नै उण दिन सूं बड़ा साहब साथै रेयो ने सिरदारां री तरफ सूं वासणी रा ठाकुर करणसिंघ हरिसिंघोत रो भाई कुंपावत सांवतसिंघ वकील हुय बड़ा साहब कनै गयौ सो संमत १९०३ भादवा में।

जैपर डेरा हुवा नै अठीनै बगड़ी वाळां रै मोरचा लाग झगड़ो करण री तयारी हुई। जद बगड़ी ठाकुर सिवनाथसिंघ केसरीसिंघोत रौ षत[1] ले बड़ा साहब कनै आदमी गयौ जिण नै सांवतसिंघ बड़ा साहब कनै ले जाय उण कनै हकीकत सारी कवाई नै आप कही जिण ऊपर बड़ो साहब वकील सिंघी सुखराज वनराजोत नै बुलाय नै कयौ कै बगड़ी फौज मेली है सो उठाय दो। किस वासते कै बैकुंठवासी महाराजा श्री मांनसिंघजी नै हमारे तांई ये बात कही कै जो डेरा खड़ा होता है जिसकी चोब तो हम हैं नै जो ये सिरदार है सो डेरे की खूंटां हैं जिस तरफ का खूंटा उषल[2] जाय उस तरफ डेरा में सळ पड़ जाते हैं। अर जाहां सळ पड़ जाते वांहां डेरा चूने लग जाता है। सो ये राजरूपी डेरा है सो चूने लग जाय तो राज में हरषत है सो महाराज साहब कूं लिख जलदी बगड़ी से फौज उठाय लो। अर जो देर हुई तो तुमारे हक में अच्छा नहीं होगा। जद सिंघवी सुखराज अठै लिखियौ तरै खीची उमेदकरण तेजमालोत ने हुकंम पांथो कै थूं लोक नै उठा सूं उठाय जाळोरी भेजाईजे सो उठा सूं लोक नै उमेदकरण तो जाळेरी कांनी गया नै दूजो सवाल सिरदारां री तरफ सूं औ हुवौ कै मैंतो गोपालराव गुजरात रो है जिको श्री हजूर साहवां नै षोटी-षोटी[3] वातां सिखाय मुलक बरबाद करावै है सो ओ सषस ही अठै रैण लायक है नहीं। नै लडलु साहब पिण अेहमदनगर वाळां नै कांम में दखल नहीं देण रौ पिण लिख गया है सो इनकूं निकाळा चाहीयै। जद सदरलेन साहब श्री हजूर में षलीतो गोपालराव नै काढण रौ लिख मेलियौ। सो अठा सूं पाटण न चढिया।

नै जाळेरी कांनी सूं खीची उमेदकरण आज आयौ जिण नै मुजरो हुवौ नै जैपुर सूं सदरलेन साहब बहीर होय अजमेर आया जद जैपुर सूं श्री माजीसा

1. पत्र 2. उखड़ 3. झूठी, अनुचित

रौ वकील पं० केवलरांम रौ बेटो सोभारांम रो भतीजो साहब रै साथै हुवौ। सो जोधपुर आया जठा तांई साथै रयौ। नै सिंघवी सुषराज नै जैपुर रा डेरां ही ताव[1] चड़ बेमार हुवौ सो भादवा वद १२ रांमसरण हुवा[2]।

समत १९०३ रा काती सुद १२ अजंट साहब अमला समेत सुद ७ नै चढीया था सो डेरा गांव बीसलपुर, भावी, बिलाड़े, बळूंदे, धनैरीये, कुड़की, गोयनगढ़, नांद पुसकरजी होय अजमेर पांथा नै बड़ा साहब करनेल सदरलेन साहब ने जोधपुर री अजंटी रो चारज दियौ। नै मुनसी, पींडत, कीरांनि नै रूबरू कराय महीना तीन री सीष बड़ा साहब सूं कर आगरा नै चढीया।

समत १९०३ रा मिगसर वद ३ श्री हजूर री असवारी सिकार री कायलांणे हुई सो पाछा नीमा सांम रा गढ़ दाखल हुवा। वद ४ जांमनगर रा जाडेचा बखतसिंघ नै चारण बिजा नै मौसर हुवौ नै बतलावण हुई। वद १२ पोकरण ठाकुरां नै आथूणा खावका रा झरोखा में मौसर हुवौं।

वद १३ असवारी चोकेळाव हुई सो बाग निजर गुदराय नै बारी रै मारग रांणीसर में पधार नवी बुरज अरट रै वासते तयार हुई सो निजर गुदराय पाछा गढ़ दाखल हुवा।

आगरा रौ लाट साहव लिफटंट गवरनल जनरल मुलक में दौरौ करण नै आया तिण रै सांमा सदरलेन साहब बाईस रजवाड़ां रा वकीलां नै जोधपुर री अजंटी रौ अमलौ नै वकील सौ आदमी चढिया। पाळो पनरै सो आसरे सूं कूच कर डेरा किसनगढ़ किया। नै किसनगढ़ सूं डेरा गांव बादर सिंदरो हुवा सो उठै लाठ साहब रा डेरा होय गया हा। अर लाठ साहब रा लसकर में लोक इंण मुजब–हाथी ५०, घोड़ा ७००, ऊंट १०००, अंगरेज मीमां १५, गोरा १०० पलटण रा आदमी दूजा १५०० पाळा फुटकर मोदी भाड़ेती वगैरे जुमलै हजार ४००० आसरै नै साहब लोग दोय जणा डेरा खड़ा करावण वाळा। सो आगे जाय डेरा खड़ा करावै जठै डोरी नांष चौपड़ गटो[3] बजार मंडावै सो सदर बजार में झिंडो खड़ो हुवै। घोड़ा साहब रा खासा जिणां रै कपड़ा री कोटड़ियां घोड़ा दिठ जुदी जुदी सो नित मीती खड़ी होवै सो बड़ी तारीफ ज्यूं दीसै। डेरा दो बड़ा सो दोढ़ा खड़ा होयबो करै। लसकर में लाठ साहब क

1. बुखार 2. स्वर्गवास हो गया 3. चौपड़ नुमा.

लंगूर जिसो जिनावर सो लारला पगां ऊपर ऊभौ रैवे मिनख री तरै नै मिनख जिसी बोली बोले, साबत तो नहीं पिण नकल बोली जरूर, पछै सिंदरी सूं डेरा किसनगढ़ हुवा सो किसनगढ़ रा महाराज श्री पृथिवीसिंहजी हाथी विराज कोस दोय तांई सांमा गया। नै महाराज रै असवारी में हाथी हो जिसो हाथी लाठ साहब रा हाथियां में अेक ही थो नहीं जिण सूं इण री तारीफ हुई। किसनगढ़ डेरा दिन ३ तांई रया। जाफत नै सरभरा आछी तरा सूं हुई। साहब किला में गया। महाराज सूं राजी बोत रया पछै उठा सूं डेरो श्रीनगर हुवौ। नै उठा सूं अजमेर हुवा। मुकांम तीन हुवा। अजमेर रा मातर सिरदारां री मुलाखातां हुई। नै अजमेरा में सिरदारां नूं जमा और फौज बळ दोय रकम लागती ही सो सिरदारां री तंगो देख नै सदरलेन साहब फौज बळ तो आगे छोड़ दीवी नै फेर जमां में कीं कम करावण रा भाव हा। नै मेजर डीगसंन साहब रा नहीं कम करावण रा हा। सो लाठ साहब डीगसंन साहब तलाब बंदाया नै मुलक सरसबज कियौ जिण खातर सूं सदरलेन साहब रो कैणो तो मंजूर नहीं कियौ, नै डीगसंन साहब रो कैणो मंजूर कियौ। पछै उठा सूं नसीराबाद डेरा हुवा। उठै काळा लोक री नै गोरां री कवादां[1] लड़ाई में हुवै ज्यूं कराई। पछै उठा सूं डेरा नवे सैर में हुवा। उठै कवादां कराई नै डेरा दिन ८ रया। पछै लाठ साहब तो मेवाड़ में होय चितौड़ होय नीमच री छावणी री तरफ गया। नै सदरलेन साहब कूच जोधपुर कांनी कियौ सो डेरा जैतारण रै गांव गीरि हुवा।

संमत १९०३ रा मिगसर सुद १ असवारी दोफार रा सारा सिरदारां साथै सो कायलांणे पधारिया सो रात घड़ी पांच गयां पाछा दाखल हुवा। सुद ५ असवारी तबेले पधार घोड़ा निजर गुदराय घोड़ा फिराय दोफार रा गढ़ दाखल हुवा। मिगसर सुद ७ आउवे ठाकुरां नै मौसर हुवौ। सुद १० असवारी सूरसागर हुई सो निचला बाग में पधार वाग नै हवद निजर गुदरायौ पछै उठा सूं घोड़े असवार होय रावटी होय घोड़ा घाटी रै मारग होय सिंघवी ग्यांनमल री नाडी रै कने होय नागौरी दरवाजा होय मांयलाबाग में पधार कवल चौक रा मैल में सारो दिन विराजिया। नै रात घड़ी पांच गयां किले दाखल हुवा।

सुद १३ असवारी जनांना समेत चोकेळाव रांणीसर पधारी सो जाबतो हुवौ। सो आदमी मातर नै जैपोळ फतैपोळ बारै उरा लीया नै रांणीसर री

1. कवायद

पोळ बारणे छूट वाळां नै दोढीदारा नै हुकम हुवौ। सु हाजर हुवा, तायफा[1] हाजर हुवा सो गावणो हुवौ। पछै रात पौर ऊपर घड़ी ३ आयां किले दाखल हुवा।

संमत १९०३ रा पोस वद ३ आउवे ठाकुरां नै मौसर होय घड़ी तीन इंकंत रया।

वद ४ पोकरण रा ठाकुरां नै मौसर होय बतलावण हुई। वद ५ प्रग रास ने, रायपुर ठाकुरां नै मौसर होय बतलावण हुई।

वद ६ नै पंचोळी सिवदास नै करनेल सदरलेन साहब अजमेर सूं आवे जिण री सरभरा मारवाड़ री अमलदारी में करावण नै मेलीयौ।

वद ७ असवारी सिंघवी अखैराज रै तळाब पधारी। सु बाग में पधारता ही पोर १ बंगला में विराजिया। पछै पग ऊपरला मिंदर में बिछायत हुई जठै विराज तळाब में नालेर नींबू नषाय गोलीयां बवाई।[2] सो सारो दिन विराजिया। पछै रात घड़ी तीन गयां पाछा गढ़ दाखल हुआ।

पास वद "दौलतपुरा रौं गांव धणकोली फौज लागी ही सो गढ़ी पोस वद १३ कायम हुई। श्री दरबार रौ अमल हुवौ। म्हेता विजैमल रा कागद सू समाचार श्री हजूर में मालम हुवा।

संमत १९०३ रा पोस सुद १ बड़ा साहब सदरलेन साहब आवै जिणां री पेसवाई सारू बिसलपुर तांई इतरा जणा गया—

१ पोकरण रा ठाकुर
१ आउवा रा ठाकुर
१ दिवांण मु० लिषमीचंद
१ बषसी सिंघवी फौजराज

४

पोस सुद ४ कुचांमण ठाकुरां नै मौसर होय बतलावण हुई।

सुद ७ सदरलेन साहब अजमेर सूं आया। सो श्री हजूर साहब हाथी असवार हुवा नै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा सो सेषावतजी रा तळाब रै

---

1. गयिकाएँ आदि 2. गोलियों का निशाना किया

वरोबर तांई सांमा पधारीया। नै साहब पीण हाथी असवार थो सौ मुलाषात हाथीयां रै हौदे हुई। नै तोपां री सिलकां हुई। नै साहब रा डेरा सोझतीये दरबाजा बारै हुवा।

पोस सुद ९ बड़ा साहब सदरलेन नै सीकतर मारीसेन साहब हाथी असवार होय गढ़ ऊपर आया। नै श्री हजूर साहब दोढ़ी री मांयली पोळ भेरुजी रा किवाडां तांई पेसवाई में सांमा पधारिया। पछै फतैमैल में बिछायत हुई। जठै विराजिया नै लाठ साहब रे सांमा सदरलेन साहब गया तिणां री श्री हजूर सूं वातां कीवी, घड़ी दोय तांई। पछै अंतर पांन होय फूलां रा चौसरा दे सीष हुई। सो साहब पाछा सूरसागर गया।

पोस सुद ११ श्री हजूर री असवारी बड़ा साहब रै डेरै पधारण री ठैरी सो संमत १८९५ रा बरस में सदरलेन साहब आया। जद सरसतो[1] ठेरीयौ। तिण री विगत—

पैला तो बड़ा साहब रा सिकतर[2] मारीसेन साहब गढ़ ऊपर आय श्री हजूर सूं असवारी पधारण री अरज करी। पछै श्री हजूर साहबां री असवारी हुई। नै बड़ा साहब सांमा भंडारी सिवचन्द सोभाचंदोत री हवेली तांई आया। नै उठै मीलाप होय डेरां साथै दाखल होय गढ़ ऊपर बिछायत वगैरे हुवे जिण सरसते मसनंद री बिछायत हुय श्री हजूर तो मसनंद ऊपर विराजिया। नै साहब गालीचा ऊपर बेठा। सरसताई वातां घड़ी दोय तांई हुय षछै उठा सूं श्री हजूर तो कायलांणे पधारीया। नै साहब सोझतीया दरवाजा सूं डेरा उठाय सूरसागर अजंटी रा बंगला में दाखल हुवा। सबब के गीरांट साहब आवे जिते अजंटी रौ कांम करसी जिण मुदे।

पोम सुद १२ बड़ा साहब री जाफत गढ़ ऊपर हुई। खांणो साहब गढ़ ऊपर हीज खायो। रंग-राग, नाच-कूद हुवौ। पछै श्री हजूर सूं इकंत हुवा। तरै साहब कयौ कै श्रीमाजीसा अर उमराव नाराज है सो आप नाराज मत रखो। ईस बात में आपके हक में अछा नहीं है। जिण ऊपर श्री हजूर फुरमायौ। माजी साहब तो नाराज है नहीं, दोय च्यार बांमण हैं सो वैकाते हैं। अर उमरावां कोसी का हम कुछ लिया है नहीं, जिण ऊपर साहब पाछो कयौ— माजी साहब कूं बेकाणे वाळां कूं कैद करो। अर उमराव विदुन आउवा के

1. रीत 2. सेक्रेटरी

ठाकुर आपसे सब बरकीलाफ[1] हैं। तरै श्री हजूर पाछो फुरमायौ कै आप दस पांच रोज सबर रखें। उमरावां की बरकीलाफी मिट जावेगी। पछै दूसरा दिन सूं उमरावां नै फांटण रौ उदम[2] हुवौ जिण में इंण मुजब बात ठेरी[3]—

आसोप ठाकुरां नै तो गांव ५।। साढ़ी पांच देणा ठैरीया।

१ गांव चीमणवो फलौधी रो

१ गाधेणी जोधपुर रा

१ गोयंदपुरो

१ भांनावस मेड़ता रो

।। डोद आधी

१ पालड़ी रांणावतां री जोधपुर रा

५।।

रास ठाकुरां नै हुनास दोनू देणा ठेरिया।

बगड़ी डाकुरां नै फौज उठीयां पछै मुजरौ हुवौ नहीं सो हुणो ठेरियौ।

वासणी रा ठाकुर करणसिंघ हरीसिंघोत रै कुचेरो जबत हुवौ थो जिण अेवज नागोर रो गांव मांणकपुर देणो।

जिण में सिरदारां में फंट[4] पड़ गयौ।

पोस सुद १५ साहब गढ़ ऊपर आयौ। इकंत घड़ी ४ च्यार रयौ पछै रात घड़ी २ गयां पाछा सूरसागर गया।

माह वद १ नै साहब आंम दरबार में कयौ कै ताजियां की रात में बठोट वाले डूंगजी, वषतावरजी आगरा में कैद थे सो जेलषांना तोड़ कर नीकल गये अर सब कैदियां कूं नीकाल दिये ये हमारे चीठी आई।

संमत १९०३ रा माह वद ५ श्री हजूर में साहब किले ऊपर आयौ। नै इकंत हुवौ। नै पछै सीष करतां अे आषर कया कै अबी तलक आपसे माजी साहब राजी न हुवै। बांमणां के बेकावणे से तो आप बांमणां कूं कैद करो। आ कै साहब सूरसागर गयो। पछै ईतरां नै कैद कीया—

---

1. विरोधी 2. अपनी ओर मिलाने का प्रयास 3. निश्चित हुई 4. गुट बिखर गया

१ आसोपो सुरतरांम नैं बेटो म्हारांम
१ प्रोहित सांबरीमल
१ थांनवी पनालाल

पैला तो साहब लडलू नै फिरंच कनै इकबारनवेस थो सु राज री नै सैर री षबर साहब कनै पुगावतो नै पछै गीरांट साहब सीष परी दीवी[1] जद अठा सूं जैपुर लडलु साहब कनै परो गयौ। पछे पाछो बड़ा साहब री साथै जोधपुर आयौ। सु दीन २ तो बाभा लालसिंघजी रा बाग में रयौ नै दीन ७ चंडावळ री हवेली में रयौ। नै दीन ३ सुवाग में बाभा सरूपसिंघजी री हवेली में थो। जिण नै पकड़ण नै कोटवाळ सेरकरण गयौ सो पैला तो नट गया। नै सीवनाथ सिंघजी री हवेली में बाप बेटां नै मेल दिया। नै षछै आदमी सांवठा आया। नै तोप आई तरै घबराय आप री हवेली में बुलाय पनालाल नै तो पकड़ाय दियौ। नै बेटो बलदेवो सीवनाथसिंघजी री हवेली में थो जिण नै सीवनाथसिंघ जी साथै जाय पोकरण री हवेली में पुगाय दियौ।

माह वद ६ नै दोढीदार प्रो० नरांणदास नै उण रौ छोटो भाई देवदत नै कैद हुई।

वद ७ नै आसोपा सुरतरांम, म्हाराम, प्रो० सांबरीमल, थानवी पनालाल नै गढ़ ऊपर सलेमकोट में घाल बेड़ीयां जड़ दीवी। और आउवा रा ठाकुर नै कुचांमण ठाकुर मोतीमैल में मौसर होय बतलावण हुई।

माह वद ८ पोकरण ठाकुरां नै मौसर होय बतलावण हुई।

वद ९ सोम सिंघवी सुषराज री मातमपोसी करावण नै कुसलराज री हवेली असवारी पधारिया सो रु० ४०००) नै घोड़ा २ निजर कीया। नै कुसल-राज समरथराज नै श्री हजूर खातर मोषळी[2] फुरमाई नै घोड़ा रखाया नहीं पाछा ईनायत कीया।

वद १० सईयद अकबरअली नै कोटवाळ सेरकरण आदमी २०० ले बाभा वभूतसिंघजी री हवेली, जनांनी दोढ़ी कांनी बढ़ गया। गैणो कंठो १, पनां रो नै कड़ां री जोड़ी वगैरे गैणो षोस लाया। तरै उणां ही दिन लालसिंघ जी तो आउवा हवेलो जाय बैठा नै सरूपसिंघजी कुचामण री हवेली जाय बैठा।

2. हटा दिया 1. अत्यधिक

माह सुद १ बगड़ी ठाकुरां नै मुजरो हुवौ । सुद ३ बाळसमंद असवारी हुई । नै बड़ा साहब साथै गया नै पाछा रात रा दाखल हुवा ।

सुद ५ रांणीजी श्री चावड़ीजी रै पंचमासी अगरणी रौ उछव जनांनी दोढ़ी हुवौ ।

सुद ६ आउवा रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ । सुद ९ पोकरण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ ।

संमत १९०३ रा फागण वद १ सदरलेन साहब गढ़ ऊपर आया । षाबका रा मैल में विराजिया । सरसताई वातां हुय सीष हुई ।

वद ३ औरंगपुर री छावणी सूं इंदरसेन साहब आया तिणां री पेसवाई में सिंघवी समरथराज नै इंदरसेन साहब रौ वकील जोसी सांवतरांम कोस पूंण तांई सांमा गया । वद ५ बड़ा साहब गढ़ ऊपर आय षाबका रा मैल में बैठा नै अदालतां रा दरोगां नै बुलाय मिसलां बंचाई । घड़ीक सु साहब सीष कर सूरसागर गया ।

वद ७ श्री हजूर री असवारी कायलांणे पधारी सो भाखर में पधार सिकार कीवी । नै पछै मेह वरसण लाग गयौ सो बरसते में ही किले दाखल हुवा ।

फागण वद ९ बड़ा साहब नै इंदरसेन साहब गढ़ ऊपर आया । षाबका मैल में विछायत हुई । घड़ी दोयेक बैठा पछै अंतरपान होय सीष हुई ।

वद १० इंदरसेन साहब री जाफत वकील जोसी सांवतरांम री हवेली हूई सो श्री हजूर सूं दोढ़ीदार पेमकरण ने नै छुट रा तायफां नुं मेलीया ।

वद १३ बड़ा साहब नै इंदरसेन साहब छावणी रौ गढ़ ऊपर आया । घड़ी दोयेक वतलावण होय सीष हुई ।

संमत १९०३ रा फागण सुद २ बुध श्री हजूर साहबां रा व्याव दोय रा डोळा आया । सो डोळो—

१. तो ओसीयां रा रावळोत भाटी देवीसिंघ जोरावरसिंघोत री बेटी ।
२. नै दूजौ केलावा रा तुंवर लिछमणसिंघ री बेटी ।

सो श्री हजूर केसरिया पोसाष पधराय हाथी रै हौदे विराज षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा सो जलूसी सूं सिरेबजार होय मांयलेवाग पधार उठै परणी-

जिया। पछै पाछली रात रा महाडोळ में जनांना समेत विराज, गढ़ दाखल हुवा। तोपां री सिलकां १२५ हुई।

सुद ३ रांणीजी श्री वड़ा भटीयांणीजी रे महाराज कंवार दिन घड़ी २।। चढीयां कुंभ लगन में हुवा, जिणां रौ उछव जनांनी दोढ़ी सदामंद सरसते[1] हुवो। तोपां री सिलकां १२५ हुई।

और जेसलमेर रावळजी गजसिंघजी देवलोक सम्वत १९०२ रा असाढ़ में हुवा, तिणां रै लारै कंवर नहीं। तरै छोटा भाई केसरीसिंघ रो बेटो रणजीत सिंघजी उमर वरस ३ में रांणावतजी षोळे लीयो। नै कामेती आचारज ईसरलाल थो। रांणावतजी री सला सु कांम करे। नै आ सला विचारी कै रावळजी रा बाप केसरीसिंघजी ने तो जेसलमेर में राषणा नहीं। इणां रे गांव नाचणे री सीषं दे देणी। नै रावळजी टाबर है सो कांम में समजे नहीं सो मालकी रौ कांम[2] घणा वरस तांई आंपां करसां सो ठाकरां केसरीसिंघजी रे लीषणा सु प्रोहित सिरदारमल वड़ा साहब कने जैसलमेर री तरफ सु वकील है जिण वड़ा साहब नै कयौ – रावळजी तो कम उमर है जिते राज रा कांम लायक ठाकुर केसरीसिंघजी है सो उणां नै राज रा काम री मुकत्यारी दे देसो तो मुलक सरसबज रैसी[3] नहीं तरै मुलक वरबाद हो जासी। जद वड़ा साहब षलीतो लीप दियो कै जव तक महारावळजी अठारे वरस की उमर होय जब तक मुकत्यारी का कांम ठाकुर केसरीसिंघजी करेगा। दूसरे का दषल किसी का नही रेगा। ईण तरै रौ षलोतो ले प्रोहित सिरदारमल जेसलमेर गयो नै षलीतो वचायो। जद आचारज ईसरलाल नै तो कैद कर दीयो। नै राज रा कांम री कुल मुकत्यारी केसरीसिंघजी री हुई।

फागण सुद ४ अजंट गीरांट साहब आगरा सु आया, तिणां रै सांमा दीवांण, बगसी वगैरे सदामंद मुजब सेषावतजी रै तळाब तांई गया।

सुद ५ अजंट गीरांट साहब गढ़ उपर आया सो श्री हजूर साहब असवारी कर लवापोळ बारै सदामंद मुजब तांई सांमा पधारिया।[4] पछै पाछा पधार षाबका में विराजीया। घड़ी दोऐक साहब सु वतलावण हुई[5]। पछै अंतरपांन होय सीष हुई।

---

1. सदा की तरह 2. राज्य का कार्य 3. अमन चैन रहेगा 4. सदा की तरह निश्चित दूरी तक सामने गये 5. बातचीत हुई

फागुण सुद ६ वड़ा साहब सदरलेन साहब नै अजंट गीरांट साहब नं अेरणपुर री छावणी रो इंद्रसेण साहब ईणां तिनां री मीजमांनी[1] बालसमंद हुई। सो सरबरा[2] सारी कोठार सु गई। साहब लोगां उठे षांणो षायो। हवद भरीज चादरां फवारा नै आतसबाजी छूटीया। नै मुसदीयां नै श्री हजूर मेलीया। सो मनवारां करी नै तायफा[3] गया सो नाच कूद हुवौ। पछै रात आधी पछै सूरसागर गया।

सुद ६ फाग रो षेल दौलतखांना रा चोक में हुवौ। सो रंग रा कढाव भरीजीया सो पैला तो उमराव मुसदो षवास पासवांन रंमीया। पछै श्री हजूर साहब पधार कुरसी उपर विराज बंब री डांडी सु सारां नै फेर भीजोया। पछै गुलाल री दड़ीयां हाजर थी सो उणां रौ फाग हुवौ। नै पछै गुलाब रा फूलां री दड़ीयां रो फाग हुवौ। पछै फूलां रा चोसरा दिरीजिया नै भगतणीयां रा तायफा हाजर था तिणां नै ही माळावां दिरीजी। फाग बोत रयौ नै श्री हजूर सा मांय पधारीया।

सुद ११ अजंट साहब री वकीलायत रावराजा रिधमल रै हुई।

फागण सुद १५ होळी रो दरबार दौलतषांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ। मींदरां रा दुपटा वंदीज सारां री नोजर निछरावळ हुई। पछै दरवार बोड[4] भोजनसाळ में पांतीयो हुवो।[5] श्री हजूर विराजीया नै सिरदार मांमुली मुजब बैठा। नै म्हां रै म्हीनै[6] आसोप ठाकुर नै गांव देणा ठेरीया[7] सो आज लिषीजिया। तिण री विगत—

जोधपुर रो गांव पालड़ी रांणावतां री आधी मुहता जीतमल रै नांवे रेष १२५०)

जोधपुर रो गांव गोयंदपुरो कुंपावत मूलसिंघ रै नांवे रेष ७५०)

मेड़ता रो गांव भांनावस कुंपावत जुंजारसिंघ रे नाम रेष २०००)

………………………………………………………………

संमत १६०३ रा चेत वद १ फतैमैल में हवद भरिजीया नै डोलचीयां रौ फाग हुवौ। जिण में श्री हजूर साहब रा हाथ सु डोलची बावतां पग रपट गयौ

1. मेहमान नवाजी 2. खाने पीने की सामग्री आदि 3. तवायफों का समूह 4. दरबार समाप्त कर 5. पंक्तिबद्ध भोजन 6. माघ माह में 7. देने निश्चित हुए थे

सो हाथ उपर जोर जादा पड़ीयो सो हाथ जमस षाय गयो। जिण री षेद[1] हुई। तरै पाटो जर्रो पीरबगस बांदीयो। सो आरांम हुवो जिते पीरबगस गढ ऊपर हाजर रयौ।

चेत वद ३ रांणीजी श्री चावड़ीजी रै महाराज कंवार रो जनम रात रा हुवौ। नै उछ्त्र सदामंद मुजब जनांनी दोढ़ी हुवौ। नै तोपां री सीलकां सरसता मुजब हुई।

वद ४ गीरांट साहब हाथ री षेद रो सुष पूछण नै कीले आयो[2] सो सुष पूछ पाछो सूरसागर गयौ।

चैत वद ६ वड़ा साहब रो सिकतर[3] मारीसेन साहब रो छोटो भाई छोटो मारीसेन अठै हमार आयो सो आज श्री हजूर में आयो सो श्रीजी साहब तो षावका में ढोलीया ऊपर विराजीया नै साहब सांमा गालीचा ऊपर बैठ सुष पुछ पाछा सूरसागर गया।

चैत वद १२ सदरलेन साहब सुष पूछण ने गढ़ ऊपर आया सो सुष पूछ पाछा गया।

वद १४ बड़ा साहब सदरलेन साहब सीष कीवी सो वीदा री भिजमांनी गढ़ ऊपर दीवी सो साहब गढ़ ऊपर आया नै श्रीजी साहब षावका रा मैल में ढोलीया ऊपर दुसमणां रे षेद जिण सु विराजीया सो साहब आय गालीचा ऊपर ढोलीया कनै बैठा बतलावण हुई। पछै साहब उठा सु उठ डेरे आय सरद मैल में सलेषांनो[4] देषीयो। मुसायब साथे था सो दीषायो। पछै फतैमैल में षांणो खायो। पछै फतैमैल रा उलोड़ा चसमा में कुरसी ऊपर बैठा नै दौलतखांना रा चौक में पातरीयां भगतणीयां रो नाच घूमरां हुई। नै आतसबाजी छुटी नै मुसायबां साहब ने फूलां रा चोंसरा पैराया नै छोगा दिया। पछै श्री हजूर में साहब गया सो उणीज गालीचा ऊपर बैठा। सो वीदा री कीसतीयां दिषाय सीष हुई सो सूरसागर गया। सो दूजे दीन आबूजी ने चंढीया।

संमत १९०३ रा चैत सुद १ रांणीजी श्री लाडी भटीयांणीजी रै बाईजी सो रात रा रांमसरण होय गया। तिणां नै कागे दाग जमीसरण कीया।

---

1. पीड़ा 2. आराम पूछने के लिये किले पर आया 3. सेक्रेटरी 4. सिलह खाना, जहाँ शस्त्र रखे जाते थे

सुद ३ श्री गवर माता री असवारी गुलाबसागर कीला सु पांणी पोवण नै जलूस सु पधारी सो घड़ी ४ सु गढ़ दाषल हुवा ।

चैत सुद ७ पोकरण आउवा रा ठाकुरां ने मोसर होय[1] बतलावण हुई ।[2]

सुद ६ श्री गवर माता री असवारी कीला सु वोळावणी री जलूसु सीरे बजार होय माँयलेबाग पधारी झालरा ऊपर पांणी पाय घड़ी च्यार तथा पाँच नै पाछी गढ़ दाषल हुई ।

सुद ११ आउवा रा ठाकुरां नै मौसर होय वतलावण हुई ।

सुद १२ पोकरण, आसोप रा ठाकुरां ने मोसर हुवो ।

सुद १३ नीबाज, भादराजण रा ठाकरां नै मोसर हुवा ।

समंत १६०३ रा वैसाष वद १ आसोप, आउवो, नीबाज रा ठाकुरां नै मोसर हुवौ ।

वद ७ रास नीबाज रा ठाकुरां नै मोसर हुवौ ।

वद ८ पोकरण, आउवो, कुचांमण रा ठाकुरां ने मोसर हुवौ ।

वद ६ इलाके ईडर रौ गांव मुडेती रो ठाकुर चवांण सुरजमल घोड़ा २ निजर मेलीया सो श्रीजी साहब दौलतषांना रा चौक में पधार निजर गुदराया ।

वद ११ वोपारी चारण काछेला[3] रा घोड़ा १० ले आयसजी श्री लिषमीनाथजी महाराज हसते[4] गढ़ ऊपर आया सो सिणगार चौकी रा चौक में हाजर रखाया सो श्रीजी साहब षाबका रै झरोषे विराज नै निजर गुदराया ।

वद १२ बड़ा तबेला रा घोड़ा ८ तथा १० पुसकरजी सू खरीद होय आया सो दौलतषांना रा चौक में मंगाय, श्रीजी साहब पधार निजर गुदराया ।

संमत १६०३ रा वैसाष सुद २ तथा ३ श्रीजी साहब रा दुसमणां रे हाथ रे षेद थी सो आरांम होय आज श्रीजी साहबां रै षीजमत होय संपाड़ो पवरीजीयो । नै जर्री पीरबगस नै कड़ा, दुसालो मंदील रोकड़ रु० ५००) दिरीजिया । छुटवाला तथा मरजीदांन पोरा में रैता सो षीजमतां कराई नहीं सो आज सारां ही षीजमतां कराई[5] । नै पछै श्रीजी साहब षाबका में कुरसी

1. मिलने का अवसर दिया गया 2. बातचीत हुई 3. कच्छ प्रान्त का रहने वाला 4. मारफत 5. दाढी बनवाई

ऊपर विराजीया । उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारां ही निजर निछरावळ कीवी । पछै आषातीज रा उछव[1] रा दुपटा सेली पधरिजीया । व्यास प्रोहीत तीलक आरती कीवी । पातरीयां भगतणीयां सूरजपोळ रै बारणे बधावां[2] गाया । पछै मोती मैल में पधारीया ।२८

वैसाष सुद ६ श्री दरबार सु नवा कमठां रो कांम सरु हुवौ जिणां री नींव भरावण रो मोरत आज इंण मुजब हुवौ--

गुलाब सागर री ठोर धायसागर रो तथा ऊपरला भाषर ने वागर रो पांणी सारो गुलाब सागर में घालणो तिण रो ।

रांणीसर में मांयलो पठो ऊचो लावणो ।

चोकेळाव में वाग कनै पग पावटी[3] वाग पावण सारू करावणी ।

जै पोळ बारै अभैसाई[4] बुरजां ऊची लावणी ।

सुद १० नीवाज, लांबीयां रा ठाकुरां नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ । नै वासणी रा ठाकुर करणसिंघ हरीसिंघोत नै माह रै महीने गाँव दोय देणा ठेरीया हा । सो आज लीषीजीया—

१ नागौर रो गांव मांणकपुर

१ मेड़ता रो गांव पुंदलु

२

सुद ११ दोढ़ी ऊपरला षाबका रो मैल बधावणो तिण मुदे दोढ़ी सुं लगाय फरासषांना तांई चाँतरीयां है जिण ऊपर साळ करावणी तिण रो मौरत आज हुवो ।

वैसाष सुद १३ वाभा सरूपसिंघजी सु वेंरी माजी पड़दायतजी रंगरूपजी गैणा रौ तगादो थो जिणरो आज रुपीया २८,०००) रो षत लिषाय गांव इंदाणां री जमां लगाई । नै कोटवाळा सेरकरण रौ आदमी कलो नंदलाल रुपीया उतरीया जिते रयौ ।[5]

संमत १९०३ रा प्रथम जेठ वद ३ श्री हजूर साहब फतैमैल में पधार अभैसाई बुरजां रो कमठो निजर गुदरायो[6] ।

---

1. अक्षय बितिया 2. गीत विशेष 3. बावली जिसमें सीढ़ियें लगी हों 4. महाराजा अभयसिंह के समय बनी हुई 5. रुपये चुकते हुए तब तक रहा 6. अवलोकन किया

वद ४ वडा महाराज श्री मांनसिंघजी रै पड़दायतजी रंगरूपजी री बाई सदाकंवर जिणां रो व्यांव फळोधी रौ गांव बणासर रा भाटी मुकनसिंघजी सु हुवौ। नै गांव जोधपुर रा दोय हुवा—

१ कागल नै
१ जाजीवाळ
—
२

नै भाई वभूतसिंघजी, लालसिंघजी, सीवनाथसिंघजी, सरूपसिंघजी, सोवनसिंघजी पांचु जणा आपरा पटा मांय सु अेक अेक वेरो दियो।

वद ६ षेरवा रा ठाकुर नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ।

वद ७ आउवा रा ठाकुरां नै मोतीमैल में मोसर हुवौ।

वद १२ आउवा रा ठाकुर रा कंवर देवीसिंघ ने षाबका में मुजरौ हुवौ।

वद १४ श्रीजी साहबां रै दुसमणां रै हाथ री षेद थी सो आरांम हुवां[1] रो सिरे.दरबार दौलतषांना रा चौक में हुवौ। नै सारां री निजर निछरावळ हुई। नै तोपां री सिलकां हुई। नै तायफां रौ नाच गावणो हुवौ। नै छुटवालां ने आसो[2] पायो।

प्रथम जेठ सुद ७ रायपुर रा ठाकुर नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ।

दुतीक जेठ वद २ तथा ३ आउवा रा ठाकुर कुसालसिंघ बषतावर सिंघोत नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ।

वद ५ श्री दरबार री असवारी ठाकुरजी श्री नटवरजी रै मिंदर दरसण करण नै पधारीया। नै उठा सु श्री कुंजबिहारीजी रै मिंदर दरसण कर तबेले पधार घोड़ा निजर गुदराय गढ़ दाषल हुवा।

वद ९ निबाज़ ठाकुर सवाईसिंघ सांवतसिंघोत निबाज सु आया। सो फतैमैल में मुजरो हुवौ।

वद १० श्रीजी साहब षाबका री हथणीयां ऊपर पधार महारांणीजी श्री रांणावतजी साहबां रा नोरा सु १ घोड़ो, २ घोड़ीयां आई। सो निजर गुदराई।

---

1. हाथ के पीड़ा थी सो ठीक हो गई 2. विशेष किस्म की शराब जो यहीं पर बनती थी

वद १२ असवारी बालसमंद पधार नवो हवद हुवो सो ने तलाव निजर गुदराय मंडोर पधारीया । वड़ा महाराज श्रीमांनसिंघजी रै थड़े[1] सो भेंट रु० ५) नै नोछावर रु० २) हुवा पछै उठा सु बाग में पधारीया । उठै गउमुख वाळो हवद मोटो करावणो तिण रो कांम सरु हुवौ सो निजर गुदराय सीघोरीया रो बारी रै मारग कीले दाषल हुवा ।

सुद ३ पोकरण ठाकुर वभूतसिंघ सायमसिंघोत, नीबाज सवाईसिंघ सांवतसिंघोत नै कुचांमण रणजीतसिंघ सीवनाथसिंघोत, वासणी करणसिंघ हरीसिंघोत ने मोसर होय वतलावण हुई नै जेठ सुद ६ इणां नै हीज फेर वतलावण हुई ।

सुद ९ कुचांमण रा ठाकुर अेकलां ने मोसर हुवो ।

सुद १३ श्री हजूर साहव री वरसगांठ रो उछव नै सिरे दरबार दौलत षांना रा चौक में सरसता मुजब[2] हुवा । और आबूजी ऊपर वरसगांठ रो उछव हुवे जद वड़ो साहव नं अजंट साहब वकीलां रे डेरै आया करै सो वरसगांठ रे दीन प्रबात[3] रा वकीलां साहव नै कवायौ । जद पाछौ कयौ—सांय की बषत आवेंगे । पछै वकीलां उछव री सारी तयारी कराई । नै साहब आया नहीं तरे पं० कवरचंद नै बुलावण नै मेलीयो । सो आगे साहब चीठी बाचतो थो सो बाचते ही कयौ—हम नहीं आवेगे । कैजो महाराज साहब श्रीमानसिंघजी से दोसती थी नै अेदनांवा था सो महाराज तषतसिंघजी ने तोड़ दीया । जद पाछो कंवरचंद कही—सबब क्या है ।[4] जिण ऊपर कयौ के हम जोधपुर थे जब डूंगरसिंघ वषतावरसिंघ आगरा री जेळ मांय से नीकळ गए । जिसकी तो पेसतर कही थी । अर अब हमारे चीठी आई है जिसमें लिखा है डूंगरसिंघ, जवारसिंघ ब्होत सा लोक इकठा करके नसीराबाद की छावणी पर डाका डाला । सो षजांना में रुपीये २६,०००) नकद थे सो ऊंटां में घाल के ले गया । नै वां से बुढसु ठाकुर के गांव कंचोलीया की सींव में रात कुं रै'कर[5] डाका मारा सो हमारी सिरकार का दावा ईस वारदात का महाराज तषतसिंघजी से है । सो हम महाराज साहब की सालगीरै में कभी नहीं आवेंगे । अर सिंघवी समरथराज कूं कहो कै तुमारा यां रेणै का कुछ जरूर नहीं तुम आपके मालक के पास जावो । जद बड़ो साहब

1. स्मारक 2. सदा की तरह, परम्परागत ढंग से 3. प्रभात 4. कारण क्या है 5. रात को ठहर कर.

ने अजंट साहब उछव में आया नहीं नै वकीलां दोनां ही सिंघवी समरथराज नै राव राजमल सारो अवाळ[1] लीपीयो सो श्री हजूर में मालम हुवो, जद बुढसु रो पटो जबत हुवो। नै वकीलां ने लिषावट हो गई कै बुढसु रो पटो जबत होय गयो है। तरै वकीलां साहब नै कयौ कै हमकूं पटा जबत करणे से मुतलब नहीं। डूंगजी जवारजी कूं पकड़ लाय दो या कांही साबूत कर दो ये बात नहीं होगी जब तक हमारी सिरकार का दावा जोधपुर सुं है और हमारी सिरकार से मिसटर गीरांट साहब अर कपतांन मेसंन साहब अर कपतांन हाटकासल साहब ये तीनु जणां कुं हम जोधपुर भेजते हैं सो महाराज साहब फौज अपणी भेज डाकुवां कूं गीरफदार करके हमकूं सूंप देवे या फौज गीरांट साहब री साथ भेजे सो जिहां होय जिहां पकड़ो।[२६]

दुतीक–जेठ सुद १५ वाभा लालसिंघजी रै उणां री माजी रा गेणा बाबत रो षत रूपीया ५५,०००) रो लिषीजीयो, कोटवाळ सेरकरण हसते। नै गांव दोय १ पुंदलो, १ तोलवादर जबत होय सेरकरण तालके षत रा रू० पेटे हुवा। पछै लालसिंघजी तो सोष कर पटा रे गांव हरसोर चढ़ गया नै वाभा सीवनाथ सिंघजी रै उणां री माजी रा गेणा बाबत हाथी १ मुकनो मंगळगज वड़ा हजूर साहबां रो ईनायत कीयोड़ो हो सो तो राज में उरो लीयो नै षत रु० २८,०००) रो लीषाय नै गांव सेवकी री जमां लगाय कोटवाळ सेरकरण रे सुपरद हुवौ।

संमत १९०३ रा असाढ़ सुद पू. कुचांमण, पोकरण, निबाज रा ठाकुरां नै मुजरो हुवौ। नै वरस गांठ री निजर निछरावळ आगे कीवी नहीं सु हमै कीवी।

सुद १० गीरांट साहब, हाटकासल साहब नै मेसन साहब मुनसी फजर रसूल राव राजमल अै आबूजी सूं उतर जोधपुर नै रवांनै हुवा। नै अजंटी रौ दफतर अमलो नै मीम तो आबुजी ऊपर ही रया नै अठै पैली वरसगांठ रा उछव में साहब नहीं आयां रा समाचार आया जठा पछै दिन दसेक नै सिंघवी कुसलराज नै पंवार अनाड़सिंघ अठा सूं फौज ले चढ़िया सो मेड़ता री तरफ गया।

असाढ़ सुद १२ तथा १३ अजंट गीरांट साहब नै हाटकासल साहब नै मेसन साहब आबूजो सूं आया, तिणां री पेसवाई में उमराव, मुसदी सरसता मुजब रया नै सुद १४ ने श्री हजूर में आया सो मामूली पेसवाई में फलसा तांई[2] पधारीया। नै विछायत काच मैल रा झरोषा में होय ने विराजीया। डूंगरसिंघ,

1. वृत्तांत 2. जोधाजी के फलसे तक

जवारसिंघ नै पकड़ण री बातां हुई । तरै श्री हजूर फुरमायौ—अठा सु फोज दे सिंघवी कुसलराज नै पवार अनाड़सिंघ नै चढ़ाया है सो अबे सिकतर साहबां नै कहो सो अनाड़सिंघ कुसलराज सांमल होय जावै ।

जेठ रै महीने हेजा रौ कारण हुवौ सो दीन च्यारेक तो आदमी सांवठा भागा[1] पछै मोला मोला में सायंती रा होम हुवा तरै आदमी कंम भागणा सरू हुवा सो दीन पनरै वीसेक तांई कारण रयौ पछै वीलकुल मीटोयो ।

संवत् १९०४ का विवरण

संमत १९०४ रा सांवण वद १ सिकतर हाटकासल साहब नै मेसन साहब अठा सु चढिया सो श्री दरबार री फौज रा डेरा मेड़ते तथा दूजी जगा होसी जठे सांमल होसी ।

वद ३ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया । दसतूर मुजब मुलाकात हुई ।

वद ५ कायलांणे असवारी पधारी सो मैलां री मरमत हुई सो निजर गुदराय तीषी भाषरी कनै गोळीयां बवाई[2] नै पछै गढ़ दाषल हुवा ।

वद ६ म्हेता विजैमल नागौर कांनी थो सो आज अठे आयो जिण ने मुजरो हुवौ ।

वद ७ सेषावतां नै पकड़ण ने सिंघवी कुसलराज, पंवार अनाड़सिंघ मेड़ता कांनी गया जिणां ने हुकंम पांथो[3] के जठी सेषावतां री भाळ लागे[4] जठी ने चढ़ जावै । जो तुंगा[5] दोय करनै सिकतर जणा २ थांरे कने आया है सो उणां रा केणा मुजब बरतजो । नै अठा सु पण अजंट गोरांट साहब चढ़णा ठेरीया जिणां साथै बषसी सिंघवी फौजराज नै सिरदार नींबाज सवाईसिंघ सांव्रतसिंघोत नै भादराजंण इद्रभांण बषतावर सिंघोत, चंडावळ प्रतापसिंघ लिछमण सिंघोत नै कंटाळिये गोरधनदास सिभुसिंघोत ईतरा जणां साथै मेलणा ठैरीया । सो आज अजंट साहब गढ़ ऊपर आय चढण री सिष कीवी । नै फोजराज ने चढण रो मुजरो हुवौ नै सिरदार गांवां में है जठे हुकंम सांमल होण रो पांथो नै वद ८ नै निमा सांम रा अजंट साहब नै फौजराज चढ़ीया ।

---

1. बड़ी संख्या में मरे 2. बन्दूक से गोलियें चलाई 3. पहुंचा 4. पता लगे 5. फौज की टुकड़ियां

सांवण वद १४ माजी श्री तु'रजी[1] षेतासर वाळा देवलोक हुवा, दाग[2] पंचकुडां हुवौ ।

संमत १६०४ रा सांवण सुद १ भादराजण ठाकुर इंद्रभांण बषतावरसिंघोत गांव सु आया तिणां नै सिंघवी फौजराज सांमल होण रो मुजरो हुवौ ।

सुद ६ कुचांमण ठाकुरां नै मोसर होय बतलावण हुई ।

सुद ११ पोकरण ठाकुरां नै मोसर हुवौ ।

सुद १३ कुचांमण ठाकुरां नै मोसर होय बतलावण हुई ।

सुद १४ श्रीजी साहबां री असवारी जनांना समेत कायलांणे पधारी सो पैला तो श्रीजी साहब दाषल हुवा ।[3] नै पछै जनांनी असवारी दाषल हुई ।

सांवण सुद १५ राषड़ी[4] पूनम थी सो दरबार तो हुवौ नहीं नै उभां उभां[5] तीलक कराय राषड़ीयां बंदीजी । नै अैरणपुर री वकीलायत जोसी सांवतराम सो इंदरसेन साहब रा केणा सूं मोकुब हुई । नै मु० चतुरभुज जैतारण वाळा रे हुई मारफत राव रिधमल री ।

भादवा वद १ अजंट गीरांट साहब फौज नै बारोठीयां[6] रो नै सीकतरां[7] री भोळावण देनै पाछा जोधपुर आय रात दोय रैने आबूजी नै चढ़ गया ।

सो बड़ा साहब ने सारो अैवाळ जाय कयौ । और अजंट साहब रै बिलायती कुत्तो थो जिण ने नार पकड़ ले जाय नै मार नांषीयो तिण रो फीकर अजंट साहब नै मीम घणो कीयो । जिण रौ समाचार वकीलां जोधपुर लिषीयो । तरै पिंजरो १ नार पकड़ण रो कराय नै कबुतरषांना वाळां ने देनै नार पकड़ण सारू मेलिया । सो नार नै पिंजरा में पकड़ साहब नै सूंप दियौ, जिण सूं साहब बहोत राजी हुवौ नै पछै कीताक दिनां रै बाद नार सुधो पिंजरो नषी तळाब[8] में साहब डुबो दियौ । सो नार मर गयौ । नै असवारी कायलांणा सुं जनांना समेत बाळसमंद दाषल हुई ।

समत १६०४ रा भादवा ५ नाग पांचम[9] रो मेळो देषण सारू बाळसमंद री पोळ ऊपरला मैल में जनांना समेत जाबता में विराज मेळो निजर गुदरायो ।

---

1. तंवर जाति की रानी 2. दाह संस्कार 3. प्रवेश किया 4. रक्षा बंधन 5. खड़े-खड़े 6. कारण विशेष से बाहर निकल कर अशांति फैलाने वाले 7. अंग्रेज सेक्रेटरी 8. नकी झील 9. यह मेला मंडोर में अब भी लगता है

वद ६ पठा ऊपरला बगेचा रा मारग हो श्री हजूर सा षवास, पासवानां नै साथै ले भाषर में सिकार पधारिया। सो सिकार तो हुई नहीं, जद पाछा पधारीया।

वद "(अमावस) निबाज ठाकुर बूढसु, षैरवो, समदड़ी रा ठाकुरां नै निमा सांमरा मोसर हुवो।

संमत १६०४ रा भादवा सुद १ श्री हजूर री असवारी दिन उगां हुई। नै आयसजी श्री लिषमीनाथजी महाराज पीण साथे था सो चैनपुरा री वाड़ीयां सूरपुरे लोरडी रा सर ऊपर होय पाछा इंण हीज मारग पधार बाळसमंद दाषल हुवा।

सुद ६ बाळसमंद सूं जनांना समेत असवारी हुई सो सूरसागर रा वाग में दाषल हुवा।

सुद १० असवारी जनांना समेत सूरसागर सूं मांयलाबाग में दाषल हुवा।

सुद ११ नाजर हरकरण गुलाब सागर ऊपर मिंदर करायो जिण रे डागळे[1] असवारी पधार श्री ठाकुरजी री रेवाडीयां[2] रा दरसण कीया नै तळाब में नालेर फैंकाया नै रेवाड़ीयां पाछी बहीर हुवां पछै असवारी वाग दाषल हुई।

भादवा सुद १४ कुचांमण रा ठाकुर नै मोसर होय बतलावण हुई।

और अजंट साहब फौज में गया तरै तुंगा[3] दोय हुवा सो कीलादार अनाड़सिंघ साथै तो वड़ा साहब सिकतर कपतांन मेसन साहब नै मेड़तीयां सिरदारां री आसांमी गुलर वगैरे। नै दूजा तुंगा में सिंघवी फौजराज कुसलराज नै सिकतर हाटकासल साहव था नै सिरदारां री आसांमीयां रास जावळो डोडीयांणां रा ठाकुर वगैरे था सो कीताक दिनां सुं फौजराज कुसलराज तो पाछा जोधपुर आय गया नै वो तुंगो म्हैता विजमल नै हाटकासल सांमल रया सो इंण वात रे नेनत षबर सुं तथा वार सुकर तां करतां तुवराटी में गांव........।

संमत १६०४ रा आसोज वद २ नीबाज ठाकुरां ने मोसर होय वतळावण हुई।

1. छत 2. कृष्ण की सवारी का जलूस 3. फौज की टुकड़ी

आसोज वद ६ तथा ७ श्रीजी साहब मांयलाबाग सु नाजर हरकरण मिंदर करायो जठे जनांना समेत जाबतो कराय रात घड़ी दोय गयां पधारीया सु दरसण कर घड़ी दोयेक सु पाछा मांयलेबाग दाषल हुवा ।

वद " सुरज परब हुवो सो श्रीजी साहब तुलाव विराजिया । सो रोकड़ रुपीया ३०००) ने म्होरां नग ८ नै धांन कपड़ो वगैरे न्यारो ।[1]

सुद १ अजंट साहब आबूजी सु आया सो पेसवाई में दिवांण वषसी वगैरे सरसता मुजब गया ।

सुद २ अजंट साहब श्री हजूर में मांयलेबाग आया सो श्री हजूर पेसवाई में बिचली पोळ तांई सांमा पधारीया सो कंवळ चोक में बिछायत हुई जठे घड़ी दोयेक विराज बतलावण हुई ।

सुद ३ गीड़दीकोट में हाथीयां री लड़ाई हुई नै श्री हजुर साहब गीड़दी-कोट में बंगलो फरासषांना वाळी जायगा रै उपर थो जठे विराज निजर गुदराई ।

सुद ४ जनांना समेत असवारी मांयलाबाग सु कीले दाषल हुई ।

आसोज सुद ५ श्रीजी साहब रे दुसमणां रे कीहुक हाथ रे षेद आगे हुई थी जिण जायगा फेर रात रा जोर आय जताई । सो विरांमणां री वरणीयाँ बैठी ।[2]

सुद ६ दसरावा रो दरबार षेद रे मुदे हुवो नहीं ।[3]

सुद १० श्री रामचंद्रजी री असवारी रांवण मारण नै जलूस सु सदामंद मुजब हुई सो रांवण मार रात रा पाछी कीले दाषल हुई ।

संमत १९०४ रा काती वद २ अजंट गीरांट साहब गढ़ ऊपर आया सो श्रीजी साहब तो षेद रे मुदै ढोलीया ऊपर विराजीया नै साहब ढोलीया कंने गालीचा ऊपर बैठा । घड़ीक बतलावण होय सीष हुई ।

वद ३ सीकर रावराजा लिछमणसिंघ रा बेटा पड़दायत रा मुकनसिंघ हुकंमसिंघ सो सीकर सु छाड ने डुंगरसिंघ जवारसिंघ सांमल था जिणां नै पकड़ण रै वासते जैपर रा अजंट री पिण लीषावट अठारा अजंट रे नांवै आई ।

1. तुलादान किया जिसका विवरण है   2. ब्राह्मणों को भोजन कराया 3. हाथ की पीड़ा के कारण दशहरे का दरबार आयोजित नहीं हुआ

सो अजंट साहब रा कैणां सु आंपणी फौज में मुकनसिंघ हुकंमसिंघ ने पकड़ण रो हुकंम पांथो[1] जिण सु पंवार अनाड़सिंघ फौज लीयां डीडवांणां कांनी थो नै सीकतर मेसन साहब साथ थो सो हेरो लगाय[2] जैसलमेर रौ गांव भजु में था जठे अनाड़सिंघ जाय ने भादवा में ही पकड़ लोया था सो आज अठे जाबता सु मेलीया, तिणां ने गढ़ ऊपर वाभा वभुतसिंघजी री डेरा वाळी हवेली में राषीया।

वद १३ दोढ़ीदार रिणछोडदास रांमसरण हुवौ नै उण रै षोळै[3] पेमकरण रो वेटो सैंसकरण ने दीयौ। नै दोढ़ी री दरोगाई इनायत हुई।

काती वद १४ श्री हजूर मुता लिषमीचंद ने फुरमायौ के म्हांरी पढ़ण री मरजी है सो अवार श्रो धंदो रहे तो दीन सोरो वितीत हो जाय।[4] जद लीषमीचंद पाछी अरज कीवी के षरतरगछ रा जती है सो श्री दरवार रा गुरु है सो वांमे कोई जगां आछो हुवै तो बुलाय नै पढणो सरू करावै। जद चांपावत सालमसिंघ अरज कीवी के गुरां अगरचंदजी चोषा है। नै श्री बड़ा महाराज मांनसिंघजी री वषत में पींडतां री सभा में आवता नै आप पधारीयां पछै उण ही वरस में वैसाष तथा जेठ में दुसालो ईनायत करायो। जद श्री हजूर सु फुरमायो ठीक है। उणां ने प्रभात रा बुलाय लेणा। तरै लीषमीचंद उण ही वषत गुरां ने कवायो के प्रभात रा गढ़ ऊपर हाजर हुजो। सो वद " नै गुरां गढ़ ऊपर आया। नै श्री हजूर में आसरीवाद हुवौ ने निछरावळ कीवी, सो श्री हजुर सू फुरमायौ म्हैं थांरै कने पढ़सां।[5] तरै पाछी अरज करी कै आज तो अमावस है नै सुद २ रो चोषो दिन है[6] सो उण दिन सु सरू करावे। जद फुरमायौ हाजर तो काले ही होय जावजो नै पढणो सरू पीरसु सु करसां। नै दीवाळी रो दरबार हाथ री षेद रै मुदै हुवौ नहीं। नै सुद २ नै श्रीजी साहब पढणो सरू कीयो।

काती सुद १३ अजंट गीरांट साहब गढ़ उपर आया। घड़ी दोयेक इकंत रया।

सुद १४ श्रीजी साहबां रे दुसमणां रै षेद थी सो आरांम हुवौ।[7] तीण रो संपाड़ो सथरिजीयो[8] नै षावका में कुसी रो दरबार हुवौ नै उमराव, मुंसदी, षवास, पासवांन हाजर था जिणां री निजर निछरावळ हुई। तोपां री सिलकां

1. आदेश पहुंचा 2. घात लगा कर 3. गोद 4. विद्याध्यन में दिन आसानी से गुजर जाय 5. आप से विद्याध्यन करेंगे 6. अच्छा दिन है 7. हाथ की पीड़ा ठीक हुई 8. स्नान आदि किया

हुई, अर सूरजपोळ रै बारणै पातरीयां भगतणीयां रो गावणो हुवौ। नै अंजंट साहब रै कुसी री मिजमांनी री जिनस मैलीजी।[1]

संमत १९०४ रा मीगसर वद १ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ी तीनेक इंकंत रया।

वद ७ जांमनगर सु जांम रीड़मलजी री बेटी री सगाई श्रीजी साहब सु करण मुदे जाड़ेचा जेठासिंघ अर भावसिंघ अठै आया। नै वद १२ नै बीड़ी रो मोरथ सझीयो।

संमत १९०४ रा मीगसर सुद ३ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया घड़ी दोयेक इंकत बतलावण हुई।[2]

सुद ९ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ी दोयेक इंकंत बतलावण हुई।

सुद १० भाद्राजण ठाकुर इंद्रभाण, वषतावर सिंघोत फौज में म्हेता विजेमल कने थो सो अठे आया तिणां नै आज मुजरो हुवौ।

सुद ११ कीलादार पंवार अनाड़सिंघ फौज में थो सो अठै आयौ तिण नै मुजरो हुवौ।

सुद १३ तथा १४ सिकतर मेसन साहब सेषावतां नै पकड़ण मुदै[3] फौज में गयौ थो सो पाछो आयौ। सु आज अजंट साहब साथै गढ़ ऊपर आयौ सौ षाबका में बैठा, घड़ीक बतलावण हुई।

संमत १९०४ रा पोस वद २ पोकरण ठाकुरां ने घरां री सीष हुई।

पोस वद ७ अजंट गीरांट साहब री बदळी री षबर आई जिण सु इणां री आज गढ़ ऊपर मीजमांनी हुई। सो गीरांट साहब नै मेसन साहब, हाटकासल साहव फौज में सेषावतां ने पकड़ण मुदे फौज में गया था सो पकड़ पाछा आया। सो आज गढ़ ऊपर अजंट साथै आया। षाबका में विछायत हुई, जठै मुलाषात कर नै फतैमैल में साहब षांणो षाय चुकां पछै पातरीयां भगतणीयां रो फतैमैल रा चौक में गावणो हुवौ।[4] नै मुसायब पीण साहब कनै बैठा रया। नै दौलत-

---

1. खुशी व्यक्त करने के लिये खाने पीने की वस्तुएँ भेजी 2. एकान्त में बातचीत हुई 3. डूंगरसिंह जवाहरसिंह को पकड़ने हेतु 4. गायन आदि आमोद प्रमोद का आयोजन हुआ

षांना रा चौक में आतसबाजी छूटी पछै साहब षावका में श्री हजूर साहबां कनै गया । पछै अंतरपान होय सीष हुई । नै मेतो विजेमल फौज मांय सु आयो तिण नै मुजरो हुवौ ।

पोस वद ८ अजंट गीरांट साहव, मेसन साहव, हाटकासल साहव तीनु जणा बाळसमंद गया सो इणां री सरभरा करावण मुदे दाढीदार पेमकरण ने मेलीयो । नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा गया । सो पैली तो षांणो षायौ पछै तायफां रा नाच हुवा । नै फंवारा चादर छूटा नै जिनस मीठाई वगैरे अन रा कोठार सु ं मेलीजी ।

वद ९ अजंट गीरांट साहव आज विदा होण री सीष करण नै गढ़ ऊपर आया । षावका रा मैल में घड़ीक बैठा, पछै सीष करी । सो अंतरपांन होय सीष हुई । सो वद १० नीमा सांम रा अठा सु ं चढीया ।

वद १३ सीकतर मेसन साहब दूजो अजंट आवसी जितै अजंटी रौ कांम औ करै नै हाटकासल साहब आज गढ़ ऊपर गढ़ देषण ने आया,[1] सो सूरजपोळ कनै होय परबारा चांवंडा माताजी रा मिंदर कांनी गया । साथै किलादार पंवार अनाड़सिंघ नै वकील राव राजमल साथै फिर नै बुरजां तोपां दिषाई । पछै चोकेळाव में जाय वाग देषीयो नै ऊपरली बुरजां देष पछै सूरसागर गया ।

संमत १९०४ रा पोस सुद ३ निवाज रा ठाकुरां ने मौसर हुवौ ।

सुद ११ श्री हजूर साहबां री असवारी श्री नटवरजी रै मिंदर दरसण करण नै पधारी, सो श्री दुवारकानाथजी रै भेंट ५) रुपीया, नौछावर २) रुपीया नै श्री बलदेवजी रै भेंट ५) रुपीया, नौछावर २) रुपीया हुवा । पछै वड़े तबेले पधार घोड़ा निजर गुदराय[2] गोळ री घाटी रै मारग किले दाषल हुवा ।

संमत १९०१ रा माह वद ५ सीकतर मेसन साहब पोकरण वडा साहब कनै गया, सो उठा सु ं वडा साब तो बीकानेर गया । नै मेसन साहब नागौर तांई पोंछाय नै पाछा आया, जिणां रै मिजमांनो री जिनस कोठार सु ं मेलीजी ।

वद ६ असवारी कायलांणे पधारी सो असवारी रा लोक नै तो सिंघवी अषैराज रै तळाब राषीयो नै श्रीजी साहब कायलांणा रा भाषरां में सिकार कीवी । पछै उठे मैलां दाषल होय जांमनगर रा जाड़ेचा जेठासिंघ

1. किले का निरीक्षण करने को आए 2. निरीक्षण करके

भावसिंघ नै बुलाया । नै पांतीयो करायौ सो आप ही पांतीये विराजीया नै उणां नै आसो पाय जिमाया । पछै सारां नै सीष हुई । नै पछै असवारी किले पधारी ।

वद ११ जांमनगर वाळां साथै मल्ल[1] था जिणां री कुसती सिणगार चौकी कनै हुई । नै श्रीजी साहब षावका रै झरोषै विराज निजर गुदराई । नै ईनांम रा रुपीया २००) दिरीजिया ।

माह वद १३ मेसन साहब गढ़ ऊपर आया, सो घड़ीक तो कांमेतीयां सु ऊभां बातां हुई ।[2] पछै घड़ी तीन ईकंत रया ।

संमत १९०४ रा सुद २ जैतावतां रा गुडा वाळां नै सभा देण मुदे षीची उमेदकरण नै चढण रौ मुजरो हुवौ ।

सुद ५ श्री दरबार सु घोड़ा बाड़ी रा मैलां रा चौक में जनांनी दोढ़ी रै मारग मंगाय नै फिराया ।

सुद ७ सिकार मुदे असवारी कायलांणे पधारी सो पाछा सुद ८ गढ़ दाषल हुवा ।

सुद १० मेसंन साहब गढ़ ऊपर आया । घड़ी दोयेक श्री हजूर में रयौ पछै बुढसु ठाकुर सिरदारसिंघ प्रतापसिंघोत नै मुजरो हुवौ नै पटो जवत हौ सो बाल होण रो हुकंम हुवौ नै रुपीया ठेरीया सो माफ हुवा,[3] जिण री ठाकर निजर निछरावळ कीवी ।

सुद १२ माताजी श्री नागणेचीयांजी नै श्री हींगळाजजी बाड़ी रा मैलां में विराजे सो हमें जनांना में नवा मैल आगला मिंदरां री पूठ में हुवा जठै श्री माताजी रा सरूप पधारिजीया तिणां री आज प्रतिसटा हुई । सो मिंदर तीन हुवा—

१ श्री नागणेचीयांजी रो
१ श्री हींगळाजजी नै
१ श्री संभरायजी रो

३

1. पहलवान 2. खड़े-खड़े बातचीत की 3. दंड के रुपये तय थे वे माफ हुए

भेळा[1] विराजीया नै आथूणी कांनी[2] रा मिंदर में श्री मादेवजी, श्रीनाथजी नै श्री नवदुरगाजी विराजीया । नै मिंदरां रै सोना रा इंडा[3] चढ़ीया ।

संमत १९०४ रा फागण वद ४ श्री चीत्रसेवा री अदालत छंगांणी सीवलाल नै जोसी सीवनारायण रै थी सो अेवज भंडारी हरनाथ नै हेमचंद रै हुई । नै दिवांणी अदालत में म्हैता परतापमल थो तिण री अेवज छंगाणी सीवलाल नै मेलीयौ ।

वद ५ सिकतर मेसन साहब गढ़ ऊपर आया, नै लाठ साहब[4] श्रीजी साहबां रै डेरो[5] १ रूपा[6] री चोबां रो मांय दुसालो नै ऊपर बनात रौ मेलीयौ सो दौलतषानां रा चौक में षड़ौ हुवौ । सो श्री हजूर साहब निजर गुदरायौ नै साहब पीण साथै थो सु साहब सीष कर सूरसागर गयौ ।

वद ८ अजंट साहब री वकीलायत भं० सिवचंद लिषमीचंदोत रै हुई ।

वद ११ अजंट मेजर डंकीन मालकंम साहब आया । सो पेसवाई मुदे दिवांण, वषसी सदामंद मुजब गया नै पाछला दिन[7] रा गढ़ ऊपर आया सो श्रीजी साहब साँमा चवांणां री साळ तांई सदामंद मुजब पधारिया नै पाछा साथै पधार षाबका में विराजीया, घड़ीक वतलावण हुई ।

संमत १९०४ रा फागण सुद १ श्रीजी साहबां री असवारी सूरसागर पधारी सो साहब अजंट मालकंम साहब जोसीयां री बगेची रा बुरज तांई सदामंद मुजब सांमा आया नै पाछ सूरसागर पधार बडोड़ा मैल में विछायत होय घड़ी दोय तांई विराज सोषीयात[8] बातां कर पाछा गढ़ दाषल हुवा ।

फागण सुद ६ अैमदनगर सु माजी श्री चावड़ीजी नै श्री भुवाजीसा नै बाभीजी श्री रांणावतजी सा नै श्री रै बड़ी जीजा बाईजी श्री केसरकंवर बाई नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंहजी जोधपुर पधारीया, सो बाळसमंद दाषल हुवा नै श्रीजी साहब री असवारी बाळसमंद पधारी ।

सुद ९ बाळसमंद में फाग हुवौ सो पठा ऊपरली बगेची में श्रीनाथजी रा मिंदर रा मुढ़ा आगे सो उमराव, मुतसदी, षवास, पासवांन वगैरे हाजर हुवा नै

---

1. शामिल 2. पश्चिम की तरफ 3. स्वर्ण कलश 4. गवर्नर जनरल 5. तंबू 6. चांदी 7. अपरान्ह 8. अनोपचारिक

अजंट मालकंम साहब नै बुलाया सो आया नै आयसजी श्री लिषमीनाथजी पधारीया सो रंग रा पांणी सु नै गुलाल री दड़ीयां सु फाग हुवौ ।

सुद १० असवारी बालसमंद सु गढ़ दाषल हुई ।

सुद १४ सिकतर मेसन साहब आबूजी जासी जिण सु मिजमांनी री जिनस मीठाई वगैरे कोठार सु मेलीजी ।

सुद १५ होळी रो दरबार हुवौ नहीं ।

संमत १९०४ रा वद १ सिकतर मेसन साहब श्री हजूर में आय सीष कर उण ही दिन आबूजी नै चढ़ीया ।

वद ३ (प्रथम) श्रीजी री असवारी फाग री हुई सो हाथी रै होंदे विराजीया नै षवासी में नींबाज ठाकुर सवाईसिंघ सांवतसिंघोत बैठा सो सिरै बजार होय बाळसमंद दाखळ हुवा ।

वद ३ (दूजा) बाळसमंद सु असवारी कायलांणे पधारी सो पाछी (छेली)[1] रात रा बाळसमंद दाषल हुई ।

चैत वद ५ बाळसमंद सु असवारी गढ दाषल हुई नै अजंट मालकंम साहब गढ़ ऊपर आया, इंकंत बतलावण हुई ।

वद ८ सील रो मेळो सदामंद मुंजब हुवौ नै घुड़ला रो मेळो हुवौ सो असवारी तळेटी रा मैळां दाषल होय मेळो निजर गुदराय रात घड़ी छव गयां गढ़ दाषळ हुवा ।

वद १० अजंट मालकंम साहब री मीजमांनी गढ़ ऊपर हुई । सो फतैमैल में षांणो षायौ नै पछै श्रीजी कनै गया, सो अंतरपांन कर सीष दीवी ।

वद ११ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया सो आबूजी री सीष कीवी, सो वद १२ नै चढ़ीया ।

वद " असवारी बाळसमंद पधारी सो पाछी रात रा गढ दाषळ हुई ।

---

1. रात्री का अन्तिम प्रहर

संमत १९०४ रा चैत सुद ३ श्री गवर माताजो री असवारी गढ़ ऊपर सु' जलुसी सीरे बजार होय गुलाब सागर ऊपर पांणी पीवण नै पधारी सो रात रा पाछी गढ़ दाषल हुई ।

सुद ६ श्रीजी साहबां री असवारी महामिंदर पधारीया नै श्री माजी सा नै महाराज कंवार वगैरे नै महामींदर रा मैलां में राषीया मोरत रै मुदे ।

सुद ८ श्री गवर माता री भोलावणी मांयलेबाग सदामंद मुजब हुई ।

चैत सुद १२ श्री हजूर री असवारी महामींदर सु' गढ़ दाषल हुई ।

संमत १९०४ रा बैसाष वद ३ श्रीजी साहब महामींदर पधारीया नै वद ४ पाछा गढ़ दाषल हुवा ।

वद ५ महामींदर पधारीया सो रात रा पाछा गढ़ दाषल हुवा ।

और चंडावळ ठाकर प्रतापसिंघ लिछमणसिंघोत नै षेजड़ले भाटी हीमतसिंघ सादूळसिंघोत इणां रा गांव कीणी सबब सु' जबत हुवा जिण मुदे अे आबूजी अजंट साहब कने जाय साहब सु' पडुतर कर गांवां री उठांतरीयां कराय लीवी ।[1]

ईतरा जणा नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी कनै राखीया—नाजर सेजराम, सोड़ टीकमदास, भाटी अनाड़सिंघ गजसिंघोत नै गुरां अगरचंद नै भणावण नै[2] भोळाया तिणां रै भणीजणै रौ दसतूर इण मुजब हुवौ—

१ पाटी रूपा री नै

१ बरतो रूपा रौ नै

१) भेट मोर रु० १) गोहु '५ (पांच मन) गुळ '१। (सवा मन)

संमत १९०४ रा वैसाष सुद २ तथा ३ आषातीज रौ दरबार फतैमैल में हुवौ । सदामंद मुजब मिंदरां रा सेली दुपटा पधरीजीया । उमराव, मुसदी सारा हाजर था तीणां नै मुजरो हुवौ । पछै भोजनसाळ में मांमूली पांतीयो हुवौ ।[3]

---

1. जब्ती के आदेश निरस्त करा लिये 2. शिक्षा देने हेतु 3. भोजन की साधारण सी व्यवस्था हुई

और अैमदनगर बाभीजी श्री वीरपुरीजी नै सोभावत माधौसिंघ रा समाचार आया कै अठै मई कांठा रौ अजंट लांग साहब तकरार करै कै माजी साहब ने महाराज जसवंतसिंघ कु यां से गयां नै महीना ३ हुवं सो अबी तक पीछे आये नहीं ना गंगाजी गये, नै जोधपुर बैठे हैं सो ये हमारे से जालसादी[1] करणा। सो आप जसवंतसिंघजी कु वांही रषो। अब अैमदनगर ईडर वाळां कु दिया जायगा। ईसा समाचार म्हां ने कया है सो आप सु बंदोबसत हुवै सो जलदी करावसी नहीं तरै अैमदनगर ईडर वाळां नै दीराय देसी। अै समाचार मालम हुवा तरै अठा सु कोटवाळ पंवार सेरकरण नै आदमी १५०० आसरे देनै अैमदनगर मेलीयौ। सो लोकवाग तो कीतोक अैमदनगर रयौ नै आदमी अेक सौ कीताक ले साहब सु सेरकरण पडुतर करण नु गयो। तरै पड़ुतर तो कीं सुणीयौ नहीं नै सारां नै पकड़ कैद कर दीया, नै बेड़ीयां घाल दीवी। अै समाचार पाछा श्री हजुर में मालम हुवा तरै श्री हजूर साहब व मालकंम साहब, रावराजा रिधमल, सिंघवी कुसलराज, म्हेतो रूपरांम अैमद नगर वाळां नै ईतरा जंणा नै आबूजी मेलीया नै षलीतो ईण मुदा रौ लीषीयो नै कैणो पीण करायौ जिण रौ जबाब पाछौ दीयो कै ये ईलाका बंबई हथां का है[2]। हमारा ईलाषा है नहीं, अर जो महाराज साहब ने मेरे तांई लीषा है अर कवाया है तो मै वड़ा साहब कु रपोट जरूर कर देऊंगा। अै केया समाचार साहब रा आबूजी सु आया पछै नागर ईमरतलाल ने सयद अकबर अली नै मंमोई तै रवांने कीया३०। नै कलकता कांनी कीलादार पंवार अनाड़सिंघ नै फुरमायौ कै थांनै जावणो पड़सी। जद उण अरज कीवी कै हुं विचार नै कालै अरज करू जिण नै मारी साथै मिलावे[3] तो हुं तयार हूँ। पछै रात रा हवेली आय सांड सिवराज नै बुलाय नै पूछीयौ कै म्हारै साथै किणनै ले जाऊं नै सो थे बतावो। तरै सिवराज कयौ—आसोपा सुरतरांम नै ले जावो तो थांनै कीणी वात री तकलीफ रैसी नहीं। जद दूजे दीन परबात रा श्री हजुर में अरज कीवी कै आसोपा सुरतरांम नै मारै साथै मेलावै। तरै श्री हजुर सु फुरमायौ कै सुरतरांम कनै धरम-करम रौ तो रूकौ लिषाय ले[4] नै हाजर जांमनी उरी लेसां[5]। ऊण रै षरच रो तो महीनो रुपीयो २००) रौ कर देसां। नै घोड़ो पुरण वगैरे रो षरच थांरै सांमल रैसी। पछै किलादार लवा पोळ ऊपर आय नै आपरो

---

1. जालसाजी 2. बम्बई के हल्के का है 3. मैं कहूं उस व्यक्ति को मेरे साथ भेजें 4. खैरख्वाह रहने की लिखावट धर्म की सौगन्ध के साथ करवालो 5. उसकी जमानत भी करवा लेंगे

कांमेती मु० ग्यांनमल नै सलेमकोट[1] में आसोपा सुरतरांम कनै मेलीयौ, सो उण जाय नै कयौ कै किलादार थांनै श्री हजूरसा री बंदगी में साथै ले जावै है सो जावणो पड़सी। तरै पाछौ कयौ—श्री हजुर री बंदगी में जावण रो कीसो उजर है[2]। भोळावी जठै जावणो ही पड़ै[3]। तरै पाछौ कयो—इण मसौदे धरम-करम रो रूकौ लिष दो। तरै रूकौ इण मुजब लिष दियो—

ठाकरां राज श्री अनाड़सिंघजी था आब सुरतरांम रो आसीरवाद वंचावसी।

तथा राज श्री हजुर में अरज कर नै मनै श्री हजूर री बंदगी रै वासतै साथै ले जावो हो सो श्री हजूर साहब रोटी देवे सो तो षावणी नै बंदगी[4] भोळावै जिण में मन-तंन सु वणे सो करणी। इण में कसर राषु तो श्री इसट धरम री आंण है[5]।

पछै ओ रूकौ ले नै मु०. ग्यांनमल किलादारां कनै गयौ, जितरै आबुजी सु रावराजा रिधमल, सिं० कुसलराज, म्हैतो रूपरांम आय गया। सो उणां नै मौसर हुवौ। सो आबुजी रा समाचार अजंट साहब कया, सो सारा मालम कीया। नै सला पीण हुई जिण सबब सु कीलादार नै पाछौ कीं फुरमायौ नहीं। पछै दूजे दिन परभात रा कोलेदार श्री हजुर में जाय अरज करी कै सुरतरांम रौ रूकौ धरम-करम रो हाजर है। तरै श्री हजूर फुरमायौ कै हाजर जांमनी लेनै बेड़ीयां कटाय नै सीष दो नै षरच रै वासतै मैं लिषमीचंद नै फुरमाय देसां सो बंदोवसत कर देसी। अै समाचार सुण नै रांणावत गंभीरसिंघ रोडसिंघोत अरज करी कै आप कैद मांय सु काढ नै सुरतरांम नै मेलो हो सु दूजा राज में चाकर नहीं है? नै ओ जाय नै बदळजाय तो अंगरेजी में गयां[6] पछै आप इण रो कांही कर सको। तरै श्री हजूर फुरमायौ—इण जिसो अंगरेजां री बात सु दूजो वाकब[7] नहीं। तरै सिंघवी कुसलराज अरज करी कै ईण रो भाई उत्तमरांम इण जिसो ही है, सो उण नै मेलावो[8]। जद फुरमायौ—ठीक है। तरै उत्तमरांम नै मेलणौ ठेरीयौ। नै आसीरवाद हुवौ नै डेरौ कीलादार रो सेषावतजी रै तलाब हो जठै उत्तमरांम जाय डेरो कीयौ। पछै दिन पनरैक तो डेरां में अठै

---

1. वह कोट जिसमें राजनैतिक गुनहगार बन्द रखे जाते थे 2. कब अस्वीकार है 3. जहाँ आदेश देंगे वहीं जाना पड़ेगा 4. सेवा कार्य 5. सौगन्ध 6. अंग्रेजों की हकूमत में जाने के बाद 7. परिचित 8. उसे भेजो

ही रया नै कीलादार तो जावण रो इंनकार कीयौ। नै पछै उत्तमरांम समले लाठ साहब कनै गयौ।

वैसाष सुद १२ उदैपुर रो म्हैतो रामसिंघ तिण रो पोतो किरतसिंघ अठै आयौ, तिण नै मुजरो हुवौ।

सुद १३ दु० श्रीजी री असवारी महामींदर पधारी।

सुद १५ श्री माजीसा, श्री भुवाजीसा, श्री बाभी रांणावतजी, श्रीजी रै वड़ी बाईजी, श्री केसरकंवर बाई, महाराज कंवार श्री जसबंतसिंघजी नै श्री हजूर री असवारी साथै होय सिरै बजार होय फतैपोळ रै मारग कीले दाषल हुवा।

संमत १९०४ रा जे० वद ७ आबूजी ऊपर धरती धूजी[1]। अगाड़ी रात तिण सु मिंदर जायगावां पड़ गई। नै भीनमाल में जायगावां पड़ी नै आदमी दबीया। नै धरती कदेई रात रा कदेई दीन रा थोड़ी घणी दीन ३५ तांई आबूजी ऊपर धूजी।

जेठ वद ८ रात आधी में घड़ी दोय घटतां घरती जोधपुर में धूजी। नै पछै तीन वार फेर धूजी। सु श्री हजुर सु रु० ५००) संकळप कीया नै आयसजी श्री लिषमीनाथजी उण हीज रात रा रु० ५०००) पुन कीया।

सुद ५ व्यास उत्तमरांम नै कीलादार नै आज समले चढ़ण रौ मुजरो आसीरवाद हुवौ।

सुद १३ श्रीजी साहबां री वरसगांठ रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ। नै दरबार फतैमैल में हुवौ। नै मींदरां रा दुपटा सेली वंदीज नै उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारां री निजर निछरावळ हुई। पछै घड़ी च्यार रात गयां दरबार बोड़ीजीयो।

जेठ सुद १५ आसोपो सवाईरांम हलकारां रे दरोगे इकंत में अरज करी कै जोधपुर रा चाकर मोटा छोटा ओधा षीजमतां ऊपर है सो दांनतदार[2] तो थोड़ा है नै चोर घणा है, जिणां री षायकीयां[3] रा मुदा म्हारै कनै साबत[4] है सो श्री हजूर रै रुपीया भरावणा हुवै तो ईनांयत ज्यु हैं, पछै मरजी। नै दूसरी आ

1. भूकंपन हुआ 2. ईमानदार 3. रिश्वत 4. मेरे पास सबूत है

वात है कै पोते बाकीयां घणा मीनषां में है[1]। तरै श्री हजूर षातर फुरमाई नै कांम सारो तयार राषजे सो फुरमावां जद कांम जरूर करणो है। पछै किताक दिनां रा अरसा सु ललवांणी अभैकरण दौलतपुरै हाकंम थो जिण नै अठै बुलाय कैद करायौ। नै उण रै ऊपर पेसकसी ठेरी नै प्रोहित चिमनीरांम षजांना रो दरोगो जिण ऊपर की रीसपत री साबुती कर चीमनरांम नै बेटा तेजकरण नै षजांना में कैद कीया नै रु० १२,०००) ठेराय षजांना री दरोगाई नै पटै गांव जीवंद थो, सो बाल रया।

संमत १९०४ रा असाढ़ वद ३ श्रीजी साहब फतैमैल में जीवणा[2] बंगला में विराजीया। उठै ही आयसजी श्री लिषमीनाथजी महाराज पधारीया। नै निबाज रा ठाकर हाजर हुवा तिणां नै मुजरौ हुवौ। पछै रात घड़ी पांच गयां श्रीजी साहब ऊपर फूलमैल पधारीया।

वद ४ सिकार रै मुदे असवारी कायलांणे पधारिया सो पाछा रात रा गढ़ दाषल हुवा।

वद १३ तथा १४ श्रीजो साहबां री असवारी बड़े तबेले पधार घोड़ा निजर गुदराय[3] पाछी असवारी गढ़ दाषल हुई। और आहोर रा गांव सथलांणों नै माडावास जबत था सो आज वकीली रा लिषण सु ऊठांतरी हुई[4]।

सुद ६ अजंट मालकम साहब आबूजी सु आया सो पेसवाई में दिवांण बगसी वगैरे सदामंद मुजब गया। पछै नीमा सांम रा अजंट साहब गढ़ ऊपर श्री हजूर में आया सो श्री हजूर साहब पेसवाई में चुवांणां री साळ तांई पधारीया। पछै गढ़ ऊपर पधार षाबका रा आथूणा[5] झरोषा में विराजीया। घड़ी च्यार इकंत रया, पछै सीष हुई सो सुरसागर गया।

सुद ९ श्रीजी साहबां री असवारी सूरसागर पधारी सो अजंट साहब सांमा जोसीयां री बगेची रा बुरज तांई आया सो उठै मुलाषात होय साथै-साथै सूरसागर पधार बंगला में विराज घड़ीक बतलावण हुई। पछै उठां सु असवारी पाछी गढ़ दाषल हुई। और सुद १० अजंट साहब गढ़ ऊपर श्री हजुर में आया सो दसतूर मुजब मुलाषात हुई।

---

1. अनेक लोगों में रकम बकाया निकलती है 2. दांयें 3. निरीक्षण कर 4. जब्ती हटा ली गई 5. पश्चिम की ओर

असाढ़ सुद १५ अजंट मालकम साहब चोघड़ीया रा गढ़ ऊपर आया सो घड़ी दोयेक बतलावण हुई ।

म्हैतो धनराज ने महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी ने पढावण नै अेमदनगर आगे संमत १६०२ में मेलीयो थो सु पाछौ महाराज कंवार साथै फागण में आयो तिण हमार पढ़ायां री हाजरी हुई[1] नै उण नै जालोर री कारकूंनी इंनायत हुई ।

संवत् १९०५ का विवरण

संमत १६०५ रा सावण वद १ जोसी हंसराज रै पाली री हाकमी री षायकी[2] बाबत रा आसोपा सवाईराम मुदा पोंचाया । जद श्री हजूर फुरमायौ कै मुदा तो तेंही ठीक पोंहचाया परंतु मांडनै लायौ जिण सवाय पाली रा जमा कराया है[3] सु हंसराज चोर नहीं है सींभूदत्त रा बेटा री म्हांनै परतीत[4] है ।

सावण वद ६ डोडी ऊपरला षाबका रा महल में मोसर हुवौ । इतरा जणां नै मुजरा हुवा—

१ उमराव घर सु आया जीणां नै भादराजंण ठा० इंदरभाण १ बगतावर सींघोत
१ रास भीमसींघ १ भीमसींघोत
१ छोटो बेटो साथ भौमसींघ १
१ लांवियां १ नै जामनगर मु पं० फतैराम षलीतो लेय ने आयो तिण ने अर
१ कोटा सु० तुंवर परतापसींघ आयौ तिण नै और
१ अजमेर रो गांव मसूदा सु चारण हाथीराम आयो तिण नै
—
७

सांवण वद १२ अजंट मालकम साहब गढ़ ऊपर आया । घड़ी दो अेक बतलावण हुई ।

सांवण वद १३ आसोप ठा० सिवनाथसींघ बषतावरसींघोत नै घर सु आयौ सो मुजरो हुवौ । दिल्ली सु ढूसर लालो जैंवारीलाल हुकमचंद रो बेटो व्यास अबैराम सुरतरांम कनै रयोड़ो तिण सु उत्तमरांम री अरज सु हुवौ ।

1. पढ़ाई बावत जानकारी ली गई 2. रिश्वत 3. तूं जो रकम लिखकर लाया है उससे अधिक रकम उसने यहाँ जमा कराई है. 4. विश्वास, भरोसा

नै भंडारी लालचंद कुसलचंदोत रै जाळोर री हाकमी री षायकी रु० ८,०००) भराया ।[1]

सावरण वद ५ अजंट मालकम साहब गढ़ ऊपर आया सो घड़ीक तो कामेतियां[2] सामल बात हुई अर घड़ीक इकंत बतळाया ।

सावरण सुद ७ रास ठा० भीमसींघ अर बेटो परतापसींघ गढ़ ऊपर आया तिरणां नै मौसर हुवौ, बतलावरण हुई और सिंघवी कुसलराज श्री हजूर में अरज करी कै श्री अंदाताजी साहब और आसोपो सवाईराम चाकरी री षायकी री निगे कराय मिसल बरणावे और चोर-चोर कर भूंडा दिषावे म्हे कद रा साहूकार, धरणी म्हांरा आगा पाछा लिरावै तो म्हे सांचा हां, नहीं तो पग-पग रा[3] चोर हां । पिरण गादी रा धरणी रा हरामषोर हां नहीं, बाप बेटा रो नातो है । काम पड़ियां सिर घर त्यार ।

सावरण सुद ९ अजंट मालकम साहब री मिजमानी हुई सो इरण मुजब सरबरा साहब रे बंगले मेली—

अन्न रा कोठार सुं मिठाई, मेवो, बूरो, मेंदो, चावळ, घीरत, केसर, किस्तूरी वगैरे सदामंद मुजब । चांतरा सुं आतसबाजी रु० २०) री । रसोड़ा सुं आसा रो गोटको[4] नै पुसबां री छाबां ।

सावरण सुद १५, राषड़ी पूनम रो आज सिरे दरबार[5] तो हुवौ नहीं । नै मोती महल में नाजर हरकरण दुपटा सेली नै कुंकुम रा वावलां रा प्याला ले जाय दुपटा पधराया, तिलक कियो, ने राषड़ीयां नै राषड़ीयां रा फुंदा पधराया । नै बारला गांवां रा प्रोहित बगैरे फुंदा लाया सो दोढीदारां लिया ।

संमत १९०५ रा भादवा वद १ नींबाज रा ठा० नै मौसर हुवौ । घड़ी दो एक बतळावरण हुई ।

भादवा वद ५ नागपंचमी रो मेळो सदामंद मुजब हुवौ । नै महाराज कंवार श्री जसवंतसींघजी री असवारी मंडोर मेळो देषण नै पधारी ।[6]

---

1. वसूल किये 2. कार्यकर्त्ताओं 3. हर कदम पर 4. आसा नामक शराब की बोतल या पात्र 5. आम दरबार 6. मेला देखने गये

भादवा वद ९ तथा १० महाराणीजी श्री रांणावतजा रै महाराज कंवार जनमिया। तिकां री जनांनो दोढ़ी उत्सव सदामंद मुजब हुवौ। नै तोपां री सीलकां सदामंद मुजब हुई। नै मालकम साहब किला ऊपर आया।

भादवा वद १२ जोसी सावंतराम ने फुरमायौ कै ३६ छतीस कारषाना रा नांवां देष पोते बाकी नासरे तोणरी नीगे[1] कर भराया। नै जिण में कीणो रो षातर राषणी नहीं।[2] अर हवाला रा गांव २० तालकै हुवा।

भादवा वद अमावस लांमियां रा ठा० नै मोसर हुवौ। नै श्री महाराज कंवार हुवा जिण री कुसी री निजर निछरावळ हुई। नै अजंट साहब आयो तिण सु बतळावण हुई।

भादवा सुद १ आसोप, रायपुर, भादराजण ठाकरां नै मौसर हुवौ नै महाराज कंवार री कुसी री निजर निछरावळ हुई। नै ठाकरां सु बतळावण हुई। सुद ३ असवारी बाळसमंद पधारिया, नवो कमठो नाळा ऊपर है जिको निजर गुदराय पाछा सूरसागर पधार साहब अजंट सु बतळावण कर पाछा किले दाषल हुवा।

भादवा सुद ४ श्री गणेस चौथ रौ मेळो दसतूर मुजब रातेनाडे हुवौ। मेह री षंच धान मूंगो, पांणी रो दुमार घणी तिण सु रैत[3] नै पूरी अड़चन[4] है।

भादवा सुद ११ श्रीकर (सीकर) रा बठोठ रा सेषावत डूंगरसींघ चोरी धाड़ा कीया, जोण सु अंगरेजां पकड़ आगरे मेल दीया। सो आगरा जेळषाना मांय सु पोष सुद में ताजीयां री कतल री रात ही जिण दिन जेळषाना रा ताळा तोड़ पिंडे चल्यो गयौ। नै कैदीयां ने सारां ने काड(ढ़) दिया। नै पछै दोय च्यार महीना रा अरसा सु नसीराबाद रो छावणी रो षजानो लूटियौ। नै जवारसींघ पण डूंगरसींघ रा बड़ भाई रो बेटो सामिल था सो इणां दोना नै पकड़ण नै इंगरेजो सरकार सु सारा रजवाड़ां में लिषावट आई। नै सीकतरां नै सामल में लिया। तरै अठा सु किलेदार पंवार अनाड़सिंघ, बगसी सिंघवी फोजराज नै कुसलराज नै म्हैता बिजैमल इणां नै न्यारी-न्यारी फौज देकर चढाया। नै अठा रा अजंट गिरांट साहब नै सींघी फोजराज सामिल चढ़ीया। सीकतर मेसन साहब और हाटकासल साहब सो मेसन साहब तो ठा० अनाड़सिंघ

1. पता करके 2. किसी को रियायत नहीं दे 3. जनता 4. परेशानी

सामल चढ़िया । नै हाटकासल साहब कुसलराज सामल चढ़ीया । नै से० जवार-सींघ तो बिकानेरी में थो सु बीकानेर वाळा पकड़ बीकानेर ले गया । नै पछै सींघवी फौजराज नै जोधपुर रा अजंट गिरांट साहब नै सींघवी कुसलराज पाछा आया अर महता बिजैमल हाटकासल साहब सामल रया । पछै मेहता बीजैमल हेरो लगाय नै इलाके सेषा(वा)टी तथा तूराटी में गांव········ में मेड़ी में संवत १९०४ रा काती बद " (अमावस) प्रथम में डूंगरसींघ बैठो दारू पीतो थो जिण नै जाय घेरियो तरै सस्त्र संभाय मरण लागो । तरै हाटकासल साहब नै सीरदार रास भीमसींघ भोमसींघोत रास नै डोड्याणे सादूलसींघ रतनसींघोत नै जावले ठा० केसरोसींघजो वगैरे नै मेहता विजैमल वगैरे बचन दीयौ—थांनै जोधपुर राषसां ।[1] जरां उठां सु नागौर लियाया ।

नागौर लायां री जोधपुर षबर लागी । जरां साहब अजंट कहवायौ—जिकां रा कहणा सु नै अैदनांवा में मुतालबां री फड़दां में लिषियोड़ो है बड़े सिरकार कंपनी रा दुसमण सिवाय कोइ सेणो जासी, सो रहसी । अर सीरकार कंपनो रो दुसमण हुसी सो रहसी नहीं । उण लाचारी[2] रा सबब सु महता बिजैमल नै और उमरावां नै हुकम पूगो कै अजमेर पुगायाईजो । तरै अजमेर बहीर हुवण लागा, तरै डूंगरसींघ पेट में छुरी खाई । तरै लोगां पकड़ कोस लीवी ।[3] पछै मैता बिजैमल अर उमराव जाय अजमेर पुगायाया । पछै हाटकासल साहब बिजैमल अर उमरावां कनै बचन दिरावण में थो नै आप देवण में थो । जिकण लाठ साहब कनै तथा सदर में लिषावट कर पाछो जोधपुर मेलण रो हुकम मंगायौ । तरै अजमेर सु डूंगरसिंघ आज अठै आयौ । जिण साथै जाबतो[4] इतरो साथ थो—

अजमेर सु साहब लोक ३, आदमी ३००, घोड़ा २०० । सो डूंगरसींघ बेड़ियां पेरीयां गाडी में बैठो थो सो सूरसागर साहब अजंट रै बंगले ले गया । नै बंगला सु साहब गढ़ ऊपर मेलियो सो बेड़ियां थकां गाड़ी में नाळा री बारी रै मारग गढ़ ऊपर आयौ । जैपोळ सु पाळो इमरती पोळ तांई आयौ । नै इमरती पोळ में श्री हजूर रा हुकम सु बेड़ियां कटाय सलेमकोट में बेसांणियो । पछै घड़ी च्यारेक नै किलादार रो कामेती बड़गूजर गोइन्दास नेनूंदरो चांपावत सूरसींघ दोनुं आयनै कयौ कै अजंट साहब रो कवायो आयौ कै अजंट साहब

1. तुम्हें जोधपुर में ही रखेंगे 2. मजबूरी 3. छुरी छीन ली 4. हिफाजत

रो कवायो आयौ कै बेड़ियां किऊं कटाई सो पाछी पैरावण रा हुकम है, जिण माथै डुंगरसींघ पाछौ कयौ कै बेड़ियां घलाय दो और मनै पाछो अजमेर पुगाय दो। अठै रहुं जद तो बेड़ी पेरूं नहीं। सो इण बात रो झोड़[1] पौर छः घड़ी हुवौ। सिरवाड़े[2] हजूर में अरज हुई जरां हजूर फुरमायौ कै मोकूब राषो। सलेमगढ़ में रह्या जितरै ढोल्यो बिछावण नै और षवासो में नाइ १ दफतर में नांवो सजाय कर राषियो। नै रसोड़ा सूं थाळ दोय वार नै दारू रो सीसो १ थाळ री साथै जुमले जुमले रसोड़ा वाळा आय पुगाय जावे। इण रीत सुं राषियौ।

भादवा वद १३ अजमेर सुं साहब लोग ३ पोंहचावण नै आया जिकां नै अजंट मालकम साहब गढ़ ऊपर आया नै आथूणा षाबका में मसंद री बिछायत हुई। जीण में श्री हजूर गादी पर बिराजिया नै साहब गालीचा पर बैठा। घड़ी दो एक बतळावण हुय कर सीष हुई।

समत १९०५ रा आसोज वद १ आसोप रा ठाकर नै घरां री सीष रौ मुजरो हुवौ।

आसोज बद ७ अजंट मालकम साहब गड़ ऊपर आया। घड़ी दो एक इकंत बतळावण हुई।

आसोज बद ९ लांबिया रा ठाकर नै मौसर हुवौ। नै मैता बिजैमल री अजंटी री वकीलायत हुई। तागीरात भंडारी सिवचंद आसोज सुद १ परगने सिव गिराब कांनी री जमीं रे नै सिंध री जमीं रे सीव रो असर चो है। तिण रा निरधार वासते बाड़मेर रा सूबेदार जाकिसन साहब तो उठे है नै १ फेर साहब जमी रा निरधार वासते[3] उठै आया नै अठा सुं मातबर आदमी बुलायो सु सींघवी समरथमल नुं आज चढण रो मुजरो हुवौ।

आसोज सुद ३ मेवाड़ कांनी नाहर रा परगना वगैरे गांव रा भीलां नै सजा देण वास्ते उठी सुं मुसायब आवसी नै अठी रा कांकड़[4] ऊपर अठा सुं गोड़वाड़ रो हाकम नै गांवां रा जागीरदार अर फेर नवा आदमी बुलाया तिण अजंट साहब मालम कराई। तरै मूता मूलकरण जैतकरण रा नै आज चढायौ।

---

1. बहसबाजी, झगड़ा 2. आखिर 3. सिंध और मारवाड़ की सीमा के निर्धारण हेतु 4. सीमा

आसोज सुद ६ पोकरण रा ठाकर घरां सु आया जिकां ने मुजरो हुवौ। अर दसरावा रो दरबार फतहमैल में हुवौ। पछै उमराव मुतसदी, षवास, पासवाना नै मुजरो हुवौ। मिंदरां रा दुपटो सेली पधरीजीया। व्यास तिलक कीयौ, प्रोत आरती कीवी। पछै निजर निछरावळ हुई। पछै दरबार बोड़[1] फतैमैल रा चौक में पांतियो हुवौ। पछै पांतिये बिराजिया। उमरावां रा थाळ आया सो जीमिया। पछै पांतिया सु ऊठ उमरावां नं सीष दे ऊपर पधारिया।

आसोज सुद १० श्री रामचंद्रजी री असवारी रावण मारण नै पधारिया। नै श्री हजूर री असवारी पिण हुई। फतैपोळ रा चौक में हाथी री अम्वावाड़ी पर बिराजिया नै षवासी में पोकरण ठाकर बैठा। जालोरी दरवाजा बारै पधार घोड़े असवार हूय बाहीवाल (भैंसा) पर बुड़छी[2] वाही। पछै रावण मर चुकां पछै जालोरी दरवाजे हूय फतेपोळ हूय किले दाषिल हुवा। नै तोपां री सिलकां सदामंद मुजब हुई।

आसोज सुद १३ अजंट मालकम साहब मुन्सी फजररसूल गढ़ ऊपर आया। घड़ी दो-एक बतळावण हुई।

संमत १९०५ रा काती वद २ रास रा ठाकर नै मौसर हुवौ, घड़ी २ इकंत रयौ।

काती वद ३ नै चंडावळ नै षेजडला रा ठा० सीष कर पटा रा गांवां में गया. नै का० सुद ८ नै चंडावळ ठा० प्रतापसिंघजी रामसरण हुवा। तरै श्री हजूर सु आसोप रो कांमेती म्है० जितमल री मारफत ठुकरांणियां नै कवायौ कै सांदु नाथुरांम ने सीष परी दो सु थांरो हुकंम नांव मिरवायत राषसां। नैना बाळक है सु परवसी[3] राषसां। पछै श्री हजूर रा फुरमावणा सु सीष दीवी सु आपरे गांव परो गयो। पछै आसाढ़ में उदैपुर गयो। सु रांणांजी पांच रू० रोजीना कर दीया।

काती वद ४ मेवाड़ कांनी नाहर इलाका रा भीलां नै सजा देण मुदे मूते मूलकरण नै तो आगे मेलियो हो नं आज जोसी परभूलाल ने फेर चढ़ायौ।

काती वद ६ तथा ७ पोकरण रा ठाकर ने मौसर हुवौ। नै मालकम साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ीक बतळावण हुई।

---

1. दरबार समाप्त कर 2. बरछी 3. कृपा

काती वद ११ घड़ीक दिन लारले अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ीक बतळावण हुई।

काती वद " (अमावस) दीयमाळका रो दरबार फतेमहल में हुवौ। सदामंद मुजब निजर निछरावळ हुय पांतियौ हुवौ।

संमत १९०५ रा काती सुद ३ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद पधारी। बाळसमंद केई दिन विराजण रो हुकम दियौ[1] सो डेरा वगैरे फरासखानां सु जाय षड़ा किया। नै दफतर दस्तरी अदालतां वगैरे सारा औदादारां नै हुकम हुवौ। सु सारा बहियां दफतर ले उठै हाजर हुवा।

काती सुद ४ अजंट मालकम साहब बालसमंद आया। सु बाग रै मांय बगेची में बिराज बतळावण हुई। कांमेती हाजर था। घड़ी दो एक साहब सु इकंत हुवा। पछै मूं ध्यांड़ बारठ चैनसिंघ ने रायपुर रा ठाकर रो छोटो बेटो भोमसिंघ ने मौसर हुवौ।

काती सुद ५ पोकरण ठाकर नै मौसर हुवौ। पछै तळाब में नाव हाजर थी जिणमें बिराजिया नै महाराजकंवार श्री जसवंतसिंघजी नाव में विराजिया नै राणावत गंभीरसींघ बगैरे ठावा-ठावा ठाकुर नाव में बैठा। अर गोळियां बाई[2]। घड़ी ४ तथा ५ सुं पाछा बाग में दाषल हुवा।

काती सुद ७ सैर रा महाजन समसत नै सारी षूम जातां[3] नै मुजरो हुवौ। श्रीजी साहब कुरसी ऊपर बिराजिया। मुतसदी, षवास, पासवान हाजर था। पाछा महाजनां वगैरे नै मांय बुलाया सु महाजन तो बाग रा चोंतरा ऊपर ऊबा नै बाकी रा षूमां चांतरा रे हेटे ऊबी। चौक में सारां नै मुजरो हुवौ। सारा महाजनां निजर निछरावळ कीवी नै सुनार कसारां प्याला निजर किया। नै मोचियां वगैरे जामदांनियां पगरषियां रा जोड़ा निजर कीया। नै सारां नै षातर फुरमाई। पछै सीष नाळा री बारी रे मारग गढ़ दाषल हुवा।

काती सुद ८ गढ़ ऊपर सुं असवारी बाळसमंद दाषल हुई।

काती सुद १३ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद सुं गढ़ दाषल हुई।

---

1. कई दिन तक बाल समंद में ही रहने के निश्चय का आदेश दिया 2. बन्दूक की गोलियों से निशाने साधे 3. बनिये व अन्य कामगार जातियें

संमत १६०५ रा मीगसर बद २ असवारी गढ़ ऊपर सु सिंघवी अषैराज रै तळाब षधारीया नै उठै आगै अजंट मालकम साहब थो जिण सु अध घड़ीक बतळावण हुई। पछै कायलांणे पधारीया सो रात रा उठै विराजीया। नै दूजे दिन उठा सु असवारी प्रभात रा बाळसमंद दाषल हुई।

मीगसर वद ७ कंटाळीये ठाकुर गोरधनदास सींभुसिंघोत नै मुजरो हुवौ नै पछै बाळसमंद सु असवारी गढ़ दाषल हुई।

वद ८ असवारी गढ़ ऊपर सु बाळसमंद पधारी।

वद ११ परबतसर री हाकमी जोसो सांवतरांम नै इनायत हुई। नै मेड़ता रा चोतरा[1] री पोतदारी भंडारी जोगीदास रै हुई। नै श्रीजी साहबां री असवारी नागोरी दरवाजे होय गोळ री घाटी रै मारग गढ़ दाषल हुवा।

वद १३ असवारी सिंघवी अषैराज रै तळाब नजीक होय रीषा वेरा कनै होय केवड़ा री गाळ[2] आगे अजंट मालकंम साहब गया था जिण कनै पधारीया सा नाळ रो बाळो रोक नै तळाव बंदावणो[3] जिण मुदे, सो नीजर गुदरायो। पछै उठा सु पाछी असवारी कीले दाषल हुई।

वद अमावस असवारी सूरज वेरै पधारी सो वाग निजर गुदराय उठा सु काळीवेरी कनै पधार सिरकार री सांडीयां निजर गुदराई। पछै उठा सु बाळसमंद दाषल हुवा।

संमत १६०५ रा मीगसर सुद ३ अजंट मालकम साहब बाळसमंद आया सो पठा ऊपरली बगेचो में मुतसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा उभां बतळावण हुई। पछै घड़ी दो अेकं एकंत रया। पछै साहब नै सीष हुई।

सुद ४ असवारी बाळसमंद सु भाषर रै मारग होय तिरसींगड़ी कनै होय कायलांणे मैलां दाषल हुवा। नै नीमा सांम रा उठा सु गढ़ दाषल हुवा।

मीगसर सुद ६ गढ़ ऊपर सु असवारी हुई, सो बाळसमंद पधारीया।

सुद ११ अजंट मालकम साहब दोय घड़ी दीन लारला रा बाळसमंद आया सो बगेची में तळाब रा पठा कांनी डेरो षड़ो हुवो थो जिण रै मुढा आगे

1. कर वसूल करने का स्थान 2. दो पहाड़ों के बीच का गहरा स्थल 3. तालाब बनवाना

साईवांन हेटे विछायत हुई, जठै विराजीया। नै साहब सु बतळावण हुई, पछै सीख हुई।

सुद १३ असवारी बाळसमंद सु कायलांण पधारी। उठै सिकार कर नै पाछो असवारी किले दाषल हुई। नै अजंट मालकम साहब आज अठा सु अेरणपुर री छावणी नै चढ़ीया।

संमत १६०५ रा पोस वद १ श्रीजी साहबां रो असवारी जनांना समेत गढ़ ऊपर सु बाळससंद पधारी। नै उदैपुर सू चूंडावत समरथसिंघ लंसांणी वाळो रांणाजी श्री सरूपसिंघजी रो षलीतो माजी श्री भटीयांणीजो रै नांवे ले नै आयौ सु करमसोत भांनीसिंघ गांव डांवरा वाळा रो मारफत मालम कराया नै...
चावो सो रांणाजी सारो अंगरेजां कनै-कराय देसी परंत आप रांणाजी रै नांवै रूकौ इण मसोदे लिषाय दीरावो तथा महाराज श्री विजैसिंघजी श्रीजी दुवार जावता सारू फौज राषी जिणरी षरची में महाराज श्री विजैसिंघजी तथा राणाजी श्री...
सो आज तांई म्हारा राज नोचे है नै कीताक समाचार चुंडावत समरथसिंघ मालम करसी। श्रो मसौदो वाच श्री माजीसा फुरमायौ कै मारै फोरंगीयां कनै कांम करावणो न्हीं[1] ना मै रूकौ लिषां। म्हारी तरफ सु थांनै सीष है। तरै अठा सु परा गया।

वद ३ श्रोजी साहबां री असवारी बाळसमंद सु गांव वासणी कनै होय गांव आंगणावा कनै होय आंगणावा री सींव में सिकार कर पाछा बाळसमंद दाषल हुवा।

वद ६ अंगरेजां रै नै लाहोर वाळां रै झगड़ौ हुवौ। जिण में अंगरेजां री जीत हुई तिण री तोपां री सिलकां २१ हुई।

वद १२ श्रीजी साहबां री असवारी बाळसमंद सु सूरसागर पधारीया। सो पैला अजंट मालकम साहब अेरणपुर सु वद ६ ने आय गया था तिणां सु मुलाषात हुई नहीं, साहब रे सरीर में तकलीफ थी, जिण मुदा सु। सो बड़ला कनै असवारी ढब नै कांमेतीयां साथै साहब रो सुष पुछायो।[2]

---

1. मुझे अंगरेजों से कोई काम नहीं करवाना है 2. तबियत के बारे में पुछवाया

नै साहब पाछी सिलांम कवाई। पछै उठा सुं असवारी हुई सो गांव पाल सलावस रे कांकड़ ऊपर सिकार कर पाछा बाळसमंद दाषल हुवा।

पोस वद १३ अजंट मालकम साहव बाळसमंद श्री हजुर में आया। मोतीमैल में घड़ी दोय इकंत बतळावरा हुई।

संमत १६०५ रा पोस सुद १ अजंट मालकम साहब अठा सुं अजमेर नै चढ़ीया।

सुद ३ रास रा ठाकुर रा बेटा भोमसिंघ नै घर री सीष हुई।

सुद ६ अठा रा अजंट साहब री वकीलायत म्हेता विजैमल नै हुई, तिरा रो दुपटो इनायत हुवौ।

सुद ७ श्रीजी साहबां री असवारी बाळसमंद सु कायलांणे पधारिया। सो नाळा री गाळ में नवो तळाब हुवै जिरा री नींव दिरोजी सु निजर गुदरीजी। पछै उठा सुं असवारी किले दाषल हुई।

सुद ८ अदालतां री दरोगायां ईरा मुजब हुई—
फौजदारी पटानवेस पंचोळी धनरूप नै।
दिवांणी अदालत महाराव राजमल नै पटानवेसी पंचोळी नवलमल नै।
अफील[1] री अदालत लाला दौलतसिंघ नै।
चित्रसेवा री भं० गेवरचंद नै व्यास जेठमल नै।

पछै श्रीजी साहबां री असवारी गढ़ ऊपर सूं बाळसमंद पधारीया।

सुद १२ भाद्राजरा रा ठाकुर घरां सु आया तिरा रो मुजरो हुवौ।

पोस सुद १३ तथा १४ असवारी जनांना समेत बाळसमंद सुं कायलांणे पधारिया।

संमत १६०५ रा माह वद ४ असवारी जनांना सेत (समेत) कायलांणा सुं बालसमंद पधारिया।

---

1. अपील

वद ५ अंगरेजां रै लाहोर वाळां सुं झगड़ौ है सो मुलतांन में अंगरेजां रो अमल हुवौ तिण रा समाचार वकील म्हेता विजैमल रा कागद सुं मालम हुवा। तरै षुसी री तोपां री सिलकां २१ हुई।

वद १० बूंदी सु विरांमण व्रिजबलभ आयो तिण नै आसीरवाद हुवौ। नै उठा री रयासत समंदि[1] उभां उभां[2] अरज कीवी सो श्रीजी साहब षातर फुरमाई।

वद ११ माजी श्री चावड़ीजी, नै श्री भुवाजी, श्री वाभीजी साहब वगैरे जनांनी असवारी किला सुं बालसमंद दाषल हुवा।

संमत १६०५ रा माह सुद ५ रांणीजी श्री तुवरजी नै श्री तीजा भटीयांणीजी पैला परणीजिया जिणां री जात देण नै जनांना समेत असवारी मंडोर पधार जातां दे पाछा बालसमंद दाषल हुवा।

माह सुद १२ अंगरेजां रै लाहौर वाळां सुं झगड़ौ जारी है सो मुलतांन में तो अमल पैली हुय गयो थो नै किलां में अमल हमार हुवौ तिण रा समाचार मैता विजैमल रा कागद सुं मालम हुवा। तिण री षुसी री सिलकां २१ हुई।

सुद १३ असवारी बालसमंद सु किले दाषल हुई।

संमत १६०५ रा फागण वद १ श्रीजी साहबां री असवारी किला ऊपर सुं कायलांणे पधारी सो रात रा उठै ही विराजणो हुवौ।

फागण वद २ असवारी कायलांणा सुं किले दाषल हुवा। और रांणावत गभीरसिंघ री बेटी आसोप रा ठाकुर सिवनाथसिंघ वषतावर सिंघोत नै परणाई। सो आज रा सावां व्याव हुवौ सो रांणावत गंभीरसिंघ री अरज सुं श्री दरबार सुं उमराव, मुसदी, षवास, पासवांनां नै व्याव में मेलीया।

वद ८ तालीम री डावड़ी पारबती रांमसरण हुई। तिण रै लारै कारज[3] पोकरण री हवेली में हुवौ।

सुद ३ अठा रा अजंट साहब मालकम साहब अजमेर कांनी गया सो आज अठै आया तिणां री पेसवाई में दिवांण वषसी सदामंद मुजब गया।

1. रियासत के सम्बन्ध में 2. खड़े-खड़े 3. मृत्यु भोज आदि

फागरण सुद ५ पोकरण ठाकुर वभूतसिंघ सालमसिंघोत नै मौसर हुय बतळावरण हुई ।

सुद ६ अजंट मालकम साहब गढ़ ऊपर श्री हजूर में आया । श्रीजी साहब सांमा फलसा तांई पधारीया । पछै पाछा पधार आथूणा षावका रा झरोंषा में विराज साहब सु घड़ी दोयक इकंत बतलावण होय सीष हुई ।

सुद ६ अंगरेजां रै सिषां सु झगड़ौ जारी थो सो हमार सिष सेरसिंघ अठारि वाळों सु झगड़ौ हुवौ तिण में अंगरेजां री फतै हुई, रा समाचार अजंट साहब रै आया । नै अजंट साहब श्री हजूर में मालम कीया तिण री षुसी री सीलकां २१ हुई ।

सुद १२ तथा १३ डंडीयां री गैर दौलतषांना रा चौक में हुई । मुसदी, षवास, पासवांन सारां नै हुकम पांथो[1] सु जलुसी पोसाषां कर हाजर हुवा । नै पींडां[2] जलूसी पोसाष जवारायत[3] पधराय नै गैर रमीया । नै मुसदी, षवास, पासवांन सारा रमीया ।

फागरण सुद १४ डंडीयां री गैर फेर दौलतषांना रा चौक में हुई । सो श्रीजी साहब पिंडां नै आयसजी श्री लिषमीनाथजी महाराज पींडां रमीया ।

सुद १५ होळी रो दरबार आज चंद्रप्रब[4] थो जिण सु हुवौ नहीं । नै प्रबरो दांन सदामंद मुजब हुवौ ।

संवत १९०५ रा चैत वद ४ आसोपा व्यास सुरतरांम नै वेटा महारांम नै श्री माजी साहब रै मुदे कैद थी सो आज बारे महीनां री हाजर जांमनी[5] ले सीष हुई । नै पछै तीसरा पोर रा असवारी अजंट साहब रै बंगले पधारी । सो अजंट साहब जोसीयां री बगेची रा भुरज तांई सांमा आया । पछै साथै-साथै पधार मैल में विराज साहब सु बतळावण हुई । पछै उठा सु पाछा किले दाषल हुवा ।

वद ५ श्री हजूर री असवारी फाग री हाथी रै हौदे विराज हुई । षवासी में पोकरण ठाकुर वभुतसिंघ सालमसिंघोत बैठा । नै मुसदी, षवास,

---

1. आदेश पहुंचा 2. दरबार स्वयं 3. हीरे पन्नों आदि के गहने 4. चंद्र-ग्रहण
5. बुलाने पर हाजिर होने की जमानत

पासवांन सारां नै पीचरका दिरीजीया नै कपडां रा कोठार सु गुलाल रा थेला दड़ीयां साथे थी। सो मारग में सीरे बजार रंग रा पांणी तथा दड़ीयां सु षेल हुतां थकां मांयलेवाग दाषल हुवा। पछै जनांनी असवारी किला ऊपर सु हुई। सो मांयलेवाग दाषल हुई।

चैत वद ८ गुडला (घुड़ला) रो मेलो देषण नै असवारी तळेटी रा मैलां पधारी सो विचला झरोषा में विराज मेळो निजर गुदरायौ। पछै उठा सु गढ़ दाषल हुवा।

वद ९ गढ़ ऊपर सु असवारी गोळ री घाटी रै मारग होय मांयलेवाग दाषल हुवा।

वद १३ अजंट मालकम साहब आबूजी जावे तिण सु मीजमांनी मांयलेवाग में हुई। सो साहब आया। सो कंवळ चौक में विछायत हुई। जठै बैठा घड़ी दोयेक बतळावण हुई। पछै उठा सु ऊठ बगेची में षांणा री तयारी हुई। जठै षांणो षायौ नै बगेची कनै आतसबाजी छुटी। नै फूलां रा चौसरा नै पांनां रा बीड़ा दिया। नै सिंघवी फौजराज नै म्हैता विजेमल साथै रै कंवळ चौक में मकरांणा रो मैल देषायौ। पछै साहब सीष कर सूरसागर गया।

सुद ३ श्री गवर री असवारी किला सु मांयलेवाग जलूस सु सिरे बजार होय मांयलेवाग हुई। सो झालरा रा पठा ऊपर विछायत होय उठै विराजी ने सैर रा ईसर गवर[1] उठै आया। नै श्रीजी साहब पौळ ऊपरला मैल ऊपर कनातां बंदीज जाबता में विराज मेळो निजर गुदरायौ।[2] रात घड़ी तीन आयां गवर माता पाछी उणी मारग[3] होय गढ़ दाषल हुई।

चैत सुद १० अजंट मालकम ताहब आबूजो जाय सो आज साष करण नै मांयलेवाग में आया। नै सीष कीवी। सो सुद १३ नै अठा सु चढ़ीयौ।

संमत १९०५ रा वैसाष वद २ लालजी श्री मोतासिंघजी पड़दायत लछरायजी रा जिणां नै बोदरी नीसरी जिण री कागे जात दिरीजी।

वैसाष वद ३ सांभर सु समाचार आया। हाकम भंडारी कांनचंद रा केकुंड नै चौक सदामंद आंपणी हद में है सो हमार जैपुर वाळा हमके गैर

1. ईसर व गौरी की मूर्तियें　2. निरीक्षण किया　3. उसी रास्ते से

उठा तांई ले ग्राया । सो इंण रो बंदोबसत हुवौ चाहिजे । ग्रा मालम हुई तरै मुते लिषमीचंद ग्ररज कीवी इंण रो कोई दसताग्रेवज[1] हुसी तो व्यास सुरतरांम कनै हुसी सो उण नै पुछावै । जद सुरतरांम नै बुलाय नै फुरमायौ कै थारै कनै कोई सांभर रा कुंड रा दसताग्रेवज हुवै सो हाजर कर । तरै मिसतर कमिंडस साहब रो कागद कुंड चौक राठौड़ां रो है—ईसा मुदा रो कागद व्यास सुरतरांम रै नांव रो थो सो उण नांजर कीयो । वो कागद री नकल हाकमां नै विड़ोजी[2] । जिण सुं जेपुर वाळां नै कायर कीया[3] ।

संमत १९०५ रा वैसाष सुद ३ ग्राषातीज रो दरबार मांयलाबाग में हुवौ नै उमराव, मुतसदी, षवास, पासवान सारा हाजर हुवा नै मिंदरां रा दुपटा सेलीयां पधरीजी नै व्यास तिलक कीयो नै प्रोहोत ग्रारती कोवी नै घड़ी २ तांई बीराजीया । नै उठा सुं उठ दोढी सिरे पोळ पांतीयौ हुवौ जठै पधार वीराजीया, थाळ पधरीजीया । उठै हीज ग्ररोगीया । ग्रौर उमरावां रै थाळ ग्राया सो जीमीया । पछै दरबार बोड़ उमरावां नै सीष हुई ।

वैसाष सुद ६ पोहोकरण रा ठाकुरां नै मांयलेवाग सुं घरां री सीष हुई ।

वैसाष सुद १२ मांयलावाग में वभूतसिंघजी, सीवनाथसिंघजी री हवेली रै लारै चौक जिण में घोड़ा फेरीया । सुद १३ नै उणीज चौक में घोड़ा फेरोया ।

वैसाष सुद १४ केरसाली रा सबब[4] सुं ग्राज धांन ७ सेर रो हो गयो नै मीनषां रै हातै रुपीयां साटे भी ग्रायौ नहीं ।[5] जीण सुं बारले गांवां सु ग्रादमो माथै पोटां बांद धांन लाया जिणां रो हासल माफ कीयो । ग्रौर सींजा रा नरसींघ चतुरदसो रो मेळो धांन मंडी में सदामंद मुजब हुवौ ।

संमत १९०५ रा जेठ वद ५ श्री माहाराज कंवार रांणीजो श्री बड़ा भटीयांणीजी रा छोटोड़ा तिणां नै सोतला नीसरी सो वद ४ नै रात देवलोक हुय गया सो ग्राज कागे दाग हुवौ ।

जेठ वद ११ श्रीजी साहबां री सालग्रे जेठ सुद १३ नै हुवै तिण रा उछव री ग्रजंट साहब बाहादुर रै मेजमांनी री जीनस[6], मीठाई, मेवो वगेरे वकील म्हैता वीजेमल हस्ते ग्राबूजी म्हैलीजी ।

---

1. दस्तावेज 2. बन्द करके हाकिम के पास भेजी गई 3. जयपुर वालों को शर्मिंदा होना पड़ा 4. अकाल की वजह से 5. रुपये देने पर भी अनाज उपलब्ध नहीं हुआ 6. वस्तुएँ

जेठ वद ७७ (अमावस) बाईजी श्री चांदकंवर बाईजी नै सील निसरी सो कागे सील माता रै थांन वरणीयां वीरांमण १८····री बैसांणी पुजापो पेटीया कोठार सु दीरीजीया । सील माता तुष्टमांन हुई ।[1]

जेठ सुद ८ श्रीजी साहबां रै सालग्रे रै उछव रो समुसो किले उपर हुवौ ।

जेठ सुद १३ श्रीजी साहबां री सालग्रे[2] रो दरबार मांयलावाग कंवळ चौक में हुवौ । उमराव, मुतसदी, षवास, पासवांन वगैरे हाजर । मुजरो हुवौ । मिंदरां रा दुपटा सेहलो पदरीजीया । व्यास तीलक और प्रोहीत आरती कीवी और सारां री निजर निछरावळ हुई । नै पछै दरबार बोडीजीयो नै सीरदारां वगैरां नै सीष हुई ।

जेठ सुद १४ बड़ा महाराजाजी श्री मांनसिंघजी साहबां रा वाभा सरूपसिंघजी, सोवनसिंघजी, नै वभूतसिंघजी रा बेटा मदनसिंघजी री सगाई देवलीये प्रतापगढ़ रावत सांवतसिंघजी री पड़दायत रा बेटा गुमांनसिंघजी री बेटीयां सु हुई । तिणां रो सावो असाड़ वद ८ रो ठेरीयो । तीण री जांन आज अठा सु चढ़ी नै मदनसिंघजी रा नांनेरो सिकर जठा सु मांयरो इण मुजब—हाथी घोड़ा ४, नै मदनसिंघजी रै गेणौ—कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी, सीरपेच, मदील दुपटो, वागो लफंघिरां रो[3] नै रोकड़ रु०.......) सोरपाव तथा बेस ३५० नै मदनसिंघजी रा·· ।

संमत १९०५ रा असाड़ वद ८ श्रीजी साहबां रो व्याव केलावा रा तुंवर ग्यांनसिंघजी री बेटी सु मांयलावाग हुवौ ।

असाड़ वद १३ श्रीजी साहबां रै व्यांव री कुसी री निजर निछरावळां सीरदारां, मुतसदी, षवास, पासवांनां कीवी ।

असाड़ सुद २ वकील मेता वीजेमल आबूजी सु बेटा रा व्याव ऊपर पैला आयो थो सो आज पाछो चढण रौ मुजरो हुवौ ।

असाड़ सुद ८ श्रीजी साहबां री असवारी केवड़ा री नाळ में नवो तळाब तषतसागर हुवौ, जठै पधारीया, सोझतीये दरवाजे हुय जाळोरी दरवाजे,

---

1. शीतला प्रसन्न हुई 2. साल गिरह 3. वस्त्र जिनके कीमती कोर गोटे आदि लगे हुए

वषतसागर गांव सु तले हुय केवड़ां री नाळ पधारीया। पठा ऊपर विराजीया श्रौर हमार रा मेह सु नवो जळ श्रायौ सु नीजर गुदरायो नै उठा सु कायलांणे पदारीया। उठा रा कमठो निजर गुदराय कीले पदार उठा रौ कमठौ नीजर गुदरायौ। नै पछै गोळ री घाटी हुय मांयलेवाग दाषल हुवा।

श्रसाड़ सुद १३ बाईजी श्री चांदकंवर बाईजी नैं सीतळा माता तुष्टमांन हुवा तिणां री जात कागे दीरीजी।

श्रसाड़ सुद १५ माहामिंदर में श्रायसजी माहाराज श्री लिषमीनाथजी माहाराज वड़ो उपगारी कांम कीयो कै २ वरस तक जोधपुर में दुमार रही[1] सो ईंणा मामींदर रा हवद रात रा भराय देता ३ श्ररठां सु। सो मामिंदर जोधपुर वगैरे कसबे रो लोग पांणी ले जावता। तीणां रैं वड़ी श्रासांनी रैती। सो तळाब मांय सु भर नै लावै जीण तरै लावता। नै घड़ा कोरा धराय दीया[2] सो किणी रो घड़ो फूट जावतो तीणां नै देता। ईण बात सु ईणां रौ जस हुवौ।[3] श्रौर ईणीज वरस में श्री माहारांणीजी श्री रांणावतजी रा कांमैती पंवार नारकण जैपर रा गांवां रो गौड़ व्रिरांमण गोमंदरांम गुरां मोतीचंदजी कनै रहैतौ तिण नै बुलाय केयो कै चांदकवर बाईजी रैं सगपण रो जैपर माराज सूं हुवै जीसो उपाव[4] करौ। जद उण केयो कै ठीक है। श्रा कहै—श्रासोपा बलरांमजी सु मीळीयो। नै केयो कै श्राप श्रागे जैपर महाराज जगतसिंघजी रैं नै जोधपुर महाराज मांनसिंघजी रैं १८६९ में रीत रो मोटो श्रांटो पड़ीयौ जिण री दुरसती कराई।[5] सो श्रौ बाईजीसा रो सगपण हुणो सो श्रा तो हुती वात है। सो ईण रो उपाव श्राप करौ तो राज सूं श्रापरै श्राजीवगा हुय जाय। तरै कैयो कै हजूर साहब श्रीमुष सूं फुरमावै श्रौर षरच रो बंदोबस्त हुय जाय तो करां। जद उण केयो कै नारकरण कनै श्राप चालो तथा श्रापरा बेटा नै म्हैलो, तरै उणां श्रापरा बेटा परसरांम, पोता गंगाराम नै म्हैलीया। सु नारकरणजी सूं वातां हुई। सो नारकरण षरच रौ बंदोबस्त कर दीयौ। नै कैयो कै संबंद बावत जैपर रैं मुसाहबां रा कागद म्हांरै नांवे श्राय जाय तौ जैपर री वकीलायत थांरै नांवै कराय देणी। जद श्रठा सूं

---

1. जल की कमी 2. नये घड़े रखवा दिये 3. खूब यश फैला 4. उपाय 5. सम्बन्ध में श्रड़चन श्राई उसे सुलझाया

फरसरांम, गंगारांम, गोमदरांम जैपर गया नै अठा सूं बलरांम कनै सूं कागद २ लिषाय ले गया —

१ तो राव जीवणसिंघजी दूणी वाळां रै नांवे। नै दूजो हलदीया राव गंगादास चुतरभुज रा रै नांवे।

सो उठे जाय कागद दे ऊणां सूं मिळीया।[1] नै समाचार सारा सगपण बाबत रा कया। तरै राव जीवणसिंघजी, नै हळदीये गंगादास जैपर महाराज रांमसिंघजी सु अरज किवी। जद महाराज साब हांकारो भर लीयो। जिण रा कागद राव जीवणसिंघ रो नै हळदीया गंगादास रा कागज ५ वार नारकरण रै नांवे आय गया। जद नारकरण श्री हजूर में अरज कीवी—तरै श्री हजूर साहबां मुता लिषमीचंद नै फुरमायौ कै बाई रै सगपण रो हांकारो[2] भरीज गयौ है।

तरै लिषमीचंद पोकरण वाळां नै कयौ कै मुकत्यार[3] जैपर रै राज में थांरा सारा है। नै सगपण रो होंकारो प्रबारो[4] भरीज गयो। तरां पोकरण रा ठाकुरां गीजगढ़ जुंजारसिंघजी नै सामोद रावळ सिवसिंघजी नै ओलंभो[5] लिषीयो कै ओ सगपण थांरै सांमल हुय हुवौ कै थांरै प्रबारो हांकारो भरीज गयौ। जिण ऊपर ईणां महाराज रांमसिंघजी सु अरज कीवी कै ईतरौ मोटो कांम हुवै जिण री मांनै षबर नहीं पड़ै नै आप प्रबारो हांकारो भराय लीरावे सो ईतरो मोटो कांम म्हां बीनां प्रबारो हुणो नहीं चाईजे। जिण ऊपर माराज रांमसिंघजी फुरमायौ कै ठीक है, थांरी मारफत करो।

जद उठा सूं जुंजारसिंघजी, नै सींवसिंघजी, पोकरण बभूतसिंघजी नै लिषीयौ कै सगपण रौ होकांरो भर लिजो। अठै म्हे वात जमाय लीवी है। जदे मूता लिषमीचंद नै कहे नै अरज कराई। नै लिषमीचंद ईण तरै अरज करी—कै बाईजीसा रो सगपण प्रबारो षेवट[6] सु हुवै है। सो रावळजी उठै मुसाहब है सो हुण देला न्हीं।[7] नै ईणां रै सांमल हुवै तो हुय जाय कीहुं कै गीजगढ़ जुजारसिंघजी नै लिषावै सो रावळजी उणां रा साळा है सो औ पार तुरत घाल देसी। नै दूजा दूजा सगपण रो उदम[8] करे जीणां नै बुलाय लीरावे। जरां नारकरण नै बुलाय फुरमायौ कै थांरै हस्ते सगपण वास्ते म्हैलीया है

---

1. पत्र देकर उनसे मिले 2. स्वीकृति 3. प्रभावी अधिकारी 4. बाला-बाला 5. उलहाना 6. प्रयास 7. नहीं होने देंगे 8. उद्यम

जीणां नै बुलाय ले। म्हे प्रबारो सगपण कर लेसां। तरै नारकरण परसरांम वगैरे नै पाछा बुलाय लीया। ऊण दीन सु सगपण री बातचीत पोहोकरण ठाकुरां री मारफत होण लागी।

संवत् १९०६ का विवरण

संमत १९०६ रा सांवण वद ६........वा गाने, नै सेठ नाथुरांम नै अन रा कोठार री षांनसांमा रै कांम री भोळावण हुई।

सांवण वद ७ षास हवालो ठेरीयो सा. रूगनाथ रै ईजारै १९०५ रा असाड़ सुद १५ तांई रो थो सो षालसे हुय ईतरा मुसाहब सांमल[1] हुवा—

म्होणोत प्रतापमल
जोसी सिवनारायण
नै नागर मेतो संकरलाल पाटण रो
नै पोतदार व्यास कनीरांम गीरधरोत सुरंतरांमोत
नै नाजर हरकरण री तरफ सू पंचोळी रंगरूप

ईतरा जणा सांमल हुय कांम करणो। नै उमेंदवारां रा आगै............ २०) री प्रत सु लगाय १०) रै म्हीने तांई रा हवालदार मेलणा। प्रबारा कोई मेलण पावै न्हीं। पांचां री सला सु म्हैलणो।[2] पछै हु तेई हवाले मात्र हवाला रा गांवां में हवालदारां नै लिष दीवी तथा वहीर कीया। जिणां नै भोळावण दे दीवी कै भोम और डोळी[3] गांवां मे है जीणां रो धांन आवै जीको अटकाय दीजो। नै गांव २२ जोधपुर रा किला तालके हुवा।

संमत १९०६ रा सांवण सुद ३ अजंट मालकम साहब आबूजी सू आया। सो दिवांण वगसी सदामंद मुजब पेसवाई में गया नै सूरसागर पुगाय आप आपरै ठीकांणे आया।

सांवण सुद ५ मालकम साहब मांयलेवाग आया। नै श्री हजूर साहब विचली पोळ तांई सांमा पधारीया। पछै कंवळ चौक में बीछायत हुई, जठै

1. मिलाजुला 2. पांच ही लोगों की सहमति से हवालदार नियुक्त किये जावे 3. पुण्यार्थ ब्राह्मणों, साधों आदि को दी हुई जमीन

विराजीया। साहब पसवाड़े गलीचा पर बैठो। २ घड़ी बतळावण हुई। पछै अंतरपांन कर सीष दीवी।

सांवण सुद १५ राषड़ी रो दरबार मांयलेवाग में कंवळ चौक में हुवो। उमराव, मुसदी, षवास, पासवांनां नै मुजरो आसीरवाद हुवौ। मिंदरां रा दुपटा सहेली पदरीजिया। व्यास तीलक, प्रोहीत आरती कीवी पछै राषड़ियां पधरीजी। घड़ी २ सु दरबार बोड़ सारां नै सीष हुई।

संमत १९०६ रा भादवा वद २ असवारी गोळ री घाटी रै मारग सूं सूरसागर पधारी। साहब जोसीयां री बगेची तांई सदामंद मुजब सांमो आयौ। नै उठै सु सूर(सा)गर पदार सदामंद रा म्हैल में वीछायत हुई। रात २ घड़ी वातां हुई। पछै उणीज रस्ते[1] पाछा मांयलेवाग दाषल हुवा।

भादवा वद ९ अजंट मालकम साहब मांयलेवाग श्री हजूर कनै आया। बगेची में बिछायत हुई जठै वीराजीया। साहब सु वतलावण १ घड़ी तो कांमेतियां सांमल हुई। पछै घड़ी ३ ईकंत हुई। पछै साहब नै सीष हुई।

भादवा वद १२ अजंट मालकम साहब अजमेर चढ़े सु सीष करण मुदे मांयलेवाग श्री हजूर साहबां कनै आया। नै कंवळ चौक में वीछायत हुई, जठै बैठा। २ घड़ी ईकंत रया। पछै सीष कर प्रबारा अजमेर नै चढीया।

संमत १९०६ रा भादवा सुद १ असवारी घोड़ा फेरण पधारी। सो मेड़तीये दरवाजे हुय वावड़ीयां पधारीया। नै मेह सरू हुवौ तांई[2] घोडां फेरता वरसते मेह में सेषावतजी रै तळाब तांई पधारीया। नै तळाव ऊपरले मैल घोड़ो ढबायो। नै तळाब निजर गुदरायो। नै पछै वरसता मेह में पाछा पधार मांयलेवाग दाषल हुवा।

भादवा सुद ११ अजंट मालकम साहब अजमेर सूं पाछा आया। सो पेसवाई में दिवांण, बगसी सदामंद मुजब गया। साहब सूरसागर दाषल हुवौ। और अठै आयां री मीजमांनी री जिनस अन रा कोठार सूं सदामंद मुजब म्हैलीजी। और श्रीजी साहबां री असवारी गुलाबसागर ऊपर लाल बाबे रे मिंदर रै डागळै कुरसी ऊपर बीराजीया। नै ठाकुरजो री रेवाड़ीयों जुलण[3]

---

1. उसी रास्ते से 2. वर्षा प्रारंभ होने पर भी 3. स्नान करने को

नै पधारीया । मेळो चोको[1] भरीजीयो । तळाब में नाळेर नांकीया । श्रौर तळाब में घड़ा ऊंदो नषाय ऊपर दीया घराय तिराया ।[2] नै दीयां री लोय[3] ऊडावण नै गीळीयां वाही । श्रौर नाजर हरकरण रा नोरा में छुट वाळां[4] नै श्रासो पायो ।[5] नै थाळ पघरीजीया ।[6] दूजां ने ही जीम्हाया । नै पाछली रात रा वाग दाषल हुवा ।

संमत १९०६ रा श्रासोज वद १ श्रजंट मालकम साहब हजूर में श्राया.। २ घड़ी बतळावरण हुई ।

श्रासोज वद ८ व्यास श्रभैरांम विसनूरांम रो चलीयो[7] थो सो श्राज उण रा बेटा नै श्रासरीवाद हुई नै उण रा बाप नै कुरब पांचु था सो सजीया ।[8]

वद ११ श्रजंट मालकम साहब श्राया । २ घड़ो बतलावरण हुई ।

श्रासोज वद १२ बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी रौ सराद हात सूं सारायो । नै वीरांमरण ४०० षीर, षाजां माजी रा वाग में भोजन करायौ ।

श्रासोज वद १३ श्रजंट मालकम साहब श्राबूजी जावे सो सीष करण श्राया । नै वीलायत कांनी री वीजली री कलकते श्राया सो बैठां पछवा फेरी । सो हजूर निजर गुदराई । पछै साहब नै सीष हुई । सौ वद १४ नै श्रठा सुं चढ़ गया ।

संमत १९०६ रा श्रासोज सुद ६ श्रसवारी हुई सू पैली तो तषतसागर नीजर गुदरायो । नै पछै कायलांणै पधारीया सो म्हैलां रो कमठो देषीयो । नै पछै तीषी भाषरी रा चौक में गोळीयां बवाय पाछा मांयलेवाग दाषल हुवा ।

श्रासोज सुद ९ (प्रथम) श्रीजी साहबां री श्रसवारी गढ़ दाषल हुई । नै वाड़ी रा म्हेलां में पधार होम री पुरणावती[9] कीवी । नै ससत्रां री पूजा कीवी ।[10] पछै जनांनी दोढी रा पावड़ीयां ऊपर पदार हाथी घोड़ां री पूजा कीवी । नै पछै माताजी श्री चांवंडाजी पधार भेंट रू० ५) नीछरावळ रू० २)

---

1. श्रच्छा 2. घड़ों को उल्टा तैराकर उन पर दीपक रखवाये 3. दीपक की लौ 4. सामान्य चाकर 5. विशेष प्रकार की शराब (जो यहीं बनती थी) पिलाई 6. थाल परोसे गये 7. देहान्त हो गया 8. बहाल किये 9. पूर्णाहुती 10. शस्त्रों की पूजा की गई

कर गोळ री घाटी रै मारग पाछा वाग (मांयलेवाग) दाषल हुवा। नै दसरावा रो दरबार बगेची में हुवौ। उमराव, मुतसदी, षवास, पासवांनां नै मुजरो ग्रासीरवाद हुवौ। मींदरां रा सहेली दूपट्टा पदरीजीया। व्यास तिलक, प्रोहित ग्रारती कीवी। पछै सारां री नीजर निछरावळ हुई। नै दरबार बोड़ नै वीछायत रै लारली कांनी पांतीयो हुवौ।[1] श्रीजी वीराजीया। नै सिरदार जीमीया। पछै सिरदारां नै सीष हुई। ग्राप मांय पधारीया।

ग्रासोज सुद ६ (दूजा) श्री रांमचंद्रजी री ग्रसवारी रांवरण मारण नै पधारीया। नै श्रीजी साहबां री ग्रसवारी मांयलेवाग सूं हाती ग्रसवार हुया। नै षवासी में कंटाळिये ठाकुर गोरधनदास सींभूसिंघोत चंवर करण नै बैठो। सो सीरे बजार हुय जाळोरी दरवाजे हुय बारै पधारीया। नै बारै पधारीयां पछै घोड़ै सवार हुय बाईवाळ भैसे नै हात सुं बुड़छी[2] बाय रांवरण मर चुकां पंछै पाछी ग्रसवारी उरणीज मारग हुय मांयलेवाग दाषल हुवा।

ग्रासोज सुद १० कन्नोज कांनी पिंडत बाजपेय बदरीनाथ, सींघवी समरथराज ग्रलवर सूं म्हैलीयो थो, तिरण रा रू० ४) रोजीना तो श्री हजूर में पैला सज गया था नै हमार नोरता[3] में ग्रठारै भुजा माताजी रो सरूप चम्रतकारो वरणा प्रस्थान कीयो। नै विरामरण री वरणीयां १०० ग्रंदाज हुई सो ग्राज माताजी रो उथापन कर ग्राहोर री हवेलीं सूं ग्रसवारी माताजी री हुई जिरणां री जळेब में[4] श्री दरबार सुं मुतसदी, षवास, पासवांन नै लवाजमो म्हेलीयो। सो ग्रसवारी गुलाबसागर रै नजदीक पधारीयां री मालम हुई। तरै दरबार दरसरण करण रौ फुरमायौ। तरै माताजी रौ स्वरूप मोटो थो। सु बाग री पोळ में मायो न्हीं। तरै बारै पधरायो। पछै बाग में जावतो हुय सारां नै बारे ले कनातां बंद गई। सो श्रीजी साहब जनांना सहेत दरसरण कीयो। नै भेंट रो हुकम हुवौ। सो बदरीनात नारी ग्ररज कराई जिरण सूं भेंट मोकूब[5] रही। पछै श्रीजी साब तो वाग में द्राषल हुवा। नै माताजी री मुर्थ[6] गुलाब सागर में प्रवेस कराई।

संमत १६०६ रा काती वद ६ पोकरण ठाकुर वभूतसिंघ सालमसिंघोत घर सुं ग्राज ग्रायौ, तिरणां नै मुजरो हुवौ। नै मांहाराज कंवार श्री

---

1. भोजन की व्यवस्था हुई   2. बरछी   3. नवरात्रा   4. जलूस के ग्रग्रभाग में
5. स्थगित   6. मूर्ति

जसवंतसिंघजी नै अंगरेजी भणावण[1] रो अजंट साहब केयो। सूं कसमीरी पिंडत सिवनारांण बाड़मेर थो जिण नै सुपारस कर रूपीया १००) रो म्हीनो कराय अंगरेजी भणावण नै राषीयो।

काती वद १४ मांयलावाग में वगेची में दरबार हुवौ। मिंदरां रा दुपटा सहेली पदरीजीया। व्यास तिलक, प्रोहित आरती कीवी। सदामंद मुजब पांतीयो हुवौ।

संमत १९०६ रा काती सुद १० हातीयां री लड़ाई गिरदीकोट में अडंग री कराई। नै श्री हजूर साहब कुरसी बीछाय साळ रै डागळै[2] विराजीया। नै जनांना सिरदार डागळां ऊपर गुलाबी रंग री कनातां रूपे रे जासीयां बंदी जीणां मां कर जनांना सीरदारां निजर गुदराई।[3] १ घड़ी तांई लड़ाई हुय्य पछै हाती सुं दर गज री साट मारी, १ घड़ी तांई हुई। पछै असवारी मांयलेवाग दाषल हुई।

काती सुद १२ श्रीजी साहबां री असवारो कायलांणे पधारी नै रात उठै हीज रैणो हुवौ। नै सुद १४ पोकरण ठाकुर कायलांणे हाजर हुवा, तिणां नै मौसर हुवौ। नै पछै असवारी मांयलेवाग दाषल हुवा।

षजांना रो पोतदार नाथावत व्यास देवकिसन पोतदारी संमत १८७७ में हुई जठा पछै उतरा चढी हुई न्हीं।[4] जिण सुं जोर में आय गयो।[5] तरै सिंघवी फौजराज अरज कर पोतदारी जबत कराय नै कैद कराया दीया। तिण रै च्यार छव महीना रै बाद पेसकसी रा रू० ठैर पाछी पोतदारी बाल हुई।

संमत १९०६ रा मीगसर वद ५ गुलर रा ठाकुर वीसनसिंघ गोपाळसिंघोत नै घर रो सीष रो मुजरौ हुवौ।

मीगसर वद ६ पोकरण रा पटायत नै बगेचो में रात रा मौसर हुवौ।

वद ९ सैर रा म्हाजनां नै षुमां[6] नै मांयलेवाग में बगेची रा हवद ऊपर श्रीजी साहब विराज नै बुलाया। सो ठावा-ठावां री निजर तो हाथ सुं लीवी नै बाकी रां री निजर दोढ़ीदार लिवी। नै षुमां—सुनार, कसारा, दरजी, छींपा,

---

1. अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देने 2. छत पर 3. हाथियों की लड़ाई देखी 4. उसमें कभी परिवर्तन नहीं हुआ 5. गर्व करने लग गया 6. कामगर जातियें

मोची, पिंजारा, षटीक वगैरे आपरा किसब[1] मुजब री चीजां निजर कीवी। सारां नै षातरी फुरमाई। घड़ी दोयेक सु सीष दिवी।

मीगसर वद १२ असवारी जनांना समेत मांयलावाग सूं बाळसमंद दाषल हुई।

संमत १९०६ रा मीगसर सुद १ पोकरण रा ठाकुरां नै उलोड़ा वाग में मौसर हुवौ।

सुद ४ जैपुर सु कांदलोत पदमसिंघ सेषावत, मोवणसिंघ, पंचोळी उदैचंद अठै बाईजी श्री चांदकवर बाईजी रा सगपण मुदे[2] अठै आया। तिणां ने वगेची में मौसर हुवौ। सो इणां सगाई रो टीको मेलण री अरज कीवी। पछै इणां नै सीष हुई।

सुद १० असवारी सिकार री हुई, सो महामींदर कनै होय उदैमिंदर कनै फकीर रा बाड़ीया में सूर रौ भालां सूं सिकार कराय पाछा उणीज मारग होय बाळसमंद दाषल हुवा।

सुद १३ अजंट मालकम साहब आबूजी सु आया। तिणां रै सांमा दिवांण बगसी वगैरे संरसता मुजब गया।

मोगसर सुद १५ बाईजी श्री चांदकवर बाईजी री सगाई जैपुर माहाराज रांमसिंघजी सु हुई, जिणरो टीको ले ईतरा जणा आज गया सो टीका री वीगत लिषणी[3]..

संमत १९०६ रा पोस वद १ बाळसमंद श्री हजुर में अजंट साहब आया, सो सदामंद मुजब सांमा पधारीया। सु बगेची में विराज घड़ी तीनेक वतळावण होय नै सीष हुई।

पोस वद १४ असवारी सिकार री हुई। सो गांव केरू री सींव में पधारीया। सो गांव चांवंडा नजीक थो जठै माताजी श्री चांवंडाजी रा दरसण करण नै पधारीया सो भेट रू० ५) नोछावर २) कीया। नै उठै

---

1. हुनर 2. सगाई करने बाबत 3. विगत के लिये रिक्त स्थान छोड़ा गया है

मिंदर में तासळी पधराई ।[1] पछै उठा सुं पाछा गांव केरू पधारीया, सो उठै धांधल पीरदांन फलसा बारै सांमो आय निजर निछरावळ किवी । पछै कोटड़ी में पधारीया । अर तासळी री तयारी पीरदांन री तरफ सुं हुई । नै ठावा आदमी साथै था जिणा रै षांड रो सीरौ नै विणज री तयारि हुई । नै बाजे लोक सर बाले रै लाफसी, सु सारा जिमीया । पछै उठा सुं असवारी हुई, सो कायलांणे होय बाळसमंद दाषल हुवा ।

पोस वद ८ अजंट मालकम साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया सो घड़ीक बतळावण होय सीष हुई ।

पोस वद १४ आसोप, हरसोळाव, लोटोती बाजोली रा ठाकुरां नै घरां सुं आया तिणां नै मुजरो हुवौ । नै श्रीजी साहबां री असवारी सूरसागर पधारी सो अजंट साहब तळाब रा बांवळीया तांई सांमा आया पछै बंगला में पधार उठै विराज घड़ी दोयेक इकंत बतळावण हुई । पछै असवारी उठा सु बाळसमंद दाषल हुई ।

वद अमावस अजंट मालकम साहब नागौर जाय सो बीकानेर नै मारवाड़ री सरहद रा फैसला करण मुदे, तिण री सीष करण नै श्री हजूर में आया । सो घड़ा दोयेक बतळावण[2] होय सीष कर नागौर नै चढ़ीया ।

संमत १९०६ रा पोस सुद २ असवारी कायलांणे सिकार रै मुदे पधारीया, सो पाछा रात रा बाळसमंद दाषल हुवा ।

सुद ७ सीकतर हाटकासल साहब सरहद[3] रा फैसला करण मुदे अजमेर सुं अेरणपुर री छावणी जावे तिण री सरभरा[4] रा कागद जैतारण, सोझत, पाली, देसूरी रा हाकमां नै लिषीजीया ।

पोस सुद १० सिकार री असवारी कायलांणे हुई, सो पाछी रात रा बाळसमंद दाषल हुवा ।

संमत १९०६ रा माह वद १ असवारी जनांना समेत बाळसमंद सुं कायलांणे पधारीया ।

---

1. भोजन किया 2. बातचीत 3. सीमा सम्बन्धी 4. खातिर तवज्जो

वद ५ कायलांणे बडोड़ा भाषर कनै पधार हाका री सीकार[1] कराय पाछा मैलां दाषल हुवा ।

वद ६ तथा ७ नै श्री हजूर में गोठ हुई सो मैलां रा मुंढा आगै[2] पांतीयो हुवौ । नै श्रीजी साहब विराजीया नै आसोप, कंटाळीयो, लांबीयां रा ठाकुर नै मुंदीयाड़ रा बारठ हाजर था । जिणां नै आसो पायौ नै षवास, पासवांनां नै आसो पायौ । नै पातरीयां, भगतणीयां रो गावणो हुबो कीयौ ।[3] नै तासळी पधरीजी । नै उमरावां रै थाळ आया, सो जिमीया । पछै उमरावां नै सीष हुय मांय पधारीया ।

वद ६ असवारी जनांना समेत कायलांणा सुं बाळसमंद दाषल हुवा ।

संमत १६०६ रा पोस सुद १ मुनसी पंचोळी जैलाल रै नीमच री छावणी री वकीलायत हुई, उदैपुर रा अजंट री ।

सुद ७ असवारी बाळसमंद सूं सिकार रै मुदे कायलांणे पधारी । सु पाछी रात रा बाळसमंद दाषल हुई ।

माह सुद ८ नागौर सु अजंट मालकम साहब आया, सो सांमा दिवांण, बगसी बगैरे सरसता मुजब गया । नै साहब सूरसागर दाषल हुवा ।

सुद १२ अजंट मालकम साहब री मिजमांनी हुई, सो रसोवड़ा सुं जिनस तय्यार होय सूरसागर मेलीजी । नै आसा रा गोटंका, पुसपां री छाबां अंतर रीं सोसीयां, पांनां रा बोड़ा वगैरे मेलीजीया ।[3]

माह सुद १४ तथा १५ असवारी नागौरी दरवाजे होय गोळ री घाटी रै मारग कीले दाषल हुई । उठै कमठो निजर गुदराय[4] पाछा नाळा री बारी रै मारग बाळसमंद दाषल हुवा ।

संमत १६०६ रा फागण वद १ सिरीमाळी पोषर री बगेची बाळसमंद सुं दिषणादी जठै चोतरा नीचै विछायत हुई । जठै पैला तो अजंट साहब आय गया था पछै श्रीजी साहब तळाब में नाव में विराज नै पधारीया । उठै घड़ी

---

1. सिकार को बाहर खुले में लाने के लिये बड़ी संख्या में आदमी चारों ओर से हल्ला किया करते थे 2. सामने 3. गाना चलता रहा 4. निर्माण कार्य देखकर

दोयेक बतळावण हुय साहब नै सीष दे पाछा नाव में विराज बाळसमंद दाषल हुवा।

वद ७ अजंट मालकम साहब श्री हजूर में आया। घड़ी दोयेक ईकंत रया। पछै सीष हुई। नै जोधपुर रो गांव लांबीया रो ठाकुर प्रीथीसिंघ भांनीसिंघोत घरां सु आया तिणां नै मुजरो हुवौ।

वद १३ षास हवाला रा डोळीया विरांमण प्रोहीत सांमी जोगीयां री डोळीयां अटकाय दीवो सु अठै घणा दिन सु था सो धरणो वद ११ सु दीयौ सो आज तीजो दिन हुवौ। तिण री मालम हुई कै धरणा नै तीजो दिन है। तरै कोटवाळ सेरकरण नै हुकम हुवो कै इणां नै वांसां सु कुटाय काढ दे। तरै सेरकरण वांसड़ा दे आदमीयां नै मेल कुटाय माकुल कीया।[1]

वद १४ अजंटी रो मुनसी फजररसूल नै बगेची में मौसर हुवौ। घड़ी तीनेक इंकत बतळावण हुवौ। पछै अजंट साहब रै आबूजी जावण री नै इण आपरै घरै जावण री सीष कीवी।

संमत १९०६ रा फागण सुद २ असवारी कायलांणे पधारी। नै सुद ३ जनांनी असवारी कांयलांणे पधारी। नै दिवांण, वषसी, दफतर, षजांनो वगैरे ओधादारां नै सिंघवी अषैराज रै तळाब डेरो करण रो हुकम हुवौ। सो सारां उठै डेरा कीया।

सुद १३ फाग हुवौ, सो कायलांणा री पोळ रै मांयला चौक रूपा[2] रा मुडा ऊपर श्रीजी साहब विराजीया उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन हाजर हुवा सु षेल च्यारेक हुवौ। गुलाल री दड़ीयां, नै पुसपां री दड़ीयां सु नै पुसपां री माळावां सिं० फौजराज रा हाथ सु सारां नै दिरीजी।

सुद १४ होळी रो दरबार बड़ला कनै सदामंद मुजब हुवौ। उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा हाजर हुवा। मिदरां रा दुपटा सेलीयां पधरीज व्यास प्रोहीत तिलक आरती कीवी। पछै सारां री निजर निछरावळ हुई। भगतणीयां, पातरीयां रा तायफा हाजर था जिणां रो गावणो हुवौ कीयौ।

---

1. निकाल दिया 2. रजत

पछै दरबार बोड़ उठै ही चौक में ऊंचो थको[1] पांतीयो हुवौ जठै विराजीया। उमराव मांमुल मुजब बैठा सो अरोगीया। पछै सारां नै सीष हुई।

संमत १९०६ रा चैत वद १ असवारी जनांना समेत कायलांणा सु बाळसमंद दाषल हुवा।

वद ६ होळी रो तमासो करावण नै सैर सु रमाड़ां[2] नै बुलाय वाग री पोळ रा मुढा आगै तमासो हुवौ। नै जाळीयां वाळी कनातां पोळ रै डागळै बंदीज श्री हजूर जनांना समेत विराज निजर गुदरायो। नै इनांम रा रूपीया ५०) दीरीजिया।

वद ८ सील गुड़ला रो मेळो हुवौ, सो श्री महाराज कंवार मेळो देषण नै तळैटी रा मैलां पधारीया।

संमत १९०६ रा चैत सुद २ श्रीजी साहबां री असवारी बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुई।

सुद ३ श्री गवरमाता री असवारी किला सु जलूसी सिरे बजार होय गुलाब सागर पांणी पीवण नै पधारी। नै श्री महाराज कंवार री असवारी मेळो देषण पधारीया।

सुद ८ गढ़ ऊपर सू असवारी बाळसमंद दाषल हुई। नै श्री गवरमाता री भोलावणी री असवारी किला ऊपर सु बाळसमंद हुई। दोढ़ी रा मुढा आगे चौक में विछायत होय गवरमाता बीराजी नै सैर रा ही गवर ईसर सारा उठै आया। नै दोढ़ी ऊपरला मैल में जाळी वाळी कनातां बंदीज। श्री हजूर जनांना समेत विराज गवरां रा दरसण कीया। नै सेर रा गवर ईसर दीठ[3] अेक अेक रूपीयो भेंट हुवौ। पछै रात आधी रा गवर् माता री असवारी किले दाषल हुई।

संमत १९०६ रा प्रथम वैसाष वद २ अैमदनगर रा तिरगाला कीसतुरा वगैरे रो तमासो[4] हुवौ।

वद ५ अैमदनगर सु देसाई सांकलचंद अठै आयौ। तिण नै मुजरौ हुवौ।

1. ऊंचे स्थान पर 2. खिलाड़ी लोग 3. प्रति 4. नाटक

वद १३ दफतर री दरोगाई भं० सिरीचंद रै थी सो जबत हुई। नैं दफतर री फड़दां वगैरे नाजर मगनीरांम हसते मालम होणी सरू हुई।

संमत १९०६ रा प्रथम वैसाष सुद ६ तथा ७ पोकरण रा ठाकुर श्री बाईजीसा रो टीको ले जैपुर गया, सो पाछा आया। तिणां नैं मुजरो हुवौ। नैं अध घड़ीक बतळावण हुई पछै घर री सीष रौ मुजरो हुवौ।

सुद १५ आसोप रा ठाकुर नै घर री सीष रौ मुजरो हुवौ।

दुतीक वैसाष वद ६ श्रीजी दुवार महाराज रो पत्र नै प्रसाद ले नै सांचोरो हरगोवींद आयो तिण नै आसीरवाद हुवौ।

वद ९ बाळसमंद रा दौलतषांना रा साळ रै मुढा आगे चौक में श्री हजुर पधार अध घड़ीक उभा रयां नै साळ कनै पोळ फेर करावण रो फुरमाय नै मांय पधारीया।

वद ११ तळाब रा ओटा उपरली साळ में षुरसी ऊपर श्री हजूर विराजीयां। नै हेंटै तबेला रा घोड़ा हाजर था सो चाबक असवारां कनै फीराया।[1] पछै मीढां[2] री लड़ाई हुई सो निजर गुदराय मांय पधारीया।

संमत १९०६ रा दुतीक वैसाष सुद ३ आषातीज रो दरबार बाळसमंद दौलतषांना री साळ रै मुढा आगे चौक में हुवौ। सदामंद मुजब उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन सारा हाजर हुवा नै मींदरां रा दुपटा सेली पधरीजोया। व्यास, प्रोहित तीलक आरती कीवी। तायफा हाजर हुवा, जिणां रो गावणो हुवौ कीयो। पछै सारां नै मुजरो होय दरबार बोड पांतीयो विराजीया सु अरोगीया, पछै सारां नै सीष हुई।

दुतीक वैसाष सुद ६ असवारी नागौरी दरवाजे रै मारग कीले पधार कमठो निजर गुदराय पाछा सीगोरीया री बारी रै मारग होय बाळसमंद दाषल हुवा।

सुद ७ मंडोर सु मेळो आवै सु पोळ ऊपरला मैल में जनांना समेत विराज नै मेळो निजर गुदरायो।

---

1. घोड़ों को चक्कर में फिरवाय 2. मैंढ़े

सुद ६ रात पौर गयां भाट वाघा नै फुरमायौ कै अबार असवार मेल आसोपा सुरतरांम नै बुलाव तरै बाघे बारै आय रसालदार मुनालाल रो असवार मेलीयो। तरै असवार रै साथै सुरतरांम दोढी हाजर हुवौ री अरज हुई। तरै मांय बुलायौ नै आसीरवाद हुवौ नै फुरमायौ कै थनै अेक तफे मेलां हां सो जावणो पड़सी। तरै इंण अरज करी—षांवंद मीलावो जठै ही जावणो मंजूर है। जद पाछौ फुरमायौ कै च्यार मुसाहवां नै जमीनां परगने मेलां हां जिण में थनै ही जावणो पड़सी। थारै रथ, घोड़ा, आदमी म्होरो डेरा वगैरे रौ सारो बंदोबसत कर देसां। नै थारै रोटी रो ही बंदोबसत कर देसां। हमें म्हे थारा सु निरंतर[1] राजी हां यु फुरमाय नै सीष दीवी।

संमत १९०६ रा जेठ वद १ षट दरसण री अदालत[2] कवराज भारतदांन रै थी सो जबत होय भाट वाघा रै हुई। नै कवराज पदवी ईनायत हुई।

जेठ वद ९ अैमदनगर रा तीरगालां रो तमासो हुवौ, सो जनांना समेत निजर गुदरायो। नै ईनाम रा रू० ४०) दिरीजीया।

वद ११ बड़ौदा सु जमादार जांम विन अमीन री अरजी ले नै तिरवाड़ी जवांनो, रूघो आया तीणां नै आसीरवाद हुवौ। नै जणा ४ नै आज जमी नापण नै रवाने कीया। आसोपो व्यास सुरतरांम नै भंडारी चांदमल, जोसी सीवनारायण, भंडारी सिरीचंद जिणां साथै रथ ४, रेषळा २, घोड़ा चढण नै ४, षास पायगारा २०, घोड़ा गुसांयां रा पोफा ४, चेला २, चपड़ासी २, डेरा २, साईवांन २, पालड़ीयां २, पोरायत रै फरास वगैरे साथै मेलीजीया। सो गांव डीगाड़ी १, बणाड़ १, वीसलपुर १, तांई तो भोम डोळी री जमीं सांमल नापो। नै धांन रा रूका लीषाय उठावण री दवायती[3] दीवी। नै वीसलपुर आगे तुंगा[4] दोय हुवा सो सुरतरांम चांदमल तो मेड़ता रा प्रगना कांनी गया। नै सीवनारांयण सीरीचंद नागौर रा प्रगना कांनी गया। नै सुरतरांम रे बेटा म्हारांम रा रू० २) रोजीना षासे षजांने सभीया।[5]

वद (अमावस) सोमो तीथो तिण सु श्री हजुर तुलाव विराजीया।[6] तिण में रोकड़ ३७००), म्होरां, २५) तोला, रूपा रा वासण ८००) नै कपड़ो, धांन वगैरे न्यारो।

---

1. सदा ही　2. वह अदालत जिसमें चारण-भाटों आदि के मुकदमें निपटाये जाते थे
3. स्वीकृति　4. टुकड़ियां　5. विशेष सरकारी खजाने से दिये जाने लगे　6. तुलादान किया

जेठ सुद ७ श्री हजूर री वरस गांठ रो समोरथो[1] गढ़ ऊपर सदामंद मुजब हुवौ नै सिरीमाळी विरांमणां री न्यात में बोरा पोकर रो भुवा रो बेटो मनकरण जिण नै मेड़ता रा सीरमाळी न्यात बारै काढ़ दीयो। जिण बावत अठै ही धड़ा था सो विरंमभोज सुद ८ रो होसी जिण सु धड़ा भांगण मुदे मनकरण न्यात री पगरख्यां माथै लीवी।[2] तरै इण ने न्यात में लीयो।[3] नै धड़ा भागा[4] नै सुद ८ विरमंभोज[5] बाळसमंद रो तळाब षाली थो, जिण में हुवौ। षांड रा सीरा रो हुवौ नै सीभु भेळा ही जीमीयो।

और मु० लिषमीचंद री तरफ सु भं० फौजमल जाळोर वाळो जिण ने तो आसोपो सवाईरांम कैद पैला कराय दीयो हौ नै फेर फतैपोळ रो रांजो[6] षड़ो कर सिं० जसरूप नै म्है० मांनमल नै चौकीनवेस मु० मांनमल, भुरट अगरचंद ईतरा जणां ने फेर कैद हुई।

जेठ सुद १३ श्री हजूर री वरसगांठ रो दरबार बाळसमंद दौलतषांना रै मुढा आगे[7] सदामंद मुजब हुवौ नै लोंग, डोडा वगैरे निजर गुदरीज नै बंटीया।

सुद १५ श्रीजी साहब जनांना समेत घाटी नीचला बाग में पधारीया नै चौफेर जाबतो हुवौ।[8] आषो दिन विराजीया। मरजीदानां नै आसो पायो। पातरीयां भगतणीयां रा नाच-गावणो हुवौ। पछे रात रा ऊपर मैलां में दाषल हुवा।

संमत १९०६ रा असाढ़ वद ११ आयसजी श्री पीरागनाथजी महाराज जाळोर में सिधां रा जोगेश्वरां रा धरणा री साथ आया। नै मास ८ हुवा सो नागौरी दरवाजा में सनेसडां में डेरो थो सु आयसजी रो जबाब अेक लाष रूपीया ठैर उदैमिंदर आज पधराया, सो दीवांण मु० लिषमीचंद नै दोढ़ीदार पेमकरण लवाजमो सारो ले जाय, साथै जाय उदैमिंदर पधराया अर जालामंड री अेवज गांव चीपड़ो दीयो।

---

1. मुहूर्त के अनुसार किया जाने वाला समारोह 2. अपना कसूर माफ करवाने को न्यात के सभी लोगों की जूतियें सिर पर रखी 3. न्यात में शामिल कर लिया 4. विभेद समाप्त हुआ 5. ब्रह्म भोज 6. विवाद 7. सामने 8. पर्दे आदि की व्यवस्था हुई

संमत १९०६ रा असाढ़ सुद ४ श्री दरबार री असवारी बाळसमंद सु गढ़ ऊपर पधार श्री चांवंडा माताजी पधारीया सो कींवाड़ मंगळ था सो जाळी में दरसण कीया नै पाछा फतैमैल में पधार हवद भरायौ। फतैमैल दौलतषांना में जाबतो होय सारां नै सुरजपोळ बारै लीया।

नौबतषांनो ओजाजी री साळ ऊपर बैठो नै नोमां सांम तांई जाबतो रयो। नै असाढ़ वद १ सु लगाय नै केई दिन तांई हैजा रो कारण सैर में रयो जिण सु मीनष भागबो कीया[1]।

संवत् १९०७ का विवरण

संमत १९०७ रा सावण वद २ श्रीजी साहबां री असवारी असाढ़ सुद ४ किले दाषल हुई थी, सो जनांना समेत पाछा आज बाळसमंद दाषल हुवा।

वद ४ तालीम री डावड़ी[2] कुरजी बाळसमंद रांमसरण हुई। जिण नै सींदुक में घाल तास ओडाय कागे दाग हुवौ नै कारज[3] री जळेबीयां मण १६) हुई।

वद ११ श्रीजी साहबां री असवारी कायलांणे पधारी नै रात उठै ही विराजीया नै वद १२ दिन ऊगां महाराज कंवार ही कायलांणे पधारीया।

संमत १९०७ रा सांवण सुद ४ अजंट मालकम साहब आबूजी सु आया जिणां रै पेसवाई में दिवांण, बषसी वगैरे सदामंद मुजब गया नै साहब सूरसागर दाषल हुवा नै डाली री मीठाई वगैरे सदामंद मुजब मेलीजी।

सुद ७ श्रीजी साहब तषतसागर पधारीया सो पठा ऊपर बिछायत हुई जठै विराज तळाव निजर गुदरायो। पोर १ विराजणो हुवो पछै उठा सु कायलांणे रा मैलां दाषळ हुवा।

सुद ८ असवारी कायलांणा सु बाळसमंद दाषल हुई।

सुद १० अजंट मालकम साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया, सो श्री हजूर सा बगेचा रै बारणा रै बारै चौक तांई सांमा पधारीया। पछै श्री नाथजी

---

1. मनुष्यों की मृत्यु होती रही 2. गायिकाओं के तालीमखाने की सेविका 3. मृत्यु-भोज

रा मिंदर लारै विछायत हुई, जठै विराजीया । पछै लाठ साहब रे मेलण सारू काठ रा हाथी, घोड़ा, रूपा रा गैणा सुधा[1] नै पुतळीयां वगैरे तयार कराय नवा बंगला में धराया था सो साहब नै साथै ले जाय नै देषाया । पछै पाछा विछायत ऊपर पधार अध घड़ीक इकंत वतलावण होय सीष दीवी ।

सांवण सुद १५ राषड़ी रो दरबार तो हुवौ नहीं । नै व्यास, प्रोहीत नै मांय बुलाय दुपटा सेली पधरीज तीलक आरती होय नै राषड़ीयां पधरीजी । नै पातरीयां भगतणीयां वगैरे उछव सदामंद मुजब हुवौ ।

संमत १९०७ रा भादवा वद ५ नागपांचम रो मेळो मंडोर हुवै जिण नै हुकंम पुगो कै नागौरी दरवाजा रै मारग कोई जाईजो मती । सारा बाळसमंद रै मारग जावजो । नै वाग रो पोळ ऊपर जावतो होय जनांना समेत विराज मेळो निजर गुदरायो । नै पांचु महाराज कंवार ऊपरली दोढ़ी रा मैल में विराज मेळो निजर गुदरायो ।

वद १२ अजंट मालकम साहब आया, सो नाथजी रा मिंदर मुढा आगै सुम्यांना[2] री विछायत हुई, सो साहब जीवणी कांनी गालीचा ऊपर बैठा । नै डावी कांनी महाराज कंवार अदगजा ऊपर विराजीया । पछै उमराव, मुसदी सारा दोढी हाजर था । सो पैला सो उमरावां नै मांय बुलाया, सो मुजरो कर आप आपरी जगा बैठा । नै पछै मुसदीयां ने सरबाले बुलाया नै मुजरो आसीरवाद हुवौ । नै लाठ साहब रो षलीतो मुनसी ने बुलाय बंचायो[3] । घड़ी दोयेक सु उमराव, मुतसदो तो बारै आया नै घड़ी दोय साहब सु इकंत बतळावण हुई । पछै साहब नै सीष हुई । नै लाठ साहब रा षलीता री षुसी री तोपां री सीलकां २१ हुई ।

वद १४ अजंट मालकंम साहब आबूजी नै चढ़ीया ।

संमत १९०७ रा भादवा सुद ११ ठाकुरजी श्री आनंदघनजी री रेवाड़ी[4] किला ऊपर सु गुलाबसागर भुलण नै[5] पधारीया । नै सदामंद मुजब उछव हुवौ ।

संमत १९०७ रा आसोज वद ४ दफतर री दरोगाई बड़ौदा रो पींडत आंनासा नै पाटण रो नागर म्हेतो संकरलाल रै दोनां रै सांमल हुई ।

---

1. गहनों सहित 2. शामियाना 3. पढ़वाया 4. मूर्तियों की सवारी 5. स्नान करने को

वद ६ तथा १० बीकानेर रो गांव भादरां रा ठाकुर कांदलोत हमार जैपुर है जिए री तरफ सु ं सेषावत हुकंमसिंघ नोलसिंघोत रै पटै इलाके जुभणु रो गांव बडेई सु आयो, सो दोढ़ी री पोळ रै मांयला चौक में षुरसी ऊपर विराजीयां मुजरो हुवौ नै ऊभे-ऊभे निजर निछरावळ कर घड़ीक अरज कीवी, पछै सीष हुई।

संमत १६०७ रा आसोज सुद १ आसोजी नौरतां[1] री थापनां[2] री पूजा वाड़ी रा मैलां में सदामंद मुजब हुई। और दिवांण मु० लिषमीचंद नै ताव तो सांवण रा महीना सु ं आवै नै डेरो बाळसमंद हीज रेवै, सो इणां दिनां में अन (अन्न) कम षावे। नै सरधा हट गई[3], तरै नाजर हरकरण नै बुलाय नै कयौ कि म्हारो सरीर हमे बचण रो है नहीं, नै म्हारा टाबरां नै बारै फिरतां नै वरस ४ हुय गया है। सो म्हारै विछवो[4] जासी नै श्री हजूर सायबां रै पीण श्री बाईजी साहबां रै व्याव रो षरच मोटो है जिण रो पीण विराड़[5] म्हारा हाथ सु ं घाल देऊं सो अेक बार इकंत मनै मौसर[6] दिराय सुण लेवे तो म्हारा मन में धोको[7] रैवे नहीं, नहीं तरै धोको रै जावसी। पछै नाजर हरकरण श्री हजूर में जाय अैरा-अै[8] समाचार मालम कीया। तरै फुरमायौ कै बुलाय ला। पछै सुद २ डेरा सु ं पीजस में बैठ दोढी रै बारणै पींजस बोलायो नै मांय नाजरां रै हाथां ऊपर हाथ राष मांय जाय मुजरौ कीयो। तरै षातर मोषळी फुरमाई— थारै जिसो दांनो[9] चाकर दूजो है नहीं, सो सिरकार रै फायदा री कोई कलम हुवै सु बताव। जद इंण मुसदीयां ऊपर विराड श्री हजुर री मरजी देष धराय दियो। जिण री दुजां नै षबर है नहीं। नै आपरै पीण आंक तीषो[10] धर दियो नै पछै हवेली जावण री सीष कीवी। नै वेटां री भोळावणी दीवी। जद फुरमायो— थारा टाबरां नै वादे बुलाय लेसों तु ं कै तो षास रूकौ लीषदां तथा थारा कागद में षातर रा दसकत करदां, जिण री नीरणे नहीं कै षास रूकौ लीषीजीयो या षास दसकत हुवा। पछै लीषमीचंद हवेली आय वादे भला आदमी टावरां नै लैण नै मेलोया। सो आदमी पूगतां ही मुकनचंद वगैरे सारा भाई सलेमाबाद सु ं चढीया, सु सुद ६ नै अठै आय गया। सो मीळाप हुय वातां होय गई। नै सुद ७ नै लीषमीचंद रांमसरण होय गयौ। नै सुद ८ नै सोभावत उमेदकरण नै श्री हजूर सु ं मेल मुकनचंद नै षातर मोषळी[11] कराई।

---

1. नवरात्रा 2. स्थापना 3. शक्ति कम हो गई 4. अलगाव 5. हिस्से का चंदा
6. अवसर 7. अफसोस 8. ठीक यही 9. वृद्ध, समझदार 10. ऊँचा, अधिक
11. बहुत

सुद ९ असवारी बाळसमंद सुं गढ़ दाषल हुई। नै दोफार रा बाड़ी रा मैलां में पधार होम री आरती हाथ सुं कीवी। नै ससत्रां री पूजा कीवी। नै पछै जनांना दोढ़ी रा पावड़ीयां ऊपर ऊभ हाथी, घोड़ा री पूजा कराई। पछै श्री चांमंडा माताजी रा दरसण करण नै पधारीया। भेंट नोछावर सदामंद मुजब हुई। पछै पाछा मैलां दाषल हुवा नै दसरावा रो दरबार फतैमैल में हुवौ, सदामंद मुजब हुवौ। नै पांतीयो सदामंद मुजब हुवौ।[1]

सुद १० श्री रामचंद्रजी री असवारी रांवण मारण री किला ऊपर सुं हुई। नै पछै श्री हजुर साहबां री असवारी हुई। सु फतैपोळ रा चौक में हाथी रा होदा ऊपर विराजीया। नै षवासी में रीयां रा ठाकुर देवीसिंघ सिवनाथसिंघोत बैठा। नै श्री महाराज कंवार सारा ही कीलीषांना कनै हाथी रा इका में विराज सोझतीया दरवाजा रै मारग होय मेळा में पधारीया। नै श्री हजुरसा सिरे बजार होय जाळोरी दरबाजा बारै पधार घोड़े असवार होय बाहीवाळ कर पाछा हाथी रै हौदे विराज उण हीज मारग फतैपोळ पधार उठै षासा[2] मैं विराज गढ़ दाषल हुवा। नै तोपां री सिलकां सदामंद मुजव छुटी नै पछै रात रा नाळा री बारी रै मारग होय बाळसमंद दाषल हुवा।

संमत १९०७ रा आसोज सुद १४ असवारी जनांना समेत बाळसमंद सुं कायलांणे दाषल हुवा।

संमत १९०७ रा काती वद ४ मुं० मुकनचंद लिषमीचंद रा नै दिवांणगी रो दुपटो हुवौ। नै इण रा भाई समरथमल, कुनणमल नै मुजरो हुवौ।

काती वद १२ कायलांणा सू असवारी जनांना समेत बाळसमंद दाषल हुवा।

वद १४ दीवाळी रो दरबार बाळसमंद रा दौलतषांना वाळी साळ रै मुढ़ा आगे चौक में हुवौ। सदामंद मुजब।

संमत १९०७ रा काती सुद ६ बड़ा साहब ज्यांन लुर साहब जोधपुर आया सो सरभरा[3] मारग में करावण मुदै पंचोळी सिवदास नवलविहारी रा नै मेलीयो, सो आज चढ़ीयो।

---

1. हमेशा की तरह पंक्तिबद्ध भोजन की व्यवस्था हुई 2. विशेष प्रकार की पालकी
3. खातिर

संमत १९०७ रा मीगसर सुद १४ बुध, बड़ो साहब ज्यांन लुर साहब जोधपुर आवे, तिण री पेसवाई में गांव रोयट तांई सांमा दिवांण मु० मुकनचंद बषसी सिंघवी फौजराज नै आसोप ठाकुर नै रास ठाकुर गया। नै श्री हजूर साहब पेसवाई में पधारण री तयारी करी तरै सिं० समरथराज साहब सु ईतला कीवी। तरै साहब कही—हमारे तप[1] की बेमीरी है सो श्री हजूर सा नहीं पधारें। तरै असवारी मोकुब रही। नै साहब पींजस में सुता सोझतीये दरवाजे होय सिरे बजार होय सूरसागर दाषल हुवा।

मीगसर सुद १५ बड़ा साहब श्री हजूर में तांमजांम[2] में बैठ ने आया। नै अजंट साहब साथै घोड़े असवार होय आया। नै श्री हजूर षुले षासे विराज चवांणां री साळ तांई सांमा पधारीया। उठै मुलाषात मांमुली हुई। बड़ा साहब टोपी उतारी नै पछै साहब तो सुरजपोळ रै बारणै उतर गया। नै श्री हजुरसा षासा सु सिणगार चौकी कनै उतरीया। जठै साहब हीलारा सु आय गया सो वातां करतां फतैमैल मसंद सुम्यांना री विछायत हुई जठै विराजीया घंटो १ बातां हुई। पछै अंतरपांन होय साहब नै सीष हुई।

संमत १९०७ रा पोस वद १ श्री हजूर साहब री असवारी सूरसागर बड़ा साहब रै डेरै पधारे। तरै पैला बड़ा साहब रो सीकतर[3] श्री हजूर में आय असवारी री अरज करै। पछै असवारी होण रो सरसतो है सु उण दिन परबारा श्री हजुर बाळसमंद सु नाळा री बारी पधारीया। नै सोकतर आवै। सिकतर साथै न्हीं। जिणरी अवेज में अजंट मालकम साहब नै अजंटी रो मुनसी फजर रसूल दोनु जणा नाळा री बारी तांई आया। कै-कारण सीकतर नहीं जावण सु तकरार षड़ी होय गई। सो दुतरफी मेटण[4] वासते अरज कर उठा सु असवारी कराई। नै बड़ो साहब तांमजांम में बैठ जोसीयां री बगेची रा बुरज तांई सांमा आया। नै श्री हजूरसा पिण षुले षासे विराजीया सो मुलाषात कर सूरसागर पधारीया। घड़ीक विराज नै पछै उठा सु बाळसमंद दाषल हुवा।

पोस वद ३ बड़ा साहब ज्यांन लोर साहब नै अजंट मालकम साहब बाळसमंद आया। सो दिवांण बषसी घाटी तांई सांमा गया। पछै श्री हजूर में आय मुलाषात कर घड़ी दोढ़ेक इकंत रया।

---

1. बुखार 2. विशेष प्रकार की पालकी 3. सेक्रेटरी 4. दोनों तरफ की गलत फहमी मिटाने को

वद ४ बड़ो साहब नै मीम नै अजंट साहब तीनू हाथी ऊपर बैठ नै तळाव तषतसागर देषण नै गया ।

वद ५ वाभा लालसिंहजी हरसोर सु उदैपुर गया, विना सीष[1] । तरै लारै गांव हरसोर सनेड़ीयो जवत कर दिया था नै बड़ा साहब उदैपुर गया था तरै रांणाजी नै मेवाड़ रा सिरदारां रै वासते कयौ । तरै रांणाजी पाछौ कयौ कै लालसिंघजी महाराज मांनसिंघजी रा फरजन है । जिणां रा गांव षोस नै काढ़ दीया जिणां रो तो आप केणो करो[2] नहीं नै म्हांनै सिरदारां रै वासते बार-बार कहो । जद साहब कही कै मैं जोधपुर जाऊंगा जब लालसिंघजी का वकील हमारे पास भेज दीजो । सो लालसिंघजी रो वकील अजमेर रो कायथ लालो चंदलाल आगे लुर साहब जैपर में अजंट था जद चंदलाल जैपुर रा राज री तरफ सु इंणा कनै नायब वकील थो । जिण नै लालसिंघजी वकील अठै मेलीयो, सो उण रा केणा सु बड़ो साहब श्री हजूर में लालसिंघजी रै वासते केणो कीयो । जद फुरमायौ— उणां नै बुलाय लेसां जद कै महीनां रै बाद लालसिंघजी अठै आया नै विदियासाळ में उतरीया । नै कोटवाळ सेरकरण री मारफत मांयला रूपीया बाकी था जिणां री षंदीयां[3] हुय पटा रा चारू गांवां री उठांतरीयां हुई ।[4] नै बड़ा साहब रो कूच होय डेरा गांव बणाड़ हुवा । नै अजंट मालकम साहब रा डेरा गांव सथलांणे हुवा । सौ मालांणी री तरफ जसोल होय मीम विलायत सु आवै तिणरै सांमा पालणपुर जासी । मुकांम २ रया । पछै पालड़ी, दासपां, भीनमाळ नै मांलवाड़ै, बांकडीये, वडगांव, दांतीवाड़े, पांथीवाड़े होय पालणपुर गया ।

नै मीम पालणपुर आय गई । पछै पालणपुर रा नबाब साहब सु मिलण नै आया । नै साहब पीण पाछा नबाब सु मीलण नै गया । नै नबाब री तरफ सु साहब रै जाफत[5] हुई । नै पालणपुर सु कूच कर सीरोही डेरा हुआ । उठै रावजी साहब सु मुलाषात करण नै आया । नै साहब ही गढ़ में रावजी सु मुलाषात करण नै गया । पछै उठा सु डेरा अेरणपुर री छावणी हुवा । नै छावणी सु डेरा गांव सादड़ी हुवा । नै उठा सु डेरा रांणपुरजी[6]

---

1. विदाई की आज्ञा मांगे बिना 2. इस सम्बन्ध में महाराजा तखतसिंह को आप उल्हाना नहीं देते 3. किश्तें 4. जब्ती हटाली गई 5. दावत, मेहमानवाजी 6. रणकपुर

हुवा। नै मुकांम आठ हुवा। रांणपुरजी में ज्यांन (जैन) रो मोटो मिंदर है। दोय-दोय सौ गज समचोरस है। अर च्यार तथा पांच षण[1] रौ मिंदर बडो तारीफदार[2] है। मिंदर रै थांभा १६० घणी लागत[3] रौ है। सो साहब देषण नै गया। उठै घांणेराव रा ठाकुर अजीतसिंघजी कांम रै मुदै आया नै पांच तथा दस सिरदार तथा वकील श्री हजूर री नालस[4] करण नै आया। नै कही—म्हांरा गांव विनां कासूर जबत कर राषीया है। जद साहब कही—हम जोधपुर जावेंगे जब पोकरण के ठाकुर कुं बुलाकर मुनासब फैसला करा देंगे।

जद उण अरसा में आउवे रा ठाकुर रा भला आदमी साहब कनै ठाकुरां रो कागद ले आया। नै साहब ने कही—आप आउवे होकर पधारो। तरै उठा सुं आउवे गया। ठाकुर कुसालसिंघजी कोस दोय सांमा आया। मुकांम दोय उठै रया नै दोय दिन ही मिजमांनी हुई। पछै पाली आया। नै पाली में गीरांट साहब विलायत सुं आया तिणां सुं मुलाषात कीवी। पछै वद ७ अजंट साहब जोधपुर आया। तिणां री पेसवाई में दिवांण बषसी—वगैरे सदामंज मुजब गया। नै साहब नै श्री हजूर सा पोकरण रा ठाकुरां नै बुलाया, सो आय हाजर हुवा।

पोस वद १३ रास रा ठाकुरां नै घरां री सीष रो मुजरो हुवौ।

वद १४ नीबाज रा ठाकुरां नै मौसर होय घड़ीक बतळावण हुई।

वद अमावस रीयां रा ठाकुरां नै मौसर होय घड़ीक बतळावण हुई।

संमत १६०७ रा पोस सुद ४ आसोप रा ठाकुरां नै मौसर होय बतळावण हुई।

सुद ५ आउवा रा ठाकुरां नै मौसर होय बतळावण हुई।

सुद ७ जांमनगर सु विरांमण मेता मणीसंकर नै चारण बिजो आज अठै आया तिणां रै अेक दिन री सरबरा बळ नै घोड़ां रै धांन घास रातब[5] मेलीजी।

सुद १० निबाज रा ठाकुरां नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ।

---

1. मंजिलें 2. प्रशंसनीय 3. बहुत कीमत का 4. शिकायत 5. लापसी नुमा घोड़ों की खुराक

संमत १९०७ रा माह वद ४ जांमनगर सु मेतो मणीसकर नै चारण आया तिणां नै बाळसमंद मुजरो होय निजर निछरावळ हुई । नै उणां षलीतो मालम कीयो । घड़ीक बतळावण होय सीष हुई । नै डेरो सैर में मांयलेवाग में पासवांनजी री सेवा विराजती[1] उण मकांन में हुवौ ।

माह वद १० भाद्राजण रा ठाकुर नै मौसर होय घड़ी दोयेक बतळावण हुई ।

वद १२ सिं० समरथराज नै वड़ा साहब कनै चढण रो मुजरौ हुवौ ।

वद १४ जांमनगर रा म्हेता मणीसंकर नै चारण विजा नं मौसर होय मुजरो हुय घड़ीक बतळावण हुई ।

संमत १९०७ रा माह सुद ३ बाळसमंद वाग में मोटोड़ो बंगलो तिण रै ऊपर मैल हुवै[2] जिण सु वाग में मजूरां वगैरे री फेट[3] मुदे श्रीजी साहब जनांना समेत वारला बाग में डेरा षड़ा हुवा जठै दाषल हुवा ।

सुद १० भाद्राजण रा ठाकुर नै नीमा सांमा[4] रा मौसर होय बतळावण हुई ।

संमत १९०७ रा फागण वद ३ रियां रा ठाकुर नै रात रा मौसर होय बतळावण हुई ।

फागण वद ७ अजंट मालकम साहब आज अठै आया । तिणां री पेसवाई में मुसायब सदामंद मुजब गया ।

वद ९ अजंट मालकम साहब बाळसमंद आया सो बारला वाग में डेरा षड़ा हुवा, जठै विछायत हुई । जठै विराज साहब सु घड़ी दोयेक बतळावण हुई इकंत पछै अंतरपांन होय सीष हुई ।

वद ११ उमरावां नै घरां सु आयां रो मुजरो हुवौ—आउवौ, पोकरण, आसोप, बगड़ी, आहोर जसवंतसिंघ सगतीदांनोत, पालासणी ठाकर रिड़मलसिंघ, नीबाडा रा ठाकुर, वांसीयां ठाकुर दुरजणसिंघ, वासणी ठाकुर करणसिंघ ।

---

1. पासवान गुलाबराय द्वारा स्थापित मन्दिर की इमारत 2. बंगले पर महल का निर्माण कार्य होता है 3. काम करने वाले मजदूरों की दृष्टि पड़ती है 4. संध्या समय

वद १२ लाट साहब २ तोपां श्री हजूर में मेली तिणरी लिषावट[1] तो आगे षलीतो आयो जिण में आय गई थी। नै आज फिरंगी सारजंन तोपां ले आयो। सो आज श्री हजूर में निजर गुदरावण नै अजंट मालकम साहब आया। सो साहब रो डेरो बाळसमंद आवतां सड़क रै मारग मंडोर कांनी फंटै जठै जिवणी बाजू चौक पड़ै जठै फरासषांना सु डेरो षड़ो हुवौ जठै तोपां लाय हाजर कीवी नै साहब डेरां में आय गया नै अजंट साहब ही बाळसमंद बारला बाग मांय सु असवारी हुई जठा तांई सांमा आया। सो उठा सु असवारी साहब रै डेरै पधारी सो बिछायत होय विराजीया। नै मुढा अगाड़ी तोपां थी तिणरी सिलकां सारजन साहब ऊभा रै[2] अंगरेजी गोमलदाजां कनै कराई। पछै घड़ीक नै श्रीजी साहब नै अजंट साहब तोपां कनै पधारीया सो तोपां रो सांमांन पेटीयां थेलीयां वगैरे निजर गुदराई। पछै पाछा पधार विछायत ऊपर विराजीया नै तायफो सैर रो साहब री तरफ सु हाजर हुवौ। तिणरौ[3] नाच हुवौ नै साहब श्रीजी रै अंतरपांन कीया, पछै असवारी तो बाळसमंद दाषल हुवा नै अजंट साहब सूरसागर गया। नै तोपां लावण वाळां नै इंण मुजब दिरीजीया—सारजन साहब नै रू० ६००), गोलमदाजां नै रू० २००), षलासीयां नै रू० ४५)

फागण वद १४ घड़ी दोयेक दिन लारला रा अजंट साहब बाळसमंद आया। घड़ो दोयेक इकंत बतळावण हुई।

संमत १९०७ रा फागण सुद १ अजंट साहब री मिजमांनी हुई सो आया। बारला बाग मांयली बगेची रै पैली कांनी विछायत हुई जठै विराजीया। नै साहब सु बतळावण घड़ीक हुई। पछै श्रीजी साहब तो नवो बंगलो हुवौ जठै पधार गया नै साहब रै रसोवड़ा सु षांणो तयार होय आयो सो षायो। पछै श्रीजी साहब पाछा पधार विछायत ऊपर विराजीया। घड़ी दो-ढेक फेर साहब सु बतळावण हुई। पछै अंतरपांन होय सीष हुई।

फागण सुद ६ भादराजण रा ठाकुरां नै घर री सीष रो मुजरो हुवौ। नै दूजे दिन पोकरण ठाकुर री हवैली ठाकर सु मिलण नै गया। जठै सिरदारां रा वकील सारा ही हाजर था जिण बषत गांव भदोरा रो चारण सांदु भोपाळदांन भाद्राजण रा ठाकर रै ऊपर कटारी बाई सो ठाकुर रै तो छिलती

1. लिखित सूचना 2. पास में खड़े रहकर 3. नाच-गाना करने वालों का समूह

सीक लागी। नै भोपाळदांन नै पकड़ लियो सी चांतरे पुगायो[1]। पछै मारवाड़ रा तो कोई चारण आया नहीं। नै बीकानेरी रा चारण हजार तथा पनरे सौ भेळा होय नागौरी दरवाजा बारै धरणो दियो, तरै भोपाळदांन नै सीष हुई। सो बीकानेरी कांनी परो गयो।

फागण सुद ८ फौजदारी अदालत लाला दौलतसिंघ रै नै आसोपा जेठमल उतमरांम रै हुई। नै चित्र सेवा री अदालत जेठमल री अेवज पंचोळी जैतरूप रै हुई।

सुद ६ अजंट साहब रो मुनसी फजररसूल श्री हजूर में आयो। घड़ी तीनेक इकंत बतळावण हुई।

सुद १४ होळी रो दरबार बाळसमंद बारला बाग में हमार डेरा षड़ा हुवा जठै सदामंद मुजब हुवौ।

संमत १६०७ रा चैत वद ५ अजंटी रो मुनसी फजररसूल श्री हजुर में आयो। घड़ी तीनेक इकंत बतळावण होय सीष हुई।

चैत वद ८ सील[2] रो नै घुड़ला रो मेळे सदामंद मुजब हुवौ।

वद १० दिवांणगी रो दुपटो महाराव राजमल नै हुवौ।

संमत १६०७ रा चैत सुद २ श्रीजी साहबां री असवारी बाळसमंद सु गढ़ ऊपर पधार पाछा तुरत ही बाळसमद दाषल हुई।

सुद ३ श्री गवर माताजी री असवारी किला सु जलूस सु सिरै बजार लवाजमा सु पांणी पीवण नै गुलाबसागर पधारो। नै श्री महाराज कंवार ही मेळो देषण नै गुलाबसागर ऊपर पधारीया।

सुद ६ अजंटी रो मुनसी फजररसूज श्री दरबार में आयो सु बारला बाग में मौसर होय घड़ीक बतळावण हुई।

सुद ८ श्री गवर माता री बोळावण री असवारी बाळसमंद हुई। नै सैर रा ही गवर ईसर उठै आया। जिणां नै श्री हजूर सु गवर ईसर दीठ

---

1. चौकी पहुँचाया 2. शीतलाष्टमी

रु. १) अेक अेक दिरीजीयो। नै पाछी गवर माता रात आधी रा कीले दाषत हुई।

....

....

सुद १५ पोकरण, आउवो, बाकरो, वासणी रा ठाकुरां नै बारला वाग में मौसर होय बतळावण हुई।

संमत १९०७ रा वैसाष वद १० पोकरण ठाकुर नै बाळसमंद मुजरो होय घड़ी च्यार इकंत रया नै सांसण डोळीयां तथा भोमीयां नीचे जमी है तिण रा हथेरणा[1] मुदे केई दीनां सु तकरार थी सो ठाकुरां वभुतसिंघजी री अरज सु हाल तकरार माफ कराय सदामंद सरसते कबजो है ज्यु राषीयो।

संमत १९०७ रा वैसाष सुद ३ आषातीज रो दरबार नै पांतीयो सदामंद सरसते हुवौ। जिण वषत पोकरण ठाकुर तो हाजर था नहीं। नै आसोप ठाकुर हाजर था जिणां सु बतळावण कम हुई। जिण सु गम हो गया[2]।

सुद ११ आसोपा सवाईरांम नै मौसर होय इकंत घड़ी च्यार रयो।

सुद १२ निबाज रा ठाकुर रो कामेती जोसी फतैचंद नु पटा नवीस धनरूप री मारफत इकंत मौसर हुवौ। नै उण अरज करी कै म्हांरी सला सिरदारां भेळी नहीं राषसां। मरजी मुजब बरतण में फरक नहीं पाड़सां, जुधा बंदी नहीं करसां[3]।

संमत १९०७ रा जेठ वद ६ पाली री हाकमी सोभावत उमेदकरण री अरज सु गुभीयांणी रो घोड़ां रो बोपारी पठांण सेबाजषां रै हुई।

वद ८ श्री हजूर री असवारी नाजर हरकरण तळाब नवो करावे जठै पधारी।

वद ९ कीसनगढ़ रा राजवी मंगलसिंघजी नै कड़ा, मोतो, मोतीयां री कंठी नै रोकड़ रू० १०००) हजार दिरीजीया।

वद ११ पांतर[4] नै कोई जीया मार[5] नै गैणो रू० ३००) रो ले गयो। जिण रो पतो कीं लागो नहीं।

---

1. हस्तक्षेप 2. गुमसुम हो गये 3. गद्दारी नहीं करूंगा 4. वेश्या 5. जान से मारकर

संमत १९०७ रा जेठ सुद १ पोकरण ठाकुरां नै मौसर होय इकंत रया घड़ी दोय तांई, मुलक रा कांम री अरज कीवी ।

सुद ५ श्री हजूर बारला वाग में विराजता था सु ऊपरला वाग में जनांना समेत दाषल हुवा ।

सुद ७ पटानवेस धनरूप री मारफत कुचांमण रो कांमेती साह बषसीरांम नै नीबाज रो कांमेती जोसी फतैचंद नै मौसर हुवौ, नै फुरमायौ—थांरै दोय ठीकांणां री सला सांमल राषजो, कारण किताक सिरदार साहब सु कैणो सुणणो फीसाद बधावण रो करै है सो थे फीसाद बधावण री सला में मत रैजो ।[1] तरै कुचांमण रै कांमेती अरज करी कै म्हांको ठीकांणो तो आज तांई फीसाद में रयौ नहीं । फकत श्री हजूर की मरजी मुजब हाजर छां । किणी सु जुथा बंदी[2] राषी नहीं, फेर राषां नहीं ।

जेठ सुद आउवा रा कांमेती नै बुलाय नै फुरमायौ कै म्हैं सुणी है ठाकुर आबूजी जासी सो विनां कांम कीहुं जावै है ।[3] कोई कांम करावणो हुवै सो अठै होय सकै ।

सुद १३ श्री हजूर री वरसगांठ रो उछब दरबार सदामंद सरसते हुवौ । सिरदार इतरा हाजर—पोकरण, आसोप, गुलर, भषरी, लांबीया वगैरे नै मुंदीयाड़ रा बारठजी नै सिरपाव हुवौ ।

संमत १९०७ रा असाढ वद ५ जोसी लाला बडेवाळा रै दिवांण री अरज सु डीडवांणा री कोटवाळी हुई । नै श्री हजूर सु दिवांण बषसी वगैरे छुट रा चाकरां नै गोठ कराई ।

वद ७ रात रा आंधी आई तिण सु डागळे[4] सुतोड़ा आदमी उतरता हा सो पड़ नै जषम हुवा । नै अेक दोय मरण गया नै रूंष घणा भागा ।[5]

वद ९ नै षबर आई कै आउवा रा ठाकुर आबूजी गया । नै लांबीया ठाकुर नै घरै जांवण री सीष हुई नै सिरपाव हुवौ ।

---

1. तुम फिसाद करने के मामले में शामिल मत रहना 2. खेमा बन्दी 3. बगैर काम के क्यों जाते हैं 4. मकान की छत 5. बहुत से वृक्ष टूट गये

असाढ वद अमावस सैर में पांणी री दुमार[1] घणी सो अेक लुगाई सिं० अषेराज रै तळाव सु पांणी लावती थी सो तकलीफ सु मारग में टाबर होय गयौ[2]। सो उण रा घर रा मांचा[3] में घाल नै लाया।

संमत १९०७ रा असाढ़ सुद २ सेषावत डूंगरसिंघ सलेमगढ़ में कैद थो सु दिन च्यारेक ताव[4] आयौ। सु आज जैपोळ बारै रांमसरण हुवौ[5]। जिण नै कागे दाग[6] हुवौ।

सुद ७ श्री महाराज कंवार अठै जनमीया[7] तिणां रा नांव दीरीजीया नहीं[8] सो आज दिरीजीया—

१ ओसीयां रा भटीयांणीजी रै जोरावरसिंघजी।
१ वड़ा तुंवरजी रै केसरीसिंघजी।
१ वड़ा रांणावतजी रै प्रतापसिंघजी, कीसोरसिंघजी।
१ चावड़ीजी रै रणजीतसिंघजी।

नै रात रा विरषा[9] हुई। हळ जुतीया[10]। महीनाक रो तळावां में पांणी आयौ।

सुद ८ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणे हुई। नै राज रो कांम सिं० अषैराज रै तळाब सरू हुवौ।

सुद ११ सिरदारां रा कांमेतीयां नु याद फुरमाया सो कायलांणे हाजर हुवा नै अरज कै रेष चौदर बाब री कांमेती तकरार करै है सो जमांना री पकावट हुवै जितरै भादवा सुद १५ तांई री जेज[11] हुवै तो ठीक है। जद श्री हजूर मंजूर कीवी। नै आहोर रै कांमेती अरज करी—ठाकुर कोटे मातमपोसी मुदै जावण री अरज करावै तरै मंजूर होय दवाती हुई[12]।

असाढ़ सुद—संन[13] नै श्री रांणावतजी साहबां रै बाईजी जनमीया तिणां रो नांव ईंदर कंवर बाई है।

---

1. पानी की किल्लत 2. बच्चा पैदा हो गया 3. चारपाई 4. बुख़ार 5. जैपोल के बाहर प्राणान्त हो गया 6. दाह संस्कार 7. जोधपुर आने के बाद उत्पन्न हुए 8. नामकरण संस्कार नहीं हुआ था 9. वर्षा 10. खेतों में हल चले 11. विलंब 12. स्वीकृति दी गई 13. शनिवार

संवत् १९०८ का विवरण

संमत १९०८ रा सांवण वद १ का० व्यास उतमरांम समला[1] रा पाहाड़ सुं लाठ साहब कनै सुं आयो सो कायलांणे में आसरीवाद हुवौ।

सांवण वद ५ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणे सूं बाळसमंद परबारा पधारीया।

सांवण वद ८ सोम विरषा चोकी हुई[2]। गुलाब सागर रे पोळां रै आळां में पांणी आयो। राणीसर पदमसर ओटै आयो।

सांवण वद १० हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुई।

सांवण वद १२ श्री हजूर साहब घोड़े असवार हुय तळाव रांणीसर, पदमसर, गुलाब सागर, बाईजी रे तळाब, तषतसागर नीजर गुदराय बाळसमंद पधारीया। नै बाळसमंद उणीज दिन ओटे वुहो (हुवो)।

सांवण वद १२ श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद सु जनांना सहेत कायलांणे पधारी।

संमत १९०८ रा सांवण सुद २ षास हवालो थो तिणरो तषता ५ जणां नै सुंपीजीया। सींघवी ईंदरमल नें गढ़ जोधपुर तालके रा, व्यास कनीरांम, भंडारी गेवरचंद नै गढ़ नागौर रा, मेता रूपरांम अमेदनगर रा नै गोढ़वाढ़ जालोर, सीवांणे रा, सेठ नाथो नै कवराज वागौ ने अन रौ कोठार हुवौ। नै कीतराक गांव देसाई सांकलचंद तालकै हुवा।

और डीडवांणे री हाकमी प्रोहत चीमनीरांम षजांना वाळा रै हुई। और दिवांणी अदालत आसोपा व्यास सुरतरांम, नै भंडारी सीरीचंद रे सांमलात् में हुई।

सांवण सुद ७ नै हुकम हुवौ कै षास हवाला रो कांम मांयलावाग में करो। नै हवालदार दौलतषानां रा उमेदवार आगे था तिणां नै बाल राषौ[3] नवा मत मेलो।

---

1. शिमला 2. वर्षा अच्छी हुई 3. वे ही हवलदार कायम रखो

संमत १९०८ रा भादवा वद १ अजंट मालकम साहब आबूजी सुं आया। पेसवाई में दिवांण, बगसी वगैरे सदामंद सरसते गया। नै पछै साहब हजूर में आया नै कैयो कै हमारी बदळी[1] हुई है सो हम तो गवालेर जावेंगे और उवां से हमारी अेवज में सषसपीर साहब आवेगे। जितरे हाल कायम मुकांम कांम जोधपुर की अजंटी का कपतांन हाटकासल साहब केई रोज करेंगे।

भादवा वद ३ तथा ४ ठाकुर आउवो, आसोप, पोकरण ने श्री हजूर साहबां याद फुरमाया। और केयौ कै कोई कांम राजरे नै मुलक रे फायदे सबंदी अरज करणी हुवै तो करौ। सो म्है पाछो षुलासे फुरमाय देसां[2]। तरै सिरदारां अरज करी कै म्है अजंट साहब री राह[3] ले अरज करसां। पछै सिरदारां सीष कर प्रबारा अजंट साहब कनै गया।

भादवा वद ६ कपतांन हाटकासल साहब आबूजी सुं अजंटी रा काम ऊपर कायम मुकाम आया। जिणां रै पेसवाई में मुसाहब सरसता मुजब गया।

भादवा वद ८ सिरदार आउवो, आसोप, पोकरण, कंटाळीयो, रायपुर, भादरजण, आहोर, षेजड़लो, चांणोद, गुलर, रींयां, षींवसर, और किताक ३ गुणा सिरदार[4] आसांमी २४ अै सारा एके हुय नै अरजी श्री हजूर में मुलक रै नै, राज रे फायदेबंद रो कलंमा २३ लिषी कै श्री हजूर एक वार मौसर सारां चाकर, परधांन, दीवांण, बगसी वगैरे ३६ कारषांने वाळा आप आपरी अरज करै। वीगत कलमां री नीचे लिषी जासी—

१ सारा चाकरां नै रूबरू मोसर होणो चाईजे।
२ कोई जागीरदार फौत हो जावे[5] तीण रो हुकमनांवो[6] लारली बहीयां देष भर देवे न्ही तो १२ म्हीनां री पेदास लाट लेणी[7]।

इण तरै री कलमां सिरकार और सिरदारां रै फायदे री लिष नै आसांमी २४ रै हाथ रा दसकत जिका अरजी अजंट मालकम साहब तथा हाटकासल साहब पास ले गया। नै साहब हरफ रो हरफ सुण नै[8] विजनस[9]

---

1. स्थानान्तरण 2. मैं अपनी ओर से उसका स्पष्टीकरण कर दूंगा 3. परामर्श 4. पूर्वी मारवाड़ के जागीरदार 5. मृत्यु हो जावे 6. नये जागीरदार के नाम का उत्तराधिकार नामा 7. वरना गांव की 12 महीने की आमदनी सरकार में वसूल कर ली जाय 8. अक्षरशः सुनकर 9. कार्यालयीय ढंग से

अरजी श्री हजूर में मेली कै इस तरै से आपका उमरावां की दरकास्त है तो ईस पर अमल फुरमाय[1] षुलासा[2] हुकम होणो जोईजै। जैसो हुकम री जेज हुई[3]। जद साहब दोनु ही पिंडां[4] जाय पूछीयो जिण पर श्री हजूर फुरमायौ कै ईणरा जबाब दोयां चारां में[5] विचार फुरमाय देसां। पछै मालकम साहब तो सीष कर ग्वालेर गया।

भादवा वद १२ गोडवाड़ री हाकमी व्यास गुमांनीराम रै हुई।

वद " (अमावस) श्री हजूर साहवां री असवारी कांयलांणे सु बाळसमंद हुई।

संमत १९०८ रा भादवा सुद २ असवारी बाळसमंद सु कायलां(णे) पधारी।

सुद ३ कपतांन हाटकासल साहब वकील नु कयौ कै आज हमारे चीठी आई जीसमें लिषा है कै अजमेर से वड़ा साहब ज्यांन लोर बादुर समले[6] जावेगे जीतने अवेजी में ४ म्हीना रेजीडंटी का कांम मेजर मालकम साहब करेंगे सो आ अरज श्री हजूर में वकीलां कीवी। और दिवांणगी राव राजमल सूं जबत हुई, म्होर दोढी धरीजी।[7] दीवांणगी रो कांम पंचायत में ३ जणां नै हुकम हुवौ। सिं० फौजराज, जोसी प्रभुलाल, मुं० मुकनचंद। सो ईण ३ री सला[8] सु दिवांणगी रो कांम सरू हुवौ।

सुद ४ गणेस चौथ रो मेळो रातेनाडे चोको[9] भरीजीयो।

सुद ११ जुलणा ईगीयारस[10] रो मेळो गुलाब सागर ऊपर चोको भरीजीयो।

संमत १९०८ रा आसोज वद १ आसोप, पोकरण, आउवो ईणां नै याद फुरमाया। १ घड़ी तांई ईकंत कायलांणे मौसर हुवौ[11]।

---

1. क्रियान्वित करके 2. स्पष्ट, विस्तार से 3. आदेश में विलम्ब हुआ 4. दोनों एजेन्टों ने स्वयं 5. दो-चार दिनों में 6. शिमला 7. दिवानगी की सील का उपयोग स्थगित रखा 8. परामर्श 9. अच्छा 10. झूलना एकादशी 11. एकांत में मिलने का अवसर दिया गया

आसोज वद १२ श्री हजूर री असवारी कायलांणे सु बाळसमंद दाषल हुई।

सांदू नाथुरांम नै उमेदकरण सोभावत श्री हजूर में मुजरो कराय पांच रू० रोजीना कराय दिया।[1] सो रोजीनो साभीयां पछै[2] सीष कर उदैपुर जाय रांणाजी री रजालि[3] पाछो हाजर हुवौ सु दोढी रैबो कीयो।[4] नै रोजीनो पायां गयौ।

आसोज सुद १ ठाकुर पोकरण, आसोप, आउवो वगैरे नै अजंटी रो मुनसी फजर रसूल वगैरे अै सारा जणा श्री हजूर में आया। नै मुलकी कांम री अरजी २३ कलमां री राज रै बंदोवसत री सिरदारां साहब सु सला मेळाय दीवी[5] जिण मुजब कांम जारी करण री अरज कीवी। जहां हजूर साहब फुरमायौ—२ तथा ४ दिनां में वीचार नै षुलासे फुरमाय देसां।

आसोज सुद ६ गोळ री घाटी रै मारग असवारी मांयलेबाग दाषल हुई।

आसोज सुद ७ अजंटी रो मुनसी श्री हजूर आयौ। मौसर हुवौ, बतळावण हुई। नै जांमनगर मेता मणीसंकर नै, बारठ बीजा नै मिजमांनी दिरीजी। सो अन रा कोठार सूं जिनस मंगाय नाजर हरकरण रा नोरा में सारी कराई। नै कोरी जीनस वाळां[6] नै वाग में डेरौ थो, जठै मेली। नै नाजर हरकरण, नै षीची उमेदकरण उभा रहै[7], आछी तरै सुं मनवार[8] कीवी।

आसोज सुद ६ श्री हजूर साहबां री असवारी मांयलेवाग सुं किले दाष(ल) हुई।

आसोज सुद १० श्री रामचंद्रजी री असवारी रांवण मारण री किला सुं सदामंद मुजब हुई। नै श्री हजूर साहबां असवारी जलूसी किला सुं हाथी रै हौदे विराजीया नै षवासी में पोकरण रा ठाकुर बैठा। सो सिरै बजार होय जाळोरी दरवाजा बारै पधार रांवण मारीयां पछै घोड़े असवार होय वाहीवाळ

---

1. नाथूराम को 5) रु० प्रति दिन राज्य की ओर से मिलने की व्यवस्था करवा दी 2. स्वीकृत हो जाने पर 3. स्वीकृति लेकर 4. ड्योढ़ी पर हाजिर रहने लगा 5. पोलीटिकल एजेन्ट से परामर्श कर दी थी 6. कच्ची रसोई करने वाले 7. खातरी में उपस्थित रहे 8. मनुहार

कर पाछा उणोज मारग होय किलै दाषल हुवा। नै सदामंद मुजब तोपां री सिलकां हुई।

सुद १३ पोकरण, आउवा रा ठाकुरां नै मौसर होय बतळावण हुई।

संमत १९०८ रा काती वद ४ पोकरण आउवा रा ठाकुरां नै अजंटी रो मुनसी फजर रसूल साथै, तिणां नै मौसर हुवौ, सो किताक छोटां-मोटां रा गांव जबत है सो पाछा बाल[1] करावण री भांझगड़ हुई[2], सो लिष देण रौ हुकम फुरमाय दीयो।[3]

काती वद ९ मांजी श्री बड़ा भटीयांणीजी नै षेद[4] दीन १५ आई। सो आज जादा दबाव में आयां रा[5] समाचार मालम हुवा तरै श्री हजूर सा उणी बषत श्री माजीसा कनै पधारीया। घड़ी दोय-तीन बातां हुई। श्री हजूर अरज करी कै आपरे कोई कांम हुवै तथा कीणी री भोळावण देणी हुवै तो फुरमावौ? तरै फुरमायौ—मुलक मारवाड़ री रईयत नै सिरदार, मुसदी वगैरे री प्रतपाळ[6] राषजो। पछै श्री हजूर साहब गांव १ पुन करायौ, दोय हजार उपजतां रो[7]। नै रोकड़ रूपीया जुदा कराया। पछै श्री माजीसा दिन दोढ़ पोर चढीयां देवलोक हुवा।[8] सो हलांणो[9] सदामंद मुजब हुवौ। नै दाग[10] पंचकुडां नाळा री बारी रै मारग होय हुवो। नै उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा पंचकुडां गया। नै दाग दे नै पाछा आयां पछै श्री हजूर साहब मांयलेबाग दाषल हुवा।

काती वद ११ नै दसतुर मुजब तियौ[11] हुवौ।

काती वद १३ आउवो, पोकरण रा ठाकुरां नै मौसर होय बतळावण हुई।

वद अमावस श्री माजीसा रा कांमदार छगांणी, संकरलाल, पनालाल, पंचोळी अंबाबगस, विरदभांण नै नोरा में ही कैद कर दीया। नै उणां रै घरै चौकीयां बैठी[12]।

---

1. बहाल 2. जोड़-तोड़ 3. आदेश का हुक्म दे दिया 4. बीमारी 5. अधिक गंभीर हो जाने के 6. प्रतिपालना, कृपा 7. दो हजार वार्षिक आय का गांव पुण्य किया 8. मृत्यु हो गई 9. मृतक को दाह-क्रिया के लिये ले जाने का रिवाज 10. दाह-क्रिया 11. मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला कृत्य 12. सरकारी पोहरे की व्यवस्था हो गई

और अजंट साहब हाथी ऊपर बैंस दीवाळी री रोसनी देषण नै सिरे बजार होय गुलाब सागर तांई गया सो पाछा रात पौर गयां सूरसागर गया । नै दिवाळी रो दरबार मांयलावाग मांयली बगेची रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ । रात घड़ी ३ गयां श्रीजी साहब बारै पधारीया, सात घड़ी रात गयां पाछा मांय दाषल हुवा ।

संमत १९०८ रा काती सुद १ अजंट रो वकील म्हेता विजैमल नै कीलादार अनाड़सिंघ इणां दोनु जणां नु अजमेर मालकम साहब कनै कांम रे मुदै मेलीया ।

सुद २ अजंट हाटकासल साहब आया । बगेची में विछायत हुई, जठै विराजिया । घड़ी दोय-तीन साहब सु इंकत बतळावण हुई । नै साहब गयां पछै पोकरण रा ठाकुरां नै घरां री सीष रो मुजरौ हुवौ ।

काती सुद ६ श्री माजीसा रो औसर[1] हुवौ नै रसालो[2] जिमीयो, नै षांड मण ३००) गळी । नै कांमेतीयां नै हाजर जांमनी ले सीष हुई ।

काती सुद ७ अजंट साहब री मिजमांनी हुई । मांयलेवाग में महाराज कंवार विराजै जठै विछायत हुई । जठै विराज घड़ीक साहब सु बतळावण हुई । पछै साहब उठा सु बगेची में गया सो उठै षांणो षायौ नै तायफां रो नाच हुवौ नै आतसवाजी छूटी । पछै श्री हजूर बगेची में पधार अंतरपांन कर सीष दोवी ।

काती सुद १२ मुसलमांनां रै ताजीया था सु ताजीया दीठ रू० ५) श्री दरबार सु दिरीजीया ।

सुद १३ षीची उमेदकरण री हवेली षीची तेजमाल री मातमपोसी करावण नै असवारी पधारी । नै हाटकासल साहब मांयलावाग में आया सो घड़ी दोयेक इंकत बतळावण होय सीष हुई नै पछै श्री हजूर री असवारी बाळसमंद पधारी ।

संमत १९०८ रा मीगसर वद २ श्री हजूर री असवारी कायलांणे पधारी । नै अजंट साहब देईजर गया नै दिन चार हुवा था सो आज पाछा आय

1. मृत्यु-भोज　2. डावड़िये नौकर चाकर आदि

कचेड़ी कर नै पाछा देईजर गया। नै वद ३ नै गांव विसलपुर हवा षावण नै गया। अर विकानेर रा डाकदर री मीम[1] पीण साथै थी।

वद १२ श्री हजूर साहबां री असवारी गढ़ दाषल हुई।

संमत १९०८ रा मिगसर सुद ६ श्री हजूर री असवारी आउवा रा ठाकुर री ठकरांणी षंगारोत चल गई[2], तिण री मातमपोसी करावण नै हवेली पधार षंगारोत री मातमपोसी कराय नै उठै हीज दूजा डेरा में षारड़ा रा ठाकुर री मातमपोसी कराई। नै फेर दूजा डेरा में कांकांणी रा ठाकुर री मातमपोसी कराई। पछै उठा सु जैतारण रौ गांव देवरीया रा ठाकुर रै षोळै अेमदनगर रा उदावत उदैसिंघ नै दियौ जिण री हवेली मातमपोसो करावण पधारीया।

मिगसर सुद ११ आउवा रा ठाकुर नै फतैमैल में मौसर होय घड़ीक बतळावण हुई। पछै नगर री तरफ सु म्हेता मणीसंकर नै बारठ बिंजो ब्याव मुदे[3] आया था तिणां नै आज सीष हुई।

सुद १२ वाभीजी श्री रांणावतजी काळ कीयो[4] सु पंचकुंडां दाग हुवौ।

संमत १९०८ रा पोस वद १ आठ सिरदारां रा कामेतीयां नै मौसर होय संमत १९०७ री रेष रा रूका लिषीजीया।

वद १० श्री वाभी रांणावतजी रौ कारज जुनीवाल में हुवौ। मीठाई रो रसालो जिमीयो।

वद ११ आउवो, रोयठ रा ठाकुरां नै फतैमैल में मौसर होय घड़ी तीनेक बतळावण हुई।

संमत १९०८ रा पोस सुद १ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणे पधारी, साथै महाराज कंवार नै अजंट साहब था।

सुद २ कायलांणा सु असवारी गढ़ दाषल हुवा। नै दिवांणगी म्हेता विजैमल रै हुई। सिरदारां री जुथा बंदी हुई, जिणां नै फांट बिषेर दीया[5]

---

1. पत्नी 2. मर गई 3. विवाह के सम्बन्ध में 4. मृत्यु हो गई 5. अलग-अलग कर दिया

नै तेईस कलमां में वाजब कलम थी सो तो कराय दिवी बाकी री मुलतबी[1] राष दिवी । तिण बंदगी सु हुई[2] नै दुपटो इंनायत हुवौ ।३२

और सिंघवी फौजराज रौ कांमेती सिं० जसरूप नै सवाईरांम फतैपोळ रौ अळटो दे कैद करायो तिण नै सीष हुई ।

पोस सुद ४ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणे पधारी सो पाछी सुद ७ गढ़ दाषल हुवा ।

और अजंट करनेल रजवंट सर सषसपीर साहब आज गवालेर सु आया तिणां री पेसवाई में दीवांण म्हेता विजैमल बषसी सिंघवी फौजराज सिंघवी कुसलराज नै आउवा, रोयठ रा ठाकुर सेषावतजी रै तळाव सु पांवंडा २०० पैली तरफ तांई गया ।

सुद ६ अजंट सर सषसपीर साहब गढ ऊपर आया । नै हाडकासल साहब ने बीकानेर रो डाकदर साहब आसकरण पीण साथै थां सो श्री हजूर साहब पेसवाई में तांमजांम[3] में विराज चुवांणां री साळ तांई सांमा पधारीया, उठै मुलाषात हुई । साहब टोपी उतारी पछै साथै-साथै ऊपर पधार फतैमैल में विराजीया । घड़ीक बतळावण होय अंतरपांन होय सीष हुई । नै हाटकासल साहब नै बीकानेर रो डाकदर साहब आज सीष कर चढ़ीया ।

सुद १३ श्री हजूर साहब री असवारी सूरसागर पधारीया । सो अजंट सर सषसपीर साहब जोसीयां री बगेची तांई सदामंद मुजब सांमा आया ।

उठै मुलाषात कर साथै-साथै सूरसागर पधार उठै घड़ी दोयेक विराज, सोषीयात वातां कर, पछै उठा सु असवारी हुई, सो किले दाषल हुई ।

संमत १६०८ रा माह वद १ अजंटी री वकीलायत रो दुपटो आसोपा उतमरांम नै हुवौ । नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी रो नांवो पटा में धरीजण[4] रो हुकम हुवौ ।

वद ६ अजंट साहब वकीलां नै कयौ—हम नवेनगर होय आबुजी जावेंगे, सो चढीया । सो बणाड़ विसलपुर होय निबाज गया । ठाकुर कोसेक सांमा

1. रद्द 2. इस कार्य के करने से दीवानी प्राप्त हुई 3. विशेष प्रकार की पालकी
4. जमीन आदि के जो भी पट्टे लिखे जाते उनमें महाराज कंवर का भी नाम तखतसिंह के साथ लिखे जाने के आदेश हुए

आया, कोट में गया नै जाफत[1] हुई। पछै साहब तो डाक में नवेनगर बड़ा साहब कनै गया नै अमलो[2] बर रयौ। पछै दोनूं साहब उठां सु रायपुर गया सो हाथियां ऊपर बैस कोट में गया। नै पछै डेरा चंडावळ हुवा। ठाकुर पेसवाई में कोस दोढ तांई आया। पछै उठा सुं सोझत डेरा हुवा। हाकम कोटवाळ पेसवाई में सांमा गांव षोषरा तांई आया। पछै उठा सुं पाली आया नै उठा सुं दरकूचां डेरा अेरणपुर री छावणी हुवा नै तोपां री सीलकां १३ हुई। मुकांम च्यार हुवा पछै बड़ा साहब तौ उदैपुर कांनी गया नै अजंट साहब आबूजी फागण वद ७ नै पूगा सो महीनो १ ऊपर रया। पछै दरकूचां जोधपुर संमत १९०८ रा चैत वद १३ आया सो सूरसागर दाषल हुवा, मास २ दिन ५ सुं आया।

माह वद ७ श्रीजी साहबां रौ व्याव जांमनगर हुसी सो तीन फेरा तो जांमनगर षांडा सुं होसी। सो षांडा री असवारी जांमनगर जावसी[3] सो आज डेरा जाळोरी दरवाजा बारै हुवा।

वद ९ आउवा रा ठाकर नै मौसर होय बतळावण हुई।

संमत १९०८ रा माह सुद २ राषी रा नै आहोर रा ठाकुरां नै मुंदीयाड़ रा बारठ चैनसिंघ अना सिंघोत जांमनगर षांडा री असवारी साथै जावण रौ मुजरो हुवौ।

संमत १९०८ रा फागण वद—श्री जाडेचीजी रो डोळो जांमनगर सुं लावण सारू षांडा री असवारी हुई नै साथै नाजर हरकरण नै ३ अणदरांम भं० सिरीचंद ३६ कारषांनां साथै गया जिणां रै घर रौ..........आदमी ठावौ[4] साथै गया। आदमी ५०० आसरे[5] री भीड़-भाड़ सुं गया।

फागण सुद ५ श्रीजी साहब री असवारी कायलांणे पधारीया सुं पाछा फागण सुद ९ गढ़ दाषल हुवा।

फागण सुद ११ षोड़ रा रास धारीयां रो रास रो तमासो दौलतषांना रा चौक में हुवौ। और श्रीजी साहब बिचला मैल में जनाना स्हेत विराज नै देषीयो नै रू० १००) ईनांम रासांदा[6] नै दिरीजीया।

---

1. आवभगत 2. कर्मचारी वर्ग 3. दूल्हे के स्थान पर उसका खांडा (तलवार) जांमनगर जायेगा 4. प्रतिष्ठित 5. अनुमानित 6. रास का तमासा करने वाले लोग

फागण सुद १३ डंडीयां री गैर जलूसी दौलतषांना रा चौक में हुई। रात पौर १ गयां गैर सरू हुई। श्रीजी साहब ऊपर सु पदार भोजनसाळ में विराजीया, नै गैर निजर गुदराई। पछै आप पोसाक पहेर रमीया। आदी रात आयां गैर बोत रही।

फागण सुद १४ होळी रौ दरबार दौलतषांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ, दुपटौ स्हेली पधरीजीया, तिलक आरती हुई। निजर निछरावळ हुई। नैं पछै दरबार बोड़ पांतियो फतैम्हैल में हुवो, जठै पधार पांतीये विराजीया। नै रात घड़ी ६ गयां श्रीजी साहब पांतिये सु उठ सारां नै सीष दीवी नै आप मांह पदारीया।

समत १९०८ रा चैत वद ५ असवारी फाग री षुले षासे रूपे[1] रा में विराज फतैपोळ रै रस्ते सिरे बजार होय मांयलेवाग दाषल हुय कंवळ चौक में हवद भरीयो थो जिण में मुतसदीयां नै आपस में फाग रमाया। नै पछै वगेची में विछायत हुई, जठै विराज आसो अरोगीयो। षवास, पासवांनां नै जीमाया नै पिंडां पिण तासली पधराई[2]। छोटा दरजे वाळा रसोड़े जीमीया। नै पछै असवारी गोळ री घाटी रै मारग किले दाषल हुई।

चैत वद ८ सील और घुड़ले रो मेळो तलेटी रा म्हैंला कनै हुवौ सो माहाराज कंवार घोडां चढ़ देखियो।

चैत सुद ३ अठा रा अजंट. सर सषसपीर साहब परभात रा आबूजी सु आया जिणां रै सांमा दिवांण बगसी वगैरे सदामंद माफक गया नै साहब ने सूरसागर पोछाय पाछा आया। नै श्री गवरमाता री असवारी पांणी पिवण मांयलेवाग पधारी। नै सेहर रा गवर ईसर भी उठे आया। नै गढ ऊपर सु माहाराज कंवारां री असवारी पिण मांयलेवाग पदार मेळो देष पाछा गढ़ दाषल हुवा।

चैत सुद ४ अजंट सर सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया जिणां रै पेसवाई में पिंडां फलसा[3] रै बारै तांई पधा(धा)रीया। पछै दौलतषांना रा चौक में ३ घड़ी वीराजीया, वतळावण हुई। पछै अंतरपांन कर सीष हुई।

---

1. चांदी के 2. स्वयं ने भी भोजन किया 3. जोधाजी का फलसा

चैत सुद ८ गवर री असवारी वोलावणी री गुलाबसागर हुई। और श्री हजूर साहबां री असवारी मेळो देषण पधारी। सो पैली निज मिंदर में पधार भेंट निछरावळ कर पोळ ऊपरला बंगला में कुरसी पधरीजी जिण ऊपर वीराजीया। नै मेळो निजर गुंदरायो। नै गवर री असवारी पाछी पधारीयां रै बाद हजूर साहब गढ़ ऊपर पधारीया।

संमत १६०८ रा वैसाष वद २ अजंट सर सषसपीर साहब आया। सो म्हेल देषाया श्रीजी साथै पदार[1]। ईण मुजब म्हेल षाबका, अभै विलास, काच म्हैल, फूल म्हैल, फतै म्हैल, दौलतषांनो, सरद म्हैल, पुस्तक प्रकाश रो म्हैल सारा दीषाय पुस्तक प्रकास रा चसमा में ऊब[2] साहेब बादर नै सीष दे मांय पधारीया।

वैसाष वद ३ जांमनगर सूं श्रीजी साहब रा व्याव[3] री सरभरा[4] गांव मोगड़े करावणी जिण मुदे माहाजन रो सीमांनो ने धनरूप आया, जिणां नै फूलम्हैल में मुजरो हुवौ। नै षलीतो मालम कीयो। नै सरभरा करावण रै वास्ते अठा सुं भलो आदमी मेलण री अरज करी। तरै जोसी सिवनारांण नै म्हैलीयो।

वैसाष वद ४ गुरवार श्री हेजूर साहबां रै माहाराज कंवार रांणीजी श्री तुंवरजी केलावा वाळां रै जन्मीया दिन उगतां आसरे। तोपां रा तीर १०५ हुवा नै वाकी उछव दसोटण[5] वगैरे रा जनांनी दोढी क़ायदे मुजब हुवा।

वैसाष वद ६ सर सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया। कितीक वार तो कांमेतीयां सांमल वतळावण हुई नै पछै ईकंत बतळांवण कर सूरसागर गया।

वैसाष वद '' (अमावस) आषा तीज रो अमल[6] भोजनसाळ में गळीजीयो। सो उमरावां रा कांमेती मुतसदीयां री मनवार हुई। नै षार भंजना[7] रो मेवे रा थाळ गुळ वगैरे रसोड़े सुं आवै सो दिरीजे, सो दिन ४ तांई लगोलग औ उछव रहै।

---

1. दरबार ने साथ चलकर महलों का अवलोकन करवाया 2. चश्मे पर खड़े रह कर 3. शादी 4. स्वागत, उत्सव 5. जन्म के दसवें दिन मनाया जाने वाला उत्सव 6. अफीम 7. अफीम की कड़वाहट मिटाने के लिये सामग्री

संमत १६०८ रा वैसाष सुद ३ आषातीज रो दरबार दौलतषांना रा चौक में हुवौ। दुपटा सहेली पधरीजीया। तिलक आरती हुई। पछै दरबार बोड़ फतैमैल रा चौक में पांतीयो हुवौ, जठै पांतीये विराज अरोगीया। नै उमरावां नै जीमाया। पछै उणां नै सीष दे मांय पधारीया।

बैसाष सुद ७ श्री हजूर साहबां रो व्याव जांमनगर सूं डोळो आय हुसी, जिण रै समुरथो[1] वीनायक रो हुवौ।

सुद ६ जांमनगर सुं जाड़ेचीजी रो डोळो लेण नै नाजर हरकरण गयौ थो सुं फेरा ३ षांडे सु जांमनगर सदामंद सरसते षवाया। नै पछै उठा सुं डोळो लेनै गांव मोगड़े आया, सो गांव मोगड़े सरभरा हुई। जिण सुं मोगड़ो जाडेचीजी नै पटे दे दीयो[2]। नै मोगड़ा में सरभरा इण मुजब हुई। अवल तो पांणी रो तासो[3] थो नै वेरा ऊपर षेळो कोठा मजबूत न्हीं था सो दुरसत कराया। नै १ हवद गांव सुं ऊगुण त्रफ (तरफ) पक्को बंदाय ५००० आदमी पीवे जिसो कराय गुड़े वगैरे गांवां सु वांणा[4] मंगाय भरायौ। नै ऊपर संभाळ वीरांमणां री उजळाई[5] सु राषी थीं, सो हाल हवद मौजुद है।

वैसाष सुद १० श्री हजूर साहब जोधपुर सुं जांन वणाय पधारीया सो रात पोर १ गयां काच रै षासे विराजीया, केसरीया पाग नै जांमो धोरांदार, मौड़ वांदीयो, सिरे बजार हुय्य जाळोरी दरवाजे बारै पधारीया। नै दरवाजा सुं बगी वीराज मोगड़े डेरां पोथा[6]। रात रा गरड़गाज[7] वीजळीयां हुई। पछै सुद ११ शुक्रवार रो ब्याव हुवो। सों डेरा सुं परणीजण पधारीया। तरै हाती रै हवदे मोड़ वांद विराजीया। नै षवासी में आहोर ठाकुर जसवंतसिंघजी बैठा। नै पछै परणीज नै तुरत माहाडोळ में विराज जनांना सहेत डेरां दाषल हुवा। और असवारी रा लोक जानोवासा वाळां नुं जीमण लाफसी मण ३०) री हुई। बाकी रां रै कोरा सीदा तुलीजीया[8]। लोक कुल हजार १०,००० तथा १२,००० आसरे थो। अर कोटड़ी में मेलापत २ म्हीनां पैला तायार करा लीवी थी। और लोक सोंवठो[9] भेळो हुवौ थो सु हवद तो

1. मुहूर्त 2. जाड़ेची रानी के हाथ खर्च तालके इस गांव का पट्टा कर दिया गया 3. कमी 4. बैलगाड़ियों पर बरतन भरकर पानी मंगाने की व्यवस्था 5. पवित्रता 6. पहुँचे 7. बादलों की साधारण गर्जना 8. साधारण भोजन की सामग्री तोल कर दी गई 9. बड़ी संख्या में

त्यार कराय लीयो तांई पांणी री षंच रेई[1], तरै पषालां गांव सालावास, नंदवांण, मोगड़ो वगैरे सु सरू कराय दीवी, सु मांगीया जीतरा[2] दांम दीया सु पांणी री पैल हुई[3] नै जाँन री तथा जाड़ेचां रै कांम जीमण भांत वगैरे री भोळावण जोसी प्रभुलाल नै हुई।

वैसाष सुद १२ जांनीयां रै दूजो भात षांड रा सीरा रो मण ७२) रो हुवौ। जिण में मण ६०) रो तो पहेली नै मण १२) रो लारै सु हुवौ। और जीमण नै नहीं आया जीणां नै पेटीया जोसी प्रभुलाल हस्ते दिरीजीया। आदमी दीठता षांड ।, घ्रत '। मैदो '।। आटो '।। रुको ले नै आवे जिणनै जोसी प्रभुलाल जितरा आदमीयां रौ रुको हुवै सो फी आदमी दीठ ऊपर लीषीये मुजब देवै। अर जाड़ेचा वड़ी हमगीरी सु जोसी प्रभुलालजी नै कैवे कै जांनी मांगे जिण मुजब दीया करावे। कोई बात री षंच नहीं रहे[4]। सारो कांम आपरे भरोसे है। रू० १) लागे जठै २) लगायां दीयां करसी प्रंत जस आवे जीहु करसां।[5]

वैसाष सुद १४ तीजो जीमण मीठाई रौ हुवौ। जिण में षांड मण १६०) री मीठाई हुई। जांनी आछी तरै सु जीमीया। जाडेचां नै जस चोको[6] आयौ। पछै रात रा मोगड़े सु घोड़े असवार हुय पधारोया। नै श्री जाड़ेचीसा माडोळ में वीराज प्रवारा बाळसमंद पधारीया।

वैसाष सुद १५ असवारी जनांना म्हैलां री षुसी मुदे मौसर नाजरां स्वाय (सिवाय) किणि नु न्हीं देवे।

संमत १९०८ रा जेठ वद १ अंगरेजां रै वीरमा[7] रै मुलक में फतै हुई जिण रै षुसी री तोपां री सिलकां २१ हुई।

जेठ वद २ श्री हुजूर साहबां री असवारी बाळसमंद सू आपने जाडेचीजी माहाड़ोळ में विराज मेड़तीये दरवाजे हुय तीजा पोहोर आसरे सिरे बजार छड़काव कराय सेहेर सीणगराय[8] जलूसी असवारी सु पदारीया। नै २ घड़ी रात गयां किले दाषल हुवा। तोपां री सिलकां १२२ हुई।

---

1. पानी की कमी रही 2. मुंह मांगे 3. पानी की इफरात हो गई 4. किसी तरह की कंजूसी नहीं रहनी चाहिए 5. जैसे यश मिले वैसे ही करेंगे 6. अच्छा 7. बर्मा 8. शहर को सुसज्जित करा कर

जेठ वद ८ चारण भोपालदांन भादराजण ठाकुर ऊपर कटारी बाई थी जिण बाबत कैद थो जिण री वीगत तो लारै श्राय गई थी, जिण नै सीष हुई ।

जेठ वद ९ जाड़ेचीजीसा रै पीहर वाळां दायजो बीजनस सिरे बजार हुय किले ऊपर ले गया तिण री वीगत—

हाती नग ३
घोड़ा १६
सोना रूपा री सागत[1] रा
गायां २१
भैंसीयां मोटी भुज कनी[2] री २१
जळेबी गटा सींगां[3] री
सांडीया तथा ऊंठ २१

श्रौर गेणौ कपड़ो दोवड़ा तेवड़ा जवार सोना रूपा रा वासण वगैरे माल २ तथा ३ लाख रौ सुणीयो श्रौर श्रीजी साहबां रै ब्यांव रै कुसी री मिजमांनी श्रजंट साहब नै दीरीजी सो रसोड़ा सूं जिनस[4], नै श्रासा रा गोटका[5], नै फूलां री छाबां नै कपड़ा रा कोठार सुं श्रंतर नै श्रन रा कोठार सुं मीठाई मेवो सूरसागर मेलीजीया ।

जेठ वद १० मेह चोषो हुवौ[6] । नै नगर रा जाड़ेचा जालमसींघजी वगैरे री श्राज मिजमांनी हुई, सो रसोड़े जिनस त्यार कराय नै उणां रो डेरो मांयलेवाग थो जठै मेरां साथै मेलीजी ।

जेठ वद १२ श्री हजूर साहबां री श्रसवारी छैल वाग तरफ षासे विराज पधारीया । कंवर ५ साथै पदारीया । पाछा तुरत श्रेकल हाती विराज उणी मारग पधारीया ।

संमत १९०८ रा जेठ सुद १ नगर रा जाड़ेचा जालमसिंघजी री मिजमांनी गढ़ ऊपर हुई । सो पैला तो दौलतषांना रा चौक में विछायत हुई जठै ईणां नै मुजरो हुवौ । नै १ घड़ी षातर सुंपी वतळावण हुई । पछै श्रीजी

1. घोड़े का गहना 2. भुज प्रान्त की 3. जलेबी नुमा मुड़े हुए सींगों की 4. सामग्री
5. श्रासा नामक शराब से भरे पात्र 6. वर्षा श्रच्छी हुई

साहब तो ऊपर पदार गया। नै फूलम्हैल रै ड़ागळै पांतीयो हुवौ[1] जठै श्रीजी साहब ही पदारीया नै उणां नै ही बुलाया। श्रीजी साहब ही पांतीये विराजीया। नै जालमसिंघजी नै कनै[2] बैठाय जीमाया। पछै रात आदी रा इणां नै सीष हुई।

जेठ सुद ३ मारोठ री हाकमी लाला दौलतसिंघ रै हुई।

जेठ सुद ६ तथा ७ अजंट सर सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया। १ घड़ी ईकंत बतळावण हुई।

जेठ सुद ९ वरसगांठ रौ समोरथो सदामंद मुजब गढ़ ऊपर हुवौ।

जेठ सुद १२ आसोप ठाकुरां नु अजंट साहब कही कै तुमारै कांमेती वासणी के ठाकर करणसिंघ का भाई सांवतसिंघ है सो ये फिसाद की जड़ है सो इसकु मोकुब करो[3]। अर दूसरा आदमी मुकर करो सो आ बात ठाकुर मांनी नहीं।

जेठ सुद १३ श्री हजूर साहबां री वरसगांठ रो उछव नै दरबार सदामंद मुजब हुवौ। नै तोपां री सिलकां ३३ ऊपर मुजब छूटी।

जेठ सुद १५ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया सो घड़ीक ईकंत बतळावण होय सीष हुई।

संमत १९०८ रा असाढ़ वद १२ श्री हजूर जनांना समेत रांणीसर री सैल करण[4] पधारीया सो वद १३ श्री रांणावतजी सा री गोठ हुई। नै जिनस री तयारी श्री बड़ा भटीयांणीजीसा रै नोरा में होय उठै सारा जीमीया। नै नोबतां चारू तरफ बैठी, नै षुसो हुई।

असाढ़ सुद २ आयसजी श्री पीरागनाथजी उदैमिंदर में मांदगी पाय देह छोड़ी।[5]

और छांगाणी रावत नु बाईजी श्री सिरेकंवर बाईजी जैपुर महाराज श्री जगतसिंघजी नै परणाया जिणां रा कांमदार नै दुपटो इंनायत हुवौ।

---

1. फूल महल की छत पर भोजन की व्यवस्था हुई 2. पास 3. हटा दो 4. आनन्द लेने 5. बीमारी भुगत कर देहान्त हुआ

असाढ़ सुद ५ महामींदर रो कांमदार मु० जसरूप तिणरौ विसटाळो[1] षीची उमेदकरण री मारफत परबारो ठेर नै उणरा बेटा परतापमल नै मुजरो हुवौ। नै अजंट साहब गढ ऊपर आया सो घड़ीक साहब सु बतळावण हुई।

असाढ़ सुद ६ लांबीयां नै राषी रा ठाकुरां नै मौसर होय घड़ीक बतळावण हुई।

और पटीयाळा रा सिख नरेंद्रसिंघ जिणरी बेटी रो व्याव धौलपुर रो राजा भगवंतसिंघ रा बेटा नै परणाई, जिणरो फारसी षलोतो ले नै पंचोळी लालो ज्वालाप्रसाद नै विरांमण व्यास मुथरादास आया। तिणां नै मुजरौ आसीरवाद हुवौ। इंणां ऊभां-ऊभां अरज कीवी। पछै सीष कर डेरे गया।

असाढ़ सुद १२ गुसांईजी महाराज श्री ब्रिजनाथजी श्री ब्रिजाधीसजी महाराज रै षोळे[2] श्री बालकीसनजी रै मिंदर विराजीया जिणां रै जांमनगर में पिण मींदर आजीवका है जिके हमार अठे पधारीया तिणां री जांमनगर वाळा रे डेरे पधरावणी हुई[3] मांयलावाग में। सो हाथी रै हौदे विराज लवाजमा सु पधारीया। तिणां रै भेंट रू० २०००) तो रोकड़ तथा माल आयो।

सुद १४ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया सो घड़ीक वतळावण हुई, पछै सीष हुई।

असाढ़ सुद १५ चंद्र परब[4] थो सो दांन श्री दरबार सु इण मुजब हुवौ—

रोकड़ रू० २०००)
घोड़ो १
गायां १० नै
पोसाषां २

संवत् १९०९ का विवरण

संमत १९०९ रा सांवण वद १ गोढवाड़ री हाकमी आसोपा हिरदेरांम उत्तमरांम रा भाई रै हुई।

---

1. आपसी समझौता वार्ता 2. गोद 3. सम्मान सहित गोस्वामीजी महाराज को अपने स्थान पर बुलाकर भेंट आदि देने की रश्म की 4. चंद्र-ग्रहण

सांवण वद ५ पटीयाळा रौ वकील बेटी रा व्याव रौ षलीतो लेनैं आयौ तिण नें सीष हुई, नै सिरपाव हुवौ ।

वद ७ षास हवाला रा गांवां रा तषतां री वदळी हुई । प्रगने नागौर रा गांव जोसी प्रभुलाल तालके, जोधपुर रा गांव भंडारी सिरीचंद तालके, मेड़तो परबतसर दौलतपुरो म्हेता प्रतापमल तालके, फळौधी पं० भीनालाल पटानवेस तालके नै केईक फुटकर गांव अैमदनगर रो देसाई सांकलचंद तालके हुवा । सो उणरा मुढा आगे[1] कांमेती भं० बादरमल रो भाई पचांणदास नै राषीयो ।

सांवण वद ९ अजंट सर सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया । घड़ी दोयेक बतळावण हुई नै आबूजी चढण री सीष करी सो वद १० नै आबुजी चढ़ीया । सो पाछा दिन ३३ नै आवसी सो दफतर अमलो[2] अठै हीज राषीयो नै साथै मुनसी फजररसूल नै ले गया ।

सुद ८ चोपासणी रा गुसांईजी श्री क्रिस्न जिवणजी महाराज गढ़ ऊपर श्री मुरली मनोरजी रा दरसण करण नै पधारीया ।

सुद १० श्री महाराज कंवार सातू ही चोपासणी श्री गुसांईजी महाराज रा नांव सुणण[3] नै पधारीया ।

सुद १४ दिवांणी अदालत में व्यास सुरतरांम नै भं० सिरीचंद दरोगा था तिणां री अेवज[4] भं० गेवरचंद नै पींडत जैतरूप हुवा ।

संमत १९०९ रा प्रथम भादवा वद ४ मेह हळबाव[5] आज सारा मुलक में हुवौ । नै आज पैली[6] हळ मुलक में षड़ा हुवा न्हीं ।

प्रथम भादवा वद ५ नागपांच[7] रो मेळो देषण नै श्री महाराज कंवरां री असवारी मंडोर नै पधारी ।

वद ८ श्री हजूर साहब कांयलांणा सु चोपासणी दरसण करण नै छड़ी असवारी[8] पधारी सो आगे श्री ठाकुरजी रौ जनम उछव हुवां पछै श्री गुसांईजी महाराज जसोदाजी वण नै[9] श्री ठाकुरजी रा मुढा आगे निरत

---

1. सहायक 2. कर्मचारी वर्ग 3. धार्मिक गुरु से गुरु मंत्र ग्रहण करने गये 4. बदले में 5. हल चल सकें उसके लिये पर्याप्त वर्षा 6. इसके पहले 7. नाग पंचमी 8. बिना लवाजमे के 9. यशोदा का रूप धारण कर

करता था। जिणां रै पगां में रूपा[1] रा सांकळा था सो तो श्री हजूरसा हाथां सु काढ लीया नै सोना री साटां[2] आपरा हाथ सु पैराय दिवी।

सुद १० मु० जेठो अैमदनगर रो कायलांणा सु रेषळे[3] बैस सैर में आवतो थो सु विरषा घणी हुई। बाळो जादा बैतो थो[4]........................ सो रेषळो षड़ दीयो[5] सु बळधां[6] रा जोत तुटणगो[7] नै आप बै सो प्रवात रा.................................. ।

सुद १४ स्हापुरा[8] सुं कवीयो वदनदांन आलासं वाळो नै कोठारी हंसराज षलीतो लेनै आया। जिणां नै मुजरो होय निजर निछरावळ कायलांण हुई नै कपड़ो षलीतो लाया सो निजर गुदराया नै घड़ीक बतळावण हुई।

संमत १६०६ रा दुतीक भादवा वद ४ अजंट सर सषसपीर साहब आबूजी सुं आया तिणां री पेसवाई में सदामंद मुजव दिवांण बषसी गया।

वद ७ अजंट सर सषसपीर साहब कायलांणे श्री हजूर में आया सो मांयली पोळ रै अगाड़ी साळ में विछायत हुई जठै विराज घड़ीक वतळावण हुई। पछै उठा सुं ऊठ बारै म्हैलां रै लारली कांनी नवा पठा हुवा सो साहब नै दिषाया। पछै श्रीजी साहब तो मैलां में पधारीया नै साहब रै डेरो षड़ो करायो जिण में साहब रै षांणो तयार करायो सु षायो सो पाछो लारले दिन घड़ी २ रयो तरै सूरसागर गया।

दुतीक भादवा वद १० तथा ११ दोय दिन लगती विरषा मूसलधार हुई। जिण सुं सारा तळाब ओटे आय गया। नै झड़ दिन २१ रयौ। नै नदी लूणी दिन १० तांई षड़कांपूर[9] बूही, उतार दियो नहीं।[10]

वद १२ श्री हजूर साहबां रो असवारी बाळसमंद दाषल हुई। नै ठाकुर पोकरण रा नै बुलावण रो षास रूको इनायत हुवौ।

वद १३ तथा १४ असवारी बाळसमंद सुं गढ़ दाषल हुई।

1. चांदी 2. स्वर्ण का बना हुआ पैर में पहनने का आभूषण 3. एक प्रकार का तांगा 4. पानी का वहाव अधिक था 5. बहते पानी में चला दिया 6. बैल 7. बैलों के गले और तांगे से बंधी रस्सी टूट गई 8. शाहपुरा 9. लबालब भरी हुई 10. पानी का स्तर कम नहीं हुआ

संमत १९०९ रा दुतीक भादवा सुद ८ आयसजी श्री सुरतनाथजी रा बेटा बालनाथजी सुं छोटा बुधनाथजी काळ कीयो तिणां री बहू सत कियो[1]। निज मिंदर रा नोरा में समाद दिवी[2]। कोटवाळां व्हात सती न्हीं हुण री हुजत करी पिण मानी नहीं, नै समाध दे दिवी।

सुद १० श्री हजूर साहबां रा दुसमणां रै षेद जताई[3] तिण सु अजंट साहब नै कवाय डाकदर नै बुलायो सो हाजर होय दवा री पुड़ीयां दे गयो।

सुद ११ श्री ठाकुरजी री रेवाड़ीयां जुलण नै तळाव गुलाबसागर ऊपर पधारी। नै महाराज कंवारां री असवारी पिण मेळो देषण नै पधारी।

सुद १२ कम वेस[4] श्रीजो रा दुसमणां रै षेद थी सो मुनसी फजररसूल सुष पूछण नै अजंट साहब री तरफ सुं आयौ।

सुद १५ अजंट साहब मुनसी फजररसूल नै साथै ले गढ़ ऊपर आया नै सती नहीं होण री मिसल लेनै आया नै तकरार सी कीवी।

संमत १९०९ रा आसोज वद १४ नाजर हरकरण, सालगरांम नै नागौर मैलां री मरमत ताकीद सुं करावण मुदे मेलीया नै हुकम दीयौ—म्हे नागौर पधार सां सु मैल ताकीद सुं तयार करावजे।

संमत १९०९ रा आसोज सुद ४ सिरदारां नै षास रूका लिषीजिया। नागौर असवारी हुसी सु हाजर हुजो।[5]

आसोज सुद ७ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया, घड़ी तीनेक इंकत बतळावण हुई।

सुद ९ दसरावा रो दरबार सदामंद मुजब दौलतषांना रा चौक में हुवौ। नै पांतीयो फतैमैल में सदामंद मुजब हुवौ।

सुद १० श्री हजूर साहबां री असवारी जाळोर पधारण मुदे झींडो[6] बषतसागर रै ऊली कांनी षड़ो हुवौ। नै पछै नीमा सांम रा रांवण मारण नै श्री रामचंद्रजी री असवारी सदामंद मुजब हुई नै श्री हजूर हाथी रै होदे विराज

1. सती हो गई 2. समाधी दी गई 3. श्री हजूर अस्वस्थ हो गये 4. साधारण
5. हम नागोर आयेंगे सो तुम उपस्थित होना 6. प्रस्थान का झंडा

षवासी में आहोर ठाकुर बैठा। सो जलूस सु सिरे बजार होय जाळोरी दरवाजा बारै पधार रांवण मुवां पछै घोड़े असवार होय वाहीवाळ कर डेरां दाषल हुवा। पछै रात घड़ी छव गयां घोड़े असवार होय किले दाषल हुवा।

सुद ११ अजंट सर सषसपीर साहब अेरणपुर री छावणी जावै जिण मुदे श्री हजूर साहब मीलण नै सूरसागर पधारीया।

सुद १४ अजंट साहब श्री हजूर में आया। घड़ीक इकंत बतळावण हुई।

संमत १६०६ रा काती वद १ अजंट साहब अेरणपुर री छावणी कांनी चढ़ीया।[1]

काती वद ७ जनांनी असवारी नागौर पधारण मुदे सूरसागर दाषल हुई। नै श्रीजी साहब डेरां दाषल हुवा।

वद ८ जनांनी असवारीयां नै श्री महाराज कंवार री असवारीयां सूरसागर सू कूच नागौर कांनी हुवौ, तरै ईतरा जणा साथै गया, जिणां री विगत—

उमरावां में भषरी रो ठाकुर हरीसिंघ मंगळसिंघोत नै मुसदीयां में महाराव राजमल, मु० समरथमल, जोसी गंगाविसन, पणीयो दोढीदार सालगरांम, नाजर हरकरण, नवलरांम, ईलाईबगस।

श्री महाराज कंवरां साथै इण मुजब—
जावला रो ठाकुर नै नीबी रो ठाकुर। धायभाई देवकरण, नाजर सेजरांम, गुरां अगरचंद।

काती वद ६ षबर आई कै बड़ो साहब ज्यांन लुर साहब आबूजी सु अजमेर जावै तिण रै अेरणपुर री छावणी में तोपां री सिलकां १२ हुई।

वद १२ असवारी कायलांणे पधारी नै वद १३ नै पाछी किले दाषल हुई।

वद अमावस दीवाळी रो दरबार दौलतषांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ। नै पछै दफतर रै सांमली[2] साळां ऊपर आतसबाजी छूटी सो श्रीजी साहब

---

1. छावनी की तरफ विदा हुए 2. सामने की

भोजनसाळ में षुरसी ऊपर विराज निजर गुदरायो[1]। पछै फतैमैल में पांतीयो सदामंद मुजब हुवौ।

संमत १९०९ रा काती सुद २ षबर आई कै कलकता रो लाठ साहब विलायत बंद्र[2] में नाव दिलोजी नंनण[3] पूग नै मर गयो सो बड़ा साहब रा हुकम सु' अेरणपुर री छावणी में तोपां रा तीर ८० छूटा। नै उमर बरस ८० में थो। नै लाहौर री लड़ाई में बड़ी बादुरी कीवी थो सो अंगरेजी सिरकार में बड़ी तारीफ थी।

मु'० मुकनचंद ने दीवांणगी रो दुपटो हुवौ संमत १९०९ रा मिगसर वद १।

मिगसर वद २ श्री हजूर जाळोर पधारण मुदे डेरां दाषल हुवा।

वद ४ डेरा गांव मोगड़े हुवा।

वद ५ तथा ६ डेरा गांव रोयट हुवा। ठाकुर सुरतांणसिंघ अचलसिंघोत कोस २ तांई सांमा आया। पछै श्री हजूर कोट में पधारिया सो ठाकुर रू० २०००) नै घोड़ा २ निजर कीया। नै श्री हजूर ठाकुर नै सिरपाव इनायत कीयौ।

वद ७ श्री हजूर साहबां रा डेरा पालो झालर बाव ऊपर हुवा। असवारी हाथी रै हौदे हुई। षवासी में रास ठाकुर भीवसिंघजी बैठा। पाली रौ बजार सिणगारीयो[4]। सो असवारी सिरे बजार होय डेरां दाषल हुवा।

वद १० श्री हजूर षासे विराज पाली री कचेड़ी में पधारीया नै हाकम ओधादारां री नै सैर रा सेठ-साहूकारां री निजर हुई। सो श्रीजी हाथ सु' लिवी[5] जिण सु' महाजन[6] सारा राजी हुवा। निजर री विगत—

म्होरां १२५)) तोला
रूपीया ४०००) इण मुजब हुई।

मिगसर वद १२ पाली सू' कूच हुवौ सो गांव चांणोद वद १३ डेरा हुवा। ठाकुर कोस २ सांमा आया। सारी फौज री सरभरा आछी तरै हुई। नै श्री

1. निरीक्षण किया 2. बन्दरगाह 3. लंदन 4. पाली का बाजार सजाया गया
5. स्वयं अपने हाथ से नजर की रकम ग्रहण की 6. बनिये लोग

हजूरसा कोट में लारले दिन रा पधारीया। जीमण सीरो पुड़ी रो होय, जीमण वाळा सारा जीमीया नै नहीं जीमीया जिणां रै पेटीया[1] दिवांण रा रूका मुजब दिरीजीया। कोरी जिनस रा आदमी दीठ आटो '।।।, घिरत '।, षांड '।, दाळ '।।, चावळ '।। बेसवार[2] गरम मसाला सुधा जोधपुर रा तोल सु दिरीजीया। नै श्रीजी साहब तासळी कोट में पधराई। नै रू० ११,०००) रोकड़, नै हाथी १ मोटो बड़ी कीमत रौ, घोड़ा ३ जिण में दोय घोड़ा तो गुलदार कागड़ा नै घोड़ा १ पीळो पचकिलयांण, इण मुजब निजर कीया। नै और ही सरभरा आछी कीवी। जिण रौ ठाकुर नै जस चोषो आयौ[3]। पछै उठा सु कूच हुवौ सु जाळोर रो गांव चांदरायां डेरा हुवा।

वद " (अमावस) डेरा गांव आहोर हुवा। और अजंट सर सषसपीर साहब अेरणपुर री छावणी था सो श्री हजूर साहबां रा बुलावणा सु आहोर आया, अेक दिन पैली। सो श्री हजूर साहबां री पेसवाई में सांमा आया नै श्री हजूरसा घोड़े असवार था नै श्री हजूर में असवारी साथै सिरदार, मुतसदी, षवास, पासवांन इण मुजब था—

सिरदार—

१ आउवो कुसालसिंघ बषतावरसिंघोत
१ रायपुर माधौसिंघ रूपसिंघोत
१ षेजड़लो हिमतसिंघ सादुळसिंघोत
१ घाणेराव अजीतसिंघजी
१ भाद्राजण ईन्द्रभांण बषतावरसिंघोत
१ भषरी हरिसिंघ मंगळसिंघोत
१ षैरवे सांवतसिंघ दौलतसिंघोत
१ जांणोद जसवंतसिंघ तेजसिंघोत
१ रोयठ सुरतांणसिंघ अचलसिंघोत
१ दासपां रा ठाकुर रयण मेतावसिंजी
१ षोड़ रा ठाकुर
१ कुचांमण रणजीतसिंघजी रा पोता सेरसिंघजी नै
१ पोकरण रो कांमेती[4] भायल कुसालसिंघ और सिरदार सारां रा कांमेती, चांपावत सालमसिंघ

——

1. रसोई की सामग्री 2. मिर्च मसाले 3. ठाकुर को अच्छा यश मिला 4. कर्मचारी

ग्रायसजी श्री लिषमीनाथजी महाराज पिंडां,
वाभा[1] में सीवनाथसिंघजी

मु सदी-दिवांण—

मुकनचंद, बषसी सिंघवी फौजराज, जोसी सिवनारांयण, सिंघवी कुसलराज, म्हैता विजेमल, षांनसांमो सेठ नाथो, ग्रासोपा नथमल, भांनीरांम रौ रुघराम, ग्रभैरांम रौ वेणीरांम, सुरतरांम रौ हीरालाल, सवाईरांम रौ लादुरांम, बलरांम रौ जीतमल, कचरदास रौ मुनसी पं० चुनीलाल, पीटयाद बगसी व्यास गुलाबचंद, वोरो कीसनरांम, म्हे० जीतमल, षजांनची प्रोहित चिमनीरांम, व्यास कनीरांम, मु० समरथमल, म्हेतो छतरमल ।

षवास-पासवांन—

धांधल पीरदांन, षीची उमेदकरण, भायां सुधा[2], गैलोत छत्रसिंघ, सोड गुमांनसिंघ, दोढीदार सेसकरण, दरोगो प्रो० दोढीदार बषतावरमल ।

ग्रेमदनगर रा में—

गंभीरसिंघजी रांणावत, सोभावत उमेदकरण, कवराज वागो, पंवार धीरकरण ।

सिंध रा साहजादो[3] पीण साथै था ।

ग्रौर लोक, घोड़ा १०००, ऊंट १०००, हाथी ७, रथ १२, पींजस ७, पालषीयां ४, तांगा ऊंट १००, जाषोड़ा २५ जुमले भीड़-भाड़ ग्रादमी पांच हजार तथा छव हजार री थीं ।

संमत १९०९ रा मीगसर सुद १ ग्रजंट साहब ग्राहोर रा डेरां श्री हजूर में ग्राया । पेसवाई सदामंद मुजब हुई, नै बतळावण हुई । सो साहब नै श्री हजूर फुरमायौ—जाळोर हालणो पड़सी ।[4]

सुद ३ ग्राहोर रा कोट में श्री हजूर पधारीया । पैली मुसदीयां भांजघड़ ठाकुर रा कांमेतीयां सु कर निजर रा रू० १३,०००) रौ रुकौ महीना रा कौल सु लिषायौ नै घोड़ा २ निजर करणा ठेराया । नै हाथी १ निजर कीयो ।

---

1. रोवराजा 2. भाइयों सहित 3. सिंध का शाहजादा 4. जालोर चलना पड़ेगा

पछै श्री हजूर सु ठाकुर नै सिरपाव कड़ा १, मोती १, मोतियां री कंठी १, सिरपेच १, हाथी १, पालषी १ वगैरे इनायत कीया। नै ठाकुर री तरफ सु सरभरा हुई। परंत कांमेती कचा[1] जिण सु जस[2] नहीं आयो। पछै उणीज दिन आहोर सु कूच हुवौ सो डेरा जाळोर हुवा। गढ़ ऊपर तोपां री सिलकां १०० आसरे छूटी।

मीगसर सुद ४ नीमा सांम रा अजंट साहब श्री हजूर में आया नै सोषीयात[3] बातां हुई।

सुद ५ आहोर रौ कांमेती मु० जिवणचंद, आउवे रा ठाकुर कुसालसिंघजी नै जाय कही कै आप सारा सिरदारां में मुखी[4] हो सो म्हांरै कनै तेरै हजार रू० रो रूकौ जबरदसती सु लिषाय लीयो सो आपनै अजंट साहब सु पडुतर कर रूको पाछो दीरायो चाहीजे। तरै ठाकुर कही—म्हारै हाथ कांही,[5] अर म्हांसु तो दादाजी नहींतांई वेराजी है सो हुं तो थांरो पडुतर करूं नहीं। तरै जीवणचंद सफर में सिरदार था जिणां सारां सु मिळनै सारा कांमेतीयां नै साथै ले आउवे ठाकुर कनै आया। नै सारां ही मीळ नै कयौ—आप पडुतर नहीं करसो तो कुण करसी[6]। नै भायल कुसालसिंघ कही के ठाकुर वभूतसिंघजी[7] हुवै जद तो वे करै नहीं जद आप हीज करसो, दुजो कुण करसी ? तो ही पिण ठाकुर इनकार कीयो। जितेक षेजड़ले ठाकुर हिमतसिंघजी आय कैणो कीयो[8] कै आप पडुतर नहीं करसो तो मुलक सारो लुटीज जासी। नै गांव गांव रूपीयो ठैर जासी। ने आप पडुतर नहीं करो जिते आपरा डेरा सु अेक जणो ही जावां नहीं। तरै ठाकुर पाछौ फेर कयौ कै म्हारा सु श्री हजूर सा बेराजी होय जासी नै म्हारै टोटो नीकलसी[9] नै थांरौ कीं बिगड़े नहीं। तिण उपर ठाकुर हीमतसिंघजी नै भायल कुसालसिंघ वगैरे सारा कांमेती कयौ—सारा मुलक रो भलो हुवै नै आपरै टोटो पड़ै तो आपरा वडेरां आगे-आगे ही टोटो भुगतीयो है। ठाकुरां गोपालदासजी आठु बेटां नै ले आउवा सु निकल मुलक रे वासते टोटो भुगतीयो सो म्हांरै वासते तो औ पडुतर कीयां ही सभसी।[10] नै ठाकुर उठा सु अजंट साहब री षबर कराय नै साहब कनै गया। नै साहब रा डेरा मांय सु वकील व्यास उतमरांम बारै आयौ थो सो ठाकुर सु

1. कच्चे, अयोग्य 2. यश 3. अनोपचारिक 4. मुख्य 5. मेरे हाथ में क्या है 6. अन्य कौन करेगा 7. तत्कालीन पोकरन ठाकुर 8. उन्होंने भी कहा 9. मुझे हानि होगी 10. यह मसला रखना ही पड़ेगा

रांमा सांमा कर डेरे गयौ नै ठाकुर मांय जाय साहब सुं मुलाषात करनै कयौ कै अेक वात जो हुई जिसमें आपकी बदनांमी ठेट लाठ साहब तांई होगी—कै श्री महाराज साहब दौरा करण कुं पधारीया सो सिरंदारां पर रूपीये ठेराते हैं[1] और जो सिरदार इनकार करता है जहां अजंट साहब कुं बुला के उनका मुंह सुं धमका कर डरा लेता है। सो आहोर ठाकुर बड़े करजदार है जिनके पास रू० १३,०००) का रूका लिषाय लिया सो उनके कांमेतीयां सबी जमीदार कैते हैं ये रूका पीछा दिरिजणा चाहीये। नहीं तर ये मुलक सब लुट जायगा, जिसकी बदनामी आप पर रैगी[2]। जद साहब कयो—ये रूका पीछा फिरवाणे[3] में तो फेर कीसी कुं दुष नहीं होयगा[4]। जद ठाकुर कही—रूका फिरवायां बाद दुष नहीं होगा। तरै ठाकुर वैठां ही वकील नै वुलावण नै चपड़ासी मेलीयो। पछै ठाकुर तो सीष कर डेरे आया नै पछै वकील आया। जिणां नै साहब कही कै जाय कर महाराज साहब से कहो हमारे नांम से कै आप हमारे तांई छावणी से बुलाकर आहोर वाळां के पास निजर का रूका रू० १३,०००) का लीषाय लीया सो इसमें हमारी व्होत बदनांमी है सो रूका उनका अबी पीछा दिरवादो। अर जब तलक रूका उनका पीछा नहीं दिरीजे जब तलक तुम हमारे पास आणा नहीं। तुम से मुलाषात न करेंगे। जद उणी वषत वकील व्यास उत्तमरांम जाय श्री हजूर में अरज साहब कयौ जिण मुजब सारी करी। तरै श्री हजूर फुरमायौ—साहब नै अै समाचार कुण कया? तरै पाछी अरज करी कै म्हनै बुलायां पैली आउवे ठाकुर साहब कनै गया नै इंकत वातां करी। सो उणां कयौ हुसी[5]। तरै रूकौ पाछो देण रो हुकम दे दीयो।

मीगसर सुद ६ दिन पौर चढीयां जाळोर डेरां में आम दरबार कीयौ। डेरो[6] च्यार चोबां[7] रो षड़ो करायो। चवड़ो गज २० नै लंबी गज ४० नै ऊंचो गज १५ जिणमें आदमी हजार अेक सोरा[8] माय जावे जिसो, जिणमें दरबार हुवौ। सो सारा हाजर था। सो बैठण वाळा तो आप आपरी मिसल में वैस गया नै ऊभण वाळा[9] उभा रया। जिण बषत जाळोर री तथा

---

1. जागीर के ठाकुरों से नजराने के नाम पर रुपये ऐंठते हैं 2. इसकी बदनामी आप पर आएगी 3. लौटाने 4. किसी अन्य को तो आपत्ति नहीं होगी? 5. उन्होंने कहा होगा 6. शामियाना 7. चार खम्भों का 8. आसानी से 9. खड़े रहने वाले

प्रगना री रैत[1] आय सारां फिरीयाद हाकम कोटवाळ उपर करी। सु अरू-बरू[2] सुणी, पाछी षातरी दिलासा फुरमाई। नै हाकम कोटवाळ ऊपर रीस[3] हुई नै जोसो सिवनारांयण नै दोढीदार बषतावरमल नै मेल फेर षातरी फुरमाई।[4]

मिगसर सुद ७ अजंट साहब तौ सीष कर आबूजी कांनी चढीया। नै श्री हजूर साहबां रा मुकांम जाळोर रया सो गढ़ दाषल हुवा।

सुद १३ श्रीजी री असवारी जाळोर रा किला सुं हुई। सो तांमजांम[6] विराज जोधपुरीया दरवाजा बारै होय डेरां दाषल हुवा।

सुद १५ जाळोर रो हाकमी मुं० बुदमल सुरजमलोत रै हुई। तागीरायत सिं० रतनराज री।

संमत १६०६ रा पोस वद १ मुकांम जाळोर असवारी डेरा सुं सिकार[6] री हुई सो आयसजी श्री लाडुनाथजी री समाद सुं अगाड़ी थको बाड़ीयो[7] है जिण रा रूंषां में सूर १ री सिकार कर पाछा डेरां दाषल हुवा।

पोस वद ३ मु० जाळोर असवारी सिकार री हुई सो गांव आलण सुं कोस २ उली कांनी पधारीया। उठै सिकार कीवी। पछै गांव बीरांणे पधारिया। उठै डेरो षड़ो हुवौ जठै दाषल हुवा नै रात रा सुष उठै ही फुरमायौ[8]।

वद ४ उठा सुं सिकार करण नै पधारीया। सो हाथी गजराज रै हौदे विराजीया नै डावी बाजू हौदा में सांमलसिंघ रौ सायजादो बैठा नै षवासी में लारै भांद्राजण ठाकुर नै रांणावत गभीरसिंघ बैठा। छंवर हाथ में था नहीं नै दूजो हाथी काठ रा हौदा रौ जिण में रास ठाकुर, नै षैरवे ठाकुर सोभावत उमेदकरण, नै षीची उमेदकरण बैठा। नै अेक हाथी ऊपर कुचांमण रा भंवर सेरसिंघ नै सिंघवी कुसलराज धांधल पोरदांन बैठा। नै घोड़ा तो उठै ही ढाब दीया[9]। नै कायलांणा तालके रा बेली हाजर था[10]। सो नार री थेई[11]

---

1. रैंयत 2. रूबरू 3. गुस्सा 4. आश्वस्त किया 5. विशेष प्रकार की पालकी 6. समाधी 7. रक्षित स्थल 8. वहीं पर रात्रि-विश्राम किया 9. वहीं पर रोक दिये 10. शिकार करवाने के लिये नीयत एक हजार आदमी थे 11. शेर की मांद

उठा सु ं पांवडा दोय सै ऊपर थी, जठै पधार थई ऊपर श्रीजी रै हाथ री बंदूक री गोळीयां छूटी सो न्हारी[1] नै मार लीवी। पछै उठा सु ं असवारी पाछी पधारी डेरा में जठै सारां निजर निछरावळ कीवी। नै रात रा सुष उठै हीज फुरमायौ।

वद ५ प्रभात रा सिकार पांवडा तीन सौ ऊपर तांई पधार नार बेरडो थो सो घोड़े असवार थकां अेक गोळी सु ं मार लीयो[2]। पछै पाछा डेरै पधार तासळी पधराय उठा सु ं असवारी हुई। सो गांव कतरोल, केसवांणे, सापरडे होय जाळोर डेरां दाषल हुवा।

पोस वद ६ असवारी सैर में होय सिरे-मिंदर पधारी। हाथी रै हौदे विराजीया, षवासी में आउवा रा ठाकुर बैठा, सिरे बजार होय, सो बजार सीणगारीयो नै सैर रा ठावा-ठावा महाजन[3] वगैरे निजर निछरावळ कीवी। पछै कचेड़ी चोतरो सायर रै मुढा आगे होय पधारीया सो ओधेदारां सारां निजर कीवी। नै जोधपुरीया दरबाजा बारै पधार हाथी सु ं उतरतां तांमजांम में विराज गढ़ ऊपर सिरेमींदर पधार भेंट १) तोला रू० ५) कीया नै आयसजी श्री रुघनाथजी रै भेट रू० ५) नोछावर २) कीया।

पछै किला में चंद्र कूप जालरो है सो निजर गुदरायौ[4]। नै पछै भाषर री तळेटी तांई[5] पाळा[6] पधारीया। पछै तांमजांम में विराज डेरां दाषल हुवा।

पोस वद ८ जाळोर सु ं कूच हुवौ सो डेरा गांव हरजी हुवा।

वद ९ तथा १० हरजी सु ं कूच होय गोढवाड़ रै गांव कोरटे हुवा।

वद १३ गांव कोरटा सु ं कूच हुवौ सो पासवाळी में हुवौ। हाकम कारकून सांमेळो बडवेड़ो ले सांमा आया[7] सु दाषल हुवां पछै किला री तोपां री सिलकां हुई।

पोस सुद ४ श्रीजी साहबां री असवारी आबूजी री हुई। सो डेरा गांव पालड़ी हुवा।

---

1. शेरनी 2. मार गिराया 3. प्रतिष्ठित व्यौपारी लोग 4. अवलोकन किया 5. निचले स्थल तक 6. पैदल 7. स्वागत हेतु परम्परा की रीति के अनुसार मंगल-कलश आदि लेकर सामने आयें

सुद ५ पालड़ी सु' कूच हुवौ सो सिरोई रो गांव पालड़ी हुवा सो उठै इसी मालम हुई कै अजंट साहब री मीम[1] बीलायत सु' आई। तिण रै सांमा पालणपुर तांई अजंट साहब जाय मीम नै लेनै हणादड़े आय गया। नै सिरोई रो राव सिवसिंघजी नै षबर लागी कै महाराज श्री तषतसिंघजी आबूजी पधारे है, तरै भला आदमी मेल दिवांण बगसीयां री मारफत डेरा सिरोही करावण री बात ठेराई[2]। तरै कांमेतीयां अरज कर सुद ७ डेरा सिरोही कराया। सो सिरोही रो राव श्री हजूर रै सांमो गांव कोलर सीरोही सु कोस तीन उली कांनी है जठै घोड़े असवार होय आदमी चढ़ीया पाळा पांच सौ सु' आया। रावजी नीचा होय[3] अेक हाथ सु' मुजरो कीयो। तरै श्री हजूर साहब हाथ रो कुरब दसतूर मुजब दीयो। नै सीरोही मुकांम तीन बोलीया।

पोस सुद ६ लारला दिन रा सिरोही रा रावजी कंवरां समेत जलूसी कर लोकवाग समेत श्री हजूर रै डेरां आया। तरै श्री हजूर साहब मसंद सु पांवडा दोय तीन सांमा पधारीया नै सिरे दरबार हुवौ। सो श्रीजी साहबां रै जीवणी कांनी[4] रावजी बैठा। नै रावजी रै हेटै[5] उणां रा कंवर बैठा। नै आंपणा उमराव हाजर था सो आप आपरी मिसल में बैठा। पछै रावजी नै सिरपाव सात ईनायत कीया—

मोती १, मोतियां री कंठी १, सिरपेच १, कसुमल वागो धोरांदार १, कसुमल दुपटौ १, हाथी, नै कवरां नै मोती १, नै कंठी १ नै उणां रा सिरदार मुसदीयां नै रावजी रा कैणा मुजब[6] सिरपाव इनायत किया। पछै उण हीज दिन असवारी हाथी रै हौदे विराज जलूसी फरकसाई तास[7] री षीड़किया पाग पधराय षवासी में आउवा रा ठाकुर बैठा सो सिरोही रा किला में हाथी पांवडा ८ पांथो, पछै षुले षासे विराज मैलां में पधारीया। नै रावजी मांयली पोळ तांई सांमा आया नै ऊपर बंगला में दरबार हुवौ। रावजी लाचारी, सिसटाचारी सरसता सिवाय लारला दाषलादे दे कीवी[8]। पछै रावजी हाथ जोड़ नै अरज करी कै म्हारै इंकत अरज करणी है। तरै इंकत हुवा सो रावजी अरज करी – म्हारै डावड़ीयां तीन च्यार कंवारी है नै आपरो सेज[9] में पधारणो होय गयो है, सो मरजी हुवै जिण मुजब व्यांव[10] करावो। अठै च्यार रजपूत घोड़ा है सो आपरै हाजर है। आप वड़ा हो हुं तो भोमीयो[11] हूं। इण तरै

---

1. पत्नी 2. सिरोही में पड़ाव रखने की बात निश्चित करवाई 3. झुक कर 4. दांयी ओर 5. नीचे 6. कहे अनुसार 7. भांति 8. इतिहास के पिछले संदर्भ देकर 9. सहज 10 शादी 11 छोटा जागिरदार

लाचारी कीवी । तरै श्री हजूर फुरमायौ कै थांनै राजी राषसां । हाल तो अेक वार आबूजी जावां हां, सो पाछा आयां जांणीजसी[1] पिण थांनु राजी राषसां[2] । पछै उठा सु पधार डेरां दाषल हुवा ।

सुद ६ तथा १० नै सिरोई सूं कूच हुवौ । सो डेरा गांव हणादड़े हुवा सो सारो लसकर तो हणादड़े पांथो[3] नै श्री हजूर में षवर लागी क सिरोहो सुं कोस दोय तथा तीन ऊपर भाषरां री झाड़ी में नार वड़ो है, नै पाषती रा गांवा रा तथा सिरोही रा मिनष घोड़ा धाव[4] वगैरे मारै है । सो श्री हजूर छड़ी असवारी घोड़ा ५०० नै ऊट जाषोड़ा १०० सुं पधारीया । साथै सोभावत उमेदकरण, रांणावत गंभीरसिंघ, रास रा ठाकुर रौ कंवर प्रतापसिंघ, सिं० कुसलराज, रतनराज, म्हेता विजेमल वगैरे साथै हाजर हा सो आगे नार उभो गाजे है नै भेंसा नै षावै है । सो असवारी नै देष सांमो ही आयो । तरै श्री हजूर साहवां री हाथ रो गोळी लागी जिण सु पाछो घिर गयौ[5] । पछै षोज ले लारो कीयो,[6] पिण अगाड़ी झाड़ी घणी जिण सुं नार लादो नहीं[7] । तरै पाछा पधार हणादड़े निमा सांम रा दाषल हुवा । नै तोपां साथै थीं जिण री सिलकां हुई ।

पोस सुद ११ अजंट साहब श्री हजूर में हणादड़े रा डेरां आया । नै उणीज दिन आबूजी ऊपर तांमजांम में विराज ऊपर पधारीया । असवारी हुतां तोपां रा तीर फेर छूटा । लसकर रौ लोक तो घणो थो पिण जातरा[8] सारू हजार पांच आसरे ऊपर चढ़ीयो । सो जातरा दिन तिन कीवी । नै महादेवजी श्री अचलेश्वरजी रा पुजारी नै कड़ा दिरीजिया । नै भेंट मोर १) रू० ५) हुआ । पछै वसीसटजी पधारीया नै अरवदा भवांनी पधारीया । पछै पाछा नषी तळाव[9] पधार श्री दुलेश्वरजी पधार रात रा उठै ही विराजीया । दुलेश्वरजी जायगा सारी गुसांई उदैपुरीजी री मारफत हुई ।

पोस सुद १२ अजंट साहब रा लसकर रो कूच जोधपुर सांमो[10] हुवौ । सो डेरा सिरोही हुवा उठा सुं पालड़ी डेरा हुवा नै उठा सुं अेरणपुर री छावणी डेरा हुवा ।

---

1. वापिस लौटते समय निर्णय करेंगे 2. परन्तु आपको खुश रखेंगे 3. पहुंचा 4. जानवर, गाय, भैंस वगैरा 5. पीछे मुड़ गया 6. शेर के पद-चिन्ह देखकर उसका पीछा किया 7. मिला नहीं 8. यात्रा 9. नकी झील 10. तरफ

संमत १९०९ रा माह वद १ अजंट साहब री मीम विलायत सुं आया तिण री कुसी री जाफत[1] षांड रा सीरा री दीवी। पंच वकील राजसथांन रा नै अजंटी रो अमलो सरवेत[2] आदमी साढ़ी पांच सौ आसरे जीमीया। पछै अजंट साहब दरकूचां जोधपुर गया।

वद २ श्री हजूर साहव रा डेरा सिरोही रै गांव गोयली हुवा।

वद ३ मांयली पालड़ी इलाषै सिरोही जठै डेरा हुवा।

वद ५ गोढवाड़ री पालड़ी डैरा हुवा। जठै सिरोही रा भला आदमी आय मालम कराई कै सिरोही परणीजण नै पधारो। तरै कांमेतीयां मालम कर पाछो सिरोही वाळां नै केहो कै लारली ष्यातां में निरणै करी[3] सो महाराज श्री जसवंतसिंघजी, श्री अजीतसिंघजी, श्री अभैसिंघजी परणीया है तो गुजरात रै सोबै (सूबे) पधारतां सिरोही मारवाड़ रौ कांकड़ सीरोही रो गांव पोसाळीयो है, जठै व्याव-हुवा है[4]। सिरोही सुं कोस दस तथा बारै उली कांनी है। जठै डोळो लाय परणाया है जिण सरसते डोळो लाय परणावो तो ब्यांव हुय सके। तरै सिरोही वाळां मंजूर कर लिवी। तरै डोळो लावण नै नाजर नै षोची उमेदकरण नै डावड़ीयां वगैरे नै मेलीया। सो रावजी रै च्यार बेटीयां थी, सो निजर में काढ़[5] अेक डोळो लेनै आया। सो चंवरी पोसाळीयो नै गोढवाड़ रो गांव पालड़ी धनापुरा विचे बंदि सो माह सुद ७ रा सावां श्री हजूर हाथी असवार होय मौड़ बांद परणीजण नै पधारीया। उणी जगा कोई चीज वसत चाहीजी सो सारी जोधपुर री सिरकार री जोसी प्रभुलाल हसते सरभरा हुई। सीरोही वाळां सरभरा कीं कीवी नहीं।

माह वद ८ डेरा वाली होय असवारी जनांना समेत किले में दाषल हुवा। अर किलादार तथा हाकम कारकून वगैरे ओदायतां नु दरजा मुजब सिरपाव हुवा। पछै वाली सुं डेरा गांव सादड़ी श्री रांणावतजी रै पटै जठै हुवा। नै मुकांम च्यार बोलीया।

---

1. गोठ 2. समस्त 3. पीछे की ख्यातों के अनुसार निश्चय किया गया 4. पोसालिया ग्राम में इन महाराजाओं की शादियें हुई हैं 5. अच्छी तरह देखकर

वद १४ हुकम हुवौ कै दिवांण रो भाई समरथमल नै प्रो० चिमनीराम, व्यास कनीरांम चढीयो पाळो लोक हजार आसरे जोधपुर होय नागौर जावै सु नागौर गया ।

संमत १९०९ रा माह सुद २ असवारी रौ कूच सादड़ी सु हुवौ सो गांव घांणेराव पधारीया । ठाकुर सांमा दसतूर मुजब आया, नै लसकर री सरभरा री तयारी चोषी कीवी । नै श्री हजूर कोट में पधारिया सो ठाकुर रूपीया २०,०००) नै घोड़ा २ निजर कीया । सो श्री हजूर सा पनरे हजार राषीया । नै ठाकुर तथा कंवरां सारां नै सिरपाव इनायत कीया । नै श्री हजूर में मिजमांनी सरबाले हुई । नै जस चोषो आयो[1] ।

माह सुद ३ घांणेराव सु कूच होय गांव देसूरी डेरा हुआ । किलो निजर गुदरायौ । नै उठा सु आउवे ठाकुर सीष कर आउवे गया । नै श्री हजूर री असवारी डाक में सोझत पधारतां मारग में गांव सीवास रौ ठाकुर हरनाथसिंघ बैती असवारी बणी सो[2] सरभरा कीवी । सो घड़ी च्यारेक उठै विराजीया । पछै सोझत पधार फुल नारांयण रै आश्रम पधारिया । नै सोझत रा हाकम कोटवाळां नु सिरपाव हुवा नै उठै आउवा रा ठाकर हाजर पाछा होय नै भाटी जुंझारसिंघ गुलाबसिंघोत नै गांव नीबरा षारीया रो मुजरो कराय दियौ ।

माह सुद ५ डेरा गांव बिलाड़े हुवा । नै बांण गंगा संपाड़ो[3] करण नै पधारिया । नै बिलाड़ा रै दिवांण रू० ६,०००) निजर कीया ।

माह सुद ६ बिलाड़ा सु कूच हुवौ सो मेड़ते पधारिया, सु सुद ८ तांई दिन २ मेड़ते डेरा रया । श्री चत्रभुजजी रै मींदर दरसण करण नै घोड़े असवार होय पधारीया । जठै मोर १) रू० १००) भेंट कीया नै जनांना मांय सु रू० ५०) भेंट हुवा । और श्री हजूर रा डेरा इण मुजब हुवै, जिण री विगत—

(१) मिसल डावी में उमराव मेड़तीया, जोधा, ऊदावत, करमसोत, नरावत वगैरे जोधाजी रा परवार रा नै चवांण नै मुसदी, दिवांण, व्यास,

---

1. ठाकुर को अच्छा यश मिला 2. जैसी बन आई 3. स्नान

षजानो, दफतर, जरभरषांनो, जवारषांनो, कपड़ां रो कोठार, षांनसामा नै............... ।

(२) मिसल जीवणी में उमराव चांपावत, कूंपावत, जैतावत, करणोत, रांणावत, भाटी, महेचा, धवेचा, जैतमाल, वगैरे सारा जोधाजी रा भायां रा तथा श्रागलां वडेरां[1] रा परवार रा सारा नै मुसदी, बषसी, प्रोहीत, श्रासोपा, व्यास, फरासषांनो, रसोवड़ो, तातेड़षांनो, कीलीषांनो, गउषांनो, सुतरषांनो नै दसतरी सदामंद तो दिवांण सांमल नै हमार धनरूप सुं मरजी जादा[2] हुई, तरै न्यारी जीवणी मीसल में ।

(३) दोढ़ी रा मुढ़ा श्रागे घडीयालषांनो, नगारषांनो नै दोढीदार ढळेत इणां सुं श्रागे तबेलो नै श्रगाड़ी भिंडो नै बजार............... ।

(४) परधांन रौ नै मारोठ रा बडो पांनो देवीसिंघजी वाळां रा डेरा श्रीजी रा डेरा री पूठ[3] में नै बाकी मातर रूघनाथसिंघोतां रा डेरा भिंडा कनै श्रौर सिरदार मुसदी वगैरे सरदरी चौकी में पोरे हाजर हुवै ।

माह सुद १० रात घड़ी दोय गयां नागौर पधारीया । नै महाराज कंवार नागौर सुं सांमा ताउसर तांई पधारीया । पछै उठा सुं साथै-साथै गढ़ दाषल हुवा ।

माह सुद ११ हुकम हुवौ कै तीन च्यार महीना श्रठै विराजणो हुसी, सो राज रो कांम सारो श्रठै हुसी ।

संमत १६०६ रा फागण वद ३ महाराज कंवारां री श्रसवारी नागौर सुं जोधपुर पधारी । नै साथै पलटण रो लोक थो । कारण कै बड़ो साहब श्रजमेर सुं श्राबूजी जावसी सो जोधपुर होय जावसी ।

सुद ४ रास, रायपुर, षैरवो, कुचांमण रावर नै मौसर होय घड़ी दोय इंकत रया । सुद ५ श्रासोप रो ठा० घर सुं श्रायौ तिण नै मुजरो हुवौ ।

सुद ६ श्री हजूर री छड़ी श्रसवारी नागौर सुं जोधपुर वड़ा साहब री मुलाषात मुदे[4] पधारीया । सो प्रवारा बाळसमंद दाषल हुवा[5] ।

---

1. जोधाजी से पहले के पूर्वजों 2. धनरूप पर विशेष कृपा 3. पीछे 4. प्रयोजन से
5. बालसमंद में ही प्रवेश किया

सुद ७ अजंट साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया ।

सुद ८ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद सु कायलांणे पधारी ।

सुद ११ बड़ा साहब सर हिनरी लारन्स साहब आवै जिणां रै सांमे पेसवाई में दिवांण मु० मुकनचंद, सिं० फौजराज, कुसलराज वगैरे गया । नै हिनरी लारन्स नै अजंट सषसपीर साहब अै दोनुं ही कलमा पढ़ण नै संमत १८९७ में काबल मुंला बण नै गया था । नै उठा रीं षबर निसार पेसार[1] री लीषी तरै अंगरेजी सिरकार री फौज जाय काबल[2] में अमल कर लीयो[3] । जद इंणां दोयां नै सर पदवी दिरीजी । वे सर हिनरी लारन्स है ।

सुद १२ श्री हजूर रात घड़ी दोय़ गयां कायलांणा सुं बाळसमंद पधारिया ।

सुद १३ सर हिनरी लारन्स साहब आया । तिणां रै सांमा श्री हजूर बाळसमंद सु कंवरां समेत हाथी रै हौदे विराज पधारीया । सेषावतजी रा तळाब तांई दसतूर मुजब पेसवाई हुई । नै दसतूर मुजब सिलकां हुई । पछै वड़ा साहब नै अजंट साहब सूरसागर गया । नै साथै पोछावण नै[4] दिवांण, बषसी, वकील गया । नै श्री हजूर गोळ री घाटी रै मारग होय गढ़ दाषल हुवा । नै गढ़ ऊपरली तोपां री सिलकां १२१ हुई । पछै लारला दिन[5] रा वड़ा साहब श्री हजूर में गढ़ ऊपर आया नै साथै अजंट साहब नै मुनसी फजर रसूल था । सो श्री हजूर साहब सांमा चंवाणां री साळ तांई दसतूर मुजब पधारीया । पछै पाछा वातां करता पधार फतैमैल में विराजिया । घड़ी दोयेक सोषीयात[6] वातां हुई । पछै श्री हजूर साहब कयौ—होळी रो तिंवार कालै है सो म्हनै पाछौ नागौर जावणो है । सो पाछा मिळ सकां नहीं तो सीष[7] दुतरफी[8] इंण वषत मांन लिजो । जद वड़ा साहब मंजूर कीवी ।

फागण सुद १४ तड़के श्री हजूर डाक में विराज नागौर पधारीया । सो च्यार घड़ी दिन लारला रा नागौर दाषल हुवा । घोड़ो १ षासो मारग में छूट गयो[9] । नै वड़ो साहब नै अजंट साहब बाळसमंद गया ।

---

1. घुस-पैठ 2. काबुल 3. राज्याधिकार जमा लिया 4. पहुंचाने को 5. अपरान्ह
6. अनोपचारिक 7. विदाई का दस्तूर 8. दोनों पक्षों की ओर से 9. मर गया

सुद १५ बड़ो साहब नै अजंट साहब नै वकील कोटवाळी चांतरे आया। नै जेळषांनो देषीयो नै कयौ—जेळषांना आछा नहीं। जगा व्होत तंग है। सो जेळषांना मोटा कराणा चाहीये। कै मोटा अछा होय तो आदमी आरांम पावे। सो जळदी मालम करा कर कराणा। सु कोटवाळ मंजूर करी। पछै उणीज दिन वड़ा साहव आबूजी ने चढ़ गया। नै सैर में छारोळी थी सो षींवसरां री गळी रै बारणै हदां रो झगड़ौ हुवौ, षींवसरां रै नै पोकरणा विरांमणां रै। सो छुडावण नै कोटवाळ गया सो झगड़ो जादा बध गयौ। सो कोटवाळ सेरकरण रै ही लागी। अर व्यास विरमदत रै घणी लागो सो चांतरे कोटवाळ ले गया। पछै चांतरा सु पाछो मांचा में घाल लाया।

संमत १९०९ रा चैत वद ५ सूरसागर अजंटी रा दफतर अंगरेजी मेरेटर अैमदावाद रो वासी इंमरतराव लाला सो सफर षरच ऊंटां रा भाड़ा में तथा मुसदीयां रा भता षरच में बता रूपीया ४२५) मांड षाय गयौ। तिण बाबत लाठ साहब रौ हुकंम आयौ जिण मुजब सझा दिरिजी[1]। नै कैद वरस १।। (ठेढ़) री हुई। और नागौर सु षबर आई कै चैत वद ४ मुसदी, षवास, पासवांनां रो किला में षेल हुवौ सो दोढ़ी रा मुढा आगै रंग रा पांणी नै गुलाल सु हुवौ। श्रीजी साहब दोढ़ी ऊपरला झरोषा में विराज निजर गुदरायौ नै हाथ सु गुलाल री दड़ीयां बाई[2]।

वद ८ सील रो नै गुडला रो मेळो जोधपुर नागौर दोनूं जगा सदामंद मुजब हुवौ।

चैत वद १२ मु० नागौर अैमदनगर रा तिरकालां रा तमासा दौलतषांना रा चौक में हुवौ। नै श्री हजूर मोतीमैल में जनांना समेत जाबता[3] में विराज निजर गुदरायो।

वद १४ मु० नागौर होळी रो तमासो दौलतषांना रा चौक में हुवौ। तिण में नागौर रा रमाड़[4] बोराडो मगदत, नै सषवाल पींडत सुषरांम, सेवग गमंडीरांम सो तमासा तीन चोषा कीया[5]। डूंगरसिंघ, जवारसिंघ रो अैक नै

---

1. उसके अनुसार ही सजा दी गई 2. गुलाल की गेंदे अपने हाथ से फेंकी 3. पर्दे आदि की सुरक्षा पूर्ण व्यवस्था 4. रमत करने वाले कलाकार 5. तीन अच्छे तमाशों का प्रदर्शन किया

दुजो सरावगीयां रो, तीजो जाट-जाटणी रौ नै जोधपुर रा रमाड़ व्यास जगनाथ, चोपासणी वाळो नै सेवग दमोदर इणी ही तमासा तीन कीया—लिछमी-गुसांई रौ, नै दूजो लैला-मजनू रो, तीजो मीरजा-गुजरी रो। सो श्री हजूर मोतीमैल में विराज निजर गुदरायौ। नै इनांम रा रूपाया १२५) दिरीजिया।

संमत १६०६ रा चैत सुद १ मु० नागौर श्रीजो साहबां री असवारी ठाकुरजी श्री मुरलीधरजी रै मिंदर दरसण करण नै पधारिया, सो रू० ५) भेंट नै नोछावर २) हुवा। पछै उठा सु नषास दरवाजा रै मारग होय झंडा ऊपर होय मांनासागर रै वाग पधारीया। सो उभां-उभां ही वाग निजर गुदरायौ। पछै असवारी पाछी जोधपुरीये दरवाजे होय किले दाषल हुवा।

चैत सुद ३ मु० नागौर गवरां नै तळाव वषतसागर पांणी पायौ। नै श्री महाराज कंवरां री असवारी मेळो देषण नै पधारीया। नै जोधपुर में गवरां पांणी पीवण सदामंद मुजव गुलाबसागर पधारी।

सुद ७ नागौर सु षवर आई कै दफतर दिषणी पींडंत आंनासा रै नै नागर संकरलाल रै सांमल थो सो आनासाग सु मोकूब होय अकेला संकरलाल रै हुवौ।

सुद ६ मु० नागौर गवरां री असवारी बोळावणी री गांव बड़ली हुई। नै श्री हजूर साहब मेळो देषण नै पधारीया। नै सैर रा ईसर गवर पिण बड़ली गया। जिणां नै अेक-अेक रूपीयो दिरीजियो। नै मेळा में मगरायजी रो भाई मालो दारू पी नै मेळा में आयो सो मेता छत्रमल रै कोरडा[1] री दीवी। सु आ षबर सिं० फौजराज नै लागी तरै आदमी मेल सझावार कीया[2]। तिण री श्री हजूर फुरमायौ—मेळा में कीहुं कूटीयौ? तरै पाछी अरज कीवी—दारू पी मेळा में फैल करतो[3] तिण सु समजायो। तरै फुरमायौ—ठीक कांम कीयौ।

चैत सुद १५ मुकांम नागौर रांणीजी श्री जाड़ेचीजी री तरफ सु गोठ हुई। नै जिनस कीला में तयार हुई। सो श्री हजूर में नै जनांना में थाळ मेलीजीया[4]। नै उमराव मुसदीयां रै थाळ मेलीजीया। नै पुसपां री माळावां सारां नै दिरीजी।

---

1. चाबुक 2. आदमी भेजकर सजा दी 3. शराब पीकर मेले में उत्पात मचा रहा था 4. थाल परोस कर भेजे गये

संमत १९०९ रा वैसाष वद ५ मुकांम नागौर अजंट री वकीलायत राव राजमल रै हुई। तागीरायत आसोपा उतमरांम री।

वद ६ तथा ७ त्रिगालां रो तमासो दौलतषांना रा चौक में हुवौ। नै श्री हजूर मोतीमैल में विराज निजर गुदरायौ। नै ईनांम रा रू० ४०) दिरीजीया।

वद १० जोधपुर सु अजंट साहब आबूजी नै चढ़ीया।[1]

वद १४ मुकांम नागौर म्हेता विजेमल री तरफ सु गोठ श्री दरबार में हुई।

संमत १९०९ रा वैसाष सुद १ मुकांम नागौर रौ किलादार सोड गुमांनसिंघ रो तरफ सु गोठ श्री दरबार में हुई सो जिनस[2] रसोवड़े मेली सो तयार हो थाळ श्री हजूर में नै जनांना में मेलोया। नै ठावा-ठावा[3] किलेदार रै रैवास[4] री जायगा में जीमीया[5]।

सुद ३ मुकांम नागौर आषातीज[6] रौ दरबार दौलतषांना रा चौक में हुवौ। सारां नै मुजरो आसीरवाद हुवा। नै मींदरां रा दुपटा सेली पधरीजीया तिलक आरतो हुई। पछै दरबार बोड दौलतषांना रा चसमा आगे पांतियो हुवौ। सो पांतीये विराज आप अरोगीया। नै सिरदारां नै जिमाया, पछै दरबार बोड़ सिरदारां नै सीष दे आप मैंलां में पधारोया।

सुद ११ उमरावां नै मौसर हुवौ—रास, आसोप, षींवसर, कुचांमण ठाकुर रा पोरा सेरसिंघ नै मुसदी, षवास, पासवांन हाजर था जिणां नै सरबाले फुरमायौ कै पंचोळी जोरावरमल रा कागद जैपर सु आया है जिणमें इसी लिषावट है कै जैपुर महाराज रीवां व्याव करण नै जाय है। नै पैला सगपण आंपणो हुवौ है[7]। सो इण रो बंदोबसत हुवो चाहीजे। तरै सारां ही अरज कीवी—मरजी मुजब बंदोबसत हुय जावसी।

वैसाष सुद १२ मुकांम नागौर भायल कुसालसिंघ नै जैपुर नै रवांने कीयो कै पैली व्याव महाराज रांमसिंगजी रौ आंपणे बाईजी सु हुवो चाहीजे। पछै

---

1. आबू को प्रस्थान किया 2. खाद्य सामग्री 3. प्रतिष्ठित लोग 4. निवास-स्थान 5. भोजन किया 6. अक्षय तृतिया 7. अपने यहां उनकी सगाई पहले हुई है

रिमा[1] रो हुवो चाहीजे । जिण मुदे सो षलीतो अेक तो महाराज रांमसिंघजी रै नांवे लिषीजीयो । नै षास रूका दोय नाथावत रावळ सिवसिंघ वैरीसालोत सांमोद वाळां रै नांवे, नै ठाकुर लिछमणसिंघ कीसनसिंघोत चांमू वाळां रै नांवै, सो कुसालसिंघ साथै मेलीया । नै बड़ा साहब नै अजंट साहब रा वकीलां नै पैला व्याव हूण री लिषावट हुई । नै अजंट साहब वड़ा साहब रै नांवे पिण पैला व्यांव होण मुदे षलीता लिषीज वकीलां हसते मेलीजोया ।

सुद १४ तथा १५ आबूजी ऊपर वड़ा साहब रै नांवे कुंकूंपतरी जैपुर महाराज रो व्याव रिमां होण री आई । जद वड़ा साहब कयो कै इसका जबाब पीछा लिष दो । जद मुनसी मबारकी रो षलितो लिष दियो सो आ षबर सिं० समरथराज नै राव राजमल नै लागी जद दोनूं वकील सांमल होय अजंट साहब नै जाय सारो अेवाळ[2] कयो कै म्हांरै राजसथांनां में ओ सरसतो है—पैला सगपण होवै जिको ब्यांव ही पैला हुवै[3] । सो म्हांरै श्री बाईजीसा रो सगपण संमत १९०६ रा मिगसर में हुवो नै टीको झालीजियो है[4] । टीको ले पोकरण ठाकुर वभूतसिंघ सालमसिंघोत नै सोभावत उमेदकरण, आसोपो हीरालाल ईतरा जणा जेपुर गया है नै रिमां वाळां रो सगपण पछै फागण तथा चैत में हुवो है । सो पैला व्याव बाईजीसा रो हूण रो बंदोबसत हुवो चाहीजे । जे नहीं हुवो तो राठौड़ां कछवावां रो आपस में तरवार बाजसी[5] । नै दुतरफा[6] हजारां आदमी मरसी । नै जैपुर रा राजाजी नै रिमां परणीजण देसां नहीं । नै फिसाद मोटो षड़ो होय जासी । तरै अंगरेजी सिरकार नै फिसाद मिटावण री मेनत घणी करणी पड़सी[7] । सो इण वासते इतला करां हां सो कदास[8] म्हांरा केणा रो इतबार नहीं आवे तो बाईस रजवाड़ां रा वकील हाजर है जिणां नै रूबरू बुलाय निरणै कराय लिरावे । जद अजंट साहब वड़ा साहब कनै जाय सारो अेवाळ कयो । तरै बड़ा साहब कही—वकीलां कुं बुलाय तेकीकात करलो सो जो दसतूर होय अर सब वकील कहे ज्युं करो । जद सारा रजवाड़ां रा वकील आबू ऊपर हाजर था, जिणां नै पूछीयो नै कयो—जोधपुर जैपुर सादी का मुकदमा में सचा कौण है, अर झूठा कोण है सो जैसा होय

---

1. रीवां 2. पूरा हाल 3. जिस जगह सगाई पहले होती है वहीं विवाह भी पहले होता है 4. टीका स्वीकार किया गया है 5. युद्ध होगा 6. दोनों तरफ के 7. आपसी झगड़ा मिटाने में सरकार को बड़ा श्रम करना पड़ेगा 8. कदाचित

जैसा सच कहो । कीसी का लीयाज मत राष जो[1] । वकीलां सगळां ही कयौ कै इस मुकदमा में जोधपुर वाळे सचे हैं । नै जेपुर वाळे झूठे हैं । कै जो पेसंदर सगपण हुवौ जिसकी सादी पैला होणी चाहीजे । पीछे भलां ही व्याव मरजी आवे जिता करौ । सो आ बात बड़ा साहब सुंण नै जैपुर महाराज रै नांवे षलितो लिषीजियो—

अपरंच हमने अछी तरै से तेकीकात कर लीवी है कै आपकी सादी पैले लंबर जोधपुर होणा चाहीये अर रिमां की सादी अबी नहीं होगी । जोधपुर में सादी हुवां पीछे दूसरी जगा आपकी जी चाहे जिससे करो । नै जैपुर रा अजंट रै नांवे चीठी इण मुजब कै महाराज रांमसिंघजी कुं मना कर देणा सो रिमां सादी करणे कुं नही जावे । नै कदाचित नहीं मांने तो सिरकार की तरफ से मदत कुछ नहीं देणा । अर सब कुं वरजाय देणा[2] सो महाराज साहब की बरात में कोई नहीं जाणा । ओ षलीतो नै चीठी तो अजंट साहब नै रवांने कीया नै दोनुं वकीलां रा कागद आबूजी सुं सारा अेवाळ रा वीस पोरां नागौर मालम हुवा । तरै वकीलां नै षातरी फुरमाई । नै जेठ वद ७ नै भायल कुसालसिंघ जैपुर पूगो नै मुजरो हुवौ । नै षलीतो दियो सो पैला षलीतो बड़ा साहब रौ प्रबारो जैपुर महाराज रै आय ही गयो थौ । नै फेर श्री हजूर साहबां रो षलीतो बंचाय नै पैला बाईजीसा रौ व्याव करणो ठेरायो । सो नागौर नाथावत ठाकुर लिछमणसिंघ कीसनसिंघोत ने श्री हजूर में मेलणा ठेराया । आ बात ठेराय नै भायल कुसालसिंघ जैपुर सुं नागौर जेठ वद १२ आयो ।

जेठ वद १३ जैपुर रा राज री त्रफ सुं जैपुर रा अजंट रै नांवे कैफीयत दीवी । तिण री नै वड़ा साहब रै नांवे कैफीयत दीवी । नै जैपुर रा अजंट री चीठी तिणरी नकल कै महाराजा तषतसिंघजी ईस जेठ सुद १३ की मिली अपनी बाईजी का व्याव महाराज रांमसिंघजी से कर देवे तो व्होत मुनासब है । पेसदर जोधपुर परणीज कर पिछे रीमां परणीजण जावेंगे । ये बात हमारे तांई मंजूर है । आ चीठी कैफीतां पढनै वड़ा सासब सर हिनरी लारन्स सिं० समरथराज वकील नै राव राजमल वकील नै कयौ कै हम भी महाराजा साहब कुं षलीता भेजते हैं अर तुम भी लिष दो । जेठ सुद्र १३ के सावा बाईजी की सादी जरूर करणा मुनासब है सो षलीतो लिषाय अजंट साहब रा

1. किसी का लिहाज मत रखना 2. मना कर देना

हाथ सु ं राव राजमल नै सु ंपायौ सु दोनू वकीलां रा कागद नै षलितो पोर वीस में डाक में नागौर पोथा[1] सो साहब रो षलीतो नै वकीलां रा कागद मालम हुवा। जद श्री हजूर साहब जेठ सुद १३ रो ब्याव मंजूर कर नै ग्राबूजी वड़ा साहब नै लिषावट कराय दीवी। सो जेठ सुद ३ बड़ा साहब कनै पूगी। तरै वड़ा साहव जैपुर रा ग्रजंट नै चीठी लीष नै दीवी कै महाराज तषतसिंघजी जेठ सुद १३ के सावां[2] ग्रपनी बाईजी की सादी कर देवेंगे सो बरात बणाय या छड़ी सवारी ताकीद से जोधपुर जाय परणीजे। इसमें देर न करे। ग्रा चीठी तो ग्रजंट रै नांवे नै दोनु ं महाराजावां रै नांवे षलीता ग्रेक मजमून लिषीजीया। जिसकी नकल के जोधपुर में सादी होगा सो सादी का नुषता या मुलाषात री रसम जो कदीम से ग्रापस में है जिसमें दुतरफी तकरार की वात कोई होय सकेगी नहीं। इस बात की मुकत्यारी हमारी तरफ से ग्रर जैपुर के ग्रजंट की तरफ से जोधपुर का ग्रजंट सर सषसपीर साहब कु ं है। ग्रै तीनु ं ही लिषावटां जोधपुर जैपुर पूगी। ग्रर ग्राबूजी सु ं सर सषसपीर साहब वड़ा साहव रा हुकम सु ं जोधपुर नै रवांनै हुवा। साथै राव राजमल नै मुनसी समसुदीन सो जोधपुर ग्राया।

ग्रौर जेठ वद १४ जैपुर सु ं चांमू ठाकुर लिछमणसिंघ किसनसिंघोत षांप नाथावत श्री बाईजी साहबां रो सावो जैपुर सु ं कढाय नै लेनै ग्राया। सो श्री हजूर में मुजरे ग्राया सो हाथी चढीयोड़ा किला में दूजी पोळ तांई नायकां रै बरजतां उरा ग्राया[3]। तिण री श्री हजूर में मालम हुई तरै सिं० फौजराज जाय जबाब रै साथ कायलकर हाथी सु ं उतार नै मांयने श्री हजूर में लाय मुजरो करायो। बडोड़ा हौद रा कटेड़ां कनै बिछायत हुई जठै विराजीया। बतळावण हुतां रात ग्राधी ऊपर चार घड़ी ग्राई तरै सीष हुई।

जेठ सुद २ मुकांम नागौर पोकरण ठाकुर ग्राया, जिणां नै मुजरौ हुवौं। नै चांमू ठाकुर लिछमणसिंघ किसनसिंघोत नै मौसर हुवौ। नै बाईजी सा रो व्याव जेठ सुद १३ रो ठेरीयो[4]।

जेठ सुद ६ मुकांम नागौर श्री बाईजी साहब रा व्याव री कुकु ं पत्रियां जिण ठीकांणां में लिषीजण रो दसतूर है जिण ठीकांणे लिषीज रवांनै हुई।

---

1. पहुंचा 2. शादी का मुहूर्त 3. मना करने के उपरांत भी ग्रागे चले ग्राये
4. निश्चित हुग्रा

नै जैपुर सु आज इसी षबर आई कै जांन रौ कूच जोधपुर नै सुद ६ नै हुसी। तरै उणीज दिन जनांनी असवारीयां जोधपुर नै ताकीद सु हुई। नै चांमू ठाकुर पिण जोधपुर नै रवांनै हुवा। तिणां री मारग में सरभरा वासते दिवांण मु० मुकनचंद, व्यास बैजनाथ नै मेलीयो। नै आयसजी श्री लिषमीनाथजी नै तांण तथा उबाक रा कारण सु नागौर बड़ली में दे छुटी[1] नै उठै ही समाद दिरीजी।[2]

जेठ सुद ८ श्री हजूर री असवारी नागौर सु जोधपुर पधारीया, सो सुद ६ नै दाषल हुवा।

जेठ सुद १३ जैपुर राजाजी रो कूच वीसलपुर सु पाछली रात रा हुवौ। सो गांव डीगाड़ी रै पैली कांनी आया। नै अठा सु श्री हजूर सांमा हाथी रै हौदे विराज पधारीया। सो षवासी में ठाकुर पोकरण वभूतसिंघजी बैठा। नै बगली हाथी डावी बाजू रास ठाकुर भीमसिंघ भोमसिंघोत बैठा। नै बाजू जीवणी षैरवे ठाकुर सांवतसिंघ दौलतसिंघोत मोरछल लीयां, तीनू सिरदार बैठा। अर अजंट सर सषसपीर साहब पिण हाथी चढ़ीयोड़ा साथै था। नै हाथीयां रा रथ इको बतीस मेरां रौ षासो[3] आद ले सारा षासा नै माही मुरातब[4] नै षासा घोड़ा पलटणां बाजा वगैरे बड़ी जलूस सु असवारी हुई। नै महाराज कंवार सारा असवारी में साथै था। नै उठी सु जैपुर महाराज हाथी ऊपर विराजीया। नै षवासी में राव जीवणसिंघ दूणी वाळा बैठा नै बाजू जीवणी गीजगढ़ रा ठाकुर जूंझारसिंघ भारथसिंघोत बैठा। नै तरफ डावी पचेवर रा ठाकुर बैठा। सो तीनू सिरदारां रै छंवर हाथ में था। सो मिलाप गांव डीगाड़ी सु पांवडा २०० उली तरफ हुवौ। तकरार किणी बात री हुई नहीं। अर दुतरफी सिलकां तोपां री हुई सो श्री हजूर साथै-साथै पधारीया। सु जैपुर महाराज रा डेरा राईकावाग आस-पास षड़ा हुवा, जठै दाषल हुवा। नै श्री हजूर साहब गोळ री घाटी रै मारग होय किले दाषल हुवा। अर जैपुर री जांन में लोक था जिण री विगत—

हाथी १६, रथ ५०, पालषीयां १०, षासा ४, करसला ६०, घोड़ा २०००, पीजसां २५, तांमजांम ७, ऊंट १०००, पैदल १०००। इण मुजब हाजरी हुई।

---

1. देहान्त हो गया 2. वहीं समाधि दे दी गई 3. वह पालकी जिसको ३२ कहार ढोते थे 4. एक प्रकार का बड़ा लवाजमा

अौर श्री हजूर साहबां री वरसगांठ रौ उछव व्यांव री ताकीद मुदे सरसताई हुवौ। नै लारला दिन रा जैपुर महाराज जलूसी असवारी कराय मोड़ बांद हाथी रै हौदे विराज नै जांन में उमराव, मुसदी वगैरे सारां रै जांमा अंगरषीयां केसरीया कसूमल सु असवारी मेड़तीये दरवाजे होय सिरेबाजार पधारी। सो श्री बालकिसनजी रा मिंदर कना सु विरषा सरू हुई, सो गूंदी रा चौक कनै हाथी रो हौदो पांणी सु सेंठो भरीज गयौ[1]। अर बाळो हाथी रै पीण आंठु[2] रै आय लामो सो असवारी रो लोक सारो मते मते विषर गयौ[3]। सो अेकलो हाथी पदमसर री घाटी कांनी चढीयो। तरै सिरीमाळी वोरो रांमसा नै छोगो दोनु जणा आडा फिर नै हाथी रा दोनु जणां दांत पकड़ नै फतैपोळ में ले जाय उभा राषीया। नै सीरीमाळीयां नै जैपुर महाराज फुरमायौ—डेरां कालै हाजर हुजो[4]। गढ़ ऊपर सु श्री हजूरसा, षीची उमेदकरण ने सुकी पोसाषां नै षुलो षासो साथै दे नै फतैपोळ सांमो मेलीयो। सु ना तो षासे विराजिया, नै पोसाष सुकी पधराई नहीं[5]। हाथी विराजीयां ही ऊंचा पधार जनांनी दोढ़ी जाय तोरण वांधीयो। नै कळस बड बेड़ा वगैरे सदामंद मुजब बंधीजीया। पछै बाड़ी रा मैलां में चंवरी सदामंद बंदे जठै चंवरी बंदीजी। जठै पधारीया नै आरती वगैरे सदामंद मुजब नुषता होय नै परणीजण विराजीया। नै जैपुर रा उमराव मुसदी वगैरे सारा दौलतषांना में बैठा। नै श्री हजूर साहब पिण उणां कनै विराजीया। सदामंद रो सरसतो है[6]। कै जो परणीजण ने मांय जाय जितरै परणावण वाळां मालकां नै परणीजण वाळां रा उमराव लेनै वेस जावै।[7] सो वे परणीज[8] नै जनांना मांय सु बारै आयां पछै वे सीष करै। उण सरसता सु[9] श्री हजूर साहब ही विराजीया। नै हमार तो अंगरेजां रा ईकबार[10] सु कीणी वात रो विचार है नहीं[11]। पछै परणीज नै पाछली रात रा श्री बाईजीसा सांमल मांडोळ[12] में विराज गोळ री घाटी रै मारग जांन स डेरां दाषल हुवा। नै श्री बाईजीसा साथै असवारी में भादराजण ठाकुर इंद्रभांण बषतावरसिंघोत, नै सिंघवी कुसलराज

---

1. पूरा भर गया 2. ऊपरी भाग तक 3. सवारी के साथ के लोग इधर उधर हो गये 4. हमारे निवास पर कल उपस्थित होना 5. नहीं पहनी 6. पुराना रिवाज है 7. दूल्हा शादी करने जनानी ड्योढ़ी में जाता है तब तक वधू पक्ष का अभिभावक (मुख्य व्यक्ति) वर पक्ष के उमरावों के पास ही बैठा रहता है 8. शादी करके 9. उस व्यवस्था के अनुसार 10. अंग्रेजों की व्यवस्था के कारण 11. किसी तरह का धोखा होने का संशय नहीं 12. विशेष प्रकार की पालकी

गया था । सु बाईजीसा री असवारी पाछी डेरां सु करावण लागा, तरै जैपुर री बडारण केसर पैली परणावण नै पालषी में बैठ जनांनी दोढ़ी तांई आई थी सो परणाय नै पाछी डेरां साथै आई, जिकण कयौ—अबार महारांणीजी असवारी मांढीवासे जाबा को सरसतो है नहीं, सो असवारी प्रबात रा करासां । पिण ठाकुर नै कुसलराज मीठास रै साथ समजास कर असवारी कराय किले दाषल कराय दीया ।

और जांन रा लोकां रै जीमण सारूं मीठाई षांड मण २००) आसरे गळी । नै अेक वषत रा कोरी जीनस रा पेटीया दिरीजिया । जीमण तीन सरसता मुजब हुवा, जांनी ब्होत राजी हुवा ।

संमत १९०९ रा असाढ़ वद १ जैपुर महाराज नै गढ़ ऊपर जातां देण नै[1] बुलाया । सो बुलावण नै सिंघवी कुसलराज नै पटानवेस धनरूप वगैरे गया सो पैली बडारण केसर पालषी में बैठ जनांनी दोढ़ी आय बैठी । नै पछै महाराज रांमसिंघजी षुले षासे विराज गोळ री घाटी रै मारग किले ऊपर पधार जनांनी दोढ़ी रै मारग बाड़ी रा मैलां में पधारीया । नै छेड़ा-छेड़ी वांद श्री नागणेचीयांजी री जात दीवी । पछै रात रा जनांनी दोढ़ी रै मारग तो न्हीं पधारीया, मंगळ होय जाय[2] दोय घड़ी दिन लारला, रा जिण सबब सु, नै मरदांनी दोढ़ी कांनी मोतीमैल री दोढ़ी होय श्री भैरूजी दौलतषांना रा चौक में जठै जाबतो होय जात दिवी ।

और जांन रौ पांतीयो गढ़ ऊपर हुवौ । सो जैपुर रा उमराव, मुसदी ठावा-ठावा आया । जिणां रै वासते तयारी हुई । सारा जीमण नै बैठा नै आंपणा मुसदी उमरावां मनवार कर जिमाया । नै श्री हजूर नै जैपुर महाराज रामसिंघजी इकंत विराज घड़ी दोय तांई वातां करी । पछै रात आधी आसरे अरोगण विराजीया । तरफ जीवणी तो महाराज तषतसिंघजी विराजीया नै तरफ डावी महाराज रामसिंघजी विराजीया । उमराव, मुसदी आप आपरी मीसल में बैठा आप आपरा ।[3]

और अरोगण नै दोनूं महाराज नै महाराज कंवार जसवंतसिंघजी, प्रतापसिंघजी, रणजीतसिंघजी भेळा बैठा[4] नै दोय महाराज कंवार जोरावरसिंघजी

---

1. देवताओं के धोक देने के लिये　2. जनानीं ड्योढ़ी बन्द हो जाती है　3. दोनों पक्षों के उमाराव अपने-अपने नियत स्थान पर बैठे　4. भोजन के लिये एक थाल पर बैठे

किसोरसिंघजी सूता था,[1] जिरणां न जगाया सु जागीया नहीं। सारी तयारी चोषी हुई। नाच-कूद हंगाम दारू आकोतो री परसपर मनवारां हुई। बड़ो हंगाम रंग बरसीयौ,[2] पौर अेक तांई आम दरबार रयो। पछै लारली रात घड़ी दोय तीन रही तरै महाराज रामसिंघजी सीष कर असवारी कर डेरां दाषल हुवा।

असाढ़ वद २ अजंट सर सषसपीर साहब जैपुर महाराज सु मुलाषात करण नै डेरां गया सो सरसता मुजब पेसवाई हुई नै दोसती री बातां हुई।

वद ३ श्री बाईजीसा नै दायजो[3] देण सारू दौल(त)षांना रा चौक नै सिणगारीजीयो सो उमराव, मुसदी वगैरे सारा नै सैर रा ठावा-ठावा विरांमण, महाजनां वगै(रे) नै सारां नै देषण री दवायती[4] हुई। सो च्यार पोर दिन तांई सारां देषीयो तिण री दुटीपी[5] विगत—

जवार[6] री रकमां तीन तरै री—

(१) हीरां री (२) पनां री (३) मांणक री

हीरां री—

१ वोर १ मांगटीको १ आड १ बींदी १ टोटी जुमर जिलां सुधा १ हांस १ तोमणीयो १ कंठसरी १ हार सतलड़ो १ भुंटणा जेलां सुधा १ कंठो मोटो १ बाजूबंद लूबां सुधा १ मादळीया लूंबा सुधा १ कातरीया लूबां सुधा १ बंगडीयां लूंबां सुधा १ टीवां चूजरे जड़ीयोड़ी १ चोटीबंद १ हथ चांकला १ बींटीयां, १ कांकण लूंबां सुधा, १ मुंदड़ो, १ दांवणो, १ कड़ला, १ तोड़ा, १ कंलदोरो[7] वोकीयां रो, १ पगपांन, १ अणवट, १ वीछुड़ियां, १ वींटुड़ीयां, १ पुंण-चीयां, १ वदी, २ नथ, १ कांटो

ऊपर मुताबिक पनां रो नै इंणी मुताबिक मांणकां रो।

मोतीयां री रकमां तीन न्यारी—१ गजरा, १ हथफूल, १ पगपांन।

ऊपर मुताबिक ही सोना रो गैणो सारो।[8]

---

1. नींद में सो रहे थे 2. खूब आनन्द का रंग बरसा 3. दहेज 4. स्वीकृति 5. सूची 6. जवाहरात 7. करघनी 8. उपरोक्त नगों के अनुसार ही स्वर्ण के बने आभूषण भी दिये गये

वासरण[1] तथा ढोलीया वगैरे रो असबाब सोना रा तिण री विगत—

(१) थाळ मोटो १ (२) पियाला १० (३) तासळी चीतरीयोड़ी (४) तासळो जाळोर गटो १ (५) लोठो (६) कळसीयो (७) प्यालो (८) गिलास गटो (९) झारो (१०) जरझरी ढकणो (११) ढोलीया (१२) सांकळां ढोलिया री ४ सांकली बोरीयां सुधो (१३) बाजोट १ (१४) गोटको (१५) अंतरदान (१६) दारू पीवण रा प्याला (१७) मोरछल २ (१८) पंषीयां २ (१९) गुलाबदांनी (२०) अंतर री सीसीयां छोटी ४

२० कुंपला डबीयां

रूपां[2] रा वासण वगैरे—

(१) थाळ मोटा ४ (२) प्याला २० (३) बाटका मोटा ४ (४) तासळा मोटा ४ (५) तासळीयां मोटी ४ (६) कळस २ (७) कुंडी संपाड़ा री १ (८) भरतीया ढकणां सुधा ४ (९) चक-ळोटो बेलण २ (१०) चींपीयो १ (११) संडासी १ (१२) बाजोट २ (१३) ढोलीयो सांकळां सुधो १ (१४) ढोलीयो सीधली पागां री घड़त रौ १ (१५) झारा २ (१६) कुड़छीयां २ (१७) धेगचीयां छोटी मोटी २ (१८) कड़ायला २ (१९) गोटका ४ (२०) प्याला दारू पीवण रा छोटा २० (२१) गुलाबदानीयां २ (२२) अंतरदांन २ (३३) डबा मोटा षणां वाळा २ (२४) पेई[3] षणां वाळी १ (२५) कूंपला डबीयां वगेरे २० (२६) छबरीयां २ (२७) पंषीयां ४ (२८) दुकड़ीयो कड़ां सुधो १ (२९) परात मोटी १ (३०) पीकदांनी छोटी मोटी २ (३१) चीलमची छोटी मोटी २ (३२) अंतर री सीसीयां २०

पोसाषां—

(१) फरकसाई तास री करणां री ४
(२) कसूमल धोरा लफां री भीगां रो तथा मोतीयां रा कांम हुवोड़ी ४
(३) केसरीया रूपे रा धोरा लफां री कांम कसूमल सरसते ४

1. बरतन 2. चांदी 3. पेटी

(४) मोळीयां री पीळा री धोरा लफां भीगां रा कांम री ४
(५) अमरसाई धोरां लफां री ४
(६) पठाणी दुसीकां री नै साड़ीयां चोफेर लफां री २०

विछायतां—

(१) मुषमल रौ पथरणो[1] १ (२) ओसीसो[2] १ (३) गालमी सुरीया २ (४) गादी मोटी १ (५) तकीयो १ (६) मोडा रो बगली तकीया सारा हांसीयादार २ (७) गादी छोटी १ (८) तकीयो कांगसीया गटो १ (९) रजाई १ (१०) रषीयां षाट-पीछेवड़ां समेत गलीचो अदगजो १

मीसरू रा घांसीया रषीयां षाट-पीछेवड़ा सुधां—
(१) पथरणा २ (२) ओसीसा २ (३) गालभी सुरीया ४ (४) गादीयां मोटी २ (५) तकीया मोटा २ (६) बगली तकीया ४ (७) गादी छोटी २ (८) तकीया कांगसीया गटा २ (९) गलीचो मोटो सुदो १ (१०) रजायां २ (११) जाजमां मोटी लुंगी री २

वासण कांसी, पीतल, तांबा, जसद वगैरे रा नग ३००, सिंदूकां २० असबाब घालण सारूं[3]।

डावड़ीयां रै गैणो कपड़ो वगैरे डावड़ी दीठ[4]—
गैणा में जड़ाऊ रकमां—(१) बोर (२) आड (३) तीमणीयो (४) नथ जुं नै (५) बाकी सोना गैणो कांना सुं लगाय हाथां रा दांवणा, मुंदड़ा बींटीया सुधा ४। सोनां रा नै पगां रा रूपा रा (१) कड़ीयां (२) साटां सांकळ (३) आंवळा (४) नेवरीयां (५) टणका (६) सुलफीयां (७) अंगुटीयां (८) वीटुड़ियां (९) सांकळीयां (१०) पगपांन वगैरे सरबेत।

जणी १ दीठ पोसाषा नग ४ च्यार, लपाधोरां री १, पठांणी दुसीका री १, साड़ी लपांदार री १, सादी २, ओरणा दुसीका गोटा रा २।

---

1. गद्दा, घासिया 2. तकिया, मसनद 3. सामान रखने के लिये 4. दहेज में दी जाने वाली सेविकाओं का गहना प्रत्येक के अनुसार

१ मांडोळ मुलमल री वीछायत लपां रौ षोळो मुषमल रौ, नै डांडा रेचे रा सोना रा
१ हाथी महाराज बगस गैणो रूपा रौ नै भूल मुषमल लपां री ।
१० रथ सैंजुता[1] बनाती नै बळधां री भूलां बनाती सुधा ।
२० तांगा सैंजुता १० पासा घोड़ा १० गैणा सुधा

इण मुजब तौ श्री हजूर सु दीयौ नै श्री माजीयां नै श्री रांणीयां, पड़दायतीयां वगैरे मांय सु न्यारो दिरीजीयो[2] श्री बाईजीसा नै ।

महाराज श्री रांमसिघजी नै सिरपाव घोड़ा वगैरे दीरीजीया ।

संमत १९०९ रा असाड़ वद ३ श्री हजूर री असवारी हाथी रै हौदे विराजीया । नै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा, सो सिरे बजार होय जलूस सु जैपुर वाळां रै डेरे पधारीया । मुढ़ा आगे पातरीयां भगतणीयां गावती थकी नै आतसबाजी छूटती थकी । सो घड़ी च्यारेक विराज पाछा गढ़ दाष(ल) हुवा ।

वद ४ जैपुर महाराज रौ जैपुर नै कूच हुवा सो महाराज तो डाक में पधारीया नें जांन रो लोक लारा सु दोय दिन तांई रवांने हुयबो कीया । नै श्री बाईजीसा नै पोंछावण नै नाजर हरकरण गयौ । सु श्री बाईजीसा री असवारी सांगानेरी दरवाजा रै मारग गाजा-बाजां सु सांमेळो[3] होय मैलां दाषल हुवा । पछै आंवेर रै किले दाषल हुवा ।

असाढ़ वद ९ वड़ा साहब जैपुर रा अजंट रै नांवे चीठी लिषी कै महाराज रांमसिघजी रीमां जाणे की ताकीद है सो इंनकु कै देणां कै आपके जाणे की ताकीद व्होत है सो ईस व्याव की जातां वगैरे सरसता है सो सब करके जाणा ।[4] किसी बात क(की) हरषत नहीं रषणा । तरै महाराज रांमसिंघजी सारा नुषता[5] कराय नै चढ़ीया ।

और श्री बाईजीसा नै जैपुर पोंछावण नै नाजर हरकरण, म्हैता विजेमल, पंवार नारकरण, उमरावां में बडू रा ठाकुर, साथीण रा ठाकुर, डोडीयांणा रा ठाकुर ।

---

1. बैलों सहित　2. अलग से दहेज की वस्तुएं दी गई　3. स्वागत　4. देवताओं के वहां कायदे के अनुसार धोख वगैरा सब देने के बाद जाना. 5. रीत-किरियावर आदि

नै उणी दिन कुचांमण रा ठाकुर नै मुजरो हुवौ ।

संमत १९०९ रा असाढ़ सुद ५ श्रीजी साहवां री असवारी जनांना समेत किला सु बाळसमंद दाषल हुई ।

और बाईस ही परगनां रा कचेड़ीयां चोतरा रा कारकूनींयां मुसरफीयां ईतलाकनवेस पोतदार····वाकानवेस सारा मोकूब हुवा[1] । फकत अेक हाकम कोटवाळ रया ।

दिवांण मु० मुकनचंद बाप रा ओसर री सेर सारणी कीवी जिणरी षांड मण ८००) गळी ।

असाढ़ सुद ६ पोकरण ठाकुरां नु घर री सीष रो मुजरौ हुवौ । नै सिरपाव मदील, दुपटो, जामो कसुंमल धोरांदार, कड़ा, मोती, मोतीयां री कंठी, सिरपेच, हाथी, पालषी, नै कांमेती चांपावत पीरदांन भायल कुसालसिंघ नै कड़ा, मोती हुवा । नै ठाकुर ने षातरी फुरमाई । बाई रा व्याव में थे मेनत चोषी कीवी[2] ।

नै मु० मुकनचंद नै सिरपाव पालषी, कड़ा, मोती, कंठी दसतूर मुजब नै छोटा भाई समरथमल, कुंनणमल नै कड़ा मोती, बाप रा कारज री सेर सारणी कीवी जिण ऊप्र इनायत हुवा ।

नै जाळोर री हाकमी म्है० परतापमल रै गोढवाड़ री हाकमी भं० घेवरचंद रै मारोठ री आसोपा उतमरांम रै नै फौजदारी, अदालत जोसी प्रभुलाल रै नै भं० सीरीचंद रै दीवांणी अदालत आसोपा हीरालाल नै पींडत सीवनारांयण रै नै फळोधी री हाकमी पं० जैतरूप रै, जैतारण री हाकमी भं० अनराज रै नाजर हरकरण जुमौ ।

असाढ़ सुद १० नार री सिकार सादड़ी कांनी श्री हजूर छड़ी असवारी पधारीया सो नार नै तो मार नै गाडी में घलाय जोधपुर मेल दीयो[3] नै नार रजपूत षीची·······ने मार नांषीयो ।

---

1. सबको हटा दिया 2. अच्छी मेहनत की 3. जोधपुर भेज दिया

संवत् १९१० का विवरण

संमत १९१० रा सांवण वद ५ श्री हजूर साहब गांव सादड़ी सु गांव वीजवे पधारीया। विजवो सिं० फौजराज रै पटै है सो उठै सरभरा सारी मरजी मुजब[1] हुई। नै पछै उठा सु कूच ताकीद सु हुवौ। सो वद ७ नै बाळसमंद दाषल हुवा।

संमत १९१० रा सांवण सुद ५ आबूजी सु अजंट सर सषसपीर साहब आया तिणां रै पेसवाई में दिवांण, बषसी सदामंद मुजब सांमा गया।

सांवण सुद ७ बाळसमंद श्री हजूर में अजंट सर सषसपीर साहब आया। सो दसतूर मुजब सांमा पधारीया सो हेटला बाग में टाप वाळी जायगा में बिछायत हुई, जठै बिराजीया। घड़ो दोयेक बतळावण होय सीष हुई।

सुद १५ राषड़ी पूनम[2] रो दरबार हुवौ नहीं नै श्रीजी साहबां री असवारी ऊपरले भाषर रै मारग होय कायलांणे पधारी।

संमत १९१० रा भादवा वद ४ कायलांणा सु असवारी बाळसमंद पधारी।

वद ५ नाग पांचम रो मेळो दसतूर मुजब हुवौ। सो बाळसमंद होय नीसरीयो सो निजर गुदरायौ।

वद ६ श्री हजूर री असवारी गढ़ दाषल हुई। नै अजंट सर सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया सो घड़ी तीनेक इकंत बतळावण हुई। पछै आहोर, षींवसर रा ठाकुर नै मौसर होय बतळावण हुई।

वद १२ श्री हजूर री असवारी सूरसागर हुई। नै अजंट साहब दसतूर मुजब सांमा आया। नै पछै सूरसागर पधारीया, सो साहब विजळी रा तार रो ईलंम[3] घड़ी दोयेक तांई देषायो।

संमत १९१० रा भादवा सुद ४ श्री गणेसजी रो मेळो रातेनाडे सदामंद मुजब हुवौ।

1. इच्छानुसार 2. रक्षा बन्धन 3. बिजली के तार की करामात, कला

भादवा सुद ११ श्री ठाकुरजो री रेवाड़ी किला सु झुलरण नै तळाब गुलाबसागर जलूस सु सिरे बजार होय पधारीया। नै महाराज कंवारां री असवारी मेळो देषण नै गुलाबसागर ऊपर पधारीया नै नीमा सांम रा अजंट साहब गढ़ ऊपर श्री हजूर में आया। घड़ी दोयेक इंकत बतळावरण हुई।

संमत १६१० रा आसोज वद १ श्री हजूर साहबां री असवारी जनांना समेत चोकेळाव रांणीसर री हुई सो श्री रांणावतजी सा री गोठ हुई। कोटवाळ सेरकरण नै निवाजस कड़ा, मोती, दुपटो, सिरपेच, मोतीयां री कंठी, पिजंस इनायत हुवा। रांणीसर में असवारी दिन २ मुकांम रया। गोठ में ठावा-ठावा चाकर सारा जीमीया।

वद ५ दिवांण मु० मुकनचंद नै गढ़ ऊपर श्री हजूर साहब रूवरू बुलाय समजास नै तकरार कोटवाळ कनै कराय नै पेसकसी तथा विराड मु० लीषमीचंद मांड गयौ जिण रौ रूकौ रू० पांच लाष रो लिषाय लियौ नै फुरमायौ— दिवांणगी थारै बाल राषसां[1]। नै किसतां कर निभाय नै[2] भराय लैसां। यु षातरी फुरमाय नै सोना री साटां ईनायत कीवी।

वद १३ नीमा सांम रा अजंट साहब गढ़ ऊपर आया, सो घड़ी च्यारेक इकंत बतळावरण हुई। पछै साहब आबूजी री सीष कीवी सो वद १४ नै अठा सूं चढीया।

संमत १६१० रा आसोज सुद १ वड़ा साहब री वकालायत पठांण सैबाजषां रै हुई। तागीरायत सिंघवी समरथराज री।

सुद ३ बड़ा हजूर श्रीमांनसिंघजी रै बाईजी श्री सरूपकंवर बाईजी नै बूंदी परणाया था सो देवलोक हुवा,[3] तिणां री सुणावणी आई[4]। सो बड़ा बाईजी श्री सिरेकंवर बाईजी रै नोरै सुणाया।

सुद ६ षासा रसोवड़ा री मुसरफी थांनवी हरदेव रै हुई। नै नाजर हरकरण जैपुर बाईजीसा नै पोंछावण नै गयो थो सु आज आयौ।

सुद ८ श्रीजी साहब जनांनी दोड़ी मोती मैल रै मारग होय पधारीया। नै बाड़ी रा मैलां में श्रो माताजी नागणेचियांजी, श्री हींगलाज री मूरतां री

---

1. दिवानगी के ओहदे पर तुम ही रहोगे 2. सुविधाजनक रूप में 3. मृत्यु हो गई
4. अशुभ सूचना आई

उथापना री पूजन कीवी। पछै ससत्रां री पूजा कीवी, पछै जनांनी दोढ़ी रा पावड़ीयां ऊपर पधार हाथी, घोड़ां री पूजा कीवी। पछै तांमजाम में विराज माताजी श्री चांवंडाजी रा दरसण करण नै पधारीया। सु भेंट नोछावर कर पाछा पधार मैलां दाषल हुवा।

सुद ९ तथा १० दसरावा रौ दरबार हुवौ नहीं नै श्री रामचंद्रजी री असवारी रांवण मारण नै सदामंद मुजब हुई। नै श्रीजी साहबां री असवारी मेघाडंबर रै षासे विराज फतैपोळ रै मारग होय जाळोरी दरवाजा बारै पधार घोड़े असवार होय वाहीवाळ रे बुरछी बाय नै पाछा उणीज मारग गढ़ दाषल हुवा।

संमत १९१० रा काती वद ७ श्री हजूर री असवारी देसूरी छड़ी डाक में पधारीया। सो नार ने मार नै दिन ३ सु पाछा पधार गया, सो अबारा कायलांणे दाषल हुवा।

वद ११ म्हेता गोपाळराव राधणपुर सु श्री हजूर साहबां रै बुलायोड़ो आयौ। मुसायबी रौ कांम करण मुदे। सो लोक सारा किताक सांमा गया[1] नै उण रै डेरे भीड़ मोषळी हुई[2]।

वद अमावस आबूजी ऊपर बड़ा साहब रा आंम दरवार में उदेपुर रै वकील कही कै आप मेवाड़ अर गोढवाड़ रै सरहद काढण रो[3] हर वषत फुरमाते हो सो हाल तक फैसला नहीं हुवा है। सो आप कु कराणा होय जब तो करा दो कींहुं कै गोढवाड़ प्रगना हमारा है। जद बड़ा साहब हुकम दियौ कै गोढवाड़ का प्रगना जोधपुर का है तुमारा कुछं दावा रया नहीं, कीहुंके जोधपुर के कबजे महारांणा अड़सीजी के बषत से संमत १८२८ की साल में महाराजा श्री विजैसिंघजी नै लीवी थी सो आज तक कवजा जोधपुर का है। अर दूसरी संमत १८७५ की साल सिरकार अंगरेजी के महाराज श्री मांनसिंघजी अर जुगराज[4] महाराज कंवार श्री छत्रसिंघजी से अदेनांवा[5] हुवा जिसमें उदैपुर का दावा षारज कीया, जिस बात कु बरस ३५ होय गये। अर जोधपुंर महाराज श्री विजैसिंघजी के नांवे महारांणा अड़सीजी का अर महारांणा रतनसिंघजी का

1. सत्कार के लिये सामने गये 2. बहुत भीड़ हुई 3. सीमा-रेखा निश्चित करने का
4. युवराज 5. संधि की शर्तें

गोढवाड़ का निर दावा का दसषत लिष दिया जिसका दसताग्रेवज जोधपुर में हाजर है, सो तुम गोढवाड़ का सबर रषो ।

दीवाळी रो दरबार हुवो नहीं । नै श्री हजूर सा बाळसमंद सु सैर में दीपमाळका री रूसनाई[1] देषण नै पधारीया । सो नागौरी दरवाजे होय सिरे बाजार होय आडे चोटे होय लोडां री गळी होय चांदपोळ दरवाजे होय पाछा बाळसमंद रै वाग दाषल हुवा ।

संमत १६१० रा काती सुद ११ अजंट सर सषसपीर साहव आबूजी सु आया । दिवांण बषसी वगैरे पेसवाई में सांमा सदामंद मुजब गया ।

सुद १४ असवारी श्री हजूर रीं बाळसमंद सु कायलांणे दाषल हुवा ।

सुद १५ अजंट सर सषसपीर साहव श्री हजूर में कायलांणे आया । घड़ी तिनेक बतळावण हुई ।

संमत १६१० रा मीगसर वद ४ श्री हजूर जनांना समेत गढ़ दाषल हुवा । और रांणीजो श्री जाड़ेचोजी रै आसा है, जिण री आगरणी रौ उछब[2] जनांनी दोढी सदामंद मुजब हुवौ ।

मीगसर वद ८ श्री हजूर साहब श्री गंगाजी जात्रा करण पधारसी सो छतीस कारषांना री हाजरी लेवण रो हुकंम दीयो नै सरभरा करावण सारू रूपीया देण रो षजांने हुकंम दियौ । कै सरभरा तालके चहीजै[3] जिता रूपीया देवो नै तयारी ताकीद सु करावो ।

वद ११ जोधपुर री हाकमी म्है० फौजमल रै हुई नै अजंट साहब नेड़ीसे गोरां री पलटण जिण रो कपतांन हाटलि साहब साथे सु श्री हजूर में आया[4] । सो दोनूं साहबां सु दसतापोसी हुई । नै घड़ी च्यारेक बातां हुई । पछै सीष कर दोनुं ही साहब पाली नै चढ़ीया । कींहु कै डीसा सु गोरां री पलटण आगरे जावै जिणां रा डेरा पाली है, जिण मुदे[5] ।

---

1. रोशनी 2. रानी के गर्भवती होने के कुछ दिन पश्चात मनाया जाने वाला उत्सव 3. खातिरदारी व सुव्यवस्था के लिये जितने रुपयों की आवश्यकता हो 4. साथ-सथ आए 5. इसलिये

वद १४ मु० मुकनचंद रूकौ लिष दियौ थो तिके रूपीया श्री हजूर साहब मांगीया तरै आपरी हवेळी बैस रयौ तरै समजास करण नै रांणावत गंभीरसिंघ नै म्हैतो गोपाळराव नै समजास मोषळी कीवी, पिण मांनी नहीं ।

संमत १९१० रा मीगसर सुद ८ चांवंडाजी रै दीवा[1] सु पिछवाई पोसाष रै लायणो हुवौ[2] सु सांयंती रो होम हौ ।

सुद १० और षास हवाला रा गांव जोसी प्रभुलाल, पंचोळी भीनालाल, भं० सिरीचंद रै तालकै था सो सारा नाजर हरकरण रै तालकै हुवा ।

सुद ११ पाली सु अजंट साहब नै डीसा सुं नसीराबाद अेक साहब जावै जिको साहब री साथै आयौ, जिकां नै अजंट साहब साथै जाय नै मंडोवर देषायो । पछै सुद १३ अजंट साहब पाली गया । गोरां री पलटण नसीराबाद सुं डीसे जावै तिण मुदे, साथै वकील नै दोढ़ीदार सालगरांम नै तायफा आतसबाजी वगैरे मिजमांनी री सारी सरभरा लेनै गया ।

और श्री हजूर साहब सिवांणा री तरफ सिकार रै मुदे पधारीया,[3] सो रात आधी ऊपर च्यार घड़ी आयां गढ़ सुं असवारी हुई सो कायलांणे दाषल हुवा ।

संमत १९१० रा पोस वद ७ अजंट सर सषसपीर साहब रै बदळी री चीठी आई—तुमारा जावणा नेपाल की अजंटी पर होगा । अर जोधपुर अजंट दुसरा आवेगा । सो अजंट साहब वकीलां नै कयौ कै हमारे नांव से महाराज साहब से ईतला कर दो । तरै वकीलां अठै डाक में लिषावट कर मालम कराय दीवी । नै श्री हजूर साहब सिवांणा रै गांव तलवाड़े कायलांणा सुं पधारीया । नै उठै नार री सिकार करी जिण रा समचार आज लागा ।

वद ११ समाचार आया कै श्री हजूर साहब जाळोर कांनी सिकार मुदे पधारीया । नै अजमेर री मेघजिण[4] रो गढ़ कपतांन साहब अजंट साहब कनै आयौ नै अजंट साहब रै बड़ा साहब री चीठी आई कै तुमारा रैणा हाल जोधपुर की अजंटी पर होगा,[5] पीछे फेर देषा जायगा ।

---

1. दीपक 2. जल गई 3. शिकार हेतु गये 4. सशस्त्र सेना 5. तुम फिलहाल जोधपुर की ऐजेन्सी पर ही कार्य करोगे

और समाचार आया कै श्री हजूर साहब जाळोर पधार गया। जिते सेहेवाजषां वकील री अरजी आई कै अेक बषत आबूजी पर बड़ा साहब के पास आपका पधारणा होय जाय तो ब्होत अछा है। सो अरजी मालम हुत पांण[1] जाळोर सु कूच होय आबूजी पधारीया। सो बड़ा साहब पेसवाई में सांमा आंबा बेरी तांई आया। सो श्री हजूर रै पधारण री जेज[2] हुई। जिते दोय घड़ी उभा रया तो पिण श्री हजूर पधारीया नहीं,[3] तरै बड़ा साहब पाछा परा गया। पछै श्री हजूर पधारीया तरै आबूजी रा दरवाजा तांई सांमा आया, नै मुलाषात हुई। नै पछै बड़ा साहब रा बंगला कनै अजंट साहब रौ बंगलो है, जठै उतरीया। बाकी रो लोक बाग साथै हो सो बंगला रै आस-पास उतर गया। नै रात रा सिगड़ी सु कर लाय लग गई[4]। सो बंगलो लग गयो[5]। तिण नै सिरकार रा आदमी नै अंगरेज रा आदमी पांणी सु बुजाय दीवी। श्री हजूर साहब लाय लागी जिण बषत बड़ा साहब रा बंगला में पधार षुरसी ऊपर विराज गया सो उण दिन सु बड़ा साहब सर हिनरी लारनस साहब आपरा दफतर में षुरसीयां री मुलाषात साझ लिवी[6] अर आबू ऊपर दिन दोय तथा तीन विराजणो हुवौ। नै तीरथ-जात्रा[7] री असवारी साथै लेजावण मुदे बड़ा साहब नै कैने अेक साहब नै बुलायो जिण नै साथै रैसि जिते रोजीना रू० १०) देणा पड़सी[8]। नै श्री हजूर साहब आबूजी सु पाछा पधार नै पोस सुद १२ नै जाळौर सु पैली कांनी भाषरां विचै सिकार रै मुदे माळो बंदायो[9] हो, जठै जनांना समेत पधार माळा ऊपर रात रा विराजीया। नार री सिकार मुदे, सु कोई सबब सु माळो तुट गयौ सो और ही दोय-चार जणीयां रै लागी। नै ओसीयां वाळा भटीयांणीजी, महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी री मां देवलोक होय गया।

नै सुद १४ श्री हजूर साहब सारा जनांना, कंवरां सुधा जाळोर सु कायलांणे पधार नाळा री बारी रै मारग गढ़ दाषल हुवा। नै रांणीजी श्री जाड़ेचीजी रै कंवरजी जनमीया—पोस सुद १२। तिण रो उछव नै तोपां री सिलकां सदामंद मुजब हुई।

---

1. अर्जी पहुंचते ही 2. विलंब 3. दो घड़ी इन्तजार में खड़ा रहा परन्तु दरबार आये नहीं 4. सिगड़ी की वजह से लाय लग गई 5. जल गया 6. मुलाकात पूरी करली 7. तीर्थ-यात्रा 8. उस अंग्रेज को प्रतिदिन दस रुपये देने होंगे 9. मचान तैयार करवाया

नंमत १६१० रा माह वद ५ ओसीयां वाळा भटोयांणीजी लारै औसर[1] री षांड ३००) मण गळी। पांच मीठाई हुई[2]। सो वद ७ गिड़दीकोट में राज रो रसालो सदामंद मुजब जीमीयो।

संमत १६१० रा माह सुद २ अजंट सर सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया सो घड़ी दोयेक वतळावण हुई।

सुद ६ दिवांण मु॰ मुकनचन्द नै गढ ऊपर अटकाय दियो[3]। नै कोटवाळ जाय दिवांणां री हवेली घेर लीवी। अर भाई बेटा सारां नु पकड़ गढ़ ऊपर लायो सो लवा[4] पोळ रै मुढ़ा आगे पठा ऊपर वेसांण दिया। अर हवेली चोकीयां बैस गई। नै बाईस प्रगना में कागद लिषीज गयो कै मु॰ मुकनचंद रा बाबसता[5] हुवै जिणां नै तो पकड़ लिजो नै कीणी जागीरदारां में तथा गांवाड तथा आसांमीयां में लेणो हुवै सो तेकीकात कर जबत कर दीजो। अर जोधपुर में बाबसता हा जिणां नै पकड़ लिया नै फेर ही इण सवाय तकरार जादा हुई। पछै मुसाहब विच में पड़ नै[6] षरा तीन लाष[7] भरावणा ठेरीया। तिण री किंसतां बंदाय लिवी। पछै रात आधी रा सीष हुई। पिण पांच जणां नै अटकाया था सो मुकनचंद समरथमल नै तो तळेटी जावण दिया नै कुंनणमल, पुनमचंद, कीसंनचंद नै बैठा राषीया सो अेक किसत रा रू॰ री नीसां[8] आयां सीष हुसि नै दिवांणगी जबत कर मोर दोढी धरोज गई।

और व्यास गुमांनीराम रै घरै चौकी वेस गई। कोटवाळ पकड़ण नै गयो सो मांदो[9] थो, जिण सुं पकड़ीयो नहीं।

और छांगांणी रावत बाईजीसा रो कांम करतो थो जिण नै नोरा में अटकाय[10] दियौ नै बाईजोसा रै कांम री सूंपना[11] पंचोळी अंबाबगस नै हुई। नै अंबाबगस रै लारली षायकी[12] री कबुलायत[13] रू॰ २१,०००) री हुई। पछै कांम री सूंपना हुई।

---

1. मृत्यु-भोज 2. पांच किश्म की मिठाई वनी 3. बन्दी बना दिया 4. लोहा 5. रिश्तेदार 6. बीच-बचाव करके 7. पक्के तीन लाख रुपये 8. भरोसा 9. बीमार 10. नजरबन्द कर दिया 11. कार्य-भार की सुपुर्दगी 12. पहले की रिश्वतखोरी 13. स्वीकारोक्ति

ग्रौर सिंघवी गंभीरमल रै संमत १६०१ में रूपीया ४०,०००) ठेरीया था सो भरीजीया नहीं। तरै चांतरा रा ग्रादमी जाय हवेली घेर लिवी। तरै किसतां कर फैसलो कीयो नै ग्राजीवका में जाळोर रो गांव सांथु पटै हुवौ।

माह सुद १० धांधल केसरीसिंघ रो बेटो तिलोकदास रै पटा रो गांव रोयलो जठै घोड़ा चढ़ीयो सु पकड़ लाय कैद कर दियो, पेसकसी रै मुदै।[1]

सुद १५ रांणीजी श्री लाडी तुंवरजी रै महाराज कंवार रै चुगली री बोलवा[2] वड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री थी सो मंडोर महाराज कंवार पधार चुगली उतराय भेंट रू० ७ नै छत्र म्होर सवा रो चढायो।

संमत १६१० रा फागरण वद १३ षोड़ रा रासधारीयां[3] रो तमासो दौलतषांना रा चौक में हुवौ। सु ईनांम रा रू० २०) नै कोठार सुं पेटीया ग्रेक दिन रा दिरीजिया।

सुद ३ दरीबे नांवा री हाकमी म्हेता गोपाळराव रा बेटा रै हुई। नै सिरपाव मंदील दुपटो हुवा, तागीरायत दोढ़ीदार प्रो० बषतावरमल री।

सुद ५ ग्रजंट साहब गढ़ ऊपर ग्राया सो घड़ी दोयेक श्री हजूर में रया।

फागरण सुद ६ घोड़ा ४ विलायतीयां[4] रा विकाऊ[5] ग्राया सो घोड़ा गढ़ ऊपंर मंगाय दौलतषांना रा चौक में निजर गुदराया। पछै लषरण पोळ नै जेपोळ विचे घोड़ा फिराया सो मैलां में विराज निजर गुदराया।

सुद ६ ग्रजंट साहब गढ़ ऊपर ग्राया। घड़ी दोयेक इंकत बतळावरण हुई।

ग्रौर बाईजी श्री सिरेकंवर बाईजो रौ जैपुर रो पटो नै जैपुर रा नोरा रौ कांम पंचोळी सोभारांम सुं जबत थो सो पांच रूपीया ठैर[6] नै पाछो कांम हुवौ।

सुद १० ग्रजंट साहब डाक में मालांणी कांनी गया सु पाछा दिन च्यार नै ग्रावरण री षबर है।

---

1. जुर्माना भरवाने हेतु 2. सिर के कुछ बाल काट कर देवता को समर्पित करना 3. रास-लीला करने वाले 4. विदेशी लोंगों के 5. बेचे जाने को 6. कुछ रकम लेना निश्चित कर

सुद १२ श्रीजी साहब जनांना समेत चोकेळाव रांणीसर पधारीया। दिन तीन उठै विराजीया सु सुद १३ नै तो गोठ मैता संकरलाल री हुई। नै सुद १४ पटानवेस पं० धनरूप री हुई। नै सुद १५ पाछा मैलां दाषल हुवा। नै होळी रो दरबार हुवौ नहीं।

चेत वद ८ सील रो मेळो नै गुडलां रो मेळौ सदामंद मुजब हुवौ।

वद १० महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजीरी सगाई जांमनगर रा जांमबीबाजी री बेटी सुं हुई। तिण रा नाळेर ले जांमनगर सु भला आदमी आया तिणां नै मुजरौ हुवौ। नै नाळेर बंदीजीया[1]।

चैत सुद ३ श्री गवर रो मेळो गुलाबसागर ऊपर सदामंद मुजब हुवौ। नै श्री महाराज कंवारां रो असवारी मेळो देषण नै पधारी।

सुद ४ श्री हजूर री असवारी कायलांणे जनांना समेत पधारो।

सुद ७ सूरसागर असवारी पधारी।

सुद ८ दुतीक गवरां री बोळावणो सूरसागर हुई सो हेटला बाग में दरबार री गवर नै सैर री गवरां बैठी। श्री हजूर ऊपरला मैल में जनांना समेत विराज दरसण कीया। नै सैर रा गवर ईसर दीठ[2] रूपीयो अेक-अेक दिरीजीयो। पछै रात पोरेक गयां[3] गवर गढ़ उपर पाछी दाषल हुई।

चैत सुद ११ षांडा री असवारी जांमनगर नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी रा री हुई, जिण साथै आसोपो व्यास उतमरांम नै नाजर नवलरांम व्यास बुदलाल प्रो० बषतावरमल सो दरकूचां वैसाष वद ६ जांमनगर पूग नै वद ७ षांडा सु फेरा ३ षवावणा नै पाछो डोळो लेनै जेठ वद २ नै जाळोर दाषल हुण रो मोरत है।

चैत सुद ६ छांगांणी रावत श्री बाईजोसा रै नोरै कैद थो, सु उठा सु पोकरण री हवेली जाय बैठो।

सुद १४ श्री हजूर साहबां री असवारी जनांना समेत कायलांणे पधारी।

1. नालेर स्वीकारने की रश्म पूरी की गई 2. प्रति 3. एक प्रहर रात बीतने पर

संमत १९१० रा वैसाष वद १ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी रो व्याव जांमनगर रा राजा री वेटो सु व्याव जाळोर जेठ वद ३ रा सावां हुसी नै महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी रौ व्याव रांणावत गंभीरसिंघ रोडसिंसोत री वेटी सु हुसी। वेसाष सुद २ रा सावां[1] तिणां रै वांनै बैठण रो समोरथो हुवौ।

वेसाष वद ६ जोधपुर रा अजंट री वकीलायत पटानवेस पं० धनरूप रे हुई। और असवारी जनांना समेत गढ़ दाषल हुई।

वद १३ दिवांणगी जोसी हंसराज सिभुदतरा रै हुई। हसराज सांभर हाकमी रा कांम ऊपर थो तिण नै षास रूकौ लिषीज बुलाय नै ईनायत कीवी।

वेसाष सुद २ महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी रो व्याव रौ सावो आज रौ है। सो जांन वड़ी हगांम सु चढ़ी जिण साथै उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा साथै गया। जांन गांव जालामंड गई। सो दिन ३ जांन उठै रही नै हाथी रै हौदे विराजीया नै षवासी में आसोप ठाकुर सिवनाथसिंघजी बैठा।

वैसाष सुद ७ षबर आई कै सिरोही राव सिवसिंघजी वड़ा साहब कनै दरषासत कीवी कै म्हांरा मुलक में जमींदार मैणा, भील म्हारै काबू में है नहीं, सो आप मदत दे बंदोबसत करावो तो आपरी नेकनांमी है। ईसो षलीतो बड़ा साहब नै दियौ सु बांच नै सिरोई रा राज री नै मुलक रा कांम री ईकत्यारी सिरोही रा अजंट इंदरसेन साहब रै सुपरत कर दिवी नै बड़े साहब हुकम दियौ—आठ वरस में पका बंदोबसत कर देगा। सो राज रा षरच रौ तथा रावजी रा षरच रौ इंकरोजो बांद दीनो[2]। नै सिरोही रा अेलकार पठांण नांमतअली नै विरांमण हीरानंद रावजी री तरफ सु कांम में सांमल राषीया[3]।

संमत १९१० रा जेठ वद १ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी रौ व्याव जाळोर हुसी, सो जांन[4] अठा सु चढ़ी। सो साथै इतरा जणा गया—

---

1. विवाह का मुहूर्त 2. घर-खर्च के लिये प्रतिदिन के हिसाब से रकम तय कर दी 3. राज्य-कार्य में साथ रहे 4. बरात

दिवांण जोसी हंसराज, बषसी सिंघवी फौजराज, मु० मुकनचंद, म्हैतो विजैमल, रांणावत गंभीरसिंघ, षंचोळी पटानवेस भीनालाल, आसोपा व्यास सुरतरांम, भांनीरांम, हीरालाल, षजांनची प्रौ० चिमनीरांम नै जरजरषांना रौ दरोगो व्यास कंनीराम वगैरे, जिणां नै मंदील दुपटा दरजा मुजब इंनायत हुवा। अर जांन में घोड़ा १०००, ऊंट ३००, रथ २५, तांगा ४०, पींजस १५, गाडीयां २००, आदमी २००० आसरै। नै जाळोर सु समाचार आया कै भात १ तो लाफसी रो, नै दूजो षांड रा सीरा रौ, तीजो लाडवां रो नै डायजो[1] वगैरे चोषो दियौ। नै हाथी असवार हुवा तरै षवासी में भाद्राजण रा ठाकुर बैठा।

और जाळोर में तथा जांन में हैजा रो कारण हुय गयौ सो उठा सु कूच हुवौ। सु मते-मते लोक बंहीर[2] होय गया। नै जाडेचां सीष वद ७ नै दीवी।

जेठ वद ६ तथा ७ श्री हजूर री असवारी सूरसागर हुई सो दिन ४ तथा ५ विराजणो हुवौ। नै महाराज कंवार री जांन जेठ वद १० जोधपुर दाषल हुई। नै सांमेळो[3] सदामंद मुजब हुवौ।

जेठ वद ११ वड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी रै पड़दायत वड़ा सुंदररायजी रांमसरण हुवा, सो कागे दाग दिरीजीयो नै औसर जळेबीयां रो हुवौ जिण री षांड मण २०) गळी।

वद १२ श्री हजूर री असवारी सूरसागर सु गढ़ दाषल हुई।

संमत १९१० रा जेठ सुद ३ उमरावां नै मौसर हुवौ। आसोप, भेंसवाड़ो, सांडेराव, तिणां सु घड़ी दोयेक बतळावण हुई।

जेठ सुद ५ सीरीमाळी तिरवाड़ी जगनेश्वर अगनहोतर लियो तिण नै श्री हजूर सुं रूपीया १०००) दिरीजीया।

और आबूजी सु समाचार आया के बड़ा साहब मंगलवार के दरबार में सारा वकीलां सुणतां कहो कै हमारी सिरकार रूम के पातसा कु दोय कीरोड़ रूपीया मदत वासते दियो है कीहु के रूस वाळां की अर उनके लड़ाई के मुदे, जिसका व्याज रू० १००) लार मास १२ कै रू० ४) लेषे हिसाब भरीज जावेगे[4]। दूसरी आ कही कै सिरकार अंजरेजी पर कीरोड़.......रूपीया देणा

1. दहेज 2. रवाना 3. स्वागत 4. हिसाब से पूर्ति हो जाएगी

है जिसका व्याज वरस १ का रूपीया १०० लार रू० ४) साहुकार लोगां ने हमारी सिरकार में जमा कराया है। अर लोट[1] लिषा गया है सो रूपीया मांगीयां तो मीलेगा नहीं। अर सूत भलां ही षायां जावो अर लोट आपस में विक भी जाते हैं[2]। अर कहो कै सिरोही के राज पर करज व्होत है। अर राज का कांम हमारी सिरकार के सुपरद है सो महाराज तषतसिंघजी अेक लाष रूपीये आठ आंना सहीकड़े[3] देवें तो बेतर है। तरै वकील सेबाजषां कही—महाराज साहबां से अरज करावेंगे।

जेठ सुद ६ जांमनगर सु जाड़ेचा जालमसिंघजी वगैरे हमार व्याव करण नै आया। तीणां नै फुलमैल में मुजरो हुवौ नै घड़ीक बतळावण हुई।

जेठ सुद ६ भंडारी सिरीचंद रै मारोठ री हाकमी हुई।

जेठ सुद १३ श्री दरबार री वरसगांठ रौ उछव दरबार दौलतषांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ नै आबू ऊपर वकील घनरूप रै डेरे उछव हुवौ। नै साहब लोक सारा आया नै षांणो षायौ। नै आतसबाजी छूटी नै अमलो सारो जिमीयो नै पातरीयां भगतणीयां रो नाच हुवौ।

संमत १६१० रा असाढ़ वद ३ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी परणीजिया। जिण री जाफत श्री हजूर सु आबूजी ऊपर साहब लोक हा जिणां नै बाईस रजवाड़ां रा वकीलां नै अमला समेत दिरीजी।[4] सो अठा सु कोठार रा ओधादारां में पोतदार विसो रांमनाथ गयौ जिण रै लारै कंद[5] मण २०) वगैरे जिनस पैली दे मेलीयो सो मीठाई कंद री पाली में कराय लीवी। नै बाकी कंद रयौ सो लारै ले लियो सो उठै आबूजी ऊपर जाय नै मीठाई षावण वाळां रै तो डेरे आदमीयां रो गोणतो कर आदमी दीठ[6] मीठाई '१ अेक सेर पकी रे हीसाब सु मेल दीवी। नै साहब लोगां रा बबरचीयां रा केणा मुजब नै वकीलां रा रसोईदारां रा केणां मुजब कोरी जिनस मेल दीवी। जस चोषो आयो। नै षांड मण २५) तथा मण ३०) ऊपड़ी[7]।

---

1. नोट 2. ये प्रोमीजरी नोट बेचे भी जा सकते हैं 3. आठ आना प्रति सैकड़ा 4. स्थानीय राज्यों के वकीलों व उनके कर्मचारियों सहित गोठ दी 5. कलाकंद 6. प्रति व्यक्ति 7. खर्च हुई

असाढ़ वद ५ जांमनगर सुं जाड़ेचा जालमसिंघजी आया तिणां री मिजमानी मांयलावाग में उणां रो डेरो है, जठै हुई। जिनस मीठाई वगैरे सारी अन रा कोठार सुं मेलीजी। सो उणां रा आदमी वगेरे सारां नै मिठाई जिमाई। नै ठावा जालमसिंघजी वगैरे हा जिकां नै कंवळ चौक रा मैल रै डागळै जिमाया[1]। नै मनवार करण नै ईतरा जणां नुं मेलीया—जोसी हंसराज, मु० मुकनचंद, सोभावत उमेदकरण नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा गावण सारू मेलीया।

और श्रीजी साहबां री असवारी कायलांणे पधारी।

वद ६ सिवांणा री हाकमी जोसी सिवकरण रै हुई। नै मेड़ता री हाकमी सिं० पेमराज रै हुई।

असाढ़ वद ११ जांमनगर रा जाड़ेचा जालमसिंगजी वगैरे री मिजमांनी कायलांणे फेर हुई। सारां नै जिमाया नै जालमसिंघजी ने श्री हजूर में रूबरू आसो पायौ[2] नै आज इणां नै सीष रो मुजरो हुवौ।

असाढ़ वद १३ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी री कंवराणीजी श्री जाड़ेचीजी नै पीहर जांमनगर पोंछावण वासते सिंघवी सिवराज जावै जिण साथै इण मुजब गया—

हाथी ४, पालषी १, रथ १०, तांगा ७, घोड़ा १५०, गाड़ीयां २५, ऊट ५०, पाला ४००।

नै असवारी कायलांणा सुं बाळसमंद पधारी।

वद १४ असवारी बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुई।

और अजंट साहब आबूजी सुं जोधपुर आवै सो आउवे ठाकुर कुसालसिंघ बषतावरसिंघोत नै वुलाया सो वड़ी धामधूम सु आदमी पांच सै सुं आया। साहब सुं मुलाषात हुई, दसतूर मुजब पेसवाई हुई नै अंतरपांन हुवा। नै साहब ठाकुर नै कयौ कै तुम महाराज साहब की रोटी षाते हो अर हुकम मांनते हो नहीं। गांव विठोरे के ठाकुर कांनसिंघ कुं षोळे लिया[3]। महाराज साहब से

1. छत पर भोजन करवाया 2. सामने बैठाकर आसा नामक शराब पिलाई 3. गोद लिया

मालम कराय के, अर तुम कु पूछकर कांम कीया सो तुमने कांनसिंघ के पग में बेड़ी डाल दीवी । अर उसके साथ काकांड़ी का ठाकुर गोरधनसिंघ उसके भी वेड़ी डाल दिनी जिस बाबत हमने आबूजी से चपड़ासी कु तुमारे नांवे षत देकर भेजा सो आउवा में बड़ण दिया नहीं[1] । सो आपके दिल में बड़ा घमंड है । सो ये बात तुमने ब्होत नादांनी की कीवी सो तुमारे हक में बुरा होगा, कीहुंकै जिस मालक की रोटी षावे जिसका हुकंम नहीं मांनणा ? सो हम कु बड़ा अफसोच आता है कै आउवा आपसे तो जावे ही[2] । अगर तुमारे लड़का ये पास बैठा है ईसके भी रेणा ब्होत मुसकल मालम देता है । ईण ताछ[3] मोषळो कयौ सो घबराय तरवार अजंट साहब रा मुढा आगै[4] धर दीवी । पछै वकील पं० धनरूप रै नै ठाकुर रै बोलणो पड़ीयो[5] सो ठाकुर ने नाजाब कर दिया ।

और वाभा मोतीसिंघजी रो व्याव सीकर रा वाभा हुकंमसिंघजी री बेटी सु असाढ़ सुद ७ रा सावां ठेरीयो । सो जांन आज चढ़ी । सु जांन में जोसी सिवनारांयण दिवांण रो भाई नाजर हरकरण नै मुसायब पंवार अनाड़सिंघ किलेदार ने जरजरषांना रो दरोगो व्यास कनीरांम नै छतीस कारषानां रा साथै गया नै उगुणां[6] सिरदारां नै हुकम पूगो सो सीकर सांमल हुवा ।

असाढ़ वद " (अमावस) अजंट सषसपीर साहब आबूजी सु आया । नै दिवांण, बगसी वगैरे पेसवाई में सांमा गया ।

संमत १९१० रा असाढ़ सुद १ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया, सो घड़ी चारेक बतळावण हुई इंकत ।

असाढ़ सुद १४ कोटा सु पं० धनरूप नै तुंवर प्रतापसिंघ आया । सो डेरो चंडावळ री हवेली में कीयो ।

और जाळोर री हाकमी मु० पुनमचंद मुकनचंद रा बेटा रै हुई । नै गोढवाड़ री हाकमी जोसी कीसनदास रै हुई ।

1. चपरासी को आउवा ग्राम में घुसने नहीं दिया 2. आप तो महरूम होंगे ही 3. इस तरह 4. सामने 5. आपस में वाक्युद्ध हुआ 6. पूर्वी इलाके के

संवत् १९११ का विवरण

संमत १६११ रा सांवण वद १ तथा २ असवारी जनांना समेत रांणीसर पधारीया।

वद ११ असवारी कायलांणे पधारी।

वद १३ जैपुर सुं समाचार आया कै श्री बडा बाईजीसा रौ पटो थो सु राज में जबत कर लीयो[1]। नै इसा समाचार कया कै जोधपुर का आदमीयां सुं पटो केवटीजे नहीं[2] सो अठा को काज कीरीयावर को षरच लागसी सो लगाय नै जमां बंद सी[3] सो श्री माजीसा नै भेज देसां। आ बात तो चौड़े कही नै मांय मुदो[4] कै पं० सोभारांम सु रावळ सिवसिंघ बेरीसालोत बेराजी[5] थो तिण मुदे जबत कीयो। तिण रा बंदोबसत वासते नै आंपणो कबजो करावण मुदे नायब वकील लाला ईसरीप्रसाद नै पटानवेस वकील पं० धनरूप री मारफत जैपुर में लीयो।

सांवण वद १४ पोकरण रा ठाकुरां नै बुलावण मुदे षास रूको ईनायत हुवौ।

संमत १६११ रा सांवण सुद १२ अजंट साहब आज अठा सुं चढीया नै वकील पं० धनरूप साथै हाथी हौदा री नै सुतरी मेलीजी।

सुद १४ सिरीमाळी विरांमण समसतां नै सीरा रो विरमभोज दिरीजीयो सिवबाड़ी में।

और अजंट साहब री सफर नागौर कांनी हुई सो नागोर रा गढ़ में सुद १५ डेरो हुवौ।

अमलो पंचायत समेत, सो अमलो पंचायत तो किला रा चौक में डेरा षड़ा हुवा जिण में रयौ नै साहब मैलां मै रया। नै पछै अजंट साहब डाक में बीकानेर गया सो भादवा वद १३ नै बीकानेर रा राजाजी सुं मुलाषात कर पाछा डाक में नागौर आय गया।

---

1. गांवों का पट्टा राज्य में ले लिया गया 2. उचित ढ़ंग से देखरेख नहीं होती 3. जागीर का जो भी रुपया शेष बचेगा 4. अन्दरूनी आशय 5. नाराज

श्रौर श्री हजूर सा फुरमायौ म्है ही नागौर पधारसां ।[1]

श्रौर दरीबे नांवा री कारकूंनी प्रौ० जेठमल चिमनीरांम रा भाई रै हुई । जोसी प्रभुलाल री श्ररज सुं ।

संमत १९११ रा भादवा वद ४ श्रीजी साहवां री असवारी कायलांणा सुं बाळसमंद दाषल हुई ।

भादवा वद ११ जनांनी दोढ़ी री दरोगाई नाजर हरकरण रै नांवे हुई ।

भादवा सुद ४ गणेस चौथ रो मेळो रातेनाडे चोषो हुवौ नै चांतरो जोधपुर रा री मुसरफी थानवी हरदेव री हुई ।[33]

सुद ५ श्री हजूर री असवारी जनांना नै कवरां समेत नागौर पधारीया । तरै श्रजंट साहव किला में थो सु झंडा ऊपर डेरो कीयो ।

सुद ७ श्रजंट सर सषसपीर साहब झंडा उपरला डेरा सुं किले श्री हजूर में श्राया घड़ी दोयेक इंकत बतळावण होय सीष हुई । सु सुद ८ ने जोधपुर नै चढ़ीया ।

सुद ११ ठाकुरजी श्री कनीयालालजी किला में विराजे तिणां री श्रसवारी हुई सो तळाब बषतसागर जुलण नै पधारिया । नै मेळो देषण महाराज कंवारां री श्रसवारी तळाब बषतसागर ऊप्र पधारी ।

श्रौर श्री हजूर साहवां रा हुकम सु वकील पं० धनरूप श्रजंट साहब नै कही कै ठाकुर वगड़ी का हुकम मांनता नहीं है । नै घोड़ा नोकरी में भेजता नहीं ।[2] श्रर राज का श्रादमी जाता जिसकुं गैरजबां बोलता नै नीकाळ देता है । सो ये सषस सझा के लायक है[3] । सो इसमें श्रापकी क्या राहा (राय) है ? जद श्रजंट साहब पाछौ कयौ कै महाराज साहब कुं ईगतीयार है इसकुं सझा देणी है तो फौज भेज के बेसक सझा दो । हमारी श्रेन षुसी है[4] । जद धनरूप श्री हजूर में श्ररज करी कै बगड़ी वाळां नै सझा देणरी साहब षुलासे दवायती[5] दे दी है । सो मरजी होय जद फौज मेलावे । तरै श्री हजूर साहब धनरूप

1. हम भी नागोर जाऐंगे 2. सरकारी चाकरी हेतु निश्चित किए हुए घुड़सवार नहीं भेजता 3. सजा देने योग्य है 4. हमारी सहर्ष रजाबन्दी है 5. मंजूरी

सूं राजी होय नै नीवाजस[1] इण मुजब ईनायत हुई—कड़ा १, मोती १, कंठी १, सिरपेच १ नै पालषी १ नै कांमेती ब्यास गेरमल नै लालो गोकळप्रसाद जिणां नै कड़ा दुसाला हुवा।

और बगड़ी रा ठाकुर नै अजांणचक[2] पकड़ मंगावण री तजवीज ठेरी। सो सिंघवी कुसळराज हांकारो भरीयौ[3] कै मरजी मुजब बंदोवसत हुय जावसी।

और अजंट साहब वकील धनरूप नै कयौ कै नागौर सैर की तवारीष मंगावो सो हम अंगरेजी में तरजमां[4] करेंगे। जद कानूगां नै बुलाय उतराई, तिण री विगत—

(१) सैर नागौर संमत ११११ रा वेसाष सुद ३ चवांण प्रिथीराज री बार[5] दायमे मत केमास वसायो, कीलो कराय, गढ़ री पोळां ३ कराई ने सफील रा कांगरा गिणती ८१८ है।

(२) बुरजां ३० है नै पोळ ३ महाराज श्री बषतसिंघजी कराया। जुमले पोळां ६ किलो ईस[6] गज ९५५ नै उपले[7] गज ४९९ मुकरड़ै[8] गज ४७७०४५ नै प्रगना लारे गांव ५५५ नै पटीयां ५२।

(३) और सुलतांन तारकीनजी संवत १३०७ फौत हुवा नै संबत १३३९ में तारकीनजी रै पोते हुसेन मसीत माही दरवाजां बारै कराई, मका में मसीत है जिण निमुने[9]।

(४) तळाब गिंदांणी कदीम सुं सैर में है।

(५) संमत ११७३ में चुवांण रतनसिंघ प्रीथीराजोत मारांणो तरै नागौर छूट गई।[10] तुरकांणी हुय गई[11] तरै नागौर रौ सोबो[12] नबाब षांनजादा रै हुवौ।

(६) संमत १४५४ राव चूंडाजी तुरकां नै मार नागौर लीनो।

(७) संवत १४५६ में तुरकां नागौर उरो लीनौ नै चूंडाजी आदमी १३ सुं कांम आया।

---

1. बख्शिश 2. अचानक 3. यह काम करना स्वीकार किया 4. अनुवाद 5. समय 6. लम्बाई 7. चौड़ाई 8. कुल वर्ग गज 9. उस तरह की 10. चौहानों के हाथ से निकल गई 11. तुर्कों का राज्य हो गया 12. सूबा

(८) संमत १५९२ में राव मालदेजी नवाब षांन म्हेमद कना सु नागौर लीनो। पछै पातसा हमाउ रा बषत में तथा हमाउ फौत हुवां पछै फेर तुरकांणी हुई।

(९) संमत १६८१ रावजी अमरसिंघजी नै नागौर पातसा लिष दीयौ।

(१०) संबत १७०१ में रावजी अमरसिंघजी आगरा में झगड़ौ कर कांम आयां पछै कायमषांनीयां नै नागौर पातसा लिष दीयौ।

(११) संबत १७१४ में महाराज श्री जसवंतसिंघजी ने पातसा दीयौ।

(१२) पछै नागौर इंदरसिंघजी रै हुवौ।

(१३) संमत १७७३ रा सांवण वद २ नै महाराज श्री अजीतसिंघजी इंद्रसिंघजी कनै ले लीयो तरै इंद्रसिंघजी री माजी सेवा ले महाराज श्री अजीतसिंघजी कनै आया नै लाचारी करी कै मनै नै इंद्रसिंघ नै जोधपुर ले चालो। तरै महाराज अजीतसिंघजी नागौर पाछौ इंद्रसिंघजी नै दे दीयौ।[1]

(१४) संमत १७८२ रा असाढ़ वद ८ महाराज श्री अभैसिंघजी नागौर ले नै छोटा भाई राजाधिराज बषतसिंघजी नै दे दियो नै कोट पको नै षाई पकी महाराज बषतसिंघजी करायौ। दरवाजा ६ जोधपुरियो १, नषास १, नवो १, माई १, दिली १, अजमेरी १ नै बारीयां २ समस री १, बषत सागर री १।

(१५) तळाव ७ सैर में गींदोणी १, समस १, सैर बारै प्रताप सागर १, बषत सागर १, झडां १, सकर तळाव १, लाल सागर १।

(१६) सैर में बसती[2] कोटवाळ हस्ते गिणती हुई तिण रा घर—
४०० पोकरणा वीरामणां रा
४५० दायमा वीरामणां रा
२०० गुजर गोड़ नै गोड़
२०० पारीक विरामणां रा
१०० संषवाळां रा

1. वापिस इन्द्रसिंह को दे दिया 2. जन संख्या, घरों की संख्या

१०० सीरीमाळी वीरामणां रा
८०० मेसरी महाजनां रा
४०० ओसवाळां रा
४०० सरावगीयां रा
१०० अगरवाळां रा
३३०० षूम जुलावा[1], लवार, सुनार, तेली, छींपा, नाई, धोबी वगैरे छतीस षूम रा
८०० पंचोळियां रा
२००० सूना घर

आसोज वद ७ मु० नागोर पोकरण रा ठाकुर घरां सूं आया तिणां नै मुजरो हुवौ। और पाली में महाजन नै जैन धरमी अर वेसनु चकराती वाळां रै उठै तळाव ऊपर मिंदर तिण री बारी मुदे आपस में झोड़ हुवो तिण बावत जैनीयां वाळा हटनाळ[2] घाल दीवी।

वद ११ जोधपुर री अजंटी री उकीलायत सिंघवी समरथराज रै हुई।

वद १२ सिंघवो कुसलराज बगड़ी चढ़ीयो तिण नै रोजबंदो[3] रौ दुपटो इनायत हुवौ।

सुद ४ श्री हजूर री असवारी नागोर सूं हुई सो जोधपुर बाळसमंद प्रवारा दाषल हुवा।

सुद ५ असवारी बाळसमंद सूं गढ़ दाखल हुई।

और सिंघवी कुसलराज नागौर सु चढीयो, सु मेड़ते घोड़ा बेली[4] भेळा कर[5] नै जैतारण डेरो कीयो। उठै फेर घोड़ा बेली भेळा कीया नै उठा सुं चढ़ गांव चंडावळ डेरो कीयो। चंडावळ डेरा हुवां रा समाचार बगड़ी ठाकुर सिवनाथसिंघ केसरीसिंघोत नै लागा, तरै दीसतो माल नै कबीला नुं ले नै निसर गया। जदे कुसलराज जाय बगड़ी में अमल कीयो। नै कंवर गांव में थो जिण नै पकड़ लियो। नै असबाब लादो[6] सु जवत कीयो।

---

1. जुलाहे 2. हड़ताल 3. दैनिक भत्ता 4. सहयोगी 5. शामिल करके 6. मिला

आसोज सुद ९ श्रीजी साहब मोतीमैल री दोढ़ी होय बाड़ी रा मैलां में पधारिया। सो श्री हींगळाजजी नै श्री कालकाजो री पूजा कर नै ससत्रां री पूजा कीवी। पछै जनांनी दोढ़ी रा पावड़ीयां ऊपर पधार हाथी घोड़ां री पूजा कीवी। पछै उठा सु तांमजांम में विराज मातोजो श्री चांवंडाजी श्री काळकाजी रा दरसण करण नै पधारीया, नै भेंट रू० ५) पांच नै नोछावर २) दोय कर पाछा पधार मरदांनी दोढ़ी रै मारग होय मैलां दाषल हुवा।

आसोज सुद १० श्री रामचंद्रजी री असवारी रांवण मारण नै पधारी। नै श्री हजूर री असवारी हाथी रें हौदे विराज षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा सो फतैपोळ रै मारग होय जाळोरी दरवाजा बारै पधार रांवण मारीयो। पछै घोड़े असवार होय बाहीवाल रे बुरछी मार पाछा रात रा उणी मारग पधार किले दाषल हुवा। तोपां री सिलकां १२५ सदामंद मुजब हुई।

नै नागौर में गुसांयां रौ नीसांण नै ठाकुरजी श्री रामचंद्रजी री असवारी हुई, रांवण मारण री। सो रांवण नै मार पाछी असवारी किले दाषल हुवां पछै दौलतषांना में महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी उठै हा, नै दीवांण जोसी हंसराज उठै हाजर थो सो दसरावा रो दरबार हुवौ। नै मुसदी हाजर है तिणां नै मुजरो आसरीवाद हुवौ।

सुद ११ भा० सुद १३ तांई बाळसमंद विराजीया नै सुद १४ असवारी हुई सु नागौर सुद १५ दाषल हुवा।

संमत १९११ रा काती वद ५ मुकांम नागौर गांव बड़ली री सींव में सिकार मुदे असवारी हुई सो दिन पोरेक चढ़ीयां पाछा किले दाषल हुवा।

वद ८ मुकांम नागौर टूंक रा नबाब री तरफ सु पठांण हेदाद म्हैमदषां आयौ, तिण रै आज सु पेटीया[1] कोठार सु सरू हुवा।

वद " (अमावस) नागौर दिवाळी रो दरबार दौलतषांना रा चौक में हुवौ। नै मिंदरां रा दुपटा सेली पधरीजीया, नै व्यास प्रोहीत तिलक आरती कीवी, पछै उमराव मुसदीयां री निजर निछरावळ हुई। कलावत[2] तायफा हाजर होय गावणो सरू हुवौ। पछै टूंक सु पठांण षलीतो ले आयौ तिण नै मुजरो हुवौ। निजर निछरावळ कीवी नै षलीतो निजर कीयो, पछै सीष हुई।

---

1. खुराक की सामग्री 2. गायक-वादक

संमत १६११ रा काती सुद ६ सिंघवी कुसलराज बगड़ी कायम कर षोड़ीया रो किलो पाड़ नै[1] ठाकुर रो कंवर छोटो सुलतांनसिंघ ने लेनै आयो, तिण नै मुजरो हुवौ। नै कंवर नै गुसांई म्हैन्त बषत भारथी रा डेरा में सूंपीजीयो।[2]

सुद ८ मुकांम नागौर असवारी सिकार मुदे हुई। सो गांव अमरपुरा नजीक पधारीया नै सिकार हुई न्हीं। नै दोफार रा पाछा किले दाषल हुवा।

सुद १४ मुकांम नागौर श्रीजी साहबां री असवारी जनांना समेत हुई सो गांव वसवांणी नै बरण गांव बापोड़ तीनुं गावां रा कांकड़[3] ऊप्र तळाव है जठै डेरा षड़ा हुवा, जठै दाषल हुवा।

सुद १५ चंद्रमा रो ग्रिण हुवौ।

संमत १६११ रा मिगसर वद १ गांव वसवांणी सुं हुकम आयौ, समा विरांमणां नै ब्रिम भोज किला में सीरा रो देण रौ। सो ब्रिम भोज छव न्यात पोकरणा विरांमण सीरीमाळी सांचोरा पुरबीया नदवांणा वगैरे सारां नै जिनस[4] दिरीजी सो सारा किला में जोमीया[5]।

वद ५ गांव वसवांणी सुं असवारी हुई, सो गांव सींणोद, भाषरोद, आलाय, वासणी, रड़ोद होय गांव हींगोली दाषल हुवा।

वद १२ गांव हींगोली सुं कूच हुवौ सो गांव वुटेची गांव बारै डेरा षड़ा हुवा, जठै दाषल हुवा।

वद " (अमावस) गांव वुटेची सुं कूच हुवो सु गांव षरनाल दाषल हुवा।

संमत १६११ रा मिगसर सुद १ गांव षरनाल सुं असवारी हुई सो ईमरतीये नाडै दाषल हुवा।

मोगसर सुद ८ इमरतीया नाडा सुं असवारी हुई सो किले दाषल हुवा।

---

1. ध्वस्त करके 2. हवाले किया 3. सीमा 4. सामग्री 5. भोजन किया

और पाली री हाकमी भं० सिरीचंद रै हुई। और मंमोई सु षबर आई कै विरषा घणो हुई सो समुद्र रौ जळ तोफांन[1] सु कर सैर में आय गयौ तिण सु नुषसांन लाषां रूपीया रौ हुवौ नै ज्याझां पीण डूब गई।

और अजंट सर सषसपीर साहब आबूजी सु उतरीया सो पाली सोझत नवेनगर होय अजमेर गया। पंचायत रा मुकदमा री रूबकार मुदे, सो उठै कराई।

मीगसर सुद १२ श्री हजूर रौ षलीतो अजंट साहब रै नांवे गयौ। जिणरो मजमून—कै मैं श्री गंगाजी जात्रा मुदे[2] जावसां सो मारग में अंगरेजी ईलाका में तथा दूसरा राजसथांन[3] मारग में आवसी, सो सरभरा[4] री फड़द उतार अठा सु मेली है जिण मुजब बंदोबसत हुवौ चाहीजे। जद साहब वकील कना सु फड़द मंगाय अंगरेजी में तरजमो[5] कर नै अंगरेजां नै अर रजवाड़ां रा अजंटां नै लिषावट कर दीवी। तिण रा आदमीयां री नै जिनस री विगत—

आदमो १५०००, घोड़ा २५००, ऊंट २०००, बळधां री जोड़ीयां १०००, हाथी २५। तिणां रै सरभरा मुकांम १ में सरभरा इण मुजब चाहीजे, तिण री विगत—

आटो मण ४००), दांणो मण ५००); घ्रित मण ४०), गुड़ मण १५०), फिटकड़ी मण ८), काळी मिरच मण १।) (संवा मण), चावळां री षीचड़ी मण ७), बूरो मण ५), तेल मण १५), घास मण ८००), माटी रा बासण ४०००, ऊंटां रौ चारो मण ८०), षांड चीणी मण ४०), दाळ मण ४०) जुमले चीज गिणती री मुकांम री मुकांम[6] इण मुजब तयार राषणी।

मिगसर सुद १५ अजमेर सु डाक में अजंट सषसपीर साहब नागौर आया साथै वकील सिंघवी समरथराज सो आज झंडा ऊपर डेरा हुवा। नै पोस वद १२ रा दाषल हुवा[7]।

संमत १९११ रा पोस वद २ अजंट साहब श्री हजूर में आया। सो दौलतषांना रा चौक में अंबा डेरो षड़ो हुवौ जिण में विराजीया। घड़ी दोय इंकत रया नै पछै साहब नै किला मांयलो वाग देषाय सीष हुई।

---

1. तूफान 2. तीर्थ-यात्रा के आशय से 3. राज्य, राजधानियाँ 4. आवभगत, सहूलियत 5. अनुवाद 6. प्रत्येक पड़ाव 7. प्रवेश किया

पोस वद ३ अजंट साहब श्री हजूर में आय सीष कर नागौर सु चढीया सो पाछा वद ४ अजमेर जाय पूगा ।

पोस वद ७ बगड़ी रो ठाकुर सिवनाथसिंघ केसरीसिंघोत अजमेर में अजंट साहब कनै गयौ, सु जाय नै कयौ—विनां कसूर म्हारौ ठिकांणो षोस लीयो[1] है सो मनै मिळीयो चाहीजे । तरै साहब कयौ—महाराज साहब की रकम नीकळे, उनकी सफाई करो, अर महाराज साहब कु राजी करो । ठिकांणा देणा उनके ईगत्यार[2] है ।

पोस वद " (अमावस) कपतांन दुरगाप्रसाद रा आदमी २०० किला में आया । नै श्री हजूर साहब मोती मैल रै डागळै पुरसी ऊपर विराजीया, नै कवाद हुई, नै तोप १ उणां साथै ही तिण रा फेर कीया,[3] सो निजर गुदराय ईनांम रा रूपीया ५०) दिरीजीया ।

संमत १६११ रा पोस सुद १ मुकांम नागौर सेष गुलांम मेदी रो लोक तोप नागौर रवै सो हाजरी मुदे किला में आया । सो हाजरी हुई नै ईनांम रा रूपीया ५०) दिरीजिया ।

पोस सुद ३ मुकांम नागौर अलवर सु भाट बळदेव उठा रा कामेतीयां रौ कागद नाजर उजीर (वजीर) बगस रै नांवै लायौ, सो श्री हजूर में मालम हुवौ नै पाछौ कागद वजीर बगस रा नांव रो लिषीजीयो ।

पोस सुद ७ श्री महाराज कंवारां री नै जनांनी असवारी नागौर सु जोधपुर नै हुई । जिण वषत रात पोर अंदाजे गई थी सो नागौर रा महाजन नै लुगायां कर आदमी ४०० आसरे अरजाउ[4] बैठा था सो असवारी रा म्हाडोळां रै आडा फिराया[5] जिकां नै तो तकरार कर पसवाड़ै[6] कर असवारी तो जोधपुर नै रवांनै हुय गई नै नाजर मुसताक पाछो जाय श्री हजूर में अरज करी कै महाजनां नै उणां री लुगायां जनांना महाडोळ धूल[7] सु भर दीया । तरै श्री हजूर साहब रीस[8] कर फुरमायौ—महाजनां नै तो पकड़ मांय घाल दो, नै लुगायां नै बांसां सु कुटाय काढ दो । सो बांस ले चरवादारां नै ले नाजर मुसताक महाजनां नै तो पकड़-पकड़ चौतरे भाषसी में घलाया नै लुगायां नै

---

1. छीन लिया 2. अधिकार में 3. तोप दागी 4. निवेदन करने हेतु 5. पालकी के सामने खड़े हुए 6. एक तरफ 7. मिट्टी 8. गुस्सा

बांसां सु कुटाई। पछै महाजनां रै ऊपर दोय च्यार दिनां मांय जुरबानां रा रूपीया.........ठैर[1] सीष हुई। नै नागौर री कोटवाळी नाजर हरकरण रो भाई दवे लिषमीचंद रै हुई।

पोस सुद १३ श्रीजी साहबां री असवारी नागौर सु हुई सो सुद १५ जोधपुर बाळसमंद रै वाग दाषल हुवा।

संमत १९११ रा माह वद २ अजंट साहब अजमेर सु पुसकरजी मेड़ते होय जोधपुर वद ९ आया सो दिन ३ रया। सो पछै बाड़मेर कांनी गया। पंचायत अठै राषी नै अमलो[2] दफतर साथै ले गया।

माह वद ११ बाळसमंद पोकरण ठाकुर नै मौसर होय बतळावण हुई।

वद १२ श्रीजी साहब तीरथ जात्रा करण नै श्री गंगाजी पधारसी सो मेड़तीये दरवाजे उदैमींदर रा कोट बारै डेरा षड़ा हुवा, नै झिडो षड़ो हुवौ।

वद १३ रांणीजी श्री बड़ा तुंवरजी साहबां रै पंचमासी रौ उछव बाळसमंद सदामंद मुजब हुवौ।

माह सुद ९ श्रीजी साहबां री असवारी तीरथ जात्रा करण नै पधारसी सो अगाड़ी श्री महाराज कंवार री असवारी मेड़ते पधारण रौ कूच हुवौ नै साथै दिवांणी जोसी हंसराज नै राव राजमल गया।

सुद १० वाली प्रगना सु नजीर म्हेमद रो लोक, तोप १ असवारी में साथै हालण मुदे आयो तिणां री हाजरी हुई। नै ईनांम रा रूपीया २५) दिरीजीया।

और आउवे रो ठाकुर नै आसोप, नींबाज तीनूं सिरदार अेक बगी में बैस गांव रीयां आउवा रा पटा री जठा सु साथै आया। सो सैर में आप आपरी हवेली में डेरो कीयो।

माह सुद १३ अजंट साहब बाड़मेर सुं आया।

सुद १४ श्री हजूर में आया, घड़ी दोयेक रया।

---

1. निश्चित किये जाकर 2. कर्मचारी वर्ग

ग्रौर ग्राउवो, ग्रासोप, निवाज वगैरे श्री हजूर में मुजरो कर नै ग्रजंट साहब कनै गया। तरै ग्रजंट साहब ग्राउवे रा ठाकुरां नै कयौ—कै ठाकुर साहब ग्रापने कांनजी कुं कैद कर दिया सो ब्होत जुलम कीया। सो इसकी ग्राप महाराज साहब से राजीनांवा न करो, नै सफाई न करो, जव तलक मैं ग्राप सुं नाकुस[1] हुं। जद ठाकुर पाछौ कयौ कै वो जो ठीकांणा विठोरा है उबमें हक मेरा है सो मेरी विगर दवायती[2] बैठा जद मैं ये कांम कीया। सो ग्राप मरजी ग्रावे तो दूसरा सिरदारां से पूछ तेतीक[3] कराय लीरावें। जद साहब कयौ—जो सिरदार करे सो ग्रापकुं मंजूर है? तरै ठाकुर कयौ--मंजूर है। जद साहब कयौ—ग्राप केवौ जिस सिरदार पर रखें। जद ठाकुर पाछौ कयौ—पोकरण ठाकुर वभूतसिंघजी केवै सो मंजूर है। जद साहब कही—ग्राप समज कर केवो, फेर कुछ नहीं होगा। ठाकुर केवें सो करणा पड़ेगा।[4] जद फेर पाछी ठाकुर कही—ठाकुर करसी सो मनै मंजूर है। पछै साहब दूसरे दिन पोकरण ठाकुरां नै बुलाय ग्रेवाळ सगळो कयौ, ग्रर पूछीयौ—ग्रापकी क्या राहा[5] है सो कवौ। जद ठाकुर कही कै कुसालसिंघजी कांम तो बेजा[6] कीयो। सो सिरकार है माफ करै तो ठीक नहीं तो कांम तो गुनेगारी जोगा[7] कीया है। पछै मरजी ग्रापकी ग्रर श्री हजूर साहबां की। पछै साहब ग्राउवे ठाकुरां नै सफा कवाय दियौ कै श्री महाराजा साहब कुं जुरवांना दे सफाई करो। तरै ग्राउवे ठाकुर घर में सला कर नै जुरबांना रा रूपीया (५०००) रो रूकौ श्री हजूर में लिष नै देणौ विचारीयो[8], सो ग्रा षबर नीवाज ठाकुरां नै लागी। तरै कांमेती मुं० बषतावरमल नै मेल नै ठाकुर नै कवायौ कै रूकौ लीष नै ग्रौ सरसतो काढो मती[9]। म्हे भेळां हां[10], सांमल होय साहब से पडुतर[11] करां। तरै ठाकुर पाछौ कवायौ—हुं तो पैली साहब कनै हांकारो भर लीयो सो म्हां सुं तौ पाछो पडुतर हुवै नहीं ग्रै समाचार कै नै कांमेती व्यास हेमकरण रा नांव रो रूकौ रू० ५०००) रो लीषाय हेमकरण रा दसषत कराय नै हेमकरण साथै रूको श्री हजूर में मेल दीयौ। सो श्री हजूर साहब रूकौ ले नै पाछो घणीयाप कर नै[12] इनायत कीयो। सु हेमकरण ठाकुर नै पूछीयां विनां लीयो नहीं। सो पछै केई दिनां रा ग्ररसा सुं[13] पाछो इनायत हुय गया।

---

1. नाखुश 2. स्वीकृति 3. जांच 4. जैसा पोकरन ठाकुर कहेंगे वैसा ही करना पड़ेगा 5. राय 6. ग्रनुचित 7. गुनहगार ठहराने योग्य 8. विचार किया 9. यह परम्परा मत डालो 10. हम ग्रापके शामिल हैं 11. सवाल-जबाव 12. स्वामित्वमयी उदारता दिखाकर 13. कई दिनों बाद

फागण वद ७ अजंट साहब री मिजमांनी पोकरण ठाकुरां री हवेली हुई, दसतूर मुजब षांणो, नाच आतसबाजी वगैरे सारा हुवा ।

फागण वद ६ रा पोकरण रा ठाकुर नै मौसर हुवौ। घड़ी दोयेक बतळावण हुई ।

फागण वद १० उमरावां नै मौसर हुवौ । आउवो, आसोप, निबाज, भादराजण, बाकरो, समदड़ी, लवेरो फेर ही दस बारै आसांमी घरां सु आया । तिणां नै मुजरो हुवौ ।

संमत १६११ रा फागण सुद १ अजंट साहब री मिजमांनी आउवा री हवेली पोकरण वाळां सरसते[1] हुई ।

सुद ३ अजंट साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया । घड़ी दोय इंकत रया नै श्री हजूर साहब फुरमायौ कै म्है तो गंगाजी जावां हां नै लारै कांम री मुकत्यारी जोसी प्रभुलाल नै किलादार अनाड़सिंघ नै सूंपी है सो थांसूं सला मिळाय लेसी[2] । नै म्हैं पाछा आवां जितै थे पीण संभाळ राषजो[3], थांरै भरोसे है ।

सुद ४ श्री हजूर साहबां रो कूच जनांना समेत हुवौ, सो डेरा गांव वीसलपुर हुवा । और लसकर में तो कांम जोसी हंसराज करै नै जोधपुर में जोसी प्रभुलाल करै जिणमें किलादार रा आषर[4] रजु दफतर किले इतरा हुवां सुं जबती-वाली[5] री······बगैरे सही हुवै नहींतर[6] सही हुवै नहीं ।

फागण सुद ८ फौजदारी अदालत म्हो॰ प्रतापमल पं॰ भीनालाल रै हुई । और दीवांणी अदालत आसोपा उतमरांम रै हीरालाल री अवेज । सोझत री हाकमी सिं॰ इंदरमल ता······उमेदमल रै डीडवांणां री हाकमी भं॰ गेवरचंद रै हुई । गोढवाड़ री हाकमी भं॰ भागचंद रै हुई और मेड़ता री काटेवाळी तवेला रा पाला कचरुषां रै दुवायती[7] आई । सु सिंघवी फौजराज अरज कर मोकुब[8] रषाई ।

---

1. सामान, उसी तरह 2. तुम्हारे से परामर्श करते रहेंगे 3. देख-रेख रखना
4. हस्ताक्षर 5. जब्ती-बहाली 6. वरना 7. स्वीकृति 8. स्थगित

फागण सुद १२ श्री हजूर साहबां रा लसकर रा डेरा गांव पींपाड़ हुवा, नै नीबाज ठाकुर सवाईसिंघ सांवतसिंघोत गोठ री तयारी कराय दीवी नै हाथी १, घोड़ा २ श्रीजी साहबां रै नीजर कीया।

फागण सुद १३ श्रीजी साहबां रा लसकर डेरा गांव बोरूंदै हुवा। फागण सुद १४ तथा १५ डेरा मेड़तै हुवा। होळा छालोड़ी मुदे मेड़तै मुकांम ५ पांच हुवा।

फागण सुद १५ रो उछव होळी रौ श्री हजूर साहब तो मेड़तै करायो नै जोधपुर में दौलतषांना रा चौक में मुतसदी हाजर था जिणां रै व्यास तिलक कियो, तायफा हाजर था सु गायन नै नौबत सैदानां सदामंद माफक हुवा।

संमत १६११ रा चैत वद ८ सील रौ नै घुड़ला रौ मेळो सदामंद माफक हुवौ। मेड़ता सु कूच वद ५ हुवौ। सु गांव थांवळै डेरो हुवा नै मुकांम २ रया।

चैत वद ७ गांव भषरी हुवा नै सरभरा ठाकर सु बणी नहीं। वद ८ डेरा लसकर रा परबतसर हुवा। नै परबतसर रा डेरा किसनगढ़ रा महाराज प्रथीसिंघजी बद ६ आया जिणां सांमै श्री हजूर साहब षासै वीराज नै कोस पूण सांमै सरसता मुजब पधारीया, नै मीलाप हुवौ। उठा सु षासा में माराज प्रथीसिंघजी नै सांमे[1] बैठांण लिया। आगे महाराज कल्यांणसिंघजी नै वड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी रूपनग(र) डेरां सांमां बैठाणीया हा। उण सरता सु बैसांणीया। पछै डेरां दाषल हुवा। नै किसनगढ़ वाळां री सरभरा कोठार सु तथा बागर सु आछी तरै हुय गई। और कुचांमण ठाकर रणजीतसिंघ सिवनाथसिंघोत घोड़ा वेली जालमसिंघोत सारा साथै बड़ी जलुसायत आया सु श्री हजूर साहव देष नै षुस हुवा। कै पर-मुलक[2] मै जावां हां सु त्यारी इण मुजब ही जोईजै।

चैत वद ६ किसनगढ़ महाराज श्री हजूर मै अरज करी कै अठा सु लसकर रा डेरा किसनगढ़ करावण री दुवायती फुरमाईजै। सारी सरबरा तयार कराय राषी है। सु दोय तीन दिन बिराज पछै आगा पधारै। पछै

---

1. अपने सम्मुख 2. दूसरा मुलक

षैंच नै[1] दोय तीन वार कयौ जद श्री हजूर फुरमायौ कै पाछा घिरतां[2] जरूर ग्रावसां । ग्रर दोय च्यार दिन मुकाम करसां ।

चैत वद १२ परबतसर सुं कूच हुवौ सो डैरा किसनगढ़ रौ गांव........ हुवा नै वद १३ डेरा सांभर हुवा सो मुकांम ३ वद " तांई रया ।

संमत १६११ रा चैत सुद १ सांभर सुं कूच हुवौ सु जेपर ईलाषे रो गांव जोबनेर जठै डेरा हुवा । नै उठै भाषर मै माताजी श्री ज्वालामुषजी रौ थांन[3] है सु लसकर रो लोक सारो दरसण करण नै गयो सो मेळो हुवै ज्युं हुय गयौ ।

चैत सुद २ डेरा गांव पचार हुवा ।

सुद ३, दिन ऊगां कूच हुवौ । सो डेरा तो ग्रागे जैपुर मोती डूंगरी कनै षड़ा हुय गया नै ग्रठी सुं तो श्री हजूर पधारीया नै उठी सुं महाराज रांमसिंघजी सांमा ग्राया । ग्रमांनीस रा नळा सुं उली तरफ सांभर तथा झुठवाड़ा[4] री तरफ पांवडा पांचसैक तांई पधारीया । दुतरफा हाथी ग्रसवार हुवा जिण में श्री हजूर रै लारै तो पोकरण ठाकुर बभूतसिंघ सालमसिंघोत बैठा नै बाजू जीवणी हाथी ऊपर ग्राउवे ठाकुर कुसालसिंघ बषतावरसिंघोत बैठा नै बाजू डावी रास ठाकुर भींवसिंघ भोमसिंघोत, बैठा । नै श्री महाराज कंवार पांच श्री जसवंतसिंघजी, श्री जोरावरसिंघजी, श्री परतापसिंघजी, श्री किसोरसिंघजी, श्री रणजीतसिंघजी नै वाभा मोतीसिंघजी ग्रै सारा ही ग्रसवारी में मुढा ग्रगाड़ी[5] जलूसी पोसाषां पधरायां हाजर हा नै सिरदारां तीनां रै हाथां में मोरछल नै मावतां रा हाथां में सुरे गायरा छंवर[6] हुतां थका । नै महाराज श्री रांमसिंघजी रै लारै दूंणी रा राव जीवणसिंघ नै बगली रा[7] हाथीयां ऊपर ग्रेकण कांनी[8] तो गीजगढ़ रा ठाकुर जुंझारसिंघजी नै ग्रेकण कांनी डिगी रा ठाकुर भींवसिंघजी बैठा । सु जलूस सूं दुतरफी ग्रसवारीयां हुय मुलाषात हुई । पछै दोनूं साहवां रा हाथी बराबर राष बातां करतां जैपुर में सिरे बजार हुय पधारीया । नै जैपुर रो बजार सीणगारीजीयो नै जैपुर रो लोक सारो दरसण करण नै भेळो[9] दुकानां रै डागळा[10] ऊपर हुवौ सु मायौ

---

1. जोर देकर 2. लोटते समय 3. स्थान 4. झोटवाड़ा 5. सम्मुख, आगे 6. सुरही गायों के पूंछ के बालों से बने चामर 7. बगल में 8. एक तरफ 9. शामिल 10. छत

नहीं। सो पछै सांगानेर री चौपड़ में पधार नै श्री हजूर तो जवरी (जौहरी) वजार में पधार सांगानेरी दरवाजा बारै हुय रांमवाग डेरां दाषल हुवा नै महाराज रांमसिंघजी सिरे दोढ़ी हुय मैलां दाषल हुवा नै डेरा हुवा बाद जैपुर रा मुसायबां री गळती सुं घास मुगधणो[1] चारो[2] वगैरे सरभरा[3] पूरी हुई नहीं तरै श्री हजूर सुं मोल षरीदण रो हुकम दियो। सु मोल षरीदीजीयो नै उठै जैपुर रा डेरां फौज री हाजरी आदमी २८,००० री हुई।

और जोधपुर में श्री गवर माताजी पांणी पीवण नै किला सु मांयलेवाग जलूसी असवारी मांयले वाग पधारीया।

संमत १९११ रा चैत सुद ४ रांणीजी श्री तुंवरजी वडां रै महाराज कंवार हुवा तिण रौ उछव सदामंद मुजब हुयौ नै तोपां री सिलकां १२५ हुई।

चैत सुद ९ श्री गवर माताजी री असवारी बोलावणी री किला सुं सदामंद मुजब तळाव गुलाबसागर ऊपर पधारी।

सुद १० जोधपुर षबर आई कै श्रीजी साहवां रा मुकांम जैपुर पचीस हुसी।

वेसाष सुद १ भोम बड़ा साहब आबूजी ऊपर आंव[4] दरबार में कही कै डाक में षबर आई है कै रूम अर रूस के लड़ाई तो ब्होत दिन से हुती है परंत रूस का पातसा निकलस हैजा की बेमारी से फौत होय गया अर उसका लड़का अलषजलंधर तषत बैठा, सो उसी बषत हुकम दिया कै रूम अर फरासीया अर अंगरेजां से लड़ाई होती है सो वो तो तीनुं सांमल है नै अपनी सिरकार अेक है सो लड़ाई होणे दो अर जो फौज में जो सामांन चहीये सो हमारे से लो। अर दुनीयां में अेसा जाहार नहीं होवे कै रूस का पातसा निकलस फौत हो गया है, सो लड़ाई बंद होय जायगी। सो हाल तक लड़ाई वैसी सरू है अर इस लड़ाई में च्यारू सिरकारां कै अड़बां[5] रूपीये षरच पड़ चुके हैं अर च्यारू सिरकारां के आदमी लाष अेक मर चुके हैं। अर दुतरफी फौज लाष सात आदमीयां री है नै तोपां ५६०० हैं।

---

1. जलाने की लकड़ी 2. जानवरो के लिये घास आदि 3. व्यवस्था, खातरी
4. आम 5. अरबों

बैसाष सुद ३ आषा तीज रौ दौलतषांना रा चौक में विछायत हुय उछव हुवौ, जिण में दिवांण, किलेदार और ठावा-ठावा मुसदी सारा हाजर था तिणां रै तिलक व्यास रिणछोड़दास कीयो नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा सदामंद मुजब गाया।

संमत १९११ रा जेठ वद ८ अजंट साहब बाळसमंद सु आबूजी नै चढीया, साथै अमलो नै पंचायत गई।

वद ९ गोकल रा गुसांईजी श्री गोकलनाथजी अठै चौपासणी इणां रा भाई गोपाललालजी नै परणावण नै पधारीया। सो गुसांईजी श्री कृष्नजीवणजी महाराज री भांणजी परणीजीया[1] नै आज श्री गोकलनाथजी ठाकुरजी श्री मुरलो मनोहरजी रा दरसण करण नै किले ऊपर पधारीया। सो दौलतषांना रा चौक में विराजीया। सो श्री दरबार री तरफ सु रू० ५१) भेंट हुवा नै मुसदीयां री भेंट जुदी[2] हुई।

जेठ सुद ८ अंगरेजी महीना री तारीष २४ सो पातसाजादी[3] री आज सालगीरे है सो आज बरस ३४ री हुई।

जेठ सुद १३ श्री हजूर रो वरसगांठ रौ उछव दौलतषांना रा चौक में विछायत हुय नै हुवौ। दिवांण, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा हाजर हवा। रंग रा छांटणा सदामंद मुजब हुवा नै व्यास सारां रै तिलक कीयौ नै कपड़ा रा कोठार वाळां सारां रै अरगचो लगायौ नै तूंग डोडा लाय हाजर किया। सो म्हेता सिरदारमल रा हाथ सु बंटीजीया नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा गाया नै नौबत सैदानां सदामंद मुजब हुवा। नै इणी मुजब आबूजी वकीलां रै डेरे उछव[4] हुवौ, नै साहब लोक सारा आया।

और वडा साहब आंम दरबार में कह्यो कै रूस के अर रूम के लड़ाई तो ब्होत दिनां से चली आती है सो हमारी सिरकार अर फरासि की सिरकार का वकीलां ने रूस के पातसा से कया कै सुले[5] होय जाय तो अछी बात है। तुमारा किला हमारे कबजे में है सो तो हम दे देवें नै तुम हमकु रसता दे देवो। सो आ बात रूसीयां ने मंजूर कीवी नहीं, नै कयौ कै क्या जळदी है।[35]

---

1. शादी की 2. अलग से, अतिरिक्त 3. रानी विक्टोरिया 4. उत्सव 5. सुलह

संमत १६११ रा असाढ़ वद ५ भोम रा दरबार में फेर बड़े साहब कही कै रूम की अर रूस की लड़ाई में हमारी तोपां तीन हजार कुल है जिणमें पचीस सै तोप तो रूस वाळां नै रोक रषी है, सो पांणी में अटकी पड़ी है। अर तोप पांच सौ चलती है। और चालीस कीरोड़ रूपीया हमारी सिरकार का इस लड़ाई में उपड़ चुके हैं[1] षरच फेर षबर नहीं[2]। लड़ाई कब मीटेगी अर रूम की तरफ फौज फरासीसां सुधी दोय लाष है अर रूस की फौज पांच लाष है।

और षबर सुणी कै वीकानेर महाराज सिरदारसिंघजी कुंभ रै मेळे हरदुवारजी[3] पधारीया सो पाछा पधारतां अलवर रा रावराजा वनेसिंघजी री बेटी सुं ब्याव कीयो।

बद १३ मंगल रा दरबार में बडे साहब कही कै हमारो सिरकार कै अर रूसीयां कै लडाई जिस समै हमारी सिरकार कै ३६ तोप हात आई। अर लड़ाईयां २३ बराबर हुई। अर हमारे फौज में सीपाई काम आय गये जिनकी औरतां कै अर उनका बालबचां कै वासतै षाणै कै वासतै विलायत लंदन में अर फौज में चंदा कीया जिस के रूपीया १,२२,००,०००) अेक कीरोड़ बाईस लाष भेळा हुवा। सो मारे गये उनकी औरतां कुं अर छोटे बालबचां कुं देते हैं। अर लड़ाई दिन २८ अठाईस हुवा बराबर चली जाती है जिसमें सिरकार अंगरेजी की फौज का पग कचा रया[4]। हमारा लोग बोत मारा गया। रूस वाळां की जीत रही। दूसरी ये बात सुणी कै ईरांन कै अर रूस कै सफाई[5] होय गई अर दुतरफा वकील रषणा ठेर गया है[6]। सो ये बात सच है तो हमारी फौज कुं मुसकल होगी।

संमत १६११ रा प्रथम असाढ़ वद ३ वड़ा महाराज मांनसिंघजी रा वाभा सरूपसिंघजी आप रा पटा रै गांव मालावास था सो उठै रांमसरण हुवा[7]। उणां रा कबीला कांमेतीयां नै षातर करण नै श्री दरबार सुं दोढीदार प्रो० विरधीचंद नै मेलीयो। नै वाभा लालसिंघजी, सिवनाथसिंघजी, सोनसिंघजी तो श्रीजी री असवारी में साथै था नै वभूतसिंघजी, राजसिंघजी, सजनसिंघजी

---

1. खर्च हो चुके हैं 2. न मालुम और कितने खर्च होंगे 3. हरिद्वार 4. अंग्रेजों की फौज कमजोर रही 5. आपस में समझौता हो गया है 6. दोनों पक्षों के वकील रखना नश्चित हो गया है 7. देहान्त हो गया

मालावास कारज ऊपर गया[1] सु वभूतसिंघजी..
पाग बंधाय दीवी ।[३६]

प्रथम असाढ़ सुद १३ श्रीजो साहबां री असवारी मांय सुं गायण मगरायजी गंगरायजी नै लालजी श्री जवारसिंघजी अर सुलतांनसिंघजी आया सो किले दाषल हुवा ।

दुतीक असाढ़ सुद ८ श्रीजी साहबां री असवारी मांय सुं माजी श्री चावड़ीजी, श्री भुवाजी, श्री वाभी देवड़ीजी, श्री केसरकंवर बाईजी नै वड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री पड़दायतीयां आया सो गढ़ दाषल हुवा ।

संवत् १९१२ का विवरण

संमत १९१२ रा सांवण वद १ सोमवार श्री हजूर साहब दोढ़ पोर दिन चढ़ीयां बगी में विराज छैल वाग पधारीया, नै उठा सुं घोड़े असवार होय महादेवजी श्री बैजनाथजी पधार दरसण कर पाछा पौर अेक में गढ़ दाषल हुवा ।

सांवण वद ५ पोकरण ठाकुर वभूतसिंघजी घर री सीष कर सूरसागर अजंट साहब सुं मिळ नै प्रवारा पोकरण नै चढ़ीया ।

वद ९ जोधपुर रा महाजनां, बोपारीयां, सारां नै श्री हजूर में मुजरो हुवौ, निजर निछरावळ हुई नै षातर फुरमाई ।

वद ११ मु० मुकनचंद में किसतां रा रूपीया बाकी था सो मांगीया, तरै सिरदारां री हवेलीयां जाय बैठा ।[2] मुकनचंद तो पोकरण री हवेली नै कुनणमल किसनचंद आउवा री हवेली नै समरथमल निबाज री हवेली, पुनमचंद षेजड़ला री हवेली । पछै इणां नै समजास करण नै[3] म्हैतो गोपालराव नै किलदार अनाड़सिंघ ने कोटवाळ सेरकरण गया सो समजास करी, पिण मांनी नहीं ।

---

1. मृत्यु-भोज आदि सम्पन्न करवाने गये 2. शरण लेने के लिये जागीरदारों की हवेलियों में जाकर बैठ गये 3. समझाने-बुझाने के लिये

संमत १६१२ रा सांवण सुद ६ तथा १० अजंट सषसपीर साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ी दोयेक बतळावण हुई।

सुद १२ अवारी बाळसमंद पधारी।

सुद १५ राषड़ी रो दरबार हुवौ नहीं।

संमत १६१२ रा भादवा वद १ बाळसमंद सु असवारी कायलांणे पधारी।

वद ४ षेजड़ला रा ठाकुर नै घर री सीष रौ मुजरौ हुवौ।

वद ५ नागपांचम रौ मेळो मंडोर दसतूर मुजब हुवौ नै विरषा पोर अेक तांई हुई सो मेळा रो लोक सारो भींजतो[1] रंग चुवतां[2] आयौ। नै श्री महाराज कंवार री असवारी मेळो देषण नै पधारी सो पिण भींजता पाछा पधारीया।

भाद्रवा वद ८ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी रौ व्याव ईडर रौ गांव मुडेती रा ठाकर चवांण सूरजमल री बेटी सु राईकेबाग हुवौ। नै श्रीजी साहबां रा व्याव दोय अेक तो मंणांसा रा चावड़ा भोजराज री बेटी सु नै दूजो गांव सोयंतरा रा चवांण छत्रसिंघ री बेटी सु हुवा, कायलांणे आज रा सावां।

वद १२ विरषा चोषी हुई[3] सो रांणीसर पदमसर घड़ी दोय तांई ओटे हुवा नै गुलाबसागर में पोळीयां में पांणी आयौ।[4]

संमत १६१२ रा भादवा सुद ११ ठाकुरजी जुलण नै रेवाड़ीयां गुलाब सागर पधारी[5] नै श्री महाराज कंवार री असवारी मेळो देषण पधारी।

सुद १२ सैर में ढंढोळो फीरीयो[6] कै कालै सैर सारो बड़ली रै मेळे जावजो[7]। सो सैर सारो गयौ नै दुकानां अषैराजजी रै तळाब कायलांणा तांई हुई। नै श्री हजूर साहब मैलां में विराज मेळो निजर गुदरायौ।

---

1. भींगते हुए 2. कपड़ों से रंग चू रहा था 3. अच्छी वर्षा हुई 4. तालाब के अन्दर बनी हुई प्रोलों तक पानी चढ़ा 5. ठाकुरजी की मूर्त्तियें नहलाने के लिये गुलाब सागर जलूस के साथ लाई गई 6. डूंडी पिटवाई 7. शहर के सब लोग कल बड़ली भेरूजी के मेले जाना

संमत १९१२ रा आसोज वद ३ भाद्राजण रा ठाकुर नै घर री सीष रौ मुजरो हुवौ ।

वद ५ भं० सिरीचंद नै परवतसर, मारोठ वगैरे प्रगना रा जागीरदार लागती रकम[1] देवे नहीं नै तलब मांने नहीं[2] तिणां नै सझा दे रकम भरावण मुदे मेलणो ठेरीयो ।[3] सु आज श्री हजूर में मुजरो हुय नै चढ़ीयो ।

संमत १९१३ रा आसोज सुद ९ रूस रै नै फरासीसां रै नै अंगरेजां रै लड़ाई तिण में अंगरेजां री तीषी रही[4] तिण री तोपां री सिलकां ३५ हुई ।

सुद १० रांवण मारण नै श्री रामचंद्रजी री असवारी किला सु सदामंद मुजब पधारी । नै श्रीजी साहबां री असवारी हाथी रै हौदे विराज जलूस सु सिरे बजार होय जाळोरी दरवाजा बारै सदामंद मुजब पधारीया नै षवासी में आउवा रा ठाकुर बैठा सो रांवण मुवां पछै बाहीवाळ रै घोड़े असवार होय बुरछी बाय[5] पाछा उणीज मारग सिरे बजार होय किले दाषल हुवा । नै तोपां री सिलकां १२५ किला री सदामंद मुजब हुई ।

आसोज सुद १४ श्रीजी साहबां री असवारी गढ़ ऊपर सु बाळसमंद दाषल हुई ।

संमत १९१२ रा काती वद ७ बाळसमंद रा हेटला वाग में आउवा रा ठाकुर नै मौसर होय बतळावण हुई ।

वद ८ बाळसमंद रा हेटला वाग में पैला तो निबाज रा ठाकुर नै मौसर हुवौ । पछै श्रीजी साहब गंगाजी पधार पाछा दाषल हुवा । तिण री षुसी रौ षलीतो जांमनगर सु षवास भगो नै मेरू आया तिणां नै मुजरो हुवौ । नै पछै कुचांमण रा ठाकुर रो कांमेती साह सिवलाल ठाकुर री अरजी ले नै आयौ । तिण नै मुजरो हुवौ ।

काती वद १० श्रीजी साहबां री असवारी बाळसमंद सु छैलवाग हुई । सो रात रा पाछा बाळसमंद दाषल हुवा ।

वद ” (अमावस) दीवाळी रौ दरबार बाळसमंद दौलतषांना रा चौक में सदामंद मुजब हुवौ ।

---

1. निश्चित रकम 2. बुलाने पर आते नहीं 3. उनको दंडित कर रकम भराने के लिये राज्य के आदमी भेजना निश्चित हुआ 4, विजयी रहे 5. बरछी मार कर

संमत १६१२ रा काती सुद १५ ठाकुरजी री श्री आनंदघनजी किला सुं बाळसमंद तुलछीजी परणीजण[1] नै असवारी जलूसी हुई सो परणीज दायजो[2] ले पाछी असवारी हुई जिणां साथै श्री महाराज कंवार सगळा नै दीवांण बगसो, नाजर हरकरण इतरा जणा साथै सु नागौरी दरवाजे होय सिरे बजार होय फतैपोळ रै मारग रात पोर दोढ़ गयां किले दाषल हुवा[3]।

संमत १६१२ रा मिगसर वद ३ श्री हजूर साहब श्री गंगाजी री जात्रा कर पधारीया[4] हा। तिण रौ विरंमभोज[5] किला में सीरा रौ सारा विरांमणां नै दिरीजीयो। नै दिषणा रौ रू० १) अेक कणकती बंद नै दिरिजीयो।

वद ७ अंगरेजी नटां रौ तमासो कायलांणे श्री हजूर में हुवौ सो सारा सिरदार, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे नै सैर रा ही ठावा-ठावा सारा तमासो देषण नै हाजर था।

वद १२ माजी श्री चावड़ीजी वेतरणी रौ उजांणो कीयौ सो सारो सराजांम[6] प्रोहीत पेमा नै दिरीजीयौ।

वद १४ श्रीजी साहबां री असवारी सिकार मुदे कायलांणा सुं हुई। सो गांव पालड़ी री सींव[7] में सूर री सिकार कर पाछा कायलाणे दाषल हुवा।

संमत १६१२ रा मिगसर सुद २ रूस वाळां री लड़ाई में अंगरेजां री जीत हुई। तिण री तोपां री सिलकां २१ हुई।

संमत १६१२ रा पोस वद २ श्रीजी साहबां री नै श्री महाराज कंवारां री असवारी सिकार रै मुदे कायलांणा सु अषैराज रै तळाव होय रेषावेरो पं० धनरूप रो जठै पधारीया। रेषावेरा रा सेरीया[8] रा मुडा आगे जाजम बिछी, जठै महाराज कंवार विराजीया। नै दाड़मां, नारंगीयां पेमली बोरां री छाबां आई सो सारां नै बांटी नै वाग में महाराज कंवार नै मुसदी, षवास, पांसवांन सारा गया सो धनरूप री तरफ सुं जिनस तयार हुई सो सारा जणा जीमीयां। नै पछै श्रीजी साहबां री असवारी चांनणा भाषर रै मारग होय

---

1. तुलसी शालिग्राम का विवाह रचाने 2. दहेज 3. डेढ़ प्रहर रात बीतने पर किले में प्रवेश किया 4. गंगाजी की यात्रा कर लौटे 5. ब्रह्मभोज 6. व्यवस्था करने का दायित्व 7. सीमा 8. छोटा रास्ता

पधारीया । नै रेषावेरा सु महाराज कंवार मुसदी वगैरे सारा असवारी सांमल जाय हुवा । सो मसूरीया कनै सूर री सिकार कर पाछा कायलांणे दाषल हुवा ।

पोस वद ३ मु० मुकनचंद पोकरण री हवेली बैठो थो तिण नै नाजर वजीरबगस री मारफत बुलायौ सा छैलवाग में मुजरो हुवौ ।

पोस वद १३ अठा सु रसालदार मुनालाल नै गोढवाड़ कांनी मेलीयो । घाटां[1] रा बंदोबसत वासते, कै मेवाड़ रा उमरावां ऊपर सलुंबर वगैरे जिणां नै सभा देण मूदे[2] अंगरेजा फौज जावे सु वे कदास[3] मारवाड़ में उरा आवै[4] । जिण मुदे अंगरेजां लिषावट कर घाटां रौ बंदोबसत नहीं आवण देणा, जिण सु सांवठा[5] घोड़ा आदमी ले आज चढीयो, जिण नै मुजरो हुवौ ।

संमत १९१२ रा माह वद १० अजंट सषसपीर साहब आज अजमेर सु आयो । सु सदामंद मुजब पेसवाई में दिवांण बषसी गया ।

वद ११ अजंट सषसपीर साहब छेलबाग श्री हजूर में आया । घड़ी तीनेक बतळावण हुई ।

माह वद " (अमावस) अजंट साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया । घड़ी तीनेक इकंत बतळावण हुई ।

सुद ७ षटदरसण[6] री अदालत रौ कांम व्यास मंगनीरांम किसनगढ़ वाळो नै भाट षुमो नै लालो हरदेवसिंघ दौलतसिंघ रा भाई नै तीनां रै सांमल हुवौ । नै कायलांणे सुरज कुंड है जठै आज मेळो भरावणो तिण रौ हुकम कोटवाळ ऊपर पांथो[7] सो कोटवाळ सैर में ढंढोलो फीराय[8] दीयौ । सु सैर रौ लोक कायलांणे गयौ नै मेळो भरीजीयो ।

संमत १९१२ रा फागण वद १० श्रीजी साहब जनांना समेत बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुवा ।

वद १२ प्रबात रा आथूणी कांनी सु गड़गड़ाट होय धरती पल दोयेक[9] तांई धूजी ।

---

1. घाटी, जहां से मारवाड़ में आने का रास्ता निकलता है 2. दंडित करने को 3. कदाचित, शायद 4. मारवाड़ की तरफ आ जावें 5. पर्याप्त, बड़ी संख्या में 6. षड्दर्शन, ब्राह्मण, चारण, भाट, सन्यासी आदि जातियों के लोग 7. पहुंचा 8. डूंडी पिटवाई 9. करीब दो पल

सुद २ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया, घड़ी दोढेक इंकत बतळावण हुई। नै पछै आहोर रा ठाकुर नै मौसर हुवौ।

सुद ४ अजंट सषसपीर साहब आबूजी नै चढ़ीया।

सुद ७ निबाज रा ठाकुर नै मौसर होय घड़ीक बतळावण हुई।

सुद १५ होळी रौ दरबार तो हुवौ नहीं नै गढ़ ऊपर दौलतषांना रा चौक में डंडीयां री गैर[1] हुई सो श्री हजूरसा लपेटा री पाग जलूसी पोसाष पधराय पींडां रमीया[2]। नै सिरदार आउवो निबाज नै दीवांण बषसी वगैरे सारा ही रमोया। नै सैर में सारा मोलां[3] में गैर करण रौ हुकम पोथो, सु सारा मोलां में डंडीयां री गेरां हुई।

संमत १९१२ रा चैत वद ४ असवारी जनांना समेत रांणीसर पधारीया। सो दिन २ उठै विराजीया पछै किलै दाषल हुवा।

वद ५ रांणींजी श्री लाडी चावड़ीजी नै श्री चवांणजी रौ भादवा वद ८ नै कायलांणे व्याव हुवा सो आज गढ़ दाषल रौ मोरत सो दाषल हुवा।

वद ६ श्रीजी साहबां री असवारी षेल री सिरे बजार होय मांयले वाग हाथी असवार होय दाषल हुवा। षवासी में आउवा रा ठाकुर बैठा नै श्री महाराज कंवार घोड़ां असवार हुय असवारी में अगाड़ी बेता[4] नै उमरांव मुंसदी षवास, पासवांन सारा असवारी में अगाड़ी बेता नै रंग रा कढाव जगा-जगा भरीजीया। नै श्रीजी रै मुढा आगे हौद में गुलाल री दड़ीयां सु भरता थका सु रात रा असवारी वाग में ही विराजीया।

चैत वद ७ असवारी मांयलावाग सु तळेटी रा मैलां दाषल हुई। नै जनांनी असवारीयां गढ़ ऊपर सु तळेटी रा मैलां दाषल हुई। नै कोटवाळ पंवार सेरकरण री तरफ सु श्री हजूर में गोठ हुई।

वद ८ सील रौ मेळो नै गुड़ला रो मेळो सदामंद मुजब हुवौ। नै श्रीजी साहब जनांना समेत तळेटी रा मैलां रा झरोषां में जाबता में विराज निजर गुदरायौ।

---

1. डंडिया नाच आदि　2. स्वयं खेले　3. मोहलों　4. आगे चलते

वद ९ असवारी जनांना समेत चोपासणी पधारी ।

वद १० चोपासणी सु असवारी कायलांणे पधारीया नै वद ११ कायलांणा सु छैलवाग पधारीया नै छैलवाग सु वद १३ बाळसमंद पधारीया ।

वद " (अमावस) असवारी बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुई ।

संमत १९१२ रा चैत सुद ३ गिणगौरां नै तळाब बाळसमंद पांणी पायौ नै श्री महाराज कवारां री असवारी मेळो देषण नं बाळसमंद पधारीया । नै निमा सांम रा[1] श्री हजूर री असवारी गढ ऊपर सु बाळसमंद पधारी ।

चैत सुद ८ आउवे ठाकुर कुसालसिंघ बषतावरसिंघोत नै मौसर हुवौ, नै घड़ी च्यार तथा छव तांई इंकत बतंळावण हुई ।

सुद ९ बाळसमंद सु जनांना समेत असवारी कायलांणे दाषल हुई ।

और श्री गवरां नै कायलांणे पांणी पावण नै बुलाई । सो बाग रै बारणै[2] विछायत होय गवरां दरबार री नै सैर री सारां नै विराजमांन कीवी[3] । नै श्रीजी साहब पोळ ऊपरला मैल में जनांना समेत जावता में विराज दरसण कीया नै गवर ईसर दोठ अेक-अेक रूपीयो दिरीजीयो नै घांची मोची वगैरे षूम जातां री गवरां आई तिणां नै आदो-आदो रूपीयो दिरीजीयो । नै कोई छोटा मोटां रा गवर ईसर लाया तिणां नै पावलो-पावलो[4] दिरीजीयो ।

चैत सुद ११ दुतीक रावळीयां रो तमासो[5] कायलांणे मैलां री पोळ में मांयला चौक में करायौ नै ईनांम रा रूपीया १००) दिरीजीया ।

सुद १५ श्रीजी साहब सुद १४ नै बाळसमंद पधारीया हा सो पाछा कायलांणे पधार रात रा वगेरा रो सिकार कर नै आज दिन उगां सुद १५ बाळसमंद दाषल हुवा ।

संमत १९१२ रा वेसाष वद १ वड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री पड़दायत फूलवेलजी रांमसरण हुवा तिणां नै कागे दाग दिरीजीयो ।

वद ५ सैर रा पोकरणा विरांमणां लाडी वीका रो तमासो[6] कीयो सु जनांना समेत निंजर गुदरायो नै इनांम रा रूपीया ५०) दिरीजीया ।

---

1. ठीक संध्या समय 2. बाग के दरवाजे पर 3. सम्मान दिया 4. चार-चार आने
5. रावलियों की रमत 6. लोक-नाट्य

वद १० तथा ११ आउवा रा ठाकुर नै बाळसमंद रा बाग में घर री सीष रौ मुजरो हुवौ नै नीबाज रा ठाकुर नैं मौसर हुवौ ।

वेसाष सुद ३ श्री दरबार सु मिंदर नवो हुसो[1] नै महारांणीजी श्री रांणावतजी रो मिंदर अेक हुसी सो दोनु मिंदर गिड़दीकोट री भींत सु लगाय नै श्री मोतीबाई रा मिंदर तांई तो उगूण-आथूण नै छिपीया री बेलो री उतरादी भींत सु लगाय नै ठेट घास मंडी में श्री तीजा माजी रा मिंदर तांई उतर-दीषण[2], नै बारणा उतरादा[3] हुसी जिणां रै नींव रौ पायौ जोसी प्रभुलाल नै जोसी वेदीयां सारां जाय नै भरायौ । नै देरावड़ीजी रा तळाब सु लगाय नै बाळसमंद री हरबोला बावड़ी रा मारग तांई नवो वाग लगावणो, तिण रौ पिण पायो आज भरीजीयो ।

सुद १० गांव साथीण नै षांगटे पांणी रा बाळा रा धोरा रो झोड़ हो सो उणारो फैसलो करण मुदे सिघवी सिवराज नै पं० भीनालाल आज चढीया, तिणां नै मुजरो हुवौ ।

और महामींदर रो गैणो, जवार वगैरे री रकमां म्हेता गोपाळराव आगे[4] लीयायो हो नै आयसजी श्री देवनाथजी रै भांणजा देवपुरीजी जिणां रा बेटा नाथापुरीजी कनै रूपीया तीन लाष रो रूको लिषाय लियो कै महामींदर षोळै बैठसी सो रूपीया तीन लाष देसी । उण बांयने महामींदर षास नै सायर गांव देईजर, थबुकड़ो कुडलीया नगरीया समेत नै बेरा तासर नै बडला वाळो, नै छदांमी नै षेड़ो, नै सेवा मिंदरां री षरची नै कोठार वागर सायर पचपदरा सु सलुणी वगैरे रोकड़ पावै सु सरवेत जबत हुय कोटवाळ सेरकरण तालके हुय गया जिण में नाथापुरीजी रूकौ लीष दीयो जिका रूपीया तो गांवां री पैदास नै गैणो मोरां वगैरे राज में आयौ । सु वसूल दे बाकी रो फैसलो करण नै लीषमीनाथजी री ठुकरांणी तयार, पिण उण रौ सवाल औ कै षोळै रुघनाथजी नै बेसांण देवौ जद हुं फैसलो करूं नै पटवे परतापमल श्री हजूर में अरज कराय दीवी कै षेमनाथजी ओसतां में है जिणां रो बेटो बादळनाथजी है जिणां नै षोळै बैठांण देवो[5] तो लाष रूपीया न्यारा निजर कराय देऊं नै तीन लाष रौ रूकौ लिषीजीयोड़ो है सु ही आय जावसी । इण अडबी[6] सु कर फैसलो हुवौ

1. नए मंदिर का निर्माण होगा 2. उत्तर-दक्षिण 3. मुख्य द्वार उत्तर की ओर होगा
4. पहले 5. गोद ले लेवो 6. अड़चन

नहीं। तरै लीषमीनाथजी री बहुवां री अरजी उणां रौ भाई उदैभारथी नै चाकर गंगारांम आसोपा सुरतरांम रा बेटा वेणीरांम कनै आया। तरै वेणीरांम नाजर वजीर बगसी री मारफत मालम कराई तरै श्री हजूर सु फुरमायौ कै तूं महामींदर जाय नै लीषमीनाथजी री बहुवां नै कैणो कर[1] रुघनाथजी विनां[2] म्हे षोळै बेसाणां तिण नै उरो लेवे जिणरी अरजी लिष देवे तो षोळै वेसांण उठांतरीयां कराय देवां[3]। तरै नाजर वजीर बगसी महामींदर जाय कैणो कियौ पीण कवूल कीयो नहीं[4]। तरै उण पाछी अरज कीवी कै वे तो मंजूर करे नहीं। तरै फुरमायौ—थनै इणां री अरजी किण दिवी है? तरै वजीरबगस पाछी अरज कीवी—सुरतरांम रै वेटे वेणीरांम दीवी है। तरै श्री हजूर फुरमायौ कै सुरतरांम रा बेटां री मारफत कैणो करा सो औ कांम हुय जावसी। नै तूं हाल ढीलो छोड़ दे[5]। तरै वजीरबगस वेणीरांम नै बुलाय नै कयौ कै श्री हजूर सुं फुरमायौ है कै सुरतरांम रा बेटां नै कै थे लिषमीनाथजी री बहू कनै रुघनाथजी रा नांव विनां षोळा री अरजी लिषाय देवो, मेनत कर नै[6], थांनै तो पाली री हाकमी देऊं ने उणां री आजीवका सारी बा'ल[7] कराय फैसलो कर देवां। इऊं फुरमायौ है[8] सो हमें थे मेनत कर नै कांम पेस करो। तरै वेणीरांम कयौ कै म्हारो भाई वड़ो महारांम है सो उण नै बुलाय[9] नै केवो तो वो मेनत कर कांम पार घाल देसी[10]। उण रै नै उदैभारथी रै मेळ[11] जादा है। तरै वजीरबगस महारांम नै बुलाय नै समाचार सारा कया। तरै महारांम पाछो कयौ—श्री हजूरसा फुरमायौ कै न्हीं फुरमायौ तिण री नीसां कंही[12]? तरै नाजर वजीरबगस कयौ—म्हारै साथै बाळसमंद चालो सु थांनै श्री हजूर सुं रूबरू कवाय देऊं। तरै महारांम वेंणीरांम वजीरबगस साथै बाळसमंद गया। सो रात रा श्री हजूर में लेजाय रूबरू हुकम दिरायो। पछै इण बात री महीनां दोय तांई मेनत कर नै श्री लिषमीनाथजी री बहू री अरजी इण मसौदे[13] लिषाई—

"तथा मेसनाथजी रै वेटा पांच, सो बड़ा तो हरनाथजी, जिणां रै तो सिरे मिंदर रयौ। नै उणां सुं छोटा सुरतनाथजी जिणां रै ठीकाणों निज मिंदर बंदीयो। नै उणां सु छोटा ओपनाथजी जिकां रै जाळौर रो गांव गोल

---

1. समझा 2. अलावा 3. जब्ती निरस्त कर दें 4. स्वीकार नहीं किया 5. तूं इस काम को ढील दे दे 6. पूरा प्रयत्न करके 7. बहाल 8. इस तरह कहा है 9. बुलाकर 10. काम पूरा कर देगा 11. घनिष्ठता 12. इसका निश्चय क्या? 13. मसविदा

ठीकांणो बंदीयो नै श्री महामींदर रौ ठीकांणो देवनाथजी रै बंदीयो। नै उणां सु छोटा भींवनाथजी सु देवनाथजी रै भेळा रया सो देवनाथजी भींवनाथजी रा परवार में रुघनाथजी विनां आपरी मरजी हुवै जिण नै षोळै बेसांण दिरावो। म्हारै रुघनाथजी सु पीरोजन[1] है नहीं। श्री हजूर री मरजी हुवै जिण नै षोळै बेसांण म्हांरी आजीवका बाल कराय दिरावे।" इण तरै री अरजी लिषाय महारांम वेणीरांम ले जाय नाजर वजीरबगस री मारफत श्री हजूर में निजर गुदराई। तरै श्री हजूर साहब हद सुदी[2] षातर फुरमाई नै किलादार अनाड़सिंघ ने बुलाय रूबरू फुरमाय दियौ कै महामींदर रा कांम री महारांम बेणीरांम फड़द देवे सो म्हें सही कर देसां[3]। जिण मुजब तु कांम सारो कराय दीजो। पछै महामींदर सु फड़द उतराई जिण री विगत—

अवल तो आजीवका कुल तमांम री बा'ली हुई चाहीजे। नै संमत १८६६ रा प्रवांना मुजब नै संमत १६०१ रा प्रवानां मुजब दूजी म्हेता गोपाळराव गैणो जवार री तथा सोंना री रकमां नै म्होरां[4] जिकां री कीमत होय तीन लाष रा रूका में वसूल हुई चाहीजे नै तीजी वरस तीन री पैदास सारी जबत रही सु वसूल दीरीजी चाहीजे। अर चोथी फेर गैणो तथा ससत्र तथा घोड़ा-घोड़ी तथा डेरा साईबांनां री कीमत कराय तीन लाष रा रूका में वसूल दीया चाहीजे। पांचवी श्री हजूर साहब मातमपोसी करावण नै षोळै बैठां पैली पधारीया चाहीजे। छठी श्री आयसजी महाराज रो भंडारो श्री लाडूनाथजी महाराज सरसते म्हे करां जिण रौ षरच लागे सु तीन लाष में वसूल लागा चाहीजे।

सातवीं म्हांरा बाबसतां कांमदारां कनै रूपीया लेवां सु राज मदत कर दिराया चाहीजे।

आठवीं गांव लोटोती रा जागीरदारां में नै उसतरां रा जागीरदारां में रूपीया है सु उणां रा षत सिरकार में ले लीया चाहीजे।

नवमी कुमठ हरषचंद में रू० ५०००) आठ आंनां री मिती रा मांगां सो ब्याज सुधा तीन लाष में वसूल लागा चाहीजे।

दसमी अठै सिरकार में ठाकुर लोक चाकरी करता जिका ससत्र तथा सिरकारी घोड़ो पुरण वगैरे ले गया नै पाछा आया नहीं नै मंगावां नै देवे नहीं

---

1. प्रयोजन 2. बहुत 3. उसको स्वीकृति दे देंगे 4. मोहरें

तो सिरकार मदत कर दिरावे। मुष[1] तो कलमां ग्रै नै दूजी छोटी कलमां कर मुकरड़ै[2] चोईस तथा पचीस कलमां दीवी तिण में ग्रौर तो श्री हजूर साहब सारी सही कर दीवी नै कलमां तीन सही कर नै षास दसकतां सु ं तथा कीणी दूजा कनै उणहीज फड़द में पाछो इण मुजब लिषायौ। ग्रवल भंडारो तो म्हे सिरकार सु ं रूपीयो लागसी जितो लगाय श्री लाडूनाथजी महाराज सरसते कराय देसां नै दूजी बाबसतां कांमेतीयां रा रू० री लीषी सु मु० उतमचंद जसरूप नै पटवो परतापमल इणां तो तीनां ही राज रौ कांम कीयौ सो इणां कनै तो रूपीया म्हें लेसां नै बाकी थांरा बाबसता रू० थांनै नहीं देवे नै थे ग्ररज करावसो जिण री मदत कराय दीराय देसां।

तीजी थे लिषी जागीरदारां रा षत तथा हरषचंद कु ंमठ रौ रुकौ ले लीरावौ सो षत रुका तो इणां रा लेवां नहीं नै मदत कर थांनै रू० दिराय देसा। इण मुजब जाब लिषाय कलमां सही कर फड़द पाछी दिवी।

तरै पाछी फड़द महामींदर श्री लिषमीनाथजी री ठुकरांणीयां नै बंचाय नै फड़द किलेदार पंवार ग्रनाड़सिंघ नै बंचाई। तरै श्री हजूर साहब री सही कीयोड़ी फड़द देष नै गांवां री नै महामींद(र) री नै सायर नै बेरां री तो उठांतरीयां कराय दीवी नै छदांमीयां नै षेड़ां री सनदां कराय दिवी। नै कोठार वागर कपड़ां रै कोठार फरासषांने षेमा रै कारषांने तथा षजांने पीयाद बगसीयां रै दफतर वगैरे री पावंदारी थी जठै सारे रूका बाल कराय दिया नै लेणां[3] में लोटोती वाळां रौ गांव बाकलोयो जबत कर महामींदर ता० कराय दीवी नै उसतरां[4] पीण जबत कर महामींदर ता० कराय दीयी।

संमत १९१२ रा जेठ वद ३, जोधपुर में नवी दुकांन श्री हजूर सु ं रूपीया दिरीज नै नाजर वजीरबषस हसते सुषलाल लाभचंद रा नांव री हुई। पोकरणीया बगसीरांम रा डेलांण में जिण दुकांन ऊपर मुनीम राठी सेवारांम सीतारांम रा बेटा नै राषीयो। ग्रौ हे तो ग्रठा रौ[5] पण इण रौ काको गुमांनीरांम मुथरा में है जिण कनै रैतो[6]। सु श्रीजी साहब गंगाजो सु ं मुथराजी पधारीया तरै ग्रौ सरभरा में हाजर घणौ रयौ तिण सु ं इण नै

1. मुख्य 2. कुल, समस्त 3. कर्ज 4. एक गांव का नाम 5. यहीं का
6. काका के पास रहता था

राषीयौ। नै दुकांन रौ मोरथ करावण नै अर गुळबेंटण नै दोढ़ीदार प्रो० चतुरभुज फतैरांम रा बेटा नै मेलीयो सो पूजा कराय गुळ वंटायौ।

जेठ वद १३ तथा १४ बाळसमंद रा बाग में निबाज रा ठाकुर नै मौसर होय इकंत बतळावण हुई।

संमत १६१२ रा जेठ सुद २ सेठ जोरावरमल रो बेटो चनणमल नै पोतो गंभीरमल इंदरमल जैसलमेर सु आया नै पाछा उदैपुर जावे तिणां नु मुजरो हुवौ। नै निबाज रा ठाकुर नै घर री सीष रौ मुजरौ हुवौ।

जेठ सुद ४ श्रीजी साहब बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुवा नै दोढ़ीदार पणीया साळगरांम नै रायपुर रा ठाकुर रै नं कंवर रै आपस में झोड़[1], सो झोड़ मिटावण मुदे मेलीयो सु आज चढ़ीयो।

जेठ सुद १३ श्री हजूर साहबां री वरसगांठ रौ उछव सदामंद मुजब सारो हुवौ नै तोपां री सिलकां उमर रा वरसां मुजब[2] ३६ हुई।

सुद १४ गढ़ ऊपर सु असवारी छैल वाग दाषल हुवा।

संमत १६१२ रा असाढ़ वद ३ वषसी सिं० फौजराज घणा दिनां सु मांदो[3] थो सु आज रांमसरण हुवौ।

वद ६ अजंट सर सषसपीर साहब आबूजी सु आया सो सांमा पेसवाई में दिवांण वगैरे गया।

वद १० श्री हजूर री असवारी छैलवाग थी सो अजंट साहब श्री हजूर में आया। नै रूस री लड़ाई में अंगरेजां री फतै हुई, तिण री तोपां रा तीर १५ छूटा।

वद १३ जाळोर री हाकमी व्यास भेरूदास षींवराज रा बेटा रै हुई।

असाढ़ सुद १३ बेड रो जोसी लाला नै डीडवांणा री कोटवाळी री षायकी मुदे अटकायो[4] तिण ऊपर रु० ११००) ठैर सीष हुई।

---

1. झगड़ा 2. जितनी उम्र हो गई उतनी ही तोपें छोड़ी गई 3. बीमार 4. रोक रखा

संवत् १९१३ का विवरण

सांवण वद ९ श्रीजी साहब री असवारी बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुई ।

सांवण वद " (अमावस) अजंट सर सषसपीर साहब आबूजी नै चढीया ।

सांवण सुद ७ पं. भीनालाल नै लाला ईसरीप्रसाद नै फळौधी कांनी जेसल रो गांव बाप कांनी जमी रा झोड़ मुदै मेलीया । सो आज अठा सु चढ़ीया ।

सुद ८ असवारी छैलवाग दाषल हुवा । सुद ९ छैलवाग सु असवारी कायलांणे दाषल हुई ।

सुद १५ राषड़ी रो दरबार तो हुवौ नहीं नै उछव[1] कायलांणे सदामंद मुजब हुवौ ।

संमत १९१३ रा भादवा वद २ तथा ३ श्री हजूर री असवारी जनांना समेत नाजर हरकरण रै तळाब लालसागर पधारीया । सिरदार मुसदी सारा हाजर ।

भादवा वद ५ नाग पांचम रो मेळो हुवौ । तिण नै हुकंम हुवौ कै पाछौ आवतों लालसागर होय नागौरी दरवाजा रै मारग जावै सो हुकम मुजब गयौ ।

वद ८ जनम-असटमी[2] नै लालसागर विराजै जठै श्री बाईजोसा रा कांमदार छांगांणी संकरलाल पनालाल री गोठ श्री हजूर में हुई । सो षांड मण २३) रौ तो सीरो नै षांड मण ७) रौ विणज जुमले मण ३०) नै मीठाई रू० २००) री मण १६) आई । सारा सिरदारा मुसदी जीमीया । नै मु. मुकनचंद नै याद फुरमाय नै बुलायो ।

वद ९ लालसागर सु बाळसमंद दाषल हुई ।

भादवा वद १३ सेष गुलांम मेदो री तरफ सु श्री हजूर में गोठ हुई ।

---

1. उत्सव 2. कृष्ण जन्माष्टमी

वद १४ म्हैता फौजमल री तरफ सु श्री हजूर में गोठ हुई। और विरषा घणी चोषी हुई। रांणीसर पदमसर ओठे बुवा[1] नै गुलाबसागर में पोळीयां में पांणी आयौ।

संमत १९१३ रा भादवा सुद ३ महाराज कंवार श्री जसवन्तसिंघजी रै कवरांणीजी श्री चवांणजी रै आसा[2] तिणरी अगरणी रौ उछब सदामंद मुजब जनांनी दोढी हुवौ।

सुद ४ गणेस चौथ रो मेळो सदामंद मुजब रातेनाडे हुवौ। नै अजंट सषसपीर साहब आबूजी आया तिणां रै सांमै पेसवाई में दिवांण जोसी हंसराज नै म्हैतो विजेमल, सिंघवी कुसलराज सदामंद मुजब गया और श्री महाराजकंवर रै कंवरांणीजी रै आसा जिणां रै साध माजी श्री तीजा भटीयांणीजी ना नोरा सु मेवा मीठाई रा थाळ लवाजमा रै साथ गाजा बाजा सु गढ़ ऊपर मेलीया।

सुद ७ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणे दाषल हुई। नै अजंट साहब श्री हजूर में आया सो बागर चांतरा ऊपर साईवांन षड़ो होय विछायत हुई, जठै विराजीया। घड़ी इंकत बतळावण हुई।

सुद ११ श्री ठाकुरजी री रेवाड़ीयां झुलण नै तळाव गुलाबसागर पधारी। नै श्री महाराज कंवार तांमजांम पालषी में वीराज मेळो देषण नै गुलाबसागर ऊपर पधारीया। मेळो घणो सिरे[3] हुवौ।

सुद १३ बड़ली मेळे जावण रौ सैर में हुकम पांथो[4]। सु सैर सारो गयौ नै असवारी कायलांणे थी सो मेळो निजर गुदरायौ[5]।

भादवा सुद १४ असवारी कायलांणा सु छेलवाग बाळसमंद दाषल हुई।

सुद १५ अजंट सषसपीर साहब श्री हजूर में आया सो घड़ी दोयेक इंकत बतळावण हुई।

संमत १९१३ रा आसोज वद ३ अजंट सषसपीर साहब छैलबाग श्री हजूर में आया, घड़ीक बतळावण हुई।

---

1. पूरी तरह भरने के बाद अतिरिक्त जल निकासी के स्थल से निकला 2. गर्भ
3. श्रेष्ठ 4. आदेश पहुंचा 5. मेला देखा

आसोज वद ७ अजंट सषसपोर साहब छैलबाग श्री हजूर में आया, घड़ीक बतळावण हुई ।

वद ८ असवारी कायलांणे दाषल हुई ।

आसोज वद १० अजंट सषसपीर साहब कायलांणे श्री हजूर में आया सो वाग में विछायत हुई जठै विराजीया घड़ीक बतळावण हुई ।

आसोज वद " (अमावस) प्र० सिव रै गांव कोटड़ा रै नै गांव भाडका रै सिव रो असरचो[1] है जठै लाला हरदेव बगस ने फैसला मुदे मेलीया सु आज चढ़ीयो ।

संमत १९१३ रा आसोज सुद १ अजंट सर सषसपीर साहब आबूजी नै चढ़ीया ।

सुद ३ मेड़ता रा गांव षालसा रा में मावोमा[2] जमी रौ असरचा है तिणां रा फैसला मुदे म्है० परतापमल नै मेलीयो सु आज चढीयो ।

सुद ९ नै आज विजैदसमी रौ उछव हुवौ । सु रांवण मारण नै श्री रांमचंद्रजी री असवारी किला सु लवाजमा सु सिरे बजार हुय पधारी । नै श्री हजूर री असवारी कायलांणा सु किले पधार नै रांवण रा मेळा में हाथी असवार होय पधारीया । जलूस सु फतैपोळ सिरे बजार होय जाळोरी दरवाजा बारै पधारी । नै लारै षवासी में भाद्राजण ठाकुर इंद्रभाण बषतावरसिंघ बैठा । नै गूंदी रा मोला[3] में असवारी पधारी तरै दिवांण जोसी हंसराज निजर मोर १) नै नीछरावळ रूपया ५) आपरी हवेली कनै कीया । सो हाथी उभो राष नै लीवी, नै षातर फुरमाई[4] । पछै रांवण मुवां रै बाद घोड़े असवार होय बाहीवाळ रै बुरछी लगाय पाछा उणी मारग किले दाषल हुवा. नै तोपां री सिलकां १२५ सदामंद मुजब छूटी ।

सुद १५ चंद्रमा रो ग्रिहण हुवौ नै श्री हजूर री असवारी जनांना समेत रांणीसर में पधारी ।

संमत १९१३ रा काती वद ९ दिवांणगी जोसी हंसराज सु मोकुब[5] हुई सु मोर दोढी धरीजी ।

---

1. मतभेद 2. आपस में 3. मोहल्ला 4. अपनी कृपा जाहिर की 5. जब्त

वद " (अमावस) दिवाळी रौ दरबार हुवौ। नै उछव सरसता मुजब हुवौ। और सेष गुलांममेदी नै सोझत कांनी बावरीयां रा बंदोबसत मुदे मेलीयो सु आज चढीयो।

काती सुद ५ गांव कांणांणा रौ महाजन तिण रै पग रै कीड़ीनगरो[1] थो सो श्री हजूर साहब फतैमैल में षुरसी ऊपर विराजीया नै डाकदर कालीन साहब महाजन नै दौलतषांना रा चौक में बुलाय नै सुवांण[2] नै श्रीजी रै रूबरू पैली तो अचेत[3] हूण री दवा सुंगाई सो अचेत होय गयौ। पछै चांमड़ी ऊंची चढ़ाय कीड़ीनगरो हो जितो हाड सुधो पग बाढ[4] नै चांमड़ी भेळी कर टांका दिया। पछै दूजी दवा सुंगाई सो सावचेत[5] पैली हो जिसो हुय गयौ। तरै श्री हजूर सुं रू० ३५०) तो डाक्दर नै इनांम रा दिरीजीया नै पाटा-पीड़[6] रा रू० ५०) महाजन नै दिरीजीया।

काती सुद ६ असवारी छैलवांग होय कायलांणे पधारी।

संमत १९१३ रा मिगसर वद ७ दुतीक बुध श्री हजूर साहबां रौ ब्याव पांचवां माजी री भतीजी भाटी नथराज री बेटी सुं बाळसमंद रा वाग में हुवौ नै गढ़ ऊपर तोपां री सिलकां १०५ हुई।

वद ९ हमार वद ७ नै ब्याव हुवौ तिके रांणीजो गढ़ ऊपर मोरत सुं दाषल आज हुवा।

वद १२ जनांना में नवी जायगावां[7] नवा मैलां रा पठा सुं लेनै मसीत रा कोठार तांई भेळी जिण में परवेस रौ मोरथ आज हुवौ।

संमत १९१३ रा मिगसर सुद १ सुकर महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी रै बाईजी हुवा सो नाजर हरकरण भंवरजी हुवां री श्री हजूर में बदाई मांग नै तोपां री सिलकां कराय दिवी। पछै सिलकां पचासेक छूटीयां पछै जनांनां मांय सुं षबर आई—बाईजी हुवा है[8] तरै तोपां मोकुब रही नै हरषण (हरकरण) नै ओळंभो[9] फुरमायौ।

---

1. एक असाध्य रोग 2. लेटा कर 3. बेहोश 4. हड्डी सहित उतना पैर काटा 5. होश में आ गया 6. इलाज के लिये 7. मकानात 8. लड़की जन्मी है 9. उल्हाना

मीगसर सुद ६ दरीबे नांवा री हाकमी कुसळचंदोत भंडारी गणेसचंद रै हुई। नै परबतसर री हाकमी मुं० सिंभुमल रै हुई।

सुद १५ षजांना री दरोगाई भंडारी बादरमल रै हुई। नै फौजदारी अदालत राव राजमल रै नै मेता हरजीवण रै हुई। नै दीवांणी अदालत.... राय नै सि० रतनराज रै हुई। नै चितर सेवा मु० पूनमचंद पं० भीनालाल रै हुई। नै कायलांणे फिरंगीयां रौ तमासो[1] पो० वद ९ दीस हुवौ नै इनांम रा रू० ३५०) दिरीजीया।

संमत १९१३ रा पोस वद १२ श्री हजूर री असवारी छैलवाग हुई।

वद १४ बाळसमंद असवारी दाषल हुई।

पोस सुद १ श्रीजी साहबां री असवारी बाळसमंद सुं कायलांणे पधारी।

पोस सुद ८ भादराजण रा ठाकुर, नै समदड़ी रा ठाकुर नै मौसर हुवौ। नै भादराजण रा ठाकुर नै घर री सीष हुई।

पोस सुद १४ श्री हजूर साहबां री छड़ी असवारी[2] सिकार रै मुदे देसूरी कांनी पधारीया। लारै जनांना मेल दोय[3] नै पड़दायतीयां[4] ४ नै मुसदी षवास, पासवांन वगैरे आदमी १५०० सुं कूच हुवौ।[5] विगत—

घोड़ा ५००, ऊट २००, रथ २५, तांगा ५०, हाथी ४, पींजस १०, बगी २, सेझगाड़ी २, भारवरदारी गाड़ीयां १००, पाळा[6] आदमी २००।

पोस सुद १५ जोधपुर री हाकमी भंडारी भागचंद रै हुई नै किलादार अनाड़सिंघ नै हाथ रौ कुरब नै दुपटौ १ इनायत हुवा।

संमत १९१३ रा माह वद ३ षबर आई कै घांणेराव ठाकुर अजीतसिंघजी रांमसरण हुवा। तिणां लारै सतीयां ३ हुई ठुकरांणीयां।

माह सुद १ षबर आई कै श्री हजूर देसुरी कांनी सिकार पधारीया, जठै नार[7] १ मोटो थो जिण नै मार लीयौ। और श्री हजूर देसुरी सुं गांव सादड़ी पधारीया। सु महारांणीजी श्री रांणावतजी री तरफ सुं गोठ हुई।

---

1. अंग्रेजों द्वारा खेला गया नाटक 2. बिना लवाजमे के, थोड़े व्यक्तियों के साथ 3. दो रानियें 4. रखेलें 5. देसूरी जाने को प्रस्थान किया 6. पैदल 7. नाहर

माह सुद ५ अजंट साहब मालांणी में अमला दफतर समेत गया था। अर पाछा आवतां पोकरण होय फळौधी, बाप, री तरफ सरहद देष आवण री त्यारी थी। नै पोकरण ठाकुर वभूतसिंघजी सारी सरभरा कराई थी परंत पोकरण में पोकरणी विरांमणी[1] अेक सती होय गयी तिण री षबर मालांणी में लागी सो प्रबारा जोधपुर आया, पोकरण गया नहीं।

माह सुद १३ श्री हजूर साहबां री असवारी आज देसूरी सु ं पधारी।

माह सुद १५ भादराजण ठाकुर इंद्रभांण बषतावरसिंघोत रांमसरण[2] हुवां री षबर आई।

संमत १९१३ रा फागण वद १ श्री हजूर साहबां री असवारी छैलवाग पधारी।

वद २ अजंट सषसपीर साहब श्री हजूर में आया। मसंद री विछायत[3] हुई जठै विराजीया। नै साहब गालीचा ऊपर बैठा सो बतळावण होय सीष हुई।

वद ३ प्रथम श्रीजी साहब छैलवाग सु ं गढ़ दाषल हुवा।

वद ५ गढ़ ऊपर सु ं असवारी बाळसमंद दाषल हुवा।

फागण वद ११ पोकरण आउवा रा ठाकुर पटा रा गांवां सु आया नै श्रीजी साहब बाळसमंद सु ं कायलांणे पधारीया।

वद १२ कुचांमण ठाकुर रणजीतसिंघ सिवनाथसिंघोत कुचांमण में रांमसरण हुवा, तिणां री षबर आई।

वद १४ पोकरण, आउवा रा ठाकुरां नै आज कायलांणे मौसर हुवौ नै पछै मालम कर दोनू ं ठाकुर सूरसागर अजंट साहब कनै गया।

संमत १९१३ रा फागण सुद ३ श्रीजी साहबां री असवारी कायलांणा सु ं छैलवाग दाषल हुई।

---

1. पुष्करणा जाति की ब्राह्मणी　2. देहान्त　3. मसनद गद्दा आदि बिछाकर बैठने की व्यवस्था

सुद ७ उमरावां नै घरां सु आयां रौ मुजरौ हुवौ—नींवाज, रास, रायपुर, षैरवो, नै उण बषत आउवो, पोकरण रा ठाकुर नै याद फुरमाय नै बुलाया सो सारां सुं सांमलायत[1] बतळावण घड़ी ४ तांई इंकत हुई।

फागण सुद ६ फेर उमरावां नै मौसर हुवौ[2]—आउवो, पोकरण, रास, रायपुर, रीयां, षैरवो।

फागण सुद १२ उमरावां नै बाळसमंद फेर मौसर हुवौ। घड़ीक अेकंत बतळावण हुई—पोकरण, आउवो, रास, निवाज, षैरवो, रियां।

फागण सुद १५ होळी रौ दरवार हुवौ नहीं।

संमत १६१३ रा चैत वद ६ प्रथम अजंट सर सषसपीर साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया। दौलतषानां रा चौक में बिछायत हुई जठै विराजीया, सु साहब सुं वतळावण कर सीष दीवी। पछै उमराव मुसदीयां वगैरे नै मौसर हुवौ। नै होळी री निजर निछरावळ हुई।

वद ७ असवारी होळी रा फाग री हुई। सु पैली तो बाळसमंद सुं गायण मगरायजी री वावड़ी पधारीया सो पोळ ऊपरला माळीया में विराजीया नै श्री महाराज कंवार सारा नै वाभासा[3] नै उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन सारा उठै हाजर हुवा। नै मगरायजी री तरफ सुं रंग रौ पांणी भरीजीयौ। सु सारा रमीया। नै बोरा री तरफ सुं दारू[4] आयौ सो उमरावां नै अर खवास, पासवांनां नै धांधल पीरदांन पायौ। नै पुसपां री छाबां आई, सो पंचोळी भोनालाल श्रीजी रै चोसरा पधराया[5]। नै सारां नै माळावां बांटी। पछै उठै हीज पधरीजी। सु तासळी पधरीजीयां रै बाद[6] पोसाष जवार[7] पधराय हाथी रै हौदे विराज लारै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा। सो सिरे बजार फाग षेलतां-षेलतां फतैपौळ रै मारग गढ़ दाषल हुवा।

चैत वद ८ सील माता रौ नै गुड़ला रौ मेळो सदामंद मुजब हुवौ नै श्री महाराज कंवार री असवारी गुडलां रौ मेळो देषण नै तळेटी रा मैलां पधारी।

---

1. एक साथ, शामिल 2. मिलने का अवसर हुआ 3. पासवानों के लड़के 4. शराब
5. मालाएँ पहनाई 6. भोजन करने के पश्चात् 7. जवाहरात

चैत वद १२ अजंट सर सषसपीर साहब री बदळी[1] हुई सो आज अठा सु बड़ौदा नै चढीया ।

संमत १६१३ रा चैत सुद १ उमरावां नै फूलमैल में मौसर हुवौ— आउवो, पोकरण, रियां, षैरवो नैं निवाज रा ठाकुर रौ भाई सिवसिंघ सांवतसिंघोत नै ।

चैत सुद ३ अठा री अजंटी कपतांन मेसन साहब रै हुई । सो मेसन साहब टुंक[2], करोली री तरफ सु अजमेर होय आज अठै आया, तिणां रै पेसवाई में उमराव दिवांण बगसी सदामंद मुजब गया । और गवरां पांणी गुलाबसागर पायौ नै मेळो देषण नै श्री महाराज कंवारां री असवारी पधारी ।

चैत सुद ५ अजंट कपतांन मेसन साहब गढ़ ऊपर आया । श्रीजी साहब फलसा तांई सांमा पधारीया । पछै फूलमैल में विछायत हुई, जठै विराजीया । घड़ी ४ तांई बतळावण हुई । पछै अंतरपांन होय सीष हुई ।

चैत सुद ८ गवरां री बोळावणी मांयलेवाग हुई । सो श्री गवरमाता झालरा रा पठा ऊपर विराजी नै श्री हजूर साहब नै अजंट साहब रंगसाळ रै डागळा ऊपर विछायत हुई जठै विराजीया । नै मेळो निजर गुदरायौ, नै पातरीयां भगतणीयां री घूमरां दिरीजी ।[3] नै पछै गवर माता री असवारी हुवां पछै अजंट साहब नै सीष दे मांय वाग में दाषल हुवा ।

चैत सुद ११ गुलर ठाकुर विसनसिंघ मंगळसिंघोत सिरकार रो हुकम मांने नहीं नै लागती रकम देवे नहीं ।[4] तरै फौज जावण रौ हुकम हुवौ नै फौज मुसायब सिं० कुसलराज ठेरीयो ।[5]

सुद १२ बड़ा महाराज मांनसिंघजी रा वाभा राजासिंघजी पटा रै गांव सूरपुरे था, सो रांमसरण हुवा, तिण रा समाचार आज आया, सो मालम हुवा । सो संपाड़ो पधरायौ ।[6]

संमत १६१३ रा वैसाष वद ५ अजंट कपतांन मेसन साहब मांयलेवाग आया । हवद ऊपर विछायत हुई, जठै विराजीया । घड़ी तीनेक अेकंत

---

1. स्थानान्तरण 2. टोंक 3. नर्त्तकियों व वेश्याओं द्वारा घूमर नाच प्रस्तुत किया गया 4. सरकारी निश्चित रकम नहीं देता 5. कुशलराज को फौज मुसाहिब नियुक्त किया गया 6. स्नान किया

बतळावरण हुई, पछै सीष कर नै दूसरे दिन मीम नै लेरण नै चढ गया[1]। नै सिं० कुसलराज फौज ले गुलर कांनी चढीया।

वैसाष सुद ३ आषा तीज रौ दरबार तौ हुवौ नहीं नै उछव सदामंद मुजब दोढी ऊपर हुवौ।

वैसाष सुद ८ गूलर फौज तो आगे गई थी नै इतरा जरणा नै फेर आज चढाया। सिं० सिवराज मेघराज रौ, षीची उमेदकररण तेजमाल रौ नै नाजर मुसताक।

सुद ११ असवारी जनांना समेत जनांनी दोढी रौ नोरो गुलाब सागर ऊपर हो जठै पधारीया।

वैसाष सुद १५ अजंट कपतान मेसन साहब आपरी मीम नै लेने अजमेर सु आज अठै आया।

संमत १९१३ रा जेठ वद ३ निबाज सु षबर आई कै ठाकुर सवाईसिंघ सांवतसिंघोत निबाज रा वद २ नै रांमसरण हुवा।

वद ५ गुलाबसागर रा बचा ऊपर हमार नवो बंगलो हुवौ जठै पधार विराजीया।

वद ८ गूलर री फौज सु सिं० कुसलराज रा कागद आया कै गूलर ऊपर ह(म)लो कररण री तयारी हुय रही है। निसरणीयां नै रूई री बोरीयां री तजबीज करी है अर गूलर री गढ़ी में आदमी हजार आसरे लड़ायतो[2] है पिरण मांयलां रै जिनस रसत षूट गई है[3]। नै राज री फौज रा मोरचा पिरण सांकड़ा[4] लाग रया है नै फौज पिरण सांवठी है सो सिटाय गया है[5] नै विसटाळो[6] करावे है कै मांनै जीवतां नै टाबर कबीला ले बारै जावरण दो। ईरण ताछ[7] पलो फेरीयो तरै कीसनगढ़ रा भला आदमी विसटाळो विच में पड़नै गूलर में सु लोक नै बारै लिया। नै राज रौ झिंडो रुप गयो। गूलर में सिरकारी थांरणो बैठ गयौ।

---

1. अपनी पत्नी को लाने रवाना हुवा 2. लड़ने वाले 3. समाप्त हो गई है 4. नजदीक 5. पश्त हो गये हैं 6. समझोते की बात-चीत 7. इस तरह

जेठ वद १२ दिली सु ं षबर आई कै मेरठ री छावणी जेठ वद १ रविवार रै दिन नोकर हिंदू-मुसलमांन था जिणां नै कयौ कै कारतूस लेवो सो उणां इंनकार कियो । ये तो षालड़ा रा है[1] सो मुढा सु तोड़ां नहीं[2] नै लेवां नहीं । तिण ऊपर अंगरेजां अफसरां तकरार जादा कीवी तरै तकरार रै साथ सिपायां ससत्र उठाय अंगरेजां ने नै मीमां तथा बाळ बचां नै मार नांषीया । पछै मेरठ सु आदमी पांच हजार रौ रसालो पलटणां वगैरे सारो सु मेघजिण सांमांन वगैरे लेने दिली दाषल हुवा नै दिली में लोक थो तिणां नै.......वाकबी कीवी कै मेरठ में बंगला वाळ[3] अंगरेजां नै मार नै आया हां । धरम भीसट करता हा[4] जिण सु ं ये कांम कीया है । सु हमारे सांमल होवो तो ससत्र संभावो[5] तरै दिली में हा सुही उणां सांमल हुय गया नै दिली सारी रौ बंदोबसत कर लियौ । पछै अंगरेजां गोरां री पलटण मेरठ री छावणी तथा दिली रै बारै था सो मांय तो बड़ण दिया नहीं ।[6] तरै लाहौरी दरवाजा रै तरफ अंगरेजां री कोठी है जठै जाय मोरचा घाल हुसीयार हुय गया । कारण कै उण कोठी में सामांन सारो नै लड़ाई रा हक री जायगा चोषी ।[7]

और ईसी सुणी कै मेरठ सु ं चीठी तो अंगरेजां दिवी थी दिलि नै, पण अंगरेजां रै कुसी थी[8] सो चीठी पढ सकीया नहीं । सो गाफली[9] सु ं कर नीसंक रै गया जितरै मेरठ वाळा आदमी जाय पूगा सो अंगरेजां नै, नै मीमां नै अर बालबचां नै सारां नै मार नांषीया । नै कोई भाग नै छिप गया सो बचीया नै उणीज दिन लाल कोट रा मुढा आगे चांनणी चौक रो बजार लूट लीयो तिण में किरोडां रू० रौ नुषसांण हुवौ । पछै दूजे दिन पातसाहाजी कनै जाय तषत ऊपर बेठांण आंणदुवाई दिली में फेर दिवी । और अंगरेजां री डाकां थी सो सारी बंद कर दीवी । नै मात्र छांवणीयां[10] में समाचार दे दीया कै अंगरेज हींदू मुसलमांनां रौ धरम भिष्ट करै है । सु मेरठ नै दिली में तो म्हे फिरंगीयां नै मार नै बंदबसत कर नै पातस्या बाहादरस्याहजो नै तषत बेठांण नै उणां री आंण दुवाई फेर दीवी है । नै थांनै ही धरम राषणो हुवै तौ अंगरेजां नै मार सामांन मेघजीन षजानां वगैरे रौ बंदोबसत कर लीजो । अब गोरा अर काळां

1. कारतूसों पर जानवरों की चमड़ी लगी हुई है 2. इन्हें मुंह से हम नहीं तोड़ेंगे 3. बंगले जला कर 4. अंग्रेज धर्म-भ्रष्ट कर रहे थे 5. शस्त्रों से सज्जित होओ 6. अन्दर नहीं घुसने दिया 7. युद्ध करने के लिये वह उपयुक्त स्थल था 8. कोई खुशी का अवसर था 9. गफलत 10. समस्त छावनियों

के झगड़ा लगा है[1] सु बोहोत हुसीयार से रैणा। ग्रै चीठीयां ग्रंगरेजी ता० २३ मई संन् १८५६ ईसवी हींदवी संन् १६१३ रा जेठ वद " (ग्रमावस) नै लीषीजी। जेठ वद १३ ग्रेजंट कपतांन मेसन साहब बचा ऊपर नवो बंगलो हुवौ जठै श्री हजूर में ग्राया नै घड़ी ४ इकंत बतळावण हुई। जेठ वद १४ ग्राज रात रा मेह हुवौ[2] नै पांणी तळाब मै मास १ रौ ग्रायो।

संमत १६१३ रा जेठ सुद १ ग्रेजंट साहब वकोलं नै कही कै बदमास लोकों नै निमक हरामीयां नै मेरठ ग्रर दिली मै फीसाद उठाया है ग्रर बड़े-बड़े साहब लोकां कु ग्रर मींमां कु ग्रर बाल बचां कु मारे है ग्रर जगा-जगा फीसाद कर रखा है सो बड़ा साहब काजीखां ग्राया है कै सरहदां पर बंदबसत रखो। ग्रर ग्रजमेर कै या ब्यावर कै बंदबसत वास्ते फौज भेजो। जळदी बंदवस्त करो। स्यात फिसाद ग्रजमेर में घुस गये तो पीछा निकाळणा मुसकल होगा।[3] ग्रर ग्रजमेर सै लेकर ग्राबू तक डाक के बंदवस्त वास्तै ग्रापके सवार रखो ग्रौर ग्रा कहै कै[4] बागीयां कु सभा देणै वासतै लंदन सै गोरां री फोज ४०,००० चालीस हजार का हुकम पातस्याजादी ने दीया है सो वां सै रवांनै होय गई है। सो ता० २५ जून या जोलाई तक ग्रावैगी सो बोट[5] सै उतर पेसतर दिली जावेगी।

जेठ सुद ७ नसीरावाद री छांवणी रो लोग बदळ १० तथा १२ ग्रंगरेजां नै मार नै मैगजीण नै षजांनां रौ बंदबस्त कर लीयौ[6] नै ग्रजमेर ग्रावण रौ मनसोभो[7] है।

सुद ८ इसी सुणी कै ग्रजमेर मै ग्रजमेरा रा सिरदार नै जोधपुर रौ लोग गूलर हौ सु जाय बंदबस्त स्हैर रौ कर लीयौ। जद नसीराबाद वाळो लोग ग्रायो नहीं नै उणां रौ दिली जावण रौ मनसोभो है ग्रौर ग्रेजंट कपतांन मेसन साहब ग्रापरा ग्रमला में मुनसी ग्ररडेटर नै तथा सगळां नै कही कै तुमारै ग्रापस में षिसा[8] है सो हमारै कांन पर ये बात ग्राई है सो ग्रापस में षिसा मत रषो। जो षिसा रखोगे तो तुम सब बिगड़ जावौगे।

---

1. ग्रंग्रेजों ग्रौर भारतियों के बीच युद्ध है 2. वर्षा हुई 3. बाद में उन्हें निकालना कठिन होगा 4. यह कहा जाता है कि 5. जहाज 6. ग्रपने ग्रधिकार में कर लिया 7. मन्सूबा 8. मनमुटाव

जेठ सुद ११ किलादार अनाड़सिंघ नै मेतो छतरमल, बड़ो साहब जारज लारनस अजमेर जावै जिण कनै मेलीया पाली, सो बड़ा साहब पाली मिळीयो नहीं तरै सोझत गया। नै सिसटाचार कीयो नै चंडावळ तांई पोंछावण नै साथै गया। तरै वार-बार आ भोळावण दीवी कै अपणे मुलक का षूब बंदबस्त रखो। वागी लोग आपकै मुलक में आणै पावै नहीं।

जेठ सुद १३ श्रीजी साहबां री बरसगांठ रौ उछव बचा ऊपरला मिंदर रै बारणै बिछायत हुय हुवौ। दुपटा सेली पधरीजी, तिलक आरती हुई। उमराव, मुतसदी, षवास, पासवांनां रो निजर नोछावर हुई। नाच नोवतषांना सैदांनां सदामंद मुजब हुवा। नै तोपां री सिलकां ३७ हुई।

और अेजंट साहब ईसतीयार १ वकील नै छपीयो हुवो दीयो कै श्री महाराज साहब से मालम करो। नकल ईसत्यार री—

और हरांमखोर बदमासां नै मेरठ दिली में फसाद कर रषा है जिकै सवाय लषणेऊ में भी कुछ-कुछ गलवा[1] षड़ा हुवा था सो करनैल सर हीनरी मिंटरी लारनस साहब बाहादुर रजीदंट[2] राजपूतानां वाळा लषणेऊ में कुल मुकत्यार चीप कमसनर है अर उस कुं सदर सैं जरनैल पदवी हुई है जिसनै ऊपर लिषीये दंगा मिटाय दीया। अब लषणेऊ मै कवजा सिरकार अंगरेजी का अैसा है की जैसा अगली साल में था। लषणेऊ में कबजा इस तौर है कै जैसा सिरकार अंगरेज कंपनी बाहादुर नै अपना कवजा कीया था बलकै उससे भी सवाय कवजा कर लीया। हिंदुसथांन के निवासियों से लड़ाई हुई जिसमैं काळा सीपाई तो वोहोत मारा गया गोरां कै हात षेत रया।[3] ३५० तो आदमी मारा गया अर जषमी १९० हुवा। अर अंगरेजी फौज में गोरा लोग पांच दस मूवा अर दस बीस जषमी हुवा। अर काळा कचा रया।[4] काळां री तोपां २६ लाहोरी दरवाजा कनै नजीक सु कोठी में ले गया।

और आज भाडली आठम, सो चंद्र वादळा गैरां में ऊगो[5] सु बरषा इण बरस में घणी हुसी।

और पाली री हाकमी जोसी हंसराज रा बेटा सिवराज रै नांवै हुई। और गोढवाड़ री हाकमी आसोपा भवांनीरांम रै हुई। और गूलर रौ थांणा

---

1. बलवा 2. रेजीडेन्ट 3. अंग्रेजों की विजय हुई 4. भारतीय कमजोर रहें, परास्त हुए 5. गहरे बादलों के बीच चन्द्रमा उदय हुआ

मु० मुकनचंद ता० हुवौ। अर आलणीयावास रौ थांणो आसोपा उतमरांम रै हुवौ नै गांव मगेरीयो जबत हौ जिणां री उठांतरी हुई, नै रू० ५०००) भरीया।

जेठ सुद १४ श्रीजी साहब जनांनी दोढी रा नोरा सु गढ दाषल हुवा और सिंघवी कुसलराज नै हुकम पोहोंतो कै कोई काळा लोग फिसादी आपणी अमलदारी[1] मै होय नीसरै तो गांवां रौ बिगाड़ करै तो करण देणो नहीं। और नसीरावाद री छांवणी तथा नींमच री छांवणी रा बागी लोग अगाड़ी दिली नै जावै तिणां सु मुकालबो करण री किणी री आसंग[2] नहीं पड़ै, कारण कै सांमांन सारो दुरस्त[3] नै मरण मतै[4]। तिणां रा डेरा बगरू म्हैलां हुवा अर सिंघवी कुसलराज नै कुचांमण ठा० केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत रा डेरा कोस दस-पनरै री छेती सु सो देषीजै। बिगाड़ तो बिसेस करै नहीं नै जिनस जोईजे[5] सु ज्यु देवै ज्यु ले लेवै है। फौज बड़ी लड़ायती[6] है।

असाढ़ वद ३ श्रीजी साहब री बरसगांठ रा उछव री जाफत री जिनस कोठार सु सूरसागर पूगी नै षाणो बबरचीयां त्यार कीयो, साहब षायो, नाच हुवौ नै वकीलां रै डेरे अगरचो रंग वगैरे लोंग डोडा बंटीया। और आज षबर आई कै दिली मांय सु आदमी सांवठा नीसर लाहोरी दरवाजै कोठी में गोरा है जिणां पर गया। सो गोरां सोर बिछाय राषीयो हो सो नजीक गया जद सोर नै आग दिषाय दी जिण सु आदमी ५०० उड गया नै बाकी बळ गया[7], कितराक भागा सु जमना में डूब गया अर षेत गोरां रै हात रयौ अर काळां रा पग छूट गया[8]।

और श्री हजूर साहब आम दरबार में फुरमायौ कै कोई नादान है जिका यु जांणै है कै सिरकार अंगरेज कचा रै जासी[9] नै काळां रौ अमल हुय जासी सु सिरकार अंगरेजी री नेकनांमी नै ईकवाल[10] इसो है सो राज इणां रो ही रैसी। नै इणां रै राज जावण री जांण नै कोई मन बिगाड़सी जिणां री षराबी घणी हुसी[11]। नै म्हारौ फुरमावणो तो औ है कै मन तन धन नै फौज है, सिरकार अंगरेजां रै चाहीजै जठै हाजर है।

---

1. अपने राज्य की सीमा 2. हिम्मत 3. सामान से पूरी तरह लैस 4. मरने मारने को तैयार 5. किसी चीज की आवश्यकता हो 6. लड़ने को तत्पर 7. अन्य जल गये 8. भाग खड़े हुए 9. कच्चे साबित होंगे 10. न्याय 11. उन्हें बहुत नुक्सान होगा

असाढ़ वद ६ षबर आई कै टूंक में लोग हो, सु नबाब सुं बदळ गयौ नै कयौ कै तुम अंगरेजां की मदत कर हम कुं भेजोगे तो हम नहीं जावेंगे, क्युं कै अंगरेज सब का दीन[1] बिगाड़ता है, सो हम दीन नहीं बिगड़ावेंगे ।

असाढ़ वद ८ षबर आई कै लाहोरी दरवाजै कोठी तथा पाड़ी[2] है जिण ऊपर लोग ३५०० नै तोपां ४ लेनै गया सो पोर दोय झगड़ो हुवौ नै पाड़ी छुडाय लीवी रै षेत काळां रै हात रयौ । पाड़ी छुड़ाय पाछो लोग दिली मै आय गयौ ।

असाढ़ वद ९ अजमेर अठा रो लोक फौज है तिण री षातर करण नै षरची देण नै अठा सुं किलादार पंवार अनाड़सिंघ नै म्हेतौ छतरमल नै मेलीयो । सु आज रात रा चढ़ीया । साथै मनांणा रौ ठाकुर सिवदांनसिंघ फतेसिंघोत गयौ । नै अजमेर पूगा जद उठा रो अजीटंण साहब सांमो पेसवाई में आनासागर तांई आया नै मेगजीण तांई साथै रया । पछै तीजा पौर रा साहब सुं मुलाषात करण नै मेगजोण में गया जठै छोटो साहब नै अजीटंण साहब दोनूं जणां मेगजीण री मांयली पोळ तांई सांमां आया । षुरसीयां ऊपर बैठा, बड़ी सिसटाचार री वांतां करी । और उठां सुं नवै नगर बड़ा साहब जारज लारन्स कनै गया सु सीकतर पेसवाई में अजमेर रा मारग री सड़क तांई आया । नै पछै तीसरा पोर रा बड़ा साहब सुं मुलाषात करी । तरै सिं० रतनराज नवै नगर थो सु सांमल हौ नै बड़ो सिसटाचार कीयो ।

असाढ़ वद ११ अजंट मेसन साहब कचेड़ी कर सारा अमला रा आदमीयां नै नै वकीलां नै कयौ कै म्हारै चिठि आई जिसमें लिषी है कै दिली कै नजदीक गोरां कै अर काळां कै झगड़ा हुवा जिसमें काळां की तोपां २४ गोरां नै पड़ाय लीवी[3] । हमारी सिरकार की फतै हुई । और सुणी कै पटीयाळा रा नै जंबू म्हाराज सिरकार अंगरेजी की मदत फौज रसत मारोड री मदत पूरी कीवी है ।

वद १३ तथा १४ अजंट मेसन साहब नै साथै मालबीन साहब हसार आवूजी सुं आया नै आगा बीकानेर जावै । सु श्री हजूर में आया । बचा ऊपरला बंगला में मुलाषात हुई । घड़ी ४ बतळावण हुई और सुणी कै अंगरेजां री फौज गोरां री नै पटोयाळा वगैरे सिषां री फौज हजार १०,०००

1. धर्म 2. पहाड़ी 3. अंग्रेजों ने अपने अधिकार में कर ली

आसरै दिली लागी सो दिली रा दरवाजा बंद है नै दिली सहैर में तथा वारै काळां री फौज हजार ४०,००० है, मोरचां ऊपर कायम है। दिली सहर रो लोग तंग है। अर आबूजी सु' सीकतर बड़ा साहब रो कपतांन मैलडमिन साहब आयौ सो आगो बीकानेर जावै और बरषा मुलक मै घणी। और अजंट साहब श्री हजूर में आया नै मीमां ४ नवानगर सु' भाग नै आई जिणां रो डेरो सूरसागर अजंट सांमल हुवौ।

संमन १९१३ रा असाढ सुद ५ सींध री हैदरावाद सु' अेक साहब आयौ। सु डाक १ उठा री बैसांणण वासते[1] सो सिंध सु' जैसलमेर मालांणी हुय जोधपुर तांई[2] तीस कोस री छेती[3] सु' बैसांणी, नै चोकी दीठ ऊंठ २ दोय राषणा नै प्र० १५) लं० २०) तांई ठेरीया। श्री हजूर री असवारी बचा[4] ऊपरला बंगला मांय सु मांयलैबाग दाषल हुई। और सुणी कै मंमोई[5] तथा अैमदाबाद अंगरेजां रै नौकर पुरबीया[6] हा सु नोकरी छोड़ परा गया। नै झगड़ौ फिसाद कीयो नहीं। और आज पाछली घड़ी ४ रात रही जद श्री हजूर साहबां रै रांणीजी श्री लाडी रांणावतजी रै महाराज कंवार जनमीया। नै उछव सदामंद सरसते हुवौ। नै सिलकां १२५ छूटी।

असाढ़ सुद १३ सु'णी कै मीमच[7] री छांवणी रौ लोग बागी दिली जावै तिणां सु' मुकालबो करण वासतै जैपुर रो अजंट ईडन साहब नै हाटकासल साहब आदमी १५०० ले नै जैपुर सु' रवांनै हुवा। नै जोधपुर री तरफ सु' ठाकुर कुचांमण केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत नै पैरवै ठाकुर सांवतसिंघ दौलतसिंघोत नै सिंघवी कुसलराज बनराजोत नै फौज हजार २००० आसरे ले नै अै पिण गया। सु जैपुर रै गांव तू'गै सामल हुवा। पिण बागी लोगां सु' लड़ाई करण री किणी रै तुली नहीं[8]। कारण कै षांपण हांनै' लीयां बेवै है[9] सु दोउ राजवाड़ां री फोज रै नै बागी लोगां रै कोस अेक री छेती सु' बंहै छै[10]। रसत वेजबरी[11] सु' लेवै नै दाम पूरा देवै, सिवाय[12] किणी नै दुष देवै नहीं।

---

1. डाक चौकी की व्यवस्था करने हेतु 2. तक 3. दूरी 4. गुलाब सागर का छोटा हिस्सा 5. बम्बई 6. पूर्व के रहने वाले हिन्दुस्तानी लोग 7. नीमच 8. इरादा नहीं हुआ 9. बागी लोग कन्धे पर कफन लिये चलते हैं 10. एक कोस के अन्तर से चलते हैं 11. जबरदस्ती 12. अलावा

असाढ सुद ९ अजंट साहब श्री हजूर में मांयलाबाग में आया । घड़ी ४ ईकंत रया । श्रीजी साहब फुरमायौ—मदत म्हां सु बणै जिण में[1] सारी तरै हाजर हां नै सिरकार अंगरेजां रो आछी[2] चावां । हमें फिसाद थोड़ा दिनां रौ है और बागी लोग मीमच री छांवणी रा दिली जावै जिणां रौ डेरो राजगढ़ तथा कुसालगढ़ कीयौ । नै दामां सटै रसत दीवी नहीं, जद बीजा दांमा जबरदसती सु ले लीवी ।

असाढ़ सुद १० कोटवाळी चांतरा सु डंढोरो[3] फिरीयो कै सिध री हैदराबाद री डाक घोड़ां ऊंठां री बैठ गई है सु चीठी देणी हुवै तो दिली सु.... सागर ।

असाढ़ सुद ११ और सारस्वत ब्राह्मण श्री नागणेचीयांजी रा सेवग आपसी में लड़ीया ।[4] बाली सु अेक मर गयौ । नै मारण वाळो अठा सु नास गयौ[5], हात आयो नहीं । तरै घर जबत कर नै माल असबाब चांतरै जमा हुवौ ।

असाड़ वद १२ श्रीजी साहबां री असवारी मांयलावाग सु किलै दाषल हुई ।

असाढ़ सुद १३ सुणी कै जैपर रो लोक हाटकासल साहब साथै थो, बदलण रो बैम[6] हाटकासल साहब नै आयौ । जद जोधपुर रा फौज में डेरो आय कीयौ । नै जोधपुर वाळां नै कयौ कै हमारा लोग बदळ गया है सु अब बागी में से झगड़ा नहीं करणा । और सुणी कै दिली में जमुना री नहर जावै है सु अंगरेजी फौज वाळां बंद कर फंटाय लीवी सु दिली सहैर में जळ री पूरी तकलीफ है नै झगड़ौ रोजीना हुवै है । नै अंगरेजां री फौज बदै है[7] । नै मोरचा सांकड़ा[8] घालै है । और किलादार अनाड़सिंघ अजमेर सु आयो ।

संवत् १९१४ का विवरण

संमत १९१४ रा सांवण बद १ बरषा चोषी हुई । तळाब मैं पांणी मास २ रौ आयौ । साहब मालाणी इलाका रा जागीरदार भोमीया नै मदत

1. हमारे से जो भी सहायता बन सके उसमें 2. भली 3. ढ़िढ़ोरा 4. आपस में झगड़े 5. भाग गया 6. बागी होने का वहम 7. अंग्रेजी सेना की संख्या बढ़ रही है 8. नजदीक, सघन

वासतै मुनसी जीवणरांम मालाणी रौ हाकम तिण री मारफत कवाया, सु हांकारो भरीयो नहीं[1]। जद कयौ कै यो मुलक श्री महा(रा)ज श्री तषतसिंघ कुं सूंप देवेंगे। जद मालाणी रा सिरदार जसोल, सिणदरीं, गुड़ो, राडदड़ो, बाड़मेर वगैरे सारां ही हांकारो मदत रौ भर लीयौ। मदत दीवी।

सांवण बद २ गांव बीठारै हरजी रा ठाकुर रौ बेटो कांनसिंघ चांपावत आईदांनोत षोळै बैठो, तिण ऊपर आउवै ठाकुर कुसालसिंघ बषतावरसिंघोत लांबीयां रा ठाकुर प्रथिसिंघ नै तोपां २ नै आदमी १००० आसरै देनै नै सरद रा बायण सु लीयोड़ी जाय नै गांव घेर लीयौ नै पछै गांव आंगदोस रा चारण बिसनदांन नै मेल नै बारै बुलाय नै पकड़ण लागा तरै कांनसिंघ संम[2] नै रजपूत मरै ज्युं काम आयो।[3] तिण रा समाचार श्री हजूर मालम हुवा। तरै आउवै ठाकर ऊपर नाराज हुवा नै फुरमायौ कै म्हारा बैठायोड़ा नै[4] मार नांषीयो। नै फेर ही केई ठाकर री नादानी री बातां भेळी हुय गई है। सुं गिणिया दिनां मै सजा पूगसी।[5]

सांवण बद ३ सुणी कै दिली झगड़ो हुवौ सो गोरां रा पग छूट लाहोरी दरवाजै कोठी सुं भाग कोस पूण पर पाड़ी[6] है जठै पग टिकिया[7]। षेत काळां रै हात रयौ। फेर सुणी कै सरचंदोसी पूरव में है सु बागीयां लूट लीवी। लाष पांच रौ नुकसांण हुवौ, अेक पोहर में। और आगरै पिण लड़ाई हुई, किलो अंगरेजां रै हात है सहैर में फिसाद हुवौ।

सांवण वद ४ गढ़ ऊपर अजंट साहब आया, घड़ी ५ ईकंत रया।

सांवण वद १० मंडी में कपतांन दुरगाप्रसाद रा आदमीयां रै नै नाजर ईलामबगस तबेला रा दरोगा रा आदमीयां रै बागां री बिकरी री रकम नाजर रा आदमीयां मांगी नै वैणां[8] दीवी नहीं। तिण पर झोड़[9] हुवौ। आदमी दुतरफा भेळा हुवा नै पोर अेक मैंजर रयो नै नाजर रै आदमी दुरगाप्रसाद रा आदमी रै तरवार री दीवी तरै कोटवाळ किलादार पींडां आय नै बिचै पड़ नै छुड़ाया नहीं तर फिसाद बध आदमी मरण री सुरत ही।

---

1. स्वीकृति नहीं दी 2. तैयार होकर, सन्नद्ध होकर 3. एक वीर राजपूत की तरह युद्ध कर काम आया 4. मेरे द्वारा गोद बैठाये हुए को 5. थोड़े ही दिनों में वह दण्डित होगा 6. पहाड़ी 7. वहां जाकर रूके 8. उन्होंने 9. झगड़ा, कहासुनी.

सांवण वद ११ षबर सुणी कै कुचांमण ठाकुर रै डेरे बड़ा साहब बड़ा ठाकुर रणजीतसिंघ सिवनाथसिंघोत री मातमपोसी करांवण आया नै पछै सिंघवी कुसलराज रै डेरै आया, जद कुसलराज तायफा बुलाया नैं नाच करायो। तरै साहब इणां नै कही कै अब तुम जोधपुर बेसक जावो। हम राजी षुसीं सै सीष देते है तरै अै श्री हजूर साहबां रै नांवै षलीतो लीषाय उठा सु रूषसुद हुवा[1]।

सांवणं वद १२ समाचार आया कै गांव सांचोर री गढी में गूलर ठाकर बिसनसिंघ सांवठा आदमियां साथै बड़ गयौ नै पाषती रा गांव बिगाड़सी[2], तरै सिंघवी कुसलराज नै हुकम पोतो। तरै कुसलराज चढ नै गयौ तरै गूलर रो ठाकर निकळ गयौ।

सांवण बद १४ श्री हजूर साहब छैलवाग रात रा पधारीया अौर महाराज कंवारां री असवारी बैद्यनाथजी[3] दरसण नै पधारीया साथै नाजर हरीराम मेतो छतरमल.................................।

सांवण वद अमावस तथा सुद १ अजंट साहव छैलबाग श्री हजूर में गया। घड़ी २ इकंत रया।

सांवण सुद २ दोय गोरा दूजा[4] नै अजंट साहव साथै प्रभात रै पोर किलो देखण नै आया।

सांवण सुद ७ षबर आई कै अगस्त महीना री १४ ता० दिली मै लड़ाई च्यार पोहर तक हुई सु आपस में किताक आदमी भिड़ गया सु बंदूकां सूं लाठी री बाहा[5] करै ज्युं करी नै दूसरी सुणी कै बिलायत सुं गोरा २५,००० पचीस हजार आया सु आधा तो प्रयाग रैसी नै आदा दिली मेलसी, सो रवानै हुवा। अौर सुणी कै कांनपुर कंवू[6] में गोरा २२०० जाय अमल कर लीयौ नै बागी घणा मुवा[7]।

सांवण सुद ११ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद पधार बिराजै सु सुद १५ राषी रो उछव बाळसमंद हुवौ।

---

1. विदा हुए 2. आस-पास के गांवों को हानि पहुंचाएगा 3. बैजनाथ 4. अन्य अंग्रेज लोग 5. प्रहार 6. कैंप 7. बागी लोग बहुत मारे गये

संमत १९१४ रा भादवा वद १ वर्षा चोषी हुई। तळावां मै जळ महीनां ४ रो आयौ।

भादवा वद ५ नाग पांचम[1] रौ मेळो चोषो हुवौ नै श्री हजूर साहब जनांना समेत बाळसमंद में मेळो निजर गुदरायौ। नै रात रा अकस्मात् बीजळी पड़ी, भाटी गोयंदास री हवेली गोपाळ पोळ कनै[2] जिण में हवद भाषर मै षोदीयड़ो जिण में सोर मण ८०,००० असी हजार हौ जिण ऊपर पड़ी सु भरणा ऊपरला कोट दो बड़ा हा जीं कनै, गोपा मोहन फतैपोळ नै पसवाड़ा रो कोट सोर सु उडीया जिणां री पूठीयां[3] चोपासणी री नदी तांई गई। नै बोड़ा री घाटी पंचेटीया ऊपरला घर नै लला कोटड़ी मांला घर दब गया नै किला में पोळां में आदमी १०० अेक सौ अंदाजै दबिया। नै श्री चामुंडाजी रो मंदिर उड गयौ नै श्रीजी री कुदरत सु श्री चांमुंडाजी बिराजीया वाहन समेत रया[4] हिलीया ही नहीं। और पोकरणा बांमणां रा घर में आदमी १० था सु नौ (९) तो दब गया नै १ अेक बचियो घायल हुवोड़ो। और आदमी ३०० आसरै मरीया जिणां नै भाटा आगा कर-कर काढीया[5]। सु बद ६ पोर रात तांई दाग दीयौ[6]। सु अेक परमेश्वर री कुदरत इसी हुई सु हांचळां रो टाबर[7] हो सु भाटां हैटे उण री मां नै वो आया, गम[8] सु मां तो मर गइ नै टाबर जीवतो सींज्या रा नीसरीयो। नै दाग मै लकड़ीयां मिळै नहीं तरै जोसी प्रभुलाल कही—नांणो[9] तो हुं देसु नै लकड़ीयां जिण भाव हुवै जिण भाव लावौ। आ षबर कोटवाळ सेरकरण नै लागी तरै कोटवाळ कही—म्हारी चुंगी री लकड़ीयां चांदपोळ बारै है नै दुजा दरवाजा है[10], सु मंगाय लो। दांमा रो क्युंही जरूरी नहीं। तरै दाग सगळां नै हुवौ और उण दिन रात रा श्रीजी साहब जनांनां श्री महाराज कंवारां बाभां सहित बाळसमंद हा। और हुकम हुवौ कै रात री दोढ़ पोर री तोप छूटै है सु मोकूब राषो, क्युंकै जायगावां हरडाट सु षोळी पड़ गई है।[11] और बिजळी पड़ी जीण सु अेक बात आश्चर्य री हुई—किला री पोळां रा तथा सैहर रा दरवाजां रा तथा सैर रा घरां रा ओरा बगैरे मकांनां रा नै दुकानां रा कूंठा[12] सारां रा षुल गया नै हरडाट

---

1. नाग पंचमी 2. पास में 3. बड़े पत्थर 4. वाहन सहित चामुण्डा की मूर्ति योंकी यों मौजूद रही 5. पत्थर अलग करके निकाले 6. दाह संस्कार किया 7. दूध पीता बच्चा 8. भय, शोक 9. रुपये 10. अन्य दरवाजों पर भी है 11. मकानों की दीवारें धमाके से कमजोर हो गई हैं 12. कूंडे

बोहोत भारी हुवौ सेंचनण[1] हुय गयौ नै सैंचनण हुतां ई वर्षा हुई जिण सुं दबणा सु तो दब गया परंत सैर रा कूड़ा सिण रा दाट थळीयां उड़ी सु बुज गई, न्हींतर सहर में लायणो हु जातो[2] सु परमेश्वर साहाय करी ।

बद ११ श्री हजूर मुसायबां नै बुला फुरमायौ कै जोतसी पंडितां नै बुलावो सु इसो बीजळी पड़ण रौ उलकापात जिण रौ फळ कांई ? सु निरणै करावां तरै सरब अग्नहोत्री जगनेश्वर नै और ही जोतसी व्यास बाळमुकुंद बगैरे नै बुलाय नै पूछीयौ—तरै बाराही संहिता नै अद्भुतसागर देष नै कयौ—इण रो फळ बोहोत साधारण है । लक्ष आदमीयां रो लोही पृथ्वी पीवैज । श्री हजूर सुं फुरमायौ—इण री सांती नै कांई लागै ? तरै पाछी अरज करी—रूपीया १,००,००० अेक लाष लागै, तरै मोकूब रही[3], सांती हुई नहीं । नै फतैपोळ बारै भाटा आगा कीया सो गाय १ जीवती दिन १० दस सुं नीकळी ।

भादवा बद १४ षबर आई कै लषणेऊ[4] में सिरकार अंगरेजी रा सिपाही सो बागी हो गया । नै जरनैल[5] सर हिनरी लारनस साहब चीप कमिस्नर लषणे(ऊ) रा हा जिणां नै मार नै कबजो नबाब री बेगम रो तथा उठै अहलकार हा जिणां रो हुय गयौ । और आज सां० सुद ११ री लड़ाई री षबर दिली सुं आई । सु लड़ाई भारी हुई, बरोबर रया । आदम ७७० सात सौ सितर तो कांम आया, बाकी घायल हुवा । और पाली री रयत लोग डीसा बगरै रो बागी हुवां रा समाचार सुंण घबराया । तिणां नै षातर तो जोसी हंसराज मोकळी करी[6] परं(त) घबराट मिटीयो नहीं । तरै श्री हजूर सुं जाबता सारू राव राजमल नै नाजर मुस्ताक नै मेलीया । सु नदी लूणी पूर आय गइ[7] नै दिन ३ उतार दियो नहीं । सु गां(व) कांकांणी में मुकांम कीया, पछै पाली गया ।

भादवा सुद ६ अजंट साहब श्री हजूर में छैलबाग आया, घड़ी २ इकंत बतळाया । और षबर आई कै अेरणपुर रौ लोक बदळ बंगला बाळ तोपां मेगजीण

---

1. चारों ओर तीव्र प्रकाश 2. शहर में लाय लग जाती 3. शान्ति यज्ञ नहीं करवाया 4. लखनऊ 5. जनरल 6. हंसराज ने उन्हें आश्वस्त करने का प्रयास तो काफी किया 7. लूनी नदी अपने पूरे बहाव पर आ गई

रोकड़ ले नै दिली जावै। तरै अठा सुं किलादार नै हुकम हुवौ—सु आदमी १००० नै तोपां ४ ले नै किलादार अनाड़सिंघ मेतो छतरमल चढ़ीयो।

भादवा सुद ७ अेरणपुर सुं वकील लोढा रूपचंद रो कागद आयो जिण में लिषियौ कै आबू ऊपर लोग बागी हुय साहब लोग मीमां, बाळ-बचा ह़ा जिणां नै मार नांषीया। असबाब लूट बंगळा बाळ दिया। आ बात अजंट साहब सुण बोहोत अपसोस कीयो। पछै घेरा २ नै साहब रै आबूजी सुं चिठि आई जीसमें षरषूबी[1] लिषी तरै रूपमल नै ओळंभो[2] लीषीयो नै लीषायो– आयंदा सुं सुणीया हुवा समाचार पकी निश्चय हुवां विनां लिषणा नहीं।

भादवा सुद ८ प्रथम षवर आई कै अेरणपुर रो लोग लड़ायतो पलटण में लोग आदमी ५०० नै रसाला दोय रा घोड़ा १६० और बाजे लोग कर आदमी १००० तोपां २ नै मेगजीण लेनै लोग वहीर हुवौ सु पलै[3] दि(न) डेरा सांडेराव हु(य) नै उठा सु ढोला रै गांव हुवा। नै गूंदोज डेरा हुवा नै इणां नै षबर लागी कै जोधपुर री फौज पाली में म्हांनै रोकण वासतै भेळी हुई है। तरै इणां सला कर पाली रो मारग छोड़ नै डेरो गांव षेरवौ कीयौ।

सुद ६ अजंट साहब कांयलांणै श्री हजूर में आया। घड़ी २ बतळावण इकंत हुई और सुणी कै आ(उ)वा रै ठाकुर भला आदमी अेरणपुर वाळा बागीयां सुं धरम-करम कर[4] बुलाया। सु आउवा रै गांव कराड़ी बागीयां रो डेरो हुवौ। नै श्री हजूर री फौज रो डेरो गां(व) बीठोरै हुवौ। नै आउवै गूलर ठाकुर बिसनसिंघ नै आलणीयावास रो ठाकुर अजीतसिंघ आया जिणां साथै घोड़ा १२५ नै ऊंठ ५०, डेरो तळा[5] ऊपर बाग मै कीयो।

भादवा सुद ११ श्री आनंदघनजी झुलण नै गोळ री घाटी रै मारग पधारीया। गुलाब सागर फतैपोळ गोपाळ पोळ रो मारग बंद। हाल सोर सुं किलो पड़ीयो सु मारग हुवौ नहीं। और मुसलमानां रै ताजीया आज हा सु तीसरा पोर पैली सारा नै राज सुं कढाय दीया। पछै झूलणा रौ मेळो हुवौ। और सुणी कै बागी लोगां रा डेरा आ(उ)वै हुवा नै आ(उ)वै ठाकु(र) रो कागद अजंट साहब रै नांवै इण मजमून रो आयौ कै अेरणपुर रो लोग बागी

---

1. खैरियत 2. उल्हाना 3. परले 4. विश्वासघात न करने की पक्की सौंगन्ध खाकर 5. कुंआ

हुय अठै आय गयो है। सु इणां कनै सिरकारी तोपां, बंदूकां तथा मेगजीन तथा षजांनो वगैरे है सु सारो इणां कनलो म्हां हस्तै लीरावै[1] नै इणां नै रसीद कर देणी। नै चिठी षुलास[2] इणां रै घरे जावै सो कोई रोके नहीं। जिण री लीषाय देवै। सो साहब पाछो जबाब श्रो दीयौ—कै तुमकुं लिषणा होय सो श्री महाराज साब की मारफत लीषो। तुमारी परबारी सुणवाई नहीं हुवै। इसो लूषो[3] जबाब लिषीयो।

सुद १४ श्रीजी साहबां री सवारी मांयलेबाग दाषल हुई।

सुद १५ सिंघवी कुसलराज नै हुकम पोथो कै बागी लोग आवै है सु अठा सु उणां नै सजा देवण मुदै राजमल किलादार नै मेलीया है जिण सांमल तुं ही हुय नै उणां नै संगीन सजा देवो।

संमत १९१४ रा आसोज वद १ म्हैतो विजैमल नै फौज में किलादार अनाड़सिंघ, राव राजमल, म्हैतो छतरमल है जिणां कनै आऊवै है जठै रात आधी रा चढायो।

आसोज बद २ तथा ३ अजंट मेसंन साहब श्री हजूर में आय अरज करी कै बागी आऊवै है सु उनकूं जरूर सजा मीलणी चहीजै।

षटदरसण री अदालत कवराज भारथदांन रै हुई।

आसोज बद ४ सिरकारी फौज रा डेरा बीठोरै, जिण में किलादार अनाड़सिघ, राव राजमल, म्हैतो छतरमल, नाजर मुस्ताकम्हैमंद इतरा जणा तो आगै था नै लारा सुं म्हैतौ बिजैमल गयौ सु आज झगड़ो हुवौ जिण में जाळोर रो गांव मीठड़ीया रा ठाकुर रौ बेटो काम आयौ नै दोय च्यार आदमी घायल हुवा। पछै पोंतीयो[4] फेर झगड़ो मोकुब रयौ। पछै रात रा किलादार फौज में सिरदार हा जिणां सुं सला कर नै. षेजड़लै ठाकर हिमतसिंघ सादूळसिंघोत रो भलो आदमी भाटी जगतसिंघ नै आउवा में ठाकुर कनै मेलीयौ नै कवायौ कै थांनै किणी बात रौ सूबो[5] होय कै फौज थांरै ऊपर आई है तो थांनै म्हे सिरदार है जिणां रौ नै मुसायब किलादार वगैरे है जिणां रो बचन दिराय देवां नै थे श्री दरबार री फौज में डेरो आय करो। पछै बागी लोग है जिकां नै अठै

---

1. मेरे हस्ते आपके पास ले लें 2. स्पष्ट 3. रूखा 4. पीछे वाला 5. सन्देह

समजाय देसां। तरै ठाकर इतरा जणां सु सला मिलाई[1]—लांबीयां ठाकर प्रथिसिंघ भांनसिंघोत नै वकील ठाकर रो व्यास उदैभांण। तरै इणां रै तुल गई[2] तरै ठाकर पको हांकारो भरा लीयो[3]। बड़ी फजर[4] श्री दरबार री फोज में डेरो कर देसां। इतरी पकाबट कर रात आधी आसरै जगतसिंघ सीष कर पाछौ बहीर हुवौ नै गढ़ रै बारै आयौ तरै कछावो मांनसिंघ लालसिंघोत ठाकर रो परधांन पूछीयो—काकाजी ! कांई सला ठेराई[5] ? तरै जगतसिंघ सारा समाचार उणनै कहै नै डेरां आय नै किलादार नै, नै सिरदारां नै कया। नै जगतसिंघ फौज में गयां पछै कछावो मांनसिंघ गूल(र) ठाकर विसनसिंघ मंगलसिंघोत रै डेरै जाय नै कयौ कै म्हांरा ठाकुर तो राज सु धरम करम कर लीयो है, हमें हुं निरदोस हुं। म्हें तो थांनै उबाकबी कर दीवी है[6]। तरै गुलर ठाकर जोधपुर लेजमै री फौज मै रसालदार अवास अलीयो जिण जाय कयौ—ठाकर आउ(वा) रा तो मिळ गया है नै तरै अवासल अली सारी फौज री कमर बंधाय लोग नै घंटा २ रात लारली रही जद ठाकर नै जाय कही कै म्हे राज री फौज ऊपर चला'र जावां हांसो कहौ तो म्हां सांमल लोग मेलो नहीं तर थे संभो[7] पैली थांनै मार नै पछै राज री फौज सु झगड़ो करांला। तरै ठाकर नीगै कराई सो लोग सगळो गांव में आय गयौ नै ठाकर रै तोपां ही जठै ही बागीयां कबजो कर लीयो। तरै ठाकुर चांपावत सगतसिंघ सांमसिंघोत बलोत गांव सिणली रा नै मुकत्यार कर ईणां सांमल मेलीयो। सु अै आया राज री फौज ऊपर सूरज उगां पैली, जिण में अगाड़ी तो पलटण रौ पाळो लोग नै तोपां २ छोटी नै इणां रै लारै रसाला रा घोड़ा नै उणां लारै गूलर आलणीयावास रा ठाकर नै चांपावत सगतसिंघ घोड़ां चढीयोड़ा नै इणां कनै घोड़ा रसाला समे(त) ५०० अंदाजे। राज री फौज में बाली बगैरे परगनां रो लोग हजार ४००० च्यार, मुसाहब, किलादार अनाड़सिंघ, सिंघवी कुसलराज, राव राजमल, मैतो बिजैमल। सु पैली तो बंदूकां तोपां सु झगड़ौ हुवौ। नै बंदूकां बैतां ही डेरा सु बारै आवतां राव राजमल रै तो छाती मै गोळी री लाग गई। पछै मोरचां में आवण लागो जद दूजी फेर लाग गई[8]। तरै आदमी षासा[9] यां कांनी ले गया

---

1. परामर्श किया 2. निश्चय कर लिया 3. स्वीकार करा लिया 4. प्रभात 5. क्या निर्णय लिया 6. तुम्हें वाकिफ कर दिया है 7. वरना तुम तैयार हो जाओ 8. दूसरी गोली और लग गई 9. काफी संख्या में

नै किलादार मोरचां में तोपां ऊपर आय नै कांम आयौ। तिण साथै इतरा जणा काम आया—…………………… ।

नै सिंघवी कुसलराज, मेहेतो बिजैमल वगैरे, नाजर मुसताक, षीची उमेदकरण झगड़ो सरू हुतांई[1] निकळ गया, सु सोभ्रत आवता रया।

संमत १९१४ रा आसोज बद ७ नै राव राजमल तेजमलोत नै किलादार पंवार अनाड़सिंघ अभैसिंघोत नै सुंणाया[2], नै बीठोरा रा झगड़ा में रा० भैरूसिंघ रणजीतसिंघोत षांप जोधा केसरीसिंघोत पटै गांव गोराउ रा ठाकर रै गोळी लागी नै कूंपावत हरनाथसिंघ सीवास रा ठाकर रै गोळी लागी नै आदमी १०० अेक सो तो कांम आया नै २०० दोय सै आसरे जषमी हुवा नै तोपां वगैरे राज री बागी ले गया नै कितरोक असबाब आहोर रौ ठाकर रूषवाळीयो[3] और………………………… ।

आसोज बद १० दिवांण मैतो बिजैमल फौज मांय सु पाछो फीको आयौ, जिण नै सांड सिवराज कयो—आप झगड़ा मांय सु उरा आया ? जद पाछो कयौ—म्हांनै श्री हजूर सु झगड़ो सरू करावण को हुकम दीयो छो सो सरू करार उरा आया।

आसोज बद ११ सुणी कै बड़ो साहब जारज लारनस साहब नवा नगर सु फौज ले नै बागीयां नै सझा देण नै आउवै जावै है सु डेरा चंडावळ हुवा है औ(र) किलादार अनाड़सिंघ रा ओसर री भोळावण[4] जोसी प्रभुलाल मु० मुकनचंद नै हुई। षांड मण २५०) अढाई सौ गळी नै जूनीवाळ सै त्यारी हुई।

आसोज बद १२ अेजंट मेसंन साब जोधपुर सु चढीया, बड़ा साहब सांमल हुवण नै। तिण साथै श्री हजूर साहब जाबता वासतै पोकरण रौ वकील हरीयाडांणां रौ ठाकर पीरदांन भैरूसिंघोत नै मेलीयो। नै वकील सिं० सांवतराज नै ऊंठ जाखोड़ा जिण ऊपर अजंट चढोयौ नै आगे ऊंठ ऊपर कायलांणां तालका रो रजपूत निरवांण वासी कुचांमण रो चढीयौ नै अठा सु रवांनै हुवा। सु अेक दिन तो मारग में लागो नै वद " (अमावस) नै बागीयां रै नै बड़ा साहब रै झगड़ौ हुवौ थो तिण री बिगल सुण अेजंट साहब ऊंठ सु

1. युद्ध प्रारम्भ होते ही 2. धराशायी कर दिया 3. रखवाली में रखा 4. मृत्यु की व्यवस्था का जिम्मा

उतर पाळा बहीर हुवा। नै चांपावत पीरदान सिं० सांवतराज नै ऊंठ वाळो ग्रै ग्रद कोस ग्रंदाजै उली कांनी ऊभा रया नै ग्रेजंट साहब बिगल सुण नै बागीयां री बिगल हुतां ही जिण में परा गया[1]। सो बागी इणां नै पकड़ण रो मनसोभों कीयो सो तो हात ग्राया नहीं। तरै रसालदा(र) ग्रवासली रै भाई भाला री देनै मार नांषीया[2]। नै बड़ा साहव री फौज रो जोर बागीयां नै जादा लागो सु तोप छोड ग्राउवा रा तळाव में पाळ रै ग्रोलै[3] बड़ गया तरै ग्रासोप ठाकर सिवनाथसिंघ वषतावरसिंघोत ग्रापरा ग्रादमी ले जाय तोप षेंच नैं मांय लाया परंत ब(ड़ा) साहब रा घोड़ा रै गोळी लागो सु घोड़ो जाय पड़ीयो, बडा साहब रा पग छूट गया[4]। सु उठा सु गांव ग्रांगदोस में जाय चारणां रै ग्रठै पांणी पीयो। नै पाछा उण हो बषत बहीर नवा नगर नै हुवा। ग्रै समाचार सुद १ ग्राया नै श्री हजू(र) में मालम हुवा।[३७]

ग्रासोज सुद २ कवराज भारतदांन रो बेटो मुरारदांन बाकड़ीया बडगांव फोजी लोक लेवण नै चढीयौ। तिण नै मुजरो हुवौ नै घोड़ा २०० पाळा ७०० ले नै ग्रायो। किलादार रा ग्रोसर रो जी(म)ण हुवौ। राज रो रसालो जीमीयो। ग्रौर इसी सुणी कै व्रड़ो साहब ग्राउवा सु तुरत जावतो नहीं पण ग्रजमेर रा लोग री ग्ररजी ग्राई कै इंदोर रो लोग बागी होय गयो सो ग्रजमेर पर ग्रावै है। सो म्हांरो धणी कुंण है, तिण सु बड़ो साहब पाछो गयौ। नहींतर जावतो नहीं।

सुद ५ दिली में लाहोरी दरवाजै पाड़ी[5] ऊपर तो ग्रंगरेजी लोक थो ने जंबू सु फौज हजार ५००० पांच लड़ायतो लोग[6] ग्रायौ नै हजार ४००० च्यार ग्रंगरेजी लोग पंजाब में थो नै बाकी पाड़ी माथलो सांमल हुय झगड़ो कीयो सु तोपां री लड़ाई हुती थी नै दिली री कोट सरपनां[7] री सफील[8] पाड़ भिड़ गया। सो तरवारां री लड़ाई सु ग्रादमी दुतरफा २५०० पचीस सौ कांम ग्राया नै काळां रा पग छूट गया सो नास नै[9] लाल कोट में बड़ गया। सैर में सारो कबजो ग्रंगरेजां रो हुय गयौ नै दिन ३ तीन तोपां री लड़ाई में गोळा हजार ५० पचास बूवा[10]। नै जोधपुर पेली ग्रजंट गीरांट साहब उण लड़ाई में.... सु दिन ३ तीन रोटी षाई नहीं जिण सु दसतां लाग मर गया।[३८]

---

1. बागियों का बिगुल बजा रहा था उसी ग्रोर चले गये 2. मार डाला 3. ग्रोट में 4. पैर उखड़ गये 5. पहाड़ी 6. सैनिक लोग 7. शहरपना 8. दीवार 9. भाग कर 10. चले

ग्रौर श्री हजूर साहब किलादार देवीसिंघ री हवेली ग्रनाड़सिंघ री मात(म)पोसी करावण पधारीया। ग्रध घड़ीक बिराजिया नै षातर फुरमाई। पछै उठा सु राव राजमल री मातमपोसी करावण पधारीया, नै राजमल रा बेटा पांवडा ५० सांमा ग्राया। पछै पधार विराज षातर फुरमाई। नै राजमल री वहू कनै नाजर हरकरण नै मेल नै षातर कराई।

ग्रासोज सुद ६ दिली में ग्रंगरेजां रौ कबजो हुवां रा पका समाचार लागा जिणां रो षुसी री सिलकां हुई। सु तीर तोपां रा १०२ ग्रेक सौ दोय छूटा नै पछै श्री हजूर साहब तांमजांम ग्रसवार हुवा नै श्री महाराज कंवार सगळा साथै श्री चामुंडा माताजी पधारीया, पाछा सिज्या ग्रासरै म्हैलां दाषल हुवा।

ग्रासोज सुद १० बिजैदसमी री ग्रसवारी श्री रामचंद्रजी री खासा में विराज फतैपोळ रै रसतै भारां ऊपर हुय धाय भाई रा कुवा कनै रथ में बिराज पधारीया। नै श्री हजूर साहब गोळ री घाटी हुय सिरै बजार हुय ग्राडै चोठै हुय नै जाळोरी दरवाजा बारै पधार बाहीवाळ रो सरसते कर नै उणहीज मारग गोळ री घाटी रै गढ़ दाषल हुवा। नै सिलकां रा तीर १०१ छूटा।

ग्रासोज सुद १२ ग्राउवा रो पटो जिला समेत जवत हुवौ। भंण्डारी श्रीचंद तालकै हुवौ।

नै सुणी कै ग्रंगरेजां षुद वादस्या बाहादरस्या[1] नै कैद कर दीयौ नै बेटा पोतां सारां नै मार नांषीया नै लालकोट मांयला मकांन पाड़ै है[2] सु मजूर रोजीना हजारां लागै है ग्रौर ग्रासोज सुद १५ श्री हजूर साबां ब्रह्मभोज गढ़ में कीयो दक्षणा रू० १) दीयो, कुल रू० १०,०००) दस हजार लागा। ग्रौर सुणी दिली सु बागी लोग दस हजार निकळ नै भागो सो मुथरा[3] री तरफ गयो सो मारग में सहैर कोयल में लूट करी सु लाषां रूपयां रो नुषसांण कीयो।

संमत १६१४ रा काती बद २ जोधपुर री ग्रजंटी ऊपर मारीसैन साहब ग्राया, तिण रै सांमा सिरदार मुतसदी सरसता मुजब गया। नै मेह चोषो हुवौ[4]।

---

1. बहादुरशाह 2. लाल किले के ग्रन्दर मकानात ध्वस्त कर रहे हैं 3. मथुरा
4. ग्रच्छी वर्षा हुई

काती बद ३ प्रगना २२ में कागद दीवांणी हुकम रा लिषीजीया -- कोई जागीरदार, भोमीयो, घर रौ धणी तथा सिरकारी चाकर बगैरे आउवा रा ठाकर सु ं साजस[1] मदत सटपट[2] राषसी जिणां री जागीर, भोम, षेत, आजीवका जबत हुसी । श्री हजूर रो हुकम छै ।

और दिवांण मैंता बिजैमल सिंघवी समरथराज किलादार देवीसिंघ सूरसागर अजंट साहब कनै गया, सरसताई बातां हुई ।

काती बद ५ तथा ६ श्री महाराज कंवर श्री परतापसिंघजी री सालग्रह रौ उछव श्री राणावतजीसा रा नोरा में, षुसी सरसता मुजब हुई । और आज री रात पवन माहा विपरीत घणो बाजीयो और सुणी कै काळा लोग दिली सु ं लूट करता मुथराजी गया सु सेठ लिषमीचंद राधाकिसन रा घर रा तो नास गया[3] नै दूजी ही ठावी आसामीयां नीसर गई नै बाकी रया जिणां ऊपर जुलम लूट खोस हुई, जाजमोट कीवो । पछै मुथराजी ब्रिन्दावन ऊपर रिपीयो काळा लोगां री फौज रौ ठैर गयौ । उठा सु ं आगरा री तरफ हुय हाडोती तरफ गया ।

काती बद ७ अजंट मारीसन साहब पळा[4] ही आज गढ़ ऊपर आया सु श्री हजूर साहब चवांणां री साळ तांई सांमा पधारीया नै साहब घोड़ा सु ं उतर टोपी उतारी । पछै पाछा घोड़ै चढ़ साथै गया । फतैमैल में बिराजीया बातां दिली री हुई । घड़ी ४ बिराजीया पछै सीष हुई, पाछा सूरसागर गया ।

और भादराजण रो ठाकर भादराजण सु ं आयौ । और सुणी कै लषणेऊ में पाछो अमल अंगरेजां रो हुय गयौ ।

काती बद १० कुचांमण ठाकर केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत आज आया ।

काती बद ११ आउवा में बागी लोग हा सु आउवा सु रवांनै होय गांव दु ंदाड़े डेरो कीयौ । आगा दिली कांनी जावण री सु ंणीजै है ।

काती बद १२ श्री हजूर री असवारी मातमपोसी करावण पधारी । सु पैली तो कुचामण ठाकर केसरीसिंघ रणजीतसिंघ रै नै उठा सु ं भादराजण

---

1. साजिश 2. सम्पर्क 3. भाग गये 4. पैदल

ठाकर संगरांमसिंघ इंद्रभाणोत रै नै उठा सु ं रावळोत भाटी बीकमकोर जाषण वगैरे रै पधारीया । भाट बागा रै पधारीया ।

काती वद १२ अजंट मारीसन साहब नै दोय दूजा साहब साथै गढ़ ऊपर आया । मुलाकात दसतूर मुजब हुई ।

काती बद १३ नै अजंट मारीसन साहब च्यार अंगरेज नवा[1] आया जिणां नै किलो दिषावण नै लाया । काती बद १३ नै ही श्री हजूर कुचांमण नै भादराजण ठाकर नै याद फुरमाया, नै मौसर हुवौ, निजर निछरावळ हुई । घड़ी २ इकंत रया नै षातर फुरमाई ।

बद १४ आ(उ)वा वाळा बागी लोगां रा डेरा गांव दु ंदाड़े सु ं लांबै बाळै हुवा । नै साथै गूलर, आलणीयावास रा ठाकर है । नै लोक गूलर आलणीयावास सुधो अेक हजार है ।

और सिंघवी कुसलराज कनै फौज हजार २००० है परंत बागीयां सु ं जीतण रौ भरोसो नहीं[2], तिण सु ं झगड़ो करै नहीं है । कुसलराज रा डेरा बिलाड़े है ।

काती बद " (अमावस) दीपमाळका रौ उछव सरसता मुजब हुवौ । और बागी लोकां रा डेरा गांव रींयां नै पींपाड़ विचे दोनू ं गांवां रै कांकड़[3] ऊपर हुवा । नै अरठां में बिगाड़ पिण कीयो[4] नै गांव बोयल नै पिण चू ंथो[5] नै पांच रू० ठेराया[6] ।

संमत १९१४ रा काती सुद १ कुचांमण ठाकुर केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत ने याद फुरमाया नै फुरमायौ कै बागी लोक मुलक बिगाड़ता[7] जावै है सो आगे सिं० कुसलराज कनै तो फौज हैईज नै थे पिंडां चढ़ जावौ सु रुपीया तो ठेरण देणा नहीं[8] नै मुलक रो बिगाड़ हूण देणो नहीं । तरै ठाकर केसरीसिंघजी उणी बषत मुजरो कर चढ़ गया, सिंघवी कुसलराज सांमल हूण वासते ।

1: नए 2. बागियों पर विजय पाने का विश्वास नहीं 3. सीमा 4. रहटों की फसलों को हानि पहुँचाई 5. भूटी 6. प्रति घर पांच रुपये वसूल किये 7. हानि पहुँचाते 8. बागी किसी से रुपये वसूल नहीं करें

काती सुद ३ हाडकासल साहब बीकानेर सु आया सो सूरसागर उतरीया ।

सुद ५ बागी लोगां रा डेरा कुचेरे हुवा नै लूट-कोस कीवी । और सिरकार रा लोक रै नै बागी लोकां रै झगड़ौ हुवौ । गांव रूपाथल रै नै कुचेरा विचै जिण में अेक तीर तोप रो छूटो नै बंदूकां दस बीस छूटी, सो षेजड़ला री तरफ सु गांव बुटेची रो भाटी अनाड़सिंघ भला आदमीयां में थो[1] तिण रै पग रै गोळी लागी नै अेक गोळी दूजा आदमी रै लागी तरै सिरकार री फौज उलीकांनी[2] कोस १ डेरो कर दीयो । पछै उठा सु गांव जायल डेरा हुवा ।[३६]

और नींवाज ठाकुर गुलाबसिंघ सवाईसिंघोत नै रास ठाकुर भींवसिंघ भोमसिंघोत आज पटा रा गांवां सु आया । और हाडकासल साहब अजमेर सु आया सो बेमार है ।

काती सुद ६ सुणी कै कोटा में लोक अजंट कनै थो जिको नै महारावजी री फौज रो लोक परदेसी थो जिको नै अजंटी में वकील कायथ जैदयाल आंपणे अठै[3] लालो केवलकिसन छोटेषां रौ कांमेती[4] जिणरो भतीजो जैदयाल वासी गोकळ महावन रौ जिको नै लोक सारो बदळ नै कोटा रौ अजंट बबटण साहब नै उण री मीम नै बेटा-बेटी नै मार नांषीया । नै सांमांन सारो कबजो कर लियो नै सैर में अमल कर बंदोबसत कर लीयो । नै डाकदर सालदर साहब नै मार लीयो नै महारावजी रौ अमल किला में रयो ।

और किला मांय सु अेक मारग नदी चांमल में हुय जावै है जिण रसते अेक षलीतो तो बड़ा साहब जारज लारनस कनै मेलीयो नै अेक षलीतो करोली जांदवां री रा महाराज मदनपालजी कनै मेलीयो सु मदनपालजी लोक ४००० हजार मेलीयो सु चांमल रै मारग रात रा किला में दाषल हुय गयो नै परबात रा पोर तीन लड़ाई कर नै बागी लोक था जिकां नै किताक नै तो मार नांषीया नै किताक नै टोळ नै[5] सैर बारै काढ दिया नै कबजो महारावजी रो कराय दियो सैर सारा में ।

---

1. विशिष्ट व्यक्तियों में से था 2. पीछे की तरफ 3. अपने यहाँ 4. कर्मचारी
5. घेर कर, खदेड़ कर

काती सुद ९ गढ़ ऊपर ठाकुरजी मुरली मनोहरजी रै नै श्री आनंदघनजी रै मिंदर अनकूट[1] थो सु मुसायब सारा दरसण नै गया नै सैर रो लोक ही दरसण करण नै गयौ ।

काती सुद १० समाचार आया कै सिरकारी फौज रा तो डेरा गांव कोलीये हुवा नै बागी लोकां रा डेरा उठा सु' दोय तीन कोस अगाड़ी हुवा ।

सुद ११ पोकरण रा ठाकुर पोकरण सु' आया, नै सोझतीया दरवाजा बारै उणां रौ वेरो[2] है जठै उतरीया, सु मोरत सु'[3] सैर में आवसी ।

और नीबाज रास री जमीत[4] वाळां रै नै राज री फौज वाळां रै आपस में झौड़[5] उणां री जमीत में बारोठीयो[6] कोई सरणे आय बैठो जिण बाबत हुवौ ।

और पैली अजंट कपतांन मिसन साहब थो सु आउवे मारीयो गयो तिण री मीम नै हाटकासल साहब बिलायत नै बहीर हुवा[7] तिणां नै पोछावण नै सिं० सिवराज नै मेलीयो ।

संमत १९१४ रा मिगसर वद १ अजंट मारीसैन साहब श्री हजूर में आया, घड़ी च्यार इकंत रया ।

वद ३ पोकरण ठाकुर, भादराजण ठाकुर, नै रास ठाकुर तीनू सिरदार नै दीवांण, बगसी सांमल मौसर हुवौ । नै पोकरण ठाकुर सु' घड़ी च्यार इकंत बतळावण हुई ।

वद ४ पाली सु' समाचार आया कै वोपारीयां रो माल रू० १७,०००) रो मेवाड़ में जावतो थो सु आसोप रो ठाकुर घोड़ा साढा तीन सै ले आया । सु कतार घेर आउवे ले गया । गांव चेलावास वाळां रो बोलवो थो सु पाड़ नांषीयो ।

वद ५ षबर सुणी कै सैर रेवाड़ी में कदीमी अहीरां रो राज थो सो संमत १८६० पछै अंगरेजां रो हुय गयौ नै हमार इण गदर में अहीर तुलारांम

---

1. अन्नकूट का धार्मिक उत्सव 2. कुंआ 3. ठीक समय के मुहूर्त से 4. कर्मचारी समूह 5. झगड़ा 6. आतंकवादी 7. इंगलेण्ड के लिये रवाने हुए

रेवाड़ी सैर रो वारस[1] थो सो आपरो राज कर लीयो। नै रेवाड़ी में सिषां रो मठ कदीम सु थो जिण री मरजाद तोलारांम पाड़ नाषी[2] नै जासती[3] इणां सु करी सो सिषां दिली में आय दरषासत कर फौज गोरां तथा सिषां री हजार सात ले गया सो तोलारांम नास नै[4] सेषावाटी में परो गयौ। इलाषे जुंझणु रो गांव बलसीसर रा ठाकर सु भाईचारो थो सु उठै मास १ छांने[5] रयौ नै पछै उठा सु नीसर सायबजादा पिरोजसा सांमल हुवौ।

सैर रेवाड़ी गोरां नै सिषां लूट लीवी नै सिषां री फौज रो थांणो बैस गयौ।[6]

मिगसर वद ६ श्री हजूर री असवारी सूरसागर हुई नै अजंट साहब सदामंद मुजब सांमा आया। पछै उठै पधार घड़ी दोयेक विराजीया, पछै उठा सु परबारा छैलवाग दाषल हुवा।

वद ७ डीसा री छावणी सु गोरा आउवा वाळां नै सझा देण मुदे आवे है तिणां री सरभरा[7] करावण सारू रूपीया दे दोढ़ीदार वछराज नै मेलीयो, ढोला रै गांव तांई, सु उठै सरभरा सारी कराई।

और ईसत्यार अंगरेजी सिरकार रो आयौ जिण में लिषीयो कै जो बागी लोग है जिन कु कोई मदत देवेगा या सरणे रषेगा तो उस कु हमारी सिरकार आउवा की बरोबर[8] बागी समजेगा।

और श्रीजी साहबां री असवारी छैलवाग सु कायलांणे पधारी।

और षबर आई कै जरझर रो नबाब पातसाहाजी सु दिली में सटपट राषी[9] सो लिषावट रा कागद हाथ आय गया सो फौज मेल नबाब नै पकड़ाय मंगायो, सु दिली में लालकोट रै बारणै फांसी दे दीवी।

मिगसर वद ९ श्री हजूर साहब सिकारी पोसाष सु सिकार पधारीया नै पाछा जालोरी दरवजे होय बड़े तबेले पधार गोळ री घाटी रै मारग गढ़ दाषल हुवा।

---

1. हकदार 2. मर्यादा भंग की 3. ज्यादती 4. भाग कर 5. छिप कर 6. सिखों ने अपना थाना स्थापित कर लिया 7. खातिर तवज्जो 8. समान 9. मेलजोल रखा

मिगसर वद " (अमावस) अजंट मारीसैन साहब गढ़ ऊपर आया। सु घड़ी दोयेक इकंत रया।

सुद ३ श्री हजूर साहब नीबाज रा ठाकुर सवाईसिंघ सांवतसिंघोत री मातमपोसी करावण नै हवेली पधारीया। दसतूर मुजब बतळावण हुई। नै नीबाज री हवेली में गांव भंवरी ठाकुर री मातमपोसी हुई। नै बिठोरे कांनसिंघ नै आउवे ठाकुर मार नांषीयो, तिण री मातमपोसी करावण नै उठा सु पधारीया। नै उण रा बेटा नै षातरी फुरमाई[1]।

और सुणी गोरा ७०० सात सौ नै हफसी लोक १५०० नै तोपां ८ नै घोड़ा ६०० नै गाड़ीयां २०० नै ऊंट २५० ईतरा लोक-बाग रा डेरा सिरोही हुवा, सु दरकूचां आवै।

और रांणीजी श्री चवांणजी रै आसा है तिण री अगरणी रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ।

सुद ६ षबर आई कै आउवा सु बागी लोक गया जिणां लारै फौज में ठाकुर कुचांमण नै सिंघवी कुसलराज साथै है, जिणां रा कागद नारनोल सु आया, जिण में लिषावट इण मुजब कै दिली सु फौज सांमी अंगरेजां री आई जिण में जरनेल साहब पिंडां नै तीन हजार गोरा तथा सिषां रौ लोक नै तोपां ६ हाथी जुतीयोड़ी गोळो पचीस सेर रो लेवे जैड़ी[2], जिण फौज रै अेरणपुर वाळा बागी लोक कोस १ सांमा जाय[3] जरनेल सु झगड़ो कीयो जठै जरनेल मारीयो गयौ अर जोधपुर जैपुर री फौज थी जिणां नै दिली वाळां कयौ कै बागीयां नै थे नासण दीजो मती[4] सो म्हैं तो जावतो राषीयो नै झगड़ो नीमां सांम तांई हुवौ। पछै नीमा सांम रा बागी लोक बचीया सु नारनोल री सराय में आय बड़ीया[5]। पछै रात रा उठा सु बागी लोक सराय मांय सु मते-मते नीकळ गया[6]। नै आदमी दोय सौ तथा अढाई सै मारीया गया। नै पछै अंगरेजी फौज वाळां सैर नारनोल लूट लियो नै तोपां सु सराय बिषेर दीवी।[४०]

1. आश्वस्त किया 2. पच्चीस सेर वजनी गोला चला सके ऐसी 3. सामने जाकर
4. बागियों को भागने मत देना 5. घुसे 6. अपनी-अपनी मरजी से चले गये

मिगसर सुद ७ आसोप रो पट्टो जबत होय भंडारी भागचंद तांई हुवौ ।[1]

सुद १० सुणी कै आसोप रै ठाकुर दस पांच गांवा ऊपर रूपीया ठेराया नै लूट-षोस कीवी ।

और भंडारी भागचंद फौज ले बड़लू आसोप कांनी चढीयो ।

सुद १२ लाठ साहब रौ षलीतो दिली कायम कीयां रौ[2] अजंट साहब री मारफत आयो ।

सुद १४ श्री हजूर री असवारी जनांना समेत चांकेळाव पधारी । नै सिरीमाळी वीरांमणां नै घर दीठ नारंगी १, सेलड़ी १, दाड़म १ दिरीजी ।

संमत १९१४ रा पोस वद २ राव राजमल साढी बारै न्यात करण रौ आरंभ आहोर री हवेली में सरू कियो नै मीठाई सारू षांड मण ४००) गळी । नै जीमण पोंस वद ६ रौ हुवौ । जस चोषो आयौ[3] । नै श्री हजूर सु निवाजस रावराजा सिरदारमल नु नै राजमल रा बेटा जोरावरमल नु इण मुजब हुई—

पालषीयां २, मोतीयां री कंठीयां २, नै सोना री साटां नै हाथी नै षरची रा रूपीया १०,०००) ईनायत कीया । नै राजमल री बहू नै नाजर हरकरण नै मेल षातरी कराई ।

पोस वद १० पोकरण रा ठाकुर नै मौसर हुवौ । घड़ी च्यारेक इकंत वतळावण हुई ।

वद ११ बड़लू फौज लगावण रौ हुकम फुरमायौ, सु सिं० कुसलराज, षीची उमेदकरण, नाजर मुसताक, मु० पुनमचंद औ चारू जणा बारै फौज में था सु अबारा बड़लू आय मोरचा लगाया नै झगड़ो सरू हुवौ । दुतरफा[4] गोळा गोळीयां चालीया । बड़लू में लोक दोय हजार आसरे[5] नै तोपां पांच नै राज री फौज में चढीयो पाळो लोग ५००० नै तोपां १० था नै बड़लू में आसोप ठाकुर पींडां[6] है ।

---

1. भंडारी भागचन्द के हस्ते रखा गया 2. दिल्ली पर पूर्ण अधिकार कर लेने के आशय का 3. अच्छा यश प्राप्त किया 4. दोनों ओर से 5. अनुमानित 6. स्वयं

वद १३ जोधपुर सुं सामांन भंडारी अचलदास लारै मेलीयो सु ईसी षबर है कै बड़लू मांयला घबराय गया नै विसटाळो करै है[1]।

पोस वद " (अमावस) अजंट मारींसन साहब श्री हजूर में गढ़ ऊपर आया। घड़ो तीनेक इकंत रया नै पछै नीबाज रा ठाकुर नै मौसर हुवौ।

संमत १९१४ रा पोस सुद १ बड़लू वाळां री मदत में आउवा सुं आदमी २०० आया नै बड़लू रा तळाब ऊपर भाषरी[2] है जिण ऊपर आसोप ठाकुरां रौ डेरो है।

सुद ७ अजमेर सुं बड़ा साहब फौज ले आवै जिणां सांमा पंचोळी धनरूप नै मेलीयो सो अठा सुं आज चढ़ीयो सो आपणी अमलदारी तांई सांमा जाय सरभरा करावता, साहब नै लोग नै आउवे ले जाय फौज लगावसी।

पोस सुद १४ सुणी कै बड़लू वाळा तेल उकाळै है नै मिरचां पीसावै है सु हलो हुसी[3] तरै रोक करसी।

और अजंट मारीसन साहब श्री हजूर में आया। घड़ी च्यारेक इकंत बतळावण हुई।

पछै नगर सुं हमार आदमी दोय सौ तथा २५० मेलीया जिणां में भला आदमी अबदुल रैमांन नै उमरषां जिणां नै मुजरो हुवौ। उणां निजर निछरावळ कीवी। नै षलीतो लाया सु निजर कियो। पछै घड़ी दोयेक सुं सीष हुई।

और कवराज भारतदांन रो बेटो मुरारदांन बांकडीये बड़गांव सुं तथा उठी सुं लोक लावण नुं चढीयो[4], तिण नै मुजरौ हुवौ।

संमत १९१४ रा माह वद २ बड़लू सूं मुसायबां रा कागद आया जिण में लीषीयो कै आसोप ठाकुर विसटाळो मेलीयो कै श्री हजूर में म्हारो मुजरो हुय जाय नै म्हारो डेरो हवेली में हुय जाय नै पटो बाल[5] हुय जाय तो हूं फौज में डेरो आय करूं, जिण रौ थे बचन दे दो। तरै म्हैं पाछो कयौ कै इण वात री तौ श्री हजूर में अरज करसां। करणो श्री हजूर रै हाथ है अर

---

1. समझौते की बातचीत कर रहे हैं 2. टेकरी 3. युद्ध होगा 4. सैनिक लाने के लिये विदा हुआ 5. बहाल

थांरा जीव नै जोषो हुय जाय तो म्हांरो बचन है[1]। थे जोघपुर चालो परा। तरै आसोप ठाकुर सिवनाथसिंघ बषतावरसिंघोत फौज में आय डेरो कियो नै बड़लू में कबजो दरबार रौ हुय गयौ।

माह वद ४ आसोप रा ठाकुर नै फौज रा मुसायब सारा बड़लू सु आय नागौरी दरवाजा बारै उतरीया। पछै कोटवाळ नु हुकम हुवौ सु आदमी ४०० सु जाय ठाकुर आसोप रा नु गिड़दीकोट में लाया। सु ठाकुर री नै आदमीयां री नादांनी सु बंदूकां रा तोड़ा सिलगता राषीया[2]।

माह वद ५ बड़लू सु ठाकुर नै लेनै आया, सिंघवी कुसलराज, म्हैतो छत्रमल, षीची उमेदकरण, नाजर मुसताक, तिणां नै मुजरो हुवौ। नै उणी बषत हुकम हुवौ—ठाकुर रा ससत्र धराय नै[3] सलेमकोट में कैद करो।

वद ६ अजंट मारीसन साहब गढ़ ऊपर आया। घड़ी तीनेक इकंत बतळावण हुई।

वद ७ अजंट मारीसन साहब अठा सु अेरणपुर होय आउवे जावसी।

वद ८ आसोप रा ठाकुर नै बैकुबी सु कर बैम आयो—म्हारी ईजत खराब करसी। तरै श्री रांणावतजी रौ कांमदार पंवार नारकरण आया। ठाकुर सु समजास कर गोळ री घाटी रै मारग कमरां बंधीयां गढ़ ऊपर ले गया। तरै सुरजपोळ रै बारणै कमरां षुलाय तरवार तो श्री हजूर में मेल दीवी नै उठा सु ठाकुर नै कांमेती वगैरे आदमी २० सुधां नै आगे कीलीषांनो थो जठै ले जाय कैद कीया। नै रसोवड़ा सु ठाकुर रै थाळ[4] तथा आसो[5], अमल[6] वगैरे इजत रै साथ राषीया[7]। अर कांमेती आदमी था जिणां रै बेड़ीयां घाली नै सलेमकोट में कैद किया। नै लारा सु बड़लू सु असबाब तथा बाबसता आया जिणां नै लांबीयां री हवेली में उतरीया।[४१]

माह वद १३ प्रथम पोकरण रा ठाकुर नै मौसर हुवौ। वद १३ दूसरी बड़लू री फौज सु सिरदारां री आसामीयां आई तिणां नै मुजरो हुवौ—

---

1. तुम्हारी जान को जोखिम हो तो उसके लिये मैं वचन देता हूं 2. बंदूकों के पलीते जलते हुए रखे 3. शस्त्र अलग रखवा कर 4. भोजन 5. शराब 6. अफीम 7. बइज्जत व्यवस्था रखी गई

लाडगु, षेरवो, फोगडी रा संपतसिंघ, कचोळीया रो मंगळसिंघ, डोडीयांणो नींबी रौ हणवंतसिंघ, कोरणो, षींवाड़ो, समदड़ी रो काको जगतसिंघ, रांमपुरो नजीर म्हेमद षां, कपतांन दुरगा प्रसाद, रसालदार समसुदीन ।

ग्रौर ग्रासोप रा ग्रादमी सांवठा था जिणां नै कैद ग्राउवा री हवेली में कीया । जिणां रा ईजार लेवण[1] नै लालो ईसरीप्रसाद नै गोकलप्रसाद गया नै पूछीयो—

सवाल—ग्राउवा में बागी लौगां रै ग्रर राज री फौज रै झगड़ौ हुवौ ग्रर राव राजमल नै किलादार कांम ग्राया, जद तुमारा ठाकुर कांहां था ? सो सच-सच कहो ।

जबाब—राजमल नै किलादार कांम ग्राया जद हमारा ठाकुर ग्रासोप में था ग्रर थोड़ा दिन पीछे घोड़ा २५० सु ठाकुर ग्राउवे गया ।

सवाल—कै बड़ा साहब फौज लेकर ग्राया ग्रर ग्रजंट साहब मरा उस बषत तुमारा ठाकुर कहां था ?

जबाब—उस बषत हमारा ठाकुर ग्राउवा में था । ठाकुर कुसालसिंघजी के पास सांमल था ।

सवाल—पाली के वोपारीयां का माल मेवाड़ में जाता था सो गांव हमावस कनै पाड़ीयो[2] जिसमें तुमारा ठाकुर था कै नहीं ? सो कहो ।

जबाब—सांमल था ।

इण तरै सु सवाल जबाब ले श्री हजूर में मालम कीया ।

माह वद १४ बड़ा साहब रौ इसतीहार ग्रठै ग्रायौ नै सारा रजवाड़ा में जाहार हुवौ, तिण में लिषीयो—कै ठाकुर ग्राउवे पर हमारी फौज जाती है सो ग्राउवा कु जड़ां से उषेल डालेंगे[3], ग्रर संगीन सझा मिलेगी । सु जो ठाकुर ग्राउवे के सांमल रेहै मदत देगा[4] जिसकु भी सझा[5] मुनासब मुजब मिलेगा[6], फकत ।

---

1. बयान लेने को 2. लूटा, हस्तगत किया 3. जड़ से उखाड़ डालेंगे 4. ग्राउवा को सहायता देंगे 5. सजा 6. जैसी उचित समझी जाएगी

संमत १९१४ रा माह सुद १ श्री हजूर साहब मौसर घड़ी ४ तक सरबाले दीयो।

सुद २ किलादार अनाड़सिंघ रा बेटा नै निवाजस इण मुजब हुई—
कड़ा १, मोती १, मोतीयां री कंठी १, पालषी १, सिरपेच १, हाथी १, पग में सोना री कड़ी १।

नै कांमेती प्रो० जसकरण नै—कड़ा १, मोती १।

और डोसा री छावणी वाळी फौज गोरा १००० बाकी चढीयो—पाळो लोक १०००, घोड़ा, ऊंट, गाड़ीयां नै तोपां नग १३ मोटी तिणां सांमे मुसायब ....नै रास, नीबाज री जमीत जिणां रा डेरा गांव चांचोडीयां मारग होय आउवा रा जिला रौ गांव भींवाळीये हुवा।

माह सुद ५ सुणीयो कै भींवाळीये फौज रा डेरा हुवा जिण मांय सु अफसर साहब जणरू घोड़ां री तोपां ले आउवे मोरचा लगावण मुदे गया सो ठाकुर पिंडां तो बारै निसर[1] गया सु गांव रूपनगर[2] सोलंषीयां री गयां री षबर है। नै भाई प्रथिसिंघ वगैरे आदमी १००० आसरे मांय है, नै मांय नै बागी लोगां रा गोलंमदाज मांयने है। सु मांय सु तोपां रा तीर चलीया सु मोरचा नजीक घालण दिया नहीं। तरै मोरचा पाछा सरकाय अळगी जायगा[3] घालिया।

माह सुद ६ तथा ७ आउवा रा तीनां कांनी अदकोस नजीक मोरचा जाय घालीया सो अठारै तोपां नै गुबारा ४ सारो दिन चलीया। तिण सु सुणी कै मांयलो लोक घबराय गयौ।

माह सुद ८ उणीज मुजब तोपां नै गुबारा नै बंब रा गोळा चालीया। तिण सु आउवा में घास, मुगधणा री वागर थी[4], सु बळ गई।

सुद ९ उणीज मुजब तोपां गुबारा बंब रा गोळा सारो दिन छूटा सु नीमा सांम हुय गई। नै मांयला मजबूत दीसीया तरै अजंट मारीसन साहब नै जरनैल होम साहब हुकम दियौ कै कल आउवा पर हला करेंगे सो तुमारे

---

1. स्वयं ठाकुर तो बाहर निकल गया 2. यह ठिकाना मेवाड़ में पड़ता है 3. दूर स्थान पर 4. जलाने की लकड़ी का ढेर

मारवाड़ मुसायब है जिनकुं कहौ कै आउवा से बारै कोई लोक निकळे जिसकुं पकड़ लेणा। जिस बात का जुमा तुमारा है। तरै मारीसेन साहब जोसी हंसराज नै पटानवेस पंचोळो धनरूप नै केयौ। तरै इणां कयो—ठीक है। पछै रात आधी गयां विरषा सरू हुय गई। तरै ठाकुर रौ भाई वगैरे चलता घोड़ा ऊंट हा जिणां ऊपर चढ नै आउवा मांय सु निकळ गया नै असबाब तोपां वगैरे हौ जिहुं रो जिहुं[1] पड़ीयो रयौ नै रैत[2] महाजन विरांमण वगैरे हा जिणां नै किणी नै कयौ नहीं नै सूता छोड दीया। नै सुद १० दिन उगो तरै मांय सुं गांव साफ सूनो निगे आयो[3]। तरै अंगरेजां री फौज गांव में बड़ी सु किताक आदमी था जिणां नै गोळीयां सु मार नांषीया नै किताक विरांमण वगैरे था जिणां नै जोसी हंसराज छुडाय आपरै डेरे लाय गिरफदार कर जोधपुर मेल दिया।

और गांव गोरां लूट लियौ नै तोपां वगैरे तो जोसी हंसराज नै सूंपो नै काजू बसत[4] हाथी घोड़ा तोप वगैरे अंगरेज ले गया। नै बाकी रयौ सु जोसी हंसराज नै संभळायो। नै गांव में मांयलो कोट नै मेलायत पकी जायगावां सैरपना रौ कोट दरवाजा पका सारा पाड़ नांषीया[5] नै आदमी २४ नै नीसांणा मांड नै[6] मार नांषीया।

और भाईपा रा गांव लांबीया बांतो भींवाळीया री गढीयां सुरंगां लगाय पाड़ नांषी।

और आसोप रा कांमदार रा कबीला असबाब वगैरे गांव मूंदीयाड़ गया तिण बाबत मूंदीयाड़ वाळां रै रूपीया २०,०००) ठेरीया[7]।

और जोधपुर री हाकमी सिंघवी लिषमीचंद रै हुई।

और डीडवांणा री कोटवाळी नाथावत व्यास उतमरांम रा बेटा हरनाथ रै नांवै मावारी में हुई[8]।

और आसोप बड़लू पटा सुधी म्हैता छतरमल रै नै सांमल नाजर मुसताक रै हुवा। सो आज नाजर मुसताक आसोप नै चढीयौ।

---

1. जैसा था वैसा का वैसा 2. रैयत 3. गांव बिलकुल सूना दिखाई दिया 4. कीमती वस्तुएँ 5. ध्वस्त कर दिये 6. निशाना बांध कर 7. जुर्माना हुआ 8. प्रति माह निश्चित रकम अदा करने के बदले में

संमत १६१४ रा फागण वद २ रात आधी ऊपर घड़ी तीन गयां आसरे रांणीजी श्री चवांणजी रढावास वाळां रै म्हाराज कंवार हुवा। तोपां रा तीर १०८ छूटा नै दाई नै सदामंद मुजब गाजां बाजां सु पोंह्चाई।

वद ४ श्री हजूर साहब मुसायबां नै मौसर घड़ी ४ तांई दियौ।

वद ६ पंचोळी धनरूप पटानवेस आउवे फौज लागी तिण री सरभरा करावण नै गयौ सु आज पाछौ आयौ, तिण नै मुजरो हुवौ नै उठा सु गोळा लायो सु निजर गुदराया। नै उठा रौ अवाळ मालम कीयौ।[1]

फागण वद ६ भादराजण रा ठाकुर फौज मांय सु आया तिणां नै घर री सीष हुई, तिणां नै सिरपाव—कड़ा, मोती, मोतीयां री कंठी, हाथी, पालषी, वगैरे हुवा। नै षैरवो, रामपुरो, कोरणो वगैरे रा ठाकुर फौज में था जिणां नै निवाजस हुई।

फागण वद १३ घोड़ा वोपारी ले नै गढ़ ऊंपर आया। सु दौलतषांना रा चौक में निजर गुदरीजीया[2]।

संमत १६१४ रा फागण सुद २ जोसी हंसराज पाली सु आयौ, तिण नै याद फुरमाय आसरीवाद हुवौ, नै षातरी फुरमाई।

और षैरवा रा ठाकुरां रौ कंवर मेवाड़ इलाके गांव गोगुंदे झालां रै परणीजण नै जावे जिण नै—कड़ा, मोती, कंठी, सिरपेच, हाथी वगैरे हुवा।

फागण सुद ५ जाळोर री हाकमी मु० पुनमचंद मुकनचंद रा बेटा रै मावारी रा रू० ५२,०००) मास १२ रा ठैर हुई नै रूकौ उणां रै हाथ रौ लिषीजीयो।

फागण सुद ११ तथा १२ श्री हजूर री असवारी घोड़ै सवार हुय मातमपोसी करावण नै इतरी हवेलीयां में पधारीया—

लाडणु री, बूढसु री, कुचांमण री, रायपुर रो वगैरे मातमपोसीयां सात हुई।

1. वहां का वृत्तान्त सुनाया 2. निरीक्षण किया

पछै उठा सु श्री बालकिसनजी रै मिंदर पधार दरसण कर फतैपोळ रै मारग किले दाषल हुवा ।

फागण सुद १४ पाटोदी केसवांणा रा जागीरदारां नै मुजरौ हुवौ नै दोढी तांई जाबतो हुय नै जनांनो फाग दौलतषांना रा चौक में हुवौ । बारै पातरीयां भगतणीयां दोढ़ी ऊपर गायबो कीवी, नौबत बाजबो कीवी, पछै नीमां सांम रा श्री हजूर साहब बारै पधार षवास पासवांन वगैरे ऊपर गुलाल री दड़ीयां बाही[1] ।

संमत १९१४ रा चैत वद २ असवारी प्रभात रा छैलवाग पधारी ।

वद ४ सिंध री तरफ सु गोरां री फौज आई नै नसीराबाद जावै तिण रै सांमे सिं० समरथराज, षीची उमेदकरण नै किलादार रौ कांमेती प्रो० जसकरण जाळोरी दरवाजा बारै गया । नै उण सु फौज जाळोरी दरवाजा मांय होय आडे चोठै हुय सिरे बजार होय मेड़तीये दरवाजा बारै डेरो कियो, नै सुदरां[2] नै श्री हजूर री तरफ सु षांणो दिरीजीयौ । नै अजंट मारीसेन साहब आउवे गया सु आज पाछा आया, सूरसागर दाषल हुवा । नै श्री हजूर साहब बाळसमंद दाषल हुवा ।

चैत वद ८ सील रौ नै गुड़ला रौ मेळो सदामंद मुजब हुवौ ।

वद ९ अजंट साहब श्री हजूर में आया । नै कोटे फौज जावे जिण सांमल जावण री सीष कीवी ।

चैत वद १२ अंगरेजां रौ लोक आयौ तिण रा डेरा मेड़तीया दरवाजा बारै हुवा । नै श्री दरबार सु दही, दूध, मांषण घास मुगधणा वगैरी री सरभरा हुई ।

संमत १९१४ रा चैत सुद १ असवारी बाळसमंद सु गढ़ दाषल हुई ।

सुद २ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया नै मौसर सरबाले हुवौ ।

और मेड़ता री हाकमी प्रो० रतनलाल रै मावारी रा रू० २४,०००) में हुई । नै साहूकारी रुकौ[3] साह रूघनाथ रा बेटा रौ लीषीजीयो ।

---

1. फेंकी 2. शूद्र, विधर्मी लोग 3. जमानत का खत

सुद ३ श्री गवरां नै पाणी तळाव गुलाबसागर पायौ। नै श्री महाराज कंवरां री असवारी मेळो देषण नै पधारीया।

सुद ४ अजंट साहब कोटा नै चढ़ीया।

सुद ६ श्री गवरां नै मांयलेबाग में पांणी पाय बोळाई। नै श्री महाराज कंवारां री असवारी मेळो देषण नै पधारी।

और तारो १ पाछली रात रा तूटो। तिण रो सैंचनण[1] अद घड़ी तांई रयौ।

चैत सुद १५ षबर आई कै बड़ा साहब फौज ले कोटे गया तिणां रै सांमा महारावजी भला आदमीयां नै मजल १ तांई मेलीया। नै कवायौ कै अजंट साहब मारीया गया तिण री तेकीकात तो आप आवसो तरै करसो[2]। परंत म्हांरै कुछ अेवाळ कैणो है[3] सु हुं आऊं। जिण ऊपर बड़ा साहब कयौ—हमारे पास आणा की कुछ जरूर नहीं[4]। महारावजी की अर बागी लोकां की सला सु अजंट मारा गया है सो हमारी फौज सभा देण मुदे आई है। सो आप जंग की तयारी करीये। जद महारावजी कवायौ कै हमारे नौकर बागी होकर अजंट साहव कु मारा अर हमारा कांमेती 'मुकत्यार था जिसकु मारा। अर सैर कोटा लूट लीया, अर जबरदसत होय सैर में बंदबसत कर रषा है[5] सो हमकु किला बारै आणे दे नहीं। सो अब आप आय गये हैं तो हमकु मदत इनसाफ की राह से देवेंगे तो हम इस कोटा में बणीये रैवेंगे। सो अब आपकी मरजो होवे जैसा करो। मैं तो कभी का आपकी आणा की उमेद में था। इण तरै घणी लाचारी करी तरै मुलाषात करण रावजी बड़ा साहब रै डेरै आया सो सिलांमी री सिलक हुई नहीं, षाली मुलाषात हुई नै बड़े साहब कयौ कै हमारी फौज का लोक २,००० तुमारे किला में रवेंगे। जद महाराव मंजूर कीया तरै लोक किला में चांबल री बारी कांनी चढीयो नै काळा लोगां सु तोपां री लड़ाई सरू कीवी। आपस में गोळा बुवा[6] सो काळां रा आदमी जादा कांम आया। पछै दोय च्यार दिन तो झगड़ौ हुवौ पछै बागीयां रा पर

1. तेज प्रकाश 2. आप आओगे तब करोगे 3. मुझे कुछ वृत्तांत कहना है 4. हमारे पास आने की जरूरत नहीं है 5. सिरजोरी से व्यवस्था कर रखी है 6. तोपों के गोले चले

छूट गया सु मते-मते[1] भाग गया। नै कितांक नै पकड़ लिया नै कितांक नै निसांणा कर मार नांषीया।

और कोटे महारावजी ऊपर अजंट मारीयां रौ इलजांम लगायौ तिण रा इनसाफ रो कोट ठेरीयो[2]। सु महारावजी रा ससत्र ले नै अेक डेरा में महारावजी नै राष नै सिरकार अंगरेजां रौ पोरो बैस गयौ। नै इनसाफ करण वाळा पंच इतरा ठेरीया—सिरपंच तो जैपर रा अजंट मेजर इडन साहब नै निमच रा अजंजट रविसेन साहब, नै जोधपुर रा अजंट मारीसेन साहब............ मेजर टेलर साहब नै मेजर सोर साहब। सो महारावजी रै अरू-बरू बागी लोकां नै पकड़ीया हा जिकां रा नै महारावजी रा ईजार लिया। नै दुतरफा गवाईयां रा ईजार हुवा जिण में पंचां री राय आ रही—

'कै महारावजी री साजस सु कोटा रा अजंट बटंन साहब मारीया गया। सो वरस ३ तो महारावजी नै निजर कैद राषणा नै चालीस लाष रूपीया जरीबांना रा करणा। तिण री रूबकार पंचां लिष काढी[3]। नै दसषत च्यार जणां तो कर दिया नै सोर साहब किया नहीं। आ षबर महारावजी नै लागी। तरै जोधपुर री तरफ सु बड़ा साहब कनै वकील पठांण सैबाजषां गुडीयांणी रौ जिण रै नै बड़ा साहब रौ मुनसी विलायती हाजी मेहमद काबल मांय सु जारज लारनस साहब नै काढ नै ले आयो जिकां रै नै सैबाजषां रै परम दोसती तिण री मारफत हाजी मेहमद नै रूपीया तथा गैणो रू० १०,००,०००) दस लाष रो दियो, सु साहब रै पूगो तथा मुनसी रै रयौ। नै रूपीया लाख सैबाजषां नै दिया जिणां में पचावन हजार तो रोकड़ तथा गैणो दीयो नै पैंतालीस हजार रो उधार जमां रौ परवांनो कर दियो। सु सैबाजषां रो भतीजो तुरेबाजषां कनै परवांनो थो सु अठै वेचतो थो—दस हजार में, सु किणी लीयो नहीं।'

नै इण मुजब समादांन[4] हुवां पछै लारनस साहब चारूं पंचां री राहा काट नै सदर में रपोट करी जिण में महारावजी ने बरी कर दिया। सु सदर सु महारावजी बरी हुवां रौ हुकम आयौ। तरै जैपर रा अजंट सिरपंच हा इडन साहब जिकां लारनस साहब नै कयौ कै तुमारी नै हमारी सदर में रूबकारो[5]

---

1. अपनी-अपनी इच्छा से, इधर-उधर 2. कोर्ट मार्शल बैठा 3. पंचों ने अपनी उपस्थिति लिखित में दर्ज की 4. समाधान 5. रूबरू बहस

होगी कै तुम महारावजी कुं बरी किस राय से कीया। जिण ऊपर लारनस साहब लाचार होय नै आपरी अवजी रो कांम रजिडंटी रौ सूंपीयो नै आप वरस २ रो रूषसुद[1] ले नै बिलायत गया नै सोर साहब पिण बिलायत गया।

वैसाष वद ६ अजंट साहब री वकीलायत आसोपा हीरालाल रै हुई नै जोसी सांवतराम नै हीरालाल रै साथै जावण रौ फुरमायौ—सु सांवतरांम साथै गयो। सु वद १४ अठा सुं चढीया।

संमत १६१४ रा बैसाष सुद १ षबर लागी कै आउवा रौ ठाकुर आदमी ५०० सु करमाल रा ढांणा[2] में आय बैठो सु हेटो उतर बिगाड़ करण रौ ईरादो करै है। जिण ऊपर श्री हजूर दिवांण म्हैता विजैमल नै फुरमायौ कै तूं अठा सुं फौज ले नै चढ जावो सु ठाकुर नै सभा देवौ।

और गोढवाड़ री हाकमी भं० भागचंद रै हुई।

सुद ३ आषातीज रौ दरबार हुवौ नहीं।

सुद ८ माताजी श्री चावंडाजी रो मिंदर नवौ हुवै तिण रै निज मिंदर रौ छबणो चढीयौ[3]। नै नव चोकीयां में बड़ला हेटे कुवो नवो कोटवाळ सेरकरण षुदावणो सरू करायो।

वैसाष सुद ६ सिरदारां री आसांमीयां नै म्हैता विजैमल साथै चढण रौ मुजरो हुवौ—

नीबाज, रास, बूढसु, जावळो, गोराउ, लादड़ीयो, सीवास नै जोसी हंसराज नै पाली रा जाबता सारूं चढायो।

सुद १३ दिवांण म्हैता विजैमल आउवा रा ठाकुर नै सभा देण मुदे चढीयो नै इसी षबर है कै बड़ा साहब रौ सिकतर १ म्हैता विजैमल सांमल होसी। सु गैर इलाका[4] में जावणो पड़े जिण मुदे।

और बड़ा साहब कोटा सु कांम पांच कोटा री अजंटी तो मारीसेन साहब नै दिवो नै जोधपुर रो अजंटी रो कांम आबू ऊपर इंद्रसेन साहब था जिणां नै सूंपीयो।

---

1. छुट्टी, रवानगी 2. सुरक्षित स्थान 3. मुख्य मन्दिर के द्वार का ऊपरी पत्थर रखा गया 4. मारवाड़ की सीमा के बाहर

प्रथम जेठ वद ५ मुथराजी वाळा सेठ राधाकिसन रूघनाथदास रो गुमासतो चौबे कवलापत नु सीष हुई। तिण नै सिरपाव, कड़ा, मोती कंठी, दुसालो, इनायत हुवा।

प्रथम जेठ सुद १२ आबूजी ऊपर वड़ा साहब सारा वकीलां नै कयौ कै तुमारे रूपीये के सिका में फारसी में पातसाह का नांव है सो निकाल दो नै हमारे पातसाहाजादी विकटुरीया[1] का नांव सिका में दिरादो। जिण ऊपर वकीलां सारां कयौ—ठीक है, म्है म्हांरा मालकां नै अरज कराय देसां। पछै अठै सिका में विकटुरीया रो नांवो दिरीजीयो।

प्रथम जेठ सुद १५ श्री हजूर री असवारी चौपासणी पधारी। श्री गुसांईजी महाराज परदेस सु पधारीया जिण मुदे। पछै उठा सु कायलांणै दाषल हुवा।

संमत १९१४ रा दूजा जेठ वद ३ पोकरण कुचांमण रा ठाकुर नै मौसर हुवौ नै उठै ही आसो पायौ नै मांयनै रूबरू जिमाया[2]।

दु० जेठ वद ६ असवारी कायलांणा सु बाळसमंद दाषल हुई।

दु० जेठ वद १२ कुचांमण रा ठाकुर नै मौसर हुवौ, आसो पायौ नै जिमाया।

वद १४ पोकरण रा ठाकुर नै मौसर हुवौ नै आसो पायौ नै जिमाया।

और आसोप ठाकुर रोटीयां रो रीसावणो[3] कर षाई नहीं दिन २ तांई, तरै म्हैतो गोपाळराव नै लाला ईसरीप्रसाद नै समजास करण मुदे मेलीया[4]। सो समजास कर सगार करायौ[5] नै रोटी षावण रौ हांकारो भरायो।

दूजा जेठ सुद १ षबर आई कै आउवा रौ ठाकुर नाळ में नजीक है तरै दिवांण म्हैतो विजैमल चढीयो सु ठाकुर तो उठा सु निकळ गया नै आदमी तीसेक था जिणां सु झगड़ौ हुवौ सु आदमी पांच तो दुतरफा मुवा नै दस घायल हुवा।

---

1. रानी विक्टोरिया 2. भोजन करवाया 3. रूठना 4. ठाकुर को समझाने भेजा
5. फल आदि खिलाये

पछै नाळ ऊपर चढतां नै मेवाड़ वाळां बरजीया[1] तरै नाळ ऊपर चढीया नहीं नै बारोठीयां में बांता रौ ठाकुर नै चांपावत सगतसिंघ, कछावो मांनसिंघ वगैरे घोड़ा २०० सु भेळा हुवां री पबर मारवाड़ री लागी तरै इणां रौ फौज वाळां लारो कियो सु गांव पांचोटा रा भाषर में जाय घेर लिया। सु दोय पोर गोळीयां सु झगड़ौ कीयो। पछै बारोठीया तरवारां मीयानां बारै ले घोड़ा उठाय नीकळ गया। पछै बारोठीयां रा आदमी दोय च्यार कांम आया नै किताक घायल हुवा नै घोड़ा २८ सिरकार में बारोठीयां रा हाथ आया।

दूजा जेठ सुद २ सुणी कै गवालेर में तांतीयो टोपीयो[2] पेसवा रौ कांमेती नै झांसी वाळी रांणी नै बांदा रौ नबाब और फौज हजार १०,००० आसरे आय अमल कर लियो नै गवालेर महाराज री फौज रो लोक कंटीजंट थो सु बदळ गयौ नै महाराज जीयाजी गवालेर मांय सु भाग आगरे परा गया, अंगरेजां कनै, नै बागी लोकां महाराज री गंगाजळी लूट लीवी।

और श्री हजूर री असवारी बाळसमंद दाषल हुई।

दु० जेठ सुद १३ श्री हजूर साहबां री बरसगांठ रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ नै सिरे दरबार घड़ी पांच तांई रयौ। पोकरण, कुचांमण रा ठाकुर हाजर था, नै तोपां री सिलकां वरसां मुजब हुई।[४२]

दु० जेठ सुद १५ सुणी कै गवालेर में अंगरेजां री फौज गई जिणां रै नै बागी लोकां रै झगड़ौ हुवौ जिण में अंगरेजां रा अफसर ही कांम आया। नै झांसी री रांणी बागीयां सांमल थी सो मरदांना भेस सु घोड़े असवार होय भालो ले लड़ाई कर पांच सात आदमी मारीया, पछै गोळो लागो तरै कांम आई। दिन तीन झगड़ौ हुवौ पछै बागीयां रा पग छूट गया। नै अंगरेजां रौ कबजो हुवौ। सु महाराज नै गवालेर सूंप दीयो नै बागी लोक उठा सु निकळीया सु अेक तुंगो[3] तो नरवर री झाड़ी कांनी गयौ नै अेक तुंगो हाड़ोती कांनी गयौ।[४३]

संमत १९१४ रा असाढ़ वद ५ फतैपोळ रा पाट नवा चढाया[4] सो फतैपोळ में होम हुवौ नै विरांमण भोजन सवा सौ हुवा।

---

1. मना किया 2. तांतीया टोपे 3. टुकड़ी 4. प्रोल पर नये पत्थर चढ़ाये गये

नै कवराज भाट वागसिंघ री गोठ श्री दरबार में हुई ।

ग्रौर इसी षबर ग्राई कै बागी लोक हजार ४००० ग्रासरे इलाके जैपुर प्रगने हिरूण री तरफ ग्राया है नै रूपीया ठेरावे है । सु जैपुर री फौज जावता सारू गई । जिणां रै मुकालवो प्रगने दोसा में हुवौ जिण में जैपुर वाळां रसत दिराय नै ग्रागो कूच करायौ । नै ग्रठा सु पण—सांभर, नांवो, मारोठ, परबतसर, डीडवांणो रा हाकमां नै हुकम बंदोबसत राषण रो पूगो ।

संमत १९१४ रा ग्रासोज वद ७ फतैपोळ तो तयार हुय गई नै गोपाल पोळ तयार हुई नी सु ताकीद रौ हुकम पूगो । सु कमठो मारो-मार[1] हुवै है ।

ग्रसाढ़ वद ८ चांणोद रौ ठाकुर जसवंतसिंघ चांणोद में रांमसरण हुवौ । तिण लारै ठकुरांणी सती हुई ।

ग्रसाढ़ वद १० सुणी कै बागी लोक मारवाड़ में ग्रावण रौ इरादौ करै है जिण ऊपर कुचांमण ठाकुर कुचांमण जावण री सीष री ग्ररज कराई, पछै सुणी कै नसीराबाद सु ग्रंगरेजां री फौज सांमी चढ़ी तिण सु ग्रठी तो नहीं ग्राया नै तुराटी, सेषाटी कांनी परा गया ।

वद ११ म्हैतो विजैमल मेवाड़ में घाटा कांनी फौज में थो, सु ग्राज ग्रठै ग्रायौ ।

वद १२ रासोळाई ऊपर प्रदेसी लोका[2] रौ डेरो करावण रो हुकम हुवौ । सु दोढीदार पणीयो सालगरांम जाय नै डेरो करायौ ।

संमत १९१४ रा ग्रसाढ़ सुद १ ग्रौर सिरदार ग्रठै हा जिणां नै ग्रर म्हैता विजैमल साथै फौज मांय सु ग्राया जिणां नै मौसर होय मुजरो हुवौ ।

पोकरण, कुचांमण, ग्राहोर, लांपोळाइ रो कंवर, फोगड़ी विठोरो ।

ग्रसाढ़ सुद ४ षबर ग्राई कै टूंक रो नबाब रो भाई नबाब सु बागी थो सु ग्रंगरेजी सिरकार रा बागीयां रै सांमल होय टूंक में जाय झगड़ो कीयो । सु षेत बागीयां रै हाथ रयौ नै लूट षोस कीवी तिण रा समाचार ग्रंगरेजां नै

---

1. शीघ्रता से   2. मारवाड़ के बाहर के सिपाही

लागा । तरै नसीराबाद सु फौज चढ़ी सु टूंक रै ग्रास-पास झगड़ो हुवौ तिरण में वागी ग्रादमी ६०० तो मरण गया[1] नै १७५ घायल हुवा । नै ग्रादमी १०५ नै पकड़ लिया ग्रर तोपां ३ पड़ाय लिवी । ग्रर वागी भाग नै जैपुर ईलाके माधोराजपुरा री तरफ गया, नै लारै ग्रंगरेजां री फौज गई ।

ग्रौर सेषावटी में जीवरण माता रा भाषरां में बारोठीया भेळा हुवां री षवर लागी । तरै जैंपुर सु बंदोवसत रै वासते फौज विदा हुई नै श्री हजूर साहब बगसीयां रौ कांमेती मु० रामलाल नै बंदोबसत रो हुकम दीयो ।

ग्रसाढ़ सुद ११ बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री पड़दायत चनणरायजी सुद १० रात रा रांमसरण हुवा । जिणां नै ग्राज कागे दाग हुवौ ।

संवत् १९१५ का विवरण

संमत १९१५ रा सांवण वद २ बारली विदियासाळ में संमत १९१४ रा ग्रसाढ सुद ११ नै विरांमण ५१ गुजराती मनसुष हां० बरणी बैठी । नै सुद १३ होम सरू हुवौ सु दिन ५ तांई होम हुवौ नै ग्राज पुरणावती[2] हुई । जठै श्री हजूर सु मेलीया—म्हैता विजैमल, पंवार देवीसिंघ, नाजर हरकरण, म्हैता संकरलाल, म्हैता हरजीवण, पंचोळी भीनालाल पटानवेस, सु गया नै विरांमण भोजन जणा ५०० नै सीरा री जिनस[3] रो रुकौ ग्रन रै कोठार ऊपर हुवौ ।

ग्रौर मु० परतापमल सायबचंद रौ भाई जिण री जायगा पड़दायतजी कुरजरायजी रा कांमेतीयां दाब लिवी तिण बाबत गढ़ ऊपर दिन ३ धरणो दियौ । तिण नै सैर बारै कढाय[4] दियौ तरै राष लगाय ग्रागो चलियो गयौ । नै बारोठीयां रा ग्रादमी गोढवाड़ रो गांव बसंत जठै रात रया तिण बाबत तकरार हुई तरै चांदियां कर[5] दिषणा पोळ ग्राय धरणो दियो ।

ग्रौर मुढो भागोड़ी तोप फौज मांय सु ग्राई तिण रो मुढो लवार मूळे बांधीयो नै ग्राज जैपोळ रै बारणे उण तोप सु चांदमारी कराई ।

---

1. मारे गये 2. पूर्णाहुति 3. हलवा बनाने की सामग्री 4. शहर से बाहर निकलवा दिया 5. छुरी से शरीर पर घाव करके

सांवण वद ६ तथा ७ षबर आई कै बारोठीयां, सीकर, जैपुर रा गांव २ बिगाड़ीया जिणां सांमल गूलर ठाकुर नै षाटू रौ चांपावन भींवसिंघ नै आउवा रा ठाकुर रा भाई री षबर सुणीजे................ ।

और बारोठीयां रा जाबता सारू सिंघवी रतनराज आदमी हजार १,००० सु' गयौ । सु छेती मजल १ री रही तरै बारोठीया बिषर गया ।

सांवण वद १३ माजी श्री पांचवां भटीयांणीजो ठाकुरजी श्री गंगस्यामजी रै मिंदर हीडोरो बड़ो भारी सोना रौ नै काचां रा कांम रौ कीमत रू० २,०००) रौ नवो कराय पधरायौ[1] ।

और सैर रा दरवाजां रा जाबता सारू मारवाड़ रा भोमियां नु' बुलाया सो आदमी ४०० तथा ७०० आया । तिणां नै चाकरी भोळावणी तथा सिरकार सु षावण नै पेटीया रोजीना देणा जिण री भोळावण पटानवेस पं० धनरूप नै दिरीजी । सो भोमीयां रो डेरो आसोप री हवेली में दिरीजीयो । नै षांणगी आदमी दीठ रू० २) महीना रा जोधपुर री कचेड़ी सु' दिरावण रो हुकम हुवौ ।

सांवण सुद ७ सिरदारां नै मौसर हुवौ—कुचांमण, पोकरण । नै बारा सु' ईतरा, जणा आया जिणां नै मुजरो हुवौ—भादराजण, लवेरो, समदड़ी, राषी ।

सुद ८ षवर आई कै बागी लोक मेवाड़ में आया तिण सु' पाली तथा जोधपुर री रैत[2] नै विचार आयौ[3] जितेक षबर लागी कै कोठारीय कनै अंगरेजां री फौज जाय पूगी तरै कोठारीया सु' श्रीजी दुवार दरसण कर नै चितौड़ री तरफ होय धरीयावद री जाड़ी[4] में गया नै अंगरेजां री फौज रा तु'गा ३ लारै वेवै है पिण मुकालबो करण री त्यागत[5] नहीं कीहुंकै बागी लोकां री फौज घणी नै अै थोड़ा ।

सांवण सुद ११ श्रीजी साहब जनांना समेत मांयला पड़कोटा रै मारग श्री चावंडा माताजी रा दरसण करण नै पधारीया । नै आज मुसलमांनां रै ताजीया है सु श्री महाराज कंवार देषण नै घासमंडी में श्री तीजा मांजी रा

---

1. नया बनवा कर भेंट किया 2. रैयत 3. चिंता हुई 4. झाड़ी 5. ताकत

मिंदर में विराजीया। नै महाराज कंवार रौ आदमी १ पुरबीया ऊपर तरवार वाही सु कोटवाळ आय छुड़ाय दीया।

सांवण सुद १२ निमच रा छांवणी सु वकील भं० हेमचंद रौ कागद आयौ कै बागी लोकां रै नै अंगरेजां री फौज रै गांव रैवासी झगड़ौ हुवौ सु बागीयां रा पग छूट गया। अर पड़ाउ[1] तोपां ३ नै हाथी १ अंगरेजी फौज वाळां रै हाथ आया।

सुद १५ राषी रौ उछव सरबाले मौसर हुवौ नै रात रा चंद्र परब हुवौ।

संमत १९१५ रा भादवा वद १ आवूजी सु षबर आई कै जोधपुर रा अजंट ईंद्रसेन साहब मर गया जिणां री अेवज कायम मुकांम इंनफी साहब हुवा।

वद ५ नाग पांचम रौ मेळो मंडोर रौ हुवौ नै श्री हजूर साहब री असवारी गोळ पाग मंदील पधराय घोड़े असवार होय गढ़ सु मांयलेवाग दाषल हुवा।

भादवा वद " (अमावस) षवर आई कै बागी लोग झालरापाटण जाय उठा रा लोग नै मिलाय[2] सैर लूट लीयो। नै रू० तीन लाष ठेराया नै झगड़ौ पिण हुवौ, दुतरफा आदमीं मुवा[3]।

और सांमण १ आपरा घर रा धणी नु जैर दे मारीयो जिण नै गधै चढ़ाय माथो मुंडाय सैर बारै कढाय दीवी।

सुद ६ श्री हजूर मांयलावाग सु राजमैलां दाषल हुवा।

और नागौर रौ गांव रोळ रांणोजी श्री तीजा भटीयांणीजी तिणां रै पटे सो बारोठीयां आय लूट लियो नै महाजनां री डावड़ीयां[4] ३ नै पकड़ ले गया।

और तारो १ चोटी वाळो[5] आथूणो ऊगो, चोटी हाथ २० री थी।

---

1. लूट में 2. अपनी ओर मिला कर 3. दोनों पक्षों के आदमी मरे 4. लड़कियें
5. पुच्छल तारा

भादवा सुद १० उमरावां नै मौसर हुवौ—आहोर, रांमपुरो, कोरणो, समदड़ी, लादढीयो, गोराउ, मोकलसर, बालो। इणां नै फौज में चढण रौ हुकम हुवौ।

सुद ११ रेवाडीयां रौ मेळो तळाब गुलाबसागर ऊपर सदामंद मुजब हुवौ। नै श्री हजूर साहब राजमैलां बंगला ऊपर विराजीया।

भादवा सुद १२ बड़ा महाराज श्री मांनसिंघजी री छमछरी[1] है तिण सु उमराव मुसदी वगैरे सारा मंडोर गया।

सुद १३ मौसर हुवौ। सु पैला तो कोटा सू व्यास लिछमणदास षलीतो ले आयो, जिण नै आसीरवाद हुवौ। नै पछै उमराव भाद्राजण, षींवसर, रीयां रा नै मुजरौ हुवौ।

संमत १९१५ रा आसोज वद २ तथा ३ राजमैलां सु असवारी हुई, सु बाळससंद होय छैलवाग हुय कायलांणे दाषल हुवा।

वद ८ असवारी कायलांणा सु बाळसमंद होय राजमैलां दाषल हुवा।

वद १० श्री हजूर साहब मांयलावाग में पधारीया नै बड़ा साहब रा कैणा सु ईतरी आसांमीयां नै अजंट साहब रै सांमा मेलीया—सिंघवी सिवराज, भाद्राजण ठाकुर नै कुचांमण री जमीत में मुकत्यार लादड़ीया ठाकुर। सु अजंट साहब आया नहीं, तरै अै पाछा आया।

वद १२ भोमीयां री षांणगी चढ़ गई[2] तरै भोमीयां कचेड़ी जाय मांगी तरै हाकम सिंघवी लिषमीचंद मुढा मांय सु हळके भारी बोल गयौ तिण ऊपर बेदो[3] हुय गयो। सु बेदो सुण नै पटानवेस पं० धनरूप राजमैलां जावतो थो सु कचेड़ी में जाय नै छुड़ाया। तरै हाकम दोढ़ी जाय बैठो नै कयौ—धनरूप म्हारी भोमीयां कनै स्यांन गमाय दिवी[4]। पछै भोमियां नै ती चुकती षरची दिरीज गई।

---

1. संवत्सरी 2. खाना-खुराक के रुपये चढ़ गये 3. झगड़ा 4. मेरा अपमान करा दिया

आसोज वद १४ अजमेर सु मकाली साहब बलोचां रौ रसालो ले नै गांव बावड़ी होय तिवरी डेरा किया। तरै अठा सु मुलाषात मुदे छापरी रा चांदावत समरथसिंघ नै मेलीयो नै मेवा मीठाई री डाली मेली।

संमत १६१५ रा आसोज सुद ४ आसोपो हीरालाल अजंटी रा वकील नै आबू रो पांणी लाग चल गयौ।

आसोज सुद ६ फौज मुसायब जोसी हंसराज मेवाड़ री नाळां रा ब्रंदोबसत वासते है जठा सु समाचार आया कै करमाल री नाळ जोजावर रा भाषर में है जठै आउवा वाळा ढांणा में आयां रो हेरो लगाय[1] अजांणचक[2] गया सु गोळी भुटको हुवौ। पछै तोपां रा तीर छूटा, सु आदमीं १३ बारोठीयां रा कांम आया नै आदमी ७ नै पकड़ लाया। नै राज रा आदमी १० घायल हुवा। नै जोजावर रा ठाकुर तथा भोमीया राज री फौज रै मदत में रया।

आसोज सुद ६ उमरावां नै मुजरो हुवौ—निबाज, षेजड़लो, रीयां, षींवसर, पांचोड़ी।

और श्री हजूर साहबां री असवारी गढ़ ऊपर पधार नै प्रबारा श्री चांवंडा माताजी रा दरसण करण नै पधारीया। पछै पाछा पधार सुरजपोळ मारग मैलां दाषल हुवा।

आसोज सुद १० रांवण मारण री असवारी जलूस सु श्री रामचंद्रजी री सदामंद मुजब हुई। नै श्री हजूर साहब ही हाथी रै ऊपर विराज जलूस सूं सदामंद मुजब जालोरी दरवाजा बारै पधारीया नै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा। नै महाराज कंवार नै सिं० कुसलराज मुढा आगे घोड़ां चढीया था, सो दरवाजा बारै घोड़ा फेराया। पछै हाथी सु उतर घोड़े असवार हुय बाहीवाळ रो दसतूर कर पाछा सिरे बजार होय फतैपोळ रै मारग गढ़ दाषल हुवा।

सुद १५ कायलांणे की दड़ी री नाळ बारै सड़क माथै रांमदांन रा बाड़ीया कनै झालरो नवो करायौ। किलादारां हां० हुवौ तिण में पांणी मीठो नीकळीयो।

---

1. जासूसी करके 2. अचानक

और सरहद पुनम रौ उछव हुवौ तिण में दुपटा मदील निवाजस इतरा जणां नै हुई—पोकरण ठाकुर, रांणावत गंभीरसिंघ, किलादार देवीसिंघ, जोसी सिवनारांयण, सिं० कुसलराज, सिं० सिवराज, म्हैतो छत्रमल, षीची उमेदकरण, सोभावत उमेदकरण, कवराज भारतदांन, पोसाष वाळो दरजी गोरू, कोटवाळ सेरकरण, जोधो मूलसिंघ, भाट वागो, थांनवी हरदेव, भाट अमांन, पुरब रो वरस ३ सु उमेदवार थौ नै कवी चोषो जिण नु रोकड़ रू० १०००) नै कड़ा, मोती, मोतीयां री कंठी, दुसालो नै घोड़ो सागत सुधो ।[1]

काती वद ५ कोलरज साहब बीकानेर सु आया नै आबूजी जावै, जिणां री सरभरा दूध, दही, माषण, घास, चारो, मुगधणा[2] वगेरी री हुई । नै वद ६ अठा सु चढीया ।

नव चौकियां में वेरो हुवै जिण री सुरंग छूटी सु आदमी १ तो मरण गयौ नै च्यार जणा जषमी हुवा ।

काती वद ६ तथा ७ रात रा अेक तारो तूटो सु अद घड़ी तांई सैचनण हुवौ । नै पछै धमीड़ो अेसो हुवौ कै कोई भारी तोप छूटी जिसो ।

काती वद '' (अमावस) दीपमाळका रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ ।

काती सुद ४ द्रावड़ देस में मैल कोटां में जाद बद्री गादी रा गादिपत आचारज जिरण सांमीजी री पधरावणी श्री दरबार री तरफ सु चांतरे हुई । सु मुसदो, षवास, पासवांनां नै हुकम हुवौ । सु चोतरे भेट करण नै गया । नै श्री दरबार री तरफ सु रू० १००) भेंट हुवा ।

सुद ५ सुणी कै अजमेर में अंगरेजां रै आज तक मुलक हिंदसथांन ईजारे थो सु गदर पछै पातसाही षालसो कीयो[3] तिण री सैनांण री सैर अजमेर में सिरकार सु रोसनी हुई ।

और कवराज भारतदांन नै निबाजस हुई—कड़ा, मोती, मोतियां री कंठी, सिरपेच, षासो वागो, मंदील पाग, तास रौ कमरबंदो, पायजांमो नै घोड़ो सागत सुधो ।

---

1. जीन सहित   2. जलाने की लकड़ी   3. राज्य कम्पनी का न रहकर बादशाहत (क्राउन) का हो गया

और षासी पेटी रो मुनीम मु० अजबनाथ पाली परणीजण नै जावे तिण नै कड़ा, मोती दुसालो हुवा ।

और जमादार वलवंतसिंघ रा कांमदार नै कड़ा, दुसालो हुवा ।

काती सुद ७ ईसतीयार १ अंगरेजी सिरकार सु आयौ जिण में लिषीयो कै जो मुफसद लोग जनवरी महीना अंगरेजी की पैली तारीष तक सव अपने-अपने मकांन पर आय वैठेंगे तो उन लोगां कूं हमारी सिरकार का गुना माफ वषसीस हो जायगा । सिवाय कै साहब लोगां कु ज्यांन से मारो है[1], उन सषसां कु गुना माफ नहीं होगा ।

काती सुद ९ लाठ साहब री षलीतो आयौ जिण में लिषीयो कै मुलक हिंदसथांन का ठेका था सो अब होय चुका[2] । अब बादसाही षालसे रषणे का हुकम है । सो इसी की षुसी की रोसनी कराणा ।

उण हुकम सु रोसनी गढ़ ऊपर तथा सैर में तथा सूरसागर रोसनी दीपमाळका सरसते हुई,[3] नै सिरे दरबार हुवौ, जिण में सिरदार इण मुजब हाजर था—

पोकरण वभूतसिंघ सालमसिंघोत नै षींवसर सिवनाथसिंघ बषतावरसिंघोत, षेजड़ले हिमतसिंघ सादूलसिंघोत नै दिवांण वगैरे मुसदी, षवास, पासवांन सारा हाजर था । नै श्री हजूर घणी बार तांई[4] विराजीया रया । नै मुनसी षलीतो नै ईसतिहार बांचोयो[5] तिण नु सिरपाव मंदील दुपटो हुवौ ।

काती सुद १४ सोभावत उमेदकरण कवराज भारतदांन रौ बेटो मुरारदांन नै सिरपाव हुवौ । नै कलावतां[6] नै अर छुट रा तायफां नै इनांम दिरोजीया ।

और बड़ा साहब आबूजी सु आवै जिण रै सांमा[7] दिवांण म्हैतो विजैमल, सिंघवी कुसलराज, मुहता मुकनचंद, किलादार देवीसिंघ रोयठ तांई सांमा गया ।

---

1. जिन लोगों पर अंग्रेजों को मारने का इल्जाम है 2. समाप्त हो गया 3. दीपावली की तरह हुई 4. बहुत देर तक 5. पढ़ा 6. कलावंत 7. अगुवानी में

संमत १९१५ रा मिगसर वद १० श्री महाराज कंवार री असवारी चोपासणी पधारी, श्री गुसांईजी महाराज रा दरसण करण मुदे, रू० २००) भेंट हुवा।

वद ११ वडो साहब आवै जिण रै सांमा रोयठ रा डेरा सु' कोस पूण तक इतरी आसांमी गया—

ठाकुर कुचांमण, पोकरण, दिवांण विजैमल, सिंघवी कुसलराज, किलादार देवीसिंघ, मु० मुकनचंद, सांमा गया सु पाछा आय रोयठ डेरां दाषल हुवा।

नै दूजे दिन डेरा गांव मोगड़े हुवा। नै श्री हजूर साहवां रो डेरो रातानाडा कनै षड़ो हुवौ। कारण कै साहब मोड़ा-वेगा आवे तो विराजण मुदे।

मिगसर वद १२ श्री हजूर साहब री असवारी जांझरके[1] गोळ री घाटी रै मारग होय डेरां दाषल हुवा। नै घड़ी दोय तीन दिन चढ़ीयां साहव आया तिणां रै सांमा तांमजांम में विराज डेरां सु थोड़ी सी दूर पधारीया। आगे साहब हाथी असवार हो रा समाचार हुवा तरै श्री हजूर साहव हाथी असवार हुवा नै षवासी में पोकरण ठाकुर बैठा, नै मुलाषात दसतूर मुजब हुई नै टोपी उतारी, नै तोपां री सिलकां हुई। पछै हाथी दोनूं बरोबर होय पाछा पधारीया। सो सोझतीया दरवाजे होय तबेला री गळी कनै ठाकुरजी श्री फतेबिहारीजी रा मींदर कना सु' श्री हजूर साहब तो गोळ री घाटी रै मारग गढ़ दाषल हुवा नै वड़ो लारन साहब नै अजंट बुरक साहब नै सिकतर चारू' सिरे बजार होय सूरसागर दाषल हुवा। नै श्री हजूर गढ़ दाषल हुवां पछै फेर तोपां री सिलकां हुई।

मिगसर वद १३ मुसायब सारा सूरसागर गया, घड़ी दोयेक दसतूर मुजब बातां हुई।

वद १४ मुसायब फेर सूरसागर गया तरै साहब कही—च्यार बजीयां हम गढ़ पर आवेंगे। पछै घड़ी ४ दिन लारला रा किला ऊपर आया। नै श्री हजूर साहब दोढ़ी री पोळ में दौलतषांना रा चौक तांई सांमा पधारीया। नै बैसण वगैरे अंतरपांन रौ दसतूर फतैमैल में हुवौ। नै वकीलां री गळती

1. प्रातः

सु ं कर नै साहब लोक पगरख्यां पेरीयां[1] फतैमैल में उरा आया नै सदामंद फतैमैल रै पावड़ीयां नै भोजन-साळ रै पावड़ीयां रै नीचे सदामंद षोलै[2]। घड़ी दोयेक बैठ सरसताई बातां कर सूरसागर गया नै जाफत री मिठाई मेवो वगैरे सूरसागर मेलीजीया।

मिगसर वद " (अमावस) पोकरण ठाकुर री तरफ सु ं मिठाई री छाबां सूरसागर साहब रै मेली।

संमत १९१५ रा मिगसर सुद १ प्रबात रा साहब लोक कायलांणो देषण नै गया नै चोघड़ीया रा श्री हजूर साहब री असवारी वडा साहब रै डेरै पधारै, सो पैली वडा साहब रो सिकतर गढ़ ऊपर आय अरज कर असवारी करावे सो सिकतर आयौ नै पछै असवारी हुई, नाळा री बारी रै मारग। सो सदामंद तो पेसवाई में बडो साहब जोसीयां री बगेची रा बुरज सु ं पांवड़ा १० तथा १५ उली कांनी[3] झालरा[4] कांनी आवै नै आज वकीलां री गळती सु ं जोसीयां री बगेची री षेळी[5] तांई सु ं आगा आया नहीं नै श्री हजूर साहब सदामंद री जायगा घोड़ो पाव घड़ी ढाबीयो। पिण साहब उठा सु ं पांवडो १ आगा सरकीया[6] नहीं तरै श्री हजूर साहब पधारीया, सो मुलाषात हुई नै टोपीयां रै हाथ लगाय। वातां करतां सूरसागर पधारीया। दसतूर मुजब मुलाषात कर पाछा गढ़ दाषल हुवा।

सुद २ साहब लोक सारा बाळसमंद गया। पाछा देष तुरत ही आय गया। नै तीजा पौर रा कुचांमण ठाकुर मुलाषात मुदे सूरसागर गया। मुनसी पेसवाई में सरसता मुजब सांमो आयौ। मुलाषात कर घड़ी दोयेक सरसताई वातां कर सीष कीवी।

मिगसर सुद ३ साहब लोकां रो षांणो गढ़ ऊपर हुवौ।

सुद ५ साहब लोकां री जाफत पोकरण री हवेली हुई। सिरदार, मुसदी सारा हाजर था नै ठाकुर हवेली री पोळ तांई सांमा गया नै नाच-कूद हुवौ। चौक में बिछायत हुई जठै बैठा। पछै घड़ी तीनेक सु ं सीष कर सूरसागर गया।

---

1. जूते पहने हुए 2. जूते उतार दिये जाते हैं 3. इस तरफ 4. विशेष प्रकार का कुंआ 5. पशुओं को पानी पिलाने के पत्थर की बनी टंकी 6. आगे नहीं आया

सुद ६. साहब लोगां री जाफत[1] कुचांमण ठाकुरां री हवेली हुई नै सारो दसतूर पोकरण री हवेली मुजब हुवौ।

और ठाकुर नीबाज, रास, आहोर, वगैरे बडा साहब कने गया, मुलाषात हुई नै बड़े साहब सिरदारां नै कयौ—कै तुम महाराज साहब का हुकम उठावोगा तो तुमारे हक में अछा होगा अर हुकम अदुल करोगा[2] तो ब्होत बुरा होगा कीहुंकै महाराज साहब तुमारे सब का मालक है अर इनका निमक[3] तुमारे मुह में हमेसां जाता है। जद सिरदारां कही—महाराज साहब हमारे तो मालक हैं, अर सब राठोड़ां का सूरज है।

मि० सुद ७ बडा साहब रा सिकतर २ कुचांमण ठाकुरां सु बातां करण हवेली नै गया। सु घड़ी दोय तांई विलायत री वातां कर पाछा सूरसागर गया।

मिगसर सुद ८ बड़ा साहब अर अजंट साहब अजमेर चढण री सीष करण नै श्री हजूर में आया नै घड़ी पांच तांई इकंत बातां हुई। पछै अंतरपांन होय सीष री पोंछावण वगैरे सारो कांम हुवौ। पछै घड़ी दिन च्यार लारला रा पोकरण, कुचांमण रा ठाकुर सूरसागर साहब कनै गया। घड़ी दोयेक सोषीयात वातां हुई। पछै बडे साहब कहो—तुमारे कुछ कैणा होय तो कहो। तरै इणा कहो—कै सिरकार की मेरवांनी से मुलक सरसबज है अर श्री महाराज साहब आपकी दोसती से अर मदत से बेषटके राज करते हैं। अर श्री महाराज साहब की हमारे सब पर मेरवांनी बणी रैती है। पछै बड़े साहब कयौ—कै तुम दोनूं सिरदार दांनै[4] हो जब केता है कै श्री महाराज साहब कुं राजी रषो, हो जैसे ही जादे रषो[5]। अर सब ठाकुर लोकां कुं नसियत देते रहो। अर श्री महाराज साहब से अरज नेकी की करते रैणा तो मुलक की सरसबजी रेहेगी। तो महाराज साहब कुं अर तुम लोगां कुं अर रयत कुं आरांम रेगा। इण ताछ केही बातां कही नै फेर उठती वषत साहब कयौ—कै जो मुलक का बंदबसत दुरस[6] नहीं रैगा तो हमारी सिरकार कुं तकलीफ उठाणी पड़ेगा। हमारा कैणा ईस वासते सच-सच है कै तुमारे हक में अछा है। पछै सिरदारां नै सीष दे नै बडा साहब नै अजंट साहब दोनूं श्री हजूर में आया, घंटो १ इकंत रया।

---

1. गोठ 2. आदेश का उल्लंघन करोगे 3. नमक 4. परिपक्व, समझदार
5. है उससे भी अधिक खुश रखो 6. दुरुस्त

सुद ६ बडा साहब रो नै अजंट साहब रो कूच हुय गांव बणाड़ डेरा हुवा नै सरभरा री भोळावण लाला ईसरीप्रसाद नै हुई। नै रूपीया ५००) रोजीना रा हिसाब सु दिरीजीया। नै अठै रया जिते रू० १५००) रोजीना लागा[1]। बड़ा साहब दिन १२ अठै रया।

और जैपुर किसनगढ़ रा वकीलां नै श्री हजूर रूबरू बुलाय सिरपाव दिया।

मिगसर सुद १२ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी, श्री जोरावरसिंघजी, श्री किसोरसिंघजी वगैरे नै कुचांमण ठाकुर वगैरे सिरदार मुसदी वगैरे साथे था, सु चोपासणी पधार भेंट कर पाछा सिंजीया[2] रा गढ़ दाषल हुवा।

और आउवा रा जिलायत[3] गांव—दिवांणदी, काकांणी, जांणीयांणो, षारडो वगैरे बडा साहब नै अरजी दीवी कै म्हांरा गांव नाहाक जबत कर राषीया है। म्हांरै आउवा सु सरोकार हो नहीं नै है नहीं। तरै साहब हुकम दियौ—महाराज साहब कु राजी कर अपणा गांव लिषाय लो। तरै श्री हजूर साहब मुसायबां नै हुकम दियौ—इणां रै रूपीया ठैराय गांव लिष देवो।

मिग० सुद १३ पोकर(ण) ठाकुर घरै जावण री सीष कोवी सु मंजूर हुई।

संमत १९१५ रा पोस वद १ गुसांईजी महाराज रा दोय छोटा सरूप[4] वरस १२ तथा १४ आसरे रा बड़ौदा सु चोपासणी रा महाराज री भांणजीयां परणीजण नै आया, तिणां री पदरावणी[5] श्री हजूर में हुई। सु श्री हजूर साहब षाबका री षिड़की तांई सांमा पधारीया नै भेंट मोर १) तोला रू० ५) कीया नै सिरदार मुसदीयां रा रू० २००) आसरे भेंट रा आया। गढ़ ऊपर नटवरजी रा मिंदर सु हाथी रै हौदे विराज सिरे बजार फतैपोळ रै मारग छंवर हुतां[6] आया। नै पाछा जावतां षुले षासा में विराज गाजा बाजां सु सिरे बजार होय नटवरजी रै मिंदर पोंछाया।

पोस वद २ बाळसमंद श्री हजूर साहब षुसी कीवी सु कुरसी ऊपर विराजीया। मुसदी, षवास, पासवांन हाजर था नै कलावतां रौ नै पातरीयां

---

1. बड़े साहब के प्रति दिन खर्च के 1500) रुपये राज्य से खर्च होते रहे 2. संध्या 3. जिले में पड़ने वाले 4. पुत्र 5. गुरु महाराज का पदार्पण 6. चंवर डुलाते हुए

भगतणीयां रो गावणो नाच-कूद वगैरे हुवौ नै वीकमकोर नै सिदु रा भाटी हाजर था तिणां नै गाळीयां गवाई ।[1]

और सुणी बागी लोग चवदे पनरे हजार मेवाड़ में डूंगरपुर बांसवाड़ो लुटीया ।

और श्री हजूर जोसी परभूलाल नै फुरमायौ कै बागी लोक मेवाड़ में आयां री मालम हुई है सो थांरा भाई हंसराज आउवे है सो हुकम रौ कागद लिषाय दे सु[2], नाळां[3] रौ जाबतो राषे ।

पोस वद ४ तथा ५ श्री हजूर साहब मौसर दिवांण मुतसदी वगैरे सारां नै दियौ नै जोसी प्रभुलाल ने फुरमायौ कै उगुणी तरफ फौज मेलणी सु लाला ईसरीप्रसाद नै मेल दो नै इण रै सरभरा षरची रौ बंदोबसत तु कराय दे । सु प्रभुलाल इकरोजो बंदाय दियौ[4] नै सारी तयारी कराय दिवी ।

पोस वद ६ अंगरेजां रे आज रो बड़ो दिन हुवौ[5], दीसंबर री तारीष २५ रो ।

और पटानवेस पं० धनरूप रै तीजा व्याव रो बेटो हुवौ जिणरी षुसी कीवी, तिण री कुसी में जावण रौ उमराव, मुसदी, षवास, पासवांनां वगैरे सारां नै हुकम हुवौ । सु पोकरण ठाकुर दिवांण आद ले सारा गया ।

पोस वद ७ समाचार आया कै बारोठीया चांपावत भींवसिंघ नै गूलर ठाकुर वगैरे गांव भड़सीये आया जिण में भड़सीया रा भोमीयां रा चांदावत रणजीतसिंघ, मैताबसिंघ मां जाया भाई नै दूजी कोटड़ी रा अमरसिंघ वगैरे गांव रौ फलसो[6] ढक नै संबीया[7] सो घड़ी ४ तथा ६ तो झगड़ौ कीयौ नै पछै फलसो षोल तरवारां मियानां बारै ले नै बारोठीयां सु झगड़ौ कर तीनू जणा कांम आया । पछै बारोठीयां गांव लूट लीयौ पछै उठा सु व्यास राधाकिसन रै पटा रो गांव बरेव जाय लूटी नै पछै बाजुवास में केई ठोड़ां जाय फितूर[8] कियो नै गांव भेरूंदो पिण लूटीयो, बिगाड़ मोषळो[9] कीयो ।

---

1. प्रीत भरी गालियों के गीत गवाये गये 2. लिखित आदेश दे दिये जायेंगे 3. मेवाड़ से मारवाड़ में आने का संकरा पहाड़ी रास्ता 4. प्रति दिन खर्च की रक़म की व्यवस्था करा दी 5. क्रिसमस डे 6. मुख्य द्वार 7. कटिबद्ध हुए 8. उत्पात 9. काफी

और भेरूंदो लुटीयां पछै तुरंत ही सिं० रतनराज परबतसर हाकम थो सु आदमी ७०० घोड़ा ५०० आसरे सुं आय बारोठीयां सुं झगड़ो कीयो। आदमी दुतरफा मुवा पण माल बारोठीया षेरषेरा जाता रया।[1]

जांमनगर सुं म्हैतो मूलसंकर नै चु० मालो आया तिणां रै घास, चारा, मुगधणा रौ रुको बागर ऊपर हुवौ नै जोसी हंसराज सांमल आउवे जावण रौ मुजरो चंडावळ, षेरवो, रास, राषी रा ठाकुरां नै हुवौ नै मूंडवा रा मेळा रा जावता सारू रींयां षींवसर रा ठाकरां नै मुजरो हुवौ नै पाली रा जाबता सारू रोयट रा ठाकुर नै मुजरौ हुवौ।

वद १२ श्री हजूर साहब री असवारी बाळसमंद सुं छैलबाग रांमदांन रै बाड़ीये होय कायलांणे दाषल हुवा।

पोस वद १३ सुणी कै बडा साहब कायम-मुकांम[2] था सो हमे मुकर हुय गया[3]।

और रजवाड़ां रा कांकड़ सीवां[4] रा वकील जोधपुर, बीकानेर, जैपुर, सिकर, किसनगढ़, उदैपुर, सिरोई, पालणपुर, जैसलमेर नै इणां में अंगरेजां री तरफ सु सरसतादार नै इतरा वकील सांमल होय मिसलां बांच फैसलो करे नै पछै अजंट साहब बांच फैसला पर दसषत करै सो तो सही रवै, नै अजंट साहब नै फरक दीसे[5] तो फेर पाछो फैसलो हुवै। सो वकील नै अजंट साहब अजमेर में फैसला करै, हमेसां सियाळा[6] में। जिण में सबब औ कै अजमेर रा मुदेई मुदायले जोधपुर तथा आबू पर आवे नहीं जिण सुं हर साल अजंट नै वकीलां नै जावणो पड़ै।

और सुणी कै गूलर आलणीयावास वगैरे आदमी १५०० सै सुं नगारो बाजतां थकां पोस वद ९ नै गांव आलणीयावास दिन पोर चढीयां आया सो गांव तो लूट लियौ नै च्यार पांच ठावा आदमी महाजन तथा जाटां नै मार नांषीया नै बंद च्यार छोरीयां[7] बगैरे पकड़ लीवी। नै घास कड़ब रा पचासा नै षाषला री करायां[8] बाळ दीवी। अर कोटड़ी में मु० मुकनचंद री तरफ सुं प्रौ० लालचंद नै किलादार री तरफ सुं जोसी मुरलीधर था,

1. सही सलामय भाग निकले 2. कार्यवाहक 3. पद पर स्थायी हो गये 4. सीमा 5. त्रुटि रहने पर 6. शरद ऋतु 7. लड़कियें 8. गेहूं के भूसे का संग्रह

नै रियां री जमीत थी तिणां घड़ी दोय घड़ी गोळी-भूटका हुवा। पिण कोटड़ी भिळी नहीं[1] नै गांव मांय सु माल सारो ऊँटां में घाल ले गया।

पोस सुद ४ दिवांणगी री मोर मेता विजैमल कनै थी सो मंगाय दोढ़ी घराई।

और बड़ा साहब री वकीलायत पठांण सैबाजषां रै थी सो मुनसी चुनीलाल रै हुई।

सुद ५ रायपुर ठाकुर माधौसिंघ रूपसिंघोत रांमसरण हुवां री आज षबर आई।

पोस सुद ६ नायब वकीलां रा कागद सु मालम हुई है कै आलणीयावास गूलर घणकोली बाजुवास इणां ठाकरां रो कागद अजंट साहब रै नांवे आयो जिण में लिषीयो कै बिनां कसूर म्हांरा ठिकांणा छुडाय लिया है। अर म्है दोय हजार आदमी घर-घर रा हुय गया[2]। अर संमत १८९६ री रपोट में म्हांरा गांव लीषीयोड़ा है अर म्है हमे पूरा तंग होय रया छां। सो हमे म्है मारवाड़ को विगाड़ कर रोटी षावां छां। दूजा राज गैर इलाका को विगाड़ हालतांई[3] किणी को कीयो छै नहीं। अब हैरांन होय मारवाड़ में मरणो विचार[4] डेरो चवड़े[5] कीयो छै। सो म्हांकी मदत सुणवाई कर ठिकांणे नहीं बैसांणसो[6] तो पाप साहव बहादुर नै लागसी। अर म्हांको आदमी आप कनै भेजां सो आवंण वाळो छै नहीं[7]। सो साहब बहादुर को चपड़ासी म्हां कनै आवै नै दिल जमाई करावै[8] तो अेवाळ[9] म्हांको तफसीलवार कहां। इण ताछ लांबो चौड़ो कागद हींदवी[10] में लीषीयोड़ो, च्यारां रा हेटे दसषत हुवोड़ो अजमेर रा डेरां आयो। सो साहब नायब पींडत कनै बंचाय[11] समाचारां सु उवाकब होय पाछो चारू जणां रै नांवे भेळो ही लीषीयो कै जो करारनांवा है सो तो महाराजा तषतसिंघजी बाहादुर से है सो तमारा अेवाळ वां कहौ[12] परंत तुमारे हक में कुछ कैणा होय तो तुमारी तरफ से अेक मुकत्यार कर जिनकु हमारे

---

1. कोटड़ी पर कब्जा नहीं हो सका 2. विना घर बार के हो गये हैं 3. अभी तक 4. मरने का निश्चय कर 5. खुले मैदान में 6. हमारी जागीर बहाल कर हमें व्यवस्थापित नहीं करोगे 7. हमारे पास ऐसा कोई आदमी भी नहीं है जो आपसे आकर बातचीत करे 8. हमें विश्वास दिलाए 9. वृत्तांत 10. हिन्दी भाषा 11. पढ़वा कर 12. तुम्हारी बात महाराजा से कहो

पास विनां सुबे[1] भेज दो। सो हम अच्छी तरै से सुण लेवेंगे। इण तरै अजमेर रा डेरां सुं अजंट साहब षत दे चपड़ासी नै बारोठीयां कनै मेलीयो। तिण री विगत नीचे जाब भुगतीयां[2] लिषण में आवसी।

और कागद १ इणां ही च्यारां सिरदारां रौ अजमेर में मारवाड़ रा साहूकार रेवै जिणां रै नांवे आयौ। जिण में लिषीयो कै म्है दुखी छां। सो लूट खोस कीवी, मारकूट कीवी अर फेर करसां, सो थे ठावा-ठावा आदमी साहब बहादुर कनै जाय म्हांकी तरफ की अरज करो ज्युं म्हां कुं ठीकांणे बेसांणे। सो वो कागद महाजनां विजनस साहब बहादुर नै बचायो। जिण रा समाचार श्री हजूर मालम हुवा। तरै वकील देवीलाल टाबर रयौ[3] जिण सुं वकीलायत तागीरायत हुय वकीलायत रौ दुपटो भंडारी सिरीचंद रा बेटा नै हुवौ।

पोस सुद ७ भोम षोकरण, कुचांमण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ नै पोकरण रा ठाकुर घरै जावण री सीष कीवी।

सुद ८ श्री हजूर साहब मौसर सरबाले[4] घड़ी पांच दिन चढ़ीयां सुं लगाय दोफारां[5] तांई दियौ।

और षजांना री पोतदारी नाथावत व्यास देवकिसन सुरजकरण रा रै संमत १८७६ सुं लगाय ही सो आज जबत हुई। नै मोजुदायत लेवण वासते अैमदनगर रा म्हैता हरजीवण रौ भाई केवलरांम गयौ नै पोतदारी नांवे गेळारांम रै हुई।

पोस सुद ९ आज इतरा कांम हुवा—दिवांणगी रौ कांम सैबाजषां नै म्होर सूंपीजी नै सांमल म्हैतो हरजीवण गोपाळराव रया, नै कमठा री नै कळी रा कोठार री दरोगाई जोसी सिवनारांयण रै हुई। नै इतरा जणां नै कैद हुय घरां चौकीयां बैठी। सांड सिवराज षींवराज रौ, षजांना री पोतदार व्यास देवकीसन रा बेटां नै पटवो परतापमल नै बेटां समेत तापड़ीया बालकिसन वगैरे नुं।

और जोधपुर री हाकमी कवराज भाट वागा रै हुई।

---

1. बिना सन्देह 2. जबाब मिलने पर 3. लड़का ठहरा 4. खुले रूप में 5. मध्यान्ह

और बाईजी सा रो कांम वडारण[1] ढेलड़ी तालके हुवौ नै ढेलड़ी जोधपुर रा पटा ऊपर हजार ६०,०००) रौ षत करायौ।

सुद १० तापड़ीया वालकिसन नै रोकीया जिण री इसी सुणी कै मुनसी जीतमल म्हाराज कंवार श्री छत्रसिंघजी रा रासा[2] में थो जिण नै प्यालो पाय[3] मारीयो। नै उण रा रू० ३०,०००) तापड़ीया में था जिण री श्री हजूर में किणी अरज कराई, तिण मुदे अटकाया सो छांनै कोटवाळ सेरकरण हंग सफाई कर दीवी[4]। तरै कोटवाळ साथै घरै पोंछाय नै दुकांनां री नै घर री चोकीयां उठाय दिवी।

पोस सुद १३ तथा १४ सांड सिवराज रै रू० २६,०००) ठैर साहूकारी ले सीष हुई।

संमत १६१५ रा माह वद २ श्री हजूर साहवां री असवारी मुसायबां समेत सूरसागर, पधारीया घड़ी दोय-तीन विराज पाछा गढ़ दाषल हुवा।

वद ८ श्री हजूर मौसर घड़ी दोय तांई सरबाले दियो।

और षबर आई कै बागी लोक नै आउवा रौ भलो आदमी देवीसिंघ वगैरे लोक हजार २००० आसरे डीडवांणा री तरफ आया सो डीडवांणा रौ जाबतो सिं० रतनराज नै लालो ईसरीप्रसाद कीयो तरै डीडवांणो छोड़ कोलीयो आय लूट लियो। नै विगाड़ घणौ कियौ तिण सु मारवाड़ री रैत भै करै[5] सो सैर जोधपुर रा जाबता सारू दरवाजां री चाकरी[6] इण मुजब भोळाई—

चांदपोळ—जोसी परभुलाल नै,
सिवांणची—पटानवेस पं० धनरूप नै,
जाळौरी—धायभाई देवकरण नै,
सोझतीयो—म्हैतो परतापमल नै,
मेड़तीयो नै जालोरा री बारी—मु० मुकनचंद नै,
नागौरी—सिंधी सायबजादा नै आसोपा उत्तमरांम नै,
नाळा री नै सिघोरीया री बारी—किलादार नै।

---

1. दरोगिन 2. मानसिंह के पुत्र छत्रसिंह के षड़यंत्र में 3. जहर का प्याला पिला कर 4. गोल माल करके बात रफादफा कर दी 5. भय-ग्रस्त हो गई 6. द्वारों पर निगरानी का कार्य

और वकील भंडारी सिरीचंद री मुलाषात अजंट साहब सुं किसनगढ़ रा डेरां हुई ।

और सुंणी कै बागी लोक कोलीयो कठोती विगाड़ीया[1], तिणां लारै नसीराबाद री छांवणी सुं फौज रौ अजीटण साहब तथा जैपुर रौ अजंट साहब फौज ले आया अर तीसरो तुंगो[2] फेर फौज रै आय सांमल हुवौ। जिण मांयलो तुंगो १ तो कुचांमण री तरफ रवांनै हुवौ। नै दूसरो तुंगो मेड़ता री तरफ रवांनै हुवौ नै तीसरो तुंगो च्यार पांच कोस री गिड़द सुं[3] दोय-दोय मजलां कूच सुं फिरतो रयौ। नै बागी लोक गांव लाडणू विगाड़ीयो। गांव भिळ गयो[4] अर दुतरफा आदमी मरण गया। न्यायत षेत बागीयां रै हाथ रयौ[5]। लाडणू लुट नै अगाड़ी रवांनै हुवा। अंगरेजी फौज रा तुंगा में गोरा १००० नै सिष १००० लड़ायता है।

संमत १९१५ रा माह सुद ४ गोपाळ पोळ बिजळी सुं पड़ गई थी सु पाछी हुई, तिण रौ कड़ो[6] आज जोसी वेदीयां पूजा कराय नै चढायो।[४४]

सुद ५ जांमनगर सुं म्हैतो मूलसंकर नै षवास मावो आया तिणां नै मुजरो हुवौ नै निजर निछरावळ कर षलीतो निजर कीयो।

और कोलीया री हाकमी व्यास गंगारांम रै हुई नै दौलतपुरा री हाकमी भंडारी अचलदास रै हुई।

माह सुद ७ बागी लोगां रा तुंगा दोय तथा तीन है जिणां मांयलो तुंगो १ आदमी २३०० आसरे[7] रौ नागौर रौ गांव अळाय आयौ नै आसोप जावण री षबर लागी, तरै हाकमां नुं तथा सिरदारां नु बंदोबसत रौ हुकम पांथो।

और पाली रा जाबता सारूं रोयठ, घांणेराव, चांणोद रा ठाकुरां नै हुकम प्होथो।

माह सुद ९ षबर आई कै बागी लोक गांव आसोप आय बिगाड़ी नै हवालदार भाग नै कुसले[8] नीकळ गयौ, हाथ आयो नहीं। नै आसोप लूट

---

1. लूटे 2. फौजी टुकड़ी 3. इर्द-गिर्द 4. पूरा गांव लूट लिया गया 5. बागी लोग जीत में रहे 6. ऊपरी मुख्य हिस्सा 7. लगभग 8. सकुशल

उठा सु ं माल वगैरे हाथ आयौ सु ले गांव रतकूड़ीयै जाय नै उठै रांणावत गंभीरसिंघ रा घोड़ा-घोड़ी था जिण में चलता[1] घोड़ा-घोड़ी था सु ले लीया नै उठा सु गांव कोसांणे नै मालावास मादळीया बिचै अंगरेजी सिरकार री फौज गोरा वगैरे आय पूगा सो झगड़ौ हुवौ, जिणमें सित्तर आदमी दुतरफा मुवा नै आदमी ४० घायल हुवा नै बागीयां रा पग छूट गया । नै उठा सु ं सोझत रौ गांव रूपावास नै हुय नै घाटा री तरफ आगा गया सो घाटा रै नीचे-नीचे होय नै गांव नारळाई तांई गया । नै उठा सु ं पाछा घिर रूपनगर रा पटा रौ गांव वाघोल जिण री नाळ चढ नै मेवाड़ रौ गांव उमरवे जाता नीसरीया[2] ।

माह सुद १३ श्री हजूर री असवारी जनांना समेत गढ़ ऊपर सु ं मांयलेबाग दाषल हुवा ।४५

संमत १९१५ रा फागण वद १० पठांण सैबाजषां नै मोतीयां री कंठी इनायत हुई नै अंगरेजी सिरकार सु ं अेक ससतर[3] इनायत हुवौ ।

और अजंट बुरक साहब आया तिणां रै पेसवाई में रातानाडा तांई इतरा जणा गया—

कुचांमण रा ठाकुर, सैबाजषां, मु ं० मुकनचंद, म्हैतो विजैमल, सिं० कुसलराज । सु पाछा सोझतीया दरवाजा रै मारग होय सूरसागर गया ।

वद १२ प्रभात रा मुसायब सूरसागर गया पछै लारला दिन रा अजंट साहब श्री हजूर में राजमैलां आया । दसतूर मुजब पेसवाई हुई, घड़ीक इकंत रै, पाछा तुरत सूरसागर गया ।

वद १४ कुचांमण ठाकुर अजंट साहब सु ं मुलाषात करण नै गया । नै डाली पिण मीठाई मेवो रसाळ मेली ।[4]

संमत १९१५ रा फागण सुद १ श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर री हुई । नै महाराज कंवार पिण सारा असवारी में था सु अजंट साहब पेसवाई में जोसीयां री बगेची री उली कांनी तांई सरसता मुजब आया । पछै सूरसागर पधार घड़ी दोयेक विराज पाछी असवारी हुई सो राजमैलां दाषल हुवा ।

---

1. अच्छे भागने वाले 2. वहां जा निकले 3. शस्त्र 4. भेंट के तौर पर मिठाई आदि वस्तुएँ भेजी

और गूलर वाळां रौ कोठारी गाढमल अठै अजंट साहब रै साथै आयौ नै सूरसागर उतरीयो। नै आज सैर में अेक दोय जायगा सिरदारां री हवेलीयां में मिलण नै गयौ।

फागण सुद २ इतरा जणां नै मौसर हुवौ—कुचांमण, निबाज, आगेवो नै जोसी हंसराज आउवा सुं आयौ तिण नै आसीरवाद हुवौ।

फागण सुद ३ अजंट साहब श्री हजूर में आया। घड़ी च्यारेक इकंत बतळावण हुई।

सुद ५ हाथी चढनै अजंट साहब श्री हजूर में आया सु घड़ी च्यारेक इकंत बतळावण हुई।

सुद ८ अजंट साहब री मिजमांनी हुई सु षासा रसोवड़ा सुं जिनस तयार कराय[1] मेलीजी। नै चांतरा सुं आतसबाजी नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा गया सो वकील री मारफत पांथा[2]।

सुद १० अजंट साहब री जाफत कुचांमण री हवेली हुई सु साहब गया सो पेसवाई नाच कूद वगैरे हुवा नै सिरदार मुसदी सारा उणां री हवेली गया। घड़ी च्यारेक साहब ठैर पाछा सूरसागर गया।

फागण सुद १२ तथा १३ अजंट साहब नीबाज री हवेली जाफत हुई सु गया नै सारो दसतूर कुचांमण री हवेली सरसते हुवौ।

फागण सुद १४ डंडीयां री गैर गुलाबसागर रा बचा में कराई। अजंट साहब पिण देषण नै आया, नै पातरीयां भगतणीयां गायबो कीवी नै आतसबाजी छूटी। नै अजंट साहब रौ डेरौ गुलाबसागर में पांणी थो नहीं तिण सुं गुलाबसागर री चोवी[3] में षड़ो हुवौ।

फागणं सुद १५ होळी रौ दरबार हुवौ नहीं नै बादळां रा कस था[4]।

संमत १९१५ रा चैत वद १ षारीया ढावा रा पातसा[5] नै राजमैलां बुलायो सु पातसा गजो लालु मूलचंद रौ बेटो नै सालगरांम रौ पोतो तिण नै

1. पका कर 2. पहुँचे 3. तालाब का मध्य भाग 4. साधारण बादल थे
5. बादशाह (तमासे का नायक)

तषत ऊपर बैसांण लवाजमो गाजां-बाजां सुधो मोती चौक गिड़दीकोट में हुय गुलाबसागर रै मांय होय बचा में आया। ने श्री हजूर चिकां में जाबता में विराजीया तमासो घड़ी दोय तांई देषीयो नै पातसा नै सिरपाव, कड़ा, मोती, दुसाला रौ हुकम हुवौ नै पाछा जावतां सेठ नथमल गुलाबचंद री दुकांन वाळा अेक रू० निजर कीयौ। पछै मु० मुकनचंद आपरी हवेली में पातसा नै बुलायौ सु कोटवाळ बरज दीयो[1]।

वद २ अजंट साहब आबूजी चढ़ीयो सो श्री हजूर में आय बगी में बैस सोंझतीया दरराजा रै मारग रवांनै हुवौ।

वद ३ बीकानेर सुं व्यास हीरालाल नै साद आतमारांम गांव बणाड़ रौ जात रौ षाती सो आया, तिणां नै राजमैलां आसीरवाद हुवौ नै उठा सु षलीतो नै आसा रा गोटका लाया सो निजर कीया।

और भंडारी सिरीचंद अरज कराई कै वकीलायत दूजा नै दिरावै,[2] म्हारा सुं हुवै नहीं।

और बडो साहब आबूजी जावै सु पाली मनवार सिसटाचार करण नै सैबाजषां, म्हैतो विजैमल, गोपाळराव गया।

चैत वद ८ सील रौ नै गुडला रौ मेळो सदामंद मुजब हुवौ नै महाराज कंवारा री असवारी मेळो देषण नै तळेटी रा मैलां पधारीया।

चैत वद १० अजंट साहब री वकीलायत पं० जोरावरमल रै हुई, तागीरायत भंडारी सिरीचंद री।

वद १४ कांणांणा रा ठाकुर रांमसरण[3] हुवां री षबर आई।

वद " (अमावस) श्रीजी साहबां री असवारी कायलांणा सुं बाळसमंद पधारी।

संमत १९१५ रा चैत सुद २ असवारी बाळसमंद सुं आधी रात रा गढ़ दाषल हुई।

---

1. मना कर दिया　2. अन्य व्यक्ति को वकील नियुक्त करें　3. देहान्त

सुद ३ श्री गवरां नै पांणी मांयलेवाग पायौ नै श्री महाराज कंवारां री असवारी मेळो देषण मांयलेवाग पधारी ।

सुद ५ श्री हजूर साहबां री असवारी तांमजांम में विराज श्री मदनमोवनजी रै मिंदर पधारीया सो दरसण कर अद घड़ीक गुसांईजी महाराज कनै विराज नै उठा सु कीटणोद री हवेली में पधार मातमपोसीयां तीन कराई—किलांणपुर रा रावजी री, सलारी, फींच रा ठाकुर री । पछै उठा सु राजमैलां पधार घड़ीक विराज बाळसमंद दाषल हुवा ।

चैत सुद ६ तथा ७ अंगरेज तिरवट साहब सिंध सु आया । सु दरबार सु मुसायबा नै सूरसागर मेलीया नै घास, चारो, मुगधणो, दही, दूध, माषण वगैरे री सरभरा हुई ।

सुद ८ गवरां नै बोलावणी रौ पांणी बाळसमंद पायौ नै मेळा रै पांणी वासते मारग में तीन च्यार जायगा पांणी रा मटका भरीजीया । नै सैर रा गवर ईसर सारा उठै गया तिणां नै ईसर दीठ रू० २) नै गवर दीठ रू० १) दिरीजीया । मेळो चोषो भरीजीयो ।

सुद ९ तिरवट साहब मीरपुर रा पारकर रा दिपटी मजिसटेट नै दूजो फरिजन साहब पलटण रौ सु हमार तलवाड़ा रा मेळा सु अठै आया सु आज श्री हजूर में बाळसमंद आया, साहब लोकां सु घड़ीक बतळावण हुई ।

सुद १० मिजमांनी हुई, सु कोठार सु ज़ीनस मेलीजी नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा नै आतसवाजी चोतरा सु मेलीजी । नै पठांण सैबाजषां नै सिंघवी समरथराज नै श्री हजूर सु मेलीया ।

और सिरकारी कांम दिवांण दफतर वगैरे रौ बाळसमंद हुवै नै असवारी बिजोळाई री तरफ पधारी ।

सुद १५ श्री हजूर साहबां री असवारी रात रा पाछी बाळसमंद पधारी ।

और षबर आई कै रैटर[1] मुथरादास अजंटी में अंगरेजी दफतर ऊपर नौकर थो सु गूलर रौ कोठारी गाडमल नै कयौ कै रू० दस हजार आउवा रा

---

1. लेखक

ठाकुर कनै मंगावो तो हुं ठाकुर री अंगरेजी सिरकार री सफाई कराय देऊं[1] नै अजंट साहब सु मुलाषात कराय देऊं। तरै गाडमल आउवा रा ठाकुर नै लिषी, तरै ठाकुर कनै रू० रोकड़ तो थो नहीं। तरै गैणौ ठाकुरांणीयां रौ तथा घोड़ां रौ हाथी रौ दे नै व्यास उदैभांण नै मु० सुमेरमल नै आवूजी मेलीया। सो डेरो इणां वसिसटजी में[2] कीयौ नै गैणो ले मु० सुमेरमल मुथरादास रै डेरै गयौ। रात आधी रै आसरे मुथरादास गेणो तुलावतो थो तिण बषत जोधपुर रा वकीलां रा आदमीयां साहब नै षबर दिवी, तरै साहब उणी बषत मुथरादास रै डेरे आयो सु आय गैणो सारो तो सिंदुक में घलाय ताळो दिराय दियौ। नै मुथरादास नै सुमेरमल नै हवालायत में बैसांण दिया नै सिंदूक पोरां में धराय दिवी। नै दूजै दिन बड़ी फजर मुथरादास सुमेरमल रा ईजार[3] ले वकील पंचोळी जोरावरमल नै बुलायौ नै हुकम सुणायौ कै रिसपत देणे वाळे कु अर रिसपत लेणे वाळे कु पांच वरस री कैद कानून में लिषी है नै गैणा री हाजरी रौ पांनौ विटी-डवी समेत रौ लिषाय गैणो जोरावरमल नै संभळाय नै हुकम लीषीयो कै आउवे ठाकुर हमारी सिरकार से रूबरू होय, जब ये गैणा ठाकुर कु मिले जितनै राज जोधपुर कै पास इनांमत[4] रेहै। औ हुकम नै गैणा री सिंदूक नै मु० सुमेरमल आउवा रा कांमेती नै पं० जोरावरमल नै सूंप नै कयौ—इनका बंदोबसत हुकम मुजब कर दो। तरै वकील पं० जोरावरमल गैणां री सिंदूक नै मु० सुमेरमल नै जोधपुर पोंचाया सु सुमेरमल नै तो चोतरै भागसी में घालीयो नै गैणा री सिंदूक जवारषांनै इनांमतो धरीजी नै रेटर मुथरादास नै कैद कर आगरे पूगतो कीयो।

संमत १९१५ रा वैसाष वद १ षबर आई कै जैसलमेर, बीकानेर, भीवांणी, दिली कांनी विरषा घणी चोषी हुई।

और वाभा वभूतसिंघजी रा वेटा चैनसिंघजी नै सरूपसिंघजी रै षोळै दीया। सु सरूपसिंघजी री ठकुरांणी सोढीजी नै चैनसिंघजी बीकानेर गया। नै उठै गांव जांगलु पटे हुय गयौ सु वभूतसिंघजी षोळो उथापण[5] री अरजी श्री हजूर में लिष दीवी नै चैनसिंघजी नै अठै बुलाय लिया। तरै बाई रा

1. अंग्रेजी सरकार की तरफ से उन्हें बरी करवा दूं　2. वशिष्ठजी का स्थान　3. बयान
4. अमानत　5. निरस्त करने हेतु

व्याव करण री दवायती[1] मांयलावाग में री हुई। नै वभूतसिंघजी रौ डेरौ कुंज गळीयां वाळी जायगा[2] में हुवौ।

वैसाष वद ५ वाभा वभूतसिंघजी री बाई रा व्याव आज रा सावां सुं जांन उदैपुर सुं आई जिकां रै पेसवाई वासते वभूतसिंघजी, लालसिंघजी हाथीयां चढ नै गया नै लवाजमो सारो सिरकार सुं मेलीजीयो। जांन में आदमी पांचसौ आसरे था।

वद ७ अकवरअली घोड़ां रौ फेरणीयो पंवार सेरकरण अैमदनगर में पकड़ीजीयौ जद बिलायत गयौ थो सु आज पाछौ आयौ। तिण रै सांमा दिवांण, बषसी वगैरे नै मेलीयो सो सयद अकबरअली नै दिवांण, बषसी पाछा बाळसमंद हाजर हुवा। नै अकवरअली नै मुजरो हुवौ, नै सिरपाव कड़ा मोती कंठी मदील दुपटौ वगैरे हुवा नै पातर मोषळी[3] कीनी। नै बिलायत री चीजां लायो सु निजर कीवी।

वैसाष वद १२ उमरावां री आसांमीयां नै बाळसमंद मैल दिलकुसाल रा चौक में मौसर हुवौ—बागावास, कीलांणपुर, कोटड़ी, निबाज, षेजड़लो। घड़ी दोयेक बतळावण हुई।

और वाभा वभूतसिंघजी रा जंवाई.................. नै वभूतसिंघजी मुजरो करायौ जिणनै नै वभूतसिंघजी नु नै उणां रा जंवाई नै सिरपाव हुवा नै दायजा में हाथी १, घोड़ा २ दीया। नै वभूतसिंघजी नै व्याव ऊपर षरची रा रू० १,०००) दिरीजीया।

वद १४ बाळसमंद सुं श्री हजूर साहब राजमैलां रात पौर सवा गयां दाषल हुवा।

सुद ३ आषातीज[4] रौ उछव दसतूर मुजब हुवौ नै दरबार हुवौ नहीं। नै सैर में पांणी री पूरी तकलीफ थी सु तळाव रांणीसर री छूट हुई[5]।

और पटवो परतापमल कैद में थो सु सीष हुय घरै आयौ। हाल रू० ठेरीयां री षुलासे हुई नहीं।

---

1. स्वीकृति 2. भवन 3. पर्याप्त 4. अक्षय तृतिया 5. रानीसर से पानी भरने की जनता को इजाजत दी गई

सुद ५ गायरा मघराजजी री तरफ सु श्री हजूर में गोठ हुई ।

सुद ६ तबेला वाळो नांजर इलाईबषस रा आदमोयां रै नै सईयद अकबरअली रा आदमीयां रै झगड़ौ हुवौ सु नाजर रा आदमीयां रै तरवार लागी ।

सुद ७ वाभा वभूतसिंघजी री तरफ सु श्री हजूर में गोठ हुई ।

और आबूजी सु षबर आई कै अजंट बुरक साहब री बदळी हुई नै भरतपुर में अजंट निषसन साहब थो सो बुरक साहब री अवेज आबूजी परबारो गयौ नै बुरक साहब उठा सु षैरवाड़ा री छांवणी गया, सु वकोल पंचोळी जोरावरमल कनै जाबता सारू घोड़ा मांगीया, सु दीया नहीं ।

वैसाष सुद ११ गांव गांधांणो षिची उमेदकरण रै लिषीजी तागीरात षीची रूघनाथसिंह जालमसिंघोत री ।

और चौपासणी महाराज श्री क्रस्नजिवणजी रै लालजी श्री दांमोदर लालजी री जिनोई री छिकी हाथी रै हौदे विराज नीकळो सु हाथी लवाजमो वगैरे श्री दरबार सु गया ।

सुद १२ नींवाज, षेजड़ला रा ठाकुरां नै घरां री सीष हुई ।

सुद १३ गुसांईजी महाराज रा लालजी री वनोळी श्री हजूर सु गाजां-बाजां सु कढाई[1] नै भेट रू० १००) हुवा ।

वैसाष सुद १५ आज मंडोर ओसवाळां रौ मेळौ चोषो हुवौ ।

संमत १९१५ रा जेठ वद १ गुसांईजी श्रो क्रीस्नजीवणजो महाराज रो पधरावणी माजी श्री चावड़ीजीसा रै नोरै हुई, रू० १५०) भेंट हुवा नै वद ४ पोकरणा विरांमणां रै कलां री गळी में पधरावणी हुई नै भेंट रा रू० ११७) हुवा ।

जेठ वद ५ श्री लालजी री जिनोई चौपासणी में घलीजी[2] नै महाराज रा सेवग हा सु सारा चौपासणी गया ।

---

1. निकाली 2. जनेऊ पहनाई गई

जेठ वद ६ महाराज कंवार श्री जसवंतसिंहजी श्री जोरावरसिंघजी वगैरे हाथीयां असवार होय चौपासणी पधारीया । सु भेंट कर नै पाछा लु बाजती थी[1] सु तुरत ही पधार गया ।

जेठ वद ६ सिव री हाकमी जोसी किसनदास रै हुई, तागीरायत थानवी हरीरांम री ।

वद १३ श्रीजी साहब फसत षुलाई नै जुलाब लीरायो तिण री मुसदी षवास पासवांनां निजर निछरावळ कीवी ।

संमत १९१५ रा जेठ सुद १ रांणावत गंभीरसिंघ रौ डोळ[2] लोही रा कारण[3] सु विगड़ गयो थो सु आज आरांम हुवां री कुसी कीवीं, तिण री षुसी में मुसदी, षवास, पासवानां सारां नै जावण रौ हुकम हुवो सो गया ।

सुद ५ पड़दायत लछरायजी रा लालजी श्री मोतीसिंघजी गढ़ ऊपर रैता सु मांयलाबाग में राजसिंघजी री हवेली इणां नै दिरीजी सु आज कबीलां समेत उठै रैणो सरू कीयो ।

और आबूजी सुं षबर आई कै अजंट साहब अजंटी रा अमला में नै मालांणी रा अमला वाळां नै कयौ कै तुम असतीफा लिष दो नहीं तर तुम कुं सिरकार मोकुब[4] कर देवेगा । तरै सारां ही साहब रा कैणा सु असतीफा लिष दिया ।

जोधपुर रौ दफतर रा मुनसी हमोहुसैन प्रा० १००) फारसी दफतर रौ काजमअली नायब प्रा० ३०), आसोपो सिवदास वासी पीसांगण रौ अंगरेजी दफतर रौ नायब जोसी देईदांन हींदी दफतर में नायब प्रा० ३०) ।

मालांणी रा दफतर रा जीवणरांम नागर गुजराती प्रां० ३०), लोडो पनालाल वासी जोधपुर रो प्रा० २५) नै उणरो छोटो भाई प्रा० ७) ।

ब्यास गौरीदत्त पैली अजंटी में रू० ८०) री तनषा पावतो तिण नै माह रा मास में मोकुब कर दीयो ।

---

1. लू चल रही थी 2. शारीरिक हालत 3. रक्त विकार के कारण 4. बरखास्त

जेठ सुद ८ पठांण सैबाजषां नै दिवांणगी रौ दुपटौ हुवौ नै गांव घोरू पटै हुवौ, तागीरायन म्हैता विजैमल री ।

और षवर आई कै नीबाज रा ठाकुर कांमदार नै पींपाड़ में तसती[1] दीवी तिण सु मरण गयौ ।

सुद १३ श्रीजी साहबां री वरसगांठ रौ उछव राजमैलां सदामंद मुजब हुवौ नै तोपां रा तीर वरस मुजब छूटा ।

संमत १९१५ रा असाढ़ वद १ जैपुर री वकीलायत लाला भगवांनदास दौलतसिंघ रै हुई ।

वद २ बडो साहब आबूजी सु आवै तिण री सरभरा करावण मुदै प्रो० जसकरण नै अठा सु चढायौ ।

वद ५ बगड़ी रा ठाकुर सिवनाथसिंघ बगड़ी में रांमसरण हुवां री षवर आई ।

सुद ३ बडो साहब मेजर फरिडरक ईडन साहब आवै तिणां रै सांमा दिवांण सैबाजषां, म्हैतो विजैमल किलादार देवीसिंघ, मु० मुकनचंद, सिं० कुसलराज रोयठ गया नै साहब रोयठ आया जिण दिन मुसायब रोयठ सु कोस ।।। पूंण तांई सामां गया नै सुद ६ रोयठ डेरां हीज रया नै सुद ७ डेरा मोगड़े हुवा ।

सुद ८ पाछली रात रा श्री हजूर साहब राजमैलां सु असवारी कराई सु असवारी में राज कंवार श्री जसवंतसिंघजी, श्री जोरावरसिंघजी, किसोरसिंघजी साथै सो रातानाडा कनै डेरो षड़ो हुवौ, जठै दाषल हूवा । नै दिन घड़ीक चढीयौ तरै साहब रै आवण री षवर लागी तरै हाथी असवार हुवा नै षवसी में आगेवा रौ ठाकुर बषतावरसिंघ सिवनाथसिंघोत षांप उदावत जगरामोत बैठा नै उठा सु हाथी पांवडा ५० आसरे गयौ नै साहब आय गयौ । तरै हाथ मिलाय मुलाषात हुई । साहब टोपी रै हाथ लगायौ । सु बडो साहब नै तेंलर साहब तो अेक हाथी ऊपर बैठा नै दूजा साहब च्यार था सु दोय हाथीयां

---

1. यातना

ऊपर बैठा। पछै बडा साहब रौ नै श्री हजूर साहब रौ हाथी बरोबर राष वातां करता नै दूजा साहब रा हाथी लारै बैता। पछै सोझतीये दरवाजे हुय तबेला कनै सु श्री हजूर साहब तो राजमैलां पधारीया। बडो साहब वगेरे सिरे वजार होय सूरसागर गया नै मुलाषात हुई, तरै तोपां रा तीर १२ छूटा।

और पाछला दिन रा बडा साहब वगैरे जणा ६ हाथीयां चढ़ श्री हजूर में आया सु मुसाहब दसतूर मुजब सांमा पेसवाई में गया नै श्री हजूर ही दसतूर मुजब सांमा पधारीया। पछै दसतूर मुजब विराजणो हुय मांमूली वातां घड़ी दोय कर नै अंतरपांन हुय साहब सीष कर सूरसागर गया।

असाढ़ सुद ९ श्री हजूर साहबां री असवारी गोळ री घाटी रै मारग होय सूरसागर पधारी। असवारी में महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी श्री जोरावरसिंघजी वगैरे साथै। सो वडो साहब रौ सिकतर रौ दसतूर सांमो गढ़ ऊपर आवण रौ है पण उण दिन नाळा री बारी तांई आयौ। पछै वडो साहब सांमो जोसीयां री बगेची रा बुरज तांई सांमा आया नै उठै मुलाषात दसतूर मुजब हुय घोड़ा बरोबर राष बातां करता सूरसागर दाषल हुवा। घड़ी दोयेक विराजीया नै सदामंद मुजब तोपां रा तीर छूटा। पछै पाछा पोर दिन चढीयां किले दाषल हुवा।

असाढ़ सुद १० साहब लोकां री जाफत गढ़ ऊजर हुई सु दिवांण सैबाजषां वगैरे सुरजपोळ तांई साहब लोकां रै सांमा आया नै श्री हजूर साहब दौलतषांना रा चौक में भेरूजी रा किवाड़[1] तांई सांमा पधारीया नै साहब लोकां षांणो उठै ही षायौ नै नाच-कूद, आतसबाजी वगैरे सरसता मुजब हुवा। पछै श्री चांवंडा माताजी रै मिंदर तांई साहब लोक किलो देषण नै गया सु देष नै सूरसागर गया।

सुद ११ बडा साहब गढ़ ऊपर आया, घड़ी दोयेक इकंत रया।

और कुचांमण रा ठाकुर बडा साहब सु मुलाषात करण नै गया। घड़ी दोयेक सोषीयात बातां कीवी।

---

1. दरवाजा

और दोय साहब लोक दूरबींणां ले धानमंडी में आया सु नषसा घड़ी दोयेक तांई षेंचीया नै पछै पाछा सूरसागर गया ।

असाढ़ सुद १२ बडा साहब रौ कूच हुवौ सु साहब लोग बगी में बैठा था नै वकील, मुनसी, चुनीलाल हाजर थो नहीं । सु कीणी सबब सु श्री मावडीयांजी री घाटी ऊपर बगी उंदी जाय पड़ी[1] सु च्यार साहब लोग बैठा सु पड़ गया। जिण सु बड़ो साहब वकील ऊपर पूरो नाराज हुवौ । पछै साहब लोक तो हाथीयां ऊपर चढ नै रवांनै हुवा नै आ श्री हजूर में मालम हुई तरै सैबाजषां नै पुरो सारो ओळंभो फुरमायौ[2] कै थारी गफलत है नै उणी बषत वकीलायत पटानवेस धनरूप रा भाई भीनालाल नै वकीलायत रौ दुपटौ केसरीया इनायत हुवौ । नै भीनालाल उण ही वषत चढीयो सु गांव काकेळाव साहब रा डेरा जठै सांमल हुवौ नै गांव चोपड़ा रा डेरां साहब सु भीनालाल रै मुलाषात हुई ।

संवत् १९१६ का विवरण

संमत १९१६ रा सांवण वद १ अजंट निकसन साहब सांचोरी तथा थीरपार[3] री तरफ दौरो करण नै गया सु अठै आया तिणां सांमा दिवांण सैबाजषां, म्हैता विजैमल, मु० मुकनचंद वगेरे जालौरी दरवाजा बारै घांचीयां री बेरी तांई गया पछै साथै सूरसागर तांई पोंछाय आया नै तोपां रा तीर ११ छूटा । पछै लारला दिन रा अजंट साहब किले श्री हजूर में आया सो श्री हजूर चवांणां री साळ तांई सांमा पेसवाई में पधारीया । पछै उठा सु पधार फतैमैल में विराजीया । घड़ी दोयेक इकंत बतळावण हुई ।

और रात रा विरषा हुई सो तळावां में महीना १ रौ पांणी आयौ ।

वद ४ श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर पधारी नै अजंट साहब सांमा पेसवाई में दसतूर मुजब आया सु मुलाषात कर सूरसागर पधारीया । घड़ी दोयेक साहब सु बतळावण हुई, पछै अंतरपांन हुय पाछा किले दाषल हुवा ।

वद ५ महापुरस अषेराजपुरी रमतो[4] फतैगढ़ी में रेवे जिण री पधरावणी श्री रांणावतजी सा रै नोरै हुई, रू० ३००) भेंट हुवा । पछै पाछा पालषी में बैसांण लवाजमा सु फतैगढ़ी पोंछाया ।

---

1. बग्गी उल्टी हो गई 2. नाराजगी जाहिर की 3. थारपारकर 4, घूमता-फिरता

श्रौर वद ६ हुकम हुवौ दिवांण दफतर रौ दरोगो वगैरे कांम करो सु सिणगार चौकी कनै तथा सबा मंडप में करो नै षिड़कीया पाग नै जांमा विनां कीणी नै सुरजपोळ में श्रावण देणा नहीं ।

वद ८ श्रजंट साहब श्री हजूर में श्राया, घड़ीक इकंत रया ।

सांवण वद ११ श्रजंट निकसन साहब री गढ़ ऊपर जाफत हुई, सु साहब गढ़ ऊपर श्राया । श्री हजूर साहब षाबका रा विचला बंगला तांई सांमा पधारीया नै षाबका में विराजीया । पछै साहब फतैमैल में जाय षांणो षायौ नै पातरीयां, भगतणीयां रौ दौलतषांना में नाच हुवौ नै घूमरां दिरीजी पछै विचला मैल में श्रीजी साहब विराजोया जठै श्रजंट साहब गया सो श्रंतरपांन होय सीष हुई ।

सां० वद १२ प्रभात सु लगाय दोढ पोर दिन चढीयो जिते मेह वूवो ।

सांवण वद १३ तथा १४ श्रजंट साहब री जाफत कुचांमण रा ठाकुर री हवेली हुई । पेसवाई मुलाषात नाच-कूद वगैरे सदामंद मुजब हुवा । मुसायब सारा हाजर था पछै साहब रात श्राधी रा सूरसागर गया ।

संमत १६१६ रा सांवण सुद २ श्रदालत.................. म्है० प्रतापमल रै हुई ।

सुद ४ श्रजंट साहब सिंघी साहबजादा री हवेली जाफत थी सु गया पाछा रात पौर गयां सूरसागर गया ।

सुद ६ श्रजंट साहब चांतरो तळेटी रा मैल जेळषांनो वगैरे देषण नै गया ।

सुद ८ श्रजंट साहब श्री हजूर में श्राया नै घड़ी दोयेक इकंत रया ।

सुद १० सोम विरपुली[1] रौ मेळो मंडोर रो हुवौ नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी वगेरे कंवर नै श्रजंट साहब मेळो देषण नै गया सु पाछा नीमा सांम रा श्राया ।

---

1. बीरपुरी

सां० सुद १३ पालो री हाकमी म्हेता हरजीवरण रा भाई केवलरांम रै हुई, तागीरायत जोसी हंसराज रा बेटा सिवराज री ।

सुद १५ राषड़ी रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ नै चंद्रग्रण रात घड़ी दोय गयां झिलीयो[1] नै चंद्रमा गै ने आकास वीसवातरै गयौ घड़ी ११ रात गयां सुध हुवौ । नै श्रीजी साहब तुलाव विराजीया[2] सु नाजर हरकरण हसते दिरीजीयौ ।

संमत १९१६ रा भादवा वद ३ मेह चोषो हुवौ ।

भादवा वद ४ अजंट निकसन साहब गढ़ ऊपर आया । घड़ी दोयेक इकंत रया ।

वद ५ नाग पांचम रौ मेळो मंडोर हुवौ सु महाराज कंवार श्री परतापसिंघजी हाथी बैस मेळो देषण गया । लारै षीची उमेदकरण वैठा नै अजंट साहब पिण मेळो देषण नै गया सो पाछा नीमा सांम रा आया ।

वद ६ श्री हजूर साहबां री असवारी जनांना समेत बाळसमंद पधार थोड़ी वार विराज नै छैलवाग पधारीया ।

और इसी सुणी कै वडा साहब री चोठी अजंट साहब रै लेनै[3] आउवा रौ वकील व्यास उदैभांण घोड़ा वीस सुं सूरसागर आय अजंट साहब नै चीठी दे मुलाषात कीवी, तरै अजंट साहब श्री हजूर में कयौ कै आउवा का वकील हमारे पास बडा साहब री चीठी ले नै आया है सो इनकु आउवा की हवेली में डेरा करणे का हुकम दिरावो । जिण ऊपर श्री हजूर साहब फुरमायौ कै तुमारे पास चीठी ले के आया है जिससे हम माफ करते हैं नहीं तर इनकुं सबकुं पकड़ के कैद कर देते । इन जैसा हरांमषोर हमारा नै सिरकार अंगरेजी का कोई दूसरा है नहीं । तरै अजंट साहब उदैभांण नै कयौ—तुमारे वासते श्री महाराज साहब से कया सो मंजूर कीया नहीं[4] सो अब तुम चले जावो । तिण ऊपर उण कही—आप बडा साहब रै नांवै चीठी पाछी लिष दो सु हम बडा साहब के पास जावेंगे ।

---

1. ग्रहण लगा   2. तुला-दान किया   3. एजेन्ट के नाम की चिट्ठी लेकर आये
4. महाराजा ने स्वीकार नहीं किया

भादवा वद ९ श्री हजूर साहबां री असवारी प्रभात रा कायलांणे पंधारीया ।

और आसोप रा ठाकुर री मां षंगारोत डिगी री मेघसिंघ री बेटी किताक दिन डेरो सेषावतजी रै तळाव राषीयौ नै आज श्री सांमजी महाराज रा मिंदर में आय रया । आदमी चाकर बडारणीयां वगैरे तीस तथा चाळीस आसरे है ।

वद १० अजंट साहब कायलांणे सिकार रै मुदै आया सो श्री हजूर साहबां सु मुलाषात करी नै पोळ में नींव रै हेठै बैठा सिकार री वातां हुई । नै पछै श्री हजूर साहब साथै-साथै वाग में पधारीया नै पछै पाछा मैलां में पधार साहब नै सीष हुई, सु सूरसागर गया । नै सूरसागर साहब रै वासतै रसोवड़ा सु जिनस मेलीजी नै पातरीयां भगतणीयां सु नाच-कूद हुवौ नै आतसवाजी मेलीजी सु छूटी ।

वद १३ कायलांणे फेर अजंट साहब री जाफत हुई नाच-कूद हुवौ ।

भादवा वद १४ अजंट साहब मालाणी री तरफ चढीयो सु मालांणी सांचोर री तरफ जावसी ।

वद " (अमावस; जैपुर सु पलीवाळ सिवनारांयण आयो तिण रो डेरो सोभतीया दरवाजा वारै हुवौ ।

संमत १९१६ रा भादवा सुद ४ श्री गणेसजी रौ मेळो हुवौ नै पलीवाळ सिवनारांयण नै मांचीया भाखर ऊपर मुजरो हुवौ ।

सुद ५ महारांणीजी श्री रांणावतजी साहबां री तरफ सु पलीवाळ सिवनारांयण नै मिजमांनी हुई ।

सुद ६ सिवनारांयण किलो देषण नै आयौ सु मैल सारा देषाया ।

सुद १० बारली वीदीयासाळ जनांना समेत असवारी पधारी नै पाषती श्री रामदेवजी रो मिंदर है जिण रा दरसण कीया नै रांणीजी श्री चावड़ीजी रै बोलवा थो[1] जिण मुजब पुजापो परसाद चढायो । आषो दिन जावतामें विराजीया नै पछै नीमा सांम रा बाळसमंद मैलां दाषल हुवा ।

---

1. प्रसाद वगेरा बोली हुई थी

सुद ११ श्री ठाकुरजी री रैवाड़ीयां जुलण नै तळाव गुलाबसागर पधारी नै महाराज कंवार सारा मेळो देषण नै घोड़ां चढ नै पधारीया ।

और गुलाबसागर में पांणी पोळीयां सु पावड़ीयां[1] ७ नीचे थो ।

सुद १४ श्री हजूर री असवारी छैलवाग पधारी सो दिन दोय विराजीया ।

संमत १९१६ रा आसोज वद २ छैलवाग सु कायलांणे पधार सुरजवेरे पधारीया ।

आसोज वद ३ श्रीजी साहबां री असवारी सुरजवेरा सु छैलवाग पधारीया । नै वद ४ छैलवाग सु गांव चांवंडा पधारीया । माताजी रा दरसण कर भेंट निछरावळ कीवी नै वद ५ उठा सु गांव गुडे पधारीया ।

वद ८ लगायत वद १३ तांई गुडा रा तळाव ऊपर विराजीया । दिवांण मुसदी वगैरे हाजर हुवा । नै वद १४ गांव मोगड़ा में रांणीजी श्री जाड़ेचीजी री तरफ सु गोठ हुई सु उठै पधार गोठ जीम पाछा गुड़े डेरां दाषल हुवा ।

वद " (अमावस) सोमोती[2] सु दिवांण कांमेती वगैरे नै तो सैर री सीष हुई नै श्रीजी साहब लूंणी नदी री तरफ सिकार पधारीया । लूंणी नदी माथा छेक आई ।[3]

संमत १९१६ रा आसोज सुद ३ श्री हजूर री असवारी झालामंड पधारी सु उठै गोठ हुई । षांड मण ५०) गळी । सैर सु दिवांण, मुसदी, पातरीयां, भगतणीयां वगैरे गया, बड़ी कुसी हुई ।

आसोज सुद ५ मुकांम गांव जालामंड रांणावत गंभीरसिंघ रोडसिंघोत नै निवाजस इण मुजब हुई—

हाथी १, पालषी १, कड़ा १, मोती १, मोतीयां री कंठी १, सिरपेच १, मंदील १, पारचो १, दुपटौ १ नै गांव सेवाड़ी, गोढवाड रौ पैदास ५,०००) रौ लिषीजीयो नै कांमेतीयां भायां वगैरे नै सिरपाव १४ हुवा । कड़ा, मोती, दुसाला, वगैरे दिन ४ झालामंड विराजीया ।

---

1. सीढियें 2. सोमवती अमावश्य 3. नदी का बहाव सिर की ऊंचाई तक बहा

सुद ६ असवारी झालामंड सु रातेनाडे दाषल हुई। उणां दिन रातेनाडे विराजीया।

आसोज सुद ७ फेर रातेनाडे मुकांम रया नै पाछली रात रा गढ़ दाषल हुवा।

सुद ९ अजंट निकसन गांव भवतड़ा कांनी दौरो कर आज आया सु सूरसागर दाषल हुवा।

सुद १० विजैदसमी रौ उछव सदासंद मुजब हुवौ नै श्री रामचंद्रजी री असवारी रांवण मारण नै गढ़ ऊपर सु लवाजमा सु सदामंद हुई। पछै श्री हजूर साहब री असवारी पासे विराज लवाजमा सु फतैपोळ रै मारग पधारीया सु फतैपोळ रै बारणै[1] श्री जाड़ेचीजी रा कांमदार निजर मोर १) (तोला) रू० ४) कीया पछै नवचोकीयां में हुय नायां रा वड़ला तांई पधारीया। उठै सूरसागर सु अजंट साहब आया सो हाथीयां रा तांगा में विराजीया। अजंट साहब ही भेळा बैठा नै फेर इतरा जणां नै हुकम तांगा में बैठण रो हुवौ। कुचांमण ठाकुर केसरीसिंघजी नीवाज रा ठाकुर रै काको वषतावरसिंघ आगे वाळो धांधल पीरदांन, षीची उमेदकरण नै पोसाष वाळो दरजी बैठा। सो आडे चोटै होय जाळोरी दरवाजा बारै पधारीया। महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी, श्री जसवन्तसिंघजी अर वाभा मोतीसिंघजी वगैरे घोड़ां चढ़ीया असवारी में साथै था सु रांवण मारीयां पछै बाहीवाळ रौ दसतूर कर पाछा तांगे विराजीया नै महाराज कंवार ही तांगा में भेळा बैठा[2] सु आतसवाजी छूटतां नै बजार छिड़कायौ[3] सु रात घड़ी च्यार गयां किले दाषल हुवा, नै तोपां रा तीर १०५ छूटा।

सुद १४ अजंट साहब किले आयौ। घड़ी दोयेक रेहे नै सूरसागर पाछो गयौ।

आसोज सुद १५ सरद रौ उछव[4] श्री चांवंडा माताजो कांनी[5] रा पड़कोटा में हुवौ।

---

1. दरवाजे पर 2. साथ बैठे 3. बाजार की सड़कों पर पानी छिड़का गया
4. शरद पूर्णिमा का उत्सव 5. चामुण्डा के मन्दिर की ओर

संमत १९१६ रा काती वद १ सुणी कै किसनगढ़ रा महाराज श्री प्रतापसिंघजी री पड़दायत रा बेटा जोरावरसिंघजी महाराणा श्री भीवसिंघजी री पड़दायत री वेटी परणीया जिणरा बेटा मोतीसिंघजी जिणां रै पटै किसनगढ़ रौ गांव बुवाड़ो जठै था तिणा नुं वचन दे बुलाय, कैद कर दीया। नै ताव तकरार कर मोतीसिंघजी रा आदमीयां रै नांवे रूको लीषाय लीयौ कै आंपणे अठै माल चीज वसत है सो सारो सिरकार रौ है सु सिरकार रा आदमी आवै जिणां नु संभळाय दीजो। इण तरै रौ रूकौ ले नै सिरकार रा भला आदमी बुवाडे गया तिणां नै रूकौ वाच नै किसनगढ़ सुं भला आदमी गया तिणां नै कैद कर दीया। नै कयौ—मोतीसिंघजी नै राजाजी छोड़सी तरै म्हैं थांनै छोड़सां। अै समाचार पाछा किसनगढ़ आया तरै राजाजी फौज री तयारी करी जद मोतीसिंघजी रा आदमीयां षेड भेळी कीवी। जिण में गूलर ठाकुर वगैरे सांमल हुवा नै किसनगढ़ रा दोय गांव षालसा रा मारीया जिण ऊपर किसनगढ़ रा महाराज रौ श्री हजूर रै नांवे षलीती आयौ तिण में लिषीयो कै आप मालक हैं सो मदत रौ हुकम कांमेतीयां नै फुरमावे। तिण ऊपर श्रीजी साहब हुकम परबतसर मारोठ रा हाकमां नै नै उणीं परगना रा सिरदारां नै हुवौ कै किसनगढ़ वाळा बुलावे जिण बषत सांवठा घोड़ा आदमी ले जाय बंदोबसत कराय दीजो। लाला ईसरीप्रसाद नुं पिण फौज में हुकम पांथो कै किसनगढ़ रै गांव बुवाड़े फौज ले तुरत जावजो[1]।

काती वद ७ श्रीजी साहबां कनै अजंट साहब आया नै गीजगढ़ रा ठाकुर जुंजारसिंघ भारथसिंघोत पोकरण सुं अठै आया तिण नै मुजरो हुवौ। नै बैसण वगैरे रौ कुरब सरसता मुजब हुवौ नै निवाजस हुई।

और जांमनगर रा जाडेचा सांवठा जांमनगर सुं आयां नै घणा दिन हुवा जिणां नै सीष हुई, नै सिरपाव हुवा। नै श्री जाड़ेचीजी सा रै सोभ्रत रौ गांव मांढो पटै लिषीजीयो।

और जैसलमेर सेठ जोरावरमल रौ पोतो इंदरमल सिं० समरथराज री भतीजी परणीजण नै उदैपुर सुं आयौ। सु उण री षुद री हवेली में उतरीयौ जिण नै निवाजस—कड़ा १, मोती १, मोतीयां री कंठी १, पालषी १ इनायत हुई।

---

1. तुरन्त जाना

और अजंट साहब री मिजमांनी कुचांमण री हवेली में सदामंद मुजब हुई।

काती वद ८ अजंट साहब री मिजमांनी श्री रांणावतजीसा रै नोरै हुई। नै मुसदी नै नाजर हरकरण नै जनांना कांमदार वगैरे सारा गया।

काती वद ९ अजंट साहब री जाफत रांणावत गंभीरसिंघ री हवेली हुई। सारो कांम दसतूर मुजब हुवौ।

काती वद १० अजंट साहब री जाफत सोभावत उमेदकरण री हवेली हुई। नै गीजगढ़ रा ठाकुर री मिजमांनी मेता विजैमल री हवेली हुई।

वद १२ गीजगढ़ रा ठाकुर री जाफत श्री रांणावतजीसा रै नोरै हुई।

वद १३ तथा १४ पटानवेस धनरूप रै वीमारी[1] जादा तिण सु भीनालाल नै बुलावण री अरज कराई। तरै भीनालाल नै हुकम लिषीजीयो कै बडा साहब सु सीष कर सिताब[2] आवजै।

काती वद " (अमावस) दीपमाळका रौ उछव दसतूर मुजब हुवौ नै अजंट साहब गढ़ ऊपर आया। आतसबाजी नै दोय सोर रा हाथी छूटा। रात पौर दोढ़ गई जिते आतसवाजी रौ हगांम रयौ। उण अरसा में आसोप ठाकुर कैद में था सु नीसर गया[3]। सो नीकळ नै अठा सु पादरा झालामंड गया नै उठा सु रवांनै हुवा। सु पादरा रायपुर हुय मेवाड़ में मेड़तीयां रौ ठीकांणो बदनोर जठै गया। सु उठै चौड़े हुवा[4] नै साथै कूंपावत जुंझारसिंघ नै मोरटीमदो नीकळीया सो इसी जांणी जाय पोरायतां री साझस[5] सु नीकळीया। पछै आतसबाजी छूट चुकां पछै षबर नीसरीयां री पड़ी। तरै किलो सारो सोदीयो[6]। सैर में रांणावत गंभीरसिंघ वगैरे री हवेलीयां सोदी सु पतो लागो नहीं नै लारै कांमदार साह जीतमल नै सांषलो सुरजमल वगैरे आदमी पनरै सोळै हा जिणां ऊपर तकरार मोषळी हुई। पिण उणां कही—म्हां सु तकरार कीहुं करावो राज रौ पोरो है[7], सु पोरायतां नै पुछावौ।

---

1. बीमारी 2. शीघ्र 3. कैद से निकल गया 4. प्रकट हुए 5. साजिश
6. ढूंढा 7. राज्य का पहरा लगा हुआ था

संमत १६१६ रा काती सुद १ आसोप ठाकुरां री मां रौ डेरो ठाकुरजी श्री स्यांमजी रा मींदर में हौ जठै नाजर नै दोढीदार तलासी लेण नै गया। सु उठै ही पतो लागो नहीं नै नगारषांना री बुरज रा पींपळ रै रेजा[1] पांच सात बंदीयोड़ा था सु लोकां कही—अठो नै उतरीया[2]।

सुद २ अजंट साहब पंचायत अजमेरा रा फैसला मुदे अजमेर चढ़ीया।

और अजंट साहब लारै श्री हजूर सुं इतरा जणां नूं चढ़ण रौ हुकम हुवौ—कुचांमण रा ठाकुर केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत, नै आगेवा रा ठाकुर बषतावरसिंघ सिवनाथसिंघोत नै मु० समरथमल लिषमीचंदोत। नै साहब चढीया तरै तोपां रा तीर ११ छूटा।

काती सुद ५ गीजगढ़ रा ठाकुर गढ़ ऊपर आया मौसर हुवौ। आसो षासो पायौ नै मैल सारा दिषाया नै जैपुर चढ़ण री सीष कीवी।

सुद ६ प्रथम रांणावत गंभीरसिंघ रोडसिंघोत घणा दिन सुं वेमार था सो आज अठै हवेली में हा सो रांमसरण हुवा, जिणां नै दाग कागे हुवौ। नै झालामंड षबर लागी तरै उठा सुं ठकुरांणीयां दोय—जोधीजी अेमदनगर में परणीजीया तिके नै करणोत गांव जवर री तिणां लारै सत कीयौ सु उठा सुं रथ में बैस नै आई। सो सैर बारै बारै होय कागे आई। सु आगे आदो दाग हुय चुको तरै नवो सड़ो[3] बणाय नै बळी[4]।

काती सुद ६ दुतीक मंमोई सुं षबर आई कै श्री दुवारका में काबां री बड़ी जबराई है नै राज बड़ौदा वाळां रौ है सो काबां रै नै बड़ौदा वाळां रै षंच गई[5]। सो बड़ौदा वाला अंगरेजी सिरकार में दरषासत दे काबां नै सभा देण मुदे गोरां री पलटण नै तोपषांनो बुलायो सो काबा मींदरां में बड़ सम गया[6] सो तोपां लगाय गोरां मींदर पाड़ नाषीया[7]। नै पुरी सारी लुट लीवी नै मींदरां में अड़बां[8] रूपीयां री दौलत थी सु सारी ले गया। ईसो जुलम आज तांई हुवौ नहीं जीसो हुवौ।

---

1. मोटा हाथ का बना कपड़ा 2. इस ओर से आसोप ठाकुर किले से नीचे उतरा 3. अर्थी 4. सती हुई 5. आपस में तनाव पैदा हो गया 6. मन्दिरों में घुस कर लड़ने को सन्नद्ध हो गये 7. अंग्रेजों ने वे मन्दिर गिरा दिये 8. अरबों

सुद १० पटानवेस पं० भीनालाल वकीलायत छोडण री अरज कराय दीवी ।

और रांणावत गंभीरसिंघ रोडसिंघोत रो औसर राज सु हुवौ । सु षांड मण २५०) गळो नै जोसी परभुलाल सिवनारांयण हसते हुवौ ।

संमत १९१६ रा मिगसर वद ४ वडो साहब री वकीलायत पंचोळी जोरावरमल रै हुई । नै अजंट साहब री वकीलायत षीची उमेदकरण रै हुई ।

और लाठ साहब लारड केनींग आगरे आवण री नै दरबार करण री षबर आई तिण मुदे पोकरण ठाकुर वभूतसिंघजी नै आवण मुदे षास रूको लिषीजीयो ।

मिगसर वद ५ असवारी जनांना संमेत चोकेळाव पधारी ।

वद १० श्री हजूर साहबां रौ व्याव डोळां रौ ठेरीयो सु नाजर सालगरांम विकमकोर री भटीयांणी नै, सिदुरी भटीयांणी नै पालषी में बेसांण सिरे बजार होय चोकेळाव में लाया नै वद ११ नै चोकेळाव में व्याव हुवौ नै पोळ रै तोरण बंदीजीयो नै मुसायब सारा चांकेळाव री पोळ रै बारणे विछायत कराय नै बैठा । नै ब्याव हुवां पछै तोपां री सिलकां १०५ हुई ।

मिगसर वद १४ श्री हजूर री असवारी नवा ब्याव किया तिणां नै साथै ले कायलांणे पधारीया । पछै कायलांणा सु बाड़ीये पधारीया । नै बाड़ीया सु सुद ११ बाळसमंद दाषल हुवा । नै दिवांण वगैरे नै हुकम दीयौ कै राज रो कांम सारो अठै करौ ।

और षबर आई कै लाठ साहब मिगसर वद···· में आगरे आया तिणां साथै हाथी पांच सौ भारवरदारी[1] रा नै घोड़ा १००० रसाला रा नै ऊंट ५,०००, भारवरदारी तथा गोरां रै चढण रा । और साहब लोक गोरा ७०० आसरे, नै इतरा राजा मुलाषात करण नै आया ।

गवालेर रा महाराज सींधीया राव जीयाजी तिणां रै पेसवाई में लाठ साहब रा सिकतर दोय पांवडां ७०० सांमा गया । पछै डेरां में आया तरै लाठ साहब ताजीम में सिरे बैठाया । नै संमत १९०० री साल में धांसी

---

1. भार ढ़ोने वाले

रौ परगनौ नै बारै मेल मेवाड़ रा अंगरेजां गवालेर वाळां कनै लेलीया हा सु लाष तीन रौ प्रगनो पाछो दियौ नै सीलकां २१ छूटी नै जैपुर रा राजा रांमसिंघजी नै गवालेर वाळां रै हेटे बैठाया नै प्रगनो १ लाष रूपीयां रो कोट कासम रौ दीयो नै सिलकां १९ छूटी नै अलवर रा राजा सिवदांनसिंघजी नु सरसता मुजब कुरब कायदो हुवौ नै अलवर वाळां रै सिलांमी री तोपां री सिलकां १५ हुई।

टुंक रौ नवाब नै प्रगनो नींबाड़ो उदैपुर रो थो हुलकर मलार रा राव[1] लीयो थो सुं नबाव मीरषां नै हुलकर जसुंतराय दीयौ थो सु चवदा रा गदर में मीमच रा अजंट सोर साहब नै पूछ नै महारांणाजी सरूपसिंघजी म्हैता अजीतसिंघ नै मेल अमल कर लीयो थो। सु लाठ साहब पाछो नबाब नै रांणाजी कना सुं छुड़ाय नै दिरायौ नै जैपुर रा महाराज रै निचे बैठाया। तोपां री सिलकां .... हुवा।

अौर धौलपुर रो रांणो........................ मुलाषात करण नै आयौ नै कुरब कायदो सरसता मुजब हुवौ नै तोपां रा तीर .... छूटा।

नै करौली रा महाराज मदनपालजी आया तिणां री मुलाषात सरसता मूजब हुई नै तोपां रा तार .... छूटा।

अौर इसी सुणी कै आउवा रौ वकील व्यास उदैभांण अजंट निकसन साहब कनै आयो थौ जिण नै मालांणी कांनी अजंट साहब गयौ तरै बडा साहब रै नांवे चीठी लीष दीवी कै हमने महाराज साहब नै कया सो मंजूर कीया नहीं। सो वा चीठी ले नै बडा साहब कनै आगरे गयौ नै वडा साहब सुं मुलाषात कीवी। तरै वड़े साहब कयौ कै तुमारा ठाकुर यां आया होय तो हम कोरट कर[2] सफाई कर देवें। तरै वकील कयौ—ठाकुर तो आया नहीं। तरै साहब कयौ—जलदी बुलावो। तरै इण कयौ—ठाकुर कठै है? तिण री मनै षबर नहीं। सिरकार रा कोफ[3] सुं अेक जगा रै सके नहीं। तरै साहब कयौ कै तीन बात में तुमारा ठाकुर नहीं है तो हम उसी बषत ठाकुर कुं बरी कर देंगे—अेक तो अजंट साहब नै हाथ सुं मारणा नै दूसरा हुकम दे मराणा अर तीसरा मराणे की सला करणी। ये तीन बात में नहीं है तो ठाकुर तुमारा बरी हो जायगा।

---

1. मल्हार राव होल्कर 2. कानूनी कार्यवाही कर 3. खौफ

अर ये ईसतीयार ले जावो सु ठाकुर कुं बंचाय देवो[1]। अर हम यां से कितेक अरसा रै बाद[2] उदैपुर आवेंगे सो वां ठाकुर कुं लीयाणा[3]। ईऊं कै नै वकील नै सीष दीवी। और इणी तरै जिता गदर रा षूनी था जिणां नै सारां नै षून माफ रा इसतीयार जारी कर दीया।

संमत १९१६ रा पोस वद १ तथा २ बाळसमंद में षुसी हुई, सो मुसदी षवास पासवांन सारा हाजर था नै कलावंत नै पातरीयां भगतणीयां हाजर थी तिणां रौ गावणो हुवौ नै सीदुरा नै विकुंकोर रा भाटीयां नै गाळीयां गवाई।

वद ३ असवारी मंडोर पधारी नै मंडोर सुं वद ४ छैलवाग पधारी नै छैलवाग सुं वद ५ रांमदांन रै वाड़ीये पधारी नै उठा सुं वद ६ विजोळाई पधारी नै उठा सुं वद ७ कायलांणे पधारी।

और सिं० सिवराज, छगनराज, नै म्हैता छतरमल नै असटपोर[4] असवारी में हाजर रैण रो हुकम हुवौ सु हाजर हुवा।

वद ८ असवारी बाळसमंद दाषल हुवा।

पोस वद १० श्री हजूर बाळसमंद सु बगी में विराज नै दोय जायगा मातमपोसी करावण नै पधारीया। रांणावत गंभीरसिंघ री हवेली नै सिं० गंभीरमल री हवेली, सुं गंभीरमल नै चलीयां नै तो घणा दिन हुवा नै गंभीरमल रा बेटा हमीरमल रै षोळै गंभीरमल रौ भतीजो सिं० राजमल रा बेटा सिरेमल नै षोळै ले लीयो तिण रा नै आगे पोकरण री हवेली सरणे बैठां रूपीया ठेरीया सु नै हमार रा सारा रू० ४०,०००) ठेरीया[5]। तिण मांयला रूपया ५,०००) हमार असवारी पधारी तरै निजर कीया।

पोस वद १२ असवारी छैलवाग दाषल हुई नै उठा सुं रांमदांन रै वाड़ीये पधारीया नै उठा सुं वद " (अमावस) कायलांणे दाषल हुवा।

संमत १९१६ रा पोस सुद १ अंगरेजां रौ बडो दिन अंगरेजी महीनो दिसंबर री तारीष २५ री रौ है सु आज अंगरेज लोकां षुसी कीवी। नै आज दिवांण वगैरे नै हुकम हुवौ कै राज रौ कांम सिं० अषैराज रै तळाव करो, सु कांम उठै सरू हुवौ।

---

1. ठाकुर को पढ़वा देना 2. थोड़े समय बाद 3. ले आना 4. अष्ट प्रहर, हरदम
5. देने तय हुए

पोस सुद ५ कायलांणे मुसायबां नै मौसर हुवौ । नै रांणावत गंभीरसिंघ रा बेटा जोरावरसिंघ नै तालकदारां समेत मुजरो हुय निजर निछरावळ हुई । नै जोरावरसिंघ नै कुरब गंभीरसिंघ सरसते सारो इनायत हुवौ ।

सुद ७ प्रभात रा धूर घणी आई[1], सु सूरज दोय तीन घड़ी दिन चढीयां दिसीयो । पोस सुद ६ असवारी विजोळाई पधारी ।

सुद १४ असवारी बाळसमंद दाषल हुवा

संमत १६१६ रा माह वद १ सिरोई रा रांणीजी श्री देवड़ीजी रा भाई रौ व्याव । जिणां रै लवाजमा रै वासते हाथी २ रूपा रा हौदा रा, नै घोड़ा १ सोना री सागत रौ, नै फरासषांना सु डेरा विछायत मेलीजीया ।

वद ३ कायलांणा रा भाषरा में वघेरो १ श्रीजी साहब सिकार कर नै मारीयो ।

वद ४ असवारी छैलवाग दाषल हुई ।

वद ८ असवारी किले दाषल हुई ।

और अजंट साहब मीम रै सांमा[2] मंमोई तांई[3] गया था सो आज अठै आया तिणां रै सांमा मुसायब दसतूर मुजब गया ।

माह वद १० श्रीजी दुवार सु गदर आयौ । सु आज बंदीजीयौ[4] नै भेंट रू० १००) हुवा ।

माह वद १३ अलवर सु चेलो सिवलाल लिछमण आया तिणां रै पेटीया कोठार सु दिरीजीया ।

वद १४ रळीयावता रा राजा दुरजणसालजी जसवंतसिंघजी रा बेटा आया, तिणां रौ डेरौ चंडावळ री हवेली में दिरायौ । नै कोठार सु पेटीया सरू हुवा ।

माह वद " (अमावस) फरासषांना री दरोगाई म्हैता छतरमल रै हुई ।

---

1. कोहरा छा गया 2. मेम के स्वागतार्थ 3. बम्बई तक 4. वन्दना की गई

संमत १९१६ रा माह सुद २ अलवर सु ं चेलो सिवालाल लिछमण आया जिणां तासळी री जिनस फूलमैल में तयार कीवी, सु श्री हजूर में पधरीजी[1] ।

सुद ८ अजंट साहब मीम नै ले नै आया । नै सुद १० गढ़ ऊपर अजंट साहब आया सु पेसवाई चवांणां री साळ तांई सरसता मुजब हुई ।

सुद १५ वाभा श्री मोतीसिंघजी री बहू रै टाबर आवणू[2] सो अगरणी रौ उछव दसतूर मुजब हुवौ ।

और श्री हजूर साहब सूरसागर पधारीया सु अजंट साहब जोसीयां री बगेची रा भुरज तांई सांमा[3] पेसवाई में आया । सु उठै मुलाषात हुय सूरसागर पधारी । सु घड़ीक विराज सोषीयात वातां कर पाछा किले दाषल हुवा ।

संमत १९१६ रा फागण वद २ अजंट साहब गढ़ ऊपर आया अर थीरपारकर[4] कांनी जावण री सीष मांगी ।

वद ५ पटवा बैजनाथ नै टाबर जंवायां समेत[5] अटकायौ नै उण रै घरै व्याव थो सु मुलतबी[6] रयौ । नै ईण में ईसी जांणी जाय है कै प्रो० राधाकीसन रै नै इण रै सीर[7] हो जिण रा फैसला मुदे अटकायौ ।

वद ७ पादरी साहब सूरसागर आय उतरीयो सो म्हैता छतरमल नै पठाण अमीरषां सैबाजषां रा भतीजा नै मुलाषात रै मुद्दे मेलीया नै वद ८ नै पादरी साहब कवायौ कै पींडत नै कवी लोक होय जिसकु ं हमारे पास चरचा करणे कु ं भेजो । तरै जोसी प्रभुलाल नै कवराज भारतदांन नै सूरसागर मेलीया ।

वद ९ पादरी साहब गढ़ ऊपर आयौ सु षावगा रा मैल में विछायत हुई जठै श्री हजूर सु ं जोवणी बाजू गालीचा ऊपर बैठो नै तसवीरां १५ नै कीताबां ९ श्री हजूर में निजर कीवी सु किताबां तो पुसतक प्रकास में सू ंपीजी नै तसवीरां ढोलीया रै कोठार सू ंपीजी ।

---

1. परोसी गई 2. बच्चा पैदा होने को 3. सामने 4. थारपारकर 5. परिवार तथा जामाता सहित 6. स्थगित 7. साझा

फागण वद १२ अजंट नीकसन साहब गढ़ ऊपर आया सु वद २ नै थीरपार कांनो गया था सु ठेट तो गया नहीं नै जसोल सु पाछा आया। सु प्रबारा आया नै पछै सूरसागर गया।

फागण सुद १२ गढ़ ऊपर फाग हुवौ सु घड़ी च्यारेक रमीया।

सुद १३ रात रा दौलतषांना रा चौक में डंडीया री गैर हुई सु महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी श्री परतापसिंघजी डंडीया रमीया नै किताक मुतसदी, षवास, पासवांन सारा हाजर था नै सेठ इंदरमल जोरावरमल रो पोतो हाजर थो सु सारा डंडीया रमीया।

सुद १५ दौलतषांना रा चौक में रंग रा पांणी रौ फाग हुवौ सु पोर १ तांई रयौ, पछै बोड़ीयो नै महाराज कंवार नै मुसदी, षवास, पासवांन हाजर था, सु रमीया।

संमत १९१६ रा चैत वद १ लालजी श्री मोतीसिंघजी रै आज कंवर हुवौ।

वद २ गायण मघराजजी री बाई सुरजकंवर री सगाई जैपुर महाराज प्रतापसिंघजी री पड़दायत रा कंवर कांनदासजी री ठुकरांणी सोढी जिण रा कंवर मैताबसिंघजी जिण सु ठेरी। तिण रौ टीको ले नै अठा सु आसोपा व्यास भांनोरांम गयौ तिण नै पालषी इनायत हुई। नै टीका में हाथी १, घोड़ा सरसता मुजब गया।

वद ४ अजंट साहब परबात रा श्री हजूर में आया, सीष कर मीम समेत आबूजी नै चढ़ीया।

चैत वद ६ तथा ७ फेर दौलतषांना रा चौक में मरदांनो फाग हुवौ।

चैत वद ८ सील रौ नै गुडला रौ मेळो सदामंद मुजब हुवौ। नै श्री महाराज कंवारां री असवारी मेळो देषण नै तळेटी रा मैलां में पधारी।

चैत वद ९ गोढवाड़ री हाकमी नै आउवो षास थांणा समेत सिंघवी सिवराज रै हुवा।

---

1. लड़का पैदा हुआ

वद १२ असवारी तळाब रांणीसर पधारी नै अजंट साहब रौ अमलो दफतर समेत आबूजी नै रवांनै हुवौ। नै अन रा कोठार री दरोगाई कवराज वागा रै हुई।

वद १३ श्रीजी साहबां री असवारी रांणीसर सु ं छैलवाग दाषल हुई।

वद १४ असवारी उठा सु ं कायलांणे पधारी।

संमत १९१६ रा चेत सुद २ सिंघवी सिवराज नै आउवा कांनी जाबता सारू ं चढण रौ फुरमायौ।

सुद ३ श्री गवरां पांणी पीवण नै गुलाबसागर पधारी। लवाजमो जलूस सदामंद मुजब था।

सुद ५ सुणी कै बारोठीया, आसोप, लांबीयां, बांतो, भींवाळीयो, मांढो, षुटलीयां, वाळा वगैरे सोभ्रत रौ गांव मुवालीयो नाजर हरकरण रै पटै थो सु लू ंट लीयौ नै बिगाड़ मोषळो कीयो[1]। तरै श्री हजूर सु ं जाळोर मु० पूनमचंद नै हुकम पूगो कै आउवे आय बारोठीयां रौ बंदोबसत करो।

और गउषांना री दरोगाई तु ंवर सांवतसिंघ हणूतसिंघोत रा रै हुई नै व्यास री बावड़ी सदावरत रौ षीचड़ौ हुवै, जिण री दरोगाई भाट कवराज वागा रै हुई। तागीरायत थांनवी हरदेव री। नै श्रीजी साहबां री असवारी जनांना समेत कायलांणा सु ं विजोळाई पधारीया।

चैत सुद ७ असवारी विजोळाई सु ं कायलांणे दाषल हुई नै परबतसर मारोठ री हाकमीयां जोसी प्रभुलाल रै नै गांव आलणीयावास, गूलर, बाजूवास हुवा। तागीरायत हाकमीयां तो सिं० कुसलराज री नै गांव मु० मुकनचंद रा।

सुद ८ श्री गवरां री बोलावणी रो मेळो सदामंद मुजब मांयलेवाग हुवौ नै श्री महाराज कंवार सारा मेळो देषण नै पधारीया नै सिंघवी सिवराज आउवा कांनी चढीयो।

सुद ९ असवारी महाराज कंवारां समेत बाळसमंद पधारीया।

---

1. बहुत नुक्सान किया

सुद १० महाराज कंवार श्री बादरसिंघजी श्री जाड़ेचीजी रा ठाकुरजी श्री बालक्रस्नजी रै मींदर पधार नै श्री बहूजी महाराज कनै नांव सुणीया[1]।

सुद १२ सुणी कै गोढवाड़ रौ गांव जीवंद किलादार रै पटै थो सु बारोठीयां लूटीयो नै झगड़ौ हूवौ नै आदमी घायल हुवा नै कोटड़ी मांय सुं घोड़ा वगैरे था सु ले गया।

चैत सुद १५ असवारी बाळसमंद विराजे।

संमत १९१६ रा वैसाष वद २ कोटा सुं मुथरालाल आयो सो महारानजी कोटा सुं श्रीजी दुवारका पाळा पधारीया[2] सु जात्रा कर पाछा कोटे दाषल हुवा। तिण रौ प्रसाद नै केसरीया छोटो जाडीयो[3] प्रसादी नै रूपा री गुलावदांनी में चरणाम्रत नै षलीतो लाया सु नाजर हरकरण साथै मांय मेलीया।

संमत १९१६ रा वैसाष वद ५ कागे सीळमाता री जात श्री लाडी रांणावतजी रा छोटा कंवरजी री देण मुदे श्री हजूर जनांना समेत पधारीया नै व्यास प्रोहीत वगैरे गया।

और बारोठीया गांव बिगाड़े नै रूपीया पिण ठेरावे। नै सारण रौ थांणो षाटू रा भींवसिंघ रौ चाकर रामबगसीयो काढ नै घोड़ा १० प्रदेसीयां रा था सु ले गयौ।

वैसाष वद ७ सुणी आउवा रा पटा रा गांवां में नैं रूपनगर रा पटा रा गांवां में हवालदार था जिणां नै षौस[4] लीया नै किताकां नै पकड़ मगरा में ले गया।

वद ७ जैसलमेर रौ संघ[5] श्री रिषभदेवजी जावतो जिण नै बारोठीयां षोस लीयौ नै बंद दोय पकड़ ले गया।

और म्हैतो संकरलाल दफतर रौ दरोगो महीना दोय री सीष ले नै परणीजण नुं देस नै गयौ।

---

1. गुरु-मंत्र ग्रहण किया　2. द्वारिका तक पैदल गये　3. दाढ़ी पर बांधने की पट्टी
4. लूट　5. जैन तीर्थ-यात्री

वद १३ प्रथम महाराज कंवार श्री परतापसिंघजी रो ब्याव हुसी सु आज वांनं घालीया[1] नै बनोळा सरू हुवा। नै श्री हजूर साहब री असवारी रात रा गढ़ दाषल हुई।

संमत १९१६ रा वैसाष सुद १ गोढवाड़ रौ गांव नारळाई श्री लाडी तुंवरजी रै पटै सो बारोठीयां लूट लीयौ नै षालसा रा गांवां में कागद लिष मेलीया—कैतो सांमा पगां आय[2] रूपीया ठेरावजो[3] नहीं तरै गांव लूट लेसां।

सुद २ महाराज कंवार श्री परतापसिंघजी रौ व्याव आज रा सावां[4] सुं श्री हजूर रा हुकम सुं सिरे बजार सिणगारीजीयो नै दीवाळी सरसते रोसनी हुई। नै पछै रात आधी रा परणीजण नै गढ सुं असवारी हुई सो मोड़ बांध हाथी रै हौदे विराजीया। लारै षवासी में भादराजण रौ ठाकुर बैठो नै व्यास प्रोहीत कोटवाळ मुसरफ नै मुसदी, षवास, पासवांन नै नाजर हरकरण वगैरे सारा असवारी में हाथी रै मुढ़ा आगे पाळा था नै लवाजमो सारो थो सु मांयलेवाग पधार नै परणीजीया सु दिन उगां तांई उठै ही रया, नै बड़ो हगांम हुवौ।

और श्री हजूर साहब पीण जनांना समेत गोळ री घाटी रै मारग नाजर हरकरण री जायगा गुलाबसागर ऊपर जिण में पधारीया। सु महाराज कंवार परणीज उतरीयां पछै पाछा उणी मारग किले दाषल हुवा।

वैसाष सुद ३ महाराज कंवार दिन पौर चढ़ीयां पछै हाथी असवार होय षवासी में भादराजण रा ठाकुर बैठा। नै महाडोळ में कंवरांणीजी बैठा सु सिरे बजार होय जलूस लवाजमा सुं किले दाषल हुवा। तोपां री सिलकां १२ छूटी।

और सिं० समरथराज रौ बेटो सूरजराज रांमसरण हुवौ जठा पछै समरथराज नै आज मुजरौ हुवौ सु परचावणी षातरी पाव घड़ी तक कीवी।

सुद ४ श्री हजूर साहब नै महाराज कंवार परतापसिंघजी फतैमैल में पधार विराजीया सो नाच तायफां रौ हुवौ नै मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे व्याव री निजर निछरावळ कीवी, श्री हजूर री नै प्रतापसिंघजी री।

---

1. बानै बेंठाया 2. हमारे सामने स्वयं आकर 3. प्रति घर निश्चित रकम देना तय करो 4. विवाह का शुभ मुहूर्त

सुद ६ बारोठीया रा भय सु षालसा रा गांवां में हवालदार था सु गांव छोड नै आय गया, तिण री मालम हुई। तरै बंदोबसत करण री ताकीद फुरमाई।

सुद ११ सुणी कै परबतसर रा नंदवांणा वोरां री जांन जावती थी सो बारोठीयां सु धड़ो हुवौ[1] सुणीयो, सु परबतसर सु घोड़ा आदमी चढीया। सु बारोठीयां सु झगड़ौ हुवौ, सु जोसी हंसराज रा ठावा आदमी कांम आया। नै जांन रौ बचाव हुय गयौ। नै उठा सु बारोठीया नीकळ गांव बांवळो लुटीयौ, नै बंद पकड़ ले गया[2] तिण री बार हुई नहीं[3]।

वैसाष सुद १२ श्री हजूर साहबां रै व्याव सारू डोळो देवड़ीजी रो आयौ। सु हाथी रै हौदे विराजीया नै लारै षवासी में भादराजण रा ठाकुर बैठा नै मुढा आगे जळेव में रळीयावता रा राजाजी नै कुचांमण रा ठाकुर नै मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा, सु जलूस सु मांयलेवाग पधार परणीजीया।

सुद १३ जनांना समेत असवारी राजमैलां दाषल हुई।

सुद १४ श्री हजूर साहबां री असवारी राजमैलां सु षुले षासे विराज मोड़ पधराया नै लारै मा'डोळ श्री देवड़ीजी रौ सु लवाजमा सु सिरे बजार हुय किले जनांनी दोढ़ी रै मारग दोफार रा दाषल हुवा नै तोपां रा तीर ११३ छूटा। नै जनांना में जातां वगैरे रो दसतूर सारो कर नै लारला दिन रा पाछा राजमैलां दाषल हुवा। आगे व्याव श्रीजी रा १४ है नै ओ पनरवों हुवौ।

वैसाष सुद १५ महाजन ओसवाळां रौ मेळो मंडोर हुवौ।

संमत १९१६ रा जेठ वद १ सुणी कै मेड़ता रौ गांव डांगावास बारोठीयां लूट लीयो नै बिगाड़ मोषळो कीयौ।

और जांमनगर सु भला आदमी आया तिणां साथै घोड़ा ५०, ऊट ४०, पींजसां ५, सेझ गाड़ीयां ५, रथ ४ नै पाळा आदमी १५० हा, जिणां रौ डेरौ उदैमींदर हुवौ।

---

1. लूट-मार हुई 2. कुछ लोगों को बन्दी बना कर ले गये 3. उनका पीछा नहीं किया गया

जेठ वद २ दफतर री दरोगाई भंडारी बादरमल रै हुई तागीरा(य)त नागर म्हैता संकरलाल री। नै भंडारी बादरमल रै षजांना री दरोगाई थी, जबत हुय षालसे हुई।

श्रौर दिवांणगी री मोर पठांण सैबाजषां कना सुं मांय मंगाय नै अदघड़ीक नै पाछी सैबाजषां कनै मेल दीवी नै कवायौ दूजी तजबीज करां जिते षालसे कांम तुं हीज कर।[1]

श्रौर बारोठीयां नै सभा देण मुदे म्हैतो विजैमल सोभत गोढ़वाड़ कांनी जावै तिण रौ डेरौ जाळौरी दरवाजा बारै हुवौ नै मेड़ता कांनी जोसी सिवनारांयण जावै तिणरौ डेरौ उदैमिंदर हुवौ। सु नाजर हरकरण मु० मुकनचंद नै सैबाजषां डेरां जायनै फौज षरच सारू रूपीया १०,०००) तो विजैमल ने दीया नै रू० ५,०००) जोसी सिवनारांयण ने दे विदा किया।

जेठ वद ६ जोसी हंसराज रा कागद श्राया जिणमें लीषीयो कै परवतसर सुं घोड़ा बेली सांवठा ले चढ़ीयो सु कोस पचीस री षड़वाकर[2] गांव रायपुर कनै सबळपुरा रै श्रास-पास बारोठीयां रा डेरा था जठै अजांणचक[3] जाय पूगो सु साथै जुभरवा था जिण सूं भगड़ौ हुवौ। सु बारोठीयां रा श्रादमी १० मरण गया नै पनरै घायल हुवा नै तीन श्रादमी पकड़ लीया। नै बारोठीया भाग गया सु पड़ाऊ माल[4] इण मुजब श्रायौ—जुभरबो १, तरवारां १५, घोड़ा २, ऊंट ४। नै इण भगड़ा में रायपुर वाळां रौ लोक सांवठो हंसराज री मदत में रयौ सु प्रभुलाल विगत वार मालम कीवी। नै मौसर घड़ी ४ तांई हुवौ सु श्री हजूर हंसराज री तारीफ फुरमाई। नै फुरमायौ कै हंसराज रै लारै तोपां परवतसर वाली जबर है सो लंबा कूच में पोंच सकै नहीं सु अठा सु छोटा नग[5] ताकीद सुं श्राज रा श्राज रवांनै करो। सु हुकम मुजब मेलीया नै हंसराज रौ डेरो जैतारण हुवौ जठै सिवनारांयण घोड़ा बेलीयां सुं जाय सांमल हुवौ।

श्रौर बारोठीयां सोभत री तरफ गांव वोपारी रौ श्रासण नै गांव केलवाद वगैरे में लूट षोस कीवी नै बंद पकड़ ले गया तिणां रौ लारौ इतरा जणां

---

1. वैकल्पिक व्यवस्था होने तक दिवानगी का काम तूं ही देख 2. लगातार घोड़ों को 25 कोस दौड़ा कर 3. अचानक 4. छीना गया असबाब 5. छोटी तोपें

सांमल[1] कीयौ—म्हैता विजैमल, सिं० सिवराज, नाजर मुसताक, मु० पूनमचंद, लालो ईसरीप्रसाद सु गांव गजनाइ रै आस-पास जाय पूगा सु भगड़ौ हुवौ। सु बारोठीयां रा आदमी मुवा नै आदमी १९ घायल हुवा नै जोसी हंसराज ही जाय सांमल हुवौ सु वारोठीयां नास नै[2] गजनाई री नाळ[3] चढ़ गया नै दरवार री फतै हुवां रा समाचार हलकारा ले आया। तिणां नै मोळोया बंदीजीया,[4] मु० मुकनचंद री अरज सुं, नै कीणी रै भगड़ा में लागी जिणां रै षेत लिषीजीया।[5]

संमत १९१६ रा जेठ सुद १ श्री हजूर साहबां रौ मौसर सरबाले हुवौ, सु पोर अेक रयौ, नै ईतरा वकील नै राजवी राजसथांन रा था जिणां नै सीष रा सिरपाव सरसता मुजब हुवा।

बीकानेर री तरफ सुं प्रौ० दलकरण जात सेवड़, कोटा री तरफ सुं पोकरणो विरांमण आचारज लिछमणदास वासी जैसलमेर रौ, नै जांमनगर सुं हमार आया तिणां नै नेरलीयावता रा राजाजी दुरजणसालजी नै।

जेठ सुद ३ कुचांमण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ नै इकत घड़ी दोय रथा नै पछै कुसी हुई। तायफां रौ नाच हुवौ।

जेठ सुद १२ लालजी श्री मोतीसिंघजी नै सीळमाता तुसटमांन हुई।[6] सु कागे जात[7] देण नै गया साथै व्यास प्रोहीत नै जनांना दोढी रा दोढीदार नाजर वगैरे गया।

जेठ सुद १३ श्री हजूर सायबां री वरस गांठ रौ उछव राजमैलां सदामंद मुजब हुवौ। तोपां रा तीर ४१ वरसां मुजब छूटा।

संमत १९१६ रा असाढ़ वद ८ प्रथम मु० मुकनचंद रै दीवांणगीरी रौ दुपटौ केसरीया हुवौ नै छोटा भाई समरथमल नै पिण दुपटौ कसूंमल हुवौ। नै इसी सुणी रूपीयां रौ आगे फैसलो हुवौ, तिण मधे रू० ७५,०००) भरणा ठेरीया।

और षजांना री दरोगाई प्रो० जसकरण रै हुई।

---

1. मिलकर 2. भाग कर 3. संकरा पहाड़ी मार्ग 4. विशेष प्रकार के बहुरंगे साफे बंधवाये गये 5. बारोठियों के साथ मुकाबले में घायल लोगों को खेतों के पट्टे दिये गये 6. शीतला ने कृपा की 7. देवी (शीतला) के यहां फेरी देने गये

ग्रौर गैर इलाका रा मुकदमां री ग्रदालत जैसलमेर रा व्यास गौरीदत्त रै हुई तिणरौ दुपटौ हुवौ नै मोर रौ थेवो षुदीजीयो, तागीरायत लाला ईसरी प्रसाद री ।

ग्रौर दीवांणी ग्रदालत भंडारी हरनाथ रै हुई, तागीरायत प्रो० जसकरण री ।

ग्रसाढ़ वद " (ग्रमावस) वकीलां रा समाचार ग्राया कै ग्रजंट साहब सिपां रा ग्रसवार २०० ले नै बारोठीयां नु सभा देण मुदै ग्राबुजी सु उतरीया । सु ंहैता विजैमल सांमल हुवा नै उठी सु मेवाड़ री तरफ सु फौज ग्राई सु जोजावर री नाळ री तरफ गया । तरै बारोठीयां नु षवर हुई, तरै मते-मते[1] भाग गया । पछै ग्रजंट साहब दस पनरै दिन उठी री तरफ रै नाळां रौ बंदोवसत कर श्री रूप चतुरभुजजी होय सोमेसर री नाळ उतर ग्राबूजी गया ।

संमत १९१६ रा ग्रसाढ़ सुद १ माजी श्री चावड़ीजी मिंदर नवौ करायौ तिण में श्री गोरधननाथजी रौ सरूप पधरायौ ।[2] नै श्री फतैबिहारीजी नांव दिरीजीयौ नै मुसायब वगैरे सारा भेंट करण नै गया ।

ग्रसाढ़ सुद ६ पटवो परतापमल कैद में थो तिण रै रू० १,००,०००) ठेरीया तिणमें रू० ३१,०००) तो हाल भरणा नै बाकी रां री किसतां दोय हुई । महीना साढी च्यार सु छूटा ।

ग्रौर घांणेराव रौ कांमदार लोढ़ो सिवकरण रौ बेटो ग्रठै थो तिको ग्राउवा रा कोरी हीमतमल री बेटी परणीयो तिण मुदे ग्राउवा रौ ईलाको लगाय पकड़ चांतरै बेसांण दीयौ नै सिवकरण नु घांणेराव में पकड़ फौज में म्हैता विजैमल ले ग्रायौ, नै रूपनगर सोलंषीयां रा रौ कांमेती घांणेराव में थो मु० परतापमल जिण नै फौज में पकड़ लाया ।

ग्रसाढ़ सुद १५ विरषा री षंच है[3] नै पांणी री पूरी दुमार[4] है ।

---

1. ग्रलग-ग्रलग 2. मूर्ति स्थापित की 3. वर्षा होने के ग्रासार कम हैं 4. तकलीफ

संवत् १९१७ का विवरण

संमत १९१७ रा सांवण वद १ मुकांम राजमैलां।

सांवण वद ३ रांणीजी श्री जाड़ेचीजीसा जांमनगर पीहर पधारे तथा महाराज कंवार री जात देण सारू, सु डेरा जाळौरी दरवाजा बारै षड़ा हुवा, जठै पाछली रात रा महाडोळ में विराज असवारी हुई, सु डेरां दाषल हुवा।

सांवण वद ६ श्रीजी साहबां री असवारी राजमैलां सु गोळ री घाटी रै मारग किले दाषल हुवा।

वद ७ रांणीजी श्री छठा भटीयांणीजी रै अगरणी रौ उछव सरसता मुजब हुवौ।

वद १० असवारी श्रीजी रा जनांना नै कवरां समेत कायलांणे पधारी।

वद १३ जांमनगर सु भला आदमी श्री जाडेचीजी नै लेण नै आया तिणां री मिजमांनी नै सिरपाव सरसता मुजब हुवा।

वद १४ असवारी बाळसमंद पधारी।

संमत १९१७ रा सांवण सुद १ रांणीजी श्री जाड़ेचीजी रौ कूच हुवौ। सु गांव मोगड़ै दाषल हुवा।

सुद २ विरषा हुई सु हळ जुत गया[1] नै तळावां में पांणी महीना दोय रौ आंयौ।

सुद ३ श्री हजूर साहब बाळसमंद सु रात पोर सवा गयां गांव मोगड़ै रांणीजी श्री जाड़ेचीजी कनै पधारीया नै तोपां रा तीर १५ छूटा नै मोगड़ै दिन दोय तथा तीन रंया सु मुसायब वगैरे सारा उठै हाजर हुवा।

सुद ४ मोगड़ै जांमनगर वाळां गोठ दीवी, सु रसालो नै दोढ़ी रौ लोक नै तो सीरो जिमायौ। नै मुसदी, षवास, पासवांनां नै पेटीया आदमी दीठ[2] आटो '१।, घिरत '।, षांड '।, चावल '।, दाल, मिरच, मसालो वगैरे '। दिरीजीयौ नैं षासे रसोवड़े जिनस उपड़े जिती मेली।[3]

---

1. हल चलने लगे 2. प्रति व्यक्ति 3. जितनी सामग्री की खपत हो उतनी भेजी गई

सांवण सुद ५ तथा ६ सोम विरपुली रौ मेळो दसतुर मुजब हुवौ नै जाजमाट[1] मेह पिण आयौ।

और श्री हजूर साहबां री असवारी जनांना कंवरां समेत गांव मोगड़ा सु कायलांणे पधारता था सु पंचोळी पटानवेस भीनालाल अरज कर रात रा मुकांम रेषा वेरे करायौ नै सुद ७ धनरूप भीनालाल री तरफ सु श्री हजूर में गोठ हुई, सु षांड रौ सीरो नै मिठाई री तयारी चोषी कराई सो श्री हजूर साहब में रवांने होय निवाजस ईण मुजब ईनायत हुई—धनरूप नै मोतीयां री कंठी, दुपटौ, मदोल नै भीनालाल नै कड़ा, मोती, दुपटौ मदील; नै भीनालाल री बेटो नै जनांना में बुलाई सु जड़ाऊ टुसी नै पोसाग इनायत हुई। नै दोनु भायां जनांना में निजर निछरावळ मेळी नै तासळी पधराय नै तुरत ही कायलांणे पधारीया। पछै रात रा विरषा चोषी हुई।

सांवण सुद ११ असवारी बाळसमंद पधारी। रात रा विरषा घणी हुई, तिण सु तळाव रांणीसर तो ओटे आय गयौ नै दूजा तळावां में पाणी घणौ आयौ।

सुद १२ असवारी बाळसमंद सु गढ़ ऊपर चोकेळाव पधारीया। नै सुद १० सुद ११ झड़ रयौ[2] तिण सु श्री सूरजजी रा दरसण हुवा नहीं नै आज हुवा। नै असवारी उण ही दिन सूरसागर पधारी।

सांवण सुद १३ सुद १४ नीमा सांम तांई सूरसागर विराजीया नै रात रा असवारी जनांना समेत राजमैलां दाषल हुवा।

और श्री जाड़ेचीजी रा मुकांम मेह रै मुदे पाली तीन च्यार दिन रया नै आज ढोला रै गांव डेरा हुवां रा समाचार सामल हुवा नै मुसायब साथै गया नहीं, जिण री पूरी ताकीद आई।

सुद १५ राषड़ी पूनम[3] है नै चंद्रमा रौ परब[4] है।

संमत १९१७ रा भादवा वद १ श्री हजूर साहब राजमैलां रा अडांण ऊपर झरोषा में दूरबीणी लगाय घड़ी दोय तांई विराजीया।

---

1. साधारण 2. वर्षा की झड़ी लगी रही 3. रक्षा-बन्धन 4. चन्द्र-ग्रहण

श्रौर जोसी प्रभुलाल नै नाजर हरकरण नै श्री जाड़ेचीजी रै लारै चढ दरकूचां ताकीद सु सांमल हूण रौ फुरमायौ सु जाळोरी दरवाजा रै डेरा कीया सु नोमा सांम रा उठा सु चढ़ीया।

वद २ श्रीजी दुवार सु षबर श्राई कै श्री गुसांईजी महाराज रै नै श्री माजी महाराज रै तनाजो श्रापस में केई दिनां सु है तिण बाबत रांणाजी फौज मेलो सु गुसांईजी संबनै[1] सांमी तोपां मांड दीवी। तिण रा समाचार कोठारीया रा रावत जोधसिंघजी नै लागा सु श्रीजी दुवार श्राया विचै पड़ झगड़ौ बंद रषायौ। नै श्री गुसांईजी उदेपुर गया, इसी सुणी।

श्रौर श्राज विरषा घड़ी च्यार तक हुई, सु तळाव पदमसर श्रोटे गोडां तांई बुहो।

श्रौर श्री हजूर साहब नाळेरां में रूपीयो घाल घालनै नाळेर २५० गुलाबसागर में तथा बचा में फेकीया सु तेरू[2] सीरीमाळी विरांमण तथा दूजा ही था जिणां रै हाथ श्राया।

भादवा वद ३ श्रजंट निकसन साहब राजमैलां श्राया तिणां री पेसवाई में श्री हजूर साहब लाल बाबा रा मिंदर री पूठ में गुलाबसागर रौ घाट है जठा तांई सांमा पधारीया नै पाछा पधार राजमैलां रा बंगला में विराजीया। सु मुलाषात कर साहब नै सीष हुई।

वद ५ प्रथम नागपांचम रौ मेळो मंडोर सदामंद मुजब हुवौ नहीं प्रबात रा ही विरषा सरू हुय गई जिण सु लोक कम गयौ नै श्राथण रा सांमे मेळे लोक मोषळो[3] गयौ सु मेळो चोषो हुवौ नै श्री हजूर साहब नै श्रजंट साहब मंडोर पधारीया सु श्री हजूर साहब तो वाग में विराजीया नै श्रजंट साहब जोसी सीरीकीसन री बगेची में बैठां नै पाछा हाथीयां रै हौदे विराज पधारीया नै श्रजंट साहब नै मंदील पाग माथे बंदाई। सु श्रीजी साहब तो राजमैलां पधारीया, नै श्रजंट सूरसागर गयौ।

वद ५ दूजा श्रजंट साहब री जाफत मांयलावाग में हुई सु श्री हजूर साहब पधार कवळ चौक में बिछायत हुई जठै विराजीया, नै गालीचा ऊपर

---

1. झगड़े के लिये सबद्ध होकर 2. तैराक 3. काफी, बड़ी संख्या में

बैठो नै पातरीयां, फ(भ)गतणीयां रौ नाच हुवौ नै घुमर मटकी धारवा रो नाच हुवौ ।[1]

पछै श्रीजी साहब तो पोळ ऊपरला मैल में पधार गया नै अजंट साहब उठै ही षांणो षाय नै पछै श्री हजूर में आयो सु अतरपांन हुय सीष दीवी ।

भादवा वद ६ अजंट साहब री जाफत कुचांमण री हवेली हुई । नाचकूद पेसवाई सरसता मुजब हुई नै वद ७ जाफत मु० मुकनचंद री हवेली हुई । सु नाच-कूद पेसवाई सरसता मुजब हुई ।

वद ८ अजंटी री जाफत सिं० फौजराज री हवेली हुई । सारो कांम सरसता मुजब हुवौ ।

वद ११ श्री हजूर साहब सूरसागर पधारीया सु पेसवाई में जोसीयां री बगेची तांई साहब सांमो आयौ पछै सूरसागर पधार घड़ी दोयेक विराज नै उठा सु पाछा अषैराज रै तळाव पधार जाळोरी दरवाजा में होय श्री बाईजी साहबां रौ तळाव निजर गुदराय राजमैलां दाषल हुवा ।

और नाजर हरकरण जोसी परभुलाल रा पालणपुर रा डेरां सु कागद आया जिणमें लीषीयो—श्री जाड़ेचीजीसा रा लसकर सु दोय मंजल रौ वीच है सु ताकीद कर जाय सांमल हुसां ।

संमत १९१७ रा भादवा सुद २ मसूरीयां रौ मेळो हुवौ, जठै महाराज कंवार श्री परतापसिंघजी पधारीया ।

सुद ३ श्री हजूर री असवारी जनांना समेत महामींदर पधारीया ।

भादवा सुद ४ गणेस चौथ रौ मेळो चोषो हुवौ नै राज रौ कांम सारो महामींदर हुवै ।

और इसी सुणी कै अंगरेजी अमलदारी में जो साहूकार लोक है जिकां रा मकानां रा भाड़ा तथा हुडावण री पैदास तथा माल रा नफा री पैदास तथा अफीम रा सटा री पैदास मांय सु च्यार रूपीयां सहीकड़े[2] सिरकार अंगरेजी

1. सिर पर मटकियें रख कर नाच किया गया 2. चार रुपये प्रति सैकड़ा

लेसी नै गुमासतगीरी चाकरी करै नै दलाली करै, जिणां कनै ही च्यार रूपीया सहीकड़ै लेसी रौ हुकम छप गयौ ।[1]

और असवारी छैलवाग कायलांणे पधार पाछी महामींदर दाषल हुवा ।

सुद ५ अजंट मीम नै लेवण नै पाली तांई गया, सु सुद ८ पाछा आया ।[४६]

भादवा सुद ११ भूलणा रौ मेळो तळाब गुलाबसागर ऊपर सदामंद मुजब हुवौ नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी मेळो देषण नै पधारीया ।

भादवा सुद १५ असवारी महामींदर विराजे नै राज रौ कांम सारो उठै हुवौ । नै कुचांमण रा ठाकुर रौ आदमी घोड़ो लीयो आवतो थो सु भंवळ आय पड़ गयौ,[2] सु मरण गयौ[3] ।

संमत १९१७ रा प्रथम आसोज वद १ म्हैता विजैमल नै पठांण सैबाजषां नै पाली मेलीया । वड़ा साहब ईडन साहब बहादुर पाली हुय अजमेर जावै तिणां री मुलाषात मनवार[4] करण सारू ।

प्रथम वद ५ इसी सुणी कै उदैपुर रा अजंट मेजर टेलर साहब मिमच[5] सु उदैपुर गया सु रांणाजी सुं मुलाषात कर नै वेदले रावजी बषतसिंघ नै कयौ कै—आपके आउवे ठाकुर से मुलाषात होय तो आप ठाकुर कुं केलाय देवो[6] सो ठाकुर हमारे पास आय जावे तो हम ठाकुर का कोरट कर[7] ठाकुर कुं बरी कर देवें । अै समाचार कै साहब तो पाछा मिमच री छावणी नै चढ़ गया ने वेदले रावजी ठाकुर नै हलकारा[8] साथै समचार लिषीया । तरै ठाकुर टेलर साहब कनै कांकरोली रौ उपाध्याय तिलंग विरांमण रंगलाल नै साहब रै नांवे षत लिषनै मेलीयो । जिणमें रावजी रौ दाषलो देनै लिषीयो । जिण रा जबाब में टेलर साहब पाछो षत लिषीयौ कै राज मेरे पास आय जावे तो राज का कोरट कर राज कुं बरी कर देऊं । तिण ऊपर ठाकुर पाछौ लिषीयौ कै जो अजंट साहब के मरणे में[9] तीन बात जो सिरकार ने ईसतिहार में

1. आदेश प्रकाशित हो गया 2. चक्कर आने से गिर पड़ा 3. मर गया 4. मनुहार 5. नीमच 6. कहला दो 7. कानूनी कार्यवाही पूरी कर 8. पत्रवाहक 9. एजेन्ट को मारने में

जारी करी ई, जिणमें हुं नहीं। अर जो मेरे पर साबत हुय जाय तो सिरकार मेरे तांई बेसक फांसी देवे तो मेरे तांई धोका रै नहीं[1]। अर मेरा लिषणा राज कुं बेर-बेर[2] इस वासते है कै मेरा जो मालक महाराज साहब श्री तषतसिंहजी है जिनकी मैंने तो सं० १६०३ की साल में करनेल सदरलेन साहब आये जिस वषत में मारवाड़ के उमराव कुरब की आसांमी चोरासी सब सांमल होय श्रीमाजी साहब कुं दसषत कर दीये अर मैं फकत श्री महाराज साहब के बंदगी में रै कर सदरलेन साहब कुं सब जो मुलक का हाल उं वाकब करके महाराज की बंदगी कीवी है। परंत मेरी कमनसीबी[3] से श्री महाराज साहब मेरे से नाराज हैं सो हर सूरत करके मेरे पर ईलजांम अजंट मारणे का साबत कराया चाते हैं सो ये बचन मैं मांगता हुं कै मेरे ईनसाब में श्री महाराज साहब की षातर[4] रवै नहीं। नै ईनसाब बराबर हुणे का आप लिष देवे तो मैं चला आऊ। औ षत दे नै फेर रंगलाल नै मेलीयो नै अेक षत बुरक साहब रै नांवे लिष नै व्यास उदैभांण नै जैपुर मेलीयो। सु उदैभांण सुं मुलाषात साहब षेतड़ी रा डेरां कीवी नैं उठा सुं ही ठाकुर रै नांवे षत लिषीयो जिणमें सला टेलर साहब कनै जावण री लिष दीवी। नै टेलर साहब षत रौ जाब[5] में लिषीयौ कै हमारी सिरकार की वचन देणे की तो ईजाजत है नहीं, पण मेरे लिषणे से चले आवो तो आपका ईनसाब बराबर होगा, किसी की षातर नहीं रेगा।[6] जद वो षत बांचत पांण[7] ठाकुर निमच री छांवणी जाय टेलर साहब सुं मुलाषात कीवी। सु मुलाषात करतां ही ठाकुर नै षातर करी। तरै ठाकुर कयौ कै म्हारै षावण रौ सरतंत है नहीं[8] सो दोय च्यार दिन में म्हारौ इनसाफ कराय दिरावे। जिण ऊपर टेलर साहब लालसोठ रौ गौड़ विरांमण पींडत रांमनाथ उदैपुर रा प्रधांन म्हैता सेरसिंघ रौ वकील जिण नै बुलाय नै कयौ कै तुम आउवे ठाकुर का डेरा तो निकसन गंज में कराय देवो। नै दोय डेरा—अेक तो ठाकुर कै नै अेक आदमीयां कै भेज देवो। अर ठाकुर कुं षाणे कु चहीये तो तुम दियां जावो जिस रोज ठाकुर का कोरट हुय चुकेगा उस रोज ठाकुर का जेवर जोधपुर में पड़ा है सो कोरट हुणे बाद ठाकुर कुं मिलेगा। उस रोज पेसतर तुमारा षरचा उपड़ेगा[9] सो दिराया जायगा।

---

1. मुझे अफसोस नहीं होगा 2. बार-बार 3. दुर्भाग्य 4. दखल 5. जवाब 6. किसी का भी दखल या पक्षपात नहीं रहेगा 7. पढ़ते ही 8. मेरे खाने-पीने की कोई व्यवस्था नहीं है 9. जो भी खर्च होगा

तरै पिंडत रांमनाथ दोय तो डेरा मेल दिया नै ठाकुर नै मोदीषांनों तोलणो सरू कर दियौ[1]।

ग्रासोज सुद ४ नै ग्रजंट जोधपुर सु ग्रजमेर नै चढीया, सु दरकूचां पूगा। पछै किताक दिनां रै बाद नसीराबाद री छावणी में कोरट हुणो ठेरीयो जिणमें पंच ईण मुजब ठेरीया—

सिरपंच टेलर साहब, जैपर रा ग्रजंट बुरक साहब, नै देवली री छावणी रा बिनण साहब, नै कपतांन नवल साहब, नै बडा साहब ईडन साहब री तरफ सु मीर मुनसी मौलवी मेहमद—ग्रै मुकर ठेरीया। पछै नसीराबाद री छावणी ग्राउवा रा ठाकुर ने टेलर साहब लेने ग्राया सो दिन ३ तो नसीराबाद री छावणी मुकांम रया नै पछै ग्रजमेर कमेटी ठेरी सु उठा सु ग्रजमेर ग्राया सो साहब लोक सारा ग्राप ग्रापरा डेरा में दाषल हुवा। नै कमेटी रौ मयंबर[2] नवल साहब थो सु घोड़ा ऊपर सु कीणी सबब सु जाय पड़ीयो सु कमर जषम हुय गई। सु उण दिन तो कमेटी मोकुब[3] हुय गई नै पछै नवल साहब री ग्रेवज कपतांन करनेली साहब मयंबर मुकर हुवा। ग्रर जोधपुर इलाका रा गवाई[4] जोधपुर रा ग्रजंट नीकसन साहब री मारफत इतरा जणा नै बुलाया—

षींवाड़ा रौ चांपावत हीमतसिंघ, ग्रजंट मेसन साहब मरीया जद कनै हाजर थौ, नै गोढवाड़ रौ गांव पीलांवणी रौ प्रो० प्यारो नै ग्राकथळी रौ भाटी जवारसिंघ नै रूपावत पाड़सिंघ, नै ग्रजंटी रौ चपड़ासी इंदु ग्रजंट साहब री साथै ही, मरीयो जिण बषत, तीको नै ग्रेरणपुर री छावणी रौ रसालदार ग्रबास ग्रलीषां जिको उणां दिनां में ग्रजमेर रौ कोटवाळ थो सु हाजर हुवा नै प्रथम ग्रासोज सुद १० नै जोधपुर सु श्री हजूर री तरफ सु ईतरा जणा गया—

षैरवा रा ठाकुर सांवतसिंघजी, रीयां रा ठाकुर देवीसिंघजी, गोराड रौ ठाकुर भेरूसिंघ, सीवास रौ ठाकुर हरनाथसिंघ, रसालदार मुनालाल तथा उण रौ भाई सिवगोपाळ, नै मुसायब म्हैता विजैमल, सि० समरथराज, मु० समरथमल, जोसी हंसराज, म्हैतो हरजीवण, पठांण सेबाजषां नै बूढसू रा भाईपा रा गावां रा मेड़तीया ग्रषैसिंघोत जोरसिंघ, सगरसिंघ ग्रासोप रा ठाकुर कनै रैता था सु ठाकुर रै साथै कैद में था, तिणां नै कैद मांय सु कढाय नै

1. खाने-पीने की सामग्री देनी प्रारम्भ कर दी 2. मेम्बर 3. स्थगित 4. गवाह

मेलीया गवाई भरण वासते[1]। सु अे सारा अजमेर पूगा पछै कोरट सरू दुवौ। सु आउवे ठाकुर रै सांमने जो उमराव मुसायब तथा और बाजे लोक[2] गवाई भरण नै गया जिणां नै हाथ में गंगाजळी दे नै सवाल कीयौ कै मीसन साहब मरा जब तुम पास हाजर थे! जद जवाब में पाछौ कयौ—म्हैं तो उठै कनै हाजर था नहीं। जद पाछौ कयौ—हाजर नहीं हा तो तुमारा ईजार लेण का कुछ जरूर नहीं।[3] आप जाईये। ईण तरै सु सवाल कर नै सारां नै सीष दीवी। इण सबब सु उमरावां, मुसायबां रा तो ईजार हुवा नहीं। नै इतरा जणां रा ईजार हुवा—चांपावत हीमतसिंघ अषैसिंघोत जोरसिंघ, सगरसिंघ, रसालदार अबासअलीषां, चपड़ासी इंदु, प्रो० प्यारो, भाटी जवारसिघ, कायथ लालो हुकमचंद षेतड़ी रौ। इणां रा ईजारां सु अजंट मेसन साहब नै मारण री तथा केने मरावण रो आउवा रा ठाकुर ऊपर साबूती नहीं तरै आउवा रा ठाकुर सु फेर सवाल कीयौ—कै आपने सिरकार सु सांमना कीया जिसका क्या जबाव? जिण ऊपर आउवे ठाकुर पाछौ कयौ के मेसन साहब मरा जिस बषत तो मैं मेरे मकांन में दरवजे बंद करके बैठा था। सो तो गवायां रा ईजार में जारी हो गये हैं। अर जिस बषत होम साहब जरनैल फौज ले आये जिस बषत मैं आउवा में था नहीं। आप जरनैल साहब कु बुलाकर मेरे सांमने पूछ लिरावे। जद उण ही बषत जरनैल होम साहब नै बुलाय मेजर टेलर साहब अंगरेजां रै धरम री बाईबल, किताब है जिकी होम साहब रै माथा ऊपर धर नै[4] पूछीयौ। तरै होम साहब कयौ—आउवा रा ठाकुर तो आउवा में था नहीं नै ठाकुर का भाई था। जिण ऊपर ठाकुर कही—कै मेरे भाई कु तो कपषांन[5] है सु सब मारवाड़ में जारी है। औ जबाब सुण नै पछै ठाकुर नै कयौ—अब जो आपका नुषसांण हुवा होय अर जो उजर होय सु लिषकर देवो सु हम लाठ साहब के पास रपोट कर देंगे[6] सो कोरट का अर आपकी दरषासत का हुकम आवेगा सो सुणाय देवेंगे। जद आउवे ठाकुर दरषासत दीवी जिणमें ईसो लिषीयो—सुणीयो कै आउवो लूटीयो तथा मैल, पोळां, दरवाजा, कोट वगैरे पाड़ीया जिण रौ नुषसांण रूपीया सीतर लाष रौ हुवौ, बिनां कसूर, सो सिरकार मनै दिरायो चाहीजे[7]। नै म्हारी जमीन मनै मीळी चाहीजे। आ दरषासत पेस करी जिका दरषासत नै कोरट रा ईजारां

---

1. गवाह देने के लिये 2. अन्य लोग 3. तुम्हारे बयान लेने आवश्यक नहीं 4. सिर पर रख कर 5. खूंखार 6. हम भारत के गवर्नर जनरल के पास रिपोर्ट भेज देंगे 7. मुझे सरकार से दिलाया जाना चाहिए

री रूबकार टेलर साहब नै बुरक साहब सांमल होय नै लिषी जिण में इसी सुणी कै आउवे ठाकुर नै बरसां तांई अेक जगा राषणा आ रपोट लिष नै बड़ा साहब ईडन साहब कनै मेली। अर ईडन साहब आपरी राय लिष नै रपोट लाठ साहब कनै रवांने करी।

और ईसी सुणी कै उमराव मुसायब रसालदार नै गवाई वगैरे गया था सो पाछा जोधपुर नैं रवांने हुवा नै म्हैता विजैमल, जोसो हंसराज, पठांण सैबाजषां औ हाल[1] उठै ही रया।

और आउवे ठाकुर दरषासत दे नै दूजे दिन श्री पुसकरजी गया सो जात्रा कर पाछा आय नै दूजे दिन नसीराबाद री छावणी गया। नै छावणी डेरां कीयां पछै दिन पांच सात नै छावणी में मेड़ता रौ गांव बासणी जठा रौ जाट आय टेलर साहब कनै फिरियाद कीवी कै मेड़तीयो देवीसिंघ म्हारा बाप नै तरवार सु मार नाषीयौ तिको हमार आउवा रा ठाकुरां रा डेरा में है, जिणसु हुं हमार वातां कर नै आयो हुं। सु सिरकार उण रौ बंदोबसत जलदी करावे नहीं तो वो आगो-पाछो[2] होय जायगा। तरै टेलर साहब ठाकुर कनै चपड़ासी मेल नै कवायौ कै देवीसिंघ पर फिरीयादी आयौ है सो रूबकारी कराणी[3] है। सु उनकुं जलदी हमारे पास भेजो तरै आउवे ठाकुर देवीसिंघ रै साथै भला आदमी दोय दे साहब कनै मेलीयो। तरै साहब जाट नै अर देवीसिंघ नै रूबकार कराय नै कयौ कै मिनष मारीयां का षून देवीसिंघ में है सो श्री महाराज साहब के मातेत[4] है सो सभा देणी उनके अषतीयार है सो अब देवीसिंघ कुं जोधपुर का अजंट निकसन साहब के पास लेजाकर सुपरत कर देवो। ईऊं आपरा आदमीयां नै हुकम दे साथै मेल देवीसिंघ नै पुगाय दीयौ। नै निकसन साहब वकील षीची उमेदकरण थौ जिण रै डेरै सूंप दियौ[5] नै पछै आउवा रा ठाकुर तो मेवाड़ नै रवांनै हुवा नै बड़ा साहब नै टेलर साहब नै बुरक साहब बड़ा साहब री साथै राज नगर ईलाके मेवाड़ रौ जठी नै कूच कीयौ। तरै म्हैता विजैमल, जोसी हंसराज, प्रठांण सैबाजषां औ ही अजमेर सुं रवांने हुवा नै अजंट नीकसन साहब ही कूच कीयौ। नै बड़ा साहब आउवा वाळां रौ जेवर जोधपुर इनांमत पड़ीयो थो[6] सु टेलर साहब री मारफत मीमच री

---

1. अभी तक 2. इधर-उधर 3. रूबरू बयान लेने हैं 4. मातहत, अधीनस्थ
5. डेरे में सौंप दिया 6. अमानत के तौर पर रखा हुआ था

छावणी मेल आउवा वाळां नै दिरावण रौ अजंट निकसन साहब नै लिषीयो सु निकसन साहब जोधपुर सुं जेवर रवांनै कराय टेलर साहब कनै पुगाय दीयौ ।४७

दूजा आसोज वद ६ श्री हजूर साहवा री असवारी महामींदर सुं कायलांणे री तरफ पधार सूरज वेरे हुय पाछा महामींदर दाषल हुवा ।

और रांणीजी श्री चाड़ेचीजी जांमनगर पूगां रा समाचार मालम हुवा तरै दिवांण नै फुरमायौ कै जोसी प्रभुलाल नै नाजर हरकरण नै अठै बुलाय लौ । तरै दिवांण हुकम मुजब लिषावट कर दीवी ।४८

दूजा आसोज वद ‟ (अमावस) विरषा री षंच सुं कर[1] धांन[2] मिळे नहीं सु मुसायब सारा मंडी में आय नै बारै सैर री निरष बांधी[3] तौ ही, गोहुं[4] मिलीया नहीं तरै चांकेळाव में सांमांन रौ कोठार थो[5] सु षोल नै गोहूं वेचणा सरू कीया ।

और जांमनगर सुं कागद जोसी प्रभुलाल रा नै नाजर हरकरण रा आया सु जात्रा करण नै श्री दुवारकाजी गया सु फौज रौ लोक साथै थो जिणरी आदमी दीठ लागत लागे सो सारा फौज रा आदमीयां री लागत रा रूपीया हुवा । सु जोसी प्रभुलाल आपरा घर सुं देने दरसण जात्रा कराय दिवी नै उठै विरम भोज[6] दियौ नै जणा १ दीठ रू० १) अेक विरांमणां नें दिषणां[7] रौ दियौ नै ठाकुरजी रै भेंट हो आछी तरै कीवी जिणरौ जस चोषो आयौ[8] । अै समाचार श्री हजूर में मालम हुवा तरै जोसी सीवनारांयण नै बुलाय षातरी फुरमाई नै फुरमायौ--प्रभुलाल रै सुकरत[9] षरच रौ जोग[10] है सु तुं षातर लिष दे ।४६

दूजा आसोज सुद ८ असवारी महामींदर सु जनांना समेत किले दाषल हुई ।

दूजा आसोज सुद ६ श्री महाराज कंवारा री असवारी श्री चांवंडाजी रा दरसण करण नै पधारीया । सु भेंट कर भेंसो लौ हुवौ[11] सु निजर गुदरायौ ।

---

1. वर्षा होने में विलम्ब होता देखकर 2. अनाज 3. अनाज के भाव तय कर दिये 4. गेहूँ 5. राजकीय अनाज का भण्डार 6. ब्रह्म-भोज 7. दक्षिणा 8. अच्छा यश मिला 9. अच्छे कार्य के लिये 10. योग 11. भैंसा काटा गया, बलि दी गई

सुद १० श्री हजूर री असवारी तो हुई नहीं नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी तो घोड़ा उपर विराजीया नै श्री जोरावरसिंघजी हाथी असवार होय रांवण मारण नै पधारीया सु सदामंद मुजब सारो कांम हुवौ नै तोपां री सिलकां ११६ छूटीं ।

और म्हैतो हरजीवण नै मु० समरथमल नै सिं० समराज अजमेर सुं आया, तिणां नै मुजरौ हुवौ ।

सुद १३ जांमनगर सुं जोसी प्रभूलाल आज आयौ तिण साथै घोड़ा ४० रथ १ था ।

दूजा आसोज सुद १५ कोटा सुं तुंवर प्रतापसिंभ अठै आयौ तिण नै आज श्री महाराज कंवार साहबां कनै फतैमैल में मुजरो हुवौ सु निछरावळ कीवी ।

संमत १९१७ रा काती वद १२ जोसी हंसराज अजमेर सुं आयौ ।

वद १३ वड़ा साहब रौ मेवाड़ कांनी[1] कूच हुवां री आज वकीलां मालम कराई ।

वद " (अमावस) दीपमाळका रौ उछव[2] सरसता मुजब हुवौ ।

और पचपदरा री हाकमी सिं० इंद्रमल जुमे ही सु हाकम री षायकी[3] मालम हुई । सु हाकमी जबत हुय हाकम नै कैद रौ हुकम लिषीजीयौ ।

काती सुद १४ श्रीजी साहबां रा दुसमणां रै ताव री कींक षेद थी[4] सु आरांम हुवां रौ आज संपाड़ौ पदरायौ[5] नै बारै दौलतषांना रा चोक में उछव हुवौ नै मुसदी, षवास, पासवांनां री निजर निछरावळ हुई ।

संमत १९१७ रा मिगसर वद ७ पटवा परतापमल ऊपर रूपीया लाष अेक ठेरीया था तिण री कीसत १ तो पेटीवाळां नु जाय गावां दुकानां रा पटा वगैरे सूंप नै भराई नै दूजी कीसत नजीक आई तरै टाबर कबीलां नुं तो पींपाड़ मेल दीया नै प्रतापमल षेजड़ला री हवेली जाय बैठो ।

---

1. तरफ 2. उत्सव 3. रिश्वत 4. बुखार की वजह से तकलीफ थी 5. स्नान किया

मीगसर वद १० लालश्री सुलतांनसिंघजी कुरजरायजी रा नै मगरायजी रा छोटा लालजी श्री जवांनसिंघजी जिकां नै श्री सरूपसिंघजी रै षोळै[1] दिया। इणां दोनां रै सगायां देवळीये परतापगढ रावत दीपसिंघजी रै षवास रा बेटा गुमांनसिंघजी री बेटीयां सु हुई। तिण रा नाळेर आया[2] सु आज बंदीजीया।

मीगसर वद ११ श्री हजूर साहबां री असवारी श्री चांवंडामाताजी दरसण करण नै पधारीया।

वद १२ श्री हजूर साहब दिन ऊगां तांमजांम[3] में विराज हवा षावण नै मावड़ीयांजी री घाटी तांई पधार नैं पाछा पधार षाबका में दाषल हुय सरबाले मौसर घड़ी दोय तांई हुवौ।

वद १३ जावला रा ठाकुर नै घर री सीष हुई।

वद " (अमावस) कोटवाळ पंवार सेरकरण रांमकरण हुवौ। कोटवाळी ईण रै वरस १७ बरोवर रही।

मीगसर सुद ५ अजंट नीकसन साहब मीम सुधा अजमेर सु आया तिणां सांमा मुसायब सदामंद मुजब गया नै तोपां रा तीर ११ छूटा।

मीगसर सुद ७ अजंट नीकसन साहब गढ़ ऊपर आया सु श्री हजूर साहब सांमा चवांणां री साळ तांई सांमा पधारीया सु पाछा पधार षाबका में विराजीया। घड़ी पांचेक तांई बतळावण हुई।

सुद ८ दीवाळी रौ दरबार संषेप, श्रीजी रा दुसमणां रै षेद थी जिणसु हुवौ नहीं[4] सु आज सिरे दरबार हुवौ नै सैर रा महाजनां वोपारीयां वगैरे सरबाले नै मुजरौ हुय निजर निछरावळ हुई नै आतसबाजी छूटी नै नाच-कूद रंग राग हुवौ। नै तोपां रा तीर १०२ छूटा। अर घड़ी च्यार विराजीया रया।

सुद १२ प्रथम श्रीजी साहबां री असवारी जनांना समेत जाबतो हुय चोकेळाव में मैल नवो हुवौ सु निजर गुदरावण नै पधारीया सु निजर गुदराय पाछा मैलां दाषल हुवा।

---

1. गोद 2. सगाई के प्रस्ताव का दस्तूर 3. विशेष प्रकार की पालखी 4. महाराजा की अस्वस्थता के कारण दीपावली का पूरा दरबार नहीं लगा

ग्रौर कोटवाळ सेरकरण लारै ग्रौसर[1] जलेबीयां रौ ग्राहोर री हवेली में हुवौ।

ग्रौर घिरत रा बाड़ा मांय सु घिरत री चोपां ४ बावरी चोर ले गया। सु पागी नै चोतरां रा ग्रादमी बार गया[2] सु तीन जणा तो रात थी सु भाग गया नै ग्रेक जणो सांमनो कीयो तिण नै मार माथो काट लाया नै चीपां[3] ले ग्राया।[५०]

सुद १२ दुतीक ग्राज ग्रंगरेजां रौ बड़ो दिन हुवौ। दिसंबर री पचीसमी तारीष रौ।

संमत १६१७ रा पोस वद ३ ग्रसवारी बाळसमंद दाषल हुई। नै वद ५ ग्रसवारी तो कायलांणा कांनी पधारी नै कांमेतीयां वगैरे नै बाळसमंद हाजर रैण रौ हुकम हुवौ।

ग्रौर महापुरस रूंषड़ सरवणनाथजी रा चेला लिछमणनाथजी बीकानेर री तरफ सु ग्राया। तिणां लारै महापुरस ६० तथा ७० ग्रासरे तिणां री पेसवाई में ग्रासोपा भांनीरांम नै मेलीयो नै डेरो श्री उदैमींदर रा मींदर में करायौ नै उणां रै साथै पुरण[4] ग्रादमी गुसांई था तीणां रै पेटीयां री जिनस कोठार सु नै चारो, घास, मुगधणो वागर सु हुवौ। नै गढ़ ऊपर पधरावणी हुई, तिणरी भेट रूपीया ....) हुवा नै उणीज दिन श्री मदनमोवनजी रा मींदर रा गुसांईजी महाराज री पधरावणी हुई।

ग्रौर लिछमणनाथजी री भेष्या[5] सारा महापुरसां ग्रादमीयां समेत जोसी प्रभुलाल रै हवेली हुई पछै लगती दिवांणां रै, बषसीयां रै, सिं० समरथराज रै पटानवेस धनरूप रै कवराच भारतदांन रै, सोभावत उमेदकरण रै ईतरी जगा हुई। नै भिष्या करण नै जावता तरै पालषी में बैठ छंवर हुतां थकां मुढा ग्रागे नगारो नीसांण वगैरे लवाजमो सारो नै उणां रा गुसांई बांकीयो वजावता थकां रोजीना जावता।

पोस वद ६ मुकांम राजमैलां। कोठार री दरोगाई जोसी परभुलाल तालके हुई, तागीरायत भाट वागा री मौजुदायत[6] लेण नै जोसी हंसराज नै

1. मृत्यु-भोज 2. बावरियों का पीछा करने गये 3. घी के कनस्तर 4. सवारी के ऊंट ग्रादि 5. भिक्षा 6. स्टाक

सिवचंद गया, सु मोजुदाय़त लेनै कोठार रा कांम री भोळावण सिवचंद नै हुई ।

और श्रीजी साहबां री असवारी छैलबाग सूं सूरसागर पधारी । सु अजंट साहब सांमा सूरसागर रा तळाव सुं उगूणी छैलबाग री सड़क बेवे सु सड़क रै मारग होय षानां सु पांवंडा पचीस आसरे सांमा आया सु घोड़े चढीयां मुलाषात हुई । पछै सूरसागर पधार वडोर्डा मैल में बिछायत हुई जठै विराज घड़ी दोय बतळावण कर पाछा छैलबाग दाषल हुवा । नै उठा सुं निमा सांम रा राजमैलां दाषल हुवा ।

और इतरा औधा षिजमत जबत तथा बाल हुवा—हाकमीयां फळौधी, सोभत, सिव, कोलीयो, दौलतपुरो, पचपदरो, नागौर री कोटवाळी इतरा जबत हुवा । नै इण मुजब हुवा—

फळौधी री हाकमी पठांण तुराबाजषां सैबाजषां रा भतीजा रै, तागीरायत प्रटानवेस धनरूप री । सोभत री हाकमी म्हैता परतापमल रै, तागीरायत तुराबाजषां री । पचपदरा री हाकमी भाट वाघा रै, दौलतपुर री हाकमी आसोपा भांनीरांम रै, कोलीया री हाकमो भंडारी हरनाथ रै, सिव री हाकमी व्यास चौथमल रै, नागौर री कोटवाळी सिं० सिवदांनमल रै, सांभर री हाकमी भं० अमीचंद आंदा रै, तागीरा(य)त जोसी हंसराज री, बाली री कारकूंनी व्यास गंगाराम रा बेटा रै मावार[1] में रूपीया १०००) पैली निजर कीया । अफील[2] री अदालत मुनसी हबी हुसैन रै अजंट साहब री सुपारस सुं ।

पोस वद ११ दिवांणी अदालत रावराजा सिरदारमल रै हुई, म्हैतो परतापमल री अेवज ।

संमत १९१७ रा पोस सुद १ अजंट साहब श्री हजूर में राजमैलां हाथी ऊपर बैस नै आया । सु घड़ी दोयेक ठैर पाछा सूरसागर गया ।[५१]

पोस सुद २ मूता किसनचंद नै भीनमाल हुकम लिषीजीयौ कै तुं उठा सुं जांमनगर श्री जाडेचीजी सा रौ आंणौ करावण मुदे[3] चढ जावजे ।

---

1. प्रतिमाह के हिसाब से भरी जाने वाली रकम 2. अपील 3. जाडेची रानी को लिवा लाने हेतु

पोस सुद ६ तथा श्रीजी साहबां री असवारी छड़ी बगी च्यार घोड़ां री में विराजीया नै कुचांमण ठाकुर केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत सांमो बैठो नै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी घोड़ै असवार होय अगाड़ी, सु नागोरी दरवाजे होय महामींदर होय सूरां री सिकार कर सेषावतजी रै तळाव होय रातेनाडे होय जाळौरी दरवाजे होय आडे चोटे होय पाछा उभे बजार होय मांयलेवाग तथा राजमैलां दाषल हुवा । उठै कुचांमण रा ठाकुर सु बतळावण हुई ।

और राज सु धांन री निरष[1] साढी बारै सेर री बंधी जिण सु धांन री मीलगत[2] नहीं तरै अजंट साहब कवाय नै निरष मोकूब कराय दिवी सु दिन च्यारेक तो साढा दस सेर री मीलगत रही पछै फेर घटीयो सु गोहु '७।।, बाजरी '६ री हुई । अौ भाव जम गयौ सु मीलगत मोषळी[3] हुई ।

पोस सुद १३ अजंट साहब राजमैलां श्री हजूर में आया, घड़ीक ईकंत रया ।

संमत १९१७ रा माह वद २ अजंट साहब अमलो नै पंचायत वकील सारा मालांणी नै रवांनै हुवा, नै अजंट साहब री मीम आबूजी जावै तिण नु पोंछांवण[4] नु अेरणपुर री छावणी तांई जाय नै पछै उठा सु मालांणी में पंचायत सांमल हुसी सु आज अजंट साहब श्री हजूर में सीष करण नै आया । तरै सारा मुसायबां नै मौसर घड़ी दोय तथा तीन हुवौ ।

माह वद ५ श्री हजूर साहबां री असवारी घोड़ा फेरण नै प्रवात[5] रा पधारी सु दिन पोरे'क[6] चढीयां पाछी दाषल राजमैलां हुई ।

वद ६ तथा ७ श्री हजूर घोड़े असवार होय नागौरी दरवाजा रै मारग होय नाथपुर में पधार आसण[7] में विराजीया । नै उठै हीज मीठाई री छाबां मंगाय आप अरोगीया नै साथै था जिणां नु जिमाय उठा सु लाल सागर पधारीया । नै उठा सु सिकार पधार पाछा रात पौर दोढ गयां राजमैलां दाषल हुवा ।

---

1. अनाज की कीमत दर　2. उपलब्धता　3. पर्याप्त　4. पहुँचाने को　5. प्रभात
6. एक प्रहर के करीब　7. नाथजी का निवास स्थान

वद ६ वाभा मोतीसिंघजी री गोठ हुई सु वाग में उणां री हवेली में पधारीया ।

वद १० असवारी जनांना समेत लालसागर दाषल हुई । नाजर हरकरण री गोठ मुदे जिनस आदमी २०७ री तयारी हुई । रात रा उठै ही विराजीया, पछै दूजे दिन उठा सुं असवारी वाळसमंद हुई । सु दिन दोय सुं पाछा लालसागर पधारीया ।

और जाड़ेचीजी रौ कूच जांमनगर सुं जोधपुर आवण रा समाचार मालम हुवा ।

माह वद " (अमावस) मुकांम लालसागर ।

संमत १६१७ रा माह सुद १ रायपुर री हवेली री चोंतरीयां हेटली ओरड़ीयां[1] री छीणां उतार चोर माल ले गया, तिणरौ पतो लागो नहीं ।

माह सुद ४ वसवारी नाथपुर होय मांयलेवाग में वाभा मोतीसिंघजी रै गोठ अरोगण पधारीया । पछै सूर री सिकार पधार पाछा नाथपुर रा आसण में दाषल हुवा ।

सुद ८ पाछा मांयलेवाग दाषल हुवा । सुद ६ सुद १० मुकांम राजमैलां ।

माह सुद १३ संन राणीजी श्री जाड़ेचीजी पीहर जांमनगर सांवण सुद १ नै पधारीया था सु पाछा पधारीया सु जाळौरी दरवाजा बारै डेरा हुवा जठै दाषल हुवा सु कुल मास ७ दिन १२ लागा ।

नै गढ़ ऊपर तोपां रा तीर १० छूटा नै इतरी आसांमी डेरां तांई सांमा गया—दिवांण मु० मुकनचंद, म्हैतो विजैमल, सिं० कुसलराज, संमरथराज, पं० भीनालाल, कोटवाळ मुसरफ वगैरे गाजा बाजां सु वडवेड़ा कळस ले सांमेळो कीयो[2] नै जाडेचां रा भला आदमी जलेब में पाळा[3] था ।

और महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी संवत १६१० में जेठ वद ३ नै परणीजीया था । डोळो जांमनगर सुं जाळोर आयौ थो तिण री विगत तो

---

1. छोटी कोटरियें 2. स्वागत किया 3. पैदल

आगे संवत १९१० में मंडी है। नै जाळोर सुं कवरांणीजी पाछा पीर पधार गया था। कारण उमर वरस ५ तथा ६ में था जिण सुं जोधपुर पधारीया नहीं। सु हमार श्री जाड़ेचीजीसा श्री कवरांणीजीसा नै ही साथै लेता आया। सो कंवराणीजी नै दायजो जांमनगर वाळां इण मुजब दियो—

हाथी ७, घोड़ा २५, रथ सै जुता[1] १०, डावड़ीयां २५, गायां, भैंसीयां, सांढ़ीयां वगैरे नै गैणो, कपड़ो, उमदा पोसाषां वगैरे चोषा दिया। सु सांमेळो होय जाळोरी दरवजै मारग होय आडे चोटे हुय ऊभै सिरे बजार होय राजमैलां गाजां बाजां सुं दाषल हुवा, दोफार आसरे[2]। सु राजमैलां में पोर दोढ रया। पछै पाछा महाडोळ में विराज सिरे बजार होय फतैपोळ रै मारग होय नीमा सांम[3] रा गढ़ दाषल हुवा।

संमत १९१७ रा फागण वद ३ गीजगढ़ रा ठाकुर रौ छोटो भाई बादरसिंघ आयौ तिणनै मुजरो हुवौ, सु निजर निछरावळ कीवी। नै जीवणी ओळ[4] में बैठो नै देवळीया परतापगढ़ सुं वंडी सोभाचंद आयौ जिण नै मुजरो हुवौ।

और हरस माईदास गोरूराम षासी पेटी तालके चाकरी करै नै प्रत रूपीया च्यार-च्यार[5] री पावै तिणां चांदपोळ दरवाजा बारै मिंदर करायौ जिण री प्रतिसटा रौ समोरथो आज हुवौ। नै वद ५ ठाकुरजी विराजसी[6]।

वद ४ श्रीजी साहबां री असवारी नाथपुर पधारीया। दिन २ विराजीया नै वद ६ राजमैलां दाषल हुवा।

और दिवांण मुता मुकनचंद नागौरी दरवाजा बारै मिंदर करायौ तिणरी प्रतीसटा करावणी। तिण री जळजात्रा आपरी हवेली सुं तळाव पदमसर गाजां-बाजां सुं जाय रूपा रा कळस भर नागौरी दरवाजा बारै ले गया वद ५ नै।

वद ७ अजंट साहब श्री हजूर में तीजा पौर रा आया सु पेसवाई में दिवांण, बगसी वगैरे सदामंद मुजब गया।

---

1. बैलों सहित　2. मध्याह्न के करीब　3. ठीक संध्या के समय　4. दाहिनी पंक्ति
5. चार रुपये प्रति दिन　6. ठाकुरजी की मूर्ति की स्थापना होगी

और अठा सुं अजंट साहब माह वद २ नै चढ़ीया था सु अैरणपुर री छावणी हुय मालांणी में होय जैसलमेर गया। सु उठा रा कामेती गांव विजोराई तांई सांमा आया नै मुकत्यार ठाकुर केसरीसिंघजी गांव धनवे तक जैसलमेर सुं कोस ३ सांमा आया। नै रावळजी[1] पींडां[2] कोस १ सांमा आया। नै पछै मुलाषात अजंट साहब रा कैणा मुजब षुरसीयां री हुई। सु उठै दिन ३ रया। पछै उठा सूं पोकरण आया। सु पोकरण रा ठाकुर कोस दोढ़ तांई सांमा गया। पछै ठाकुर अमला समेत नै जाफत दीवी सु किला में जीमण नै गया। पछै उठा सुं डेरा गांव बाप हुवा नै उठा सुं फळौधी डेरा हुवा। नै उठा सुं पाछा बीकानेर जेसलमेर रै अडवी री जमी[3] है वरसलपुर कनै, जठै तळाई जैसलमेर वाळा षोदता था जिण ऊपर बीकानेर वाळां आय मनाई कीवी। तिण ऊपर झगड़ौ हुय जैसलमेर रा आदमी १७ मरण गया[4]। जिण जमी री तेतीक[5] करण नै गया, सु हाल तांई षोदणी मोकूब[6] राष आया। नै उठा सुं नागौर आया, सु चांतरा[7] में रया। दिन १ पछै उठा सुं मेड़ते गया। नै उठा सुं बोरूंदे, पींपाड़, विसलपुर होय जोधपुर आया, दिन ३५ सुं।

और मु० मुकनचंद रै मिंदर सांमी बछ रौ जीमण हुवौ सु सीरो षांड मण ३०) रौ हुवौ।

और फागण वद ८ श्रीजी साहब हथणी असवार हुय पाछला दिन रा सेषावतजी रै तळाव राईकैबाग हुय पाछा निमां सांम रा राजमैलां दाषल हुवा।

वद ११ मघरायजी रा दूजा लालजी श्री जवांनसिंघजी, श्री सरूपसिंघजी रै षोळै दीया, जिण रौ सरसतो हुवौ[8]। नै अजंट साहब आया सो घड़ी २ रया नै पाछा गया।

वद १३ सिवरात्री हुई नै अजंट साहब बीकानेर में नौकर डाकदर जोजव साहब जिण नै मुलाकात करांवण लाया। घड़ी च्यारेक रया। सिवरात्री रा उछ(व) सारू तायफा आया हा, जिणां रौ नाच हुवौ। पछै पाछा सूरसागर रात पोर गयां गयां, सारां नुं मोसर हुवौ।

---

1. जैसलमेर का राजा 2. स्वयं 2. तनाजे की जमीन 4. मारे गये 5. तहकीकात
6, स्थगित 7. कर वसूली का स्थान 8. रीति-नीति पूरी की गई

फागण वद १४ जोधपुर री अजंटी री वकीलायत मु० पूनमचंद मुकनचंदोत रै हुई। तागीरायत पीची उमेदकरण री। और अजंट साहब बड़ा साहब सु मिलण वासते बीकानेर वाळा डाकदर नै साथै ले नै चढीया। सिलका ११ छूटी।

और रास ठाकर परतापसिंघ भींवसिंघोत रै हुकमनांवां[1] रा रू० ४५,०००) पैंतालीस हजार ठैरीया। और कुचांमण ठाकुर केसरीसिंघ रणजीतसिंघोत रै हुकमनांवां रा रू० ६४.०००) चोसट हजार ठेहरीया। और बैद मुतो हिंदूमल रौ बेटो जसुतमल सिंघी सुषराज रो जवांई जिण नै मुजरो हुवौ नै दुपटो इनांयत हुवौ।

संमत १९१७ रा फागण सुद २ जांमनगर सु श्री राणीजी साथै उणी रा काका रा बेटा भाई जालमसिंघजी वगैरे आया जिणां नै मौसर हुवौ नै पलीतो निजर गुदरायौ[2] नै निजर नौछावर करी। नै जैपुर सु पलीवाळ सिवनारांयण आयौ जिण नै आसीरवाद हुवौ।

फागण सुद ६ वड़ो साहब पाली होय आबूजी जावै तिण री मनवार करण सारू अठा सु दीवांण मु० मुकनचंद, सिंघी समरथराज, मैतो विजैमल, मैतो हरजीवण चढीया सु पाली गया।

और राणीजी श्री लाडी राणावतजी रै महाराज कंवरा तिणां री जात सील[3] री कागै दीवी। सु लवाजमो सरसता मुजब सारो हौ नै डावड़ीयां रै वैठण नै रथ ४० चाली(स) हा।

और श्री श्री कवरांणीजीसा साथै दायजो जांमनगर सु आयौ सु आज राजम्हैलां में मांडीयौ[4] सु आम लोकां सारां ही देषीयो। हाथी घोड़ा वगैरे री विगत आई है नै गैणो कपडो बासण वगैरे अंदाजै नग १,००,०००) अेक लाष आसरै है।

फागण सुद १० जोसी हंसराज नै फौज में चढावण रौ दुपटौ हुवौ। सो परबतसर, मारोठ, सांभर री तरफ चढीयो।

---

1. पिता की मृत्यु के पश्चात् पुत्र की गद्दीनशीनी के आदेश   2. खलीता पेश किया
3. सीतला माता   4. प्रदर्शित किया

ग्रौर जैसलमेर रावळजी रा षलीता २ श्री हजूर में व्यास धनरूप जैसलमेर वाळां री मारफत ग्राया जिण रौ जाव[1] सोषीया[2] लिषीज व्यास परसोतम जैसलमेर वाळो धनरूप रौ गुमासतो जिण नै सूंपीजिया ।

फागण सुद १५ री छारोली[3] हुई सु कोटवाळ नारकरण नै हुकम फुरमाय षारीया ढावा रा पातसा नै राजमैलां बुलायौ नै तमासो निजर गुदराय रू० १२५) सवा सौ तों उछाळीया नै रू० १०) दस पातसा रै कनै मेलाया नै मोती, कड़ा, वगैरे रौ सिरपाव रौ हुकम फुरमायौ नै घड़ी २ तांई तमासो देष सोख दीवी । पछै मु० मुकनचंद सांमो ग्राय ग्रापरी हवेली ले गयो । रू० १०) दस तो नीजर कीया नै........भांग जंभेरी साथै था तिणां री मनवार करी । नै उठा सु सिंघी कुसलराज री हवेली गयौ, रू० ५) नीज़र कीया । उठा सुं पाछौ षारीयै ढावै गयौ । ग्रौर ग्रजंट साहव वड़ा बाहब सुं मिलण नै गया था सु पाछा ग्राय गया । नै छारंडो रौ उछव दोफार सुं ले नै सिंज्या तक देषीयौ नै पाछा सहर मांय सुं रात घड़ी ४ गयां सूरसागर गया ।

संमत १९१७ रा चैत वद २ ग्रजंट साहब री जाफत[4] री जीनस सुं कोठार सूं सूरसागर मीलीजी नै तायफा[5] वगैरे गया ।

चैत वद ३ श्रीजी साहबां री ग्रसवारी बाळसमंद होय जाळीये वेरे पधारी ।

वद ४ ग्रसवारी प्रभात रा जाळीया वेरा सुं राजमैलां दाषल हुई । नै तीजा पोर रा ग्रजंट साहब श्री हजूर में ग्राया तिणां रै सांमा सरसता मुजब पधारीया नै घड़ी दोयेक बतळावण होय सीष हुई ।

वद ७ सिं० समरथराज री हवेली ग्रजंट साहव री जाफत हुई । षांणो षायौ नै नाच-कूद वगैरे हुवा पौर दोय तांई रया नै मुसायब सारा गया ।

वद ८ सील रौ नै गुडला रौ मेळो सदामंद सरसते हुवौ ।

वद ९ रावराजा सिरदारमल री हवेली ग्रजंट साहब री जाफत हुई, सु दसतूर मुजब सारो कांम हुवौ ।

---

1. जबाब 2. सामान्य शिष्टाचार से पूर्ण 3. होली के बाद का दिन 4. गोठ
5. नाचने-गाने वाले

वद १० अजंट साहब री जाफत किलादार पंवार देवीसिंघ री हवेली हुई, दसतूर मूजब सारो कांम हुवौ ।

वद १२ अजंट साहब रौ कूच आबूजी कांनी हुवौ ।

वद १३ श्री हजूर साहबां री असवारी गढ़ दाषल हुई । नै श्री मंडलेश्वरजी[1] रौ मेळौ हुवौ । सु दिन २ मेळे जावै जिकां नै जोसी प्रभुलाल जीमावै । वद १३ तो लाफसी नै वद १४ सीरो, सु मेळो चोषो भरींजै ।

संमत १९१७ रा चैत सुद २ श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद दाषल हुई ।

सुद ३ श्री गवरमाता रौ मेळौ तळाब गुलाबसागर ऊपर सदामंद मुजब भरीजीयौ नै श्री महाराज कंवार मेळो देषण नै पधारीया ।

और पठांण सैबाजषां नै बडा साहब जारज लारन्स साहब मिलण नै बुलायौ थो सु गयां नै दिन ८ हुवा । नै ढोला रै गांव तांई साथै गयां री षबर लागी तरै वकीलायत रौ सिरोपाव रौ दुपटो नै बडा साहब रै नांवे षलितो लिषीज नै सोभावत उमेदकरण री मारफत सैबाजषां कनै पूगौ नै वकीलायत इनायत हुई । तागीरायत पं० जोरावरमल री ।

चैत सुद ८ श्री गवरां री बोळावणी रौ मेळौ बाळसमंद हुवौ नै सैर री गवरां नैं अेक-अेक रूपीयो श्री दरबार सुं दिरीजीयो ।

सुद १४ तथा १५ श्री महाराज कंवार री असवारी सिकार रै मुदै गांव वीसलपुर पधारी ।

और किलादार पंवार देवीसिंघ आज कायलांणे श्री हजूर नै गोठ दीवी सो उमराव, मुसदी, षवास, पासवांन वगैरे सारा जीमीया । नै श्री हजुर सुं किलादार नै हाथी नै मोतीयां री कंठी वगेरे निवाजस हुई ।

संमत १९१७ रा वैसाष वद १ श्री महाराज कंवार री असवारी गांव वीसलपुर सुं पाछो गढ़ दाषल हुई ।

---

1. यह देवस्थान जोधपुर शहर से उत्तर की ओर पहाड़ों में है

वद ५ कायलांणा रा भाषर में माळो[1] बंधीयो जठै श्री हजूर साहब पधारीया सु वद ६ नै नार री सिकार कर नै पाछा कायलांणे दाषल हुवा ।

वद १० प्रो० जसकरण री गोठ श्री हजूर में हुई नै जसकरण ने मंदील दुपटौ इनायत हुवौ ।

संमत १९१७ रा वैसाष सुद ३ आषातीज रौ उछव सदामंद मुजब बाळसमंद हुवौ ।

सुद १४ नरसिंघ चतुरदसी रौ मेळौ धांनमंडी में सदामंद मुजब हुवौ ।

और रायपुर री हवेली रै बारणै चांतरीयां तिणां रै निची तो तेषांना करावण नै ऊपर दलेचीयां कराय पोळ बधावण रो कमठो सरू कीयो । सु कोटवाळ नै षबर लागी तरै आदमी मेल बरजाया[2] सु मांनी नहीं । तरै कोटवाळ आदमी पचास मेलीया तरै रायपुर रै वकील कीलांणसिंघ आदमी सांवठा भेळाकर संब गया[3] तरै बाळसमंद श्री हजूर में मालम हुई तरै उठा सु दोढीदार मेल षेड़ विषराय दिवी । नै फुरमायौ—म्है निजर गुदराय न्याव में हुसी ज्यु कराय देसां तरै कमठो मोकुब रयौ ।

जेठ वद ६ असवारी किले दाषल हुई ।

वद ७ नै चोकेळाव रांणीसर में पधार नै कायलांणे पधारीया ।

वद ११ पटानवेस पं० धनरूप रांमसरण हुवौ जिणरै औसर ऊपर षरची रा रू० २,०००) दिरीजीया । नै भाई भीनालाल नै मोत्यां री कंठी दुपटौ इनायत हुवा ।

वद १२ मेड़ता री हाकमी सिंघवी कुसलराज रा पोता जसराज रै नांवे हुई, तागीरायत चांपावत सालमसिंघ रा बेटां री ।

संमत १९१७ रा जेठ सुद ६ गुर ईडर रौ वकील पं० चंदराज नै सिरपाव दसतूर मुजब हुवौ ।

सुद ६ सिं० सिवराज श्री हजूर में अषैराज रै तळाव गोठ दिवी ।

---

1. सिकार के लिये मचान 2. मना किया 3. सामना करने को सन्नद्ध हो गये

सुद ७ असवारी गढ़ दाषल हुई नै वरसगांठ रा उछव रौ समोरथो हुवौ।

सुद ८ जैसलमेर सूं व्यास करणीदांन सगपण रै मुदे आयौ, तिणनै नाजर हरकरण री मारफत षातरी फुरमाई कै तूं आयौ है जिण कांम रौ षुलासो वेगो ही हुय जावसी, जमां षातर राषजे[1]।

जेठ सुद १२ षबर आई कै सिरोई रा राव सिवसिंघजी रौ पाटवी कंवर तमंचो[2] षाय मर गयौ।

सुद १३ वरसगांठ रौ उछव सदामंद मुजव हुवौ नै दौलतषांना रा चौक में सिरे दरबार हुवौ नै जैसलमेर रा वकील नै आसरीवाद हुवौ, निजर निछरावळ हुई।

नै रात रा जनांनो दरबार हुयौ तिणमें निजर निछरावळ री मोरां ३३) नै रू० ८२५) हुवा।

जेठ सुद १५ आज मगरायजी रै वाभो[3] मूल नषत्र में हुवा।

संमत १६१७ रा असाढ़ वद १ जैसलमेर रा रावळजी सफेद कांदां रौ ऊँट भराय श्री हजूर में मेलीयो सु उठा रौ वकील व्यास करणीदांन नाजर हरकरण री मारफत निजर गुदराया।

वद ८ श्री महाराज कंवार रौ नांव ले उदैमींदर रौ कांमेती हरषचंद रौ बेटो जवारमल जिण रै घरै जाय उणनै धमकाय नै कचा[4] आदमी चेला माली गजारांम भाटी कलो सेषावत सूरो दोय तीन मिळ नै रुकौ रू० ३००) रौ लिषाय लियौ नै गैणो कांठलो नै माठी हेम[5] रा पैरण नै थो सु षोस लीया। तरै वो श्री हजूर में पुकार करी तरै कोटवाळ ऊपर पूरी तकरार हुई। तरै वे लुचा[6] आदमी भाग नै भादराजण री हवेली जाय बैठा। जिण ऊपर श्री हजूर सुं तकरार जादा हुई तरै कोटवाळ भादराजण री हवेली माय सु पकड़ लाय भागसी[7] में घाल दिया तोई गैणो नै रुकौ दियौ नहीं। तरै म्हैतो धनराज जवारमल रौ साळो अैमदनगर में महाराज कंवार कनै बंद........ रयौ थो सु........।

---

1. तसल्ली रखना 2. देशी पिस्तोल 3. लड़का 4. लोलुप 5. सोना 6. बदमाश 7. जेल

ओर चोटी वाळो[1] तारो तरफ उतराद नै बायुकुण[2] रै विजे ऊगो तिण री चोटी दिषणाद सांमी, चोटी लांबी मोषळी[3]।

ओर षबर आई कै नागौर रा गांव जायल तरणाउ मांय सु बारोठीया बंद पकड़ ले गया।

ओर सुणी वीकानेरी रौ लालौ किसोरीलाल वड़ा साहब कनै रेवै जिण ओक वींटी बड़ा साहब रा सिकतर नै दीवी सो सिकतर जाय बड़ा साहब नै दिषाई। तरै वड़ा साहब अंगरेजां रौ कोरट कर नै उणां री राह सु वीकानेर रा वकील नै मोकूब कर दियौ। नै दूजी आ सुणी कै कोटे महारावजी रौ षलीतो वकील री मारफत आयो। सु उकील पिंडां तो षलीतो देण नै गयौ नहीं नै चोपदार साथै मेलीयौ। सु बड़ो साहब नाराज हुय महारावजी नै लिषीयो—ये वकील हमारे पास रैणे लायक नहीं, तरै मोकुब कीयो, सुणायो।

असाढ़ वद " (अमावस) सुरजग्रिण[4] हुवौ, सु दोय घड़ी दिन चढ़ीयां आछो[5] हुय गयौ।

ओर जैसलमेर रौ वकील व्यास करणीदांन जिण नै नाजर हरकरण दिवांण मु० मुकनचंद, षीची उमेदकरण कयौ—कै श्री हजूर थांनै सिरोपाव रौ फुरमायौ है। तरै उण पाछौ कयौ—जिण कांम हुं आयो जिण रौ जाब लिषाय दिरावो तो हुं सिरपाव लेतो आछो दीसू[6] नै श्री दरबार री आछी लागै।

संमत १९१७ रा असाढ़ सुद १ तथा २ श्री दरबार सु सिरीमाळी विरांमणां नै सिरा रौ विरंमभोज दिरीजीयो नै असवारी कायलांणा सु तषतसागर हुई।

सुद ३ असवारी जाळीये वेरे पधारी नै सुद ४ कायलांणे पधारी। नै सुद ६ बाड़ीये पधारी।

सुद ८ असवारी जनांना समेत बाळसमंद पधारी।

सुद १३ तथा १४ दरीबे नांवा री हाकमी प्रो० जसकरण रा भाई सिवदांनमल रै हुई, तागीरायत भं० गणेसचंद री।

---

1. धूम्रकेतू 2. वायव्य कोण 3. काफी लम्बी 4. सूर्य ग्रहण 5. मुक्त 6. भला दीखूंगा

और सांढीयां रा कारषांना री दरोगाई भाट वागा रै हुई, तागीरायत धांधल पीरदांन री।

असाढ़ सुद १५ जैसलमेर रौ वकील व्यास करणीदांन नै अठै आयां नै मास ३ हुवा जिणनै सीष रौ सिरपाव दोढ़ी ऊपर दिरीजीयो—कड़ा १, मोती १, दुसालो १, पेचो कोरदार। मुकांम बाळसमंद नै षास रूका षलीतां रौ करणीदांन जाब मांगीयो तरै मुसाथबां कयौ कै षलीता रौ जाब तो हाल दोय रात जेज[1] सु मिळसी नै दिवांणी कागद व्यास धनरूप रै नांवे भलां ही लिषाय लेवो। तरै उणां कबूल कीयौ नै कागद इण मजमुन लिषीजीयौ—

"अपरंच षलोता षास रूका श्री रावळजी सा रा सगपण बाबत लाया सो आ बात अठै ही पण है सो हमें थे अेक बार अठै आवजो सु किताक समाचार कैणा है सो थां आयां सारी बात रौ षुलासो हुय जासी तथा समाचार कैण में आवसी।" इण मजमून रौ कागद ठाकुरां केसरीसिंघजी रै नांवे धनरूप नै मेलण रौ[2] नै कागद १ व्यास धनरूप रै नांवे लिषीज दोनू करणीदांन नै सूंपीजीया।

संवत् १९१८ का विवरण

संमत १९१८ रा सांवण वद २ अजंट निकसन साहब आबूजी सूं आया सो पेसवाई में दिवांण मु० मुकनचंद म्हैतो विजैमल, सिं० कुसलराज, समरथराज नै कुचांमण रा ठाकुर सदामंद मुजब गया नै तोपां रा तीर ११ छूटा।

वद ५ अजंट साहब श्री हजूर में बाळसमंद आया सु पेसवाई मुदे श्री हजूर साहब घाटी ऊपरली साळ तांई तांमजांम[3] में विराज पधारीया, उठै मुलाषात हुई। पछै मांय पधार घड़ी दोयेक इकंत बतळावण हुय सीष दीवी।

वद ८ तथा ९ अजंट साहब री जाफत[4] कायलांणे हुई नै नाच-कूद उछव वगैरे सदामंद मुजब हुवौ।

वद ११ श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद सू राजमैलां दाषल हुवा।

---

1. विलम्ब 2. भेजने हेतु 3. विशेष प्रकार की पालकी 4. गोठ

वद १४ राजमैलां सूं श्री हजूर साहब हाथी ऊपर विराज सूरसागर अजंट साहब सूं मुलाषात मुदे पधारीया। सो पेसवाई में अजंट साहब जोसीयां री बगेची रा भुरज तांई आया, सो उठै मुलाषात हुय पधार घड़ी दोयेक विराज पाछा पधारतां बगड़ी रा ठाकुर सिवनाथसिंघ केसरीसिंघोत री हवेली पधार मातमपोसी कराय राजमैलां दाषल हुवा।

सांवण सुद ३ अजंट साहव श्री हजूर में सीष कर दौरा में चढ़ीया।

सुद ११ श्री हजूर साहब महाराज कंवारां समेत चोपासणी हींडोरां[1] रा दरसण करण नै पधारीया। भेंट मोर १) नै रू० १०) श्री हजूर साहब कीया। नै बाकी दूजी भेटां रा रू० २७०) आसरे आया नै पाछा सैर में पधार कपतांन दरीयावसिंघ री हवेली मातमपोसी कराय श्री लालबाबा रै मिंदर दरसण कर राजमैलां दाषल हुवा।

और जोधपुर सु दिषणादी तरफ व्यास री सरे में बीजली पड़ी सु नाई जणो १ घायल हुवौ नै बळध[2] २ मरण गया।

संमत १९१८ रा भादवा वद १ राजमैलां रै वारणे दोढ़ी ऊपर चोकीदार बैठो थो सो मगरायजी रौ आदमी १ आयो, सु बरजतां[3] मांय जावण लागो तिण नै चौकीदार हाथ पकड़ नै बारै लीयौ सो उण तरवार मीयांन बारै काढ़ी तिण ऊपर बेदो[4] मोषळो हुवौ। तिण री मालम श्री हजूर में हुई। तरै फुरमायौ कै बरजतां आवे जिण नै सभा दो। आ षबर लागी तरै आदमी पेटी रै नोरै जाय बैठो। तरै कोटवाळ पेटी रै नोरै जाय उणनै पकड़ कूटतां-कूटतां लायं नै भागसी में घाल दीयौ।

वद ५ नागपांचम रौ मेळो चोषो हुवौ। नै उण दिन विरषा हुई सो मेळा री छिब चोषी आई।

वद ७ जैपर सुं पलीवाळ सिवनारांयण आयौ तिण नै राजमैलां में आसीरवाद हुवौ नै उण ऊभां ऊभां अरज करी नै जैपुर चढ़ण री सीष कीवी.।

वद ८ पलीवाळ सिवनारांयण री सोभावत उमेदकरण री हवेली जाफत हुई।

---

1. श्री कृष्ण के मन्दिर में हिंडोरे का उत्सव 2. बैल 3. मना करने पर भी 4. फिसाद

ग्रौर जैसलमेर सुं व्यास घनरूप वकीलायत में ग्रायौ तिण रै सांमे श्री हजूर सूं दोढ़ीदार सेरकरण नै विदीयासाल तांई मेलीयो सो ग्रा बात ग्राज तांई हुई नहीं। नै ग्राज सूं पेसवाई में जावण रौ नवो सरसरो हुवौ[1]। नै घनरूप रौ डेरौ ग्राहौर री हवेली में दिरीजीयो।

वद ११ जैपुर रौ वकील सिवप्रसाद घणा दिनां सुं ग्रठै थो जिण नै सीष रौ सिरपाव कड़ा, मोती वगैरे हुवा।

संमत १९१८ रा भादवा सुद २ रामदेवजी रा जातरू मेवाड़ माळवा वगैरे रा ग्राया तिणां नै षांड रा सीरा रौ जीमण श्री जाड़ेचीजीसा रै नोरै जिमाया। नै जिणा दीठ रू० २) श्री हजूर सूं दिरीयीया। पछै मसूरीये श्री राजदेवजी रा दरसण कर नै रांमदेवरा नै बहीर हुवा।

भादवा सुद ४ श्री गणेस चौथ रौ मेळौ रातेनाडे सदामंद मुजब हुवौ। नै सांड लड़ीया[2] तिण री फेट ग्रेक गांधी रै लागी सु घरै ग्राय रांमसरण हुय गयौ।

भादवा सुद ११ श्री ठाकुरजो री रेवाड़ीयां रौ उछव तळाव गुलाबसागर झुलण नै पधारीया तिणां रै भेट इण मुजब हुई—श्री ग्रानंदघनजी रै २) सैर री रेवाड़ीयां ४३ रै ४३) नै गुसांईजी श्री गिरधरलालजी श्री मदनमोवनजी रा मिंदर वाळां रै भेंट ५) नोछावर २) हुवा।

भादवा सुद १४ रांमदेवरा सु षबर ग्राई कै मेळौ सांवठो भरीजीयो, सु उठै हैजा रौ कारण हुय गयौ, सु ग्रादमी तो उठै ही ग्रेक दिन में मरण गया[3] नै बाकी मते-मते भागा सु रोग में ग्राया नै मारग में मरण गया। जिणां रै ग्रोषदां[4] नै दाग[5] देण सारू राज सूं रू० ७००) बंधाय नै कोचर मु० रिधमल नुं मेल नै दाग दिरायौ। नै मेळो सारो विषर गयौ।

सुद १५ उदैपुर सुं सिसोदियो ग्रषैसिंघ ग्रायौ तिण नै मुजरो हुवौ। नै जैपुर सुं पं० जेदैव ग्रायौ श्री बाईजीसा री राषी ले नै, तिण नै मुजरो हुवौ।

---

1. नई रीति निकली 2. सांड ग्रापस में भिड़े 3. लोग हैजे से मरे 4. ग्रौषधी 5. दाह-संस्कार

नै जैसलमेर सु वकील व्यास धनरूप रावलजी रौ षलीतो नै ठाकुर केसरीसिंघजी री अरजी नै घोड़ा दोय लायौ तिण नै आसरीवाद हुवौ मोर १) निजर कीवी नै निछरावळ रू० २) कीया। नै उणनै बैठण रौ कुरब हुवौ, नै षलीतो अरजी घोड़ा निजर गुदराया।

और रीयां रौ वकील अजबेसरांम भाट आयौ, तिणनै मुजरो हुवौ, नै षलीतो नीजर कीयौ।

और बगड़ी नै लांपोळाई रा ठाकुर नै मुजरो हुवौ।

और सयद अकबर अली व्याव कीयौ तिण नै सिरपाव पालषी १, कड़ा १, वागोलपा धोरांदार वगैरे हुवा।

और जांमनगर वाळा श्री हजूर में अरज कराई कै म्हारां बाईजी नै पटौ दिरावो[1] नहीं तो मे चढ़ जावसां[2]। ईऊ तरष वाय[3] नै डेरो बारै बषतसागर कनै कीयौ।

संमत १६१८ रा आसोज वद १ प्रथम जैसलमेर सु आंबां रौ ऊंट १ आयौ तिण में आंबा हजार अेक छाबां में घलाय नै घोड़ा २ पैला नीजर गुदराया तिके ले नै वकील व्यास धनरूप राजमैलां लाय नाजर हरकरण साथै अरज कराई। नै धनरूप दोढ़ी ऊपर हाजर रयौ तरै महाराज कंवार श्री परतापसिंघजी दोढ़ी ऊपर आय घोड़ा नै आंबां री छाबां मांय ले गया।

आसोज वद ३ आज काल सैर में कींक रोग चाळो है[4] तिण सु छब हो दरवाजां नै चारूं बारीयां रै बारणे सांयंती रौ होम राज सु हुवौ।

आसोज वद ४ कुचांमण रा ठाकुरां नै मोसर हुवौ नै इकत बतळावण हुई।

वद ५ जांमनगर रा जाड़ेचा जालमसिंघजी वगैरे सारा ही बिनां सीष चढ़ गया सु गांव मोगड़ै डेरा कीया तिणरी श्री हजूर में मालम हुई। तरै वद ६ नै उणां नै बुलावण नै कासीदां री जोड़ी मेली सु पींडां तो आया नहीं

1. हाथ-खर्च के लिये गांवों का पट्टा दे 2. विदा हो जावेंगे 3. उत्तेजित होकर
4. बीमारी चल रही है

नै उणां रौ भलो आदमी नागर मूलसंकर वद ७ नै आयौ नै जालमसिंघजी रा डेरा रोयठ हुवां री मालम हुई। तरै बुलावण नै धांधल पीरदांन नै चढ़ायौ सु पीरदांन वद ६ नै जालमसिंघजी वगैरे सारां नै ले नै आयौ सु उणा रौ डेरौ उदैमिंदर करायौ।

वद १० श्री हजूर री असवारी गढ़ दाषल हुई।

वद ११ जांमनगर वाळां नै सीष रौ सिरपाव दसतूर मुजब हुवौ।

वद १३ श्रीजी दुवार सु गुसांईजी महाराज श्री गिरधरलालजी महाराज रै श्री लालजी प्रगट हुवा, तिणरी बधाई रौ पत्र ले नै मुषीयो घणसांम आयौ, तिण नै आसीरवाद हुवौ।

संमत १६१८ रा आसोज सुद १ जैपुर रौ उमराव रावळ सिवसिंघ वेरीसालोत रांमसरण हुवौ जिणरी षबर आई। नै साथरवाड़ो कुचांमण री हवेली हुवौ।

सुद ४ जैसलमेर रौ वकील व्यास धनरूप रै डेरै मिजमांनी री मिठाई री छाबां नै रूपीया १००) रोकड़ दसतूर मुजब दोढ़ीदार साथै मेलीया नै घोड़ा २ निजर आया तिणां साथै सांणी[1] चरवादार था तिणां नै कड़ा मोलिया दिरीजीया।

आसोज सुद ६ श्री चांवंडा माताजी रै भेंसो लहे हुवै[2] सु श्री महाराज कंवार पधारीया पछै ले हुवौ नै तोपां रा तीर ३२ छूटा।

और श्री बालकिसनजी रै मींदर वाळा गुसांईजी श्री ब्रिजनाथजी महाराज जांमनगर सुं पधारीया सु सैर में हाथी रै हौदे विराज पधारीया। लारै कुचांमण रा ठाकुर केसरीसिंघजी छंवर करण नै भाव सुं[3] बैठा।

आसोज सुद १० नै श्री हजूर साहब काच रे षासा में विराज जलूस सुं रांवण मारण नै पधारीया। नै मुढा आगे श्री महाराज कंवार घोड़ा हाथीयां ऊपर विराजीया नै श्री गुसांईजी महाराज रा दोय सरूप साथै सु फतैपोळ सुं

---

1. साहनी, घोड़ों की देखरेख करने वाला 2. भैंसे की बलि दी जाना 3. भक्ति भाव के साथ

लगाय नै जाळौरी दरवाजा तांई पांणी रौ छिड़काव हुवौ नै सदामंद मुजब सारो कांम हुवौ नै गढ़ री तोपां रा तीर १२० छूटा नै श्री हजूर रा फुरमावण सु' जैसलमेर रौ. वकील व्यास धनरूप ही मेळा में आपरा घोड़ा वेली साथै था तिणां नै ले नै आयौ।

आसोज सुद १५ सरद रो उछव[1] जनांना में नवी जायगा पड़कोटो गढ़ ऊपर भीली जठै हुवौ सु बादळो कटीयो।

संमत १६१८ रा काती वद २ जोधपुर री कोटवाळी रौ कांम पंवार नारकरण करतो थो तिण नै आज कोटवाळी नांवे परनांवे हुई।

वद ३ जावतो गढ़ में श्री चांवंडा माताजी सु' लगाय लवा-पोळ[2] तांई हुवौ नै श्रीजी साहब जनांना में होय आतमारांमजी री समाद री दोढ़ी रै मारग होय षजांने पधार जवारषांनो ने जरझरषांनों निजर गुदराय पाछा सुरजपोळ रै मारग मैलां दाषल हुवा।

काती वद ४ षबर आई कै आसोप बारोठीयां आय नै लु'टीयो। सु मांय थांणायत हा जिणां झगड़ौ कीयौ पिण वे तो ऊटां में माल सांवठो[3] घाल ले गया। पछै बार सिं० रतनराज नै अठा सु' चढायो।

काती वद ६ षबर आई कै आसोप लूट बारोठीया गया तिणां लारै परबतसर सु' जोसी हंसराज चढीयो नै नागौर रौ हाकम पिण चढीयो सु वीकानेर रै कांकड़ ऊपर नागौर रौ गांव चाऊ जठै जाय पूगा। सु बारोठीया संभ गया[4]। सु झगड़ौ हुवौ जिणमें ठावा आदमी दोय........मरण गया। नै बारोठीयां रौ ही अेक दौय ठावो आदमी मरण गयौ नै बाकी आदमी दस-पांच मरीया तथा घायल हुवा। नै बारोठीया माल सारो ले षेरषेरां[5] वीकानेरी में होय परा गया। नै सिं० रतनराज रै साथै घोड़ा १५० था सु देसणोक तांई जाय नै पाछौ आयौ।

काती वद ८ बडा साहब आबूजी सु' अठै होय अजमेर जावसी सु सरभरा करावण वासते दिवांणां री तरफ सु' पं० सिवदास नवलविहारी रौ गयौ।

---

1. शरद् पूर्णिमा का उत्सव 2. लोहा प्रोल 3. बहुतसा 4. सामना करने को तैयार हो गये 5. यों के यों

काती वद ६ कोटा सु तुंवर परतापसिंघ आयौ तिण रौ डेरौ महामींदर हुवौ।

काती वद " (अमावस) दोवाळी रौ उछव नैं दरबार सदामंद मुजब हुवौ।

और अजंट साहब रात पोर गयां आबूजी सु आया तिणां रै सांमा पेसवाई में मुसायब दसतूर मुजब गया नै तोपां रा तीर ११ छूटा।

काती सुद ४ अजंट साहब किले श्री हजूर में आया सु घड़ी दोयेक इंकत रया।

और जैसलमेर रा वकील व्यास धनरूप नै वुलाय नै षातर फुरमाई नै फुरमायौ थनै सीष वेगीज हुसो। तरै सिं० समरथराज नै बोची उमेदकरण अरज कोवी कै धनरूप नै इण रौ बाप मीठालाल बड़ा साहब रा दफतर में नौकर हा तरै आंपणा राज री सुभचिंतकी में पूरा रया, तरै फुरमायौ— मालम है।

काती सुद ७ श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर मुलाषात मुदे पधारी। नै अजंट साहब सांमो जोसीयां री बगेची तांई पेसवाई में आया। पछै सूरसागर पधार घड़ी दोयेक विराज पाछा गढ़ दाषल हुवा।

और कुचांमण ठाकरां नै घर री सीष हुई नै सिरपाव इण मुजब हुवौ—हाथी १, पालषी १, कड़ा १, मोती १, मोतीयां री कंठी १, सिरपेच १, वागो १, मंदील १, दुपटो १। नै कांमेतीयां नु कड़ा, मोती, दुसालो नै पटो ठाकुर रै नांवे लीषोजीयो।

और जैसलमेर रा वकील नै याद फुरमाय नै फुरमायौ कै आहोर री हवेली में थारै डेरा री अड़चल है सु तु मांयलावाग में मोषली जायगावां है सु थारै दाय आवे[1] जठै डेरो कर ले। नै तु कांम आयो सु तो वेगो[2] हुय जावसी पिण थनै सीष तो मोड़ी हुसी। तरै उण पाछी अरज करी कै मनै तो रावलजी सा रौ औ हुकम है कै श्री महाराज साहब रजावंदी सु फुरमावे ज्यु कीजै। सु हुं तो हुकम मुजब हाजर हूं।

---

1. पसन्द आवे 2. शीघ्र

ग्रौर काती सुद ११ बड़ा साहब ग्राबूजी सु ं ग्रावै तिणां रै सांमा मुसायब गांव रोयट तांई गया। दिवांण मु० मुकनचंद, म्हैतो विजैमल, सिं० कुसलराज ग्रै रोयठ पूगां पछै साहब ग्राया सु गांव सूं कोसां तांई सांमा गया नै डेरा साहब रा रोयठ हुवा।

ग्रौर श्री बालकीसनजी रा मिंदर रा गुसांईजी श्री ब्रिजनाथजी महाराज री पधरावणी[1] गढ़ ऊपर हुई नै सारा ही भेट रा रू० ५००) ग्रासरे ग्राया नै श्री गुसांईजी महाराज श्री मुरलीमनोहरजी रा दरसण कीया, ग्रारती कीवी।

ग्रौर श्रो हजूर साहब जनांना समेत श्री मुरलीमनो(ह)रजी रा दरसंण नै पधारीया। नै भेंट रा रू० ७०) ग्रासरे हुवा।

काती सुद १३ बड़ा साहब ग्राया, तिणां रै सांमा श्री हजूर साहब रातानाडा सु ं पांवडा २०० पैली तरफ तांई पधारीया। हाथी रै हौदे विराजीया नै षवासी में ग्राहोर रा ठाकूर जसवंतसिंघ सगतीदांनोत बैठा नै साहब ही हाथी ऊपर बैठो। सु हाथीयां चढीयां मुलाषात हुई, टोपी रै हाथ लगायो पछै बरोबर हाथी राष बातां करतां सोझतीये दरवाजा में होय तबेला री गळी कना सु ं साहब तो सूरसागर गयौ नै श्री हजूर साहब गोळ री घाटी रै मारग हुय गढ़ दाषल हुवा। नै तोपां रा तीर १३ साहब रा नै दोय श्री हजूर साहब रा छूटा। पाछला दिन रा बड़ा साहब नै सिकतर ३ नै ग्रजंट साहब गढ़ ऊपर ग्राया सो दूजो दसतूर तो सारो सदामंद मुजब हुवौ नै षुरसीयां री मुलाषात सवाय में हुई। घड़ी दोय तांई बातां कर सीष कर पाछा सूरसागर गया।

ग्रौर ग्रजंट साहब री तरफ सु ं बड़ा साहब री जाफत हुई नै जिनस कोठार सु ं गई। नै मुसायब सारा सूरसागर गया, नै ग्रातसबाजो, नै पातरीयां भगतणीयां रा तायफा चांतरा सु ं गया। नै श्री गुसांइजी ब्रिजनाथजी महाराज री पधरावणी रांणीजी श्री जाड़ेचीजी सा रै नोरै हुई। भेट रा रू० ८००) ग्रासरे ग्राया नै श्री कंवरांणीजी रै नोरै पधरावणी हुई सु भेट रा रू० ४००) ग्राया।

---

1. ग्रावभगत

काती सुद १४ बड़ा साहब अजंट साहब नै सीकतर वगैरे जणा ३ गढ़ ऊपर आया। सु षुरसीयां ऊपर बैठण री मुलाषात हुई। घंटो १ इकंत रया पछै पाछा सूरसागर गया। पछै उणीज दिन पाछला दिन रा श्री हजूर साहब सूरसागर पधारीया सु सिकतर सांमो सदामंद मुजब आयौ नै बड़ो साहब नै अजंट साहब पेसवाई में सांमा जोसीयां री बगेची रा भुरज तांई आया। उठै मुलाषात हुय साथै-साथै सूरसागर पधार घंटोक विराज, पाछा रात घड़ी दोय गयां गढ़ दाषल हुवा।

सुद १५ बड़ा साहब अठा सुं चढीया।

संमत १९१८ रा मिगसर वद २ गुसांईजी श्री ब्रिजनाथजी महाराज री पधरावणी म्हैता हरजीवण री हवेली हुई। भेट रा रू० २७०) आसरे आया। पछै सिं० समरथराज री हवेली पधरावणी हुई सु रू० ३००) भेंट रा आया।

और अजंट साहब मीम नै डीसा[1] तांई पोंछावण जावण मुदे गढ़ ऊपर श्री हजूर में आया सीष करण मुदे, सुं सीष कर वद ३ नै परबात[2] रा चढ़ीया।

मिगसर वद ६ उदैपुर रा रांणाजी सरूपसिंघजी काती सुद १४ देवलोक हुवा। नै पड़दायत अेजनरायजी म्हैता गोपालदास री वैन सु लारै सत कीयौ नै रूपीया दस लाष पुन्य कीया। नै रांणीजो जीवतां थकां वागोर महाराज सेरसिंघजी जिणां रा बेटा सादूळसिंघजी जिणां रै नै म्हेता रांमसिंघ रै मेळ हौ सु रांमसिंघ नै कैद कर नै धन षोस नै गादी विराजीया, जद ही मुलक बारै काढ़ दियौ। नै सादूळसिंघजी नै कैद कर हमांम में उतार जीया मार नांषीया[3]। जिणां रा बेटा सिंभुसिंघजी वीकानेर महाराज लालसिंघजी रा भांणेज जिणां नै जीवतां ही षोळे ले कंवरपदा रौ, कुरब बषस दियौ सु उदैपुर गादी बैठा तिण री श्री हजूर में मालम हुई तरै पूरो अबसोच[4] कीयो नै नौबत वगैरे बंद हूण रौ सदामंद मुजब दसतूर हुवौ।

मिगसर वद ९ श्रीजी साहब सिरे दरबार कियो जिणमें सिरदारों री आसांमीयां दोय कुचांमण नै आहौर नै दीवांण वगैरे मातर[5] मुतसदी हाजर था

---

1. डीसा—अंग्रेजों की छावणी   2. प्रभात   3. जान से मार डाला   4. अफसोस
5. समस्त

नै जेसलमेर रौ वकील व्यास धनरूप नै रीयां रौ वकील राव महापात्र असवेसरांम इणां नै पिण याद फुरमाय षातरी फुरमाई।

मिगसर वद ११ श्री हजूर साहब वेतरणी दीवी[1] माल गैणो वगैरे रू० ७००) दिरीजीयो।

मिगसर वद १२ श्री हजूर साहब ठाकुरजी श्री गंगसांमजी रै मिंदर दरसण नै पधारीया, भेंट निछरावळ कीवी नै पछै श्री बालकिसनजी रै मिंदर दरसण नै पधारता था सु दरसणां री जेज थी[2]। तरै तळेटी रै मैलां में विराजीया पछै दरसण षुलीया तरै दरसण कर फतैपोळ रै मारग किले दाषल हुवा।

संमत १९१८ रा मिगसर सुद २ श्री हजूर साहबां री असवारी प्रभात रा रावटी हुय छैलवाग पधार वाळसमंद दाषल हुवा।

सुद ४ राईकावाग री दरोगाई तुंवर सांवतसिंघ रै हुई नै छैलवाग री दरोगाई म्हैता छत्रमल रै हुई।

मिगसर सुद ६ गुसांई उदेपुरीजी रै लारै भंडारो[3] राज सुं हुवौ। सु षांड मण ३००) गळी, हसते जोसी प्रभुलाल रै।

सुद ७ श्री हजूर साहबां री असवारी बिजोळाई हुइ नै मुसाया नै हुकम कायलांणां रौ हुवौ।

मिगसर वद १२ श्रीजी री असवारी कायलांणै दाषल हुई।

मिगसर सुद १५ कायलांणा सुं असवारी मीठीनाडी पधारी।

संमत १९१८ रा पोस वद २ असवारी मीठीनाडी सुं कायलांणे दाषल हुई।

पोस वद ४ कायलांणा सुं असवारी मीठीनाडी पधार नै गांव बड़ली रा तळाव पधारीया नै उठा सुं चोषां पधारीया नै चोषां सु वद ६ कायलांणे दाषल हुवा।

---

1. वेतरणी का पुण्य 2. विलम्ब था 3. मृत्यु-भोज

पोस वद ७ बिलायत सु साहब लोक जणा ३ जमी नापण नै आवै तिणां री सरभरा करावण नें नै कनै रैण मुदे मुनसी पं० हीरालाल पं० लालो हरदेवसिंघ, पींडत अज्योधाप्रसाद पींडत सिवनारांयण रौ बैनोई नै अठा सु चढाया ।

पोस वद ८ आज अंगरेजां रौ बड़ो दिन है दिसंबर री तारीष २५ मी रौ ।

पोस वद १४ जैसलमेर वीकानेर वाळां रै सरहद रौ भौड़[1] है तिण रौ फैसलो करण मुदे कपतांन मेलटीन साहब जावै सु आज अठै सूरसागर उतरीया ।

संमत १९१८ रा पोस सुद १४ अजंट निकसन साहब मीम नै पोंछावण नै डीसा तांई गया सु डीसे जावतां मीम बेमार हुय़ मर गई, सु आज पाछा आया ।

संमत १९१८ रा माह वद ३ श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर मीम री मातमपोसी करावण मुदे पधारीया सु उठै घड़ीक विराज पछै छैलवाग दाषल हुवा ।

माह वद ५ अजंट निकसन साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया सु श्री हजूर साहब बाळसमंद री घाटी ऊपरली साळ तांई सांमा पधारीया । पछै पाछा पधार नै दोढ़ो मुढ़ा आगै[2] दौलतषांना री साळ मुढ़ा आगे विछायत हुई, जठै षुरसीयां ऊपर विराजीया सु घड़ी च्यारेक इकंत बातां कीवी ।

माह वद ७ गुसांईजो श्री कृष्णजीवणजी महाराज रै श्री बेटीजी रौ व्याव हुवौ तरै श्री महाराज कंवार रो असवारी चोपासणी पधारी । भेंट रू० २००) हुवा ।

माह वद ९ श्री हजूर साहबां री असवारी राजमैलां दाषल हुई, घड़ी २ रै तड़के ।

---

1. मतभेद, तकाजा   2. ड्योढ़ी के सामने

माह वद १२ पोकरण ठाकुर वभूतसिंघ सालमसिंघोत, चांमू ठाकुर लिछमणसिंघ कीसनसिंघोत जैपुर रौ उमराव चल गयौ,[1] जिण री कांण करावण[2] मुदे उठो जावे सु डेरौ महामींदर कीयौ।

श्रौर विकटुरीया अंगरेजां री विलायत री नै हीदसथांन री मालक तिण रौ घर रौ धणी[3] मर गयौ तिणरी षबर कलकते पांछी तिणरी मातमी री तोपां रा तीर १०८ छूटा री षबर अठै आज आई।

माह वद १३ अजंट निकसन साहब श्री हजूर में आया सु षुरसीयां ऊपर वैठा नै नागौर डीडवांणे होय अजमेर जावण री सीष कीवी।

संमत १९१८ रा माह सुद ४ प्रथम श्री महाराज कंवार श्री वालकीसनजी रै मींदर दरसण करण नै, नै गुसांईजी श्री ब्रिजनाथजी महाराज रा दरसण करण नै पधारीया।

माह सुद ४ दुतीक पोकरण रा ठाकुर महामींदर रा डेरां सु सैर में रांणावत गंभीरसिंघ री हवेली कांण कराय पाछा डेरां गया।

सुद ५ श्री हजूर साहव पोकरण ठाकुरां नै याद फुरमाय तळाव गुलाबसागर रा बचा में विछायत साईवान तणाय[4] सिरे दरबार हुवौ सु जीवणी मिसल में तो पोकरण ठाकुर बैठा नै डावी मिसल में श्री महाराज कंवार बैठा।

माह सुद ६ श्री महाराज कंवार जोरावरसिंघजी री सालगीरै[5] रौ उछव गढ़ ऊपर सदामंद मुजब हुवौ। सु श्री हजूर साहब गढ़ ऊपर पधारीया नै पाछा रात दोढ़ पोर गयां पछै राजमैलां दाषल हुवा।

श्रौर पोकरण ठाकुर श्री हजूर में आया सु राजमैलां में ही रसोवड़ा सु थाळ गयौ सु जीमीया। पछै घड़ी ४ इकत मौसर हुवौ, पछै सीष कर पाछा डेरां गया। नै सुद ७ नै जेपुर कांनी चढ़ गया।

माद सुद ८ व्यास चौथमल गुमांनीरामोत दूजो व्याव करै जिण नै कड़ा, मोती हुवा।

1. मृत्यु हो गई 2. शोक प्रकट करने की रश्म 3. पति 4. विशेष प्रकार का तम्बू खड़ा किया गया 5. वर्ष गांठ

सुद १० श्री हजूर में गोठ दफतर रौ दरोगो भं० बादरमल दीवी जिनस रसोवड़ै मेली नै श्री हजूर सूं भं० बादरमल नै मोतीयां री कंठी, दुपटौ नै छड़ी हुई। नै छोटा भाई पचांणदास नै कड़ा, मोती हुवा।

माह सुद १३ कछ भुज सु झरनैल साहब[1] आया, सु सूरसागर उतरीया, तिणां री मुलाषात मुदे मु० समरथमल गयौ। नै डाली री जिनस मेलीजी।

सुद १४ कायलांणा रा भाषरां में अेक मांचीयो भाषर बाजै तिणरौ नांव तषतगढ़ दिरीजीयौ। तिण ऊपर बुरजां वगैरे किलो करावण रौ हुकम हुवौ, जिण री नींव रौ आज पायो भरीजीयो।

संमत १९१८ रा फागण वद ३ श्रीजी साहबां री असवारी राजमैलां सु बाळसमंद दाषल हुई।

वद ४ बाळसमंद सुं असवारी केवड़ा री गाळ में माळो बंदियो[2] जठै पधारीया। सु माळे विराज नार री सीकार कीवी, पछै उठा सूं असवारी बिजोळाई दाषल हुई।

अौर विकटुरीया रौ षांवद मरीयां री षबर तो पैली आय गई थी पिण आज अजंट निकसन साहब रा कैणा सूं गढ़ ऊपरली तोपां रा तीर ४० छूटा।

फागण वद १० बड़ा साहब आबूजी जावे तिणां री मनवार करण मुदे मुसायब पाली तांई गया।

फागण सुद १ अजंट निकसन साहब आया तिणां री पेसवाई में सामां मुसायब सरसता मुजब[3] गया।

सुद ८ श्री हजूर साहब री असवारी बाळसमंद दाषल हुई।

सुद ९ अजंट निकसन साहब बाळसमंद श्री हजूर में आया। घड़ी ४ इकंत रया।

फागण सुद १४ होळी रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ।

संमत १९१८ रा चैत वद १ अजंट साहब आबूजी कांनी चढ़ीया।

---

1. जनरल 2. शिकार के लिये मचान बांधा गया 3. रीति के अनुसार

वद ६ श्री हजूर साहबां री असवारी चोकेळाव रै बाग दाषल हुई।

चैत वद ८ सील रौ नै गुडला रौ मेळो सदामंद मुजब हुवौ नै श्री हजूर साहबां री असवारी जनांना समेत मेळो देषण नै तळेटी रा मैलां पधारीया, सु मेळो निजर गुदराय पाछा रात रा चोकेळाव रै बाग दाषल हुवा।

संमत १९१८ रा चैत सुद ३ श्री गवरमाता रौ मेळो तळाव गुलाबसागर ऊपर हुवौ नै मेळो देषण नै श्री महाराजकंवार पधारीया।

और आबूजी सूं षबर आई कै वड़ा साहब मंगळवार रै दरबार में कही कै गवरनर जरनल लाठ साहब लारड केनींग की तो वदळी हुई सु बिलायत जायगा, अर उस ओदा ऊपर लारड अेलजिन[1] साहब आवेंगे। अर मंमोई के लाठ की वदळी हुई जिसकी अेवज सिंध का कमसनर निपीरियन मुकर हुवा।

और हींदसथांन के काळे लोक[2] हमारी बिलायत में बोत से गये हैं, फेर जाते हैं।[3]

सुद ८ मुकांम चोकेळाव श्री गवर माता री बोळावणी मांयलाबाग में सदामंद मुजब हुई।

चैत सुद १४ श्री महाराजकंवार सिकार रै मुदे गांव विसलपुर पधारीया सु पाछा वैसाष वद १ नै पधारीया।

संमत १९१८ रा वैसाष वद ४ श्रीजी साहबां री असवारी राजमैलां दाषल हुई।

वैसाष वद १३ महामींदर सूं श्री लिषमीनाथजी री वहू गढ़ ऊपर गया सु श्री मांजी साहबां री नै श्री रांणीयां री तरफ सूं भेंट पैरावणी हुसी जिण मुदे गया।

वैसाष वद १५ (अमावस) प्रभात रा असवारी गढ़ दाषल हुई।

संमत १९१८ रा वैसाष सुद १ दुतीक बुध गांव कांकाणी रौ ठाकुर गोरधनसिंघ रांमसरण हुवौ तिणरै लारै ठाकुरांणी सती हुई, तिण मुदे गांव तो

---

1. लार्ड एलगिन 2. भारतवासी 3. और भी लोग जा रहे हैं

जबत हुवौ नै सती रा दाग देवरा में था तिरा में ठावा-ठावा ग्राठ दस ग्रादमीयां नै पकड़ लाय चांतरे भागसी में घाल दिया ।[1]

वैसाष सुद ३ सुकर नै ग्राषा तीज रौ सरवाले दरबार दौलतषांना में हुवौ । घरणी वार तांई श्री महाराज कंवार नै मुसदी वगैरे सारा हाजर में था, उछव सदामंद मुजब हुवौ ।

सुद ४ सिव री हाकमी पटानवेस पं. नांनमल रै हुई, तागीरायत व्यास चौथमल री ।

वैसाष सुद १० रांरणीजी श्री जाड़ेचीजी सा तळाव बषतसागर री मरमत करावरण मुदे श्रीहजूर में ग्ररज कर मुसायवां नै, नै गजधरां नै निगे नै तकमीनो[2] करावरण नै मेलीया ।

सुद १२ पोकररण ठाकुर सांमोद चांमू कांरण करावरण नै गया था सु ग्राज पाछा ग्राया ।

सुद १३ तथा १४ ग्राबूजी सूं षबर वकीलां री ग्राई कै बड़े साहब मंगलवार रा दरबार में लाठ साहब रौ हुकम सुरणायौ कै ग्राज तांई राजा का इंतकाळ होता ग्रर उसके ग्रौलाद न होती तो हमारे तांई ईतला कर हमारी मंजूरी से गोद बैठता सो ग्रब ग्रपरणे हकदार होय जिसकूं गादी बैठाय देवो । हमारे तांई ईतला देणे की कुछ जरूर नहीं ।

ग्रौर रायपुर, रास, निबाज वगैरे रा वकीलां जाय वड़ा साहब नैं कही कै हमारा गांव नाहक जबत कर रषा है, जिरण ऊपर पाछौ कयौ कै महाराज साहब कुं कहौ । ग्रौर बड़े सारा वकीलां सुरणतां जोधपुर रा वकील नै कही कै वागी लोगां नै जिस-जिस ईलाका में बेस कर[3] तुमारा मुलक लूटा है जिसकी मिसल तुम तयार कर ग्रर माल की साबूती करो सो वो बैठे हैं जिनके पास दिराया जायगा ।[4]

जेठ वद १५ (ग्रमावस) पोकररण ठाकुरां नै मुजरो हुवौ । नै घड़ी ४ इकंत रया, पछै सीष री ग्ररज कीवी, तरे फुरमायौ— वरसगांठ पछै सीष देसां ।

---

1. सती करने में सहायक लोगों को जेल में डाल दिया 2. ग्रनुमानित खर्च 3. ठहर कर 4. डाकू लोग जिनके पास ठहरे हैं उन लोगों से हरजाना दिलाया जाएगा

ग्रौर जालौर री हाकमो म्हैता विजैमल तालके हुई, तागीरायत मु. पुनमचंद मुकनचंदोत री ।

संमत १६१८ रा जेठ सुद ५ श्रीजी साहबां री वरस-गांठ रौ समोरथो सदामंद मुजब हुवौ ।

सुद ६ श्री केसरकंवर बाई रौ सगपरा[1] जैपुर हुवौ, तिरा रौ टीको ले नै जोसी हंसराज चढीयो ।

सुद १३ श्री हजूर सायबां री वरस-गांठ रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ नै सिरे दरबार हुवौ । नै तोपां रा तीर ४३ वरसां मुजब छूटा ।

जेठ सुद १५ उदैपुर ईलाका रा बागोर रा महाराज सेरसिंघजी रा बेटा महारांणा सरूपसिंघजी रा राज में रीसाय नै[2] बिकानेर परा गया था सो हमें पाछा उदैपुर जावे सु श्री हजूर में मुजरो मालम करायो सु पाछौ मुजरो मालम हुवां रौ नाजर हरकरण उणां रा चोपदार नै कयौ । नै उणां रै डेरै घास. चारो मुगधणो[3] नै माटी रा वासण, मेषां वगैरे री सरभरा मेलीजी ।

वद ५ सीवांणा री हाकमी जबत हुई ।

संमत १६१८ रा ग्रसाढ़ वद ८ डीडवांणा री हाकमी कोटवाळी रसालदार मुनालाल रै हुई, तागीरायत भण्डारी घेवरचंद री ।

ग्रसाढ़ वद १० पोकरण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ । घड़ी ४ इकंत रया ।

सुद २ गांव गांगांणी षीची उमेदकरण रै पटै सु नदी जोतरी रौ बंदो बांद पांणी रोकीयो । सु गांव लोरडी ले नै सालावास नदवांण तांई गांव चालीस वाळां रै उमेदकरण सु झगड़ौ हुवौ तिरा बाबत श्री हजूर सु जोसी परभुलाल, म्हैतो विजैमल नै दिवांण रौ भाई समरथमल इंणां नै ईनसाव वासते[4] मेलीया । सु सफाई कराय राजीनूंवो[5] दुतरफो कराय दियौ ।

सुद ५ महाराज कंवार श्री जोरावरसिंघजी री कंवरांणीजी रै ग्रासा सु ग्रगरणी रौ उछव सदामंद मुजब हुवौ । नै विरषा चोषी हुई नै तळावां में पांणी मोषळो ग्रायौ ।

---

1. सगाई 2. नाराज होकर 3. जलाने हेतु लकड़ी 4. फैंसला करने हेतु 5. राजीनामा

सुद ७ श्रीजी साहवां री असवारी मीठी नाडी वगैरे बाळसमंद होय सुद १२ राजमैलां दाषल हुवा।

असाढ़ सुद १३ जोसी हंसराज रा जैपुर सु कागद आया जिण में लिखियो कै हुं सुद ६ पांथो, दसतूर मुजब मुसायब नै ताजीम रा उमराव हाथीयां चढनै पेसवाई में आया सु पाछा सिरे बजार होय आंपणा उमराव नै हुं हाथीयां बैठा चंवर करावता थका गया नै उणही दिन महाराज श्री रांमसिंघजी दरबार कर टीको झाल लीयो[2] नै आंपणा उमराव नै हुं बैठा जठी री मिसल पाली कर दिवी।

और मुसलमांनां रा ताजीया आज निसरीया सु ताजीया दीठ रू. ५) दिरीजीया।

असाढ़ सुद १४ फौजदारी अदालत भं. पचांणदास नै सांदू नाथूदांन रै हुई, तागीरायत म्हैता हरजीवण नै पं. भीनालाल री।

और कंवरांणीजी रै अगरणी रा उछव री सादां रोजीना गढ़ ऊपर आवे।

और संवत १९११ सु लगाय आज तांई दिवांणी कांम मेरजु दफतर किले लिषीजतो थो सु मोकुब रयौ।

और जोधपुर री कोटवाळी कपतांन दुरगाप्रसाद रै नै मुसरफी लाला गौरीदत्त रै हुई, तागीरायत पंवार नारकरण री नै थांनवी हरदेव री।

नागौर री हाकमी रसालदार मुनालाल रै हुई तागीरायत सोभावत उमेदकरण री।

अन रा कोठार वागर री दरोगाई पींडत आंनासा रै हुई, कोठार तागीरायत जोसी सिवचंद परभूलाल रा रौ नै वागर तागीरायत नाथ सेठ री ईण मुजब जवत हुई—सोभत कोटवाळी पं. उदैरूप री, पाली री हाकमी मेता हरजीयण री, गोढवाड़ री हाकमी सिंघवी सिवराज री।

संवत् १९१९ का विवरण

संमत १९१९ रा सांवण वद १ सन[1] दिवांणगी वषसी जबत हुय कांम पंचायत में सूंपना इतरा जणां नै हुई—

1. टीका स्वीकार कर लिया 2. शनीवार

सिंघवी रतनराज, मैहतो हरजीवरण, मैहतो विजैमल, पंचोळी पटानवेस भिनालाल इरणां री सला सु' कांम हुवै नै अै च्यारू' जरणां रा कैहरणां सु' लिष दीजो। दोढीदार सैंसकरण रा हात सु' हुवै बेषसि सिंघवी फौजराज रै थी सो फौजराज नै चलियां नै बरस ६ अंदाजै हुवा सु कागद फौजराज रा नांव रा लिषीजियां गया नै पैदास पटो वगैरे मैतो विजैमल री सला सु' कालुराम रामलाल वगैरे षायां गया सु आज जवत हुई।

सांवण वद २ गैर इलाकां री अदालत पंडित सिवनारांयण रै हुई, तागीरायत व्यास गौरीदत्त जैसलमेर वाळां री और दिवांणी अदालत व्यास गौरीदत्त जैसलमेर वाळां रै नै भंडारी वषतावरचंद श्रीचंदोत रै हुई, तागीरायत रावराजा सिरदारमल नै भंडारी हरनाथ री।

सांवण वद ५ अेजंट निषसन साहब आबूजी सु' आया। मुसायब दस्तूर मुजब सांमा गया।

सांवण वद ७ तळाव गुलाबसागर राणीसर वगैरे सगळा ओटै बूहा नै बरषा सु' लोग हेरान है। असाढ वद लगायत हमेसां बरसै है।

सांवण वद ११ श्री हजूर साहब गुलाबसागर मै डूंडो[1] नषाय नै डूंडा ऊपर बिराज सहल[2] कराई, दोय च्यार दिन हमेसां। और श्री महाराज कंवार सिकार पधार झालामंढ मैलां में बिराजरणो हो सु नोदड़ा वाळो बाळो[3] झालामंड रा मुंढा आगै बेवे सो जबर आयौ सु' पांणी झालामंड रा कोट मै आय गयौ। तरै उठा सु' असवारी कराया सागी माताजी री भाषरी पधार, बिराजीया नै पछै बाळै किहुक उतार दीयो[4] जद हाथी असवार हुय सैर मै पधार किलै दाषल हुवा, दिन तीन सु' सुद १४ नै।

सांवण वद १५ (अमावस) अेजंट साहब गढ़ ऊपर आया। श्री हजूर साहबां री असवारी पेसवाई में चहुवांणां री साळ तांई हुई। नै पछै ख्वाबगाह में षुरसियां ऊपर बिराजरणो हुवौ, घड़ी ४ इकंत रया।

संमत १९१९ रा सांवण सुद ३ डोलर हींडो दौलतषांना रा चौक में षड़ो करायौ नै जाबतो दिन ४ रयौ।

---

1. छोटी किश्ती 2. सैर 3. नाला 4. नाले में पानी कुछ कम हुआ

सांवरण सुद ४ अेजंट साहब री जाफत री जिनस सूरसागर कोठार सूं पूगी नै मुसायब सारा सूरसागर गया। नै तायफा, आतसबाजी चोंतरा सूं गया, पाछा अद रात रा आया।

सुद ८ श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणा तरफ पधारी नै सुद ११ नै सूरसागर पधारीया सो अेजंट साहब बेमार था सु सूरसागर री पोळ तांई सांमा आया। नै श्री महाराज कंवार च्यार साथै था, सु घड़ी दोय विराज पाछा रामदान रै बाड़ीयै पधारतां जैसलमेर रा वकील व्यास धनरूप नै षातर फुरमाई—थारो कराय तनै सीष वेगी ही देसां, तु जमां षातर राष।[1]

सांवरण सुद ६ वीरपुली रौ मेळो सदा (मंद) मुजब भरीजीयौ नै श्री महाराजकंवार री असवारी श्री वैद्यनाथजी[2] दरसण नै पधारी।

सां० सुद १३ महाराजकंवार श्री जोरावरसिंघजी रै भंवरजी रात पाछली रा हुवा। सिलकां रा तीर ३६ छतीस छूटा। नांव फतेसिंघजी दीयौ।

सुद १४ श्री हजूर साहब फतैपोळ मारग जाबतो कराय किलै पधारीया। मारग मैं बधाईदार मोकळा आया परंत किलै दाषल हुतां फतैपोळ में बधाई बंदीजी।[3]

सांवरण सुद १५ राषड़ी रौ उछव सदा (मंद) प्ररसतै हुवौ और जैसलमेर रै वकील व्यास धनरूप राषी मांय मेली सु पधराय नै नाजर सालगरांम नै वजीरखगस नै मेल नैं धनरूप नै कहवायौ कै तु सगपरण करण मुदै आयौ सु मैं थारो कांम सही कीयो।[4] तूं जैसलमेर लिष दै सो सारी तयारी करै। औ समाचार धनरूप सुंरण नै पाछी अरज कराई—श्री हजूर साह(ब) मैहरवांनी रै साथ फुरमायौ सु हुं लिष देसु परंत अेक वार मनै मौसर हुवै तो कितीक अरज करणी है सु रूबरू कर लेवुं। जद इणां जाय मौसर री अरज करी, जद मौसर दे नै फुरमायौ कै दोय व्यांवां री त्यारी कराव सो केसरीसिंघजी रै तो म्हे परणसां नै छतरसिंघजी रै लाल प्रतापसिंघजी नै परणाय देसाँ। नै सावो भादवा सुद ८ रौ सावो है, सु दिन सांकड़ा है[5] सु अठै ही तयारी करावां नै उठै ही तयारी जळदी करावो। नै दूसरी आ फुरमाई कै म्हांरा कांमेती अरज करै है कै य्यां दोयां रा सगपरण आगै बीकानेर हुवोड़ा है। जिण पर पाछी अरज

1. विश्वास रख 2. वैजनाथ 3. स्वीकार की गई 4. स्वीकार कर लिया
5. दिन कम रह गये हैं

करी—कै बात तो जरूर हुई ही परंत सगपण सही हुवौ नहीं ।[1] आ बीकानेर वाळां सिरफ झूठ केवै है । इण रौ कांम पड़सी जठै पड़उत्तर[2] म्हे कर लेसां । तरै फुरमायौ—झूठी हुसी, पण दिन सांकड़ा है[3] सु जेज[4] नहीं हुवै । युं फुरमाय नै कामेत्यां नै हुकम दीयौ कै जांन[5] जैसलमेर जासी, दिन सांकड़ा है सु आज सुं दिन दस तथा बारै नै अठा सुं चढणो हुसी । सु जेज न हुवै । तरै मुसायवां छतीस कारषांनां वाळां नै हुकम दियो सु त्यारी हूणी सरू हुई । नै सिरदारां रै नांव षास रूका लिषीज नै रवांने हुवा ।[6] नै जैसलमेर रै वकील सरभरा री ताकीद मुदे ओठी दोय तो जैसलमेर वादै मेलीया नै डाक ऊंठां री बैसाय दीवी ।[7]

भादवा वद ३ धनरूप गढ़ ऊपर आय अरज कराई कै जांन में आदमी, घोड़ा, हाथी, रथ, पाळां, पालषीयां, पींजसां री फड़द मनै दीरीजै तो जैसलमेर मेल उण मुजब त्यारी करांऊं । तरै मैंतो विजैमल, सिंघवी समरथराज, हरजीवण, षीची उमेदकरण नै फड़द करावण रौ हुकम दियौ सु चढीयो पाळो लोग दस हजार री पड़द कर धनरूप नै सूंप दीवी । नै पछै नाजर री मारफत हुकम धनरूप नै फुरमायौ—ब्याव संबंधी थारै पूछणो हुवै सो विजैमल, समरथराज, समरथमल, उमेदकरण नै पूछ लीजै ।

भादवा वद ५ धनरूप अरज कराई कै हुकम हुवै तो हुं जैसलमेर जाऊं । तरै उंणनै रूबरू बुलाय नै षातर फुरमाई कै तैं रावळजी रा काम मै तन देई आछी करी । सु थारी चाकरी सुं म्हैं मंजूर कियो[8] नहीं तर हुणो मुसकल हौ । तरै पाछी अरज करी कै आप रा बड़ापणां सुं धणीयाप सुं फुरमावै है नै आप तो जैसलमेर रा राज ऊपर बड़ो औसांन करायो नै म्हांरी ईजत वधाय दीवी । बडां री रीत आईज है । पछै धनरूप सुं सीष रौ सिरपाव हुवौ—कड़ा १, मोती १, मोतीयां री कंठी १, मंदील १, दुपटौ १ । पछै फुरमायौ—तुं जैसलमेर नै चढ जा, पण अजंट साहब सुं मिळनै चढ़जै । तरै धनरूप श्री हजूर सुं सीष कर अजंट साहब मंडोर मेळा में था जठै जाय साहब नै सारो अहवाळ

1. पक्का निश्चय नहीं हुआ था 2. सवाल—जबाब 3. समय कम है 4. विलम्ब 5. बरात 6. सामन्तों के नाम विशेष रूक्के लिखकर रवाने की गई 7. दोनों स्थानों के बीच डाक तुरन्त पहुंचाने के लिये ऊंटों की स्थान-स्थान पर व्यवस्था कर दी 8. यह विवाह सम्बन्ध स्वीकार किया

वाकब कर[1] नै वद ६ नै प्रभाते जैसलमेर नै चढीयो जिण नै बैसण नै रथ नै घोड़ा दस जावता सारू सिरकार सु मेलाया।

भादवा वद ७ रतलांम सु भला आदमी षलीतो लेण भेरूसिंघ आयौ। जिण नै सोभावत उमेदकरण री मारफत मुजरो हुवौ, षलीतो निजर गुदरीयो नै सांमली ओळ में बैठो। षलीता में मुदो औ है—सलाणां[2] वाळा मोरछल मतै ही करावणा सरू कीया। जिण री रतलांम वाळां अंगरेजां नै.......... ।

और पोकरण ठाकुर नै मौसर हुवौ, घड़ी च्यार इकंत रया नै पछै पोकरण री सीष करी, आगै जांन री सरभरा री त्यारी मुदै, सु सीष हुई।

भादवा वद ८ जनम आठम है नै वरषा रौ पार नहीं। लोक पूरो हैरान है।

भादवा वद ११ जैसलमेर जांन रै वासतै डेरा वगैरे षेमो रवांनै हुवौ नै डेरा तिवरी षड़ा हुवण रौ हुकम हुवौ।

भादवा वद १३ आज जांन चढण रौ समूरतो[3] हुवौ सु आज देहीजर डेरा हुवा नै श्री महाराजकंवार चढीया पाळा आदमी ओक हजार सु डेरां दाषल हुवा। और व्यास पदवी नाथावत व्यास जेठमल छोगमल रा रै रूपीया इकावंन हजार बरस (३) तीन रा नै बरस ओक में रूपीया १७,०००) सतरै हजार सहूकारी दिराइ। तिण सु व्यास पदवी हुई नै सिरपाव सरसता मुजब हुवौ, तागीरायत व्यास रिणछोड़दास री।

और सांभर री हाकमी मुता जसवंतमल हींदुमलोत बीकानेर रा रै हुई, तागीरायत भं० अमीचंद री। अर अमीचंद रै गोढवाड़ री हाकमी हुई, तागीरायत सिं० सिवराज री। सोझत री कोटवाळी पुरबीयो दुरगासिंघ पेटी रै नोरै मैना डावड़ी कनै रवै जिण रै हुई।

भादवा वद १४ श्री महाराज कंवार रा डेरा गांव तिंवरी हुवा जठै मु० मुकनचंद नै सिं० समरथराज सांमल हुवा। और ठाकुर नींवाज, रास, रायपुर, षेजड़लै, जैसलमेर जांन सांमल हुवण रा षास रूका गया और असवारी छैलवाग वद १३ नै ही पधार गई ही। सु उठै बुलाय नै लारै राज रा कांम रौ

1. सारा वृत्तांत बता कर   2. सायलाना   3. बरात के प्रस्थान का मुहूर्त

इतरा जणां नै फुरमायौ—सिं० रतनराज, जोसी प्रभुलाल, मैतो गोपालराव, नागर मैतो हरजीवरण, पाछी असवारी पधारै जितरै कांम करसी ।[1]

संमत १६१६ रा भादवा सुद २ जोसी हंसराज जैपर सु टीको सगाई रौ झलाय नै आयो ।

भादवा सुद ३ जांन रा लसकर रा डे(रा) गांव देछु(चु) हुवा । लसकर रा तुंगा तीन बेव(वै) है और श्री हजूर साहब छैलबाग सु असवार हुवा सो लसकर सांमल गांव चामूं रा डेरां दाषल हुवा ।

भादवा सुद ४ जान रा लसकर रा डेरा पोकरण इलाका रौ गांव लवै हुवा । पोकरण सु कोस च्यार उली तरफ और गांव लवा सु श्री हजूर साहब सुद ५ हाथी सवार हुवा नै षवासी में महाराज कंवार श्री जसवन्तसिंघजी बैठा । सिरदारां री आसांमी हाजर नहीं जिण सु नै पोकरण ठाकर बभूतसिंघ सालमसिंघोत सांमो कोस २ आयो जि साथै घोड़ा २००, ऊँठ १२०, पाळा ५०० सु आय श्री हजूर सु मुजरो कर बातां करता थका डेरा पोकरण सु दिषणादी तरफ हुवा, जठै दाषल कराय पछै गांव मै गया ।

फौज रै जीमरण सारू सीरो मरण २५) पचीस रौ, मीठाई मरण १०) री पेटीया न्यारा तुलीया ।

और तीजा पोर रा श्री हजूर साहब हाथी सवार रुक (हुय) पोकरण रा कोट में पधारीया । लारै महाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी षवासी में बैठा, नै कोट मै ही अरोगिया । ठाकुर घोड़ा २ दोय निजर कीया । और ही सरसता मुजब निजर नौछावर हुई । ठाकुर अरज करी—आज म्हारो ठिकांणो पवित्र हुवौ । आप तीन लाष राठोड़ां रा सुरज है । तरै ठाकुर नै श्री हजूर सु षातरी मोकळी फुरमाई—नै ठाकुर नै सिरपाव, कंठी मोतीयां री, सिरपेच वगैरे माफक दसतूर हुवा । नै कांमेती चांपाव(त) पीरदान भैरूंसिंघोत नै कड़ा, मोती, दुसालो नै उजळ नाथुराम नै कड़ा, मोती नै जैनारायण नै कड़ा, दुसालो । पछै रात रा पाछा डेरां दाषल हुवा । नै रात पोर गयां श्री हजूर री असवारी हुई । नै आहौर नै भादराजण रा ठाकुर आया सु असवारी साथै चढ़ गया, सु सुद ६ छठ जैसलमेर रै गांव लाठी डेरां दाषल हुवा । और

1. बरात लौटकर आएगी तब तक ये लोग राज-कार्य देखेंगे

रायपुर, रास, नींबाज, षेजड़लो च्यारूं सिरदार आय तो रात ही गया था[1] पिण इंणां रै मांतमपोसीयां री अटकना थी तिण सुं मुजरो कीयो नहीं। तिण सुं दिन दोय पोकरण रह गया।

भादवा सुद ७ नाजर हरकरण हुकम सुं अगाड़ी जैसलमेर गयौ, लवाजमां सुं, जिण रै पेसवाई में जैसलमेर रा मुसायब आया और जैसलमेर रावळजी रणजीतसिंघजी हाथी असवार नै उणां रा काका छतरसिंघजी लाठी रा ठाकुर लारै षवासी में नै रावळजी रा जनम रा पिता ठाकुर केसरीसिंघजी ऊँठ चढ़ीया। गांव बासणपी जैसलमेर सुं कोस छव अंदाजे जठै सांमेळो करण नै तथा पेसवाई करण आया। उण बषत रावळजी साथै हाथी २ दोय, घोड़ा ५००, ऊँठ ४००, पाळा सिपाई हजार ६,००० छव नै बाकी तमासगी[2] जैसलमेर रा तथा गांवां रा कर आदमी सगळो जैसलमेर रा मुलक रौ १०,००० हजार दस भेळो हुवौ और श्री हजूर साहब हाथी असवार नै लारै षवासी में भादराजण ठाकर संगरांमसिंघ इंदरभांणोत बैठो। नै श्री महाराज कंवार जसवंतसिंघजी, जोरावरसिंघजी, प्रतापसिंघजी वगैरे घोड़ां सवार। नै सिं० कुसळराज, समरथराज, सिवराज, मैतो विजैमल, सोभावत उमेदकरण, षीची उमेदकरण वगैरे सारा घोड़ां सवार, नै आहौर ठाकुर जसवंत(सिंघ) सगतीदांनोत। आदमी चढीयो पाळो[3] पांचसै सुं हाजर हुवौ। सु श्री हजूर सायबां रा हाथी लारै रया। सदामंद आउवा पोकरण रौ सर(ह)तौ ईण जगा रौ है सु उवै दोनूं ही हाजर न्हीं, तिण सु आहौर ठाकुर रया। उण बषत आपणो लोग हजार पांच ५,००० अंदाजै है, बाकी लोग लारै मोकळो रयो, पूग सकीयो नहीं।[4] नै गांव बासणपी कनै मिळाप दिन पोर दोढ चढीयां हुवौ। बांह पसार मिळाप हुवौ नै दुतरफा सिलकां हुई। नै उठा सुं हाथी जीवणी तर(फ) श्री हजूर साहबां रौ नै डावी तरफ रावळजी रौ। सो बातां करतां कोस ३ तो पधारीया नै पछै दोनूं ही साहब घोड़ां असवार हुय गया। नै जैसलमेर सुद ८ नै दोफार ऊपर दोय वजीयां आसरै डेरां दाषल हुवा। नै किला री तोपां रा तीर ६० साठ छूटा।

भादवा सुद ८ जैसलमेर रा मुसायब टीको ले नै आया सो व्यास प्रोहित षालसा री डावड़ीयां[5] बारै दोढी ऊपर आय घोड़ा, हाथी सिरपाव री किसतियां

1. रात को ही आ गये थे 2. उत्सुकतावश आने वाले सामान्य जन 3. पैदल
4. तब तक वहाँ नहीं पहुंच सके 5. राज्य की परिचारिकाएँ

वगैरे बंनाय लीवी ।[1] नै पछै रात घड़ी छव गयां पछै श्री हजूर साहबां री असवारी जलूसी परणीजण मुदै हुई । सु हाथी री अंबावाड़ी में बिराजीया नै षवासी में आहौर ठाकुर बैठा । नै बाकी सारा मुसायब, सिरदार, मुतसदी, षवास, पासवांन वगैरे लोग सारो जलूसी पोसाषां पैर असावारी में हाजर हुवा । सो असवारी धांम धूम सु पधारी । नै अषैपोळ तोरण बंधायो । व्याव रा उछव में जो पातरीयां, भगतणीयां, कलावत, गवैया वगैरे सारा जोधपुर सु साथै था जिणां रौ इलम देष जैसलमेर रा लोक चितरांम रा हुवै ज्यु हुय गया ।[2] नै रात पोहर स्वा[3] गई जद चंवरी में बिराजीया । बारै सारो लोग असवारी रौ उमरावां सु ले नै दोढी रा पाळां तांइ हाजर रया । पछै रात आधी रा महाराजकंवार श्री प्रतापसिंघजी हाथी असवार हुवा नै षवासी में भादराजण ठाकर बैठा । नै अषैपोळ तोरण बांध चंवरी में बिराजीया । चंवरीयां दोनूं बराबर हुई, रात सारी गढ़ में ही बिराजीया रया । पछै जांझरकै[4] माहाडोळ में बिराज असवारी हुय डेरां दाषल हुवा और जैसलमेर रा गढ़ ऊपर सिलकां रा तीर बयाळीस हुवा ।

भादवा सुद ९ नींबाज, रास, रायपुर, षेजड़ला रा ठाकुर नै पोकरण री तरफ सु उजळ नाथूरांम नै फौजदार—साथै नगारो निसांण साथ लवाजमा सूं सांवठा लोग सूं आया नै डेरा आप आपरी मिसल में कीया । इणां साथै सारो ही लोग पनरैसौ आसरै आयौ । पछै नीमां सांम रा रावळजी रा काका छतरसिंघजी नै मुसायब माहाडोळ[5] दोय नै रथ २ दोय बनाती ले नै आया । सो श्री रांणीजी सा री नै श्री कंवरांणीजी री असवारी कराय ले गया नै मुढा आगै पालषी में बैठो नाजर हरकरण गयौ सु जैसलमेर रा गढ में जनांनी दोढी तांइ पालषी बैठो गयौ । और रात आधी आसरै महाराज कंवार श्री प्रतापसिंघजी हाथी असवार लारै आहौर ठाकुर षवासी में नै मुसायब सगळा नै नाजर सगळा नै तायफा मुढा आगै नाचतां गावतां गढ़ ऊपर मैहलां दाषल हुवा ।

और सिव रौ हाकम पं० नथमल आयौ—घौड़ा ६०, ऊँठ ४० नै तोपां २ दोय सुं, सो मिसल में डेरो कीयौ नै मुजरो निजर नौछावर हुई ।

और भात षांड रा सीरा रौ हुवौ, जिण में आदमी पांच हजार भात में जीमण नै किला में गया । जिण री भोळावण श्री हजूर सूं नाजर हरकरण

1. वन्दना करके ले ली 2. चित्र लिखे से रह गये 3. सवा प्रहर रात्रि व्यतीत होने पर 4. प्रभात के समय 5. विशेष प्रकार की पालखी

नै दीराई। तरै हरकरण इतरा जणां नै भोळाया—भं० सुमेरचंद श्रीचंदोत, भं० भागचंद नैणचंदोत, भं० पचाणदास बादरमल रौ भाई नै जोसी किसनदास, नै भं० अनराज। जैसलमेर री तरफ सुं व्यास धनरूप नै भोळावण सु धनरूप जोसी साहबरांम नै दरबारी गणेसदास नै भोळाई। सो दोनु तरफ रा आदमीयां तन लगाय[1] जांन नै आछी तरै जिमाई। नै जोधपुर रा मुसायबां रा रुकां सुं पेटीया इकीस सौ २१०० तुलिया आदमी दीठ—मैदो '।, घीरत '।, षांड '।, चावल '।, दाळ '। वगैरे जिनस चोषी दीवी।

सुद १० मीठाई रौ भात हुवौ। सो जांन पोर दिन चढीयां सुं जीमणी सरू हुई, सो पोर रात तांई जीमी। बड़ी सावचेती रै साथ जिमाया। जस चोषो आयौ और मुसायबां रै तथा ब्राह्मणां रै वासतै आदमी हजार रै वासतै तारीफ लायक मिठाई आठ दस तरै री गढ़ में मुसायब ईसरलाल री जायगा में कराई। सो मुसायव ब्रांह्मण जीम नै तारीफ करी।

और लारला दिन रा श्री हजूर साहब मातमपोसीयां सिरदारां रा डेरां पधार कराई—रायपुर माधोसिंघ रूपसिंघोत री, रास भीवसिंघ भोमसिंघोत री, नै वासणी करणसिंघ हरीसिंघोत री, इतरी हुई।

और रात घड़ी ६ छव गयां श्री हजूर साहबां री असवारी जलूसी हुई सु श्री हजूर साहब नै श्री महाराज कंवार घोड़ै असवार नै मुतसदी, उमराव, षवास, पासवांन वगैरे सारा घोड़ां चढियोड़ा मुंढा आगै[2] तायफां रा नाच हुता थकां आतसबाजी छूटती थकी नै जुजरबा[3] ऊंठां ऊपर छूटता थका, बड़ा हगांम सु जैसलमेर रा गढ़ में दाषल हुवा। नै आगै पांतिया री त्यारी राजघर में हुइ जठै उगूंणै मुंडै श्री हजूर साहब जींवणी बाजू विराजिया नै डावी बाजू रावळजी बैठा। नै श्री महाराज कंवार सगळा अरोगण नै सांमल श्रीजी रै नै रावळजी रै बैठा। नै और सिरदारां रै पांतियो मिसल-सिर[4] सगळा बैठा। नै भगतणीयां, पातरीयां रा नाच हुवा। नै दुतरफी गाळीयां गवीजी नै बारै सिंधणियां तथा जांगड गायबो कीया। पछै श्रीजी साहब नै श्री महाराज कंवर तो मैहलां दाषल हुवा नै उमराव मुतसदी वगैरे सारा डेरां आया।

---

1. पूरी मेहनत करके 2. सामने 3. विशेष प्रकार की बंदूकें 4. मिसल की निश्चित रीति के अनुसार, तरतीबवार

भादवा सुद ११ परभात रा मुतसदी सारा हाजर हुवा जद बारै पधार सारां नै हुकम दीयो—आज नै काल रौ दिन तो अठै ही रहसां, परसुं डेरां पधारसां। यूं फुरमाय जनांनां में पधार गया। मुतसदी सारा डेरां आया नै श्री महाराज कंवार रावळजी रै साथ दारू अरोगण नै उठै ही विराजिया। नाजरां सवाय किणी नै मौसर नहीं। और जो(सी) सिवनारांयण सिंभुदतोत पोकरणां री न्यात करी। मिठाई री, नै मुडकै दीठ[1] रू० २) दोय दीया सु रूपीया ४५००) अषरै पैंताळीस सौ लागा, जस चोषो आयौ।

जैसलमेर में लुगायां समेत पोकरणां रै हुवै न्हीं, सिवनारांयण री लाचारी नै धनरूप री षेवट[2] सुं हुई। और मु० मुकनचंद ओसवाळां री न्यात रा पंचां नै भेळा कर लाचारी रै साथ न्यात करण री दुवाती[3] मांगी सु पंचां कबूल करी न्हीं। तरै घर दीठ लाडु १ मोतीचूर रौ अदसेर '।।) आसरा रौ दीयो। रूपीया ३२५) आसरै लागा।

भादवा सुद १३ जैसलमेर री त(र)फ सुं जोसी साहबरांम चोवटीयो वासी जोधपुर रौ सु व्यास धनरूप कनै रेवै जिण नै जांन रा डेरां सारी जांन री हाजरी लेवण मेलीयो। सो हाजरी लीवी जिण री विगत—
१५५ डेरा षड़ा हुवा—

२५ श्रीजी रा
३६ उमरावां रा
५२ मुतसदीयां रा
१५ षवास पासवांनां रा
८ नाजरां रा
३ बारठां रा
२ भाटां रा
२ मीरदारां रा
२ हलकारां रा
५ परदेसीयां रा
५ ऊंठां रा भाड़ेतां रा[4]

---

१५५ कुल योग

---

1. प्रति व्यक्ति 2. प्रयास 3. स्वीकृति 4. किराये पर ऊंट लाये उन लोगों के

ऊंठ, घोड़ा, हांथी, रथ, तांगा वगैरे री कुल हाजरी—

४६०० आदमी

१६०० घोड़ा

१७०० ऊंठ ७०० सिरकार रा, १००० भाड़ा रा

१६ हाथी

४ बगीयां

२५ रथां

४ पालषीयां

७ पींजसां

१४ तोपां तथा जुमरषा

२ तामजांम

५ सेज गाड़ीयां[1]

२५ तांगा

२०० गाडीयां

पछै मांड रा[2] आदमीयां री हाजरी इण मुजब हुई—

२६०० हिन्दू भाटी इतरी षांपा रा हा—

(१) उदैसिंघोत (२) अषैसिंघोत (३) अषैराजोत (४) वैरीदासोत (५) टेकरवाळा (६) लवारकी (७) केलंण (८) छोड (९) ऊनड़ (१०) जंझन (११) षवेतलरा (१२) सिपल (१३) मयाजळ (१४) हटा (१५) जसोड़ (१६) मूलप (१७) सावरण (१८) रायधर (१९) जवद (२०) राहड (२१) भड़कमल (२२) ओला (२३) सिरडा (२४) बारूवाळ (२५) रावळोत (२६) तेजमलोत।

२६०० जुमला २६

२७०० मुसलमांनां री षांपां, बारला गांवां रा तथा सैर रा बसीवांना[3] री—

(१) जाजड़ (२) कोरी (३) चांनीया (४) ऊंनड़ (५) भुट्टा

---

1. बिस्तर ढोने वाली गाड़ियें 2. जैसलमेर इलाके के 3. शहर में रहने वाले

(६) कलर (७) मोर (८) वैया (९) झंज (१०) मांगळीया (११) सुर रा (१२) सर (१३) षालत ।

जुमला षां(प) पनरै रा आदमी

५३०० जुमला आदमी तेपन सौ जिणां नै पेटीया अमल तमाषू आदमी मुजब जैसलमेर रा राज सु दिरीजै । सु ईणां रा षरच रा रूपीया रोजीनां रौ षरच रा नै सिरपाव सीष रा बाईस दिन रया जिण रा रूपीया हजार बीस आसरै लागा ।

नै जांन रौ षरच न्यारो । सो ईण ब्याव में दायजा विनां[1] षर(च) रूपीया सवा लाष जांन मांड रा षरच में लागा ।

नै श्रीजी साहबां रौ हुकम मैहलां सु डेरां आयौ कै म्हें आज डेरा दाषल हुसां । सो सारा हाजर हुवौ । तरै उमराव, मुतसदी वगैरे जलूसी (पो)साषां कर सारा ही गढ़ में हाजर हुवा । नै श्रीजी साहब उठा सु हाथी रै हौदे बिराजीया नै लारै आहोर ठाकर षवासी में बैठा । नै सारो लोग जलेब में बड़ा हंगाम सु[2] डेरां दाषल हुवा ।

भादवा सुद १४ मुकांम जैसलमेर व्यास धनरूप आय अरज कराई कै रावळजी अरज कराई है कै म्हैं पैरावणी सीष री करां, सो फड़द कराय आपरा मुसायबां नै मेलावो, सो पैरावणी देवां । तरै श्रीजी सा नाजर हरकरण, मैता बिजैमल नै मेलीया, सु फड़द लेया(य) जिण मु(ज)ब हाजर (हा) जिणां नै तो बिजनस सिरपाव बेस दिया । नै हाजर नहीं हा जिणां रा रुपीया रोकड़ हजार चालीस दीया ।

और जांन रौ कूच जोधपुर नै हुवण रौ हुकम हुवौ सो फरासषांनो रवांनै हुवौ ।

भादवा सुद १५ रावळजी महाराजकंवारां नै बाग तळाब दिषावण नै ले गया । सु उठै ही गोठ री त्यारी कराई । नै सहर सु मिठाई मंगाय लोक

1. दहेज के अतिरिक्त 2. बड़े हंगामे के साथ

सारां नै जीमया, पाछा रात रा पधारीया। रात रा मेह जादा हुवौ[1] सो डेरां में पांणी आय गयौ सु डेरां में तकलीफ पूरी रही।[2]

संवत् १९१९ रा आसोज वद १ रावळजी दायजो इण मुजब दीयो— २ हाथी, बिजनस २ हाथी रा रूपीया १०००), २८ घोड़ा, ४ रथ, २० ऊंठ, ५० डावड़ीयां। रोकड़ पैरावणी रा चाळीस, पोसाषां जनांनी मरदांनी जरी रा कांम री।

आसोज वद २ लसकर रौ कूच हुवौ सो फुरमायौ—डेरा रामदेवरा रै रसते करजो। रामदेवरै फळौधी हुय पधारसां।

और रावळजी जलूसी असवारी कर हाथी रै हौदे बैठ नै डेरां श्री हजूर साहब कनै आया। सो हाथी डेरां नजीक बैठाय नै उतरीया। नै श्रीजी साहब दसतूर मुज(ब) सांमा पधारीया नै तोपां री सिलकां २१ हुई। पछै बडोड़ो डेरो दौलतषांना रौ षड़ो हुवौ जिण नीचै बिछायत हुई, जठै बिराजीया, तरफ जीवणी श्रीजी साब बिराजीया नै डावी तरफ रावळजी बैठा। नै सिरदार, मुतसदी, आप आपरा मालकां री आलां[3] में बैठा तथा ऊभा।

नै पांतियै बिराज भेळा अरोगिया। नै मिठास री बातां हुई नै सिंघी कुसलराज आगला दृष्टान्त देनै वातां करी। नै पांतीयो बोड़ीयां पछै[4] व्यास धनरूप अरज करी कै सिंध री षैरपुरा मीर रा भला आदमी म्हारै मिजमांन आया है जिणां रै मुजरा री दरषास्त है। जद फुरमायौ—बुलावो, जद बुलाया नै मुजरो कीयो। नै बंदुकां २ दुगोळियां री निजर करी नै और ही चीज निजर करी। नै श्रीजी साब दस्तूर मुजब वतळांवण षातर फुरमाई। नै सिरपाव, कड़ा, मोती, कंठी मोतीयां री, दुसालो दीया।

और जोसी सिवनारांयण अरज करी कै जोधपुर रौ तिवाड़ी जगनेसर श्रीमाळी अठै रावळजी बुलायो सो बारै महीना हुवा सो आसीरवाद हुवौ चहीजै। सु बुलाय आसीरवाद हुवौ नै कड़ा दुसलो हुवौ।

---

1. खूब वर्षा हुई 2. बड़ी असुविधा हो गई 3. अपने स्वामी की तरफ 4. भोजन समाप्त होने पर

और जैसलमेर रा महाजन लाला सरूपचंद जमनादास री दुकांन घणा बरसां सुं जोधपुर में है तिण नै मुजरो सिवनारायण करायौ नै कड़ा दुसालो दिरायो नै उणां निजर म्होर २) दोय करी नै नौछावर रुपीया २) २) कीया।

और षेजड़ले ठाकर हिमतसिंघ सादूळसिंघोत नै रावळजी सिरपाव मिजमांनी न्यारी दीवी। नै उणां घोड़ा २ रावजी रै निजर कीया। सबब[1] भाटीयां रौ पाट ठिकांणो जैसलमेर जिण सुं।

और रावजी तबेला में घोड़ो १ कठीयावाड़ रौ घणो सिरै हो सो श्रीजी री असवारी रै वासतै धनरूप साथै मेलीयो सु श्रीजी साहब निजर गुदराय बोहोत प्रसंन हुवा। नै घोड़ा री तारीफ फुरमाय धनरूप नै फुरमायौ—म्हैं थारा सुं रजावंद पूरा हां थें दोनूं तरफ री बंदगी आछी करी। सो हमार तो तुं अठै ही रहै नै आज रा फुरमावणां सुं तुं जोधपुर उरो आजै सो थनै इजत रौ मोटो काम भोळावसां। तुं जमांषातर राषजै। पछै धनरूप सीष कर सहर में गयौ।

और जैसलमेर मुकांम कुल इग्यारै रया[2] नै पछै रात पोर दोढ गयां हाथी असवार हुवा नै श्री महाराजकंवार भेळा बिराजीया।

नै वद ३ डेरो गांव चांनण जैसलमेर इलाकै हुवा। जठै दाषल हुवा। उठै आटो घीरत रूपीयां सटै मिळीयो न्ही। तरै रावळजी नै षबर लागी तरै सैर मांय सु आटा रा ऊंठ १०० सौ री कतार भराय मेली। तरै प्र० (मण) '७ रो आटो मिळीयो। पछै दूजै दिन डेरा गांव लाठी हुवा सु घास, मूंग, चारो बासणां री सरभरा जैसलमेर री तरफ सुं हुई।

पछै कितोक लसकर रौ लोग परबारो पोकरण रै रसतै जोधपुर नै रवानै। कितराक साथै रामदेवरै साथै रया।

नै वद ५ डेरा रामदेवरै हुवा। उठै पोकरण ठाकुर बभूतसिंघ सालमसिंघोत आय मुजरो निजर नौछावर कीवी। नै व्यांव री सरसताई बातां हुई। सु श्रीजी सा फुरमायौ—जैसलमेर रौ राज देषतां व्यांव नै सरभरा चोषी कीवी। सरसताई बातां कर सीष हुई।

---

1. कारण 2. जैसलमेर में ११ दिन ठहरना हुआ

वद ७ नै गांव षारै डेरा पोकरण रौ गांव जठै हुवा नै वद ८ नै फळौधी पधारीया। हाकम किलादार वगैरे बडबेड़ा ले नै सामां गाजां-वाजां सु सांमा आया। नै बजार सिणगारीयो[1], ठावी-ठावी आसामीयां री निजर नौछावर हुई।

वद ९ मुकांम फळौधी—

फळौ(धी) रा महाजनां री तरफ सुं गोठ हुई। नै सिंज्या रा किलादार षीची कुसला री तरफ सुं सीरा री गोठ हुई।

संमत् १९१९ रा आसोज वद ११ मुकाम फळौधी। श्रीजी साहबां री असवारी डेरा सुं किले दाषल हुई। नै आउवा रा ठाकर नै नै ढढा बादरचंद फळौधी वाळा नै मुजरो हुवौ नै पातरीयां उठा री किला री दोढी हाजर हुई जिणां नै रूपीया ५०) पचास दिरीजीया। नै किलादार हाकम नै सिरपाव हुवौ नै नाजर हरकरण नै आगै जोधपुर नै रवांनै कीयो। नै महाजनां नै लेर षूम जात षरडा रा देवाळां ऊपर निजरांणो ठैरावणो जिण मुदै भं० बषतावरचंद नै प्रो० पोकरदास नै लारै राषीया। नै पाछी रात[2] रा कूच हुवौ सु डेरा वद १२ गांव लोवावट हुवा। मुकांम लोवावट में षासी तासळी री जिनस कोटड़ी में हवालदार हसते सीरो पुड़ीयां वगैरे हुई नै नाजर हरका रा सरा बाप भायां नै षातरी हुई, नै सिरपाव हुवौ नै उठा सूं कूच हुवौ सु गांव बीकमकोर भाटी रावळोतां रै जठै दाषल हुवा। वद १३ उठै मिजमांनी हुई।

वद १४ डेरा गांव ओसियां रावळोतां रै हुवा नै उठै ही मिजमांनी हुई नै उठा सुं वद " (अमावस) डेरा रामपुरै रया। नै ऊण ही दिन उठा सूं कूच हुवौ सु माणकळाव हुय जनांनां समेत रामदांन रै बाड़ियै दाषल हुवा। नै सुद २ श्रीजी साहब कायलांणै पधारीया। नै सुद ३ बीजोळाई पधारीया। नै सुद ४ तषतगढ़[3] दाषल हुवा। सुद ५ छैलवाग दाषल हुवा।

और श्री हजूर नै महाराजकंवार श्री प्रतापसिंघजी परणीया सु कंवराणीजी नै श्री महारांणीजी दोनू जुदा-जुदा माहाडोळां में बिराज सिरै बजार चांदपोळ रै रसतै गाजां-वाजां सुं राजमैलां दाषल हुवा नै उणां रा दायजा मिनषां रौ डेरो मांयलेबाग हुवौ।

---

1. बाजार को सुसज्जित किया गया 2. रात का पिछला प्रहर 3. माचिया किला

सुद ६ अजंट निकसन साहब सूरज ऊगतां छैलबाग आया, मुलाषात हुई। सुद ८ श्रीजी गढ़ दाषल हुवा।

सुद ९ तथा १० श्रीजी री असवारी रांवण मारण नै हाथी बिराज पधारीया। षवासी में षैरवै ठाकुर सांवतसिंघ दौलतसिंघोत बैठा नै आगै हाथी आयसजी श्री मोतीनाथजी महामींदर षोळै बैठा जीणां रौ। नै बाहीबाल छूटणो तोपां वगैरे सदामंद मुजब हुवा।

सुद १५ श्रीजी साहब राजमैलां पधार नै जैसलमेरीजी नै षातर फुरमाई—थांरै पटो तथा तासली पेटीयां रौ बंदबसत बेगो ही कर देसां।

संमत् १९१९ रा काती वद १३ श्री जैसलमेरीजी री असवारी राजमैलां सु गढ़ दाषल हुई।

वद १४ दीपमाळका रौ उछव नै सिरे दरबार सदामंद मुजब हुवौ।

और बड़ा साहब रौ सिकतर हमलटीन साहब जैसलमेर बीकानेर वावलपुर[1] री सरहंदा रा फैसला करण जावै, सो अठै आयौ, नै सूरसागर उतरीयौ।

काती सुद ७ महाराजकंवार श्री प्रतापसिंघजी हमलटीन साहब सु मुलाषात नै पधारीया सु मुलाषात कर पाछा पधारीया। नै षाणा री जिनस कोठार सु पूगी नै श्रीजी साहबां रौ मौसर सरबालै हुवौ।[2] नै आप आपरा ओधां री अरज करी, घड़ी २ रयौ।

काती सुद ९ अजंट नीकसन साहब गढ़ ऊपर आया नै अजमेर जावण री सीष कीवी।

काती सुद १३ नींवाज ठाकुर नै मौसर हुवौ, घड़ी २ इकंत रया पछै सीष हुई घरां जावण री।

संमत १९१९ रा मिगसर वद ४ श्रीजी साहबां रौ मौसर सरबालै घड़ी च्यार रयौ—नै आहोर, षैरवो, भादराजण वगैरे सिरदारां नै घरां री

---

1. भावलपुर 2. खुली मुलाकात का अवसर दिया

सीष हुई नै दुपटो वगैरे सिरसताइ सिरपाव हुवा। नै आहोर रा ठाकर कनै चारण—तिण नै कड़ा दुसालो हुवौ।

और वरषा घणी रा सबब सूं सैर में मांदीवाड़ौ[1] घणौ तिण सुं आदमी १५ आसरै नित भागै[2] नै जायगावां[3] भींतां वगैरे च्यार हजार आसरै बिरषा सुं पड़ी। जिणां री लोग हमैं पाछी मरमत करावै है।

मिगसर वद १३ हमलटीन साहब काती वद १ अेकम नै आया था सो तो पाछा अेरणपुर परा गया नै आज पाछा आया सु वकील रौ भाई मुतो किसनचंद गयौ नै सूरसागर उतरीया।

नै वद १४ मैतो बिजैमल मैतो हरजीवण मुलाका(त) नै गया। नै षाणा री जिनस रसोड़ा सुं पूगी।

बड़ी फजर अठा सुं बीकानेर जैसलमेर री सरहद ऊपर गांव घटियाळे जासी। मिगसर रा मास तांई घणी वरषा रा सबब सुं भाव ईण मुजब है—

धांन १) रौ '६, लुंण १) '१), मिरची राती १) '१।।, तेल १) रौ '२, मूंग रौ गाड़ो १ रा रूपीया ७) तथा ८) आठ लागै। छांणा रूपीया रा २०० दोय सो। सो ईसो भा(व) बिरषा सुं तेज हुवौ।[4]

सुद ७ लगायत असवारी सुद तां बैरू वगैरे कांनी[5] पधार पाछा सुद १० रात रा किलै दाषल हुवा।

सुद ११ अेजंट गवरनर जरनैल जारज लारनस साहब आबूजी सुं अजमेर जावै जिणां सुं मुलाकात वासते पाली सिंघवी समरथराज, मैतो बिजैमल चढिया।

पोस वद २ श्रीजी साहबां री असवारी जाळोरी दरवाजा बारै पड़दायतजी लछरायजी रौ बाग जठै पधारी नै जावतो है, सु दरवाजा बारै कोई जावण पावै नहीं।

वद ३ मुकांम लछरायजी री बावड़ी नै वाभा मोतीसिंघजी री गोठ नै मोतीसिंघजी रै पटौ इण मुजब लिषीजीयो—पैदा १२०००) बारै हजार रौ।

---

1. वीमारी 2. हर रोज मरते हैं 3. मकानात 4. अत्यधिक वर्षा के कारण वस्तुओं के भाव इतने तेज हो गये 5. वेरू गांव की तरफ

गांवां री विगत—(१) षंडप जोधपुर रौ (२) बींजवाड़ीयो जोधपुर रौ (३) वाला रौ वास चेराइ रौ (४) लास रौ गुढो गोढवाड़ रौ, (५) मोरनावड़ो, जुमला गांव पांच लिषीजीया नै सही हुय[1] सूंपीजीया ।

वद ५ लछरायजी री वावड़ी सुं राइकैवाग पधारीया नै वद ६ राजम्हैलां दाषल हुवा ।

ग्रौर ग्राज ग्रंगरेजां रै वड़ो दिन है । महीना दसवंर री ता० २५ है, नै सन् १८६३ है ।

पोस सुद ४ कोठार बागर री दरोगाई पंडित ग्रानासा रै है सु ग्राज सुषरांम नाजर हरकरण किलादार नै भं० बादरमल तीनां रा ग्रा.......... ।

पोस सुद ६ जैसलमेर रावळजी री बरसगाँठ है सो मांयलाबाग में राणीजी श्री जैसलमेरीजी रै नोरै उछव हुवौ । सो हुकम सुं मुसायब सारा गया नै श्री हजूर में मिठाई री छावां नोरा सुं गई । नै जनानां में लाफसी नोरा सुं गई । नाच वगैरे नोरै हुवा ।

ग्रौर सिरोही रावजी सिवसिंघजी श्रीजी सरण हुवा[2] तिण री षबर ग्राई ।

पोस सुद १४ जोसी प्रभुलाल रांमसरण हुवौ मालम हुई, तरै हंसराज, सिवचंद, सिवनारांयण नै षातर करण नै नाजर हरकरण वगैरे नै मेलीया ।

पोस सुद १५ प्रथम ग्रजंट साहब ग्रजमेर सुं ग्राया जिणां सांमै पेसवाई में सदामंद मुजब मुसायब गया, नै तोपां रा तीर ११ इग्यारै छूटा ।

सुद १५ दुतीक ग्रजंट साहब रै षांणो हुवौ सु जिनस तो कोठार सुं गई नै तायफा ग्रातसबाजी चोतरा सुं गया नै ग्रंतर फूलां री माळां वगैरे कपड़ां रा कोठार बागां सु गया नै मुसायब सारा गया । पाछा ग्राधी रा ग्राया ।

संमत १६१६ रा माहा वद २ ग्रजंट साहब राजमैलां श्री हजूर में ग्राया । घड़ी २ दोय रया ।

---

1. राजा के हस्ताक्षर होकर 2. मृत्यु हुई

माह वद ५ मंमोई[1] रा जरनैल नसीराबाद री छांवणी जावै जिण रै सांमा अजंट निकसन साहब आज चढीया।

माह वद ६ महामिंद(र) मोतीनाथजी रै भेंट राज सु हुई नै सारां नै हुकम पूगो सु सारा ही भेंट करण गया।

माह वद १० तथा ११ सहैर में ढंढोरो फिरीयो कै जरनैल मंमोई रो जंगी लाठ आवै है सो सैर रो बजार धोळो[2] नै सिणगारो, सो वजार धोळणो सरू हुवौ है।

माह वद १२ जोसी हंसराज सिवनारांयण, प्रभुलाल रौ बेटो सिवचंद वगैरे नै मौसर हुवौ। आसीरवाद राजमैलां में हुवौ सो प्रभुलाल री परचावणी री षातर घड़ी १ फुरमाई। अोर जरनैल रै सांमां गांव मोगड़ा तांई सारा मुसायबां नै मेलीया।

माह वद १३ श्रीजी सायब जरनैल रै सांमां बड़ा साहब सरसतै पधारीया। नै हाथी रै हौदे मुलाषात हुई, षवासी में रायपुर ठाकुर लिछमणसिंघ माधोसिंघोत बैठो नै साहब लोग ४ हाथीयां ऊपर दोय-दोय बैठा नै मिला(प) हुवौ जठै सिल(कां) रा तीर २८ अठाईस छूटा। पछै बरोबर हाथीयां सु बातां करता सोझतियै दरवाजा रै मारग पधारीया सु श्री फतेबिहारीजी रा मिंदर कनां सु श्रीजी तो राजमैलां पधारीया नै साहब लोग सिरै वजार सिंणगारीयोड़ो देषता-देषता सूरसागर गया। सूरसागर दाषल हुवां पछै किला री सिलकां ३६ छतीस छूटी। नै पछै लारला दिन रा साहब पांच गढ़ ऊपर आया जिणां पैली श्रीजी साहब दाषल किलै हुय गया है, सो सारो सरसतो मुलाकात वगैरे रौ बड़ा साहब सरसतै हुवौ नै सिलकां रा तीर छतीस फेर छूटा। घड़ी दोय सोंषियां री वातां कर[3] सूरसागर गया।

माह वद १४ साहब किलो देषण नै आया। सु श्रीजी साहब किलो दिषाय नै असवारी कर बाळसमंद वगैरे दिषाय पाछा पधार साहब लोगां री जाफत कीवी। किला में नाच-कूद आतसबाजी वगैरे सदामंद सरसता जाफत हुई।

माह सुद १ जरनैल साहब नसीराबाद नै रवांनै हुवा सो नाजर हरकरण वगैरे नै सोडेसर री बावड़ी तांई पोंछावण नै मेलीया सु पोंछाय आया।

---

1. बम्वई 2. सफेदी करो 3. अनोपचारिक बातें करके

माह सुद ४ अजंट निकसन साहब जरनैल नै पोंछावण गया जिण दिन तथा वद " (अमावस) जाफत हुई जद घोड़ा सु ....सुष पूछण नै मैंतो बिजैमल, सिं० समरथराज, म्हैता हरजीवण नै मेलीया । नै षैरायत रै वासते[1] रूपीया २००) दोय सो मेलीया ।

माह सुद ११ रायपुर, रास, षेजड़ला, रा ठाकरां नै घरां री सीष हुई नै निवाजस में दुपटा हुवा ।

माह सुद १४ असवारी चाकेळाव विराजै जठै अजंट साहब आया न मालाणी री सीष कीवी । नै अरज करी कै महाराज कंवारां कुं मेरे संग भेजावै सो वां सिकार वोत अछी है । तरै महाराज कंवर श्री प्रतापसिंघजी सा नै मेलीया नै साथै जोसी हंसराज नै मेलीयो ।

माह सुद १५ श्रीजी री असवारी छैलवाग दाषल हुई नै उठा सुं रात रा असवारी हुई सु गाँव गुड़ै दाषल हुई । उठै मगरायजी री तरफ सुं गोठ हुई ।

नै संमत १६१६ रा फागण वद नै रेषा बेरै दाषल हुई । वाग में । नै उठै पटानवेस पं० भीनालाल री गोठ हुई ।

वद ३ नै भीनालाल नै सिरपाव, कड़ा, मोती, मोतीयां री कंठी, सिरपेच हुवौ (औ)र गांव तिवरी रौ प्रोहित अनाड़सिंघ रांमसरण हुय गयो, (त)रै तिंवरी जबत हुई, तरै तिंवरी वाळां कवराज भारथदांन री मारफत तिंवरी री उठांतरी[2] नै जनांनी दोढी रौ लवाजमो सरू हु(य) जाय तिण रा रूपीया २०,०००) बीस हजार धामीया, पिण मंजूर हुई नहीं तरै तिंवरी वाळां धरणा रै वासते गांवा में समाचार दीया तिण री षबर लागी तरै हाकमां नै हुकम बाईस परगनां में पूगो—सांसण वाळां नै बरजाय दीजो[3] सो तिंवरी वाळां सांमल हुवै न्ही । कदा सामल हुवै[4] तो सांसण जबत कर सजावार करजो । सु हुकम सुं सगळा भेळा हुवा नहीं परंत आदमी............आसरै हुवा नै नागौरी दरवाजा बारै धरणो दीयो सु हुकम चोंतरे नै तबेलै पोंथो । सु बांसां सुं मार सजावार कर काढ दीया । सु जीव ले नै भाग गया । नै किताक हात आया जिणां नै भाषसी में घाल दीया ।

---

1. दान-पुण्य करने के लिये 2. तिवरी पर से राज्य का अधिकार हटाने हेतु 3. मना कर देना 4. कदाचित शामिल हो जावें

‡[फागुण वद ४ सन ओर श्री हजूर साहबां रै चवांणजी रै म्हाराज कंवार जनमीया पाछली रात रा, जिण री सिलक तोपां रा तीर ११ छूटा नै असवारी कायलाणा सु नाजर उजीरबगस डेरै वेनै पधारीया।

फागण वद ५ ओर वाभा वभूतसिंघजी रौ १ भलो आदमी घर में थो तिण नु म्हांलावाग रै पछाड़ी दुगोळीया[1] री दे किणी मार नांखीयो सो पतो हाल लागो नहीं।

फागण वद ७ भोम असवारी बाळसमद पधारीया।

फागुण सुद ३ सुकर। ओर श्री म्हारांणीजी श्री राणावतजी सा रै नोरै तो मांडो ने नाजर हरकरण रै डेरै जांनीवासो[2] ठाकुरजी[3] नै ठकरांणीजी आज परणीजीया[4] बड़ी धामधूम वनोळा वगेरे री हुई, दुतरफा रूपीया सांवठा[5] लागा। ओर श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमद सु गढ पधारीया सो पोर १ तो विराजीया रया। पछै राजमैलां पधार गया।

और फागुण सुद ६ सोम श्री हजूर री असवारी जनांना सेत[6] गढ दाषल हुवा, गोळ री घाटी मारग। और खबर उकीलां रा कागद आया के कलकता रा लाठ साहब आगरे फागण वद ९ गुरवार दाखल हुवा सो राजसथांनां नु बुलाया है मुलाषात वासतै सो राजा आया तिणां री पेसवायां हुई तथा मुलाषातां हुई तथा सिलकां हुई वगेरे री विगत ईण मुजब आई।

फागण वद ६ लाठ साहब रौ मुकांम आगरे, सो ईतरा राजा आगरै आय दाखल हुआ—

१. बूंदी रा रावराजाजी रांमसिंघजी श्री गंगाजी संपाड़ो कर पाछा आगरै आया तिणां री पेसवाई में जैपुर रा अजंट बुरक साहब अर वडै साहब रा सिकतर जणा ४ और आगरा रा कमसनर[7] हाथीयां असवार होय नै श्री जमनाजी री पैली तरफ जाय मुलाषात कर पंचकुयां कनै रावराजाजी वूंदी वाळां रो डेरो हुवो थो जठै डेरा दाखल कराय पछै साहब लोग आपरे डेरां गया अर सिलांमी री तोपां १५ छूटी।

---

‡[इन कोष्ठकों के बीच का अंश 'ख' प्रति का है

1. दुनाली बन्दूक　2. बरात के ठहरने की जगह　3. श्री कृष्ण　4. विवाह सम्पन्न हुआ　5. खूब, पर्याप्त　6. सहित　7. कमिश्नर

२. टूंक रा नवाब..........दोफार[1] रा आया जिणां री पेसवाई में जैपर रो अजंट अर वडासाहब रा ४ सिकतर[2] और आगरा रा कमसनर हाथीयां पर सवार होय साहगिंज सु आदो कोस पेली तरफ मुलाकात कर लाया सो पचकुईयां कनै टूंक वाळां रो डेरो छौ जठै दाखल हुवा, पछै साहब लोग तो आप आपरे डेरां गया अर सिलांमी री तोपां १७ छूटी। और नवाब साथै लोगबाग चढीयो-पाळो तीन हजार आसरै है।

३. अलवर रा रावराजा...............तीनूं आयां नू तो दिन..........हुय गया अर पेसवाई आज हुई सो बुरक साहब अर ४ सिकतर वडा साहब रा नै कमसनर साहब साहगिंज सु पाव कोस पेली तरफ मुलाकात करी। पछै वै पाछा ताजगंज तरफ कोठी भाड़ै लीयोड़ी थी जठै दाषल कराय साहब लोग तो आप आप रै डेरां गया अर सिलांमी री तोपां १५ छूटी।

४. जैपुर रा म्हाराज श्री रांमसिंघजी आया तिणां री पेसवाई में जैपुर रो अजंट बुरक साहब ने वडासाहब रा सिकतर जणा ४ अर दिवांणी अदालत रा साहब ३ और कमसनर कलटर[3] वगेरै साहब जणा १२ सांमा गया सो साहगिंज सु कोस २ तथा २।। कांनी परमट री चौकी है तिण सु उरली तरफ मुलाकात हुई। जिण बषत जैपुर वाळां रै लारै तो पांथी तिण री सिलक हुई नै बीच में हाथी श्री रांमसिंघजी रौ जिणां री खवासी में दूणी रो ठाकुर राव जीवणसिंघजी अर तीन-तीन हाथी साहब लोगां रा श्री म्हाराज रै हाथी रै दोनू तरफ अेक-अेक हाथी ऊपर दोय दोय साहब जुमलै साहब १२ था। जैपुर रै अजंट बुरक साहब रो हाथी सोना रूपा रौ कांम रा अंगेरिजी हवदां ऊपर बैठां वातां करतां करतां सदर बजार सु तरफ दिषणाद परेट री तरफ[4] म्हाराज रा डेरा हुवा था जठै दाषल कराय साहब डेरां गया अर सिलांमी रा तीर १७ छूटा अर जैपुर रा राजाजी साथै जोधपुर रा श्री बाईजी सा था सो राजाजी गयां पेली अगाड़ीज[5] डेरा दाषल हो गया था।

५. गवालेर रा म्हाराज श्री जीयाजी रावजी और ताल भोपाल री बेगम और जेपुर रा राजाजी अै तीनूं सिरदार अेकण दरजे[6] कुरब है, पिण फेर मुलाकात री बषत फेर देखी जासी।

---

1. मध्याह्न 2. सेक्रेटरी 3. कलेक्टर 4. परेड के मैदान की ओर 5. अग्रिम
6. समान स्तर

६. और पूरब कांनी सु फेर दूसरा राजा आया है जिणां री पेसवाई वगेरै तो आगरा रा कलकटर हीज करावै है। अर वडा राजा है जिणां री पेसवाई में वडा साहब री अेवज में बुरक साहब आवै जावै है।

७. कोटा रा म्हारावजी श्री रांमसिंघजी निमा सांम रा[1] फागुण वद ७ भोम आया तरै बुरक साहब वा बड़ा साहब रा सिकतर ४ अर कमसनर साहब वगेरै जणा ६ साहगिंज पांवंडा ५१ व कोस पेली तरफ जाय पेसवाई कर लाया सु पंचकुईयां डेरा दाषल कराय साहब लोग तो आपरै डेरां गया अर सिलांमती री तोपां १३ छूटी, नग २ घड़ता छूटा[2] गदर की फिसाद में षपकी[3] रही तिण मुदै कमती छूटा।

८. भरतपुर रा म्हाराजा श्री जसवंतसिंघजी आया तिणां री पेसवाई में जैपुर रा अजंट बुरक साहब अर बड़े साहब रा ४ सिकतर वगेरै साहब १० डोरी तक जाय पेसवाई कर लाया। सो इणां रा डेरा कोठी १ अंगरेजां री पोळ लीवी जठै दाषल कराय साहब लोग तो आप आपरे डेरे गया अर सिलांमी री सिलक रा तीर तोपां रा १५ छूटा।

९. और बड़ा साहब लषणोउ गया। घर सुं आज पाछा आया। आगरे दाषल हुवा। जोधपुर रो उकील सैबाजखांजी पिण साथै है।

१०. और लाठ साहब आज तीसरे पोहर रा फागुण वद ९ गुर तारीष १२ फरवरी नुं मुकांम आगरे तीसरे पोहर रा दाषल हुवा, असवारी बड़ी जलूसु री सुं आया, साथै फौज गोरां री पळटण वा गोरा असवारां रो रसालो वा षाषी ऊड़दी[4] पळटण वगेरै जळूस सुं घोड़ां री असवारी वा तोपषानो सिष विलायती वगेरै और बड़ा साहब वगेरै तमांम साहब लोग जमनाजी री तीर पुळ री पैली तरफ सांमा जाय पेसवाई कर ले आया अर लाठसाहब रेलगाड़ी सुं उतर घोड़े सवार होय, ऊण वखत सिलांमती रा तीर २१ छूटा।

११. धौलपुर रो राजा फागुण वद ९ नुं आया सो साहब लोग सांमा पेसवाई में मामुल मुजब गया अर तोपां रा तीर १३ छूटा। दोय तीर कमती

---

1. ठीक संध्या के समय 2. नियत संख्या से दो कम छोड़ी गई 3. नराजगी
4. वर्दी

छूटा सो वेइंतजामी[1] व सिरकारी मुजरम ने गिरफतार करण नु मुषबर गया तिण नु भगाय दीया, तिण कसूर सू दोय तीर कमती छूटा ।

१२. ओर ताल भोपाल री वेगम आज आया जिणांरी विगतवार सु लीषण में आवसी ।..

और राजा आगरै आया अर ऊपर मंडीया तिणां री लाठसाहब सु जुदा-जुदा नु बुलाय मुलाकात करी तिण री विगत—

१. प्हैले लंबर गवालेर रा राजा श्री जीयारावजी नै बुलाया सो लाठ साहब रा डेरां सु पांवडां ६० आसरे सिकतर २ ने गवालेर रा रजीदंट जुमले साहब लोग जणा ३ हाथीयां री सवारी कर पेसवाई कर लाया सो लाठसाहब रा डेरा बारै तांई सिकतर २ फेर सांमा गया, पछै हाथीयां सु ऊतर डेरा में गया तरै लबाफरस तांई लाठसाहब पेसवाई कर ले गया नै सिलांमी री तोपां रा तीर १९ जावतां नै १९ ही पाछा आवतां छूटा । नै मुलाकात कुरसीयां ऊपर हुई । जीवणा हाथ कांनी लाठ साहब बैठा । घड़ी १ तांई सोषीयां वाता[2] हुई । पछै अंतरपान हुय रुषसुद हुवा ।

२. दूजौ लंबर जैपुर म्हाराजा श्री रांमसिंघजी आया सो गवालेर वाळां सु दस वीस पावंडा कमती सिकतर २ अर जैपर रा अजंट बुरक साहब जाय पेसवाई कर लाया । सो लाठ साहब रा डेरां बारै हाथीयां सु ऊतर मांह गया, लंबा पूस ताई सांमा लाठ साहब आया नै सलांमी रा १७ तीर छूटा अर कुरसीयां पर बैठा, जीवणै हाथ कांनी तो श्री म्हाराज अर डावा हाथ कांनी लाठ साहब बैठा, सोषीया वातां हुई । घड़ी १ तांई बैठा रह्या पछै अंतरपांन हुय रुषसुद हुवा तरै तीर तोपां रा १७ फेर छूटा । अर म्हाराजा रांमसिंघजी री तारीफ लाठ साहब करता रह्या कै आप नै मुलक जैपुर का व्होत बंदोबसत कर रखा है ।[3] और आठ-आठ आदमी साथै लेजावण रो हुकम थो सो पींडत सीवदीन ठाकुर गोविंदसिंघजी रावळजी राव जीवणसिंघजी दूणी का वगेरै ठाकुर लोग दरबार में साथ था ।

1. अव्यवस्था 2. अनोपचारिक बातचीत 3. राज्य-व्यवस्था बहुत अच्छी कर रखी है

३. तीजो लंबर ताल भोपाल री वेगम री मुलाकात गवालेर सरसते हुई । जैपर वाळां रै पछै हुई ।

४. बूंदी रा रावराजाजी आया तरै लाठ साहब रा सिकतर डेरां सु पांवडा १५० तथा २०० पेसवाई कर लाया नै हाथी सुं ऊतर मांह गया तरां लाठ साहब ऊठ ताजीम तो दीवी अर सांमा नहीं आया, अर सिलांमी रा तीर १७ छूटा । घड़ी १ तांई वातां कीवी । पछै अंतरपांन हुय रुषसुद हुवा तरां सिलकां रा तीर १७ फेर छूटा ।

५. भरतपुर वाळां री मुलाषात बूंदी सरसते सारो कांम हुवौ ।

६. कोटा रा म्हारावजी रांमसिंघजी आया तरै पेसवाई में सीकतर २ नै हाड़ौती रा अजंट बूंदी भरथपुर सुं पांवडा पांच सात कमती सांमा आंया । अर हाथीयां सुं ऊतर मांह गया तरै तोपां रा तीर ११ छूटा घड़ी १ तांई सोषीया वातां कीवी, पछै सीष कीवी, तरै तोपां रा तीर ११ फेर छूटा ।

७. अलवर रा रावराजाजी आया जिणां सांमा पेसवाई में सीकतर २ अलवर रो अजंट अनफी साहब भरतपुर सुं पांवडा दोय चार कमती जाय पेसवाई कर ले आया ने हाथी सुं ऊतरीया तरै सिलांमी रा तीर तोपां रा १५ छूटा अर लाठ साहव सुं सोषीया वातां घंटे १ तक तथा १।। घंटे तक हुई अर रुखसुद हुवा तरै तोपां रा तीर १५ छूटा ।

८. टूंक रो नवाब..............री पेसवाई में सिकतर हाथीयां पर सवार होय माफक मांमुल रै आय ऊभा, अर नवाब आया नहीं तरै सिकतरां नवाब कनै सवार २ मेलीया सो नवाब डेरां सुं जितरै असवार हुवा नहीं था जद सीकतर पाछा डेरां आयां अर जातां ही दरबार बोळाय दीनो, सो हमे फेर सोमवार रा दरबार में देखी जासी हाल तो आज तांई हाल थो सो लीषीयो है ।

१९१९..................सो षबर आगरै सुं उकीलां मेली तिण रो नकल अठै छापी छै सो फेर लारली षबर आवसी जद फेर लीषी जासी ।

और राजावां री मुलाकात फेर फागण सुद.......री हुई अर सारा राजावां निजर निछरावलां कीवी अर लाठसाहब राजावां नु सिरपाव दीया

तिण री विगत तो षुलासै आयां मंडीजसी परंत सुणणै सु मालम पड़ै है कै राजावां री वात में हरकतां रही । फेर लाठ साहव राजावां नु घुरकी धमकी दीवी कै जो अपने-अपने राज का पका-पका बंदोबसत नहीं रषोगे तो चंद रोज में कोई दूसरी तजबीज होगा ।

फागुण सुद १२ सोम, और म्हाराज कंवार परतापसिंघ अजंटसा री साथ तरफ म्हालांणी[1] गया था सु आज आया ।

फागुण सुद १५ गुर री होळी रो उछव सदामंद सरसतै हुवौ.......... ।

चैत वद १ री छारोली सदामंद सरसते हुई । और अजंट साहब म्हालांणी री तरफ गया था सो परवारा आबूजी गया था सो आबूजी सु आज आया दिन ३३ सूं ।

चैत वद ८ तथा ९ सुकर और सील रो मेळो दसतूर मुजब भरीजीयो अर घुड़ला रौ मेळो दसतूर मुजब भरीजीयो । लारलै दिन रा मेळो देखण नुं अजंट साहब अर म्हाराज कंवार तळैटी रा म्हैलां आया सो घुड़लो रात पोर १।। गयां आसरे दाषल हुवो ।

चैत वद १० अजंट सायब री जाफत गढ ऊपर हुई ।

चैत वद १२ सोम अर अजंट साहब री जाफत रांणावतजी सारे न्होरै हुई । दसतूर मुजब[2] सब कांम हुवो । श्री हजूर में आय, ने ।

चैत वद १३ मंगलवार अजंट साहब आबूजी नै चढीयो, दसतूर मुजब तोपां रा तीर ११ छूटा, लारलै दिन रा ।

चैत वद १४ और वडो साहब अर मंमोई रो लाठ जरणैल[3] आबूजी री तरफ अजमेर नसीरावाद सु सोजत पाली हुय जावै है तिणां रै सांमा सदामंद मुजब पाली तांई जोधपुर सु मुसाहब जावै है, सो गया ।

चैत सुद १ सुकर, और आज रात आधी आसरै घास री मंडी में दीवांण री हवेली कनै होळी रा सांग रौ तमासो मु मुकनचंद रै भाई बेटां करायो जठै श्री हजूरसा म्हेरवांन होय पींडां पधारीया अर फेर साथै.......था पछै श्री हजूर

---

1. मालाणी 2. कायदे के अनुसार 3. जनरल

सा मैरवांन होय दिवांणगी रो दुपटो उणीज बषत रात पाछली रो ईनायत कीयो। निजर निछराळ हुई अर उठै ईज तासळी अरोगीया। मुकनचंद वडा साहब रै सांमो पाली गयो है सो सिरपाव तो उणरै आयां उण नु हुसी अर हाल दुपटो समरथमल मुकनचंद रा भाई नु हुवौ। और इणां सु दीवांणगी तागीरायत १९१९ रा सीखदां हुई थी अर कांम षालसाही मेतो अमेदनगर रौ हरजीवण करतो थो पंचायत में, सो पाछी दीवांणगी इणां रै म्हीना ८।। साढी आठ म्हीना सु हुई। सो इणां नु दिवांणगी दै श्री हजूर गढ़ दाषल हुवा। और सोभत री हाकमी दुरगासिंघ रै हुई तागीरायत म्हे. परतापमल री परतापमल रे कुल वरस·······म्हीना·······दिन रही। ओर टंगसाळ[1] री दरोगाई व्यास फौजीरांम रै थी सो आज पेटी तालकै, म० फौजीरांम व्यास रै टंगसाळ घणां बरसां सु थी मगरायजी[2] रा भाई रै नांवै हुई।

चैत सुद ३ रवि, आज गिणगोर रो मेळौ छै सो श्री हजूरसाहबां री असवारी मांहलैवाग दाषल हुवा, दसतूर मुजब मेळो हुवौ। पातरीयां भगतणीयां री घुमरां वाग में दिरीजी[3] और गिड़दीकोट रै बारणै म्हाराजकंवार घोड़ा फेरता था सो १ आदमी मालण घोड़ा री फेट सु उछल मर गई। दूसरी आ वात हुई के पांचमा माजी रो १ चाकर परभु नांवै तिण रै पण कंवरां रै आदमी मेळा में घोड़ा फेरे जठै तरवार वाही सो टांका आया।

चैत सुद ४ श्री हजूर री असवारी कालोकी म्हांलैवाग दाषल है।

चैत सुद ५ भोम, और फिरंगी १ सींध री तरफ सु जैसलमेर हुय आयौ है तिणां री जाफत श्री हजूर साहबां मांहलेबाग में दीवी। नाचकूद वगैरे दसतूर मुजब हुवा। अै साहब नसीराबाद री छावणी जासी।

चैत सुद ६, और पाली तांई मुसाहब वडासाहब रै सांमा गया था सो आज पाछा आय गया।

चैत सुद १०, प्रथम री व जोधपुर री अजंटी री उकीलायत जोसी हंसराज रै हुई। तागीरायत मु० मुकनचंद रा बेटा पूनमचंद री। पूनमचंद रै उकीलायत १९१८ रा फागण वद १४ नु हुई थी सो कुल वरस २ म्हीनो १ दिन ११ रही। सो साहब नु राजी राषीयो।

---

1. टकसाल, 2. यह महाराजा तखतसिंह की पासवान थी 3. घूमर नृत्य का आयोजन हुआ

चैत सुद १० दुतीक सोम और श्री म्हाराजकंवार चावड़ीजीसा रै जिणां नु सीळ नीकळी तिणां री सीळ री जात गाजावाजां सु कागै देण नु गया ।

चैत सुद १४ सुकर जोसी हंसराज उकीलायत रै कांम पर अजंट साहब कनै आबूजी आज चढीया ।

चैत सुद १५ सन, और श्री हजूरसाहबां री असवारी मांहलावाग सू कायलाणा री तरफ पधारीया ।

वैसाष वद १ रवि और कोळीया री हाकमी छंगाणी व्यास जेठमल री बेटा……रै हुई । तागीरायत भ० हरनाथ री, हरनाथ रै कुल वरस…महीना …दिन…रही ।

वैसाष वद ५, और श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद पधारीया ।

वैसाष वद ६ रवि, और श्री हजूर री असवारी बाळसमंद सु रात रा हथणी छोटी पर विराज मर्गरायजी रै नोरे पधारीया २ पहोर विराजीया रह्या । पछै पाछा बाळसमंद पधारीया ।

वैसाष सुद १२ गुर और श्री हजूर री असवारी बाळसमंद सु गढ़ ऊपर पधारीया । सुद १४ वेरै तषत विलास ।

वैसाष सुद १३ सुकर, और आज मातमपोसी म्हामंदर वगैरे १० आठेक ठौड़ असवारी पधारी । वणसूर चैनदांनजी[1] आसोज वद ३ नै चलीया सो श्री हजूर हवेली पधार जादूरांम री पूरी षातरी कराई ने घड़ी २ तांई विराज्या रह्या । और असवारी बाळसमंद छैलवाग वीराजै ।

जेठ सुद १३ रवि, और श्री हजूर स्हाबां री सालगिरै रो आज उछव है, गढ़ में हुवो है । और मोसर सरबालै[2] आंम'दरबार हुवौ । नाचकूद वगैरे कुसी सदामंद सरसतै हुई तोपां रा तीर बरसां मुजब ऊपर रा छूटा ।

जेठ सुद १५ रौ चंद्रग्रहण हुवो गीरीयो असत हुवो दूजै दिन ३ वजीयां साफ हुवो ।[3]

---

1. यह राजस्थानी का अच्छा लेखक था 2. सब को मिलने की इजाजत 3. ग्रहण से मुक्त हुआ

असाढ़ वद १३ रवि, और श्री हजूर री असवारी घोड़े विराज नाळै री बारी मारग होय बाळसमंद छैलवाग होय पाछा सैर में पधारता था सो मारग में बोड़ा री बगेची में अतीत म्हापुरस काळाकिसन बेठौ थो जठै पधारीया। घड़ी १ तांई विराजीया रह्या भेंट कीवी। साथै उमजी था सो उमजी अरज कर ले गया पछै उठां सु चांदपोळ मारग होय स्हैर में तळेटी रा म्हैलां पधारीया, उठै कोटवाळ कपतान दुरगाप्रसाद हाजर हुवो आप रै कांमरी अरज वीनती करी। पछै उठा सु रांणीसर तथा चोकेळाव पधार दाषल हुवा। वद "अमावस" असवारी बालसमंद री हुई।

असाढ़ सुद १ असवारी सड़क रै बगलै पधारीया।

असाढ़ सुद ३ सुकर असवारी बाळसमंद विराजै छै। और आज ईतरा ओधा उथलीजीयां री विगत····सांभर री हाकमी राव राजमल, राजमल रा बेटा रै हुई तागीरात वीकानेर रा म्हैता जसवंतसिंघ री, जसवंतसिंघ रै भादवा वद १४ नु हुई थी सो कुल महीना १० नै दिन तीन रही।

वागर री दरोगाई आसोपा व्यास उतमरांम रै हुई अन रे कोठार री दरोगाई पंचोळी जोरावरमल रै हुई। तागीरात आनासा री आनासा रै १९१८ रा असाढ़ सुद १४ नु हुई थी सो कुल मास ११ दिन १८ रही।

कोठार री पोतदारी दिवांण तालकै हुई, तागीरायत वीसा रामनाथ री रामनाथ रै वडा हजूर श्री मानसिंघजी री रजवाड़ में १८९२ में हुई थी सो कुल वरस २७ आसरे रही, अेकादी वार श्री हजूर म्हाराजा तषतसिंघजी रै राज मे जबत हुई तो पाछी तुरत हीज बाल हुयं गई। सो पोतदारी तो जबत कीवी अर रांमनाथ विसै नु चोतरे अटकाय दीयौ अर घर रे बारणे चोकी राज री बेठांण दीवी।

वागर री पोतदारी वीसा वषतावरमल तथा गुठीया थी सो जबत हुय दीवांणां तां० हुई।

कळी रे कोठार री दरोगाई म्हैता छतरमल रै हुई, तागीरायत जोसी सिवनारायण री, सिवनारायण रै कुल वरस····महीना····दिन····रही।

जाळोर री कारकूंनी सि० उदैराज फतैराज रा बेटा रै हुई। आ कारकूंनी आगै षालसै थी सो हुई।

सीवांणा रै गढ़ री किलैदारी अैमदनगर रा मूलजी नरूका रै हुई, तागीरायत सोड सरूप रा बेटां री। सोडा रै किलेदारी वडा हजूर श्री मांनसिंघजी म्हाराज री रजवाड़ में जाळोर री चाकरी सुं दीवी थी, १८६२ आसरै। और वाभा वभूतसिंघजी श्री मांनसिंघजी रा नै रावराजा पदवी ईनायत हुई। सिरपाव हाथी कड़ा मोती कंठी सिरपेच अर कांमदार नुं कड़ा दुसालो हुवा।

आसाढ़ सुद ४ सन। और पाली री हाकमी गोपालराव रा बेटां रै नांवै हुई, तागीरायत अैमदनगर रा हरजीवण री, हरजीवण रै कुल वरस....महीना.... दिन....रही।

और पाली री कारकूनी पेटी तालकै दुरगसिंघ रै हुई, तागीरायत व्यास गंगाराम री।

और षटदरसण री अदालत मूंदीयाड़ रा बारट चैनसिंघ रै हुई तागीरायत कविराय भारथदांन री। भारथदांन नै घणां वरसां सुं थी।

और बगसीगिरी सिंघवी उमैदराज रा बेटा देवराज रै हुई। फौजराज रै खोळै बेठौ बाळसमंद रा डेरा हुई। सिरपाव कड़ा मोती कंठी पालषी सिरपेच वगैरे जो बगसी रो सिरपाव रो सरसतो मुजब हुवा, रात प्होर १॥ गयां आसरै, अर गांव वीजवो गोढवाड पटै हुवो, फेर ही बगसीपणा रो लवाजमो थो सो हुवो। फौजराज चलीयां पछै फौजराज रै नांव रा कागद-पतर[1] बगसी रै कांम में लिषीजता अर कांम म्हेतो विजैमल तो मुकत्यार थो अर काळू मूता रा बेटा रांमलाल वगैरे सारा भाई करता था पछै हमार १९१८ में बगसी जबत हुई पछै कांम तो अै आगला हीज करता हा पिण बगसी लिषावत लिषीजतो। पछै हमार सि० उमैदराज उदम कर[2] रु० ४ चार तथा पांच लाख सिरकार में देणा कर बगसी बेटा रै नांवै कराई सो रुपीया तीन लाख रै आसरै तो अवेज सोनो रुपो वगैरे माल फौजराज मरते थकै आंकड़ा मेळ कर ईनायतो पड़ीयो थो सो परबारो भर दीयो। बाकी रुपीया रह्या तिणां री किसतां बंदीज गई सो भरीजती जासी।

और सिव री हाकमी सि० समरथराज रा भाई छगनराज रै हुई, तागीरायत पंचोळी नांनमल री। नांनमल रै १९१८ रा वै० में हुई थी सो कुल महीना १४ आसरै रही।

---

1. पत्राचार 2. प्रयास करके

और थांवळा री हाकमी पी० नांनमल रै हुई, तागीरायत काजी........ री सो इण रे कुल वरस....महीना....दिन....रही ।

असाढ़ सुद ५ री, व असवारी बाळसमंद विराजै ।

असाढ़ सुद ६ सोम, असवारी बाळसमंद. और छोटा रांणावतजी रे कंवर री आज वरसगांठ है।

असाढ़ सुद ६ गुर श्री वडा रांणावतजीसा रो कांमदार नारकरण रो बेटो नादांनी उमर में नादांनी कांम करै। नारकरण रै काबू मे नहीं, कह्यो मांने नही। तरै नारकरण मालम कराय पातर रा घर मांय सु दीवांण रा भाई नु मेल पकड़ाय लीयो। पछै श्री रांणावतजीसा केणो कर[1] पाछो छुडायो ।

असाढ़ सुद १३ सोम। और असवारी बाळसमंद तथा छैलवाग हुय कायलांणै पधारीया ।

और ईणां बारै महीनां में श्री हजूर री असवारीयां इणभांत पधारणो विराजणो हुवो, विगत—

दिन........
१३५ षास गढ़ में मास १२ में दिन अेकसो पैतीस
६२ राज मैलां मास बारै में वासट दिन
८४ बाळसमंद छैलवाग चोरासी दिन
१६ कायलांणै उगणीस दिन
३० सफर जांन जैसलमेर कांनी पधारीया
८ लछरायजी री बावड़ी, राइकेवाग, रेषा वेरे
　　　　　　　　　३　　　２　　　３
१६ म्हालेवाग, तषत विलास, फेर कायलांणे
　　　११　　　　３　　　　２

———

३५४ रा मास १२, १६१६ रा वरस रा

1. कहासुनी करके

वणसूर जादूदांनजी री वही री नकल १९२० रो प्रथम सांवण वद १ गुर नवो समत सरू। और राज रो कांम मुलकी दिवांण वगैरे सिरकारी कांम री अरज विनती करणी तथा दुवायती लावण री इतरा दिन तो नाजर हरकरण करतो थो ने आज पछै वाभा मोतीसिंघजी नु हुई है सो हमें औ करसी । अर नाजर हरकरण सदामंद जनानी दोढी रो कांम करै है ज्युं करसी ।

और तीड फाकै रो भय मुलक में विसेस कर छै ।

सांवण वद ५ रीव[1] । और आज १ म्हाजन मेंसरी रांमनाथ नींबाज री हवेली में म्हांमलत री दुकांन नींबाज रै कांमेत्यां री तिण में इण म्हांजन री पांती[2] सो चामचोरी में आय गयो[3], दायमी बांमणी षेतसी री बेटी सुं, तिण ने चांतरै रा आदमी पकड़ लाया अर चांतरै ले जावता था जिणरी षबर नींवाज रा कामैत्यां नुं पड़ी सो मु० फतैमल आदमी सांवठा मेल राज रा आदमीयां कना सुं जबरदसती कर छुडाय लीनो अर राज रा आदमीयां नुं नींबाज री हवैली ले गया सो राज रा आदमीयां नुं तो पछै सीष दीवी ने म्हाजन नुं हवैली बेसांण षेड़ भेळी आदमी १०० आसरे कर सब नै बैठ गया, जिण रा समाचार कोटवाळ जाय कायलांणं श्री हजूर मालम हुवा जिण ऊपर हुकम फुरमायौ म्हाजन नु ज्युं देवै ज्युं पकड़ लावो । जद कोटवाळ १ तोप अर २०० आदमी कमरां बांद त्यार हुवा, जद नींबाज वाळा म्हाराज कंवार श्री जसवंतसिंघजी हसतै मालम कराई कै म्हाजन नुं कालै परभात रा हाजर कर देसी, जद वात तकरार धीमी पड़ी ।

और सांवण वद ६ चांमचोरी में म्हाजन आयो[4] जिण नुं नींबाज रा कांमेती वगैरे दूजा सिरदार पोकरण रायपुर रास षजड़लो वगैरे सांमल हुय कायलाणं श्री हजूर री दोढी ले गया अर मालम कराई—म्हाराज कंवार हसतै कै ओ म्हाजन हाजर है। जद आप फुरमायो बैसाण दो, जद सिरदारां रै कांमैतीयां मालम कराई कै सूपां तौ कोई नहीं[5] औ सांचो है भलांई नीरधार[6] करावै, जद आप फुरमायो—निरधार फेर कांई बाकी रह्यो है ? सो सूंपै जद तो ठीक नहीं तो भलांई पाछौ ले जावौ । जद म्हाजन नुं कांमैती पाछौ नींबाज री हवैली लै आया जद कोटवाळ नुं हुकम श्री हजूर रौ हुवौ कै ईण

---

1. रविवार 2. हिस्सेदारी 3. जारी करते पकड़ा गया 4. वलात्कार का आक्षेप लगा 5. सुपुर्द तो नहीं करेंगे 6. तहकीकात

म्हाजन गो घर जबत कर माल असबाब तो चोतरै ले आवौ, अर रैवास री जगा है सो पाड़ नांषौ[1]। सो हुकम मुजब घर लूट लीनो ने जगा बेलदारां नुं लगाय पड़ाय नांषी। पछै म्हाजन नुं रातोरात छांनै नींबाज वाळा पींपाड़ पूगतो कर दीयो[2] और नींबज री हवैली में षैड इतरा सिरदारां री हवैली रा आदमी सांमल हुवा था—रायपुर, रास, षेजड़लो, नींबाज, नींबाज रा कामेत्यां रा तथा दूजा जीलायतां रा गांव १४ जबत हुवा।

प्र।। सांवण वद ६। गुर असवारी बाळसमंद पधारी। पछै सांवण वद १२ राजम्हैलां पधारीया रात रा।

सांवण वद " (अमावस) बुध, और अजंट साहव आबूजी सुं आया जिणां रै सांमा मुसाहब दसतूर मुजब सांमा गया सो ४ घड़ी तांई षोटी हुवा पिण साहब आया नहीं तरै मुसाहब पाछा उरा आया। पछै साहब मोड़ा थका[3] आया। दसतूर मुजब तोपां रा तीर ११ छूटा, अजंट मास ४ दिन २ सुं आया।

प्र।। सांवण सुद २ सुकर और जैसलमेर रा रावळजी री तरफ सूं षलीता अर सोगायत ले व्यास करणीदांन अर भाटी राजसी आया, पटौ जैसळमेरीजी रै लिषावण री तजबीज में आया है।[4] तिणां री पेसवाई सांमो पणीया साळगरांम नुं विदीयासाळ तांई मेलायो। आगे व्यास धनरूप आयो थो सं० १६१७ में तरै दोढ़ीदार सेसकरण विदीयासाळ तांई गयो थो, उतरी दूर इणां रै सांमा मेलीया।

प्र।। सांवण सुद ५ अजंट साहव रा जमला श्री हजूर में आया, घड़ी २ तांई ईकंत[5] रया। और नींबाज रै कांमैत्यां नुं अजंट साहब कह्यौ के तुम म्हाराजा साहब का हुकम नीं मानो हो अर वाणीयै कूं नीं सूपो हो[6] सो तुमारै हक में ब्होत बुरा होगा।

और जैसलमेर रा उकील व्यास करणीदांन भाटी राजसी आया तिणां नै आज आसरीवाद मुजरो हुवो, दसतूर मुजब निजर निछरावळ वगैरे वतळावण हुई।

---

1. गिरा दो 2. पहुंचा दिया 3. विलम्ब से 4. जैसलमेरी रानी के हाथ-खर्च हेतु गांवों का पट्टा लिखवाने हेतु 5. एकांत 6. गुनहगार वनिये को नहीं सौंपते हो

प्र।। सांवण सुद १२ सोम श्री हजूर साहबां री असवारी सूरसागर अजंट साहव पास हुई, हाथी विराजीया षवासी में म्हाराज कंवार………………… विराजीया। सिरे बजार होय पधारीया दसतूर मुजब सारो कांम हुवो, घड़ी २ तांई उठै विराजीया रह्या, पछै परबारा गढ दाषल हुवा। पछै सुद १४ असवारी चोकैळाव दाषल हुवा।

दु।। सांवण वद १ सुकर। और श्री म्हाराज कंवार ४ जसवंतसिंघजी, जोरावरसिंघजी, वगैरे हाथी चढ कायलांणै री तरफ अजंट साहव पिण सांमल सिकार गया।

दु।। सांवण वद २। और सईयद अकबरअली जो अंगरेजां री विलायत में आगे गयो थो सो आज दारू री तासीर आय मर गयो, सो श्री हजूर सा फिकर कीवी, अर रूपीया १०००) रोकड़ा दिया। अर षातर तसली लारला घर रां नुं कीवी।[1]

दु।। सांवण वद ४। और सिं० कुसलराज आज रात रा रांमसरण हुवो।[2] पछै वद ५ मंगळवार सिरे बजार नगारो नीसांण सुं अषेराज रै तळाव दाग दिरीजीयो।[3]

दु।। सांवण वद ६। श्री हजूर साहबां री असवारी नाजर उजीरबगस रै बेरै हुई। पछै दोफार आसरै[4] अजंट साहव पिण बाळसमंद गया, पछै हजूरसा पिण बाळसमंद पधार गया, इकंत घड़ी ४ रह्या। पछै साहब तो सूरसागर गया नै रात रा श्री हजूर साहब पाछा उजीरबगस नाजर रै बेरै पधार गया।

दु।। सांवण वद ११। असवारी बाळसमंद। अर अजंट साहब पण बाळसमंद आया। पछै असवारी वद १२ फूल बेरै हुई। पछै वद १ बुध असवारी छैलबाग पधार डूंडे विराज्या।[5] अर बाळसमंद पधार गया। अजंट साहब पिण बाळसमंद मैलां हीज था। सु बतलावण हुय पाछा छैलबाग पधारीया।

वद " (अमावस) असवारी सड़क रै बंगलै पधारीया नै अजंट साहब पाछा सूरसागर गया। सांवण सुद २ असवारी कायलांणै पधारीया।

---

1. परिवार के लोगों को आश्वस्त किया 2. मृत्यु हो गई 3. दाह संस्कार किया गया 4. दोपहर के करीब 5. किश्ती में बैठे

दु।। सांवण सुद ६ गुर। और सिं० फौजराज मर गयो जद घर रै माल रौ अडैवो कर[1] लाषोटा लगाय दीया था[2], तिण री आज हाजरी ले माल अडैवे मुजब सिरकार में लाया। नाजर हरकरण भं० पचाणदास वगैरे गया।

दु।। सांवण सुद १० सोम। वीरपुरी रो मेळो दसतूर मुजब हुवौ। श्री म्हाराजकंवार हाथीयां बैस मेळै गया। असवारी छैलवाग पधारी। पछै रात रा गढ़ दाषल हुवा।

दु।। सांवण सुद १२। सिं० फौजराज रै अडैवे सवाय माल स्वालाष रु० रौ निसरीयो[3] सारा मुसाहव फौजराज री हवेली गया था अर माल लाया सु निजर कीयो। सांवण सुद १३ अजंट साहब नै बीकानेर रा डाकतर ज्याज साहब २ दिन हुवा बाळसमंद था सो पाछा सूरसागर आया।

दु।। सांवण सुद १५। राषड़ी रो उछब[4] गढ़ ऊपर हुवो दसतूर मुजब। भादवा वद २ सईयद अकबर अली लारै चालीसो हुवौ।[5] भादवा वद ५ नाग पांचम रो मेळो दसतूर मुजब हुवो ने अजंट साहब नै ज्याज साहब डाकदर सहाब मेळो देषण ने बाळसमंद गया।

भादवा सुद ९ अजंट साहब री जाफत[6] वाभा मोतीसिंघजी रै दसतूर मुजब हुई। सारा मुसाहब गया।

भादवा सुद १३ वड़ली रै भैरुजी रो मेळौ दसतूर मुजब हुवौ। असवारी गढ़ दाषल विराजै। भा० सुद १५। असवारी गढ़ दाषल।

आसोज वद १ सोम। असवारी गढ दाषल विराजै। आसोज वद ४ गुर[7]। और अजंट साहब रो बेटो अर डाकदर म्होर साहब अे दोनूं गढ माथै श्री हजूर में आया। आसोज वद ५ सुकर। और सिं० देवराज रौ षोळायत[8] नूं सोना री बेड़ी आगै फौजराज नूं इनायत हुवोड़ी थी सो आज इणनूं बगसीस हुई। सो ओ हमें पेहरसी नै देवराज री बहू नै फौजराज री बहू रौ गैणौ है जिण मांहली कोई दोय च्यार रकमां[9] दिरीजी है, सो देवराज री बहू पैरसी।

---

1. सूची बना कर　2. तालाबंदी करवा दी थी　3. सूची के अलावा सवा लाख रुपये का माल और निकला　4. रक्षाबंधन का उत्सव　5. चालीस दिन के पश्चात् मृतक के प्रति शोकाभिव्यक्ति　6. गोठ　7. गुरुवार　8. गोद आया हुआ लड़का　9. गहने

और ठा० नींबाज वाळां रै म्हाजन बाबत झोड़[1] है सो राज में रुपीयो नहीं। पछै अजंट साहब नींबाज वाळां सूं तकरार कीवी जद म्हाजन नूं सूरसागर अजंट साहब कने मेल दीयो तथा सूंप दीयौ, सो म्हाजन री हकीकत साहब रै रूबरू मंडसी।[2]

आसोज वद ६ सन। असवारी गढ दाषल। वद ७ आदी रात रा अजंट साहब पाली कांनी चढीया। आसोज सुद २ बुधवार। और सिं० कुसलराज लारै गांव सारणी पांच पकवांन री आप री हवेली में १२।। न्यात अर सेवग २००० आसरे तथा बारलै गांवां रा बिछायत तथा राज रो रसालो जीमीया, जस चोषो आयो[3]। षांड मण) आसरै गाळी।

और कुसलराज रा बेटा रतनराज नूं श्री हजूर सिरपाव कड़ा मोतीयां री कंठी सिरपेच दुपटो पालषी अर कामैत्यां नूं कड़ा दुसाला हुवा अर षातरी मोकळी फुरमाई।

आसोज सुद ६ रिव[4]। और आज रीवां रै राज रो ब्याव श्री हजूर साहबां रौ तथा म्हाराजकंवार रौ हुसी तिण रौ टीको आयौ। चार ब्यांव रा टीका है हाथी ८ ब्यांव दीठ हाथी २ अर घोड़ा—दसतूर मुजब आया।

आसोज सुद ७ सोम। और श्री हजूर साहब आज मातमपोसीयां करावण असवारी कर पधारीया परभात रा दिन घड़ी ४ चढ़ीयां आसरै असवारी हुई। जोसी परभूलाल री हवेली पधारीया। सारा भाया नूं षातर दिलासा दीवी अर परभूलाल री बहू नै षातरी नाजर लारै कराई १) म्होर निछरावळ री हुई अर दसतूर मुजब निजर निछरावळ हुई। पछै हंसराज आप तथा भाईबंद तथा भला आदमी पंचोळी वगैरा नूं आसीरवाद मुजरो कराया।

और जोसी सिंभुदत थकां री घर में सासत्रां[5] री पुसतकां है तिणां री हाजरी दीवी[6] जद श्री हजूर देष ने खुस हुवा अर भेंट कीवी पण सुणी है।[7] सिं० सीवराज मेगराजोत री हवेली बारणे होय असवारी पधारी तथा सो वेती असवारी सिवराज निजर निछरावळ कीवी। पछै उठा सूं श्री बालकिसनजी म्हाराज म्हाराज रै मंदर पधारीया गुंसांईजी म्हाराज रा दरसण भेंट कर आगा पधारीया। पछै पटानवेस धनरूप री मातमपोसी करावण भीनालाल कने

1. तनाजा 2. एजेन्ट की मौजूदगी में बयान दर्ज होंगे 3. अच्छा यश प्राप्त किया 4. रविवार 5. शास्त्र 6. प्रस्तुत की 7. भेंट भी की ऐसा सुना है

उण री हवेली पधारीया। दसतूर मुजब निजर निछरावळ हुई। अर भाई कांमेत्यां भतीजां नूं मुजरा कराया, पछै षासै विराज फुरमायौ के ठाकुर कांणांणे री हवेली हालो सो ठाकुर गांव सूं आवणो थो सो आयो नहीं री मालम हुई तरे मोकुब[1] राष नै पछै उठा सूं सिं० कुसलराज री हवेली पधारी सो रतनराज समरथराज विजैमल हवेली री पोळ सूं पांवडा २५ आसरै सांमा गया। हवेली में पधारीया सो आप हथणी पर विराजीया था सो हाथी रे मावत हतणी नूं गोडाळियां पांच च्यार पाँवडा पोळ में हलाय मांह गया[3] कारण के कुसलराज री हवेली री पोळ री लग नीची है[4] जिण सूं, पछै मांह पधारीया। दसतूर मुजब निजर निछरावळ कीवी अर आप षातरी मोकळी फुरमाई। पछै कांमेतीयां तथा भाई तथा तालकदार ईजतवाळां नूं मुजरौ आसरीवाद कराया, सारी बात दसतूर मुजब हुई। पछै उठा सूं षासे विराज नै सईयद अकबरअली रै गोळ में सारां पछै पधारीया। दसतूर मुजब षातर तसली निजर निछरावळ हुई।

भंडारी बाधरमल परतापचंद दफतर रै दरोगा री जगां[5] मारग में आई सो निजर निछरावळ वेती असवारी कीवी। पछै मगरायजी रौ नोरो मारग में आय गयो थो सो उणां रा कामेत्यां वेती[6] असवारी निजर निछरावळ कीवी। पछै उठासूं नजीक.......... । भं० गणेसचंद री आय गयी सो वेती असवारी निजर निछरावल कीवी, पछै उठा सूं षासे विराजीयोड़ा सिं० समरथराज री हवेली कने हुय पधारता था सो वेती असवारी समरथराज रतनराज निजर निछरावल कीवी, आपरा हाथ सूं लीवी।[7] पछै उठा आगा पधारतां फुरमायो के थे दोनूं भाई गढ ऊपर हालजो सो अै रतनराज समरथराज असवारी में हाजर हुवा। पछैं आसोपा हीरालाल री मातमपोसी करावण पधारीया। दसतूर मुजब निजर निछरावल अर षातर तसली हुई।

पछै उठा सुं बगसी सिं० फौजराज री हवेली पधारीया, षोळायत देवराज नूं षातर तसळी दसतूर मुजब कीवी ने देवराज, उमेदराम, विजैमल नूं षातर तसली दसतूर मुजब करी, सारी वात दसतूर मुजव हुई। पछै उठा सूं गोळ री घाटी मारग होय गढ़ में चोकैळाव दाषल हुवा दोफार रा।

इणां सारा ठिकांणां री निजर निछरावल री म्होरां ३३) नै रुपीया) आसरे आया।

---

1. स्थगित 2. घुटनों के बल 3. प्रवेश किया 4. प्रोल की ऊंचाई कम है
5. मकान 6. रास्ते चलती 7. महाराजा ने अपने हाथ से ग्रहण की

आसोज सुद ८ भोम। और रीवां वाळां रा घोड़ा निजर हुवा। और कुसळराज सिंघवी लारै कारज[1] री मीठाई वची घणी तिण सूं साढी बारै न्यात फेर पोकरण री हवेली में जीमाई।

आसोज सुद ९ तथा १० बुध। विजैदसमी आज रांवण मारण रौ तमासो देषण श्री हजूर री असवारी हाथी विराज पधारीया, षवासी में ठाकुर आहोर था। दसतूर मुजब सारो कांम आतसबाजी सिलक वगेरै हुवो। आसोज सुद ११ श्री हजूर सायबां री असवारी हाथी विराज चोकैळाव सूं बाळसमंद पधारीया। आसोज सुद १२ सुकर। अन रै कोठार री दरोगाई किलेदार देवीसिंघ साथै हुई, तागीरायत पंचोळी जोरावरमल गोपाळदासोत री। नै गूलर आलणियावास रो पटो पण हुवो, तागीरायत जोसी सिवनारायण री। पंचोळी जोरावरमल रे कोठार री दरोगाई........हुई थी सो कुल बरस........महीना........ दिन........रही। कातीवद २ बुध। श्री हजूर साहबां री असवारी कायलांणा री तरफ सूं सड़क रै बंगलै होय वाळसमंद पधारीया। और जैसलमेर रा उकील व्यास करणीदान, भाटी राजसी छाडांणां कर[2] डेरा म्हामंदर कने कीया, तिणां नूं डोढ़ी रौ आदमी मेल वाळसमंद बुलाय डेरा कराया।

काती वद ५ षबर आबूजी सूं आई के सेवाजषां वडा साहब कनै जोधपुर री सिरकार सूं उकील थो सो आबूजी ऊपर मर गयौ। तिणरो बडै साहब अपसोच[3] घणो कीयो। असवारी फूलवेरे फूलवाग परभात रा पधारीया।

काती वद ६। और हरजीवण नूं घर री सीष देस-जावण री हुई मास १ री, नै षरची रा रु० १०००) दिरीजीया। और जैसलमेर रा उकीलां नु वाभा मोतीसिंघजी लारै षातरी कराई कै थांरो कांम राजमैलां पधार कर देसी।

काती वद ७ भोम। असवारी रजमैलां पधारीया।

काती वद १४ भोम। दीपमाळका रो उछब हुवो। और म्हाराजकंवार परतापसिंघजी सिकार गया सो अषै राज रा तळाव में आड रै गोळी लगाई सो मर गई सो आड नूं लेण नुं चांपावत सालजी रो बेटो उमर वरस १८ परणीयोड़ो सो तळाव में आड नुं लेण वड़ीयो सो पाछो आवतो तिरतो-तिरतो थाक गयो सो तळाव में हीज मर गयौ, सो पैला श्री हजूर री

---

1. मृत्यु-भोज 2. नाराजगी से विदा होकर 3. अफसोस

असवारी बजार में रूसनाई दीवाळी री देषण रो हुकम दीयो थो सो आ वात हुई तिण सुं असवारी मोकूब रही ।[1] और जैसलमेर रा उकीलां नुं बुलाय फेर षातरी कीवी ।

काती सुद ७ । और पड़दायत मगरायजी रा बेटा सिरदारसिंघ नू घरां व्याव रौ टीको आयौ है सो वाभा लालसिंघजी रा बेटा रो व्याव पिण बूंदी जासी सो दोई जांनां साथै ।[2] टीको गढ उपर ले गया, दसतूर मुजब सारो कांम हुवो ।

काती सुद १० जैसलमेर रा उकील रीसांणा होय चढीया जिणां रा डेरा गांव चंडाळीयै हुवां रा समाचार मालम हुवा, तरै दोढ़ीदार नुं पाछा बुलाय सो पाछा आया, मोसर हुवो, सो षलीता रो जबाब तो लिषाय दीयो अर सरसतै मुजब सिरपाव हुय गयो अर कह्यो के पटा रो हाल लिषीजै नहीं फेर देषीजसी[3] सो षलीता सिरपाव वळै करणीदांन भाटी राजसी जैसलमेर रवाने हुवा, मी० वद २ ।

मिगसर वद २ सुकर । और रीवां रा व्यांव रौ आज टीको श्री हजूर में राजमैलां रात घड़ी २ गयां आसरै झलीजीयो, व्यांव ४ रो सो दसतूर मुजब सारो कांम हुवो । और १ वात आज नवी हुई कै जांमनगर रा जाड़ैचा कंवरांणीजी रो कांम करै हरीसंकर तिण रै ने १ जांमनगर रो रजपूत जेठो जिण रै माहोमाह में घणा दिनां रो कीसो[4] थो सो हरीसंकर उण बषत राजमैलां श्री हजूर री दोढी मुसाहब सांमल बैठो थो जितरै रजपूत जेठै अजांणचक[5] छुरी काढ़ हरीसंकर रै नाक ऊपर चलाई सो मोकळी लागी अर वैदो[6] दोढी ऊपर होय गयो । सो जेठो तो नास गयौ तिण ऊपर श्री हजूर री तकरार हुई के षूनी जावण पावै नहीं, जठै हुवै जठै सूं पकड़ लावो । सो कोटवाळ लारै जोवण[7] नुं वार चढीया सो कुचांमण री हवेली में जेठो वड़तो थो सो कुचांमण वाळा हवेली में बड़ण दीनो नहीं । जितरै कोटवाळ जाय प्होतो सो पकड़ लाया अर चांतरै भाषसी[8] में घाल दीयो । और हरीसंकर रै नाक रै टांका आया सो जांणां आरांम दिन लागां[9] हो जासी । पिण जेठै

---

1. सवारी निकालने का कार्यक्रम निरस्त रहा 2. दोनों की बरातें साथ ही जाएगी 3. बाद में देखा जाएगा 4. रंजिश 5. अचानक 6. झगड़ा, अशान्ति 7. खोज करने 8. जेल, कोठरी 9. कुछ दिन बीतने पर

बेग्रदवी करण में पाछ[1] राषी नहीं। ग्राजतांई ग्रैड़ी वात सिरै दरबार में हुई नहीं, सो जांणां हां इण नु सजा पकी दिरीजसी।

मिगसर वद ५। श्री हजूर री ग्रसवारी गोळ री घाटी हुय गढ दाषल हुवा चोकेळाव, ग्रर वद ६ छैलवाग पधारीया।

मिगसर वद ६। कलकते रो लाठ साहब मर गयौ रा समाचार लागा तरै तोपां रा तीर ४० रात रा छूटा।

मिगसर वद ८। ग्रौर सिवांणा री हाकमी नाजर इलाईबगस सु जबत हुय दिवांणां तालकै हुई। ग्रर तबेला री मुसरफी पिण दिवांणां ता० हुई। ग्रौर ग्रसवारी कायलांणै री तरफ हुई, पछै सड़क रै बंगलै पधारीया।

मिगसर वद १४ ग्रसवारी वाड़ीयै री तरफ पधारी। ग्रौर सिं० रतनराज कुसलराजोत रांमसरण हुय गयौ[2] दोफार ग्रासरै, सो ग्रषैराज रै तळाव ले गया।

ग्रौर श्री हजूर री ग्रसवारी चोषां थी,[3] सो उठा सु परबारा चौपासणी सालगरांम नाजर री ग्ररज सु पधारीया। भेंट रु० २००) कीया, पाछा कायलांणै पधार गया।

मिगसर सुद ४ सोम। ग्रौर ग्रजंट साहब ग्रजमेर री तरफ गया था सो ग्राज पाछा ग्राया मास........दिण........सु। मुसाहब सांमा गया।

मिगसर सुद ५। सारा मुसाहब सूरसागर ग्रजंट साहब पास गया। घड़ी ९ तांई ठैरीया।

मिगसर सुद ८। ग्रौर वडो साहब ग्रजमेर जावै है ग्राबूजी सूं, जिणां रै सांमा मिलण नु मुसाहब ग्रजंट पाली तांई दसतूर मुजब गया है। ग्रसवारी बाळसमंद विराजै। ग्रौर षबर लागी कै बीकानेर में मुसाहब हिंदूसिंघ रा बेटा हरीसिंह रा बेटा हरीसिंघ गुमानसिंघ छोगमल नु कैद कर दीया, घर लूट लीया कैद सषत है।

---

1. कमी 2. मृत्यु हो गई 3. चौपासनी ग्राम के पास दो मील की दूरी पर एक छोटा-सा गांव

मिगसर सुद १४ बुध। असवारी रावटी दिन रा हुई। अर रात रा रासोळाई पधारीया। और श्री हजूर साहबां री असवारी सोजतीये दरवाजै रै मारग होय बड़े साहब रे सांमा पाली पधारीया। बड़ा साहब सुं मुलाकात दसतूर मुजब हुई। पछै पाली रा बजार में असवारी पधारी, निछरावळ निजर हुई। पाली २ मुकांम रया, पछै रोयट डेरा हुवा।

मिगसर सुद १५ दु०। आज अंगरेजां रै बड़ौ दिन[1] हौ दीसम्बर म्हीना री तारीष २५ छै।

पोस वद ४। श्री हजूर साहबां रा डेरा गांव गुड़ै रै तळाव हुवा।

पोस वद ५। श्री हजूर पाली सुं पधारीया राजमैलां पधारीया। अजंट साहब पण श्री हजूर रै साथै था, पाछा आया। और बूंदी जांन अठा सुं मगरायजी रा बेटां री तथा वाभा लालसिंघजी रा बेटा री मिगसर वद २ अठां सुं चढीया था अर मिगसर वद ११ पोता[2]। पांच च्यार दिन दसतूर मुजब उठै रह्या परंत अठा सुं जांन में मुसाहब जोसी सिवनारायण नाजर हरकरण तथा सिरदार गया था जिणां नुं बूंदी में रावराजाजी मोसर[3] १ दिन ही दीयो नहीं सबब कै जांन लारै ठाकुर बूडसू जावळी वगैरे था, सो इणां कह्यौ—म्हांरी डावी मीसल में बैठण रो कुरब जोधपुर में छै सो उण सरसते बैठक म्हांनु हुवै। अर डावी मीसल में म्हे आवां उण दिन उण डावी मीसल में दूजो[4] कोई बैठण पावै नहीं, तौ म्है मुजरै आवां। जद बूंदी वाळां रावराजाजी कही कै ठीक है म्हारा ही उमराव जोधपुर आवै तरै थें अठै मीसल में बैठो जिण सरसते जोधपुर में म्हांरा उमरावां नुं मीसल मीळी चाहीजै जिण रा आषर म्हांनु कर देवो[5]। सो जोधपुर वाळां आषर कीया नहीं कै आषर म्हे किण वात रा करां, जो दसतूर है सो सरसते मुजब हो जासी। सो पछै आपस में तकरार-सी रही, सो मुजरै गया नहीं। दूसरी आ वात कै बूंदी वाळां वात-वात में जांन वाळां री हरकत कीवी अर रुषास[6] धाप ने देषायो सो चसमा मीठा रया नहीं।

पोस वद ८। असवारी राजमैलां विराजै है।

1. क्रिसमस डे 2. पहुँचे 3. मिलने का अवसर 4. अन्य 5. हमें यह लिखित में दे दो 6. रूखापन

पोस वद ११ भोम । और श्री केसरकंवर बाईजी रौ व्याव ठैरीयो सो सरवरा[1] उदैमींदर में हो रही है, ताकीद सु । सो श्री हजूर री असवारी राजम्हैलां सु उदैमींदर सरबरा री त्यारी देष गढ में चौकैळाव रै मैलां पधारीया ।

पोस सुद ६ । असवारी गढ दाषल और ठाकुर पोकरण कुचांमण वगैरे नै षास रूका व्याव बाईजी रै व्याव में आवण रा सारा सिरदारां नै लिषीजीया । नींबा... रा ठाकुर विनां सबब[2] कै नींबाज रा कांमदारां अेक म्हाजन मुदै वात वद गई जिणरी विगत लिषीजै है, जिण सु नहीं लिषीजीयो छै, सारा आवता जावसी । और व्याव री सरबरा उदैमींदर में हुवै है, जिण री षरीद नै उठा तालका रो षरच री मुकत्यारी जोसी सिवचंद परभुलाल रौ नै दीवांण रौ भाई.........किलैदार वागजी भाट इण रै सांमलात रा नवीसंदा तालकदार वगैरे सु उठैहीज डेरा कर दीया, सो रात-दिन उठैहीज रहै ।

पोस सुद १० । अजंट साहब श्री हजूर में आया, घड़ी २ तांई इंकत वातां हुई अर जोसी हंसराज नु मोसर इकंत में हुवो ।

पोस सुद ११ भोम । असवारी गढ़ में चोकेळाव विराजै ।

और गोढ़वाड री हाकमी श्री रांणावतजीसा रा कांमेती नारकरण रै हुई, तागीरायत आंधा भंडारी अमीचंद री । अमीचंद रै संवत् १९२१ माह वद १४ हुई थी सो कुल म्हीना १७। स्वासतरै महीनां रही ।

और केसरकंवर बाईजी आज बनोळै बैठा । मगरायजी री बायां पण वनोळै बैठी, बूंदी परणीजसी ।

और जैपुर केसरकंवर बाई रा व्याव में बाईजी नु बुलावण सारू तथा जांन रै सांमा श्री हजूर साहबां ठाकुर कुचामण केसरसिंघजी अर म्हैता विजैमल नु नै नाजर हरकरण नु हुकम दीयो सो विजैमल तो जोधपुर सु रवांने हुवा नै ठाकुर कुचांमण है सो आपरै घरै, सो उठा सु विजैमल हरकरण रै सांमल.........रा डेरा हुवा । सो पोस सुद ७ नु तौ जैपुर पोता ने दसतूर मुजब जैपुर रे राज री तरफ सु सांमा[3] कोस १।। तांई आया ।

---

1. आवभगत की व्यवस्था 2. कारण 3. स्वागतार्थ सामने आये

पोस सुद ९ जैपुर में श्री रांमसिंघजी इणां नु मोसर दीनो[1] सो डावी मिसल में ठाकुर कुचांमण बैठा अर जिणां रै नीचे म्हेतो विजैमल बैठा, उण सुं नीचै दरजे नाजर हरकरण बैठो अर उण रै नीचे ठाकुर कुचांमण वाळां रा कंवर..............सिंघजी बैठा। और ठाकुर केसरीसिंघजी अर विजैमलजी हरकरणजी रै सांमा जैपर रै राज री तरफ सुं ठाकुर जीवणसिंघजी दूणी का और..........सांमा डोड कोस तांई आया हाथीयां रै हवदे मिलाप हुवो। पछै श्री म्हाराज रांमसिंघजी री हजूर मुजरे गया तरै हंसीकुसी रै साथ मोसर हुवौ।

और म्हाराज रांमसिंघजी जांन वणाय जोधपुर आसी सो ३६ कारषांनां नुं हुकम उमदाई रै साथ[2] दीयौ है अर कारषांनां में रुपीया षरच मुजव नगद सूंपै है। अर मन में वडो हरष मोद लागो[3] जिणरी त्यारी-त्यारी[4] लाग रही है रा समाचार विजैमल म्हैता रा कागदां सुं मालम हुवा।

और जोधपुर में पिण त्यारी श्री हजूरसाहबां रा हुकम मुजब आदमी-चढीयो पाळो २०,००० वीस हजार री सरबरा रौ फुरमाणो[5] हुवो है। सो त्यारी-त्यारी हो रही है। जैपुर सुं कूच जांन रो पोस सुद १२ रा डेरा बारै हुसी, रा समाचार मालम हुवा है।

पोस सुद १५ सन[6]। और श्री हजूर साहबां री असवारी चोकेळाव में था सो रांणीसर में पधारीया। अर मुसाहब पदमसर रै पठै माथै बैठा कांम करै छै। और वडा साहब री उकीलायत मुनसी चुनीलाल रै हुई, तागीरायत सैबाज खां री। सैबाज खां तो पैलाहीज मर गयो[7] अर कांम उणरा भतीज कांमेती करता था।

सैबाज खां रै कुल वरस.......म्हीना.......दिन.......रही। और वाभा ....री बेटीयां रो ब्याव रो टीको ले व्यास बुदजी रिणछोडदासजी रा बेटा नु मेलीयो। और बूंदी सुं जांन मगरायजी री बेटीयां वगेरै रै, बूंदी सूं कूच हुवो है सो लारै आदमी हाथी घोड़ा ऊँट पीनस रथ ८ बैलां ६ वगेरै
४ ४०० २०० २
भींड़ाभाड़ है। और षवर वीजैमल हरकरण रा कागद आया कै जांन रो कूच

---

1. मिलने का अवसर दिया 2. श्रेष्ठ कार्य के लिये 3. मन में हर्ष और उमंग से
4. तत्परता से तैयारी 5. आदेश 6. शनिश्चर वार 7. पहले ही मर चुका था

जैपुर सुं पोस सुद १३ हुवौ अर सुद १५ डेरा सांभर हुवा है लोग चढ़ीयो पाळो दस-बारै हजार आसरै छै। अर सीकर रौ राव हमें आवसी। और गढ पोतीजै है[1] अर मरमतां हुय रही है।

महावद ३ प्र० भोम। असवारी चोकैळाव रा मैलां दाषल है। और पोकरण रा ठाकुर वभूतसिंघजी प्होकरण सुं आया, साथै घोड़ा ऊठ रथां वगेरे आदमी चढीयो पाळो ५०० आसरै सुं आया। नै डैरा हाल नागोरी दरवाजै विचै नै म्हामीदर विचै हुवा। और गिड़दीकोट मे षांड गळी अर भटीयां दांणां पाड़ण री[2] ५० तथा ६० हुई। गिड़दीकोट रा कांम री भोळावण[3] जोसी सिवनारांयण तथा दीवांण रा भाई तथा भं० पचाणदास नुं हुई। पैलड़ी षांड आज मण १२।) सवासेरा[4] लाडू बंदीजीया। और वीजेमल रा कागद आया के सांभर सुं डेरा परवतसर हुवा, पछै गांव भषरी हुवा सो भषरी रा डेरां भषरी रा ठाकुर री सरवरा रै कांम में गफलत रही, सो ओळंभो पोतो।[5]

महावद ५ नाजर हरकरण जान मांह सु अगाड़ी आयो और सुणीजै है कै जैपुर री जांन रा लसकर रा २ तुंगा[6] छै। अर म्हाराजा रामसिंघजी छड़ी असवारी[7] जांन सुं जुदा आगे पाछै दोय चार घोडां सु कुसी रे साथ सिकार खेलता वहै छै। और ठाकुर पोकरण आपरी हवेली सैर में दाषल हुवा।

और केसरकंवर बाईजी रो विनायक लेण नुं गया गाजां वाजां सुं, अर वनोळा जनांना म्हेलां सु तथा दीवांण बगसीयां वगैरे मुसायबां रा दिरीजै है बड़ी धांम धूम हंगाम हो रह्या है।

और प्होकरणा विरांमणां रा पंचां नुं षारीये ढाबा रा नुं कोटवाळ बुलाय ने कही कै गिड़दीकोट में षांड जांन वासतै गळी है सो लाडू बंदावणा अंवेरणा वगैरे कांम थे केवटो, थांरो भरोसो है। जद पंच आदमी २०० सुं गया, कांम केवटीयो[8]। सारा मुसाहब ओधैदार राजी हुवा। अर बजार रा म्हाजनां ५०० नुं पण बुलाया सो लाडू बांदे है।

---

1. गढ़ के सफेदी वगेरै हो रही है 2. नुक्ती आदि बनाने के लिये 3. जिम्मेदारी 4. सवा सेर वजन का 5. उल्हाना दिया गया 6. दो टुकड़ी में 7. बिना लश्कर के ८. लड्डू बांधने व रखने का काम सलीके से किया

म्हावद ६ । गिड़दीकोट में षांड १६७) मण गळी अर दूजे दिन २५०) फेर गळी तीजी, चौथी वार में २७५) फेर गळी जुमले..........तो गळी ने हजार मण में घटै सो फेर गळसी ।

जैपुर री जांन रा डेरा मेड़ता रा कागद आया है । सरबरा[1] आंपणी हद में[2] मुकांम-मुकांम ओधादार बैठा है सो चोषी तरै हुवै है ।

अर बाईजी सा रै रसोवड़ै जिनस सरबरा आपणी जुदी जावै है । आदमी २००) आसरै री ।

माह वद ६ सन । बूंदी सूं जांन आई मगरायजी रा बाई री नै सिवनाथ सिंघजी वाभा री बाई री सो सिवनाथसिंघजी री बाई री तो चंवरी मांयलै वाग में वंदी[3] अर मगरामजी री बाई री चंवरी गढ में चौकेळाव में बंदी सो आज रो सावो लारली रात घड़ी १३ थकां रौ हुवो । मगरायजी री बाई रौ ब्याव हुवौ पछै, वद ७ रिव । परभात रा पालषीयां में बैठ गाजां वाजां सुं बारला डेरां गया ।

और जांन जैपुर री रा डेरा गांव पींपाड़ सुं वीसलपुर हुवा है । और अजंट साहव तथा दूजा साहब ४ गिड़दीकोट उदैमींदर सरबरा देषण वासतै गया । बगी मे बैस नै गया आया । उकील हंसराज पिण साथै था ।

म्हावद ७ रिव । और असवारी चौकेळाव और जैपुर री जांन रो मुकांम दूजो फेर वीसलपुर हुवौ । अर बूंदी री जांन में मिठाई बैंचण ने[4] भ० भागचंद तेजराज नै कोठार रो आदमी वगैरे नै बूंदी री तरफ रा भला आदमी जणा २ नै हलकारो । जांन वाळां रुका कर दीया[5], जिण मुजब तुलाय दीया । पंडां री प्र० सेर '२।। डीलां री प्र० सेर '१।। सरबाले '१। सेर री कुल दिन १ री मण ११५) रै हिसाब आदमी ३००० री तुलीजी सो मिठाई दिन ४ दीरीजी । पेटीया रया जितरै दिरीजीया, पेटीयां री प्रत आदमी १ लार आटो '१ दाळ खांड '। घी '। सरासरी दीन........................ ।

महा वद ८ श्री हजूर री असवारी गढ दाषल और जैपर री जान रा डेरा वीसलपुर था सो आज आया डेरा उदैमींदर, मींदर रै विचै हुआ ।

---

1. आवभगत 2. मारवाड़ की सीमा में 3. स्थापित की गई 4. बांटने के लिये
5. खाद्य-सामग्री की चिट्ठी बनाकर दी

अर श्री हजूर साहब जैपर रा राजाजी री पेसवाई में घोड़े विराज गोळ री घाटी रै मारग हुय गिड़दीकोट में सरभरा[1] देषण पधारीया। पछै उठा सुं हाथी असवार दिन ऊगतां विराजीया, लारै षवासी में ठाकुर पोकरण वभूतसिंघजी नै दोनूं बाजू हाथीयां ऊपर रायपुर नै रीयां रा ठाकुर श्री हजूर रै छंवर करता थका नै पाषती अजंट साहब बहादुर तथा दूसरा साहब री मीमां[2] पिण साथे थी। सो कायदा मुजब सेषावतजी रै तळाव सुं पांवडा १२०० आसरै डीगाड़ी री तरफ मिलाप हाथीयां रै हवदै हुवौ, दिन पोर १। स्वा चढीयां। नै जैपुर रा म्हाराज श्री रांमसिंघजी री षवासी में दूणी रा राव जीवणसिंघजी वीदसिंघोत नै दोनूं तरफ हाथीयां माथै ठा० समदरकरण करणोत कांमा रा राजा बलदेवसिंघजी था सो मिलाप हुवौ जद म्हाराज श्री तषतसिंघजी रै हाथी तरफ जीवणी तरफ थो नै उतराद कांनी उगवणै[3] मुढै अर रांमसिंघजी री तरफ दिषणाद[4] नै मुढौ उगवणो नै अजंट साहब सुं पण मुलाकात हुई। पछै तोपां री सिलकां ३४० हुई। दोनूं तरफां रा तोपषांनां री अवाजां हुई। पछै बराबर दोनूं तरफां म्हाराज रा हाथी बराबर वातां में डेरां सैर सांमा आया। पछै रांमसिंघजी तो डेरा दाषल हुवा नै श्री हजूर सा गोळ री घाटी ऊप(र) गढ़ दाषल हुवा। हंगांम[5] चोषो[6] वणीयो। गांव डीगाड़ी विचै नै मैड़तीया दरवाजा विचै चढीयो–पाळो तथा तमासगीर[7] सैर रौ तथा पाषती रा गांवां रा कुल आदमी ७५००० पीचंतर तथा १००००० अेक लाख आसरै था। अौर श्री बाईजीसा जैपुर री जांन साथै था सो अगाड़ी मिलाप हुवां पैली ४ घड़ी श्री बाईजी साहबां रौ म्हाडोळ तथा घोड़ां री सेजगाड़ी साथै नाजर हरकरण घुड़वैल[8] में बैठो थो। अर डावड़ीयां रा रथ ३० आसरै था। गाजा-वाजां सुं जैपुर रा डेरा जांनीवासा[9] रा था जठै दाषल दिन घड़ी २ चढीयां आसरै हुवा सो आषो[10] दिन विराजीया रह्या। पछै रात घड़ी चार गयां आसरे म्हाडोळ में बैस गाजा-वाजां सुं सिरे बजार होय गढ दाषल हुवा। डावड़ीयां रा रथ १६ म्हाडोळ रै पछाड़ी था। गढ दाषल हुवा तरै तोपां रा तीर ११ छूटा। बड़ी कुसी रै साथ श्री रांणावतजीसा वगैरे सारी मावां सुं घणा बरस १० सुं मिळीया सो वडो हरष बरसीयो[11]।

---

1. आवभगत की व्यवस्था 2. पत्नियें 3. पूर्व 4. दक्षिण 5. जलसे की हलचल 6. अच्छा 7. दर्शकगण 8. वह गाड़ी जिसमें घोड़े जुते हुए हों 9. बरात के ठहरने का स्थान 10. पूरा 11. हर्ष की वर्षा हुई

और जैपुर री जांन में मिठाई रा गाडा गिड़दीकोट म्हां सुं भराय फौज में डेरो[1] दळवादळ सिरकार रो षड़ो हुवो है, जठै राज रा ओधादार बैस जैपुर वाळां रा रुका मुजब आदमी १ री प्रति सेर '१ तिण रौ कुल धड़ो[2] दिन १ रो मण ३८४) आसरै आयौ। जिण हिसाब सुं तो आदमी............ हुवै पिण आज पैलो दिन है सो पको तोल दोय चार दिनां में गिणती रौ हुय जासी। और कोरा सीदा[3] जुदा दीरीजीया है। षांड.........घी.........आटो......... और बूंदी री जांन में मिठाई मण ८४) आज तुली। और बूंदी री जांन में मिठाई............और छोटा बाईजी इंदरकवर बाईजी रो पण ब्याव जैपुर रा राजाजी रांमसिंघजी सुं करणो चांदकंवर बाईजी दुतरफी षेवट[4] कर जचायो[5] है सो दोई बायां री चंवरीया गढ़ ऊपर वाड़ी रा म्हैलां में सरसतै मुजब बंदी। विनायक टीको उभा भाळ[6] सारा नुषता आज हुवा। और ठाकुर कुचांमण नै म्हैतो विजैमल नुं जैपुर रै राजाजी सिरपाव, हाथी, मोत्यां री कंठी, मोती सीरपेच वगेरे डेरा में रात रा दीया सो लेनै प्रबारा गढ ऊपर हजूर में गया।

म्हा वद ६ भोम। श्री हजूरसा गढ़ दाषल। और जैपुर रा म्हाराज श्री रांमसिंघजी बारला डेरा सुं हाथी असवार होय मोड़ बंधा कसुमल धोरांदार वागो, बूटांदार केसरीया पाग, किलंगी तुररो चोकोरो अर बुकानो मारीयोड़ो। लारे षवासी में ठाकुर जीवणसिंघजी अर दोनू तरफां हाथी छंवर हुतां थकां मेड़तीया दरवाजा सुं सिरे बजार होय मुढा आगै जांन रा घोड़ा ऊंठ चढीया पाळा सिणगारीयोड़ा. बड़ी धांमधूम[7] सुं लारला दिन रा आया, गोदळक[8] बषत फतैपोळ प्होता। फतैपोळ तोरण बांधीयो दसतूर मुजब। पछै गढ में वड़ी पछै लवा पोळ सूरजपोळ वगेरे दसतूर मुजब तोरण वगेरे सारा नुषता हुय बाड़ी रै म्हैलां दोनूं बायां नुं परणाई। प्हैला नुषता तो केसरकंवर बाई म्हाराज प्रीथीसिंघजी अैमदनगर राजाजी री बाई, नै पछै श्री हजूर म्हाराजा तषतसिंघजी री बाई इंदरकंवर, अै दोनूं बायां परणीजी जितरै श्री हजूर साहब अर उमराव प्होकरण वगैरे जीवणी मिसल में बैठा मुसाहब दीवांण बगसी डावी मिसल में बैठा अर जैपुर रा उमराव मुतसदी

---

1. तम्बू 2. अन्दाज से तोल 3. भोजन के लिये कच्ची सामग्री 4. दोनों पक्षों से बातचीत करके 5. तय करवाया 6. एकाएक, शीघ्रता में 7. धूमधाम 8. गौधूलि वेला

सारा सांमल डावी मिसल में बैठा। दौलतषांना में बैठा रह्या, हंसीषुसी मसकरीयां हुई। स्वा पोर रात गयां दोनूं बायां परणीज उतरीया। तोपां रा तीर ७० छूटा।

वद ९ रात आधी रा ३२ म्हैरां रा म्हाडोळ[1] में ३ तो बायां बड़ी चांदकंवर बाईजी पैलां १० में परणीया सो अर केसरकंवर इंदरकवर तीन तो बायां नै चोथा म्हाराज श्री रांमसिंघजी सांमल गढ़ सुं उतर सिरे बजार गाजा-बाजां सु आतसबाजी छूटता डेरां दाषल हुवा। सिलक हुई, तोपां रा तीर सांवठा छूटा।

म्हा वद १० बुध। और लारलै दिन रा घड़ी ४ थकां जांन रा डेरा सुं श्री बाईजीसा री असवारी म्हाडोळ ३ चांदकंवर, ईदरकंवर, केसरकंवर बाईजी
१) १) १)
गाजा-बाजां सुं साथै म्हैतो विजैमल, नाजर हरकरण गढ दाषल हुवा। पछै
१) १)
रात घड़ी ५ गयां आसरै म्हाराज श्री रांमसिंघजी घोड़े असवार छड़ी असवारी सीकर रा राव लिछमणसिंघजी अर दूणी रा राव जीवणसिंघजी वगेरे उमराव नै मुसायब पिंडत सिवदीन व्यास गिरधारीलाल बळदेव वगेरे घोड़ा ५० तथा ६० पाळा आदमी २५ सुं जळद[2] असवारी सुं गढ दाषल हुवा।

और पांतीया री त्यारी दौलतषानां में हुई थी परंत श्री माजी साहबां रा सरीर में षेद[3] घणी है तिण सुं मोकुब रही।

म्हा वद ११ गुर। और जैपुर रा राजाजी गढ़ दाषल है।

और जैपुर री जांन में जांनीयां कह्यौ आज मांकै[4] ईग्यारस को वरत छै सो लाडू षावां नहीं पेड़ा कळाकंद वगेरे लेसां। सो मांह हाजर था पेड़ा कळाकंद सो तो दीयो अर पछै बजार सारे म्हांसु पेड़ा सेवां मिळीया सो षरीदीया। पछै रोकड़ पण सगार रौ जणे दीठ।) दिरीजीया।[5]

म्हा वद १२ तथा १३ सुकर। जैपुर म्हाराज गढ़ म्हैलां दाषल जनाना म्हैलां में विराजै म्हाराज कंवार सारा सांमल रहै। और बूंदी वाळां

---

1. विशेष प्रकार की बड़ी पालकी 2. त्वरा से 3. कष्ट, पीड़ा 4. हमारे 5. सगार के लिये प्रति व्यक्ति चार आने दिये

कैवाई कै म्हे मिठाई खावतां ओर गया[1] हां, आज छव सात दिन लगता हुवा है, सो आटा सीदा देवौ[2] सो षांच ने कयो[3] तरै कोरा सीदा दिरीजणा सरू हुवा ।

और श्री माजी चावड़ीजी रांमसरण देवलोक हुवा । दाग पंचकुंडां ऊपर सरसतै माफक हुवो । अर श्री हजूर साहबां माजी साहबां रो सोच घणौ कीयो । और जैंपुर म्हाराज श्री रांमसिंघजी श्री माजी साहबां लारै पुन रु० १०००) कराया सुणीया ।

म्हा वद १४ सन[4] । और म्हाराजा श्री रांमसिंघजी फूलमैल मोतीमैल में विराजै, कुसी रै साथ । और जैपुर रौ मुसाहब पिंडत सिवदीन डेरां सुं हाथी बैस सिरे बजार छंवर कराता थका गढ ऊपर जाय म्हाराज रांमसिंघजी अरज डेरा दाषल होण री कराई, जद म्हाराजा रांमसिंघजी फुरमायो—हाल तो अेक दोय दिन सुसतावो[5] पछै देषी जासी ।

म्हा सुद १ सोम । श्री हजूर री असवारी छैलवाग पधारीया अर जैपर रा म्हाराजा श्री रांमसिंघजी गढ़ में विराजीया है सो दुतरफो वैम विचार किणी वात रो है नहीं, कारण कै बषत अंगरेजी री है ।[6]

और वायां नै म्हाराजा श्री रांमसिंघजी गढ़ में जातां देवतावां री नागणेचीयांजी, चांवडाजी, वगेरे दसतूर मुजब दीवी । पछै म्हाराज श्री रांमसिंघजी री असवारी कायलांणै सिकार में पधारीया । साथै म्हाराज कंवार जसवंतसिंघजी, प्रतापसिंघजी, जोरावरसिंघजी वगेरे छड़ी असवारी में पधारीया । और सीकर रौ रावराजाजी..........जांनीवासा रा डेरां सुं हाथी बैस छंवर हुतां सिरे बजार होय अजंट साहब कने सूरसागर गया । घोड़ा २०० ऊंठ ५० पलटण रो प्यादल[7] १०० लोग ले गया । घड़ी २ साहब सुं वातां हुई, पछै पाछा आथण रा[8] डेरां दाषल हुवा ।

और बूंदी री जांन वाळां नुं गिड़दीकोट में बुलाय लाडू मिठाई री मिजमांनी कर जीमाया । नै पींडां ने राजमैलां जीमाया । और जैंपुर री जांन वाळा मिठाई षाय-षाय ओर गया है सो कोरो आटो घ्रित मेलाय देरावो

---

1. मिठाई से छक गये हैं 2. रोटी साग आदि की सामग्री दो 3. जोर देकर कहा 4. शनिश्चर वार 5. ठहरो 6. अंग्रेजों का वर्चस्व होने के कारण किसी प्रकार के धोखे का संशय नहीं है 7. पैदल सिपाही 8. संध्या समय

तो ठीक है। बाकी दसतूर तो ३ तथा ४ फगत जीमण को दसतूर है, चार दिन स्वाय[1] जीमावण रौ नवो सरसतो[2] चलावो छौ। पछै म्हाराजकंवार श्री हजूर में अरज कर जांन वाळां नु आटो, घ्रित, दाळ, बूरो[3] चावळ साग आदमी १६००० सोळै हजार रा तुलीया। सो इणी सरसतै रोजीना अठै रैसी जित रै दिरीजसी, जैपुर वाळां नु माडांणी दिराया।

म्हा सुद २ भोम[4]। और मगरायजी री बाई बूंदी परणाई सो बूंदी वाळा जंवाई गाजा-बाजां सूं गढ़-माथै गया सो रात गढ़ में रै जातां द्रीवी नै चोकैळाव रा मैल में रया।

म्हा सुद ३ बुध। और जैपुर रा राजाजी बाळसमंद छैलवाग है। वाभा सिवनाथसिंघजी रा जंवाई बूंदी वाळा गाजा-बाजां सु गढ पर गया।

म्हा सुद ४ गुर। और बूंदी वाळा ३ वींद गढ ऊपर हीज दो-तीन दिनां सु था सो आज दोफारा गाजा-वाजां सु डेरां दाषल हुवा। और असवारी सड़क रै बंगले दोनूं म्हाराजकंवार पधारीया।

म्हा सुद ५ सुकरवार। और श्री हजूर साहबां री असवारी सड़क रै बंगले थी सो कायलांणै पधारीया नै जैपुर रा राजाजी जातां देण सारू सड़क रै बंगले सु मंडोर पधारीया। और जैपुर री जांन में आदमी ४ भागा[5]।

म्हा सुद ७ रवि सपतमी। और दोनू म्हाराज री असवारी वीजोळाई लगात सुद ८ दिन २ तांई। पछै सुद ९ नु जाळीयै दोनूं म्हाराज पधारीया। और पोकरणो व्रांमण प्रो० सिवलाल मर गयौ, तिण री लुगाई सत करण री त्यारी करी तिण नु समजास कोटवाळ वगैरां कीयो पिण वात मांनी नहीं तिण री षबर सूरसागर अजंट साहब नु पड़ी तरै अजंट साहब उकील हंसराज ऊपर तकरार हद सुधी कीवी[6] कै जो या सती होई तो इसका जबाब तुम से लेंगे। जद हंसराज रौ भाई सिवनांरायण वगेरे तथा कोटवाळ पींडां[7] जाय बैठो। अर पछै अजंट साहब पिण घोड़े चढ स्हैर में सती नु वरजण वासतै तकरार रूपी आयौ। तरै उकील जोसी हंसराज मदनमोहनजी रा मींदर सुं सिसटाचार कर कह्यौ कै आप पीछा चलो हम समजास करे है सो सती नहीं

---

1. उपरान्त 2. कायदा 3. बारीक चीनी 4. मंगल वार 5. जयपुर वालों के 4 आदमियों की मृत्यु हो गई 6. अत्यधिक 7. स्वयं

होण देंगे। जद अजंट पाछौ सूरसागर गयौ अर सती होण दीवी नहीं। सो सती ३ दिन तांई तो किणी सुं बोली नहीं अन जळ लीयो नहीं।[1]

म्हा सुद १० बुधवार। और दोनूं म्हाराजा साहबां रो विराजणो बाळसमंद है सो जैपुर रा राजाजी री आज बाळसमंद रा बाग में मिजमांनी है। सो जीमण रो पांतीयो बाळसमंद में हुवो। दोनूं राजाजी नै म्हाराजकंवार सारा अेकण थाळ में भेळा अरोगीया अर जैपुर री जांन लसकर सारो गिरदीकोट में मिठाई जीमाया। अर उमरावां मुसायबां नुं सिरपाव हाथी १२ अर मोती मोतीयां री कंठीयां वगेरे हुवा है, जिण री विगत षुलासै नीचे मंडसी।

म्हा सुद ११ सुकर। और जैपर रा राजाजी रांमसिंघजी बाळसमंद रा डेरा सुं परबारा जांनीवासा रा डेरा पधारीया, डेरां दाषल हुवा, दिन पोर १ चढीयां आसरै।

म्हा सुद १२। और श्री हजूर म्हाराजाजी श्री तषतसिंघजी री असवारी जलूसी लारलै दिन रा जैपुर वाळां रै डेरे हाथी विराज सिरे बजार होय षवासी में ठाकुर प्होकरण बभूतसिंघजी, सो जैपुर रै डेरा अर हजूर साहबां रौ हाथी रै दोनूं बाजू उमराव छंवर करतां असवारी पधारी। जीवणी तरफ तो हाथी चढीया ठाकुर भादराजण अर डावी बाजू हाथी ऊपर ठाकुर रीयां रा और दूजै हाथी पर म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी री षवासी में ठाकुर खेजड़लो भाटी हीमतसिंघजी अर फेर तीजै हाथी ऊपर म्हाराजकंवार जोरावरसिंघजी परतापसिंघजी असवारी जलूसी धांमधूम री हुई। जैपुर रा म्हाराजा रांमसिंघजी फौज रा बजार तांई सांमा आया और कांच रो डेरो सोने रो कांम रो तारीफदार जठै सिरे दरबार हुवो, आप आपरी मिसल सिर दोनूं म्हाराज बरोबर विराजीया[2] जीवणी तरफ तो म्हाराज श्री रांमसिंघजी विराजीया नै डावी तरफ म्हाराजा श्री तषतसिंघजी विराजीया। पातरीयां भगतणीयां रा तायफां रौ नाच हुवो। दुतरफी[3] हंसीकुसी मसकरीयां दसतूर मुजब हुई। घड़ी ४ तांई विराजिया रह्या।

---

1. अन्न-जल ग्रहण नहीं किया　2. बरावरी के आसनों पर कायदे के अनुसार बैठे
3. दोनों पक्षों में

पछै उठा सुं श्री हजूर साहब तौ नाजर हरकरण रै बाग लालसागर री तरफ पधारीया अर असवारी रौ ई तमांम सारौ गोळ री घाटी मारग होय गढ़ ऊपर गया। म्हाराजकंवार पिण पधारीया। सिरदार आप आपरी हवेलीयां में गया।

म्हा सुद १३ सन। और जैपुर रा राजाजी म्हाराज रांमसिंघजी हाथी रे हवदै[1] बैठा, षवासी में ठाकुर जीवणसिंघजी रै बूटादार पाग, अर बुकांनो मारीयो थको, चांदपोळ मारग होय गया। और अजंट साहब री तरफ सुं १ सीकतर[2] म्हाराज रै सांमो पेसवाई में रांम बावड़ी रै उली तरफ आयौ। पछै अजंट साहब जोधपुर रै म्हाराजा रै सरसते जोसीयां री वगेची तक आया। पछै सूरसागर गया, घड़ी २ तक साहब सुं वातां सौषीया[3] कीवी। पछै पाछा उणीज मारग होय डेरां दाषल हुवा। और जैपुर वाळां कह्यौ—म्हे तौ हमें पेटीया[4] लैवां नहीं। म्हांरे घर री सरबरा त्यारी करावसां, कारण कै म्हांरा डेरां में जिनस[5] थांरै अठा सुं हीज आयोड़ीज छै। सो आ उपड़ीयां पछै[6] फेर लेसां, पिण माडांणी सरबरा देने आया।[7]

म्हा सुद १४। और जैपर रा राजाजी लसकर म्हां सुं राजमैलां होय पछै तुरत हीज गोळ री घाटी मारग होय घोड़ा ७ सुं म्हाराजकंवार ३ पिण साथै जसवंतसिंघजी १ जोरावरसिंघजी १ किसोरसिंघजी १ सांमल गढ़ दाषल हुवा।

और मांजी रो मौसर[8] आज जूनीवाळे में षांड ३२५) गाळी। ओसर चोषो हुवो। और जैपुर म्हाराज म्हा सुद १५ पांच घोड़ा सुं कंवरजी साथै तबेलो देषण आया, घड़ी १ तांई तबेला में ठेरीया, पछै पाछा गढ़ दाषल हुवा।

फागण वद १। दोनूं हजूर गढ़ दाषल है। और वीकानेर रा कांमेती भला आदमी बाईजी रै नेतो टीको ले आया जिकै घोड़ा हाथी पालषीयां में बैस नागोरी दरवाजा रा डेरां सुं सिरे बजार मारग होय श्री हजूर में गढ ऊपर गया। टीका में हाथी पालषी घोड़ा रथ दसतूर मुजब लाया। अर श्री हजूर रै निजर गुदराया[9]। मौसर हुवो, बैठक कुरब दसतूर मुजब हुवौ।

---

1. अम्बारी 2. सेक्रेटरी 3. अनोपचारिक 4. खाद्य सामग्री 5. खाद्य की वस्तुएँ 6. समाप्त होने पर 7. जबरदस्ती खाने-पीने की सामग्री देकर आए 8. मृत्यु-भोज 9. दृष्टिगोचर करवाये

फागण वद २। दोनूं म्हाराजा गढ़ में विराजै छै। म्हाराज रांमसिंघजी फतैमैल में विराजीया छै। म्हाराजकंवार सारा सांमल हंसी-कुसी री वातां करै।

- फागण वद ४। जैंपर रा राजाजी नै म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी १ जोरावरसिंघजी १ परतापसिंघजी १ किसोरसिंघजी अै पांचू घोड़ा असवार होय उदैमींदर री सरबरा देष पछै उदैमींदर में म्हापुरस सरवणनाथजी रा चेला ....जिणां कनै पधारीया, भेंट कीवी म्होरां ५) नै सासत्रोदीक[1] चरचा वारता कीवी, घड़ी २ तांई विराजीया रह्या। पछै पाछा गोळ री घाटी मारग होय गढ दाषल हुवा, पछै लारला दिन रा जांन रा डेरा सुं दोनू बायां म्हाराडोळ में बैस कर गोळ री घाटी मारग गाजा-वाजां सुं अगाड़ी म्हाडोळ में चांदकंवर बाई नै पछाड़ी म्हाडोळ केसरकंवर बाई रो गढ दाषल हुवा। जैपुर सासरे जावण री सीष करण मुदै आया। जनांनो दरबार हुवौ। दायजो दोई बैनां नुं दीयो सो विजनस मांड नै राजाजी नुं नै बायां नु देषायो। दायजा २ बराबर मांडीया।[2] सोना रूपा रा वासण[3] जड़ाऊ गैहणा जरी रै कांम रा दुपटा कपड़ो कोर गोटो जरकस वगेरे बड़ो उमदा दायजा मांड देषाया। अर चीज-वसत री याददासत जैपुर म्हाराजा श्री रांमसिंघजी नुं कागद में विगत उतराय दीवी[4]। नै कह्यो कोई चीज त्यारी नहीं हुई है सो त्यार हुवां सुं जोसी सिवचंद परभूलाल रा बेटा नुं दायजा लारै जैपुर पछाड़ी सुं मेलां छां, सो इण तरै जनांनो दरबार हुवौ। जंवाई नै बायां नै जैपुर री सीष रात आधी रा हुई। अर तीनू बायां नुं सीष घणै मोद[5] सुं घणै म्हौ[6] सुं हुई। चसमां मीठा रह्या[7]। आज तांई जैपुर रो राजा जोधपुर परणीजण नुं इण तरै आया नहीं, नै इतरा दिन पिण रह्या नहीं, सो दुतरफो पूरो मोद वरसीयो।

पछै उणी बषत कूच कर गांव वीसलपुर डेरां दाषल हुवा। श्री हजूर म्हाराज तषतसिंघजी रौ इरादो तौ जैपर रा राजाजी नुं होळी तांई राषण रौ थौ परंत जैपुर वाळां रै बड़े साहब कनै अजमेर जावण री ताकीद, जिण सुं

---

1. धर्मशास्त्र सम्बन्धी 2. दोनों बहिनों को दहेज बराबर दिया गया 3. बर्तन
4. दहेज की वस्तुओं की सूची आदि लिखित में दी 5. आनन्दातिरेक 6. मोह, प्रेम
7. अंतरंगता बड़ी मधुर रही

चढ गया[1]। म्हाराज रांमसिंघजी नुं षीलत सिरकार अंगरेजां सुं सदर रौ हुकम है, जिण सुं। और जैपुर वाळां री सरवरा घास लकड़ी री जैपुर सुं आवतां हुई थी जिणी सरसतैं मारवाड़ री हद में फेर सरवरा करण रौ हुकम पोहोंच गयौ। इति जैपर रे व्याव री।

फागण वद ५ सन। और पड़दायत गंगरायजी कुरजरायजी री बायां री जानां देवळीयै परतापगढ़ सुं आई। जांनां रा डेरा सोझतीया दरवाजा वारै हुवा।

फागण वद ७। अजंट साहब अजमेर नुं चढ गया, बड़े साहब पास गया। दसतूर मुजब तोपां रा तीर ११ छूटा। उकीलायत रा कांम में हंसराज रो बेटो सिवराज अजंट साहब साथै गया।

फागण वद १० गुर। असवारी गढ दाषल विराजै। और ठाकर कांणाणा रौ रतनसिंघजी कांणाणै में मर गया रा समाचार आया।

फागण वद १२ सन। श्री हजूर री असवारी गढ दाषल है। और वाभा सजनसिंघजी रा बेटा २ रौ व्याव उदैपुर फागण सुद २ रै सावां परणीजसी[2] सो आज जांन चढी।

फागण वद १३ सिवरात्री। असवारी किलै विराजै। और बूंदी री जांन अठै है तिणा री मिजमांनी गढ ऊपर चोकैळाव में हुई, अर सीष बूंदी जावण री हुई।

मिती फागण सुद २ तथा ३ गुरवार। और श्री हजूर साहबां री असवारी मुलक रीमां वागैलां[3] रै परणीजण जावण रौ जांन रो समुरतो[4] करण सारूं गोळ री घाटी मारग हाथी विराजीया। षवासी में ठाकुर प्होकरण बैठा। सो मेड़तीया दरवाजा होय डेरां दाषल हुवा। रात प्होर १। गयां आसरै पधारीया मुहरथ साझण मुदै। नै मारग में सरवरा वासतै अगाड़ी पिंडत सिवनारायण नुं मेलीयो। और वीकानेर रा भला आदमी बाईजी रा व्याव में नेतो टीको ले नै आया तिणां नुं पिण मोसर[5] गढ़ ऊपर आज हुवो। और सीष रौ सिरपाव सरसतै मुजब हुवौ।

---

1. विदा ले ली 2. विवाह होगा 3. वाघेला जाति के राजपूत 4. मुहूर्त
5. मिलने का अवसर

बूंदी री जांन नूं पिण आज सीष हुई । और आयसजी श्री मोतीनाथजी म्हामींदर लिषमीनाथजी रै षोळै आया तिणां री पधरावणी गढ़ ऊपर हुई। भेंट रुपीया १००) आसरै हुवा । पाछा षुलै षासै बैस सिरे बजार होय म्हांमींदर रात प्होर १।। गयां दाषल हुवा । और आज इतरी षिजमतां[1] उथलीजी[2]—

पाली री हाकमी जोसी बैजनाथ सिवचंद रौ बेटो अर परभुलाल रै पोतरा रै हुई, तागीरायत[3] गोपालराव रा बेटा री । सो इण रैं कुल म्हीना···· दिन········रही ।

जाळोर सांचोर भीनमाळ री हाकम्यां श्री रांणावतजीसा रा कांमदार नारकरण रै हुई, तागीरात म्हैता विजैमल री, विजैमल रा बेटा रे कुल वरस········म्हीना········दिन········रही । इण री अेवज में[4] नागोर री हाकमी हुई ।

नागोर री हाकमी म्जैहैता विमल रा वेटा सिरदारमल रै हुई, तागीरायत कपतांन मुनालाल री, मुनालाल रै कुल म्हीना········दिन········रही ।

जोधपुर री कोटवाळी षीची उमेदजी रा भाई कोळजी रै हुई, तागीरायत कपतांन दुरगाप्रसाद री, दुरगाप्रसाद रै कुल म्हीना········दिन········रही ।

जोधपुर रा चोतरा री मुसरफी वाभा मोतीसिंघजी तालकै थांनवी सिवनाथ रा बाप विनकु रै हुई, तागीरायत लाला गौरीदत री, गौरीदत रै कुल वरस········म्हीना ········दिन········रही ।

परबतसर मारोठ री हाकम्यां भं० भागचंद रै फागुण सुद ४ हुई, तागीरात जोसी हंसराज रा बेटां भतीजां री, इणां रै कुल वरस ४ दिन ३ घाट मास ४६ ईदक सुधी रही ।

गोढवाड़ री हाकमी भाटी मांनजी म्हाराजकंवार जोरावरसिंघजी रा मांमा रै तालकै हुई, तागीरात रांणावतजीसा रा कांमदार नारकरण री । नारकरण रै कुल म्हीनो १ दिन २३ रहीं ।

---

1. ओहदे, पद 2. बदली गई 3. जब्त 4. बदले में

षेमा रा कारषानो री दरोगाई वाभा मोतीसिंघजी रै ता० हुई, तागीरात जोसी सिवनारायण री। सिवनारायण रै कुल वरस········म्हीना········दिन···· रही।

वागर री दरोगाई सुद ६ नु चावड़ा जीवण नु हुई, तागीरात आसोपा उतमरांम री। उतमराम रै कुल वरस········दिन···· ···महीना········रही।

फागण सुद ८ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद विराजै तथा सुद ६ असवारी बाळसमंद विराजै छै।

फागण सुद १०। और वडो साहब अजमेर नवैनगर री तरफ सु आबूजी जावै छै, तिणां सु मुलाषात वासतै मुसाहब पाली तांई आज चढीया।

फागण सुद ११ अजंट साहब अजमेर सु आज आया। पेसवाई में मुसायब अर ठाकुर कुचांमण सरसतै मुजब गया। तोपां रा तीर ११ छूटा। अजंट साहब कुल दिन १६ सु पाछा आया। असवारी बाळसमंद है नै अजंट साहब श्री हजूर में लारलै दिन[1] रा आया।

और श्री हजूर परणीजण नु रीवां पधारता था अर डेरा बारै षड़ा हुय गया था सो हाल मोकूब[2] रह्या। कारण कै मौसम माथै ऊनाळा[3] री आय गई सो फेर आवते जमाने माथै देषीजसी। और असवारी बाळसमंद है।

फागण सुद १४ भोम। होळी रो उछव सरसतै मुजब हुवो। असवारी श्री हजूर री बाळसमंद है।

चैत वद १ गुरवार। असवारी भीवरोलाई तरफ है।

चैत वद ३ श्री हजूर री असवारी कायलांणे वगेरे विराजै।

चैत वद ६ भोम। श्री हजूर री असवारी कायलांणै छै। अर मोसर जोसी सिवनारांयण आसकरण नु हुवो।

वद ७ बुध। और ठाकुर कुचांमण अजंट साहब पास गया सूरसागर।

चैत वद ८ गुर। श्री हजूर री असवारी कायलांणै विराजै। और सीळ रो मेळौ दसतूर मुजब हुवो। और अजंट साहब श्री हजूर में आया, पछै

---

1. अपराह्न 2. स्थगित 3. गर्मी

ग्राबूजी चढीया। उकील हंसराज रो बेटो साथै चढीयो। ग्रौर ग्रजंट साहब कुल दिन १२ जोधपुर में रह्या।

चैत वद १३। ग्रसवारी वाड़ीयै सु नाडैळाव री तरफ हुई। ग्रसवारी चैत वद १३ लगायत सुद १ तांई बाळसमंद विराज्या।

चैत सुद २, ग्रसवारी बाळसमंद सु सैर में गढ विराज्या, पछै जांजरकै[1] पाछा बाळसमंद पधारीया, गुडलो बडो कर। ग्रौर बालोतरा में राज रो धरमपुरो है, सदावरत री दरोगाई व्यास……………घणा वरसां सु थी सो तो जबत हुई ने भाट वागजी तालकै हुई।

चैत सुद ३ सन[2]। ग्रौर गिणगोर रो मेळो सदामंद मुजब म्हांलैवाग हुवो, म्हाराजकंवार पिण था, घोड़ा फेरीया।

चैत सुद ५ भोम। ग्रसवारी गढ पधारीया।

चैत सुद ८ गुर। ग्रौर बोळावणी गवरां री[3] रो मेळौ दसतूर मुजब हुवो। म्हाराजकंवार था, घोड़ा फेरीया, लारला दो पगां ऊपर घोड़ा नु चलाया। पातरीयां री घूमर हुई।[4]

चैत सुद १०। ग्रौर षबर ग्राबूजी सु ग्राई कै ग्रागलौ बडो साहब तो विलायत गयौ ग्रर ग्रेवज में दूजो ग्रायौ।

ग्रौर बारोठीया[5] ठाकुर ग्रासोप गूलर ग्रालणयावास वगेरे बीकानेर में घणा दिनां सु बैठा है ग्रर वीकानेर रे राज सु रोजीनौ[6] षरच रो मिळै है। सो हमार लेण-देण में दुतरफो उजर हुवो। जिण बाबत वीकानेर रै राज रौ वडै साहब रै नांवै गयौ कै इतरा दिन तो म्हे ईणां नु ग्रठै ढाबीयां[7] ग्रर हमें ग्रै पूरा तंग है सो इण का कुछ बंदोबसत सिरकार ग्रंगरेजी की मदत से होगा, वासतै ईतला के लिषा है। ईणु का बदोबसत होणै से ग्रापकी नेकनांमी जाहर होगा। सो षलीतो वीकानेर रो वडै साहब पास गयौ, सो षलीता री नकल ग्रर ग्रापरी तरफ सु लिष्यो तथा उकीलां नु मुषजबांनी इसारौ कीयौ जिकै समाचार श्री हजूर मालम हुवा, जद जबाब ग्रठा सु लिषीजीयो कै जो बीकानेर

---

1. प्रभात 2. शनिश्चर वार 3. गणगोर की सवारी का उपसंहार 4. पातुरों ने घूमर नृत्य किया 5. बागी 6. प्रतिदिन के हिसाब से 7. रोके रखा

रै राज सुं इणां नु षरच रा रुपीया म्हीना रा मिळै है सो राज रा लिषणा सुं म्हांनुई मंजूर है कै वीकानेर सुं मिळै है जिण मुजब इण राज सुं मीळीयां जासी अर हाल उठैईज[1] बैठा रहौ। अर उठै बैठ लूट षोस विगाड़ सायत अै करै जिण री जांमनी[2] वीकानेर रै राज री तथा दूसरां री होजाय तौ ठीक है। सो लिषावट बड़े साहब पास गई सो साहब सुण नै नकल वीकानेर भेज दीवी, सो देषीजै। और पाली रा म्हांजनां रौ माल लूटीजीयो सांवठौ, तिण म्हांला चोर एक दोय सैर में साहबत[3] हुवा सो छिप गया तिणां नुं पकड़ण गया, सो म्हाराजकंवार रा आदम्यां पूरौ बेदो कीयो[4] न्यात पकड़ भागसी[5] में घाल दीया।

चैत सुद १० लगायत सुद १५ तांई असवारी गढ़ में विराजै तथा चोकेळाव रा म्हैलां में विराजै छै।

वैसाष वद १ सुकर। और ठाकुर रास वाळां नुं घर री सीष रो मुजरो हुवो, घड़ी २ तक मोसर रह्यौ।

और कीलीषांना री दरोगाई अैमदनगर रा रूपारांम नुं हुई, तागीरायत अैमदनगर रा जेठे वेद री। जेठे वेद रे घणा वरसां री थी १६०१ सुं, सो कुल वरस १६ रही।

और वैसाष वद २। ठाकुर रायपुर षेजड़ला नुं घर री सीष हुई। और वैसाष वद ८ सुकर। नागोर री तरफ फौजवंदी[6] में म्हैता विजैमल नुं हुकम हुवो सो डेरा नागोरी दरवाजा बारै हुवा।

वैसाष वद ५ और आज गढ में २ मौतां हुई—

१ श्री भुवाजी अैमदनगर सुं आया छै कंवारा उमर वरस ६० आसरै, पटै गांव वीरांमी गोढवाड़ परगना रो।

२ पड़दायतजी चंपरायजी, श्री बड़ा हजूर म्हाराजां मानसिंघजी रा पटै राणी गांव, गोढवाड़ रो।

पाणीवाड़ो दाग पचकुंडां पर सरसतै मुजब सारा मुसाहब सिरदार गया।

---

1. वहीं पर 2. जमानत, जिम्मेदारी 3. साबित 4. झगड़ा 5. जेल 6. फौज की चढ़ाई

वैसाष वद १० । और ठाकुर पोकरण बभूतसिंघजी नुं ४ घड़ी तक इकंत मोसर हुवो । सो ठाकुर षांच-षांच ने अरजां कीवी[1] कै आप अैस आरांम आगै राज रौ कांम री सुणवाई नहीं करौ छौ, सो अर बगत रा हाकम[2] अंगरेज छै सो कांम री सुणवाई रषावै तौ आछी वात है, पछै मरजी । वैसाष वद १० रिव । म्हेतो विजैमल आगे रवाने हुवौ फौजबंदी में ।

वैसाष सुद १ सुकर । असवारी गढ दाषल । और मुलकी कांम दिवांण जवती बाहाली रौ करै है, तथा षजांना सुं रोकड़ रुपीयो दिरीजै तिण चीठी रुका में स्हैनांण वाभा मोतीसिंघजी रो हुवां सुं सही पड़सी[3] । सोब बैरो सैनांण करै छै ।

वैसाष सुद २ सन । और श्री हजूर गढ दाषल छै । श्री हजूर अंबषास रै झरोखै घड़ी ४ तांई विराज्या रह्या अर सारा चाकर हाजर था तिणां नुं दरसण हुवा ।

वैसाष सुद ३ रिव । आषातीज रौ श्री हजूर साहबां रौ मौसर सिरे दरबार दौलतषाना में हुवौ अर पांतीयो भोजनसाळ में हुवौ । ठाकुर प्होकरण कुचामण कंवरां सुधा[4] था, अर ठाकुर रायपुर रोयट वगेरे था । भोजनसाळ में अरोगण विराजीया, म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी, परतापसिंघजी, जोरावर-सिंघजी तो हजूर रै भेळा बैठा, ठाकुर प्होकरण कुचामण अै भेळा बैठा । श्री हजूर रै षिड़कीया केसरीया पाग, जांमो । उछव दसतूर मुजब हुवौ । भगतणीयां-पातरीयां रा तायफा रा नाच हुवा ।

और कुचांमण रा ठाकुर रा कंवर सबळसिंघजी नुं कुरब हात रौ हुवौ दसतूर मुजब । पछै रात घड़ी ४ रात गयां दरबार बोड़ीयो[5] ।

वैसाष सुद ६ गुर । असवारी चोकेळाव । और ठाकुर कुचांमण नुं मोसर इकंत घड़ी २ तक हुवौ ।

वैसाष सुद ११ भोम । और श्री हजूर साहबां री असवारी चौकेळाव सुं हथणी छोटी पर विराज गढ में म्हैलां में पधारीया, और आज कींक छांटां पिण आई ।[6]

---

1. खूब जोर देकर निवेदन किया 2. समय के मालिक 3. आदेश पक्का होगा
4. राजकुमारों सहित 5. दरबार समाप्त हुआ 6. कुछ बूंदा-बांदी भी हुई

वैसाष सुद १२ तथा १३। और श्री हजूर साहवां री असवारी कायलांणा री तरफ पधारीया। और राज रौ कांम म्हांयला वाग में दिवांण वगेरे करै छै। मुकत्यारी रौ कांम वाभा मोतीसिंघजी री जवान बीसेसे है।

वैसाष सुद १४। और नागोर री कोटवाळी भं० बादरमल तालके भाई भतीजां रै नांवै हुई, तागीरायत म्हेता विजैमल ता० थोड़ा दिनां सु हमार थी सो हुई। असवारी कायलांणै विराजै।

जेठ वद २। और मेड़ता री हाकमी दिवांण मु० मुकनचंद रै भाई भतीजां रै नावे हुई। तागीरायत सिं० रतनराज रा बेटा जसराज री। जसराज रै कुल वरस......म्हीना......दिन......रही।

जेठ वद ६। असवारी कायलांणै वगेरे।

जेठ वद १४ सुकर। असवारी कायलांणै। और अजंट साहव आवूजी सू उतर छावणी औरणपुर वड़े साहब कनै दोय चार दिन रहै आज आया। पेसवाई में ठाकुर पोकरण कंवरसुधा नै ठाकुर कुचांमण दिवांण मु० मुकनचंद सिं० समरथराज जोसी हंसराज व राजमल रो वेटो छोटोड़ो वगेरे दसतूर मुजब गया। अजंट साहब पाछा मास २ दिन ६ सु आबूजी सु आया।

जेठ वद '' (अमावस) सनीसर। असवारी कायलांणै, और अजंट साहव श्री हजूर में कायलांणै गया तथा छैलवाग। दसतूर मुजब मुलाषात हुई।

जेठ सुद ४ असवारी श्री हजूर री. दिन प्होर १ चढीयां आसरे गढ दाषल हुवा।

जेठ सुद ६ सुकर। और श्री हजूर री असवारी म्हाराजकंवरां सहेत नाळै री बारी मारग होय सूरसागर अजंट साहब पास गया। दसतूर मुजब साहब सांमो आयो। सूरसागर घड़ी १।। आसरै सोषीया वातां हुई। पाछा गढ़ दाषल हुवा।

जेठ सुद १० दुतीक बुध। और मगरायजी, गंगरायजी री बायां बूंदी परणाई तिणां नु लेण सारू हरस माईदास वगेरे गया था सु आज लेने आया। दसतूर मुजब सारो कांम हुवो।

जेठ सुद ११ गुर। श्री हजूर गढ विराजै। अौर आज मुसलमांना रै ताजीया छै सो म्हाराजकंवारां कनै मुसलमांन देसी परदेसी चाकरी करै है जिणां पण ताबूत जु'नीवाळ में वणायो। सो आगै पाछै काढण[1] री तकरार षड़ी हुय गई, सो तमासो देषण म्हाराजकंवार पधारीया सो पछै तकरार मिटावण सारू कोटवाळ रौ आदमी आयो थो जिण रै तो लागी नहीं नै अेक घेनड़ा रै लागी। म्हाराजकंवारां रा आदमीयां रा हाथ री तरवार लागी। ठाकुर पोकरण कुचामण आहोर वगेरे सारा हाजर था, आप आपरे ठीकांणै मिसलसर बैठा वरसगांठ श्री हजूर री रै दरबार में हाजर।

जेठ सुद १२ तथा १३ सुकर। अौर श्री हजूर साहबां री आज वरसगांठ है सो दसतूर मुजब उंछब[2] हुवौ। दौलतषांना में दरबार सरसता मुजब हुवौ। पोकरण वभूतसिंघजी कंवर सेत[3] कुचांमण केसरीसिंघजी कंवर सेत ठाकुर आहोर
१ १ १ १
अर दीवांण बगसी व्याव(स) वगेरे सारा मुसाहब हाजर। सिरदारां आपरा कांमेती वगेरे भला आदम्यां नु' मुजरा आसरीवाद कराया। उछव भारी हुवौ। तायफां रौ नाच वगेरे कुसी हुई परभात रा। अौर सिलक हुई तोपां रा तीर ऊमर रा बरसां री गिणती मुजब छूटा ४६, पछै निजर निछरावळां हुई तिण री विगत नीचै मंडसी। सिरे दरबार पोर १ तांई रह्यो—वरसगांठ रा दरबार में श्री हजूर साहबां री निजर निछरावळ हुई, तिण री विगत आसांमी वार---परधांन ठाकुर वभूतसिंघजी प्होकरण, निजर म्होर १) अेक, निछरावळ २) कुचांमण ठाकुर केसरीसिंघजी, निजर ५) निछरावळ २) दिवांण मु॰ मुकनचंद, निजर १) निछरावळ २) बगसी सिं॰ देवराज दीवांणां सरसतै, कपतांन जणा २—दुरगाप्रसाद मुनालाल निजर १) निछरावळ २)।

जेठ सुद १४ सन, तथा असाढ वद १ भोम। अौर असवारी गढ में विराजै।

अौर असाढ वद ११ जैसलमेर रा रावळ रणजीतसिंघजी सेज री वेपारी दारू री तासीर आय २ दिन में चटपट देवलोक[4], जेठ सुद ११ नु हुवां री आज अठै षबर आई। पांणीवाड़ो[5] फतैसागर हुवौ। सारा सिरदार मुसदी

---

1. निकालने के लिये 2. उत्सव 3. सहित 4. अल्पकाल में ही मृत्यु हो गई
5. जलांजलि

जनांना कांमदार वगेरे गया। मांयलैवाग में भटीयाणीजी जैसलमेरीजी रा कांमदारां रा नोरा में बैठणो हुवो। औौर जैपुर रौ मुसायब पिंडत सिवदीन जैपर में मर गयौ तिण रै लारै सुधारो[1] म्हाराज रांमसिंघजी चोषो करायौ री षबर आज अठै सुणी, जेठ सुद ९ नुं मुवो।

असाढ़ सुद १ सोम। और श्री हजूर री असवारी चोकैळाव विराजै सो राव राजमल रा बेटां श्री हजूर में अरज कराय गोठ चोकेळाव रा म्हैलां में हुई। षांड रो सीरो मीठाई वगेरे त्यारी कराई। छुटवाळा[2] किताक सारा दिवांण बगसी वगेरे जीमीया। कुल रु० ५००) पांच रै आसरै लागा।

असाढ़ सुद २ दुतीक बुध। असवारी गढ विराजै, और अजंट साहव कनै सु आया, पेसवाई में ठाकर प्होकरण कुचांमण दिवांण क्रिलैदार राव राजमलजी रौ वेटो तथा उकील हंसराज दसतूर मुजब गया। तीर तोपां रा ११ छूटा।

असाढ सुद १० गुर। असवारी कायलांणै विराजै। और अजंट साहव रौ कूच बीकानेर जैसळमेर री तरफ री त्यारी कीवी। लारै ठाकुर कुचांमण केसरीसिंघजी नु अजंट साहव साथै मेलण रौ श्री हजूर सु फुरमायो, सो आज वडा साहब री चीठी अैरणपुर सु आई के अेक दफै जलदी से हमारे पास आवो, सो बीकानेर कांनी जावण रो तो हाल मोकूव रह्यौ नै अजंट साहव अैरणपुर री छावणी बडा साहब पास गया छै, सो छावणी सु परबारा अलवर रै राज में १ चाबष असवार किणी रै हाथ सु मारीयौ गयौ हौ तिण री कोरट पंचायत[3] अंगरेज ४ जणा बैस करसी। अजंट जैपुर १, अजंट भरतपुर १, अजंट अलवर १, अजंट जोधपुर १। सो अै चारू जणा मिळ कोरट करसी नै ठाकुर कुचांमण लारै सु जासी। और श्री हजूर सायबां पिण कायलांणा री तरफ सु अजंट साहब सु मिलण वासतै परबारा सूरसागर आय, मुलाकात कर लीवी। छड़ी असवारी पधारीया घड़ी २ तांई वातां कीवी। पछै श्री हजूरसा तो पाछा पधार गया नै साहब अेरणपुर री छावणी नु चढ गयौ। साथै उकीलायत में जोसी हंसराज रौ बेटो आसकरण गयौ। अजंटसा कुल दिन ९ अठै रह्या।

---

1. धर्म-पुण्य आदि 2. छोटे ओहदेदार 3. फौजी अदालत

असाढ़ सुद १२ सन। श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद पधारीया। और ठाकुर पोकरण १ कुचांमण १ नु श्री हजूर याद फुरमाया सो बाळसमंद हाजर हुवा, जद श्री हजूर बाग में विराजीया अर दोनू सिरदारां नु बगी में भेळो बैसांण लीना पछै उठा सू परबारा सड़क रै मारग होय कायलांणै पधारीया। दोनू ठाकरा नु श्री हजूर साहबां गोठ दीवी। षांड रो सीरो मीठाई वगेरे पुरणां[1] नु धांन घास रा रुपीया दोनू ठाकरां नु १००)-१००) रोकड़ दीना। तरै दोनू सिरदारां कोठार बाग रै में जमा कराय दीया १००) १००)

कै म्है रोकड़ रुपीयां नु कांही करां धांन घास जोईजसी[2] सो कोठार बागर सु लेलेसां[3] सो धांन घास ले लीयो। दारू वगेरे री मनवारां, फूलां री माळावां दिवी अर रात उठेहीज राषीया। रात रा फेर इकंत में वातां कीवी राज-काज मुलक रै बंदवसती[4] वगेरे वातां हुई, दिन २ बराबर। श्री हजूर साहबां नु राजी रांषसां। सांची अरजां सिरकार रै फायदा री कीवी। पछै श्री हजूर साहबां फुरमायो के अजंट साहब अलवर रावराजाजी री पंचायत करण नु जावै छै जिणां साथै जाय आवो सो सीष कर स्हैर में आया, अर अेक दोय दिन स्हेर में रह ठाकुर केसरीसिंघजी अजंट साहब सांमल हूण वासतै अजमेर परबारा गया। अर साहब पैला अगाड़ी जैपुर नु चढ गयो सो ठाकुर लारा सु जाय सांमल हुवा। जोधपुर सु चढीया जरै घोड़ा ६० ऊंठ ३२ पाळा लोग ५० बाकी लोकवाग कुचांमण सु प्रबारा आ जासी।

संवत् १९२१ का विवरण

वणसूर जादूदांनजी री बही री नकल १६२१ रा वरस री। सांवण वद १ बुध। और षबर आई कै अजंट साहब अेरणपुर री छावणी सू कूच अलवर सांमी कीयौ। पाली सोभत हुय नवेनगर[5] हुय अजमेर जासी, पछै दो तीन दिन रहै पछै अलवर जासी, जिण वासतै ठाकुर कुचांमण ने सीष साहब अजंट साथै रेणो सो ठाकुर केसरीसिंघजी नु सीष हुई, सो श्री हजूर साहबां फुरमायो कै अजंट साहब नै लीषाय देसां सो दस वीस दिनां पछै सीष दे देसी सो वैगा आवजो। असवारी में षासी बगी दागल घोड़ा[6] ६ सुधा

1. घोड़े, ऊंट आदि　2. आवश्यकता होगी　3. ले लेंगे　4. व्यवस्था　5. ब्यावर
6. वे घोड़े जिस पर राज्य का चिह्न अंकित हो

पोंछावरण नै अर भारवरदारी[1] ऊंट वगेरे बंदोबसत कर दीयो। जद सीष कर सैर में डेरे रात रा आदी आसरै आया। नै दूजे दिन सांवरण वद २ तथा ३ गुरवार रै दिन पोर १।। चढीयां आसरे चढ गया। घोड़ा ५५, ऊंठ ३०, पाळा ५०। आदमी चढीयो पाळो २०० आसरै। पछै आगे फेर कुचांमरण सु आय जासी जद भीड़ाभाड़ सांवठी हुय जासी, चार सौ पांच सौ आदमी हुय जासी।

और राज रो कांम मांयलावाग में मुसाहब करै। मुकत्यारी, बाभा मोतीसिंघजी है। विरषा रात रा चोषी हुई झड़ाऊ[2]।

सांवरण वद २ तथा ३ गुर। असवारी कायलांणै वगेरे। ठाकुर कुचांमरण अजंट सांमल आज चढीयां री विगत काल में मंडी है। और विरषा झड़ रूपी सरू है। पुरवाई सूरीयौ[3] वाजै है।

सांवरण वद ४ सुकर। सांवरण वद ५ सन लगायत वद १२ सुधा असवारी कायलांणै तरफ.................।

सांवरण वद १३ रिव। और सुरणी कै ठाकुर आऊवा रा बारोठीया[4] कुसालसिंघ विषायत[5] हुवो मेवाड़ इलाके में थो सो सांवरण वद ७ सोम उदैपुर में रांमसरण हुवा। उठैहीज कारज[6] हुवो। उदैपुर रा रांणीजी इणां रै रोजीना रा रुपीया) कर दीया था। सो विषो आछी तरै काढीयो।[7] दुष धाप दीठी।[8] परण रैत नु षोसी नहीं।[9] और जोधपुर में पांणीवाड़ो[10] हुवो नहीं। काररण कै श्री हजूर री वेमरजी रा[11] जिरण सु।

सांवरण वद १४ सोम लगायत सुद २ गुर सुधा असवारी कायलांणै, पछै सांवरण सुद ४ तथा सुद ५ रिव असवारी वीजोळाई।

और मु० सादूलमल भंडसाली वोरीदास रौ बेटौ तिरण रै तलब राज री रकम ईजारा री किसत वगेरे री बाबत हुई, वाभा मोतीसिंघजी कीवी।

---

1. सामान ढोने वाले 2. वर्षा की झड़ी 3. पूर्व की ओर से चलने वाली हवा 4. आतंकवादी 5. संकट ग्रस्त 6. मृत्यु भोज आदि, 7. संकट का समय ठीक से व्यतीत कर दिया 8. पूरा दुःख देखा 9. जनता को लूटा नहीं 10. जलांजलि देने का कार्यक्रम 11. महाराजा उन पर नाराज था

सो तलबीया नुं तलब दीवी नहीं अर सांमी हुजत कर बेईजत कर दिया। श्री म्हाराजकंवार रौ कांमेती नागोरी चंपै री हिमायती सादूलमल लायो। तिण माथै वाभा मोतीसिंघजी सादूलमल नुं आदमी मेल चोतरा रा पीयादा[1] वेईजत कर बाप बेटा नुं ले जाय भाषसी में घाल दीना सादूलमल मन जबरो चालतो थो।

सांवण सुद ५ सोम। वीरपुरी रो मेळो दसतूर मुजब हुवो। अर मेह लारलै दिन रा हुवो, सो मेळो चळ-विचळ[2] चांदपोळ में विसेस हुवो। विरषा चोषी हुई।

सांवण सुद ९ गुर। और वागर री दरोगाई किलेदार तालकै हुई। तागीरायत चावड़ै जीवण री। जीवण रै कुल म्हीना……दिन……रही। सिरकार रौ कांम मांयलावाग में दिवांण बगसी वगेरे करे। मुकत्यार वाभा मोतीसिंघजी।

सांवण सुद १४। विरषा चोषी हुई, नेवांणा[3] में पांणी मास ५ रो आयौ।

सांवण सुद १५ राषड़ी पूनम। असवारी कायलांणै भादवा वद १ लगायत वद ४ असवारी कायलांणै विराजै।

भादवा वद ५ नाग पांचम। असवारी सड़क रै बंगलै विराजै। और नाग पांचम रो मेळो दसतूर मुजब हुवौ।

भादवा वद ८ बुध। असवारी सड़क रै बंगलै विराजै। और म्हाराज-कंवार श्री जसवंतसिंघजी रै ब्यांव रौ डोळो सिरोही इलाके गांव मंडार रा देवड़ा रौ आयो नुतो घणा दिन हुवा कांकांणां रा ठाकुर री हवैली में उतरीया था, तिण रो आज रात रा व्याव हुवौ, बाळसमंद। तिण री सिलक रा तीर २४ छूटा गढ ऊपर।

भादवा वद ११ सन। रात घड़ी २ लगायत आदी रात तक विरषा बरोबर चोषी हुई। भादवा वद १५ गुर………असवारी………।

1. प्यादा 2. अस्त-व्यस्त 3. तालाब आदि

भादवा वद अमावस । और अजंट साहब अलवर री तरफ सफर गया था सो आज आया, मास १ दिन १६ सु । सो मजलां करड़ी कर आया[1], सो पेसवाई में सदा मुजब मुसायब सिरदार जावै है सो जाय सकिया नहीं अजांणचक[2] आय गया । उकीलायत में साहब रै साथ जोसी हंसराज रौ बेटो आसकरण थौ । और ठाकुर कुचांमण केसरीसिंघजी अजंट साहब साथै था सो जैपुर में । पाछा आवतां जैपुर रा म्हाराजा श्री रांमसिंघजी हाल जैपुर में मिजमांन रै तौर[3] मनवार कर राषीया है कै दस-वीस दिन तांई अठैईज रहौ, सो हाल जैपुर में है ।

भादवा सुद २ सन । रांमदेवजी रौ मेळो मसूरीया रौ हुवो । अजंट साहब वगी में बैस मेळै गया ।

भादवा सुद ४ सोम । गणेसचौथ रौ मेळौ दसतूर मुजब हुवो, अजंट साहब मेळै गयौ । और श्री हजूर साहब गढ दाषल दोफार[4] आसरै हुवा । और म्हाराजकंवार चावड़ीजीसा रा रणजीतसिंघजी रौ ब्याव गांव झालामंड राणावत गंभीरसिंघजी री बेटी.................सु भादवा सुद ८ रौ ठेरीयो[5] । तिण रै विनायक रौ समुरतो हुवो, अर वनोळा[6] सरसतै मुजब दिरीजै छै ।

और नाजर मुसताक तबेला रौ दरोगो मकै जातरा मुदै गयो हुतो । घणा दिन हुय गयो, सो सिरकारी चीज वसत वगेरे कनै थी सो अडांणो धर दीयो[7] अर पाछो आवसी नहीं । पछै इण तालकै सिवांणा री हाकमी वगेरे तबैलो थो सु जबत हुवा । पछै मका सु पाछो मंमोई आय श्री हजूर में अरजी दीवी कै षरच से पूरा तंग हूं । पछै श्री हजूर बडापणो[8] षांवदी फुरमाय षरच रो बंदोबसत करायो । अर हुकम मेलायो इकदमा[9] आय हाजर हुईजे, सो आज आयो है ।

भादवा सुद ५ भोम । असवारी गढ दाषल है ।

भादवा सुद ६ बुध । श्री हजूर साहब गढ में विराजै । और ब्यांव म्हाराजकंवार रा री सरबरा होय रही है ।

---

1. तेजी से चलकर आए 2. अचानक 3. महमान की तरह 4. मध्याह्न 5. निश्चित हुआ 6. विवाह के कुछ दिन पहले से प्रियजनों द्वारा दिया जाने वाला प्रीतिभोज 7. सरकारी सामग्री जो उसके पास थी वह भी रहन रखकर चला गया 8. बड़प्पन 9. तुरन्त

भादवा सुद ७ गुर। असवारी गढ में विराजे है।

भादवा सुद ८ सुकर ब्याव ३ हुवा—

२ श्री हजूर रा, गांव संषवाय कै चवांणा रै चवांण अभैसिंघ री बेटी

१ गांव संषवाय रा चु० अभैसिंघ री बेटी

१ गांव सोयंतरा रा चु० जवांनसिंघ री बेटी

—

२

१ म्हाराजकंवार रणजीतसिंघजी आवड़ीजीसा रा तिणां रो व्याव झालामंड रा रांणावत गंभीरसिंघ री बेटी सूं। जोधपुर सूं म्हाराजकंवार रणजीतसिंघजी हाथी असवार मोड़ बांद षवासी में लारै छंवर करण में ठाकुर प्होकरण षोळायत[1] कंवर गुमांनसिंघजी बैठा। गाजा-वाजां सूं जांन लारलै दिन रा चढी सो झालामंड गया। अर जांनीया[2] में म्हाराजकंवार श्री जसवंतसिंघजी, परतापसिंघजी, किसोरसिंघजी और श्री रांणावतजीसा पिण म्हाडोळ में बैस गांव झाळामंड पीर पधारीया। तिणां री अड़दली[3] में सिं० समरथराज अर दीवांणां रौ बेटो पूनमचंद वगेरे गया। कुल जांन में आदमी चढीयो पाळो.......आसरै। तिणां रो षरच वागर कोठार..........नै पछै भात दिया, षांड.................. ।

ब्यावां री षुसी री सिलक गढ ऊपर सुद ६ परभात घड़ी ४ दिन चढ़िया हुई। तोपां रा तीर नग १२७ छूटा। श्री हजूर छैलवाग विराजै। और म्हाराजकंवार री जांन रा मुकांम गांव झालामंड है।

भादवा सुद १० रिव। और झालामंड सूं परणीज नै म्हाराजकंवार हाथी असवार होय रात घड़ी.........गयां पधारीया। सिरे बजार होय गढ़ दाषल रात प्हौर १।। गयां आसरै हुवा। दसतूर मुजब सारां नुकता हुवा, पछै सिलक रा तीर २५ आसरै छूटा। और असवारी छैलवाग विराजै है।

भादवा सुद ११ सोम। झूलणा[4] दसतूर मुजब ठाकुरजी री रेवाड़ीयां गढ ऊपर सूं श्री अणंदघनजी नै मुरलीमनोरजी री, सदामंद व्यास प्रोहीत

---

1. गोद लिया हुआ पुत्र 2. बाराती 3. निजी चाकरी 4. ठाकुरजी को झूला-झूलाने का उत्सव

कोटवाळ मुसरफ गाजा-वाजां सूं आया। और श्री हजूर साहबां री असवारी बाळसमंद दाषल हुई।

भादवा सुद १२ भोम। असवारी झालामंड रात आदी रा पधारीया। और श्रीजी साहबां रौ पधारणो तरफ देसूरी कांनी री षबर है। जिण मुदै म्हैता विजैसिंघ फौज डीडवांणा कांनी है, जठा सुं बुलावण रा कागद हुकम रा लीषीजीया, सो त्यारी भारवरदारी[1] वगेरे हुय रही है।

आसोज वद ५ श्री हजूर साहब सिकार रै मुदै गांव गांगांणी पधारीया। गोठां हुई नै श्री हजूर सुं गांव घड़ाय गांगांणी रै मुदे जबत थी सो पाछी ईनायत कीनी ने निवाजस हुई। और अजंट साहब बहादर छावणी अेरणपुर सुं आसोज सुद.........नै आया।

आसोज सुद १० विजैदसमी रौ उछव सदामंद मुजब हुवो। असवारी छैलवाग सुं आसोज सुद ९ रात रा गढ दाषल हुई। पछै सुद १० नै जलूसी असवारी रावण मारण री पधारीया।

आसोज सुद ११ भोम लगायत श्री हजूर री असवारी सुद १५ तांई गढ दाषल।

काती वद १ रिव लगायत वद ३ गढ में चोकेळाव विराजीया। और सुणी कै कलकतै में संमदर री छौळ[2] सुं विगाड़[3] घणौ हुवौ।

काती वद ४ भोम। श्री हजूर री असवारी राजम्हैलां पधारीया रात रा।

काती वद ५ बुध। और अजंट साहब री मिजमांनी मांयलावाग में हुई। श्री हजूरसा पण विराज्या रह्या। नाचकूद वगेरे हगांम हुवौ। पछै श्री हजूर साहब तो पाछा राजम्हैलां पधारीया नै अजंट साहब रात आधी आसरै सफर जैसलमेर बीकानेर री तरफ उठा सूं परबारा[4] चढ़ गया। वद ५ गुर लगायत असवारी मांयलैवाग वद ८ सुधा विराजीया। वद ९ लगायत वद ११ तथा वद १२ सुधा राजम्हैलां विराजै।

---

1. सामान पहुंचाने की व्यवस्था 2. समुद्री तूफान 3. नुक्सान 4. अपने निवास स्थान से ही

और गिड़दीकोट में अंगरेजी नटां रौ तमासो[1] रात रा हुवौ। श्री हजूरसाहब पण देषण पधारीया।

वद १३ लगायत असवारी राजम्हैलां विराजै। और दिवाळी वद " (अमावस) रिव, श्री हजूर साहबां री असवारी राजम्हैलां सु' घोड़े विराज छड़ी असवारी सिरे बंजार होय रात घड़ी ४ गयां पधारीया, बजार में निजर निछरावळ म्हाजनां कीवी। पाछा राजम्हैलां पधारीया।

काती सुद १ श्री हजूर री असवारी राजम्हैलां सु' हाथी विराज्या लारै म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी विराज्या सो सिरे बजार होय रात रा पधारीया। पाछा राजम्हैलां पधारीया।

काती सुद २ असवारी मांयलैवाग वाभा मोतीसिंघजी री गोठ हुई, सो दिन ४ वाग दाषल रह्या। पछै वडोड़ा वाभा वभूतसिंघजी री पिण गोठ वाग में हुई।

काती सुद ७। श्री हजूर री असवारी म्हांलावाग सु' श्री नटवरजी रै मींदर जनांना सेत दरसण नु' पधारीया।

सुद ९ भोम। और श्री हजूर री असवारी मांयलैवाग वाभा मोतीसिंघजी री हवैली में दरबार हुवो। बजार रा म्हाजनां वोपारीयां वगेरे नू' मोसर हुवो। अर पटवा परतापमल नूं पण मुजरो हुवौ।

काती सुद ११ असवारी गढ दाषल हुई।

सुद १३ सुकर। श्री हजूर साहब रीमां[2] ब्यांव में पधारण सारू समूरतो करण मुदै असवारी हाथी रै हवदै, लारै ठाकुर वभूतसिंघजी पोकरण छंवर करता था सो सिरे बजार होय मेड़ते दरवाजा बारै डेरां दाषल हुवा सो सुद १५ तांई डेरा दाषल रह्या।

मिगसर वद १। श्री हजूर री असवारी दिवांण मु० मुकनचंद रौ मींदर जांन रो (डेरो) नागोरी दरवाजा बारै है जठै पधारीया। सो वद ५ तांई उठेहीज विराज्या रह्या अर सिरकारी कांम पिण उठेहीज हुवौ। और दिवांण नु' पटो गांव दोय निवाजस[3] फुरमाय। म्हैरवांन होय गांव दीया।

---

1. लोक-नाटय 2. रीवां 3. मेहरबानी

१ गांव चाबो तागीरायत समदड़ी रै ठाकुर री, रेष ३०००)
१ गांव लांबो मेड़ता रो तागीरायत वीकानेरी रे सिरदार रो, रेंष ६०००)

रेष रु० ६०००)

और गांव मीठड़ी में ठाकुर रै षोळै बेठो थो तिण नु उथाप दुजा भाई रा बेटा नु राज में रुपीया सांवठा ठैराय पटो लिषदीयो है, पिण हाल दो तरफी तकरार है। डीडवांणा री कोटवाळी मेड़त्या नंदजी रै, ढेलड़ी[1] री अरज सु तागीरायत रसालदार मुनालालजी रा भाई सु................।

मिगसर वद ६ सन। श्री हजूर साहबां री असवारी राईकैवाग पधारीया २ दिन विराजीया रया।

मिगसर वद ८। असवारी उजीरवगस रै वेरै पधारीया।

मिगसर वद ६ भोम। असवारी मंडोर पधारीया।

मिगसर वद १० बुध। असवारी वाळसमंद पधारीया सो सुद ३ तांई वाळसमंद विराजीया रह्या।

और जोधपुर री कोटवाळी वाभा मोतीसिंघजी ता० थानवी सिवनाथ रै नांवै हुई, तागीरायत खीची कोळजी री, कोळजी रै कुल म्हीना ६ रही। कोटवाळी रौ कांम मोतीसिंघजी पिंडां करै।

और जोधपुर री हाकमी षीची कोळजी रै हुई, तागीरायत भाट वागजी री। वागजी रै कुल वरस छव सात आसरे रही। और कवराज बारट भारथदांन सुद ३ रांमसरण हुवौ। वैकुंठी में बैठांण गाजावाजां नगारो नीसांण सु ले गया।

मिगसर सुद ६ रिव। असवारी छैलवाग वगेरे तथा नाडैळाव वाडीयै मीठी नाडी सुणी।

सुद ८ भोम। और अजंट वीकानेर जैसळमेर री तरफ गया था सो मास अेक दिन अठारै सु आया।

---

1. यह महाराजा तखतसिंह के रनवास की एक प्रमुख दासी थी

सुद १० गुर। अजंट साहव श्री हजूर रै मुजरै तख्तविलंद गया। और उकील जोसी हंसराज रै पोतो[1] हुवां री जाफत[2] सूरसागर दसतूर मुजब हुई, साहब डेरे आयो।

सुद १२, असवारी कायलांणै छै। और अजंट साहव भारथदांन री हवेली मातमपोसी करावण गयौ। पछै दूजै दिन रात आधी रा सफर अजमेर री तरफ चढ गया।

सुद १४, और कोटवाळी चौतरा सु अेक इसतीहार जारी हुवै सो कराय लीजो। तोप चलीयां पछै रात रा विनां दीवे फिरजो मती[3], वगेरे कलमां।

मिगसर सुद १५ भोम। असवारी कायलांणै विराजै।

पोस वद १ भारतदांनजी रै कारज सारो हुवो। नै म्हाराजकंवार रा आदमी नै वाभा मोतीसिंघजी रै आदमी रै तरवार चली। नै राज सूं निवाजस[4] मुरारदांन नै कड़ा, मोती, कंठी सिरपेच, हाथी, पालषी नै दुपटो सुपेद नै कांमैती २ नै कड़ा दुसालो नै रु० ४०००) रौ फुरमावणो हुवौ। नै कारज में कूटीजीया घणा[5] लाडुवां रो जीमण हुवो, षांड '२५०) गळी आसरै।

पोस वद २ गुर। असवारी कायलांणै विराजै तथा भींवभड़क।

पोस वद ३ सुकर। असवारी बाळसमंद।

पोस वद ४ असवारी छैलवाग, नै उठा सूं सड़क रै बंगलै पधारीया।

पोस वद ८, असवारी मीठीनाडी है।

पोस वद १० असवारी जाळीयै बेरै विराजै।

पोस वद १२ असवारी जाळीयै बेरै। और ठाकुर पोकरण वभूतसिंघजी नुं याद फुरमाया। जाळीयै बेरै गोठ हुई। पछै दूजै दिन वद १३ ठा०

---

1. पौत्र 2. गोठ 3. रात्री को तोप छूटने के पश्चात् (लगभग नौ बजे) साथ में रोशनी लिये बिना घर से बाहर कोई न निकले 4. इनायत 5. मृत्यु-भोज के समय अनेक झगड़े हुए

वभूतसिंघजी जाळीयै वेरै था जठै रात रा श्रीजी डेरे पधारीया नै दुसालो षासो अर फतवी कंवर ने इनायत कर घंड़ी २ विराजीया रया ।

पोस सुद २ । असवारी चेनसुष रा बेरा सूं लछरायजीं री वावड़ी पधारी ।

पोस सुद ३ । जांन रीवां पधारण बाबत असवारी छावणी दाषल हुई ।

पोस सुद ६ असवारी जनांनी रो कूच हुय डेरा गांव वीसलपुर हुवा नै सिरदारां नै साथै लेजावण मुदै[1] षास रुका इनायत हुवा ।

पोस सुद ११ डेरा सेषावतजी रै तळाव मातमपोसी री असवारी इतरी जायगा हुई । सेषावतजी रै तळाव आसपास...............

१ कवराज मुरारदांन रै डेरै भारथदांन रै

१ मीठड़ी रांमपरतापसिंघ रै डेरै पटो हमार लीषीजीयो, नाथूसिंघ मातमी

१ कुड़की नवौ षोळायत[2] बैठो तिण रे डेरै

१ कोळीया रो गांव केराप रा ठा० रै निजर रु० २०००) कीया तिण सुं

पोस सुद १२ असवारी कायलांणै पधारी ।

पोस सुद १३ असवारी भिड़क[3] पधारीया ।

सुद १४ असवारी भिड़क नार री सिकार कीवी नै जैसलमेरीजी रै पटो गांव बोड़वो, सेषावस, पांचलो जोधपुर रो जुमले रेष हजार १२०००) री...........और वाभा राजसिंघजी रै षोळै मगरायजी रा वाभा किलांणसिंघजी नुं दिया । आगै राजसिंघजी रै पटौ गांव दीयावडी वगेरै ।

पोस सुद १५ । असवारी मीठीनाडी श्री चावड़ीजी सा रै पटै गांव जायल, नै देवड़ीजी रै पण गांव विरांमी नै रावळीयावास लिषीजीयो, नै पड़दायत रूपजोतजी रै गांव सोनेई लीषीजीयो ।

---

1. आशय से 2. गोद लिया हुआ 3. भीम-भड़क—बिजोलाई तालाब के ऊपर पहाड़ में एक बड़ी गुफा

म्हा वद १ असवारी बाळसमंद वद ३ तांई। और जनांनी असवारी मेड़ता सुं समाचार आया कै दिवांण मु॰ मुकनचंद री भलो आदमी प्रो॰ लालचंद नै गांव डाभड़ा री चांदावत तरवार सुं मार नांषीयो।

म्हा वद ३। मु॰ पूनमचंद मुकनचंदोत नुं वोपार करण नुं[1] रु॰ १,००,०००) नै भं॰ बादरमल नुं ३०,०००) सूंपीजीया। मांमलत सिरकारू नै मूदीयाड़ रा बारठ चैनसिंघ नै रु॰ ४०,०००) व्याज प्र॰ ।।।) नै काटो १) सौ व्याज काटा में गांव कड़ायलीयो, रु॰ उधारा दीया।

म्हा वद ५, असवारी उजीरबगस रै बेरे।

वद ६ अजंट साहव श्री हजूर में उजीरबगस रै बेरे गया।

म्हा वद ७, असवारी गांव वीसलपुर दाषल हुई।

म्हा वद ८, असवारी गांव जसपाली मूंदीयाड़ रा बारठजी रै हुई। जाफत दीवी नै सिरपाव हाथी पालषी वगेरै सिरपेच कंठी चैनसिंघजी नुं हुवो। नै कांमेती नुं कड़ा, मोती, दुसालो हुवा।

कवराज मुरारदांन नै हाथी पालषी वगेरे सिरपाव हुवो नै गोढवाड़ री हाकमी व्यास चौथमल गुमांनीरांमोत रै, तागीरायत भाटी मांनजी री मासवारी रु॰ १८,०००) में।

म्हा वद ६ सन। असवारी पींपाड़ ठी॰ नीवाज सरभरा कीवी श्रीजी साहब कोट में पधार विराजीया।

म्हा वद १२, डेरा गांव वोरूंदै ठा॰ री मातमी नै पधारीया।

म्हा वद १३, असवारी गांव मोकालै किलादार रै गांव मिजमांनी दीवी, नै किलादार नुं निवाजस सरसताई हुई।

म्हा वद १४, डेरा मेड़ते, जालोर री हाकमी स॰ रांमलाल फौजराज रै कांमेती रै मासवारी ७०,०००) नै तागीरायत पंवार नारकरण सुं नै सांचोर री कारकूनी दोढीदार वछराज रा भाई धनरूप नांवै मासवारी रु॰ ५००) वरस १ में हुई।

---

1. व्योपार करने हेतु

म्हा वद " (अमावस) डेरा परबतसर सुं षबर आई कै म्हाराज किसनगढ श्रीजी साहब सुं मिलण नै परबतसर आया नै मुलाषात होती बगत श्रीजी साहब पेसवाई में पांवडा ४०० आसरे पधारीया।

म्हा सुद ४, श्री हजूर रा डेरा धरीबै[1] नांवै होय सांभर पधारीया। मारोठ री हाकमी म्हैता जसवंतसिंघ बीकानेर वाळा रै बिनां मासवारी नै परबतसर री हाकमी जोसी रांमनारायण रै मासवारी सटै, तागीरायत भं० भागचंद, सु भागचंद जुलम परगना में कीयो नै सरभरा पण वण आई नहीं जद दोनूं षिजमतां ऊतरी[2]।

म्हा सुद ७, श्रीजी साहबां रा डेरा गांव पचार इलाकै जैपुर हुई। दौलतपुरा री हाकमी मगरायजी रा भाई मालजी रै हुई, तागीरायत आसोपा भांनीरांम री नै दीवांणी अदालत आसोपा उतमरांम रै, अेवज भंडारी बषतावरचंद सुं नै फौजदारी अदालत पं० जोरावरमल रै तागीरायत सांदू नाथूदांन सुं।

म्हा सुद १३ जोसी हंसराज रै मंडप री जीमणवार नै म्हैता विजैसिंघ री मां रै लारै कारज हुवौ, षांड मण ८५) गळी। ओसवाळां में १२।। न्यात पोकरण री हवैली में जीमीया।

फागण वद १ लगाय वद ६ श्रीजी साहबां रा डेरा आगरा सूं लिषावट आई कै जरनेल[3] तथा कलकटर वगेरे पेसवाई में कोस १ सांमा आया। दुतरफी सिलामां री तोपां छूटी। आगरा रै डेरां म्हाराजकंवार रौ हाथी मसत हुवोड़ो आगरा में आयौ सो आदमी १ रै चोट लाग मर गयौ, जिण नुं पेनसल राज जोधपुर सुं अंगरेजां दिराई, मारफत अजंट रै सुं।

चैत वद १ लगाय वद ८ सीळ रौ नै गुड़ला रौ मेळो माफक दसतूर रै भरीजीयो।

चैत सुद २ भोम। और जनांनी असवारी रीयां कांनी सुं आई बारला डेरां दाषल हुवा; मुसायब सांमा गया।

सुद ३ गढ दाषल हुवा। म्हाराजकंवार साथै था।

---

1. दरीबा, नमक पैदा होने का स्थान 2. दोनों पद जब्त कर लिये 3. जनरल

चैत सुद ४ षबर रीयां सु आई कै कुचामण रा ठाकुर अगाड़ी गयाजी नु गया। कारण कै श्रीजी सा पण गयाजी पधारसी।

चैत सुद १३ राज रौ सिरकारी कांम मांयलाबाग में हुवै मुकत्यार बाभा मोतीसिंघजी दीवांण रौ भाई समरथमल १ भं० बादरमल।

चैत सुद १४ तथा १५, षबर रीयां सु आई कै श्रीजी साहब पिरागजी[1] पधारीया।

मिती वै० वद १ बुध। षबर आई कै श्रीजी साहब पिरागजी सु कलकत्तै पधारीया। जैपुर रा म्हाराजा सरसते[2] लाठ साहब मुलाषात कीवी।

वैसाष वद १२ सैर में हटनाळ[3] कोटवाळ मोतीसिंघजी ऊपर घाली, सैर में छड़काव करावण बाबत पांच सात दिन रही।

वैसाष सुद १० षटदरसण री अदालत मूंदीयाड़ रा बारट चैनसिंघ रै सो पांचवा मांजी रै गांव अेदळां रै गुड़े तलब कर कांमदार नु बेईजत कीयो तिण सु कोठारी बुधमल नु म्हाराजकंवार बेईजत घणौ करायो।

जेठ वद १ गुर। श्री हजूर साहबां रा डेरा श्री कासीजी हुवां रा कागद लसकर सु आया।

जेठ सुद ३, लसकर सु कागद आया कै श्री हजूर आगरा सु भरथपुर दाषल हुआ। भरथपुर रौ राजा दोय कोस तांई सांमा आया। मिजमांनी हुई। हाथियां ऊपर मिलाप हुवौ। षवासी में ठा० नीबाज बैठा। दूजै हाथी म्हाराजकंवार विराजीया।

जेठ सुद १३, श्री हजूर साहबां री साळग्रे[4] रो उछव दौलतषांना में हुवो। श्री हजूरसा रा लसकर रा डेरा जैपुर हुवां रा कागद आया।

असाढ़ वद १ सन। श्रीजी साहबां रा लसकर रा डेरा जैपुर, सो कोई दिन घाट विराजीया पछै हवामैल में पधारीया सो हाल कोई दिन फेर

---

1. प्रयाग तीर्थ राज 2. समकक्ष 3. हड़ताल 4. सालगिरह

विराजसी। अर म्हाराज रांमसिंघजी मैलां दाषल है सो दोनूं म्हाराज आंबेर पधारसी।

असाढ़ सुद १४ जैपुर रा अजंट टेलर सा री जाफत श्री हजूर साहवां कीवी रा समाचार जैपुर सुं आया।

असाढ़ सुद १५.............................।

संवत् १९२२ का विवरण

श्री

वणसूर जादूदांनजी री बही री नकल संवत् १६२२ री.................. सांवण वद १ रिव। और रुघनाथ सारा बेटा लिछमणदास, जमनादास देवाळो काढीयो[1] सो सिरकार रै गढ रै पोता रा तथा नाजर रै हवालै रै पोता रा दोय लाष आसरै[2] बाकी नीसरीया।

सांवण वद ४ बुध। ठा० पोकरण वभूतसिंघजी जैपुर सुं आया, अगाड़ी सीष कर नै..................।

सांवण वद १२, श्रीजी रा लसकर जैपुर सूं कूच हुवौ सो षातीपुरौ है जैपुर कनै जठै डेरा हुवा।

सांवण सुद ७ तांई विरषा हुई नहीं, तिण सुं गोऊ[3] '६।। हुय गया[4]।

सांवण सुद ८, कुचांमण रा ठा० रा छोटा भाई किसनसिंघ री षबर कुचांमण सुं उणां री हवेली सुणायी।

भादवा वद १ भोम लगात श्रीजी रा लसकर रा डेरा बगरू मेलां हुवा सो हमें वेगाहीज पधारसी।

भादवा वद ४, लसकर सुं कागद किसनगढ़ रा आया।

भादवा वद ५, नागपांचम रो मेळो मंडोर नीराट कोरो[5] भरीजीयो। कारण विरषा कम अर श्रीजी सा पिण लसकर में, तिण सुं कम भरीजीयो।

---

1. दिवालिया घोषित हुआ 2. लगभग 3. गेहूं 4. एक रुपये के साढे छः सेर
5. बिलकुल कम

भादवा वद ६ सन । विरषा हुई निवांणां में पाणी २ म्हीनां रो आयौ ।

भादवा वद ७ । लसकर श्रीजी सा रा कागद आया सो हाल किसनगढ़ रा म्हैलां में जनांना सेहत विराजै है, अर मिजमांना हगांम लाग रयो है ।[1]

भादवा वद १० । लसकर रा डेरा सलैमांवाद रा कागद आया ।

भादवा वद १३ । रांणीजी श्री वागैलीजी रीमां रा आज पधारीया । जिणां रै सांमा दीवांणां रो भाई कुनणमल गयौ । राजम्हैलां दाषल हुवा । नाजरां में उजीरवगस थो, रांणीजी सा री साथै ।

भादवा वद '' (अमावस) सोमवार । जोधपुर री अजंटी रै ओधै पर कपतांन ईनपी साहव आबूजी सुं आयौ, निकसन साहब री अेवज में ।

भादवा सुद १, श्रीजी सा रै लसकर रा कागद श्री पुसकरजी रा आया ।

भादवा सुद २, मसूरीया रो मेळो रांमदेवजी रो जठै अजंट देषण आयौ ।

भा० सुद ३ गुर । ठा० पोकरण अजंट साहव कने गया । साहब सांमो दसतूर मुजब आयौ ।

भा० सुद ४ । गणेसजी रौ मेळो रातैनाडै जठै अजंट साहब पिणं गयौ ।

भा० सुद ५ । अजंट साहब कोटवाळी चोतरे जेळषांनों देषण गया नै पछै उठा सुं ठा० पोकरण री हवेली मिजमांनी जीमण गया, नाचकूद वगेरै हुवा ।

भा० सुद ७ । श्रीजी रै लसकर रा कागद आलणयावास रा आया ।

और भा० सुद ८ मैड़तै डेरा हुवां रा कागद लसकर रा आया । और ठा० पोकरण आपरै गांव पोकरण नुं चढीया ।

भा० सुद ११ । श्री हजूर रै लसकर रा डेरा गांव वीसलपुर हुवा ।

---

1. खूब खातिर तवज्जो हो रही है

भादवा सुद १२ सन। श्रीजी सा रीमां सुं व्याव कर पधारीया। सेषावतजी रा तळाव तांई अजंट साहब सांमा गया। श्री हजूर हाथी रै होदै विराजीया। षवासी में ठा० भादराजण संगरांमसिंघजी, पाषती बाजू हाथी ऊपर चांपावत साळजी रा बेटा केसरीसिंघ अर दूजी बाजू हाथी ऊपर जावला रा ठाकुर बैठा। पछै श्री हजूर सा बाळसमंद परबारा[1] पधारीया। नागोरी द्रवाजै तांई अजंट सा पिण साथ था।

भा० सुद १३। कुचांमण रा ठा० केसरीसिंघजी आया।

भा० सुद १४। श्री हजूर बाळसमंद सुं अजंट साहब कने सूरसागर पधारीया। घड़ी २ तांई रीया, कलकतै वगैरे री सोकीया वातां हुई।

और अजंट साहब ठा० कुचांमण केसरीसिंघजी सुं मिलण नागोरी दरवाजै बारै ठा० रा डेरा जठै गया उठा सुं उजीरबगस नाजर रै वेरै गया।

भादवा सुद १५ भोम। अजंट साहब ठा० कुचांमण री हवेली जाफत में गया। घड़ी २ तीन रया, दसतूर मुजब नाच-कूद वगेरे हुवौ।

आसोज वद १। श्री हजूर री असवारी बाळसमंद विराजै।

आसोज वद २ लगाय वद १२ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद नाडेळाव वगेरे विराजै।

आसोज वद १२ अजंट साहब बाड़मेर री तरफ दोरौ करण चढ़ीया।

आसोज वद १३ तथा १४ सैर में दसत उलटी रा रोग सुं आदमी बीस पचीस भागा।[2]

आसोज सुद ५ सोम। श्री हजूर साहब गढ़ दाषल दोफार रा हुवा मेड़तीया दरवाजा सुं जलूसी असवारी हाथी रै हवदै, षवासी में ठा० भादराजण संगरांमसिंघ, मुढा आगे म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी दोनू तरफां हाथीयां ऊपर बाजूणा[3] ठा० जावलो नै चांपावत केसरीसिंघ, ठा० कुचांमण केसरीसिंघजी आपरी हवेली कनै निजर निछरावळ कीवी, पछै सिरे बजार होय

1. बाहर-बाहर 2. मरे 3. बाजू में

फतैपोळ तोरण दसतूर मुजब वांन गढ दाषल जनांनी दोढी मारग पधारीया। सिलक दसतूर मुजब गढ ऊपर तोपां छूटी।

आसोज सुद १०। रांवण मारण रै मेळै श्री हजूर पधारीया, हाथी रै होदै षवासी में ठाकुर भादराजण बाजूणा ठा० जावलो नै चांपावत केसरीसिंघजी बैठा सु रांवण मार जलूस सूं पाछा गढ दाषल हुवा।

आसोज सुद १२ सोम। पचपदरा री हाकमी जैसळमेर रा व्यास धनरूप रै हुई, तागीरायत भाट वागजी री। असवारी गढ दाषल सुद १५ तांई।

काती वद १, असवारी गढ़ दाषल।

काती वद २। और जोधपुर रै सायर री मुसरफी मोतीसिंघजी ता० हुई।

काती वद २। असवारी राईकैवाग दाषल हुई।

काती वद ४ रवि। श्री हजूर राईकावाग सूं लालसागर पधारीया नै पाछा पधारतां नागोरी दरवाजा बारै मुं० मुकनचंद रा नोरा कनै ठा० कुचांमण केसरीसिंघजी रा डेरा जठै श्री हजूर बगी ऊभी राष[1] ठाकुर केसरीसिंघजी नुं बगी में भेळा बैसांण राईकैवाग ले गया। म्हेरवांनी री वाता फुरमावता गया।

काती वद ५ सोम। श्री हजूर री असवारी पड़दायत लछरायजी री बावड़ी वाग दाषल, नै मोतीसिंघजी वाभा री गोठ वद ७ असवारी चैनसुष रै वेरै सु वद १० तांई उठै विराजीया।

काती वद " (अमावस) दीपमाळका असवारी अषैराज रै तळाव थी सो प्रबारा नाळै री बारी मारग होय गढ दाषल पधारीया। अजंट साहब पिण साथै थो। पछै रात घड़ी २ गयां आसरै जलूसी असवारी हाथी रै हवदै विराजीया। भेळो अजंट अनफीसाव डावी तरफ बैठो, जिण सु षवासी में कोई सिरदार बैठो नहीं। सिरे वजार दीपमाळका री रोसनी देषी, पछै राजम्हैलां दाषल हुवा।

---

1. खड़ी रख कर

काती सुद १ असवारी छैलवाग ।

काती सुद १२ वडो साहव जैसलमेर कांनी गयौ थो सु पाछो पोकरण हुय नै वालरवै मारग आयौ । जिण रै सांमा श्री हजूर सुरजवेरा तांई पधारीया, हाथी विराजीया । पवासी में ठा० भादराजण सगरांमसिंघ । वडै साहव रा डेरा सूरसागर हुवा अर वडै साहव श्री हजूर नै कयो के म्हाराजासा हमारे कूच की ताकीद है सो आप हम से मुलाकात यांही[1] कर लो, सो कीवी, वडा साहव अर अजंट साहव वगेरे सिकतर बाळसमंद मंडोर रात रा रया, नै सुद १३ गढ ऊपर श्री हजूर सु मिलण आया । तांमजाम[2] वैठा आया ।

मिगसर वद २ लगायत असवारी वद १४ तक किले दाषल ।

मिगसर सुद ६ । और ठा० कुचांमण नु घर री सीष हुई, निवाजस सिरपाव कड़ा मोती कंठी सिरपेच दुपटो अर कांमदार बद्रीनारांयण नु कड़ा मोती दुसालो हुवो । अर गांव रसाल रा चारण रांमनाथ नु ठा० री अरज सु कड़ा दुसालो हुवा ।

और श्री रांणावतजीसा चवांणजीसा मगरायजी री तरफ सु कंवर सबळसिंघजी नु मुदील दुपटो मोतीयां री कंठी वगेरे हुवा ।

सुद ७ ल० सुद १५ तांई असवारी गढ़ दाषल । और वाभा मोतीसिंघजी मंमोई नु चढीया अर रजु दफतर रौ कांम पंडत सिवनारांयण नु मोतीसिंघजी सूंपायो । सिवनारायण रै पटै गांव लोरडी हुई । लोरडी पैला तो षालसै थी नै षीचीयां रै थी सु आषी[3] इण रै हुई ।

पोस वद १ । असवारी राईकेवाग दाषल ।

वद २ ठा० जावला रा नु घर री सीष हुई । सिरपाव हुवौ रु० ५००) निजर किया ।

पोस वद ३ श्रीजी साहवां री असवारी सिकार वासतै देसूरी री त्रफ हुई । साथै दीवांण मुकनचंद रौ बेटो पूनमचंद अर भं० बाधरमल ।

---

1. यहीं पर 2. विशेष प्रकार की पालकी 3. पूरी

पोस वद ४ पछै नवी वात नहीं। राज रौ कांम सारो श्री हजूर कनै भुगतै ।[1] अठै सरसताई कांम[2] चलतो हुवो जावै । असवारी में............ ।

पोस वद १२ मुं० मुकनचंद दिवांण रो भाई समरथमल मर गयौ ।

म्हा वद १ ल० असवारी देसूरी विराजै । सारो कांम असवारी में भुगतै, जिण सुं अठे नवी वात विसेस नहीं ।

म्हा सुद १ बुध । और गोढवाड़ रौ गांव वाली श्रीजी री असवारी पधारी जठै वाली री रईयत[3] फरीयाद[4] व्यास चौथमल ऊपर कीवी, सो हाकमी जबत हुय जोधा भैरूंसिंघ रै नांवै हुई । किलै में पधारीया, पछै सादड़ी पधारीया, पछै देसूरी पधारीया । फौजदारी अदालत वासतअली रै हुई तागीरायत भं० पचाणदास री ।

असवारी म्हा सुद १५ तांई देसूरी विराजै ।

फागण वद १ श्री हजूर साहब देसूरी री त्रफ सुं पाली पधारीया । पाली में अर्जंट साहब पिण अजमेर री त्रफ सुं सोझत हुय पाली आयौ । श्री हजूर सूं मुलाकात हुई । और श्री हजूर पाली रा हाकम जोसी सिवचंद नुं सिरपाव मोतीयां री कंठी नै दुपटो वगेरे दीरीजीया । अर पाली री रैत निजर रु० ७०००) कीया । और पाली रा डेरा म्हैता विजैमल नुं फौजबंदी तरफ नागोर डीडवाणां री जावण रौ दुपटो हुवौ । और झालामंड में श्री हजूर साहबां री मिजमांनी री त्यारी हुई ।

फागण वद ६ । भादराजण रै ठा० संघरांमसिंघ आपरा कांमदारां नुं कैद कीया सो तसती रै मुढै[5] मर गयौ तरै पटे रा गांव जैतपुर वगेरे जबत कीया था सो रुपीया २५०००) पचीस हजार ठैर उठांतरीयां हुई ।[6] अर ठा० नुं सिरपाव हाथी वगेरे हुवा ।

वद ७ बुध । असवारी प्रबारी राईकैवाग दाषल, मुसायब सारा हाजर हुवा ।

और वाभा मोतीसिंघजी मंमोई सुं आया तिणां नुं श्री हजूर रौ मुजरो वाळसमंद हुवो, नै मंमोई सुं अंगरेजी चीजां लाया जिण री हाजरी दीवी ।[7]

1. महाराजा के अधिकार में 2. राज्य का सामान्य कार्य 3. जनता 4. फरियाद
5. मारपीट करने के कारण 6. ज़ब्त गांव पुनः लौटाया 7. वस्तुएँ पेश की

फा० वद १३ । असवारी राजमैलां दाषल ।

वद १४ अजंट साहब राजमैलां आयो ।

फा० सुद १ असवारी राजमैलां सु वडै तबेले हुई । पाछा राजमैलां पधारीया सु होळी तांई राजम्हैलां विराजीया । अर छारोली रै पातसा नु राजमैलां बुलाया, रुपीया १००) सदामंद मुजब दीरीजीया ।

चैत वद १ लगायत वद ६ सुधा[1] राजमैलां विराजीया ।

चैत वद ११ । असवारी लालसागर पधारीया । पछै रावटी म्हाराज-कंवार जोरावरसिंघजी कनै पधारीया, पछै उठा सु छैलवाग पधारीया ।

चैत सुद १ । असवारी नाडैळाव तथा विजोळाई, और अजंट साहब तलवाड़ा रै मेळै[2] गया । साथै उकील जोसी हंसराज रौ बेटो सिवराज ।

चैत सुद ३ । गिणगोर री असवारी राजम्हैलां और श्री हजूर साहब १ साद[3] गांव पारलाउ रौ तिण कनै पधारीया, घड़ी २ विराजीया रया ।

चैत सुद ४ ल० असवारी चैत सुद ६ सुधी राजमैलां विराजीया ।

चैत सुद ६ । और वीकानेर इलाका रा गांवा रा वीदावत वगेरे नै मारवाड़ इलाकै रा गांव लाडणू वगेरे जोधां रा गांवां रै घणा दिनां रौ आपस में झोड़[4] थो सो मिटावण वासतै वीकानेर रा राजाजी रो षास रुको ठा० कुचांमण केसरीसिंघजी रै नांवे आयौ । तिण री नकल अठै श्री हजूर मालम कुचांमण रा कांमेत्यां[5] कराई, तरै श्री हजूर सु पिण फुरमायौ अर षास रुको लिष दीयो के ठीक है दोनू रै सफाई कराय दीजो, सो जाय सफाई कराय दीवी । दुतरफो जस आयो । विजैमलजी पिण सांमल सला में था ।

चैत सुद १५ असवारी राजमैलां विराजै ।

वैसाष वद १ ला० वद १३ तांई असवारी राजमैलां ।

---

1. तक 2. तिलवाड़े का प्रसिद्ध पशु मेला लगता है 3. साधू 4. मतभेद, झगड़ा 5. अहलकार

वै० वद १४। असवारी वांड़ीये री तरफ, नै वद " (अमावस) गढ दाषल हुवा।

वै० सुद २ तथा ३ आषातीज रौ दरबार गढ ऊपर हुवो।

सुद ५ बाळसमंद।

वैसाष सुद ८ अंगरेज टेलर साहब जोधपुर रै राज रौ कांम करण वासतै श्री हजूर रै बुलायोड़ो आयो सो सूरसागर उतरीयो। पछै सुद ९ बगी में बैस गढ माथै श्री हजूर में नाळै री बारी मारग गयौ। साहब म्होर १) निजर कीवी कुरब मुलायजो साहब रौ परधांन ठा० वभूतसिंघजी सरसतै[1] बैठक दीवी। २ घड़ी वातां हुई। पछै हजूर नै टेलर साहब नै वाभा मोतीसिंघजी पिण भेळा बगी में बैठा सो नाळै री बारी मारग होय बाळसमंद छैलवाग पधारीया। पछै साहब तो सीष कर पाछो सूरसागर गयौ नै पछै हजूर आंम दरबार में हुकम दीयो के टेलर साहब कनै म्हां सुं मालम करायां विना[2] कोई जाईजो मती।

सुद १० असवारी बाळसमंद। सुद ११ बाळसमंद।

सुद १२ टेलर साहब नुं मोसर बाळसमंद, घड़ी २ तांई इकंत रया। असवारी सुद १५ तांई बाळसमंद दाषल।

और टेलर साहब नुं हाल अदालतां री सुणवाई भोळाई[3]। सो अदालत रा ओधायतां[4] नुं सूरसागर रोजीना बुलावै मिसलां सुणै, हुकम देवै।

जेठ वद १ ल० वद १० असवारी बाळसमंद।

जेठ वद ११। जोधपुर री हाकमी भं० गुणेसचंद रै हुई, तागीरायत षीची कोळजी री। और षीलीखांना री दरोगाई रेल बाबू रै, तागीरायत किलेदारां री।

जेठ सुद ३। नागोर री सायर मोतीसिंघजी ता० हुई और श्री म्हाराजकंवार रै हाथषरच रु० १००) रोजीना दिरीजै, सु हाकमी ऊपर कागद हुकम रा लीषीजीया।

---

1. संमान, उसी रीति से 2. मुझे सूचित किये विना 3. फिलहाल अदालती कार्य सौंपा 4. अधिकारी गण

जेठ सुद ५ षजांना री पोतदारी सिरीमाली ब्रि० हेमकरण आगै आउवा री उकीलायत करतो तिण रै हुई ।

जेठ सुद १५ तांई असवारी बाळसमंद बरोबर रही ।

दु० जेठ वद १ और जाळोर रौ हाकम रांमलाल नुं पकड़लीयो नै व्यास चोथमल रु० ७००००) सीतर हजार ठैराय पकड़ नै जाळोर सुं ले आयो, सो बाळसमंद ले गया ।

दु० जेठ वद ६ असवारी कायलांणै पधारीया बाळसमंद में कुल दिन ४० विराजीया रह्या । और तबेला री दरोगाई नाजर इलाईबगस रै हुई । और सुतरषांना री दरोगाई षीची जुंजारसिंघ रा बेटा रै हुई । जाळीयै बेरै विराजै । और दीवांणगी री मोर टेलर साहब नुं श्री हजूर सूंपी । अर दिवांणां रा आदमी मकरांणे कोठार टकसाळ षजांने वगैरे है जठै सारी जगा मुनसी हाजी म्हैमद रा गया, मुनसी भंडारी उदैचंद नुं भोळाया ।

दु० जेठ सुद २ श्रीजी रो विराजणो बाळसमंद तथा छैलबाग विराजै । और राज रौ कांम सूरसागर हुवै जठै मुनसी हाजीम्हैमद करै । हींगलू रा राता आषर लिष, दुजो मुसाहब सांमल नहीं ।[1]

दु० जेठ सुद ४ तथा सुद ५ विरषा ठीक हुई । असवारी बाळसमंद और बाळसमंद रा डेरा टेलर साहब नै मुनसी हाजी म्हैमद श्री हजूर में घड़ी २ तांई इकंत रया ।

और आबूजी सूं कागद मुनसी हाजी म्हैमद बाबत उकील चुंनीलाल रौ आयो कै वडै साहब री तकरार मुनसी हाजी म्हैमद माथै है कै इस सषस कु नौकर मत रषो । हमारी सिरकार का वदषा[2] है सो राजसथानां में ये सषस रैण पावै नहीं । इण तरै रौ षलीतो आयौ । पिण श्री हजूरसा वडा है सो हाल सीष दीवी नहीं कै साहब ब्हादुर सुं समजास करसी ।

दु० जेठ सुद ६ टेलर साहब नै हाजी म्हैमद बाळसमंद श्री हजूर में गया । इकंत घड़ी २ रया । वगी में भेळा बैस गया ।

---

1. अन्य कोई मुसाहिब शामिल नहीं रखा गया 2. अंग्रेजी सरकार का गुनहगार

दु० जेठ सुद १३ श्री हजूर साहब री वरसगांठ रौ उछब[1] नाडैळाव दसतूर मुजब हुवो। वरस ४७ मो छै दसतूर मुजब हुवौ।

दु० जेठ सुद १४। असवारी बाळसमंद सुद १५ बाळसमंद विराजै। अर आबूजी री तरफ पधारण री तजबीज है।

असाढ़ वद १ असवारी बाळसमंद।

असाढ़ वद ३ असवारी कायलांणै वगैरे विराजै।

असाढ़ वद ५ दीवांणी अदालत व्यास गोरीदत्त जैसलमेर रा सु तागीरायत हुई नै सिं० सिवदांनमल रै म्हावारी वरस १ रा रु० १५०००) कीया।

असाढ़ वद १३ असवारी वीजोळाई। और षीलीषांना री दरोगाई मेड़ता रा वासी रै म्हाजन जीवणरांम रै हुई।

अ० सुद ७ असवारी बाळसमंद।

अ० सुद ६ सन। असवारी बाळसमंद। और जालोर भीनमाल सांचोर री हाकमीयां वीकानेर रा म्हैता जसूतमल रै हुई, तागीरायत मु० रांमलाल री, मावारी ८५०००) पचीयासी हजार री। और परबतसर मारोठ री हाकमीयां भं० भागचंद रै हुई। परबतसर री तागीरायत जोसी रांमनारांयण री नै मारोठ री तागीरायत मु० जसूंतसिंघ वीकानेर वाळां री म्हावारी, दोनू हाकमीयांरा ३२,०००) बत्तीस हजार कीया।

असाढ़ सुद १०। और जोधपुर री अजंटी री उकीलायत षेरायतअली रै हुई, तागीरायत जोसी हंसराज री। हंसराज रै ४० म्हीना रही। तीस हजार माथै देणा रेह गया।[2]

और सिव री हाकमी सिं० लीषमीचंद रै हुई, तागीरायत सिं० समरथराज री मा'वारी दस हजार री डेरे ने हुई।

सुद १३ असवारी कायलांणै तथा बड़ीयै सो सुद १५ तांई कायलांणै विराजै।

---

1. उत्सव 2. तीस हजार का कर्ज शेष रह गया

संवत् १९२३ का विवरण

वणसूर जादुदांनजी री वही री नकल संवत् १९२३ री। सांवण वद १-सन। असवारी बाळसमंद।

सांवण वद ३ असवारी गढ दाषल हुई। संषेप षद[1] जिण सुं सुद १५ तांई गढ दाषल विराजीया। मुलक में हळोतीयो पिण हो गयो।[2]

भादवा वद १ सोम लगायत गढ दाषल। और वद ६ टेलर साहब रौ नैं मुनसी रौ डेरो सूरसागर सूं विदीयासाळ हुवो, कारण अजंट साहब आबूजी सुं आवणू[3] है।

भादवा वद १० फळोधी री हाकमी थानवी हरदेव सुं तागीरायत हुई नै भा०..............रै मा'वारी में दस हजार में हुई।

भा० सुद २ श्री हजूर सिरोही व्याव करण पधारै, सो डेरां दाषल हुवा। सुद ३ डेरा रोयट, सुद ४ पाली दरकूचां सिरोही पधारीया।

भादवा सुद ८ राधा अस्टमी रा सावा परणीया। सिरोही रो राव कोस ३ गांव कोळ रहै जठै तांई सांमो आयौ। षास सिरोही पधार देवड़ीजी सुं व्याव कीयो और सिरोही व्याव आगै म्हाराजा जसवंतसिंघजी, अजीतसिंघजी अभैसिंघजी गुजरात रै सोबै पधारतां सिरोही रो गांव पोसाळीयो षालसा रौ सिरोही सुं कोस १० उली तरफ है जठै डोळो आय व्याव हुवा है। अर समत १९०९ में म्हाराज श्री तषतसिंघजी पिण आबूजी पधारीया था वडै साहब सुं मिलण मुदै जद पिण पोसाळीये ही डोळो आय व्याव श्री हजूर रौ हुवौ थो सो चार सिरदार मुसदीयां मालम करी कै आज तांई जोधपुर रा राजाजी षास सिरोही पधार व्याव कीयो नहीं सो खावंद सिरोही नहीं पधारे तो ठीक है, कारण सरसतो लारलो साबत रेयौ चाहीजै।[4] तिण ऊपर श्री हजूर फुरमायो कै सरसतो रीत तो म्है राषां नै म्हे ही तोड़ नाषां, बापड़ा गरीब है इण तरै

---

1. साधारण अस्वस्थता 2. फसल बोने लायक वर्षा हो गई 3. आने वाला 4. पीछे की परम्परा कायम रहनी चाहिए

फुरमायौ, तरै सारा चुप होय गया। फेर फुरमायो कै रीत कायदो बरोबरी रा कने देषणो[1] अैतो भोमीया है।

आसोज वद १ भोम, आसोज वद ४ श्री हजूर साहब सिरोही रो व्याव कर पधारीया, डेरा राईकैवाग हुवा पछै उठा सु बाळसमंद पधारीया सो वद ११ तांई बाळसमंद विराजीया, पछै जाळीये वेरे पधारीया अर बजार रा म्हाजनां नु उठै कोटवाळां मुजरौ करायो।

और आसोज वद १४ नु कोठार वागर व्यास चौथमल गुमांनीरांमोत रै ता० हुवा, तागीरायत कोठार भा० पचांणदास री। वागर तागीरायत नाजर हरकरण री और अबदारषांनों छांगांणी नंदलाल रै हुवौ, तागीरात अैमदनगर रा.................बाभा मोतीसिंघजी री अरज सु हुवो। और रसोड़ा री दरोगाई धांधल रतना रै हुई। षीची उमेदकरण री अरज सु तागीरायत उदजी अैमदनगर रा सु।

आसोज सुद २। और टेलर साहब राज रौ कांम करतो थौ सो ३ म्हीनां री सीष कर मंमोई री तरफ चढ गयौ सो पाछो आवे तथा नहीं आवै।[2] अर दीवांणगी रौ कांम मुनसी हाजी म्हैमद नु सूपीजीयो। सिरपाव सोने री साटां वगेरे हुवा। अर मुनसी अजमेर घरै जावण री सीष मांगी कै म्हारी अैवज में अजमेर रा मु० परतापमल नु मेल देसु, सो प्रबारी षुराक ले चढ गयौ।

आसोज सुद ५ असवारी राईकैवाग पधारीया, डेरां दाषल हुवा। लाठ साहब रा बुलायोड़ा आगरै पधारसी................।

सुद ६ गुर नु राईकैवाग रा डेरां सु कूच हुवो सो तोपां रा तीर ३५ छूटा सो डेरा गांव वीसलपुर हुवा। और रांवण मारण रौ आज हुवो सो म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी राईकावाग सु परबारा पधारीया नै पाछा पिण उणीज मारग प्रबारा पधारीया।

सुद १० श्रीजी साहबां रा डेरा गांव पींपाड़ हुवा नै मु० मुकनचंद नु याद फुरमायौ, सो गयौ।

---

1. रीत की बात समान स्तर पर की जानी चाहिए 2. उसका वापिस आना निश्चित नहीं

आ० सुद १३ असवारी रा डेरा मेड़तै हुवा। और अजमेर रो 'मो० परतापमल नुं लसकर में मुनसी री षातर सुं परतापमल नुं सिरपाव मोतीयां री कंठी दुपटो वगेरे हुवा, मेड़ता रा डेरा। सो मुनसी री अेवज अठै आवसी।

काती वद २। रांणीजी देवड़ीजी मांदा था सो गढ में रांमसरण हुवा। दाग[1] पचकुंडां सरसतै मुजब कांम सारो हुवो।

काती वद ५। श्री हजूर रा डेरा परवतसर हुवां रा कागद आया। मेड़ता री कोटवाळी रेल वाबू रै हुई, तागीरात पना बाला री।

काती वद १०। श्री हजूर रा डेरा सांभर हुवा सु मुनसी हाजी म्हैमद नुं तो अजमेर री घरे जावण री सीष हुई नै सिरपाव पालषी वगेरे बैठण रौ कुरब अर श्री हजूर पाछा पधारे जितरै दिवांणगी रो कांम पंचायत में जोसी सिवचंद, मु० मुकनचंद नै अजमेर रौ मु० परतापमल नुं भोळायो। दीवांणगी री मोर दोढीदार सेसकरण कनै। और लसकर रा डेरा जैपुर हुवां रा कागद आया। पचपदरा री कारकूंनी १५०० कांनचंद भंडारी रै नै सांभर री थांनवी हरदेव रै। मेड़ता री कारकुंनी प्रो० लूणकरण रै ११०० में।

और श्री हजूर रै लसकर रा समाचार भरतपुर इलाका रा आया कै गांव नीवाड़ा में लसकर में दसत उलटी रौ कारण हुवौ सो मिनष भागा[2] जिण सुं लसकर रो लोक चलविचल[3] है। सो म्हाराजकंवार वगेरां नुं सीष हुई कै पाछा जोधपुर जावो। अर लसकर रा डेरा आगरै री उली तरफ गांव……………कोस दोय ३ उली तरफ है, जठै हुआ।

काती सुद ७ पाछली रात रा[4] तारा तूटा सो मैताव रौ चांनणो हुवै ज्युं हुवो, सो उलकापात री वात है। और म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी, प्रतापसिंघजी, रणजीतसिंघजी, किसोरसिंघजी लसकर सुं बगी में बैस आया। गोळ री घाटी मारग गढ दाषल हुवा।

काती सुद १५ समाचार लसकर सुं आया कै सुद १३ लाठ साहब सुं मुलाकात हुई।

मिगसर वद १ लसकर सुं समाचार आया कै श्री हजूर री मुलाकात लाठ साहब सूं काती सुद १३ हुई, कुरसीयां री। सु बैठक उँची नीची वेढब

---

1. दाह-क्रिया 2. मनुष्यों की मृत्यु हुई 3. विचलित 4. रात्रि का पिछला प्रहर

इण मुदै हुई कै अंगरेजां री त्रफ सूं तुकमो आगे हुवो है सो बैठक में ऊचे लंबर[1] बेसै, तिण रो लाठ साहब पिण लिषावट कर दीवी कै तुकमे रै मुदै ऊँची नीची बैठक हुई सो और तरे समजसी नहीं ।[2]

मिगसर वद ५ सोम । लसकर सुं समाचार आया कै तुंवर सांवतसिंघ गोटा[3] रा कारण सुं रांमसरण हुवौ, वगेरे । हनोज[4] रोग मिटीयो नहीं ।

मिगसर वद ७ । कागद असवारी सुं आया कै श्रीजी सा कूच कर जोधपुर सांमा पधारै है । और लाठ साहब सूं मुलाकात काती सुद १३ नै हुई थी जिण में गवालेर तथा तालभोपाल तथा जैपुर म्हाराज बैठा । चोथै लंबर श्रीजी साहब बैठा कारण इणां नै पैला सिरकार अंगरेजी सुं तुकमो इनायत हुवोड़ो थौ जिण सुं, आयंदै जोधपुर जैपुर कदीम का दसतूर मुजब कुरब कायदा है ज्युं बरावर रेहसी ।

मि० वद ९ कागद लसकर भरथपुर रा डेरां सुं आया ।

मि० वद ११ मुकाम जैपुर रा डेरां सुं कागद आया कै मुनसी हाजी म्हैमदषां अजमेर सुं आयौ । और आज धरराट हुवौ[5] नै म्हाराजकंवार श्री जोरावरसिंघजी असवारी सूं सीष कर आया ।

मि० सुद १ श्री रांणावतजी सा नै मगराजजी असवारी रै सांमा चढीया । साथै मुं० मुकनचंद रौ भतीजो गयो रै श्रीजी सा रा डेरा गांव षाषड़की है । ठाकुर घाणेराव मि० वद " (अमावस) रांमसरण हुवौ ।

मिगसर सुद ६ डेरा श्रीजी साहबां रा पुसकरजी रा कागद आया विरमभोज[6] दे दीषणा[7] रु० १) जणै अेक दीठ दीयो ।

मि० सुद १५ श्रीजी साहब अजमेर मुनसीजी री हवेली में जनांना सहेत विराजीया । हाजी म्हैमदषांजी जाफत[8] दीवी, त्यारी सरबरा आछी तरै कीवी ।

पोस वद १ असवारी अजमेर में मुनसी हाजीम्हैमद री हवेली अर मुनसी री अरज सुं उण रा तालकदारां नुं सिरपाव जणा ३२ नुं दिरायो ।

---

1. पदक (उपाधि) धारी शासकों को वरीयता दी गई 2. अन्यथा नहीं समझा जावे 3. वायु रोग 4. अभी तक 5. जमीन धूजने की आवाज हुई 6. ब्राह्मणों को दिया जाने वाला ब्रह्मभोज 7. दक्षिणा 8. गोठ

पछै अजमेर सूं कूच हुवौ सो गांव रीयां डेरा कीया। घास लकड़ी री सरबरा हुई।[1] पछै उठा सुं पो० वद ८ किलेदार रै गांव मोकालै पधारीया। उठै मिजमांनी षांड रौ सीरो। पछै सिरपाव जणा १४ नुं दिरीजीयो। पछै पोस वद ११ श्रीजी रा डेरा गांव वीसलपुर हुवा। पछै पो० वद १२ बुध गढ दाषल हुवा सो पो० वद १२ लगाय सुद ११ तांई किलै विराजै।

म्हा वद १ सोम। श्री हजूर गढ दाषल।

म्हा वद ७ अजंट साहब अजमेर री सफर सुं आयो नै वद ८ श्री हजूर साहब असवारी कर सूरसागर पधारीया।

म्हा वद ९। अजंट साहब श्री हजूर में गढ़ ऊपर गयौ।

म्हा वद १४। असवारी जाळीयै वेरै, जठै साईवान खड़ा होय उठैहीज मातमपोसीयां हुई, सांवतसिंघ तुंवर री नै राषी रा चवांणां री। और रांणावत गंभीरसिंघजी री भोजाई री जुमले तीन जणांरी हुई।

और म्हा सुद रिव। असवारी गढ दाषल। म्हा सुद ६ ठाकुर कंटाळीया नुं सिरपाव हाथी कड़ा मोती सिरपेच वगेरे हुवा। सुद १३ असवारी भेरवा री भिड़क।

म्हा सुद १५। जोसी परभूलाल हंसराज वगेरै री जीमणवार स्हैसभोज संमत १९०२ हुवौ, लगात वरसा-वरस गुळ री लापसी पोकरणा विरांमणां री न्यात फळसा उगाड़[2] मण २५) री करै सो दसतूर मुजब हुई।

फागण वद १ भोम। असवारी जाळीये वेरै विराजता था सो गढ दाषल हुवा, पाछली रात रा।

फा० वद २। असवारी गढ में पड़कोटे त्रफ और आतमारांमजी री समाद[3] सुं लगतो। और म्हाराजकंवार चवांणजी सा री आज वरस गांठ है सो उछव तौ सरसते मुजब उणां रै न्होरा में हुवौ नै गढ़ ऊपर पड़कोटा में जनांना स्हैत विराज कुसी[4] कीवी।

---

1. घोड़ों के लिये घास और रसोड़े के लिये ईंधन की समुचित व्यवस्था की गई 2. बिना रोक-टोक के सभी पुष्करणा ब्राह्मणों हेतु 3. आत्माराम, महाराजा विजयसिंह का गुरु जिसकी समाधि किले में ही बनी हुई है 4. खुशी

फा० वद ६ दु० गुर। असवारी चोकैळाव रा म्हैलां में विराजै। और आज श्री हजूर साहबां रौ व्याव केलावा रा तुंवर गेनजी री भतीजी डोळो राईकैवाग आया सो श्री हजूर साहव चोकेळाव सूं हाथी विराजीया, षवासी में ठा० कंटाळीयो अर पाषती बाजू हाथी ऊपर चांपावत केसरीसिंघ अैमदनगर रा वगेरे फतैपोळ होय सिरे बजार होय राईकैवाग पधारीया परणीजीया, रात रा उठैहीज सुष फुरमायौ[1]। पछै फा० वद ११ श्री हजूरसा तौ राईकैवाग विराजै अर तुंवरजीसा परणीया तिणां नुं म्हाडोळ में बैसांण सिरे बजार गाजां-वाजां सुं गढ दाषल हुवा।

और वाभा मोतीसिंघजी कलकत्तै सुं आया। पछै वद १२ नुं श्री हजूरसा राईकावाग सुं प्रवारा बाळसमंद पधारीया।

वद १३ गढ दाषल हुवा। परणीजीया तिण री तोपां री सिलक तीर १०० अंदाजै छूटा।

फा० वद " (अमावस) बुध। सूरजग्रण[2] विस्वा ४ दिन घड़ी २२ पछै सुद। श्री हजूर रौ विराजणौ गढ ऊपर। और म्हाराजकंवार रणजीत-सिंघजी चावड़ीजीसा रो व्याव सुद १ मंडार रा देवडां रै मांयलैवाग में हुवौ। सुद २ नुं गढ दाषल हुवा। म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी वगेरै कंवर वाभा साथै था।

और असवारी फा० सुद ६ रात रा राजम्हैलां पधारीया। और सुद १० मुनसी हाजीम्हैमद नै अजंट अनपी साहब गोढवाड़ रौ गांव पांचेटे सजा[3] है, जालोर इलाकै वांकडीये बडगांव ऊपर रु० २०,०००) वीस हजार लीना नै देवलावाटी रा लोयांणो वगेरे कनां सुं २०,००० वीस हजार लीना। नै मुकदमा वगेरे बाकी था सु लै सांचोर री तरफ दोरौ कर आया, सो श्री हजूर में राजम्हैलां जाय हाजरी दीवी। अर अजंट साहब पिण मुनसी सांमल थौ सु आज सुद १० आयौ।

और सुद १० सुकर लगायत राजमैलां, अजंट साहब श्री हजूर में आया।

---

1. वहीं पर आराम किया   2. सूर्यग्रहण   3. दण्ड के मामले निपटाने है

ग्रौर सुद १३ श्रीजी साहब राजमैलां सुं बगी में विराजीया, म्हाराज-कंवार जसवंतसिंघजी बगी षड़ता था[1] सो ग्रजंट साहब कनै सूरसागर पधारीया। पाछा २ घड़ी सुं पधारीया। राजमैलां दाषल हुवा।

ग्रौर फा० सुद १४ भोम। होळी सुद १५ बुध री छारोली। ग्रौर पोकरणा व्रि० रौ छारोली रो पातसा श्री हजूर रा हुकम सुं राजमैलां सदामंद मुजब ग्राया। पातसा नुं गोठ रा रु० १००) सदामंद मुजब दिरीजीया।

चैत वद १ गुर। श्रीजी राजमैलां विराजै।

वद २ नुं ग्रजंट साहब ग्राबूजी नुं चढीया।

चैत वद ४ श्री हजूर री ग्रसवारी पिनस में विराज जनाने सहैत गढ दाषल हुवा। ग्रौर चैत वद ७ बुध। श्री हजूर गढ में विराजै।

चैत वद ६ सील रो मेळौ पूजापो ले डावड़ियां जनांना मांय सुं ग्रावै सु रथां में बैस जावै, नै हमके[2] हुकम हुवो के पाळी[3] जाईजो, सु पाळी गई, रथां नहीं गई[4]। ग्रौर श्री हजूरसा रात रा देवड़ीजीसा रै नोरै गढ़ सुं उतर पधारीया। पछै जोसी हंसराज री हवेली पधार पग मंडा जनांना सिरदारां स्हैत पधारीया। निजर नीछरावळ मोर १) नै पांच-पांच रु० सारा घर रां कीया। षातर घणी कीवी। पछै उठां सुं तलैटी रै म्हैलां पधारीया। ग्रौर श्रीजीसा सीळ रौ मेळो देषण तळैटी रा मैलां पधार विराजीया। झरोषां रै चक बंद गई।[5] पछै ग्राथण[6] रा घुड़ला रो मेळौ हुवौ तरै श्रीजीसा वालकिसनजी रा मिंदर कनै हड़मानजी रो थांन जठै मोटो चोतरौ है, जठै विछायत कर विराजीया। पछै वद १० तळैटी रा म्हैलां सुं जनांना सिरदार श्री वाळकिसनजी रा दरसण नुं पधारीया। पछै वद ११ रिव, जोधपुर रौ हाकम कचेड़ी बेठै जठै सिरे दरबार कीयो। ग्रंगरेजां तुकमो बगसीयो सो पिण हाजर[7]। निजर निछरावळां हुई। पाछा तळैटी रा मैलां दाषल हुवा।

चैत वद १२ हरषाराम नाजर री गोठ श्री हजूर में निजर कीवी। ग्रौर वद १३ म्हादेवजी श्री मडलेश्वरजी रौ मेळो घणा वरसां सूं जोसी सींभुदत

---

1. बग्गी हांक रहे थे 2. इस बार 3. पैदल 4. रथों में बैठकर नहीं गई 5. झरोखों के चिक का पर्दा लगा दिया गया 6. संध्या समय 7. अंग्रेज सरकार द्वारा सम्मान सूचक पदक इनायत हुग्रा वह भी वहां प्रदर्शित किया गया

भरावतो सो आज तांई बराबर भरीजै है। हजारां रु० षरचै है। जोसी हंसराज वगेरै सारा भाई इण वात में हमगीर बराबर है।

चैत वद '' (अमावस) गुर। श्रीजी साहब जनांना समेत तळैटी रा मैलां सुं व्यास भाऊ मनरूप री हवेली पधार षातर फुरमाई। पछै थांनवी हरदेव बळदेव रै माळीये पधारीयां री सुणी। पछै गढ दाषल हुवा।

चैत सुद १ लगाय गढ दाषल। सुद ५ में गढ में तमासो पोकरणा ब्रि० कनै सुं दौलतषांना में करायौ।

सुद ३ ल० सुद ८ गढ दाषल। गिणगोर रौ ने बोळावणी रौ मेळो दसतूर मुजब हुवौ।

चैत सुद १२ सोम। किला सुं रावटी हुय बाळसमंद असवारी पधारीया। सुद १५ तांई असवारी बाळसमंद तथा नाडेळाव पधारीया।

वैसाष वद १ सुकरवार। असवारी जाळीयै वेरै वद २, सूरसागर वद ३ सूरसागर पछै गढ दाषल। मेड़ता री हाकमी कोटवाळी नै सायर तीनू ही ५६,०००) मासवारी इजारै हुई मु० परतापमल रै। असवारी वद ३ ल० वै० वद ८ कंटाळीया रा ठा० गोरधनदास आप राजीकुसी सुं श्री चवांणजी सा रै छोटा कंवरजी नुं षोळै लेण री अरज कराई, जद श्री हजूरसा वडपणो विचार अरज मंजूर करी, जालमसिंघजी री।

वै० वद ११। मुनसी हाजी म्हैमद नै म्हैता विजैमल नै कांम रै मुदै आबूजी मेलीया। वै० वद '' (अमावस) सन। किलैदार देवीसिंघ अनाड़सिंघोत सुं किलादारी रौ कांम जवत कर पंचायत में मुनसी हाजी म्हैमद नै हरजीवण नै वीजैमल ता० पंचायत में भोळीजीयो।[1]

वै० सुद १ रवि। असवारी गढ दाषल म्हाराजकंवार श्री किसोरसिंघजी रौ व्याव राजमैलां हुवौ। डोळौ केलावा रा तुंवरा रौ।

वै० सुद २ तथा सुद ३ आषातीज गढ दाषल, माफ़क दसतूर रै पांतीयो[2] वगेरे मोसर हुवौ।

---

1. सुपुर्द किया　2. पंक्तिवद्ध भोजन की व्यवस्था

वै० सुद ६ दिवांणगी री डबी हरजीवण नु सूंपी। विलाड़ो हरजीवण ता० हुवौ नै जाळोर सांचोर भीनमाळ री हाकमियां मुंसी हाजीम्हैमद रै हुई।

वै० सुद ११ भोम। असवारी बाळसमंद रांणीजी श्री चवांणजी संषवाय रा सैज बेमारी सुं रांमसरण हुवा।

जेठ वद १ रिव। वाभा सोनसिंघजी री बेटी उदैपुर रा वाभा सुं सगपण करियो सु जांन आई, व्याव मांयलावाग कंवळ चौक में हुवौ। व्याव जांन भात वगेरे नुषता दसतूर मुजब हुवा। वद १० सूरसागर, वद " (अमावस) गढ दाषल। म्हैता वीजैमल नै मुनसी हाजीम्हैमद आबूजी सूं पाछा आया।

सुद ४ चोपासणी रा गुसांईजी रा लालजी परदेस में परणीजण पधारै, जिण मुदै पधरावणी हुई रु० ६४२) भेंट रा आया। उदेपुर री जांन नै सीष हुई।

जेठ सुद १३। श्रीजी सायवां री वरसगांठ रौ उछब सरसतै मुजब हुवो। गढ ऊपर मोसर सरवालै[1] हुवो नहीं।

असाढ वद १ भोम। असवारी गढ दाषल।

असाढ वद २। मुनसी हाजीम्हैमद रै षेड आदमी ३ रौ रोजगार बाबत तकरार बध सिपाई तरवार काढ अेक दोय रै जषम लगाय नास गया,[2] जिणां नै पकड़ कैद कीया।

असाढ वद ४। विजैमल घांणैराव चढीयो और चकरांती आचारजं री पधरावणी गढ ऊपर, अरज म्हैता विजैमल री सुं हुई, रु० ५००) आसरै आया।

असाढ वद १३। असवारी सूरसागर। वद " (अमावस) कायलांणै असवारी पधारी।

असाढ सुद ५ रिव। दीवांणी अदालत मु० पूनमचंद रै मासवारी १७,०००) सुं हुई। तागीरायत सिं० सिवदांनमल सुं, बाळसमंद रौ वाग, कोठार री पोतदारी नै वागर री पोतदारी मुनसी हाजीम्हैमदषां ता० हुई।

---

1. सब लोगों को 2. भाग गये

असाढ सुद ८ भोम। असवारी विजोळाई थी सु उठा सु ठा० कंटाळीया री हवेली पधारीया ठा० रु० ५०००) निजर कीया, पछै निवाजस सिरपाव हाथी, पालषी, कड़ा मोती, मोतीयां री कंठी, सिरपेच, पायजांमो नै जांमो, इनायत हुवा। कांमेतीयां नै सिरपाव। सुद १० भं० सिरीचंद रो गांव गीराधडो वगेरे जबत कीया।

असाढ सुद १२ सन। असवारी जाळीये वेरे। असाढ सुद १४। असवारी सूरसागर विराजै।

असाढ सुद १५॥ जोधपुर री सिकदारी जोसी हंसराज रा बेटा आसकरण रै नांवै हुई नै मुसरफी चांतरा री जोसी सिवचंद रै बेटां रै हुई, तागीरायत वाभा मोतीसिंघ री।

संवत् १९२४ का विवरण

वणसूर जादूदांनजी री बही री नकल संवत् १९२४ री। सांवण वद १ नागोर री कोटवाळी बाबू रांमलाल रै रु० २४,०००) में हुई, तागीरात धांधल तिलोकदास री।

सांवण वद ५। फळोधी रा हाकम भं० हमीरमल हजारीमल रा नै सूतां नै विलायती मार नांषीयां री षबर आई।[1]

सांवण वद १२। फळोधी री हाकमी लाला बलवंतराय रै हुई, मासवारी में, तागीरायत भं० हमीरमल री।

भादवा वद..........नै सिव री हाकमी मुनसी हीरालालजी रै हुई, तागीरायत सिं० लीषमीचंद री। फौजदारी अदालत आध रा ओधेदार पिंडत अजोध्याप्रसाद रै हुई।

भादवा वद........। नागोर री कोटवाळी मुनसी वासतअली रै हुई, तागीरायत बाबू रांमलाल री।

भादवा सुद ५। मुनसी हाजीम्हैमदषां नै दुपटो दिवांणगी रौ हुवौ नै असवारी बिदियासाळ पधारी।

---

1. विदेशियों ने मार डाला इसकी सूचना आई

भादवा सुद ८ ने श्री हजूर री असवारी विध्यासाळ पधारीया, गोठ अरोगण सारू,[1] सो प्हैला तो सिरे दरबार हुवौ नै नबाब री पदवी दिरीजी। पछै पांतीयै विराजीया, सिरदार रीयां १ वळूंदो १ मीठड़ी १ ही हाजर था। नै पछै असवारी दिन १४ तांई उठै विराजीया नै गोठां हाजी री मरदांन······· री, फतैमल री हुई नै··················· ।

आसोज वद·······रात रा नवाब हाजीम्हैमदषां नै सोना री कंठी ईनायत हुई नै पटो रेष १२०००) रौ सिलांमती बोलीजी।

आसोज वद २। प्रभात रा अजंट ईनफी साहव आवूजी सु अठै आया नै आवतां ही श्री हजूर सूं मुलाषात कीवी, पछै सूरसागर गया।

आसोज वद ४। श्री हजूर सूरसागर सायब री मुलाषात मुदै पधारीया, सरसता मुजब। आसोज वद ५ पटानवेस भीनालाल मर गयौ। आसोज वद ७ असवारी चोकैळाव दाषल हुई।

आसोज वद ८। अजंट गढ ऊपर आयौ। फतैमेल में जाफत[2] हुई सारो दिन रया।

काती वद ६। अजंट साहब पाली छावणी री तरफ चढीया।

काती वद ११। नबाब हाजीम्हैमदषां रै पटै भैरूंदो हुवौ।

काती वद १२। नबाब अजमेर गया।

काती सुद १३। नबाब हाजीम्हैमदषांजी अजमेर सुं पोकरजी आया था सु दोफार रा सूतां नै तरवार बुही सुं कांम आया नै सिपाई अकबरषां माथै नीमत आयौ[3] सु तैकीकात हुवै है।

मिगसर वद २। असवारी बाळसमंद। मिगसर वद ३। श्री वडा-लालजीसा श्री परतापसिंघजी, श्री किसोरसिंघजी, देसूरी री त्रफ सिकार मुदै चढीया।

मिगसर वद ४। असवारी राजमैलां। मि० वद ५ लगाय वद ८ तांई असवारी राजमैलां विराजै है। और वडा साहब करनेल लेटीम साहब बादुर

1. गोठ जीमने को 2. दावत 3. दोष आया

गुजरात हता[1] सु आया तिकै आबूजी होय पाली होय आगा अजमेर जाय है, जिणां सु मुलाषात मुदै मुसाहवां नु मेलीया। जोसी हंसराज बगसी सिं० देवराज राव सिरदारमल पींडत सीवनारायण।

मिगसर वद ९ लगाय सुद १३ सोम तांई असवारी राजमैलां विराजै है। और दिवांण नवाब हाजीम्हैमदषां अजमेर जावतो थौ सो पुसकरजी में मारीयो गयो जिणरी विगत तो काती महीना में मंडी है।

मि० वद ११। मीठीनाडी जसोल रा ठा० पदमसिंघ पाड़सिंघोत रै डेरै पाड़सिंघ री मातमपोसी करावण असवारी पधारी।

मिगसर वद १२। असवारी गढ दाषल हुई, सु बैतरणीयां ३ प्रोहितजी नै दिरीजी[2] नै वद १४ पाछा छैलवाग पधारीया।

मिगसर सुद १३ सोम। नै नबाब हाजीम्हैमदषां रौ बेटो अजमेर सु आयौ।

मिगसर सुद १५ बुध। असवारी राजमैलां दाषल। और श्री हजूरसा रै ब्याव रा डोळा ६ आया सो नागोरी दरवाजा बारै उतरीया मु० मुकनचंद दीवांण रा नोरा में—

१ तंवर किलांणसिंघ री बेटी

१ रेवरजी गुजरात रा

२ भटियांणीयां रावळोत पळी री नै वीकुंकोर वाळां री बेटीयां

२ चवांणजी राषी १ रा नै दूजा संषवाय १ री भायप[3] बषतावरसिंघ री बेटीयां, ब्याव कर पाछली रात रा राजमैलां दाषल हुवा। आज तांई मेळ २७ आसरै है।

पोस वद १ गुर लगाय वद ४ तांई असवारी राजम्हैलां दाषल हुवा। और बद ४.........।

पोस वद ५ रिव। वाभा सजनसिंघजी रांमसरण हुवा।

पोस वद ६ सोम। दीवांण नवाव हाजीम्हैमदषां मारीयौ गयौ जिणरी मातमपोसी करावण नु श्री हजूर राजमैलां सु बिदीयासाळ पधारीया।

---

1. हलका 2. एक धार्मिक कृत्य जिसके अनुसार मृत्यु-उपरान्त जीव वैतरणी नदी पार कर लेता है 3. वही परिवार

पोस वद ६ गुर। असवारी राजम्हैलां सु गढ दाषल हुई। और ठा० घांणेराव हुकमनांवा[1] री सफाई मुदै आया था सो सफाई हुवां बिनां घांणेराव नै चढ गया। सफाई हुती देषी नहीं तरै।

पोस वद १० ल० वद १४ तांई असवारी गढ दाषल। और पाली में हाकम वगेरे जूनीवाळ वाळां री अेहद[2] विसेस जिण सु हरताळ पड़ गई सो समजास रै वासतै मूता पूनमचंद नै मेलीयौ।

पोस वद ११ लगायत सुद ७ तांई असवारी गढ दाषल।

पोस सुद ६ सन। असवारी कायलांणै पधारीया।

पोस सुद १० नु असवारी गढ दाषल हुई सु सुद १५ तांई गढ दाषल।

म्हा वद १ सुकर। असवारी गढ दाषल।

वद ७ गुर। असवारी गढ दाषल। और अजंट अनफी साहब बहादुर अजमेर री तरफ गया था सो पाछा आया।

म्हा वद ८ ल० सुद २ तांई असवारी। और वाभा सिरदारसिंघजी री बहू बूंदी वाळा मर गया जिणां रै कारज[3] पोकरण री हवेली में हुवौ। षांड मण ८०) गळीजी।

म्हा सुद ३। परबतसर मारोठ री हाकमीयां हवासषां ता० हुई, तागीरायत भं० चांदमल सु। कारण कै चांदमल री हाकमी परबतसर में पोकरणो विरांमण जोसी नु इण कैणो कर मरायौ।[4] जिण मुदै जोसी रा घर रा गढ माथै नाळसी[5] आया जिण सु, नै किसनगढ रा म्हैजर बाबत।

म्हा सुद ३ लगायत सुद ५ तांई असवारी जाळीयै वेरै विराजै है। और सुद ५ नै दीवांणगी री म्होर नबाब हाजीम्हैमदषां रा बेटा रै नांवै, सु नवी म्होर षुदीजी है।

---

1. जागीरदार की मृत्यु के उपरान्त नये जागिरदार को अधिकार का आदेश, जो निश्चित रकम देने के बाद ही प्राप्त होता था 2. हस्तक्षेप. 3. मृत्यु-भोज 4. कह कर मरवा डाला 5. शिकायती

सुद ५ लगाय सुद ६ तांई असवारी जाळीयै वेरै विराजै है। और सुद ६ नु अजंट साहव पाली री तरफ गया है, अंगरेज आवै है जिण सु मिलण मुदै। तथा तषतगढ में जोड[1] है जिण रो करण बाबत।

म्हा सुद ६ लगायत सुद १२ असवारी जाळीये वेरै विराजै। और अन रो कोठार वागर री दरोगाई थांनवी हरीरांम परभुलालोत रै हुई, तागीरायत दिषणी आंनास्हा रा सु।

म्हा सुद १२ बुधवार। छावणी अेरणपुर री उकीलायत लोढा रूपचंद रै हुई, तागीरायत कुसलचंदोत भं० घेवरचंद हेमचंद रा भतीज सु।

म्हा सुद १४ सुकर। असवारी गढ दाषल हुई।

म्हा सुद १५ सन। असवारी गढ दाषल।

फागण वद १ रिव। असवारी गढ दाषल।

फागण वद २ ल० वद ५ तांई असवारी गढ ऊपर दाषल। और म्हाराजकंवार श्री बादरसिंघजी रौ व्याव झालामंड हुसी जिण री तयारी हुवै है।

फागण वद ५ जांमनगर सु श्री जाड़ेचीजी सा रै मायरा रौ सांमांन लेने गाजा-वाजां सु गढ ऊपर गया पैरावणी[2] वगेरे त्यारी चोषी करी। षरच मोकळो[3] जांमनगर वाळां नै लागौ। और ठाकुरजी श्री गंगसांमजी धांनमंडी में विराजै तिणां रै घड़ीयाळ थी नहीं सो व्यास चौथमल गुमांनीरामोत श्री हजूर में अरज कर दवायती लायो जिण सूं घड़ीयाळषांनो मिंदर री पोळ ऊपर सरु हुवौ। रोजगार वगेरे षरच तो मिंदर रा पोता सूं दिरीजै है पिण घणा घरां रै आराम हुवौ। कारण रात रा किणी लुगाई रै टाबर हुय जाय सो विळापुळ री षबर पड़ै नहीं[4] जिण सु इण घड़ीयाळ हुतां सुष हुवौ।

फा० वद ८। असवारी गढ़ दाषल और म्हाराजकंवार श्री बाघरसिंघजी झालामंड रांणावतां रै परणीजण नै पधारीया।

---

1. घोड़े व अन्य पशुधन के लिये रखी गई भूमि 2. लड़की के पीहर वालों की तरफ से वर और उसके सभी परिवारजनों को दी जाने वाली पोशाकें आदि की रश्म 3. बहुत 4. जन्म का सही समय नहीं जाना जा सकता था

फा० वद ११ । असवारी गढ दाषल, और घांणैराव रा ठाकुरां ऊपर हुकमनांवा री कबुलायत रु० ६१,०००) अषरै ईगसट हजार री षरी ठेहर गांवां रीवा पटौ लीषीजीयौ । और अजंट साहब तषतगढ कांनी गया था सो पाछा आज दिन १७ सु आया । तोपां रा तीर ११ छूटा ।

फागण वद १४ परभात रा फूलमेल में दरबार हुवौ नै प्हैला तौ जांमनगर सु जाडेचो केसरीसिंघ नै मुजरो हुवौ नै कुरब बांह पसाव हुवौ नै निजर हुई । नै ओळ षाली[1] कराय बैठा नै सीष दीवी, डेरां री । नै कोटा सु तुवर परतापसिंघ नै मुनसी घोड़ो १ ढाल १ भाला वगेरे लाया सो निजर हुवा । कुरब इकेवड़ो हुवौ । जीवणी ओळ में कंटाळीया रा ठाकुर नै बळूंदा रा ठाकुर बैठा ।

फागुण सुद १ । असवारी गढ दाषल है । फागण सुद २ असवारी जाळीयै वेरै ।

फागुण सुद ७ रवि । असवारी कायलांणै । और बडो साहब करनेल लेटीम साहब बादुर अजमेर कांनी सूं आबूजी जावता अठै आया सो मारफत उकीलां री श्री हजूर नै मालम कराई कै हमारी पेसवाई में श्री महाराज साहब बादुर तकलीफ नहीं करै, जिण सूं श्री हजूर सा बडा साहब रै सांमा पेसवाई में पधारीया नहीं ।

फागुण सुद ९ । श्री हजूर साहब बडा साहब सु मिलण नै सूरसागर पधारीया । दसतूर मुजब पेसवाई व सोषीया वातां घंटे १ तांई हुई । सरभरा माफक दसतूर रै हुई । पछै सुद १० पाछली रात रा साहब कूच कर आबूजी नै चढ गया । साथै अजंट साहब पोंछावण नै पण पाली तांई गया । तोपां रा तीर १६ छूटा नै अजंट साहब पाछा सुद १३ आया ।

फागण सुद १५ रवि । आज होळी, असवारी जाळीये बेरे विराजै ।

चैत वद १ बुध । इतरी आसांमीयां नै जोधपुर बुलावण रा षास रूका लिषीजीया जिण री विगत—

---

1. दरबार में बैठने का निश्चित तरीके से नियत स्थान

१ पोकरण रा ठाकुर
१ रायपुर रा ठाकुर
——
१ कुचांमण रा ठाकुर
१ नींबाज रा ठाकुर
१ रास रा ठाकुर

चैत वद २ पंडत सिवनारांयण अंगरेजी नवीस थौ, नै घर री सीष हुई। डावड़ी[1] रो व्याव करण मुदै सिरपा कड़ा, मोती, मोतीयां री कंठी, दुसालो नै व्याव रा नुषता ऊपर रु० १०००) अेक हजार दिरावण रौ हुकम हुवौ।

चैत वद ३ बुध। लोढा रूपचंद नै अैरणपुर री छावणी उकीलायत ऊपर जावण रौ सिरोपाव, कड़ा मोती दुसालो मारफत वाभा मोतीसिंघजी री हुवा।

चैत वद ५। असवारी जाळीये वेरै।

चैत वद ८। असवारी नाडैळाव, और सीळ सातम रौ मेळौ दसतूर मुजब हुवौ।

चैत सुद ४ सन। कोठार वागर जोसी सिवचंद नै मु० सिवचंद रै हुई, तागीरायत थांनवी हरीराम रा सुं। जोधपुर री हाकमी रेल बाबू रै मासवारी रु० ४५०००) हजार में हुई, तागीरायत भं० गणेसचंद रा सुं। जोधपुर री सायर[2] जोसी सिवचंद मु० पूनमचंद रै हुई। तागीरायत भं० बाधरमल सुं। परबतसर मारोठ दौलतपुरौ डीडवांणो री सायरां भं० बादरमल तालकै है। जिणां रै सांमल जठे री सायर जठै हाकमां री सांमलायत घलीजी।

चैत सुद ५ रवि। ठाकुर पोकरण रा वभूतसिंघजी पोकरण सुं आया, और फौजदारी अदालत मु० पूनमचंद तालकै हुई, तागीरायत पं० जोरावरमल रा सुं।

चैत सुद ८ भोम। श्री हजूर री असवारी राजम्हैलां दाषल है। और गौर[3] री बोळावणी रौ मेळो माफक दसतूर कदीम रै हुवौ। और अजंट अनफी साहब आबूजी नै चढीया।

चैत सुद १४ रवि। असवारी राजम्हैलां दाषल है। और सिं० सिवराज मेघराज रा नै श्रीजी सा म्हेरवांन हुय पग में सोना री वेड़ी इनायत हुई नै

---

1. लड़की 2. बाहर से आने वाले माल पर लिया जाने वाला कर 3. गनगोर

सिरपाव वाघो ने पायजामो, दुपटो, मदील, कड़ा मोती, नै मोतीयां री कंठी, सिरपेच ने व्याव रा नुषता ऊपर रु० १०००) अेक हजार दीया। नै सिवराज दूसरो व्याव करण नै गयो सो इण री लुगाई रै धोरांदार[1] गागरो अोडणो वगेरे पोसाष बषस षातरी फुरमाई।

चैत सुद १५ सोम। असवारी राजम्हैलां दाषल है।

वैसाष वद १ बुध। असवारी बीजोळाई वगेरे।

वैसाष वद २ लगाय वद ४ तांई असवारी भिड़क विराजै।

वैसाष वद ५। असवारी जाळीयै वेरै। वद ५ सोम ल० वद " (अमावस) तांई असवारी जाळीयै वेरै।

वैसाष सुद १ गुर। असवारी जाळीया वेरा सुं गढ ऊपर पधारीया।

वैसाष सुद २ सुकर। असवारी गढ दाषल। वैसाष सुद ३ असवारी गढ दाषल।

वैसाष सुद ४ ल० सुद ७ तांई असवारी गढ ऊपर दाषल।

सुद ८ ल० सूद ११ असवारी बाळसमंद। अौर सलेमावाद रा मेहतां री पधरावणी हुई रु० १०००) आसरै आया। ठा० पोकरण कुचांमण नै याद फुरमाया सो गया, उठै हीज जीमीया पछै मोसर दीयौ।[2] अेक घड़ी तांई रया।

वैसाष सुद १३ असवारी बाळसमंद सूं ताजीया देषण नै घासमंडी में मिंदर में असवारी पधारिया, तीजामाजी रा मिंदर में।

वै० सुद १४। मु० पूनमचंद री नवोड़ी जायगा नजीक, नै अरज कराई सो षातर सुं पधारीया। पूनमचंद रु० ३०००) निजर कीया नै पूनमचंद नै सोना री बेड़ी बषसी नै पछै भला आदमी २ नै कड़ा दुसाला दिराया।

वैसाष सुद १५ असवारी राजमैलां दाषल।

जेठ वद १ गुर लगाय वद ७ तांई असवारी राजमैलां। अौर ठा० षेजड़लो, चंडावळ, षींवसर आपरै घर नै चढ गया, कारण बिनां बुलायोड़ा आया था सो।

---

1. स्वर्णिम कोर से अलंकृत 2. मिलने का अवसर दिया

जेठ वद ८ भाटी गजसिंघ रौ पोतरौ किणी सबब सुं के पिसतोल षाय मर गयौ।

जेठ वद १३ असवारी राजमैलां। और सिवांणा री हाकमी भरतपुर रा मुसलमान रै हुई, तागीरायत षेरायत अली पठांण सुं।

जेठ सुद ५। असवारी राजमैलां। और रास रौ ठाकर परतापसिंघजी रास जावण री अरज कराय सिधायो।

जेठ सुद ११। असवारी राजमैलां। और पातसाजादी बिलायत में राज करै जिणां री बरसगांठ रा उछव री तोपां रा तीर ४४ छूटा, बड़ा साहब रा लीषणा सुं।

जेठ सुद १२। श्री हजूर री असवारी गढ दाषल।

जेठ सुद १३ बुध। श्रीजी साहबां री वरसगांठ रौ उछव चोषौ हुवौ बरस ५१ परवेस[1] तोपां ५१ छूटी मौसर सरबालै हुवौ नहीं।

जेठ सुद १५ सुक्र। असवारी गढ दाषल।

असाढ वद १ सन। श्रीजी री असवारी गढ में विराजै सो वद ६ तांई किलै विराजै, नै वद ६ रांणीसर पधारी।

असाढ वद ७। असवारी जाळीये वेरै। और ठाकुर कुचांमण रा आदमीयां रै नै म्हाराजकंवार श्री किसोरसिंघजी रा आदम्यां रै किणी बात उपर झोड़ म्हाराजकंवार रा नोहरा कने हुय गयौ। भाटा तरवारां चलीया दुतरफां रै लागी दुतरफी षेड़ भिली हुई पछै दोनु तरफां बरावर रया नै षेड़ बीषर गई।

असाढ वद ८ सुकर लगाय वद १० रिववार तांई असवारी जाळीयै वेरै। और पाली रौ हाकम..............षां पाली सुं आयौ नै विदीयासाळ दीवांणां रा कांमेती हाजीम्हैमद वगेर रा कनै गयौ सो आपस में किणी बात ऊपर तकरार बोल-बोल में बध गयो सो समाचार मालम हुवा कै कडाबीण[2] चली है, जद

1. प्रवेश 2. एक प्रकार की बन्दूक

श्री हजूर साहब जोसी हंसराज मु० पूनमचंद वगेरे नुं मेल बीच करायौ[1] नै पाली रै हाकम रौ डेरौ सूरसागर रसलदार रौ जठै कराय झोड़ मिटायौ।[2]

असाढ वद ११ ल० वद १२ असवारी जाळीयै वेरै विराजै। पछै मु० मुकनचंद लिषमीचंदोत अेक दिन री वेमारी आय हरीजी सरण हुवो[3]। श्री हजूर सुं रु० १०००) धरम पुन करावण मेलीया नै पांच हजार घर सुं फेर धरम कराया, नागोरी दरवाजै बारै आपरौ नोरौ है जठै, दाग दीयौ दांनो[4] आदमी थो।

अ० वद १३ गुर लगाय वद १४ सुकर। श्रीजी सायबां रो विराजणो जाळीये वेरै है।

असाढ वद " (अमावस) सन। श्रीजी साहवां रौ विराजणो जाळीये वेरै। और गुसांई उदैपुरीजी रै पोतो चेलो विजैपुरी नै उदैपुरीजी रौ कामैती गंगागिर रै आपस में गादी बैसण रौ तथा आजीवका बांटण रौ झोड़ घणा दिनां सुं है जिण वावत विजैपुरी गढ माथै जाय बैठो, अर डील वैमार थौ[5]। पछै श्री हजूर सुं फुरमायौ कै गादी रौ मालक तो बीजैपुरी रैसी नै आजीवका में बंट गंगागिर नुं ही दिरावणो सु बीजैपुरी नुं पालषी में बैसांण दुपटो मोतीयां री कंठी वगेरे दे सोजतीया दरवाजा बारै उदैपुरीजी री जायगा है जठै जोसी हंसराज नुं साथै दे पोंचाय दीयो। आ बात वद ७ तथा वद ८ री छै। पछै मर गयौ नै ठिकांणा रौ मालक गंगागिर रेह गयो।

असाढ सुद ५ लगाय सुद १४ तांई असवारी बाळसमंद विराजै, नै सुद १४ नै असवारी बाड़ीयै पधारीया।

असाढ सुद १० सोम नै मु० पूनमचंद नै दोढी याद फुरमाय[6] नै मोसर दे षातरी फुरमाई, बाळसमंद। नै असाढ सुद १२ मु० मुकनचंद लारै साढी बारै न्यात मिठाई रौ जीमण हुवौ नै असाढ सुद १३ नै मु० समरथमल लारै साढी बारै न्यात मिठाई रौ जीमण हुवो नै षांड मण '२००) दोय सौ दोनां ही जीमणां में,[7] नै असाढ सुद १५ रसालौं हुवौ नै श्री हजूर सुं निवाजस मु० पूनमचंद नै पालषी कड़ा मोती कंठी नै सिरपेच। नै मु० किसनचंद नै मोतीयां

1. बीच बचाव कराया 2. झगड़ा समाप्त करवाया 3. मर गया 4. समझदार
5. शरीर से अस्वस्थ था 6. ड्योढ़ी पर बुलाकर 7. दोनों मृत्यु-भोजों में

री कंठी दुपटो नै मु० कुनणमल नै कड़ा मोती कंठी दुपटो । नै मु० सिवचंद नै कड़ा मोती कंठी सिरपेच दुपटो । कामैती २ नै कड़ा दुसाला ।

संवत् १९२५ का विवरण

वणसूर जादुदांनजी री बही री नकल संवत् १९२५ री उतारी। सांवण वद............में डीडवाणां रा काजीयां रै आपस में झोड़ थौ तिण री दिवांणी अदालत में बोलाचाली हुई, तिण में आदमी २ तौ मर गया नै घायल आदमी ३ हुवा ।

सांवण सुद १ मु० पूनमचंद रै बेटा गुणेसचंद रै जैतारण री हाकमी थी सु तो तागीरायत हुई नै सिव री हाकमी पूनमचंद रै हुई । सिव री तागीरायत तो मुनसी हीरालाल चुनीलाल रै थी नै अेवज में दुवायती जैतारण री आई सुं हाल हुई नहीं । नै श्री हजूर साहबां री असवारी जाळीये वेरे विराजै, सा० सुद ५ तांई ।

सांवण सुद १४ नै अषेराजजी रै तळाव ऊपर सलेमावाद रा श्रीजी रौ डेरो है जठै जाबता सुं, श्री हजूर हींडोरा रा दरसण[1] करण पधारीया नै रु० १००) अेक सो भेंट कीया सुणीया । नै राषड़ीपूनम[2] रौ सिरे दरबार हुवो नहीं ।

भादवा वद १ । पाली री हाकमी रौ जमा षरच बंद होय नै बाला पनेसिंघ ता० हुई, तागीरायत नवाब री तरफ सुं रसालदार थौ तिण सुं हुई ।

भादवा वद २ । कुचांमण रा ठाकुरां रै छोटो कंवर सबळसिंघ रै घोड़ा ५० तौ पैली था नै अठै दोढी बंदगी में सासता रैता था[3] नै कुचांमण री सीष हुई तरै मोतीयां री कंठी दुपटो मदील निवाजस हुई ।

भादवा वद ४ । सिरदारां नै याद फुरमाय सो कुचांमण, पोकरण, रायपुर, नींबाज, रास बहुलो[4] आसांमी ६ नै मोसर हुवौ सो मुलक रा परबंद री मालम हुई[5] नै सिरदारां परबंद री कलमां[6] २४ री मालम कीवी ।

---

1. श्री कृष्ण के झूला झूलने के दर्शन 2. रक्षा-बन्धन 3. ड्योढ़ी पर लम्बे समय से चाकरी देता था 4. बहुत से 5. प्रबन्ध बाबत सूचना दी गई 6. प्रबन्ध सम्बन्धी नियम

भादवा वद ९ । उदैपुर रा पांवणा केसरीसिंघजी गंगारायजी रा जंवाई[1] जिणां नै सीष हुई । रेहणो घणौ घणौ हुवो ।

भादवा सुद १० । प्होर दोढ दिन चढीयां अजंट अनफी साहब रै अेवज कायम मुकांम[2] में बुरक साहब आबूजी सुं आया, सूरसागर दाषल हुवा ।

भादवा सुद ११ । देवझूलणी ईग्यारस नै रेवाड़ीयां श्री ठाकुरजी री तळाव रांणीसर पधारीया । तळाव में पांणी थो नै दूजा तळावां में पांणी थो नहीं तिण सुं । नै मेह री बड़ी पंच रही[3] नै काळ पचीसो जबर पड़ गयौ ।[4]

भादवा सुद १२ । असवारी जाळीये वेरे विराजै । जठै अजंट साहब वुरक साहब सूरसागर नै श्री हजूर दोढी सूं पांवडा ८५ बगी विराज पधारीया नै पाछा आवतां अेक बगी में भेळा विराज नै पधारीया नै डाकदर सांमो बैठो । साहब घड़ी २ नै पाछौ सूरसागर गया ।

भादवा वद १३ दिवांणी मोर मंगाय लीवी सु आगै मुनसी हाजीम्हैमद नै षालसाई मोर तो आगे संवत् १९२२ में दु० जेठ सुद ९ सूंपीजी थी नै नांवै परनांवै संवत् १९२४ रा भादवा सुद ८ नै हुई । नै नवाब पदवी नै दिवांणगी सो संवत् १९२४ रा काती सुद १३ नै नवाब पोकरजी बिलायती तरवार बाई[5] सु मारीयो गयो । तिण री तेकीकात अजमेर हुई नै नवाब रा बेटा म्हैमद अब्दुलषां रै कितरायक दिन सुं हुई सु हमें भा० सुद १३ जबत हुई ।

भा० वद १४ । श्री हजूर सूरसागर साहब सुं मुलाषात कर पाछा जाळीये बेरे पधारीया नै सरसता मुजब मुलाषात हुई ।

आसोज वद १४ नै बुरक साहब आबूजी नै चढीया ।

आसोज सुद ५ नै सिरदारां नै कायलांणै बुलाया, पोकरण कुचांमण वगेरे ।

आसोज सुद ११ नै सिरदारां नै घरां री सीष हुई । पोकरण, कुचांमण, रायपुर, नीबाज, रास, बळूंदो आसांमी ६ चढीया[6] ।

---

1. दामाद 2. स्थायी 3. वर्षा की कमी रही 4. संवत् 1925 में जबरदस्त अकाल पड़ गया 5. तलवार का वार किया 6. अपने गांवों को विदा हुए

काती वद.............नै देवरीयो तेजसिंघोत उदावत उदजी रो बेटो उरजनसिंघ पैला चलीयो[1] तिण रै षोळा[2] री अड़बी[3] थी सो हमे नींबाज वाळा आयां मतै अमल कर लीयौ नै राज रा आदमी घोड़ा जबती रा था तिणां नै क..........दिया। नै मुलक में सिरदारां फैल उठायो[4] साहब रा कैणा सूं मतै मतै गांवां में अमल करणो सरू कीयो।

काती सुद ५। दिवांणगी म्हैता विजैमल रै हुई, तागीराय मुनसी री नै पछै षालसै कांम थौ।

काती सुद ९। वागर कोठार सायर भं० भागचंद रै हुवा, तागीरायत मु० पूनमचंद, जोसी सिवचंद रा।

काती सुद १०। सोजत री कोटवाळी पैटी तंग हुई, तागीरायत मुनसी री.............।

काती सुद १५ असवारी जाळीये वेरे पधारी किला सुं, नै किलै आ० सुद १० पधारीया था।

मिगसर वद ५ आऊवै आय अमल कीयो सुणीयो।

मिगसर सुद २ गोढवाड़ री हाकमी पं० जोरावरमल रै हुई, तागीरायत जोधा भेरूंसिंघ री।

मि० वद ८। जैतारण री हाकमी पठांण अेमदअली अजमेर वाळा रै, तागीरायत मु० पूनमचंद री। अबदारषांना री दरोगाई छं० नंदलाल रै थी सो नंदलाल रै षोळायत[5] चोरी कर बासण[6] सोना-रूपा रा ले गयो थौ सो कैद कर पाछा मंगाया।

मिगसर वद १० किलादारी पंवार देवीसिंघ रै पाछी हुई। संबत् १९२३ रा वै० वद " (अमावस) जबत हुई थी नै षालसै रही इतरा दिन म्हैता विजैमल नै हरजीवण मुनसी ता० रा आदमी तीनां रा रैता सु पाछी आज हुई।

मिगसर वद १०। डीडवांणा री कोटवाळी ढ़ेलणी[7] रै थी सो भं० गुणेसचंद रै हुई। असवारी जाळीये बेरै विराजै।

---

1. मर गया था 2. गोद 3. रुकावट, बाधा 4. कानूनी व्यवस्था भंग कर दी 5. गोद लिया हुआ पुत्र 6. बर्तन 7. महाराजा की एक प्रमुख दासी का नाम

मि० वद ११ अजंट साहब बुरक जसोल नै चढ गया डाक में, नै पाछा मि० वद १४ आयां। मि० सुद १ षास रुका लिषीया, सिरदारां नै बुलाया अतरां नै मु॑० पूनमचंद साथै मेलण नै पूनमचंद नु॑ आज चढायौ। थांवळा री हाकमी रौ जमा-षरच बंद थौ सु पाछी दुवायती[1] हुई काजी नै नूरै।

मि० सुद २ अदालत दिवांणी तो पठांण म्हेमदहुसेनषां अजमेर वाळा रै हुई, तागीरायत मु॑० पूनमचंद री। फौजदारी अदालत पठांण अबदुलहकीम रै हुई आद री तागीरायत मु॑० पूनमचंद री। अजंट री उकीलायत व्यास धनरूप रै हुई जैसलमेर रा रै, तागीरायत जोसी सीवराज हंसराजोत री मिगसर सुद ४।

मि० सुद ५ अजंट बुरक साहब अजमेर नु॑ चढीयो।

मि० सुद ७ मारोठ परवतसर री हाकमी जोसी रांमनारांयण रै हुई, तागीरायत पठांण हबासषां री।

मि० सुद ७। कोठार वागर री पोतदारी थांनवी भैरा रै हुई।

मि० सुद ७। अबदुलाषां रौ बेटो फैजुलाषां रौ व्याव हुवौ सो वडा म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी, परतापसिंघजी, किसोरसिंघजी सु तीनू ही पाळा जळेब में पधारीया,[2] वडा हगांम सु॑ व्याव हुवौ।

मि० सुद ८ रवि। असवारी जाळीयै वेरै विराजै।

मि० सुद ९ सोम। असवारी जाळीये वेरे विराजै। और गांव मोगड़ो श्री जाड़ेजीसा रै पटै, तिण में आऊवै वाळां रा घोड़ा आय, अमल कर लियौ,[3] सो पाछी मदत जोधपुर सू॑ पूगी सो काढ दिया[4]।

मि० सुद १० लगाय सुद ११ बुध। असवारी जाळीये वेरै विराजै। और म्हेतो विजैमल दीवांण आसोप छुडावण वासते गयौ सो बारोटीयां रा घोड़ा बेली बड़ळू तांई सांमा आया तरै बड़लू में परा गया, बारोटीया पाछा आसोप गया।

---

1. स्वीकृत 2. विवाह के जलूस (निकासी) के अग्रिम भाग में पैदल चले 3. अधिकार कर लिया 4. निकाल बाहर किया

मि० सुद १२ गुर लगायत सुद १३ सुकर सुधा दिन २ असवारी जाळीये वेरै विराजै।

पोस वद १ सोम। असवारी जाळीये वेरै विराजै और म्हेतो विजैमल दीवांण बड़लू सुं आयो सो अजमेर वडा साहब नै मेलसी।

पोस वद २ लगाय वद ४ तांई असवारी जाळीये वेरै।

पोस वद ५। असवारी जाळीये वेरै और फळौधी री हाकमी नाजर ईलाईबगस तालकै हुई, तागीरायत लाला बलवंतसिंघ री। बलवंतसिंघ रै कुल बरस.........म्हीना.........दिन.........रही।

पोस वद ५ सुकर और श्री हजूर सायबां री तरफ सूं दिवांण विजैमल जोसी हंसराज सिं० समरथराज भं० बादरमल पिंडत सिवनारांयण बडा साहब तथा अजंट साहब कने अजमेर म्हेलिया। मुलकी कांम सिरदार बारोटीयां[1] गांवां में अमल मतै-मतै कर लीयो तीण रै जबाब सुवाल मुदै। और धांन रो हासल रादारी रो बंदोबसत करावण वासतै- बडो साहब अठा सुं बुलाया सो म्हेमदहुसेन अर व्यास गौरीदत्त जेसलमेर रौ अै ही अजमेर गया।

और बूंदी रा रावराजा रांमसिंघजी रौ कंवर नै श्री वडा हजूर मांनसिंघजी रा दोईता भींवसिंघजी बूंदी में धांम हुवां[2] री षबर अठै आई थी दस बारै दिनां पेली तरै नोबत २ टंक बाजी नहीं। लोकीक अफवत[3] में बात है कै जैहर हुवो[4] सो हाल निरणै नहीं। अर रावराजा रांमसिंघजी राज त्याग दियां री पिण सुणीजै है अर लारै संतांन पिण है नहीं सो देषीजै[5] गादी रो मालक कुण हुवै, सो बडो साहब जाय बंदोबसत करसी।

पोस वद ६ सोम। असवारी श्री हजूर री दिन २ वद ७ तांई नाडैळाव रही। और मुं० पूनमचंद मुकनचंदोत आऊवै ऊपर फौजबंदी कर गयौ थो सो षरची बाबत तगादो सिपायां कीयो तिण सुं पाछौ आयौ।

पोस वद ८ सोम लगाय वद १० बुध सुधा दिन ३ असवारी बाळसमंद। और अेक बात नवी हुई कै गांव.........रो मांगळीयो बाप बेटो वरस १६ रौ

---

1. असन्तुष्ट आतंकवादी जागिरदार 2. स्वर्गवास होने की 3. अफवाह 4. जहर दिया गया 5. देखी जाएगी

सो २ सिपाई..............रा वासी भाड़ै किया थो ऊँठ, सो मांगळीया कनै दस-वीस रौ माल थौ सो लोभ रै मुदै मांगळीया रा छोकरा नै दरवाजा बारै तरवार छूटीयां सूं मांर नांषीयो अर जमी में गाड दीयौ। पछै चावा हुय गया[1] सो चोतरा में सीपाई कैद में है।

पोस वद ११ गुर लगाय सुद ६ तांई असवारी बाळसमंद, नै सुद ६ लगाय सुद १५ तांई असवारी छैलवाग।

पोस सुद ७ सोम। राव वागो चल गयौ।[2]

पोस सुद ११। अजमेर सूं मुसायब पाछा आया नै सुद १२ नै छैलवाग मुजरो हुवौ।

पोस सुद १३। धांन रौ हासल सब कर माफ रो कागद रुका लिषीजीया नै अदबर[3] तौ काती में छूट हुवो थौ नै हमें सब कर छूट हुवौ मि० में नैं म्हा वद १ सूं सब कर छूट असाढ तांई।

पोस सुद १५ नै बडो साहब कीटन नै अजंट बुरक साहब आया, नै श्री हजूर सांमा षधारीया सेषावतजी रा तळाव तांई। नै श्री हजूर गढ दाषल होय छैलवाग पधारीया नै साहब बाळसमंद दाषल हुवौ।

म्हा वद १ साहब वडौ नै अजंट छैलवाग आया, मुलाषात सारू।

म्हा वद २। श्री हजूर बाळसमंद सूं मुलाषात सारू पधारीया नै छैलवाग सूं, नै सिरदार ५ आया पोकरण, कुचांमण, नीबाज, रास रा आया, साहब षत[4] दीयौ तिण सुं।

म्हा वद २ नै दरबार हुवो फतैमेल में। सिरदारां नै पैलां कुरसीयां रौ दरबार हुवौ तिण री विगत..............तागीरायत म्हेता विजैमल री जैमल रै काती सुद ५ नै हुई सु माह ३ रही।

दफतर म्हेता हरजीवण रै हुवौ तागीरायत भं० बाधरमल री वरस........ मास........दिन........रही।

---

1. तथ्य प्रकट हो गया 2. मर गया 3. आधा 4. बुलावे का पत्र

दिवांणी अदालत सिं० समरथराज रै हुई, तागीरायत पठांण..........।
फौजदारी अदालत म्हैता विजैमल रै हुई। अै चांरू कांम[1] सुद ५ दु० नै हुवा नै अजंट साहब री सला सूं।

म्हा सुद १० बडो साहब कीटन साहब अजमेर नै चढीयो पाली होय नै। अजंट साहब अठै रेह्या कांम रा सलीका सारू[2]।

फागण वद ३ सन। बाळसमंद मातमपोसी, तिण री विगत—

१ सिवांणा रो गांव मोकलसर छतरसिंघ री
१ नीबलांणै वाळा
१ ईडर रा सिरायत जोधा अजीतसिंघ री हमीरसिंघ रै हरगांव मीडासण
१ गांव लापोळाई मेड़तीया छत्रसाल अमरसिंघोत
१ गांव नवै मेड़तीया परतापसिंघ सिवदांनसिंघोत री
१ गांव भया रा मेड़तीया सुरजभांण
१ गांव भंवरांणी मंडला लालसिंघ नवलसिंघोत

---

७ सात बाळसमंद रा डेरा हुई।

फागण वद ४ श्री हजूर री असवारी गढ़ दाषल हुई।

फागण सुद ८ अजंट साहब मीसी[3] सांमो गांव वर तांई गयौ नै पाछो चै० वद २ नै जोधपुर आयौ।

फा० सुद १५ नै होळी रौ सिरे दरबार हुवौ। पांतीयो हुवो नै जीमीया।

चैत वद ७ नै सीवांणा री हाकमी भं० हरनाथ रै हुई, तागीरायत भरतपुर रा मीया....................री। सोजत री हाकमी मु० बुधमल रा बेटा कुनणमल रै हुई, तागीरायत षासी पेटी।

फळोधी री हाकमी भं० अचलदास रा बेटा रै हुई, तागीरायत षालसे नाजर ईलाईबगस री। जोधपुर री सायर भं० अमीचंद रै हुई, पैला भागचंद सुं षालसे जोसीजी ता० हुई थी सु पाछी हमें इण रै हुई।

जोधपुर री टकसाळ पं० नथमल रै हुई, तागीरायत सोलंषी अना री। अबदारषां नै पंवार लालकरणै..............हुई, तागीरायत नाजर हरषा री।

---

1. चार ही पदों के परिवर्तन का कार्य 2. सुचारू प्रबन्ध के लिये 3. पत्नी ?

चैंत वद १४ कीलीषांनो पंवार..............तागीरायत नबाब ता० री ।

प्र० चैंत सुद १ दौलतपुरा री हाकमी..............रांम रै हुई तागीरायत सैषजानां री । दरोगाई गोपालराव..........नंतरांम रै हुई ता० प्रो० मूलराज री प्र०........वद १२ ।

प्र० वैसाष वद ११ नै वडो साहब कीटन अजमेर सूं जोधपुर आयौ प्र० वद २ नै पाछौ आयौ सु आबूजी चडीयो[1] ।

संवत् १९२६ का विवरण

जोसी आईदांनजी री बही री नकल संवत् १९२६ री । सांवण वद ७ श्री हजूर साहवां री असवारी दिवांणगी हंसराज सुं मोकुब हुई[2] सो दूजो दीवांण करणो । तथा सिरदारां गांव दाबीया सो छुडावण वगेरे कांम करणा तिण री सला वडा साहब अजंट साहब सुं करणी तिण वासतै आबूजी पधारीया । मास २ आसरै आबूजी ऊपर विराजीया रया । दिवांणगी मरदांनअली नुं देण री सला जगाय आसोज सुद में आबूजी सूं नीचा पधार, जोधपुर पधार, दिवांणगी मरदांनअली नुं दीवी ।

और समत छाईसो लागतां व्रषावां[3] तो मोकळी हुई जिण सु धांन घास मोकळो हुवा परंत तीड[4] रीषण फाको सारे मुलक में घणौ हुवौ तिण सुं धांन घास षाय गयौ, तिण सु काळ पचीसा विचै ईजाफै काळ[5] फेर दूजो लगतो पड़ गयौ । सो पचीसा में तो रुपीये अेक रो धांन पांच सेर '५ कणक धांन सिंध री तरफ सुं आवतौ नै छाईसा में धांन अेक रुपीया रो स्वा दोय सेर '२। मिळीयो । घी रु० ८४) चोरासी रौ मण अेक विकीयौ । लोक माल वेचण गया सो मारग में जावता अन-अन करता मर गया भूषां मरता । नै लारै रया सो पिण मुवा जिण सूं मुलक रा गांवां में वसतीयां विषर गई, गांव डरावणा लागै, सो लिषण ज्युं नहीं ।[6]

षास जोधपुर में दसत उलटी रा रोग सूं आदमी असाढ, सांवण, भाद्रवा तांई घणा मुवा ।

---

1. आबू को रवाने हुआ 2. जब्त कर ली गई 3. बरसातें 4. टिड्डी 5. संवत् १९२५ से भी भयंकर अकाल 6. वीरान गांव डरावने लगते हैं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता

भादवा वद ५। नाग पांचम रौ मेळो ठीक-ठीक भरीजीया, काळ रै मुदै।[1]

श्रासोज सुद……। श्रीजी साहब श्राबूजी सूं पधारीया।

श्रासोज सुद ६ नु दीवांणगी मरदांनश्रली नुं सिरपाव हुवो, तागीरायत जोसी हंसराज री। श्रौर रावण मारण रौ मेळो दसतूर मुजब हुवौ।

काती वद……। दीवाळी रौ उछव सरसतै मुजब,[2] नै समै मुजब, कारण कै तेल '२ तथा '१।। बिकै।

चैत वद ८ सीळ रौ मेळो कागै हुवो, नै घुड़ला रौ मेळो श्राथण रा[3] दसतूर मुजब हुवौ।

सुद ३ गिणगोर रौ मेळो मांयलैवाग सदामंद मुजब हुवो। चैत सुद ६ बोळावणी रौ मेळो सरसते मुजब हुवौ।

जेठ सुद १३ श्रीजी साहबां रौ उछब सदामद मुजब हुवो।

संवत् १९२७ का विवरण

जोसी श्राईदांनजी री बही री नकल उतारी संवत् १६२७। श्रासोज सुद १०। विजैदसमी रांवण मारण रौ सदामंद मुजब हुवो।

काती वद " (श्रमावस) री दीपमाळका सदामंद मुजब, श्रौर श्रीजी साहब लाठ सायब श्रजमेर में राजावां नै मुलाकात वासते बुलाया सो पधारीया, जठै उदैपुर रा रांणाजी पिण श्राया था। जठै लाठ साहब रौ दरबार हुवौ जठै बैठक में किणी सबब सुं हरकत निजर श्राई[4] तरै हजूर लाठ साहब रै दरबार में नहीं पधारीया। तिण सुं उदैपुर वाळां री…………रूण[5] उणां री मदत राषी। तरै हजूरसा षांनगी मुलाकात रांणेजी सुं दो तरफी हुई। हजूर उणां रै डेरै पधारीया नै रांणाजी हजूरसा रै डेरां श्राया। दो तरफी दोसती री मुलाकातां हुई, रसाई रही।[6] पछै हजूरसा तौ श्रजमेर सूं कुच कर दरकूचां जोधपुर पधार गया। पछाड़ी म्हाराजकंवार रया सो मुलाकात कीवी।

---

1. श्रकाल के कारण 2. सामान्य परिपाटी से 3. संध्या समय 4. बैठक की व्यवस्था में कुछ श्रवांछित परिवर्तन ध्यान में श्राया 5. रुख 6. मधुरता रही

मिठास री वात हुई । परंत अंगरेजां रै मन में षटको जरा रयो कि जोधपुर रा म्हाराज तषतसिंघजी हमारी कचेरी में दरबार राजावां का हुवा ज्यां नही आये सो इसमें हमारी बेअदबी कीवी ।

पछै लाठ साहब चीठी याद दासत रै तेरीफ लिषाई—जोधपुर का म्हाराज तषतसिंघजी उदैपुर का रांणाजी की बरावरी कीवी चाहे सो किस तरै करेंगे, जिण री कलमां लिषी । विगत······ सन १६१६ ईस्वी से

१ कलम पैली·········· कै उदैपुर के षानदांन में सारा रजवाड़ां में पुराना गिणीजै है नै सुरजवंसीयां[1] में उदैपुर पाटवी है ।

२ कलम दूजी··········दिली के पातसाहावां नै उदैपुर वाळां लड़की नहीं दीवी । नै जोधपुर वाळां दीवी जिण सु ।

३ कलम तीजी··········लिषावटां में घोड़ा रजपूतां रा आषर[2] उदैपुर वाळां नै जोधपुर वाळा लिषै है ।

४ कलम चौथी··········अंगरेजी सिरकार की अमलदारी हुई जद सु सिलांमी री तोपां उदैपुर वाळां री तो उगणस १६ छूटै है अर जोधपुर वाळां री सतरै १७ छूटै है ।

५ कलम पांचमी··········सन १६३२ में लाठ साहब अजमेर आया था जद उदैपुर वाळां री बैठक रो सिरो[3] मुकर हो गयौ अर दफतरां में पिण लीषीज गया, नै सिरकार से लिषावट पिण कर दीवी थी कै आगे सु सिरो औ कायम रैसी, सो इण दलीला सु जोधपुर वाळा रांणाजी की बराबरी नहीं हुय सकै ।

६ कलम छठी·········· लाठ साहब अजमेर दाषल हुवा उण दिन जोधपुर म्हाराजा वडै साहब कै डावी मिसल चलणा कंबूल कर लीया । षांनगी मुलाकात रांणेजी के पीछै मुलाकात कर लीवी तो फेर पछै दरबार में रांणाजी के हेटै[4] बैसण रो कांई उजर रयो । सु लाठसाहब वड़ी बेअदवी कीवी ।

म्हा वद १ । षास हवालो जोसी गंगावीसन हंसराज रा भाई तालके थो सु मु० तिलराज लारली जमाबंदी रा आंक सु स्वाया रु० देणा कर ईजारे

1. सूर्यवंशी 2. पत्र में जोधपुर वाले उदयपुर राणाजी को ऐसा लिखते हैं कि यहां जो भी घोड़े रजपूत हैं वे आपकी चाकरी के लिये तैयार हैं 3. कायदा 4. निचले स्तर पर

करायां। पछै म्हांमिंदर रा कांमैती मु० जसरूप रा पोता फेर रुपिया बद[1] ईजारै तीन वरस रौ करायौ।

चैत वद ७ तथा ८। सीळ रौ मेळो कागै तथा गुडला रौ मेळो सैर में सदामंद मुजब हुवो।

चैत वद १३ तथा १४। मंडलेश्वरजी रौ मेळो सदामंद मुजब हुवो।

चैत सुद ३। गिणगोर नै सुद ६ री बोळावणी रा मेळा गुलाबसागर मांयलेवाग हुवा।

चैत सुद १०। वडा साहब री उकीलायत भंडारी हेमचंद रै हुई, तागीरायत जोसी हंसराज री।

वैसाष वद १४। जोधपुर री हाकमी कविराज मुरारदांन तालकै हुई, तागीरायत मुनसी............।

वैसाष सुद ३। आषातीज रौ उछव सरसतै मुजब हुवौ।

वैसाष सुद १४। नरसींग चतुरदसी सरसते मुजब हुई।

जेठ सुद १३। श्री हजूर साहबां री सालग्रे[2] रौ उछव सदा मुजब हुवो।

असाढ वद............। कोठार री दरोगाई जोसी रांमनारांयण सींभुदतोत रै हुई, तागीरायत............।

संवत् १९२८ का विवरण

जोसी आईदांनजी री वही री नकल संवत् १९२८ री। सांवण सुद १५। राषड़ी पूनम रौ उछव सरसते मुजब हुवो।

प्रथम भादवा वद ५। नाग पांचम रौ मेळो दसतूर मुजब चोषो हुवो।

दुतीक भादवा सुद ४। गणेसचौथ रौ मेळो सदामंद माफक हुवो।

दुतीक भादवा सुद ७ मंगलवार। जैसलमेर रौ व्यास धनरूप रै अजंट री उकीलायत संवत् १९२६ में थी तरै आसोपा देवीलाल तालकै रो हलकारो

1. बढ़ा करं　2. वर्षगांठ

जाट नथीयो जिण धनरूप रा रु० १०००) हजार अेक री थेली उचकाय ले गयो री आबत हुई[1] तरै चोतरे कैद कराय दीयो, सो कोई दिनां सु देवीलाल हिमायती कर छुडाय दीयो, नै पाछो संवत् १९२८ में आबूजी मेलीयो, तरै आबूजी सु आय धनरूप ऊपर तरवार रा घाव २ लगाया। टांका आया। परंत दूजे दिन सुद ८ नु धनरूप चल गयो।[2] नथीयो तरवार मार नाठो[3] जिण लारै बार चढी सु गांव रोयठ सु पकड़ लाया, जद आबूजी सु वडा सायव रौ हुकम आयौ कै इस कु फांसी दे मरवाय डालो। तरै दूजा भाद्रवा वद ४ अदीतवार नूं जालोरी दरवाजा बारै हाथी-नींब रै फांसी बांद बुरी तरै मरायो, कीवी जेड़ी पाई।[4]

भा० वद ५। नागोर री कोटवाळी लोढा रंगरूपमल रै हुई, तागीरायत ……………री। और वागर नै जोड व्यास चौथमल गुमांनीरांमोत रै हुवा, तागीरायत………… ।

भा० वद ९ गुर। श्री हजूर सायबां री असवारी मय मुसायब कायलांणा सु परबारा झालामंड मिजमांनी हुई। पछै पाली चांणोद हुय सुद ४ छावणी अेरणपुर अजंट साहब कने कांम रै मुदै पधारीयां री विगत नीचे मांडी जासी।

भा० वद ९ सुकर। पचपदरा री हाकमी नाथावत व्यास जेठमल रै हुई, तागीर दिवांण ता० री। और सांभर री हाकमी जोसी नारांयणदास रै हुई पण सनद तो ठेठ पूगी नहीं सो मोकूब रेहे गई, सो मुसलमांन म्हैमद हासम रै सांभर नै नांवा री दोनूं हुई।

और श्री हजूर रै नै अजंट अनफी साहब रै बातां हुई कै जाळोरवाटी[5] का बंदोबसत करो। दूजी आ वात कै लाठसांहब का दरबार अजमेर में हुवा था जद बैठक (बाबत) तकरार हुई थी सो मिटावो अर मुलक का बंदोबसत करो। वगेरे तकरार री बातां कीवी। जद फुरमायो कै ठीक है आबूजी हालो सो बडा साहब रै रूबरू सारी बात रौ बंदोबसत हुसी।

आसोज वद……। श्री हजूर साहब आबूजी पधारीया जनांना स्हैत[6]। सो आबूजी ऊपर कोई दिन रया। कितरीक बातां रा उतर पड़उतर हुवा। दिवांण बदलण वगेरे सफाई री वातां हुई।

---

1. पता चल गया 2. मर गया 3. भागा 4. जैसा कार्य किया वैसी सजा उसको मिली 5. जालोर का इलाका 6. रानियों सहित

आसोज सुद ३ जनांना सिरदार आबूजी सूं पधार लछरायजी री बावड़ी डेरा बाग में हुवा नैं सुद ४ गढ़ दाषल हुवा ।

आ० सुद ६ । श्रीजी साहब आबूजी सूं पधारीया सिरे वजार होय बगी में विराजीया । वाभा मोतीसिंघ सोभावत केसरीसिंघ बगी में भेळा, सो राजमैलां दाषल हुवा । सिलक रा तीर २० छूटा । डोड महीना सूं पाछा पधारीया ।

और जैपर महाराजा रांमसिंघजी री निजर में कसर पड़ गई थी[1] सो कारी कराई[2] तिण सुं अेक आंख सुं सूज़ण[3] लागो, तिण री खुसी अठै कीवी । नैं म्हाराज कंवार छावणी में सिलकां कराई ।

आ० सुद ७ । षबर आई कै नीबाज रा ठा० रौ काती मु० फतैमल रौ बेटो जवांनमल असवारी में[4] आबूजी साथै थो नैं इण ऊपर ठाकुर री कबुलायत हुई थी, तिण मांयला रुपीया बाकी था जिण मुदै नीबाज रा घोड़ा आय पकड़ नीबाज ले गया । सो असवारी में थो तिण नुं पकड़तां बेअदबी री बात हुई है ।

आसोज सुद ८ सन । और श्री म्हाराजकंवार श्री जसवंतसिंघजी री आज सालग्रेह रौ उछव छावणी में हुवो सो म्हाराजकंवार गढ़ ऊपर पधार श्री हजूर साहबां नुं छावणी पधराया । खुसी कीवी । पछै रात रा पाछा गढ़ दाषल हुवा ।

सुद ९ अदीत । और आज रावण मारण रौ मेळो दसतूर मुजब हुवौ । और श्री हजूर हाती विराजिया, षवासी में किसनगढ रो राजवी मंगलसिंघ बैठा ।

सुद १२ अजंट अनफी साहब आबूजी सुं आया ।

काती वद ३ । और श्री हजूर रात रा राजमैलां सुं कवीराज मुरारदांन री हवेली रै बारणे मारग व्हेतां पधारीया सो बारणे ऊभा रया । मुरारदांन सुं बातां सोषीया घड़ी १ तक करी, पांच सात घोड़ा साथै हा ।

---

1. नजर कमजोर हो गई 2. उपचार कराया 3. दीखना 4. महाराजा के अमले में शामिल

काती वद ५ गुरवार। दिवांण रौ कांमैती बजाज फतैमल प्रो० तेजकरण षजांने पोतदार नै षजांना रौ दरोगो भं० बादरमल नुं अटकाया[1]। पछै बादरमल तो हाजर जामन दे[2] घर आयो, नै बाकीकां नुं मांयलैबाग मोतीसिंघजी कने मेल दीया। फतैमल रौ सगो सोभागमल नुं पिण पकड़ीयो।

काती वद ६ सुकर। और दीवांणगी जवत हुई नै मोर डबी मंगाय लीवी। इण दीवांण मरदांनअली दिवांणगी रौ कांम वेकायदे कीयो। ओधा षीजमतां विनां मालम कीयां[3] नै विनां दफतर री नकल सूं घरू कागदां सूं दीया। षजाने जमा षरच बराबर कराया नहीं, घरू फायदो कीयो, जिण सूं सिरकार में कुफायदो[4] घणौ पड़ीयो।

और गांव तिंवरी घणा दिन सूं षालसे थी सो सिरदारां रा घोड़ा जाय प्रोयतां रौ अमल अफरातफरी में कराय दीयौ नै राज रौ हवालदार थो तिण नुं काढ दीनो री मालम हुई। तरै फौज तोपां दे सिं० समरथराज रौ भाई छगनराज नै किलेदार आसकरण री तरफ सूं भलो आदमी तोपां लेजाय मांडी।[5] तोपषांनो छूटो तरै मांय सिरदारां रा घोड़ा था सो नीसर गया नै फतै हुई। पाछो अमल राज रौ होय गयौ।

काती वद १४ तथा वद " (अमावस) री दीपमाळका री रूसवाई[6] देषण श्रीजी साहब राजम्हैलां सूं हाथी विराजीया। षवासी में ठाकर कंटाळीया रा। सो सिरे बाजार होय आतसबाजी छूटतां गढ दाषल रात घड़ी ४ गयां हुवा। गढ़ ऊपर सिलक रा तीर १०० छूटा।

काती सुद ३। प्रो० तेजकरण अटकाव में थो तिण री सफाई हुय सिरपाव दे सीष हुई। षजांना री पोतदारी साबत रही।

काती सुद ७ सनीसर। अजंट अनफी साहब जैसलमेर री त्रफ गयौ थो सो आज पाछो आयौ।

काती सुद ११ बुध। असवारी तिंवरी पधारीया। तिंवरी रा लोकां अजंट साहब नुं अरजी दीवी कै सिरदारां रा घोड़ा अठै आया सो म्हांरा घर लूटीया, जिण वासतै पधार रयत नुं षातर तसली कीवी।

---

1. कैद किया 2. हाजिर होने की जमानत देकर 3. बिना सूचित किये 4. हानि
5. तोपों का मोर्चा लगाया 6. रोशनी

मिगसर वद ११ सुकर। और कविराज मुरारदांन नुं सिरदारां नुं अठै बुलावण मुदै श्री हजूर मेलीया, षास रूका दे नै। राज रै कांम री दिवांण सांमल रेण वासतै[1] रायपुर वगेरे नै पोकरण भाटी मांनजी नुं मेलीयो।

मिगसर वद १२। जैपुर री उकीलायत पं० जोरावरमल रै हुई। नै सिव री हाकमी सिं० गुमानमल रै हुई।

मिगसर वद " (अमावस) रो सूरज ग्रहण हुवो।

मि० सुद ५। अजंट साहब मालाणी री तरफ चढीया।

मिगसर सुद १३। जोसी हंसराज रौ वडो भाई सिवलाल लारै जीमणवार लाडू नै २) रु० मुडके[2] दिषणा हुई। सो श्री हजूर पिंडां वीध्यासाळ पधार हंसराज रा बेटा सिवराज षोळै तिण नुं सिरपाव, कड़ा, मोती, मदील, पालषी वगेरे दीया, षातर कीवी। और मगरायजी रा वाभा जवांनसिंघजी मनोरपुर परणीजण गया था सो हाथी रै हौदे बैठ आया।

पोस वद ३। ठा० पोकरण षास रूको गयो थो सो आया।

पोस सुद ४। ठा० कुचामण षास रूका सुं आया। ठा० रायपुर रा पिण आया, षास रूका सुं।

पोस सुद ६। ठा० रीयां रा षास रूका सुं आया। और सारा सिरदारां नुं श्री हजूर में मुजरो हुवौ जद फुरमायौ कै थे सारा सिरदार ने दीवांण बगसी वगेरे सांमल बैस संवत् १९२५ में जमीदारां गांव अफरातफरी में दाबीया है सो फैसलो कर गुगदो[3] मीटाय दो। थे अरज करसो सो म्हांनुं मंजूर है। जद सिरदारां अरज कीवी कै जोसी आसकरण मुसदीयां सांमल रेण रो सुणीजै है सो इणां सांमल म्हांरी सला नहीं रैसी, कारण कै इणा रो घर जिदी है। तरै फुरमायो ठीक है।

और अजंट साहब री सला सुं श्री बाईजी रो तळाव में पांणी नहीं ठेरे है तिण रौ बंदोबसत करणो, सो फुरमायौ कै जरुर करणो, सो बात पकी ठेरी है। और गुमनांम अरजी अंगरेजी हरफां सुं लिष बिलायत लंदन में पातसाहजादी

---

1. दिवान के साथ रह कर कार्य करने हेतु 2. प्रति व्यक्ति 3. झंझट

री हजूर में मेली कै मुलक मारवाड़ का सिरदारां की षातर से महाराजा साहब कु ं बडा साहब वा अजंट साहब हर सूरत से दबाय रषा है अर सरबरा वगेरे बेवाजवी षेचल[1] कर रषा जिससे मारवाड़ बरबाद हो रही है, सो सिरकार वंदोबसत नहीं करेंगे तो जिसकी बदनांमी सिरकार अंगरेजी ऊपर होगी। तिका अरजी विजनस बिलायत री कौंसल सु ं लाठसाहब नै आई। लाठसाहब बडे साहब रेजीडंट कने मेली, बडे साहब अठै अजंट साहब कने मेली सो अठे बंची[2] सो सारा अचंभै हुवा[3]।

म्हा वद १। षबर लागी कै ठा० नीबाज ऊमर वरस ३३ में मांदगी पाय पो० सुद १४ नींबाज में चल गया। लारे बेटो नहीं, सो गुलाबसिंघजी री ठकुरांणी नै रास रा ठाकुर परतापसिंघजी री सला तो सिवसिंघ सांवतसिंघोत रा बेटा जोरावरसिंघ नु ं लेण री है नै कांम आगे मु० बषतावरमल फतैमल करता हा ज्यु ं करीयां जावै नै जोसी मूलचंद नू ं मोकूब कर देण री सला जमाय अठै श्री हजूर में मालम कराय देण री अरजी लिष मालम कराय दीवी। तरै श्री हजूर साहबां पिण फुरमायो कै ठीक है ठाकुरांणीयां राजी हुय नै लेवै[4] सो भली कर लेवै, म्हांनु ही मंजूर है। पछै जोसी मूलचंद उदम-उपाव षेवट श्री म्हाराजकंवार सु ं तथा बड़ा साहब बुरक साहब सु ं अजंट साहब सु ं तथा ठाकुर पोकरण कुचांमण रायपुर तथा आगेवै पाटवै रा ठाकुर बषतावरसिंघ सिवनाथसिंघोत वगेरा सु ं षेवट कर[5] सिवसिंघ रा छोटा भाई लिछमणसिंघ रा बेटा छतरसिंघ नै षोळे लेण री वात कीवी। ठा० रायपुर, पोकरण रा ठा० रौ कंवर गुमानसिंघ नै कुचांमण री तरफ सु ं सवाईसिंघ नींबाज जाय सिवसिंघ रा बेटा नु ं उथाप[6] लिछमणसिंघ रा बेटा छत्रसिंघ नु ं षोळै लीयो। सो आ बात श्री हजूर री मरजी स्वाय[7] नै सरसतै सवाय हुई है। ठाकुरांणी नै रास रा ठाकुर री कीयोड़ी बात पार पड़ी नहीं। तरै रास रो ठाकुर नीबाज सु ं चढ आपरे घरे उदास हुय गयो।

म्हा वद ५। पाली री हाकमी मु० लिषमीचंद रा पोता समरथमल रा बेटा रे हुई, तागीरायत म्हैता हरजीवण रा बेटा री और टंकसाळ री दरोगाई व्यास फोजीरांम रै हुई तागीरायत पं० नथकरण री।

---

1. अनुचित दखल 2. पढ़ी गई 3. आश्चर्यचकित हुए 4. अपनी रजाबंदी से गोद लेती है 5. प्रयास करके 6. गद्दीच्युत करके 7. इच्छा के विरुद्ध

ग्रौर म्हाराजकंवार श्री जसवंतसिंघजी काती में परणीजण नु जैपुर कांनी चंद्रावतां रे व्याव कीयो । पछै नरसींगगढ पधार परणीया व्याव दुतरफो ठीक हुवो, पड़दायतजी नांनरायजी रा वाभा तेजसिंघजी पिण नरसिंघ गढ वाभा रे परणीया था नै वाभा किलांणसिंघजी पिण उठै परणीया था तिणां रो ग्रांणो कर लाया । ग्रौर म्हाराजकंवार नरसिंघगढ परणीज नै प्रबारा रीयां पधारीया । म्हाराजकंवार श्री किसोरसिंघजी रीयां परणीया था तिण सु पधारीया । पछै श्री किसोरसिंघजी तो उठै रीयां में हीज रया नै म्हाराजकंवार श्री जसवंतसिंघजी परतापसिंघजी जैपुर पधारीया सो कोई दिन जैपुर में हीज रया पछै ग्रठे जोधपुर चैत वद १० पधारीया । फेर फागुण में उदैपुर ईलाके रो गांव स्हापुरै परणीज नै पछै ग्रठै पधारीया, जिण री विगत नीचे लिषीजसी ।

म्हा सुद ६ । म्हाराजकंवार जोरावरसिंघजी री सालग्रहे रो उछव ईणां रै नोरे हुवो वरस २८ रा हुवा । ग्रौर षजांना नै दरोगा २ म्हैलीया सिं० सिवदानमल नै मुसलमांन................ ।

म्हा सुद ११ प्र० सोम । ग्रौर षबर ग्राई कै कलकते रौ लाठ काळै पांणी रा टापू[1] में कैदीयां री हाजरी लेण गयो थो सो उठै १ सिपाई ऊमरकैद में हो जिण रै हाथ सु लाठ साहब मारीयो गयौ, सेरग्रली नांवै कैदी थो तिण रै हाथ सुं मुवो ।

फागुण वद ११ गुरवार । ग्रौर लाठ साहब काळै पांणी में चूक हुवौ[2] तिण री मातमपुरसी करावण श्री हजूर ग्रजंट साहब कनै सूरसागर पधारीया ।

फागण वद ५ गढ ऊपर लाठ साहब री गमी रौ दरबार हुवौ, सारा सिरदार हाजर हा, सारा राजसथांना सरसतै ।

चैत वद ८ सीळ सातम रौ मेळो दसतूर मुजब, कागै पूजा ले डावड़ियां रथां बैस नै जावै सो हमकै हुकम मुजब डावड़ीयां पाळी-पाळी[3] गई, फकत षासो रथ १ नै घोड़ा कोतल ५ हा । ग्रजंट साहब नै मीम हाथी ऊपर छंवर हुतां सिरे बजार मेळो देषण ग्राया ।

चैत वद १० बुध । श्री म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी नरसिंघगढ वगेरे परणीजण[4] काती वद १३ पधारीया था सो पाछा ग्रावता जैपुर रया, सो ग्राज

1. ग्रण्डमान निकोबार द्वीप समूह 2. हत्या हुई 3. पैदल 4. विवाह करने हेतु

कुल मास ५ दिन ३ घाट सुं पधारीया। श्री हजूर रै मुजरे गढ ऊपर पधार छावणी दाषल हुवा। कंवरांणीयां नै प्रतापसिंघजी सहेत पधारीया। और सीवांणा री हाकमी दुरगाप्रसाद ता० हुई।

चैत वद १३ श्री मंडलेश्वरजी रौ जनम उछव रो मेळो सदामंद सरसते जोसी हंसराज वगेरे भायां करायो।

चैत वद " (अमावस)। श्री हजूर मंडोर सूं मंडलेश्वरजी बैजनाथजी दरसण करण नुं पींजस[1] विराज पधारीया, पाछा बाळसमंद रै मैलां दाषल हुवा।

चैत सुद १ सोम। और बाईजी रौ तळाव री मरमत कमठो सरू हुवौ, कवराज मुरारदांन हा०।

चैत सुद ५। और हाडा री हवेली में डाक्तर अेक आदमी रै पग में कीड़ीनगरो थो सो ईलाज कर पग काटीयौ, सो ईलम देषण वासतै श्री हजूर नै अजंट साहब पधारीया। कायलाणै सुं पछै मांयलेवाग पधारीया।

चैत सुद ७। और सिरदारां संवत् २५ में गांव दाबीया[2] तिणां री पंचायती सिरदारां मुसदीयां कीवी, सो संवत् १८९६ री रपोट मांहला गांव वीस २० तो पाछा लिष देणा नै पांच गांव मांडो १, बीडवो १, आसोतरो १, बावड़ी १, फेर गांव १ सो अै पांच गांवां री पंचायती श्री हजूर रै नै अजंट साहब रै ऊपर राषी। बाकी सारा गांवा री सफाई पंचां कर दसकत कर दीया।

चैत सुद १३ रवि। और म्हाराजकंवार परणीज नै पधारीया तिणां री कवरांणीयांजी गढ दाषल हुवा। और बाईजी रै तळाव रौ कमठो हुवै तिण री दरोगाई म्हाराजकंवार श्री जसवंतसिंघजी ता० श्री हजूर सा नै अजंट साहब भोळाई। नै कमठै री पोतदारी[3] कवीराज मुरांरदान हसतै।

चैत सुद १५ मंगल। और श्री हजूर सा व्याव कायलांणै हुवा, डोळा आया देवड़ां रा नींबज का, तथा नींबज ईलाषे वगेरे रा।

---

1. विशेष प्रकार की पालकी 2. जबरन गांवों पर कब्जा कर लिया 3. हिसाब-किताब

वैसाष वद ५ तथा ६ । जैतारण री हाकमी प्रो० जेठमल रै हुई । जैपुर री उकीलायत पं० लाला भगवांनदास दौलतसिंघोत रै हुई । तागीरायत पं० जोरावरमल री ।

वैसाष सुद २ । म्हाराजकंवार श्री मादोसिंघजी रौ व्याव गांव जाषण रा भाटीयां रौ डोळो आयो सो राजमैलां परणीयां री सिलक गढ़ ऊपर तीर २१ छूटा[1] ।

वैसाष सुद ३ सुकर । आषातीज नुं म्हाराजकंवार श्री परतापसिंघजी रौ व्याय ओसीयां रा भाटी रावळोत वभूतसिंघ री बेटी रौ डोळो आयौ सो मंडोर कने षोषरीयो वेरो ईणां तालके जठै व्याव हुवौ । राईकावाग सुं प्रवारा पधार परणीया । पछै कवरांणीजी सुद ७ गढ दाषल हुवा । सिलकां १६ हुई ।

वैसाष सुद ६ तथा १० । म्हाराजकंवार म्होबतसिंघजी रौ व्याव रौ डोळो आयौ सो परणीया ।

वैसाष सुद १२ नागोर री कोटवाळी सुराणां म्हैकरण रै हुई मावारी सटै[2], तागीरायत लोढा रंगरूपमल री । जाळोर री कोटवाळी सुरांणा चांदमल रै हुई ।

जेठ वद १ । और षबर आई कै बीकानेर रा राजा सिरदारसिंघजी देवलोक वैसाष सुद ८ हुवा । बीकानेर रा म्हैता जसवंतसिंघ रै डेरै सुणाया । पांणीवाड़ा में म्हाराजकंवार नै सिरदार मुसदी वगेरे गया । तीन टंक दसतूर मुजब नौबत नहीं वाजी । राज सुं अमल '१। नै रोकड़ रु० २०) फुटकर षरच ता० मेलीया । लारै कंवर है नहीं सो देषीजै षोळै कुण बेसै । रांणी भटीयांणी पुंगलीयांणीजी[3] रै नै दूजी रांणी मांनेतण[4]............रै षोळे लेण री अड़बी[5] है, सो षोळे आवसी तिण री विगत नीचै लीषी जासी ।

जेठ वद ६ । जोसी हंसराज नुं श्री हजूर सा अजंट साहब रा कैणा सूं सोजत रा गांव गुडा जैतावतां रा, सो चवड़ै चोरी धाड़ा करै तिणां नुं सजा देण रौ बंदोबसत करावण वासतै फौज दे मेलीयो नै सोजत री हाकमी हंसराज ता० छ० रामबगस रै नांवै हुई, तागीरायत सिं० जसराज री ।

---

1. खुशी की सूचक 21 बार तोप दागी गई 2. प्रति माह निश्चित रकम राज-कोष में जमा करने के आधार पर 3. पूंगल की रानी 4. राजा की प्रिय रानी 5. मतभेद

जेठ वद १४। षजांना री पोतदारी मेड़ता रा प्रो० जसकरण रा बेटा मूलराज रै हुई, तागीरायत प्रो० तेजकरण री। और बागर कोठार नै षजांना री दरोगाई मेमदहुसेन नै सिं० सिवदांनमल ता० हुई। कोठार तागीरायत जोसी रांमनारांयण रा बेटा अनराज रा सुं, नै बागर ता० ब्या० चौथमल सुं।

जेठ सुद १३। श्री हजूर री बरसगांठ रौ उछब गढ ऊपर दसतूर मुजब हुवौ। बरस चोपन प्रवेस..........सिरदार गढ ऊपर नहीं गया। कुचांमण रै ठा० रा काका नीवी रा ठा० री षबर आई तिण सुं।

और भं० वादरमल निजर कैद थो नै घरे चौकी थी काती रा मास सुं, सो षुलासो हुवो। और पुरांणे दीवांण मरदांनअली रै पटै जाळोर रौ गांव ....रीयो हुवो।

असाढ वद २ तथा ३। और बारोठीयो ठा० आऊवा रौ देवीसिंघ कुसाळसिंघोत संवत् २५ री अफरातफरी में आऊवा में अमल कर लीयो थो ....पछै अंगरेजां री कमेटी सुं पटो अदषर[1] देणो ठेरीयो सो दुतरफी फाड पड़ी नहीं[2] नै पैदास सारी षायां गया। पछै हमार बडारण[3] ढेलडी हा० सटपट[4] हुय ठा० री अरजी आई कै हुकम हुवै तौ हाजर होऊं सो षांवद[5] फुरमावसी जिण मुजब हूं कबूल कर लेसू, वगेरे लाचारी लिषी, तरै ढेलडी हा० षास रूको गयो सो आज घोड़ा ५० ऊंट ३० बगी घोड़ा ६ री में बैस जाळोरी दरवाजे मारग होय हवेली में आया। पछै वद ६ श्रीजीसा मातमपोसी करावण आऊवा री हवेली पधारीया। हवेली में तीन मातमपोसीयां हुई— आऊवा रा ठा० कुसालसिंघ री १ बातो १ भींवाळीयो १। असवारी में ठा० पोकरण १ कुचांमण १ रायपुर १ वगेरे। पछै उठा सुं रायपुर री हवेली में वांसीया रा ठा० री मातमपोसी करावण पधारीया। पछै ठा० आऊवो देवीसिंघजी गढ ऊपर मुजरे गया।

असाढ वद १० रिव। और श्री वडा हजूर वडा साहब अजंट साहब रा बुलावण सूं आबूजी डाक में पधारीया।

वद १२ भोम। और परबतसर मारोठ री हाकमीयां मु० पूनमचंद मुकनचंदोत रै हुई, तागीरायत म्हैता हरजीवण ता० री।

---

1. आधे हिस्से का 2. विरोध नहीं हुआ 3. दासी 4. गुप्त वार्ता 5. मालिक

श्रौर ललवाणी बजाज फतैमल मरदांनश्रली रौ कांमेती रै कबुलायत हजार ५१०००) इकावन री हुई। मदे हाल १५०००) पनरे हजार भराया।

श्रौर म्हाराजकंवार श्री जोरावरसिंघजी श्री हजूर में अरज करी कै हूं श्री जीवणमाताजी रा दरसण करण नै जाऊं छू सो मारग में नागोर आवसी सो सैर नै गढ़ देषण जासूं सो कोई रोक-टोक करै नहीं रौ हुकम दीराईजै। जद फुरमायो कै भलां ही देषण जावजो पिण घणा दिन रहेजो मती। सो कंवरजी जोरावरसिंघजी रै मन में नागोर देषण रौ बांयनो[1] कर दाब अमल कर लेणो, सो उठा सुं चढीयां पैली नागोरवाटी रा सिरदार हरसोळाव वगेरे सु सला ठावा आदम्यां ह० वात बांद राषी थी[2] कै म्हे नागोर आवां जिण टांकड़ै[3] थे सांवठे साथ तोपखाना वगेरे ले आय नागोर सांमल हुवाजो, इण वात री दूजां नै षबर नहीं। पछै जोरावरसिंघजी गांव बैराई पटे रौ गांव है जठे जाय गोठ कीवी, पछै उठा सुं चढीया सो ताकीद सूं नागोर जाय मांनासर डेरा कीया। जठै ऊपर लिषीया मुजब सिरदार सांवठा साथ सुं आय हाजर हुवा, तिण रा समाचार अठै आया, सो श्री हजूरसा तो आबूजी था नै म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी अठै जोधपुर में था। नागोर हुकम रा कागद लिषाय मेल दिया कै कोई कंवर वाभा मांयलो उठै आवै तो सैर में तथा किले में आवण दीजो मती। सो बंदोबसत हुय गयो तरै म्हाराजकंवार जोरावरसिंघजी हलो कर दिली दरवाजै री त्रफ सैर में सांवठे लोक सुं वड़ गया। नीसरणीयां लगाय नै पींडां सैरपना रौ कोट पाड़ बड़ गया। जठै जाजमाट[4] झगड़ो पिण हुवौ। जठै नागोर मांयला अतीत[5] २ कांम आया। दोय चार घायल हुवा बारला आदमी पिण मुवा, घायल हुवा। पछै सैर में आय कचैड़ी सायर चोतरा रा ओधायतां[6] नुं पकड़ लीया, नै षालसा रा गांव ईजारै जिणां रा हवालदारां कना सुं पोता षोस लीया[7], नै सांवणु जमां घोड़ा कांमल[8] वगेरे गांवा में आदमी मेल उगावणी सरू कीवी। षास नागोर री रईत कना सुं वीस २०,०००) हजार रुपीया री कबुलायत कराई अर गढ में सांमी था जिणां सांमी तोपां मांडी नै केवायो म्हे विना हुकम नहीं आया हां बात नुं समझ लीजो। इण तरै धुरकी धमकी दीवी, तरै सांमीयां गढ़ मांय सुं १ तोप छोड़ी। पछै जांणीयो किसा कोई दूजा है तरै गढ री पोळां षोल किलेदार सांमी म्हाराजकंवार

---

1. बहाना 2. निश्चित कर रखी थी 3. अवसर 4. थोड़ा बहुत 5. योगी (नाथ भक्त) 6. ओहदेदार 7. जमा रकम छीन ली 8. एक प्रकार का कर

जोरावरसिंघजी नु मांय ले लीना सो गढ में जाय नांगळ रो जीमण लापसी मण पनरे '(१५) री कीवी। कुल आदमी ५०० पांचसै षाटू, आगुतो, हरसोळाव वगेरे षेडु लोक जीमीया। गढ में अमल हुय गयो। जिण रा समाचार आबूजी ऊपर वडा साहब अजंट साहब नु पोता। तरै श्री हजूर पिण आबूजी ऊपर हीज था सो साहब श्री हजूर नै पूछीयो कै ये बात किस तरै से हुई, आपके फुरमावणे से हुई है या जोरावरसिंघजी ने अपने मनमतै[1] से कीवी है। जद श्री हजूर फुरमायो म्हां कने तो जीवणमाताजी रा दरसण करण नै जावण री मालम कीवी थी स्वाय में क्यु ही फुरमायो नहीं, मनमतै नादांनी कीवी है। जद साहब कयो कै मनमतै नादांनी कर ये बात कीवी है तो जोरावरसिंघजी रै हक में बुरा होंगा, अर आप हुकम नहीं दिया है तो जोरावरसिंघजी के नाम षास रूका लिष दीजै कै किला सैर मांय सु जळदी निकळ जावो नहीं तो फौज आय तुम कु निकाळ देंगे अर तुमारे हक में ब्होत बुरा होगा। इस तरै आप लिष दीजीयै। तरै श्री हजूर फुरमायो कै म्हे पिंडां जासां[2] नै अजंट साहब नै साथ लेजाय ज्यु छोडसी ज्यु गढ़ सैर छुडाय लेसी। सो सुद १२ आबूजी सु पधारीया, बगी में विराज राजमैलां दाषल हुवा।

असाढ सुद १३। अजंट साहब पिण आबूजी सु आया। अर सारा सिरदार मुतसदीयां नु सूरसागर बुलाय ताकीद कीवी कै नागोर जोरवरसिंघजी कनां सु जलदी जाय छुडावो, नहीं तो सिरकार अंगरेजी दूसरी कोई तजबीज करेगी। जद सिरदारां कयौ कै श्री हजूर पिंडां नागौर पधारसी तरै किलो छोड आय हाजर हुसी।

और म्हाराजकंवार बादरसिंघजी छाडांणो कर[3] नांनेरे जांमनगर पधार गया था तिणां नु मनाय पाछा लावण वासतै जोसी अनराज रांमनारांयण रा बेटा नु मेलीयौ।

संवत् १९२९ का विवरण

बणसूर जादूरांमजी री वही री नकल संवत् १६२६ री। श्री दरबार री असवारी आबूजी असाढ वद........में पधारीया नै पाछा अ० सुद १३ नै

---

1. अपनी मर्जी से 2. हम स्वयं जाएँगे 3. नाराजगी में जोधपुर छोड़ कर

राजमैलां दाषल हुवा सालीका री कलमां मुदै पधारणौ हुवौ है सु पछै म्हाराजकंवार श्री जोरावरसिंघजी साहब नागोर में असाढ वद १३ रात रा अमल कर लीयो तिण में सांमल षाटू वाळो अगवांणी[1] थौ, अै समांचार आबूजी मालम हुवा तिण सु जलदी अजंट साहब सुधा जलदी सु पधारीया नै अजंट साहब सूरसागर आम दरबार कर सारा जमींदार मुतसदीयां वगेरे रौ कर नै हुकम दीयौ—कोई नागोर की घालमेल में हुवैला[2] तौ कसूरवार हुवैला। पछै श्री हजूर सूं किताक ठिकांणा में षास रूका लीषीजीया—श्री दरबार री फौज सांमल हुवण मुदै। नै श्री दरबार सांवण वद ५ नै गांगांणी डेरा कीया फौज सुधा, सु सिरदार रसता में तथा अठा सूं किताक सांमल हुता गया, सु वद ६ अरठीये ठैर नै बड़लू दाषल हुवा नै बड़लू सुं वद १३ कूच हुय आसोप डेरा हुवा। गोठ वगेरे हुई नहीं, सरबरा ठाकुरां सु बण आई नहीं, नै श्री दरबार सूं ठाकुरां नै हाथी कंठी सिरपेच वगेरे री सिलांमती बोलीजी। नै साथीण रा ठाकुरां रै आसोप रा डेरा मातमपोसी हुई, नै सांवण वद १४ डेरा मूंडवै हुवा सो उठै श्रीजी साहब तौ अजंट साहब फौज री हाजरी लीवी नै पिंडत सिवनारांयण जोसी हंसराज नै अगाऊ[3] मेलीया नागोर, बीसटाळा[4] री बात ठैराई सु सां० सुद ५ डेरा ताऊसर हुवा नै सुद ६ नै विसटाळो ठेहर श्री जोरावरसिंघजी आय ताऊसर में मुजरो कीयौ नै श्रीजी री फौज सांमल डेरो कीयौ नै श्रीजी सुद ७ नै नागोर किलै दाषल हुवा। सुद १३ उठा सूं कूच हुवौ सु किताक मेड़तीया सिरदारां रै मातमपोसीयां कराय डेरा भाषरोद हुवा नै सुद १४ डेरा षींवसर हुवा नै फौज नै मीजमांनी दीवी। श्रीजी कोट में पधारीया नै उठे पांतीयो हुवौ[5]। नै ठाकुरां नै इण मुजब निवाजस इनायत हुई—हाथी १ कंठी १ मोती १ सिरपेच १ कड़ा १ तो ठाकुरां नै, नै वडा कंवरां नै, दुपटो १ कंठी १। छोटा २ जणां नै कड़ा मोती दुसाला इनायत हुवा नै श्रीजी रै घोड़ा २ नै हाथी २ निजर कीया। पछै सां० सुद १५ डेरा लवेरै हुवा सु घास मुगधणा री सरबरा हुई[6] नै गोठ रा रुपिया रोकड़ लिरीजीया।

भादवा वद १ असवारी हुती बषत लवैरे ठा० गिरधरसिंघजी री मातमपोसी हुई नै डेरा गांव नेतड़ां हुवा। सुद २ नै असवारी सिरे बजार

---

1. आगेवान 2. षड़यंत्र का सहभागी होगा 3. आगे 4. समझौता-वार्ता
5. पंक्तिबद्ध भोजन व्यवस्था 6. घोड़ों के लिये घास और भोजन पकाने के लिये लकड़ियों की व्यवस्था की गई

नागोरी दरवाजं हुय चांदपोळ हुय बारै विदीयासाळ दाषल हुवा नै जोरावर-सिंघजी डेरौ छांगांणीयां री बगेची कीयौ, जिणां रा डेरा में आगूता वाळा ठाकुरां में मिनष मारीयां रौ कसूर नै छांगांणीयां री बगेची घेर लीवी नै उठी नै ही डेरा में कमरबंदी हुई[1]। सेवट विसटाळो ठेहर आगूता रा ठाकुर नै दोढी लाया सु किलै लवा पोळ सूंपीजीयो[2]।

पछै भा० वद........नै अजंट साहब कूच कर आबूजी गयौ, जिणां साथै म्हाराजकंवार श्री जोरावरसिंघजी चढीया सुं पाली सूं प्रवारो साहब अजमेर रेवण रौ हुकम दीयो सु छींपीयै[3] हुय अजमेर पधारीया नै नागोर सुं विसटाळा में सिरदार ८ आठ पोकरण १ कुचांमण १ रायपुर १ रास १ षेजड़लो १ आसोप १ भादराजण १..............इण तरे बचन दीयो कै पीडां नै तथा साथै आदमी है जिणां नै जीव जोषा[4] रौ तथा कैद नहीं हुवण देणा तिण रौ रूको लिष दीयो थौ सु उण बात में फरक आयौ,[5] नै अठै ही च्यार सिरदार आगूता बाबत बचन दीयौ तिण में फरक आयौ।

भादवा वद ११ वडी फजर विरषा अनंत हुई[6] सुं स्हैर रा तळाव रांणीसर, पदमसर, गुलाबसागर, फतैसागर वगेरे ओटै आया नै आगै संवत् १६१६ रा सांवण में आया था जठा पछै अबै हीज आया छै।

आ० वद १४ श्री दरबार री असवारी फेर आबूजी नै लछरायजी री बावड़ी सुं छड़ी हुई। श्री बडा म्हाराजकंवार साहबां नै कांम राज रौ सूंपण मुदै सु पाछा अजंट साहब बडा साहब सुधा काती वद ५ नै उठा सूं उतर नैं दरकूचा पाली पधारीया नै मारग में वद ७ सिरोही डेरा हुवा, सु सिरोही रावजी सरसता मुजब सांमै आया सु मुलाषात हुई नहीं।

वद ८ अेरणपुर डेरा हुवा सु झालरापाटण रा राजा पीरथीसिंघजी उठै आया, बड़ा साहब सुं मुलाषात मुदै, सु श्री दरबार में मुलाकात री इतला कराई सु मुलाषात हुई नहीं नै काती वद १० श्रीजी साहब पाली कचैड़ी में दाषल हुवा।

---

1. लड़ने की तैयारी 2. लोहा पोल के पहरेदारों के सुपुर्द किया 3. एक ग्राम का नाम 4. जान का जोखिम 5. समझौते की शर्तों के पालन में अन्तर आया 6. खूब वर्षा हुई

काती वद ११ वडा साहब बहादुर अजंट साहब रै डेरा मुलाकात हुई नै पछै श्री म्हाराजकंवार साहबां रै हात नीचै अषत्यारी[1] रौ षलीतो लिष साहब नै सूंपीयौ, श्री म्हाराजकंवार रै रूबरू।

वद १२ नै अजंट साहब वडा साहब तौ कूच कर नै मंमई लाठ साहब रा दरबार में जावणो तिण सूं अजमेर कांनी रवाने हुवा नै काती वद १४ री दीवाळी ही सु आथण रा जलूस असवारी षासे विराज निजर नीछरावळ हुती सिरे बजार हुय किलै दाषल हुवा।

काती सुद १४ छव घड़ी दिन लारला रा बाड़ीये असवारी विराजती ही सु उठै छव घड़ी दिन लारला रा दीवांणगी म्हैता विजैसिंघजी नै इनायत हुई नै आगै संवत् १९२६ आ० सुद १० नै दिवांणगी नवाब मरदांनअली नै हुई थी सुं संवत् १९२९ रा काती वद ५ नै तांगीरायत हुई सु कांम षालसै रयौ नै म्हैता हरजीवणजी कीयो, मा० १२ री। २४ तांई कीयौ।

मि० वद १ नै श्री वडा म्हाराजकंवार साहब राजमैलां कांम करणो ठेरीयो सुं उठै पधारीया नै कांम सरू कीयौ सु आगे पंचायती मुसायबां सीरदारां री कर नै गांव २१ देणा कीया तिण री चीठीयां १९ दिरीजी। जठा पछै षजानो म्हौ० जोरावरमल परतापमलोत नै ईनायत हुवौ नै कोठार वागर री दरोगाई भं० भागचंद नै इनायत हुई। टगसाळ[2] पं० नथमल नै इनायत हुई नै सायर री दरोगाई जोसी हंसराज रा बेटा आसकरण सुं तागीरायत होय षालसे हुई, कांम सिं० गुलाबचंद नै सोंपीयौ। कांम करण नै नित मिती[3] कचेड़ीयां होयबो करी सु साहब लोकां रा षलीता परवांना आयोड़ा हा जिणां रा कितराक रा जबाब फरमावणा मुजब लिषीजीया।

वद ६ नै फेर इण मुजब ओधा[4] दिरीजीया। नागोर री हाकमी म्हैता विजैसिंघजी सुं तागीरायत होय मु० कुनणमळ लिषमीचंदोत नै इनायत हुई नै जोधपुर री हाकमी कविराज मुरारदांन सुं तागीरायत होय सिं० सिवराज मेघराज रा नै इनायत हुई नै डीडवांणा री हाकमी थांनवी रूघनाथ रा बाप सिवनाथ सुं तागीरायत होय नै भं० गणेसचंद नै इनायत हुई। पंचपदो व्यास सुगाळचंद जेठमल रा सुं तागीरायत हुय कवराज मुरारदांन नै इनायत हुई।

---

1. राज्य-कार्य महाराज कुमार जसवन्तसिंह के अधीन करना 2. टकसाल 3. प्रतिदिन 4. पद

मिगसर वद १३ । कांम इण मुजब फेर हुवा—मेड़ता री हाकमी भं० दीपचंद सुं तागीरायत हुई नै म्हैता जालमसिंघ रै हुई । सिवांणा री हाकमी पं० जोरावरमल रा बेटा बनराज रै नांवै हुई, आगै म्हैता उगरसिंघ रै ही सु तागीरायत । जैतारण री हाकमी पटानवेस प० मांनमल रा बेटा मीठालाल रै नांवै हुई, तागीरायत ।

मिगसर वद १४ । चांणोद रा ठाकुर श्री पुसकरजी सुं पाछा आवता मि० वद………में चल गया जिणां री आज षवर आई है ।

मि० सुद १३ । बगसी सिं० देवराज फौजराजोत सुं तागीरायत होय सिं० समरथराज रै हुई । श्रीजी री असवारी जाळीयै ही[1] सुं उठै बुलाय इनायत कीवी नै बगसी रा गांव २ समरथराज रै लिषीजीया नै देवराज रै गांव गोळ पटै रौ हुकम हुवौ, रेष हजार तीन री आसरै रौ । किला ऊपर जरजरषांनों, जवारषांनो नै कपड़ा रौ कोठार सिरकारी पोरा[2] बैठा कोठारां में, नै दरोगाई जरजरषांनै, जवारषांनै री तौ व्यास देवीलाल रै नै मुसरफी व्यास फौजीरांम रै है नै कपड़ां रै कोठार षीची बषतावरमल रै है ।

पोस वद १३ । परबतसर री हाकमी सिं० गणेसराज छगनराजोत रै हुई । मारोठ री हाकमी भं० केसरीमल म्हैता विजैसिंघ रा कांमेती रै हुई । बिलाड़ा री हाकमी सिं० राजमल हरजीवणजी रै कांमैती रै पो० वद १ हुई ।

पोस सुद ४—

१ सोजत री हाकमी छांगांणी गीताबगस सुं तागीरायत होय नै भं० बषतावरमल सिरीचंदोत रै हुई ।

१ जाळोर री कोटवाळी सुरांणा चांदमल रै भतीज सुं तागीर होय ईद कादीरबगस रै हुई ।

१ नांवा री हाकमी सेष म्हैमदहुसेन सुं तागीरायत हुय नै सिं० कांनमल रै हुई ।

१ सांभर री हाकमी हाजीजी सुं तागीरायत होय भं० तेजराज रै हुई ।

म्हा वद ८—

१ अजंट री उकीलायत भं० दीपचंद सिवचंदोत रै हुई, तागीरायत रावराजा सिरदारमल री ।

---

1. जालिये कुं ऊपर री 2. पहरा

१ जोधपुर अजंट अेमी साहब री बदली हुई सुं गवालेर गया नै भरतपुर रा अजंट साहब बालटर साहब अठै मुकर हुवा सु पो० सुद ………में अजमेर दफतर संभाळीयो[1] नै म्हा सुद ६ नै अठै दोढ पोर दिन चढीयां सूरसागर दाषल हुवा नै सरसता मुजब सिलकां हुई ।

और श्री हजूर री असवारी जाळीयै बेरे बिराजै है सुं दिन…………सुं छाती में चांदीयां री नै गळा में गांठां री दुसमणां रै षेद बण रही है,[2] तिण सुं अजंट साहब नै श्री म्हाराजकंवार वडां री अरज सुं म्हा सुद ८ नै किले दाषल कराया[3] । नै किलै ही दिन………षेद जादा रही । राज रा वैद हकीम तथा अजंट साहब डाकटर इलाज दवायां सुं कीयो परंत म्हा सुद १५ तोप ऊपर दोय बजीयां नै बारै घड़ी रात गयां बैकुंठ धांम पधारीया[4] । बैकुंठ बास कीयौ जिण सुं घड़ी ४ पैला पोकरण कुचांमण ठाकुरां नै याद फुरमाया । उण बषत श्रीजी साहब रो ढोलीयो दौलतषांना में उलोड़ा चसमा में लिरीजीयौ नै बिरामण वेद री धुन भणता रया[5] । जिण बषत रुपीया सवा लाष पुनअरथ[6] रौ संकळप हुवौ नै श्री म्हामींदर उदैमींदर री कबूलायतां प्हैली हुई थी सु बाकी भरीजता रया सु छोडण रौ हुकम हुवौ[7] नै गांव ५ पांच पुनअरथ रौ संकलप हुवौ जिण में तिंवरी मेवासो व्यास पदवी रौ गांव आगोळाई तथा श्री बाईजी साहब गांव पादु पुनअरथ पटै श्री चोपासणी[8] हुवौ सु रु० पांच हजार ठेहर पाछो लिषीजीयो, जिण रा तांबा पत्र लिषीजीया । पछै फेर जनांना मांय सुं रोकड़ रुपीया किताक पुनअरथ हुवा । षेरवे, रायपुर, पोकरण, कुचांमण वगेरे ठाकुरां उण बषत पांच पांच सै रु० पुन हुवा । उण बषत ही अजंट साहब किलै आया हा । पछै दूजै दिन ऊगां श्रीजी सायबां री असवारी जळूस सुं माहीमुरातबा[9] सुं नै अगाड़ी हाथी ऊपर रुपीया उछाळतां नै दीवीयां सुं फतैपोळ हुय सिरे बजार हुय नागोरी दरवाजै हुय मंडोर पधारी नै लारे किला में पोकरण कुचांमण रा ठाकुर आया हा सु रया नै श्री वडा म्हाराज-कंवार सायब लवापोळ तांई पधारीया । पछै मंडोर में सारा भदर हुवा । सैर सारो असवारी में साथै गया । सैर में सारा भदर हुवा । नै मंडोर सुं

---

1. अजमेर कार्यालय का कार्य सम्भाला 2. महाराजा रोग से पीड़ा-ग्रस्त हैं 3. महाराजा का किले में प्रवेश कराया 4. स्वर्गवास हो गया 5. ब्राह्मण वेद-पाठ करते रहे 6. पुन्यार्थ 7. माफ करने का आदेश हुआ 8. चौपासनी का ठाकुर द्वारा 9. विशेष प्रकार का बड़ा लवाजमा

म्हाराजकंवार प्रतापसिंघजी तौ प्रबारा किलै पधारीया नै बाकी सारा मंडोर सुं गिडदीकोट में आया था नै उठा सुं आप-आप रै घरै गया, उठै ही सातलवाड़ौ री जाजम[1] बिछी सु मुतसदी षवास पासवांन तथा सैर रा षांप-षांप रा सारा बैसण नै आया[2]। वद २ तीयो[3] हुवो। पैंसट मण मूंग रंदीजीया नै चावळ षांड मण '११) घिरत २३) नै षालसो वगेरे जीमीया, नै फेर सैर सारणी ठेहरी, षांप-षांप नै षांड दिरीजी सुं जीमीया, तिण री विगत जुदी छै।

वद ३ अजंट साहब सूरसागर सूं किलै आयौ, फतैमैल में श्री म्हाराज-कंवार साहब सुं पेद कमरबंदो पधरायां विराजीया जठै बिछायत ऊपर डाकदर सुधा[4] बैठा, घड़ी १ रया, नै जनांना में नाजर हरकरण नै मेल नै षातरी कवाई[5]। पछै उठा सूं गिरदीकोट में आया सु उठै जाजम री कोर माथा सुं टोपी उतारी, पछै पोकरण कुचांमण रा ठाकुरां रै बिचै साहब बैठा। सु आया जद बैठा—उठां रो कांम पड़ीयो नहीं[6] पछै उठा सूं बहीर हुवा नै जाजम सुं उतरीयों पछै टोपी प्हैरी। उठा सूं सूरसागर गया नै उठै सिरदार मुतसदी रैता। गिरदीकोट में मोसर[7] वगेरे करणो ठेहरीयौ जिण वगत षांड, घी, मैदा, बेसण वगेरे सांमांन करावता रया नै भटीयां षुदी नै षांड मण ११००) आसरै गळी। जिण में कितीक तो षांप-षांप में दिरीजी नै कितीक षांड रा लाडू उठैहीज बंदीजीया। जिण बारे री विगत जुदी छै[8]। पछै वद ५ अजंट साहब आथण रा किलै आया सु घड़ी १ ईकंत रया नै सांमल मूलचंदजी जोसी नै फैजुलाषांजी हा। रजवाड़ां में षलीता नग १८ सरसता मुजब गमी रा लीषीया—जैपुर १, बीकानेर १, किसनगढ १, रतलांम १, सीतामाऊ १, बूंदी १, कोटा १, ईडर १।

वद १२ नै राजलोकां री सुषसेंज्यां[9] २७ तो राजलोकां री, बाकी १४ पड़दायतीयां वगेरे री दीरीजी जु० ४१, सु राजलोकां तौ प्रोहितजी नै दीवी नै पड़दायतीयां आप-आपरै वेदीयां नै दीवी।

1. मृत्यु पर शोक व्यक्त करने की व्यवस्था 2. शोक व्यक्त करने आए 3. मृत्यु के तीसरे दिन सम्पन्न किया जाने वाला धार्मिक कृत्य 4. डॉक्टर सहित 5. रानियों को तसल्ली के शब्द कहलवाये 6. एजेण्ट के पदासीन होने के बाद इस प्रकार की रश्म-अदायगी का अवसर पहले कभी नहीं आया 7. मृत्यु-भोज 8. इसका वृत्तांत अलग से दिया गया है 9. बिस्तरों की सामग्री जो ब्राह्मणों को दी जाती है

फागण वद १० श्रीजी साहबां रौ अेकादसो देवकुंड हुवौ नै श्री परतापसिंघजी सा सारीयो[1]। सारा सिरदारां हात सुं अंजळीयां दीवी नै टोगड़ा री पूंछ रा दोय-दोय रुपीया भेंट कीयां[2] सारीयां पछै म्हाराजकंवारसा रा नै वाभा मुसदी उठा सुं गिरदीकोट में आय गरुड़ पुराण रै भेंट सिरायतां मुतसदीयां रु० पांच-पांच कीया। बाकी रा रु० दोय-दोय भेंट कीया, सु रु० हजार अेक आसरै व्यास रै आया। पछै उठै हीज पागां बांध हवेलीयां गया। नै व्यास रै श्री रांणावतजी साब चूड़ो वगेरे भेंट कीयो नै राज सूं जामो कसुमल वगेरे व्यास नै दिरीजीया।

वद १२ सेर सारणी हुई,[3] दिन ऊगां सुं लोग जीमणो सरू हुवो गांव सु लोग घणो आयौ, रोक-टोक रौ किणी वात रो मुदो रयौ नहीं सु नचीताई सुं[4] सारा जीमीया। जुदा जुदा चौका हा, मिठाई मण '२०० आसरे बची नै पछै स्हैर में घर पती[5] '।। मिठाई फेर बंटीजी, जिण रा गाडा फिरीया।

पछै वद १४ बुधवार नै अजंट साहब किलै आया तरै श्री हजूर सायब षिड़कीया पाग केसरीया नै कसूमल ऊपरणी नै अंगरखी पदराय तांमजांम[4] में विराज मोरछल छंवर वगेरे हुतां थकां फलसा तांई सांमै पधारीया। किला सूं असवारी री तोपां २ किला सूं छूटी। साहब टोपी उतारी फूलमैल में घड़ी २ दोय बैठ साहब सीष करी, तरै फूलमैल री षिड़की तांई पोंचावण पधारीया। साहब तौ सूरसागर गयौ।

वद १२ पैली तो श्री हजूर सायब सुपेद षिड़कीया पाग पदराय जनांनी दोढी हुय मांय जनांना में पधारीया श्री माजीसाब दादीजी साब साबक दसतूर सुजब भेंट कराया। पाछा वारे पधार रंग री पाग बंदाई। दारू अरोगीयो नै सागोती अरोगी नै सोग भांगीयो[6]। मुसायबां किताक सिरदारां रै रंग ईनायत हुवौ। सूरसागर पधारीया, सायब तो पैली किलै आय गयौ सु उँचो लीषीयो ईज है[7] सुं अठा सुं सायब सूरसागर सूं बिदीयासाळ कनै बगी में बैस पैली हीज डाकदर सुधा आय ऊभा हा। पछै श्रीजी उठा सूं दौलतषांना में पधारीया नै

---

1. मृत्योपरान्त किया जाने वाला धार्मिक कृत्य राजकुमार प्रतापसिंह ने नियमानुसार करवाया 2. पुण्यार्थ बछड़ों के स्थान पर 2-2 रुपये दिये 3. सब जनता के लिये मृत्यु-भोज की व्यवस्था हुई 4. निश्चित होकर 5. प्रति घर 6. शोक समाप्ति की रश्म अदा की 7. पहले लिखा जा चुका है

उठै छतरी ऊपर बिराजीया, उठै फेर सिरदार मुसदीयां निजर निछरावळ हुई। पछै उण सूं फतैमैल में पधारीया नै पोसाष बडी कराय[1] काठ रौ बंगलो[2] उठै विराजीया। फेर उरी असवारी लवाजमा सुं पदारी। षिड़कीया पाग केसरीया नै अंगरषी पधरावण नै बगी असवार हा सु बगियां री मुलाषात हुई। पछै अजंट साहब टोपी उतारी तरै श्री दरबार उठा सुं अजंट साहब नै बुलाय आप रीकैबाग डेरां दाषल हुवा। हमें उठा सुं प्रबारो कूच हुसी नै आंजरा वगरै अठा री तरफ सुं देषीजसी।

सुद १२ राईकैबाग स्यांम[3] री बषत दरबार हुवौ नै म्हैता विजैसिंघ दीवांण नै पग में सोना री कड़ी नै बैठक रौ कुरब हुवौ। पी० सिवनारांयण नै कड़ी नै बैठक रौ कुरब नै सिं० समरथराज रै सोनो आगे थो नै फेर बैठक रौ कुरब हुवौ। फैजुलाषांजी नै दुपटो मदील सिरपेच कंठी कड़ो हाथी पालषी नै हाथ रौ कुरब नै किफातुलाषां नै इण मुजब, नै रसालदार उजीरअली नै पग में सोनो नै हाथी पालषी वगेरे नै पीलवा रा चांपावत अभैसिंघ नै जैपर म्हाराज रा केणा सुं पग में सोना रौ कड़ो नै कुरब ताजीम नै पटै गांव सावरीज फळौधी नै हवेली सैर में करावण रौ हुकम छै। पछै दोनूं राजा दरबार कर नै बिराजीया सु डावी ओळ में तो आपणा सिरदार मुतसदी बैठा नै जीवणी में जैपर रा बैठा। नै जैपर वाळां नै निवाजस इण मुजब दिरीजी, सुद १३।

सुद १४ जैपर रा श्री म्हाराजा रौ कूच परबात रा हुवो सु पालीयासणी[4] डेरा हुवा। पालीयासणी तांई श्रीजी सायब पोंचावण पधारीया नै अठा सुं साथै श्री प्रतापसिंघजी षुसी सूं जैपर तांई पधारीया। नै अठा सूं कूच हुती बषत तोपां री सिलकां मामूली हुई। सुद १५ श्रीजी सायब पाछा पदारीया।

वै० वद १। अजंट वालटर साहब आबूजी नै कूच कीयौ, तोपां सरसता मुजब छूटी।

वै० वद २। सिं० फौजराज रै लारै सैर सारणी लाडवां री हुई[5]। सु रसालो तो गिरदीकोट में हुवो बाकी न्यात दूजी जायगा मुकळायत जठै हुई। नै तीजा पौर रा असवारी गिरदीकोट में पदारी सु च्यार हजार रौ चोतरौ

---

1. वह पोशाक उतार कर 2. काष्ठ निर्मित कमरा 3. संध्या 4. पलासणी ग्राम
5. पूरे शहर को लड्डू का मृत्यु-भोज खिलाया

कीयौ नै सिरपाव, हाथी कंठी, पालषी, सिरपेच, कड़ा मोती, कंठी वगेरे सरबते हुवा नै कांमैती २ दोय नै कड़ा मोती दुसालो इनायत हुवा ।

वै० सुद १ सुं आषातीज रौ समुरथो राईकैवाग हुवौ । अमल षार भंजणा[1] दिन ३ तीन तांई वंटीया । गढ ऊपर ही बंटीया ।

वै० सुद ३ । आषातीज नै घड़ी दिन पछैलां सुं[2] असवारी किले पधारी । नै दरबार रै जीमण रौ पांतियो करणो ठैहरीयो सु दरबार में सिरे पैली रास वाळा आय बैठा हा जिण मुदै रायपुर वाळां रै प्होर रात तांई अड़बी रही[3] । सेवट दरबार में तो सिरे रास वाळा ही बैठा नै पछै फतैमेल में पांतीयो हुवौ जठै सिरे[4] रायपुर वाळा बैठा ।

वै० सुद........ । जांमनगर सूं टीको लेनै उठा सूं भला आदमी आया तिणां नै राईकावाग सुं सीष हुई । निवाजस इण मुजब हुई........ ।

जेठ वद........ में सोजत री हाकमी मुनसी उदैलाल चुनीलाल रा बडा भाई रै इनायत हुई, तागीरायत भं० बषतावरचंद सिरीचंदोत री........... ।

जेठ वद........ में डीडवांणा री कोटवाळी मु० जवांनमल सींभुमलोत नै इनायत सुई, तागीरायत ।]

1. अफीम का खारापन मिटाने वाली चीजें गुड़, मिसरी, पतासा, खारक आदि 2. घड़ी भर पिछला दिन रहते 3. बैठक के प्रश्न को लेकर उलझन बनी रही 4. प्रथम स्थान

परिशिष्ट

('ख' प्रति का पाठ भेद एवं अधिक विवरण)

१ पाठ भेद—

श्री नाथजी सत्य छै

म्हाराजाजी श्री तषतसिंघजी म्हाराज रै राज री ष्यात लिषतै वरणसूर जादूदांनजी री बही री नकल ।

संवत् १६०० रा आसोज वद ७ सनीसरवार नुं अजंट स्हाब सीरदार मुसदी षास पासवांन तथा जनांना कांमदार वगेरे नुं चपड़ासी म्हेल सूरसागर बुलाया अर कह्यौ कै अब श्री महाराज साहब कै गोद लाणा विचारीया होय जिस कुं जरूर जळदी सैं लावौ जिसका नांव षुलासै हमको वतावो सो वडा साहब को हम रपोट करे, जद सारा जणां कह्यौ श्री माजी स्हाबां रै ईकत्यार है सो मालम कराय पाछौ जाब फुरमावसी जिण मुजव आप सुं ईतला करसां। पछै सारा जणा परबारा जनांनी दोढी जाय अजंट स्हाब समाचार कया जिण मुजब सारा विगतवार मालम कराया जद फुरमाय नाजर तथा डावड़ीयां लारै केवायौ कै साहब ही पुछै है अर थै ई पुछौ हो सो म्हांरो तो फुरमावणो ओ है कै श्रीजी साहबां रो फुरमावणो अेमदनगर में बाप बेटा २ जणा है जिण मांह सुं २ जणां नुं राज लायक होवै जिण नुं लावण री सला अजंट साहब सुं मिलाय भला आदमी मेल निगै करावो पछै सारां रैं पसंद आ जावै जिण नुं ले आवौ मुलक माड़वाड़ उमराव चाकर रयत वगेरां नु सुष आवै जिसो कांम कीजौ ।

पछै दुजे दिन आसोज वद ६ अदीतवार नु सारा सिरदार मुतसदी वगेरे सूरसागर अजंट स्हाब पास गया अर जनाना में समाचार माजी साहबां नुं मालम कराया अर माजीसा पाछो षुलासै फुरमायो सो सारो अैवाळ कह्यो ।

जद साब कही तम सब जणां यां आये हो जिसको माजी साबां कै फुरमावणै मुजब मंजूर है जद यां सारा जणां कही हां मांनु ही मंजुर है। जद

साहब कही बोहोत अछा अब अैमदनगर मैलो जीसकुं तय्यार कर जळदी भेज दो । इस वात की रपोट तमारा कैणा मुजब हम वडै साहब को रपोट करते हैं पछै.............. ।

आसोज वद ११ बुधवार नुं सूरसागर जाय अजंट साब नुं कै आया कै अैमदनगर मेलणा विचारीया है सो अठा सुं रवांने सुद १ नुं कर देसी विलकुल सला मां सारा रै तुल गई है ।

२ **अधिक**—४२ सिरदारां रा भला आदमी पोहकरण, आऊवो, रीयां, कुचांमण, रायपुर, नीबाज, रास, भादराजण, आसोप, षंरवो, षेजड़लो, लाडणु, मारोठ, कांकोणो, षीवसर, वगड़ी वगेरे ठीकांणा ४२ रा भला आदमी ।

३ **अधिक**—ओर उगुणी तरफ रा हाकम परबतसर, मारोठ, सांभर, नांवो, डीडवांणो वगेरे तथा उठारा सिरदार कुचांमण मारोठ बड़ु बोडावड बुडसु वगेरे कागद सूरसागर सु अजंट साब रे नांव रा लिषीजीया कै उठी की तरफ का पका बंदोबसत राषजो किसी तरै की गफलत राषजो मती । अे कागद लिष उकील रावराजा बादरसा रीधमल नुं सुंपीया कै जलदी रवांने कर दो ।

४ **पाठ भेद**—काती वद ६ मंगलवार परभात रा ईडर रै राजाजी री तरफ सुं भला आदमी चहवांण सुरजमल अर गुसाई लिछमणपुरी अर षालसा री वडारणीयां वगेरे आदमी घोड़ा ५० ऊंठ २० रथ २ वगेरे षटलो आदमी १२० आसरे ईडर रे राजाजी रो षलीतो नै ममोई हतै सादडै री छावणी रै लांग साहब री चीठी अजंट साब रे नांवै सुपारसी लाया कै जोधपुर री गादी उपर षोळै आवण रा हक ईडर वाळां का है ईण तरै रा कागद लाया अर परबारा सूरसागर आय डेरा कीया अर अजंट साब सुं मुलाकात करी जद साहब कह्यौ तमारा आणा ईस ठोड़ किस वासतै हुवा जद चवांण सुरजमल कही जोध की गदी पर षोळै आणै का हक हमारा है अैमदनगर का हक नहीं लगता है अर लांग साहब री सुपारसी चीठी लाया था सो अजंट साहब नुं दीवी अर कह्यौ कै अेमदनगर सुं तषतसिंघजी नुं जोधपुर वाळा लैण गया है सो मैं आवण देसां नहीं अर वडो फीसाद षडो होसी । तरै लडलु साहब कह्यौ अछा ईस वात का जबावं तुम कुं जोधपुर कै राज का उमराव मुतसदी देवेंगे । जद उणी सायत दिवांण उकील अर सिरदारां रा कांमैती सारा सूरसागर अजंट साव पास सूरसागर गया जद साहब ईणां नु कह्यौ कै ईडर का भला

आदमी आया है अर जोधपुर षोळे आवणै को हक हमारा है अर कोई ओर षोळे आवैगे तो उस से फीसाद हुवेगे ईसतरे ये केहता है जिसका जबाब ईसकु देवौ ।

जद सारां री सला सु उकील रावराजा वादरंसा रीधमल जवाब दीयौ के षोळै लेण रो ईकत्यार तो श्री माजी साहवां रो है सो म्हाराज तषतसिंघजी नु षोळै लीना सो लेण गया है सो दरकुचां अठै पधारसीज अर थे कहो हक म्हांरो है सो हक थांरै लगायो लागै नहीं आ वात तो मारै सारै है अर दुसरी वात थे आ कहौ छो कै म्हाराजा श्री तषतसिंघजी अठै पधारै है तिणां सु म्हांरे जोड़ होसी सो आ वात थे नादांनी पणा री नांहक करो हो । म्हाराज तषतसिंघजी तो हमै ३००००० तीन लाख राठोड़ां रा मालक है अर अेमदनगर रा राजा था जद थै जोड करताईज था अर हमें तो किरोड़ रुपीयां री जागीरी रा मालक हुवा है सो हमै तो ईडर सु उचै पद में है सो थे छोटै मुहढै मोटी वात मत करौ, थारै दरजे मुजब जवाब करो सारा राठोड़ां रा म्हाराज श्री तषतसिंघजी मालक है सुरज है । हमै थे पादरा-पादरा आया हो ज्यु पाछा परा जावो नहीं तौ थांरा हक में भूंडी हुसी । जद ईडर वाळाँ कह्यौ मांरो षलीतो लाया छां सो श्री माजीसाहवां सु मालम कराय जबाब मंगाय दो अर श्री हजूर सावां री मातमपोसी कराय दौ । पछै मैं पाछा ईडर नु चढ जासां । जद उणी बषत ईडर री तरफ रो अेवाळ मालम माजी सावां नु करायौ जद पाछो फुरमावणौ माजी साहबां रो हुवो कै ईडर वाळां नु केहदो के संमत् १८७४ तथा ७५ में थांरा राजाजी अठै षोळे आवण रो उदम कीयो थो ने अठारा चाकर इण वात री सटपट में था जिण नु तो सजा मीळी अर ईडर सु षळीता हुवा ई बंद हुय गई अर हमै थे षलीता ले आया पिण षलीतो हातै भालां नहीं ईण कांम वासतै अठै आवण में अर मेलण वाळां री भोळप है ईण ताछ उपर सु नाजर आय के गयो सो सारी विगत माजीसा रा फुरमाणा मुजब ईडर वाळां नु उकील रिधमल सुणाय दीया जद ईडर वाळां ना उमेद होय कह्यौ के मातमपोसी करावण री दुवायती हुवै तो कराय नै आज रा आज पाळा चढ जासां जद मातमपोसी कराय दूजै दिन पाछा परा गया ।

५ पाठ भेद—संमत् १६०० रा आसोज सुद ३ मंगलवार । राज रो कांम दीवांण वगेरे रे सारौ कांम तलैटी रा मैलां में हुवै जठै अजंट लडलु साहव सूरसागर सु आयो अर सारा पंचां नु कह्यौ कै अब राज का काम हाल

चलावणां सो कीस तोर पर चलावोगे सो हम को षुलासै बतावो सबब कै श्वरगवासी म्हाराजा श्रीमांनसिंघजी का षरच वहौत जादै उमदां थो जिससै करज बहोत रह गया तो अब असी नेक तजबीज करो जमां तो वधै अर षरच घटै तो लारलै करजे में वसुल होवै अर आयंदे कु पका बंदोबसत करो सो मुलक अर राज की सरसब जीवणी रहै। जद सारा उमराव अर दीवांण बगसी उकील वगेरे व्हां बैठा था सो सारा जणां कही कै आप म्हाराज साब का दोसत हो अर दांना हो जिसीज कही आ वात मांनु मंजुर है सो ईण वात री तजबीज कर दोयां च्यारां में षुलासै जबाब देसां............ । पछै आसोज सुद ६ अजंट साब फेर तलैटी रा म्हैलां आयो अर कारंदांनु पूछीयो के जमा बधाणै की तुम ने क्या तजबीज कीया जद दिवांण ईतला कीवी कै महामंदर उदैमदर री सायरां अर पटौ जिलो वगेरे गांव अर पींडतां गवईयां रा गांव वगेरे जबत लाष अढाई २५०००० रो मैळ कीयो है।

आसोज सुद १३ अजंट साव तळैटी रा मैलां आयो अर पंचां सु ताकीद कर कह्यौ कै हम १ हफतै से आये हैं जितरै तुमने क्या कांम कीया जद पंचां दीवांण सारां कही कै जमा बधाणै की तजबीज करां हां जितरे तो गढ उपर सु जनांना में सु श्री माजी सावां रा फुरमावणा मुजब १ नाजर ने १ वडारण षालसाही आय ने दिवांण नु कह्यौ के माजीसा फुरमावै है कै श्री...............जीसाबां नु थोड़ा हीज दिन धांम पधारीया नु हुवा है अर थे हमारहीज जबती बहाली करणी सरू कीवी है अर नां हनोज घर रौ धणी आयो है सो हाल ताकीद मत करौ, जद पंचां दिवांण वगेरे सारां जणा मंजूर कर लीवी कै मालम कर दीजौ आपरा फुरमावणा माफक सारो कांम हुसी। सो अै समाचार साहब री खबर में सूरसागर पोता कै कांम राज का अटक गया है।

आसोज सुद १४ अजंट साव तळैटी रा म्हैला आय सारा पंचां नु अर दीवांण बषसी उकील वगेरा सु आंम दरबार में आय तकरार कीवी कै चलता कांम अटकावो मत ईसतरै करौ कै जो रुपीया साटै षिजमतां है सो सब अबी की अबी ईस वषत जबत करो अर सबके पास सै हीसाव समजो। सिरकारी कांम में किसीका लिहाज मत रषो। जद उणीज वषत जोधपुर री हाकमी कोटवाळी अर जालोर सिवांणो नागोर मैड़तौ वगेरे षिजमतां जबत करी। पछै साहब सूरसागर गयो।

६ **पाठ भेद**—काती वद ७ जोधपुर वीचै नै अ्रेमदनगर वीचै दिवांण पीनसां रथां घोड़ा री बगीयां घोड़ा ऊंट सैज गाड़ीयां री डाक पांच-पांच सात-सात कोस री छैती सुं बैसांण दीवी नै राईकां रा सांतरा ऊंठा री दस-दस कोस में डाक बैसांण दीवी। हजूर पधारण वासतै ने जालोर गोढवाड़ सिवांणो वगेरे सारा सिरदारां नुं हुकम रा कागद दिवांणी लीषीज गया कै श्री हजूर अ्रेमदनगर सुं पधारे है तिणां री वंदगी में सांतरा घोड़ा ऊठां सुं जाय हाजर हुईजो। जिणमें गफलत राषी तो ओळंभो षावसो। सो लीषीया मुजब सारा जाय हाजर हुवा। पछै अ्रेमदनगर सुं कूच श्री हजूर साहबां रो मिती काती वद १२ संवत् १६०० रा वार सुकर नै हुवो सो डेरा गांव बरेव हुवा उठा सुं कूच काती वद १३ नुं हुवौ सो डैरा गांव वडनगर हुवा वडनगर सुं कांम कीणी सबब सुं वद १४ अर वद " (अमावस) तक रह्या उठै मिजमानी रूपराम मैंतो जो आगै अ्रेमदनगर रो कांम करतो थो जिण दीवी अर जोधपुर कांनी सुं लोग सांमा गया सो रोजीना मुकांम रा मुकांम लसकर में भीड़भाड़ वधै। लसकर में वडो हंगाम रे साथ श्री हजूर री असवारी पधारै। अ्रेमदनगर रा चाकर सोभावत उमजी रांणावत गंभीरसिंघ वगेरे आदमी १२५ आंसरै छड़ी असवारी साथै।

पछै वडनगर सुं कूच काती सुद १ नुं हुवौ सो मुरत जोधपुर दाषल होण रो काती सुद ७ रो नजीक आय गयो सो मजलां लंबी लंबी हुवै सो पालण ईलाके डेरा गांव पांथीवाड़े दांतीवाड़े हुवा पछै सुद २ मारवाड़ रौ गांव वडगांव वांकड़ीयै हुवा। सुद ३ डैरा भीनमाळ हुवा। सुद ४ गांव गोळ साहलै डेरा हुवा सुद ५ करवार डेरा गांव रायथल हुवा सुद ६ सनीसर डैरा गांव सालावास हुवा।

७ **अधिक**—पोस वद १ वीसपतवार श्री हजूर री असवारी नाळै री वारी मारग होय सूरसागर पधारीया घड़ी २ साहव सुं वातां कीवी पछै पाछा चांदपोल मारग होय नवचोकीये फतैपोळ मारग घोड़े असवार था रात घड़ी ४ गयां दाषल हुवा।

पोस वद २ सुकर अजंट साहब किलै पर श्री हजूर पास गया।

पोस वद ४ अदीतवार श्री हजूर साहबां री असवारी हाथी रै हवदे षवासी में ठाकुर पोकरण परधांन फतैपोळ मारग होय सिरे बजार होय

मांहलैवाग श्री..............जी रा गदर पधरावरण सारू भैंटीया श्री..........जी दुवार सु ले आया तिणां कनै पधारीया उठै वाग में घड़ी ४ रह्या भेंट हजूर रुपीया १००) कीया दुजा फेर सीरदारां मुतसदीयां रा २५) हुवा । पाछा हाथी री अंबाड़ी में विराज सिरे बजार होय श्री बालकीसनजी म्हाराज रे मीदर षाळै विराज पधारीया भेंट नीछरावळ कर पाछा घोड़े असवार होय गढ दाषल हुवा और उणीज दिन श्री मदनमोवनजी म्हाराज रै मींदर पधार दरसण भेंट नीछरावळ कर पछै गढ पधारीया ।

पोस वद ५ सोम । साहब अजंट किलै पर गया अर कह्यौ के अेमदनगर का जो लोग यहां म्हाराज साहब के संग आये है जिसका राज कै कांम में दषल नहीं रहेगा ।

८ **अधिक**—पोस वद ८ वीसपतवार जनांना म्हाडोळ सोझतीयै दरवाजै होय सिरे बजार होय फतैपोळ होय दिन पौर १ चढीयां गढ दाषल हुवा ।

पोस वद १२ सोम । श्री हजूर री असवारी ठाकुर पोकरण साथसीण सांडेराव सींधी साहबजादा रै डेरै मातमपोसी री तीजै पोर रा हुई पाछा नीमासांम रा गढ दाषल हुवा ।

पोस सुद ६ प्र० भोम । नाळै री बारी मारग असवारी सूरसागर हुई दोफार उपर दोय २ वजीयां रा पाछा पोहर १ सु पधारीया ।

पोस सुद ९ सनीसर । असवारी गांव पुनलै पधारीया घोड़े तथा षासै विराजीया नवो तळाव री तजबीज में अर पाछा पधारतां मामींदर पधारीया भेंट निछरावळ कीवी ।

९ **अधिक**—मिती माह वद ४ सोम । अजंट साहब किलै गया अर अेमदनगर वाळां बाबत फैर केणो कीयो के दषल नहीं रहेगा ।

१० **अधिक**—माहा वद १३ बुध । श्री हजूर री असवारी सूरसागर नाळै री बारी मारग लडलु साहब सु मिलण वासतै पधारीया घड़ी २ तीन विराजीया सीसटाचारी री दोसती री वातां हुई । पछै उठा सु हजूर साहब घोड़े असवार होय रावटी वालसमंद होय पाछा गढ दाषल नीमा सांम रा हुवा ।

उणीज दिन वद १३ लडलु साहब री मीजमानीयां ४ जगा हुई परधांन ठा० पोकरण, दीवांण मु० लिषमीचंद, उकील रावराजा सा रिधमल, सेठ जोरावरमल ।

माहा वद १४ विसपतवार सारा सीरदार सूरसागर लडलु साहब री मुलाकात वासतै गया पछै साहब पीण गढ़ उपर श्री हजूर सु जेपुर चढ़ण री सीष करण गयौ सारा सीरदारां मुसतदीयां री भोळावणां दीवी ।

माहा वद ''(अमावस) सुकरवार लडलु साहब जेपुर री अजंटी रा काम ऊपर दोफार आसरै चढ़ीया लारै पोछावण नु गांव डीगाड़ी तक दीवांण उकील वगेरे गया साहब दीवांण नु ने उकील नु कह्यौ जो तम आपस में अदावत रषोगे तो दोनु के हक में बुरा होगा अर दोनु बिगड़ जावोगे ।

११. पाठभेद—माहा सुद ११ श्री वड़ा हजूर माराजा मानसिंघजी री आज जनम उछव है सो वरस गांठ री रीत मुजब सारा सीरदार मुतसदी वगैरे मंडोर गया अर थड़ै में श्री हजूर री सबी पधरीजी जिणरै निजर निछरावळां वगैरे लांग डोडा छांटणा सरसतै मुजव अछव हुवौ ।

१२. अधिक—फागण वद ३ बुधवार दिवांणगी सि. गंभीरमल नु दुपटो हुवो सो दीवांण पालषी वैस सूरसागर अजंट साहब पास गया सो साहब बोली वतलावण में लुषासरी हुई सो काम दोरो धकतो दीसै है ।

१३. अधिक—चेत सुद १ मंगल श्री हजूर री असवारी नाळै री बारी मारग होय सूरसागर पधारीया षासै विराज नै जोसीयां री वगेची आगै घोड़ै असवार हुवा कारण कै अजंट साहब घोड़े असवार था ।

१४. अधिक—उण दिन दफतर री दरोगाई जोसी परभुलाल सींभुदतोत ;तां हुई दिन पोर १।। चढ़ीया आसरै अर इंकत घड़ी दोय मोसर रयौ अर षातरी मोकळी फुरमाई के सीरकारी काम में षातर कीणी री राखजै मती थारो भरोसो जांण हाल ओ काम भळायो है ।

१५. पाठभेद—जेठ सुद ६ अदीतवार—श्री हजूर री असवारी श्री मदनमोवनजी म्हाराज मंदर वाळा ठाकुरजी षरच नहीं चालै जिण बां । सैर बारै जोसीयां री बगैची चांदपोळ बारै छाडांणै रूप पधारीया था सो कोई दिन उठै जोसीयां चडवांणीयां री बगैची में विराजीया रह्या पछै सारा जणा अरज कर श्री हजूर री असवारी हुई सो आगै रोजीना रु० ५) थाने फेर सवाय में रुपीया ३) फेर कराय दिया हमै जुमलै रुपीया ८) आठ रोजीना कराय दिया भेंट कीवी । पछै उठासु माजी रा बाग में १ षाषी बैठो थो जठै पधारीया । असवारी षासा री थी पछै घोड़ै असवार होय पधारीया ।

१६. अधिक—जेठ सुद १० सोम श्री हजूर री असवारी दिन घड़ी ४ चढ़ीयां रा सीरै बजार होय पधारीया बषतसागर रो काम देषण नुं सो मारग में श्री मदनमोवनजी महाराज रो पधारणो जोसीयां री बगैची सु हुवो सो हजूर षासै सुं उतर श्री मदनमोवनजी म्हाराज नुं मिंदर में थापन कराय आगा पधारीया सो वगतसागर री नैर रो कमठो देष आगा अषैराज सिंघवी रै तळाव पधारीया उठै ठैहरीया पछै लारलै दिन रा पाछा सै असवार होय चांदपोळ मारग होय लोडां री गळी नवचोकीये होय फतैपोळ मारग दाषल हुवा ।

१७. अधिक—दु० सां० सुद १४ तथा १५ मंगल राषड़ी पुनम रो सिरै दरबार सरसतै मुजब हुवो ।

१८. अधिक—भादवा वद १४ अेक रंगरेजण आपरा घर रा धणी रै तरवार मारी तिण रो निरधार सुं बकारी हमार अजंट साब रा कैणा सुं वजीर सिंघ जैपुर रो वासी जिण नुं अदालत रो ओदो दिरायो राज सुं तिण न्याव कर रंगरेजण नुं गधै चढ़ाय सैर बारै कढाय दीवी ।

भादवा सुद १ सुकर श्री हजूर री असवारी गोळ री घाटी मारग षुलै षासै विराज मेड़तीये दरवाजै बारै नवलषौ है जठी री तरफ छीतर कांनी घोड़ा फेरण नुं पधारीया पाछा नीमा सांम रा दाषल हुवा ।

भादवा सुद २ सनीसर श्री बालकिसनजी म्हाराज रा मींदर कनै घाटी कनै श्री हडूमानजी रो मींदर है जठै १ चोतरो मोटो करावणो जिण ऊपर घणा आदमी बैसे सो तजबीज अजंट फीरंच साब रा कैणा सुं कमठो सरू राज सुं करायो सो पूरी ताकीद है सो त्यार वेगो ईज हुसी ।

१९. अधिक—मीगसर सुद ३ हजूर साहबां री असवारी सूरसागर हुई उठां सुं अजंट साब सांमल होय बालसमंद पधारीया ।

मीगसर सुद ४ असवारी गुलाबसागर री नेहर नवी बंदीजै जठै देखण पधारीया बगी में विराज नै रांणावत गंभीरसिंघजी अर पंवार धीरो पण बंदगी में बैठा बगी उपर पाछा पधारतां तळैटी रा म्हैलां घड़ी १ वीराजीया पछै गढ़ दाषल हुवा ।

मीगसर सुद ५ असवारी राम बावड़ी उपरलो बाग हुवै जठै असवारी में छोटी हथणी अकेला विराजीया पछै उठा सुं भेरवा री भीड़क देषण पधारीया पछै पाछा नाळा री बारी मारग पधारीया ।

मीगसर सुद ६ असवारी कायलांणै बगी में विराज पधारीया पाछा रात रा दाषल हुवा।

मी० सुद १० गुर असवारी कायलांणै पधारीया।

मी० सुद ११ सुकर असवारी रांणीसर पदमसर रे नाळां री मरमत हुवै जठै देषण पधारीया।

मी० सुद १४ असवारी कायलांणै पधारी।

असवारीयां काती सुद १३ लगायत मिगसर सुद १५ तांई आठ ८ हुई।

२०. अधिक—पोस सुद ७ फिरंच साहब गिरांयट साब री अेवज काम करता था सो गीरांट साहव आय गया तिण सुं मंडलेश्वर री त्रफ चढ़ण री तजबीज है।

२१. अधिक—म्हावद "(अमावस) श्री हजूर री असवारी हाथी विराज सूरसागर अजंट साहब पास गया अजंट साहब पण हाथी बैस षवासी में चोपदार वळदेवो बेठो, जोसीयां री बगेची तांई सांमा सदामंद मुजब आया।

माहा सुद १ श्री हजूर री असवारी विदीयासाळ रो कमठो देषण पधारीया। कमठा रो दरोगा जोसी हंसराज सुं कमठा री हाजरी ले अेक घड़ी तक ठैरीया, पछै पाछा पधार गढ़ दाषल हुवा।

म्हासुद ४ असवारी हथणी उपर विराज अेकला सूरज बेरा री तरफ पधारीया, पाछा नीमा सांमरा दाषल हुवा।

२२. पाठभेद—फा० सुद १४ सनीसर श्री हजूर री असवारी फाग री हाथी रै हवदै सिरै बजार षवासी में..........मुढा आगै बंब पांणी रा गुजरात कांनी रा छूटै गाडी में सो कळ दाबै जरां पांणी १५ हात आसरै दूजै षंड तक भिजोय देवै, अर गुलाल मोकळी उछळे अर, बजार में कड़ाव ठोड़ ठोड़ पांणी सुं भराय धरीया सो बजार में पांणी रातो गुलाल रा सुं बाळा हालीया। बडी धांम धूम री असवारी हुई। अजंट गीरांयट साब पिण हाथी बैठा साथै, पछै श्री हजूर सा तो म्हामींदर लीषमीनाथजी कने पधारीया सो उठै पिण पांणी रा हवद भराया सो उठै पिण कुसी कीवी, पछै गोळ री घाटी मारग असवारी गढ़ दाषल हुई।

२३. अधिक—वैसाष सुद ६ असवारी श्री हजूर री देईजर हुई पाछा सूरसागर हुय पधारीया।

वैसाष सुद १५ व्यास पदवी व्यास हरखचंदजी सुं जबत हुई।

२४. अधिक—जेठ वद ७ डाकटर नुं गढ माथै बुलायौ डाढ री पीड़ रै ईलाज सारू।

२५. अधिक—मीगसर सुद ६ श्री हजूर री असवारी बाळसमंद री हुई। पछै जोसी प्रभुलाल आपरी न्यात रा घर जेसलमेर बीकानेर वगेरै सारी मारवाड़ तथा परदेस रतलाम आंमजरो जैपुर उदेपुर वगेरै चिठीयां कुकम पतरीयां बुलावण वासतै लिषी विदीयासाळ में, कै जोसी परभुलाल व्रिहम जिग्य करै है जिण उपर सारा सिरदार म्हासुद ५ ऊपर पधारजो। अर चोवठीया जोसी नै चतांणी व्यास वगेरे इणां सांमल नहीं तीकै सारा सांमल होय श्री रामेश्वरजी रै मींदर वैठा चिठियां लिषी कै परभूलाल न्यात री मरजाद भांगै है सो लारला हीत्या कीयोड़ा न्यात बारै है जिणां नुं न्यात में भेळे है सो सिरदार विचार नै आवजो, सो चिठीयां म्हैल दी।

मिगसर सुद ९ श्री हजूर री असवारी कायलाणै पधारी।

मिगसर सुद ११ श्री हजूर री असवारी तवोलै हुई। पछै उणीज दिन गुलाब सागर में न्याव रो डूंडो नषाय विराजीया सिरदार षास पासवान सांमल हाजरी में वैठा, रात घड़ी ६ गयां आसरै वारै पधारीया।

पोस वद ११ श्री हजूर री असवारी कायलांणै पधार तुरत पाछा पधारीया।

माहावद ५ श्री हजूर री असवारी कायलांणै भेरवैरै भाखर होय घोड़ै असवार होय पधारीया अर पाछा पोर २ सुं पधारीया।

२६. अधिक—फागण सुद १३ श्री हजूर री असवारी फाग री हाथी विराजीया लारै षवासी में हाथी उपर ठा० आसोप सिवनाथसिंघजी थो, बजार में पांणी रा कड़ाव ठौड़ ठौड़ भरीजीया गुजरात कांनी रा बंब ३ गाड़ी में घालीयोड़ा वेहै सुं पांणी री धारा दस-दस पनरे वीस-वीस हात आगो तथा उँचो जावै जिण सुं आदम्यां रा कपड़ा भींज तर हो जावै, गुलालां उडै।

२७. अधिक—चेत वद ७ अजंट गीरांट साव आबूजी री हवा षावण वासतै चढीया साथै मेमसाव बडे आदमी री वेटी सो साहब लाड वणो राखै, पिण सिरकारी मामला में दषल नहीं।

२८. अधिक—वैसाष सुद ४ आबूजी उपर अंगरेजां रै घोड़ा दौड़ावण री हारजीत री घुड़दोड़ हुई। २ अंगरेज बरोवर घोड़ा उभा राख हजार हजार

रुपीयां री होड़ घोड़ो पाछो रह जाय जिको होड़ रा रुपीया १०००) देवै, सो तमासौ देषण आदमी ४००० च्यार हजार आसरै भेळा हुवा सदर लेन साहब पिण घोड़ो दोड़ायो सो टोपी माथे सुं पड़ गई सो भालै सुं उठाय टोपी जमी उपर सुं उठाय पाछी पैर लीवी ।

२९. अधिक—सो पछै मीती असाढ सुद १० गुरवार गिरांट स्हा मिसन साहा डकासलसा अर मुनसी फजर रसूल अर राव राजमल अै आबूजी सुं नीचा उतर जोधपुर आया अर अजंट साहब रौ दफतर अमलो अर मी साहब आबूजी ऊपर रहा । पछै जोधपुर सुं बगसी सिं० फोजराज ठाकुर भादराजण तथा उकील राजमेल वगेरै आदमी १५०० तथा २००० आसरे सुं जोधपुर सुं चढीया सो खींवसर नागोर कांनी गया । चारूं कानी खोजां री निरणै कीवी सो बुढसु रै गांवां में निजर आया । पछै बुढसु वाळा कुचांमण वाळां रा पटा में खोज नांखीया, कुचांमण वाळा रा कवर केसरीसिंघजी पीण बाहार वाळां सांमळ था पिण बुढसु वाळां रै नै कुचामण वाळां रै आपस में अणवणत तिण सुं बुढसु वाळां साहब कनै सालसाजी कर वात जलाय दिवी जिणसुं कुचांमण वाळां रा पटा रा गांव साहब रा कैणा सुं दोय चार जबत कर दिया । पछै वाहर रा तुंगा २ तीन कर खोजां री लार हुवा सो वारोटीयो जवार जीतो वीकानेर वाटी में खास वीकानेर में नास नै वड़ गयो सो वीकानेर वाळां सुंपीयो तो नहीं नै कहीं ओ कठै ही जावै आवै तथा फैल फितूर करै जिण री जुमैवारी जांभनीयां री छै सो वीकानेर वाळां रै गळै घाल आया । अर डूंगजी..........ईलाका रो गांव..........री मैड़ी में बड़ संभ गयौ अर आडो अड़ मरणमतै हो गयो जद वचन दीयौ कै नाहक सांमेर है तुं जीवां वचीयो ससतर धर बारे आयजा जद मैड़ी सुं बारै आयौ कै उणी सायत पकड़ लीयौ । अर साहब सिकतरां कह्यौ अजमेर ले चलो सो अजमेर ले गया, तरै जोधपुर वाळां डूंगजी नुं मैं वचन दीनो है सो मोनू सूंप देवौ, विसेस केणौ हुवौ तरै पाछौ जोधपुर वाळां डूंगरजी सूंप दीनो सो जोधपुर लै आंया सो सलेमकोट में कैद कर राख्यौ । पछै समत १९.......में सलेमगढ़ में मर गयो ।

३०. पाठभेद—वैसाख..........५ वार सेरकरण वगैरे कोटवाळ काम रै मुदै अेमदनगर गया था सो ईडर वालां मंमोई हतावळा साहब लोगां सुं नालस कीवी कै म्हाराजा तखतसिंघजी जोधपुर खोळै गया जद लारै म्हाराजकंवार जसवंतसिंघजी नुं अेमदनगर री गादी सूंप गया सो तो खैर परंत उणां नुं ही जोधपुर बुलाय लीया नै हमें माल असबाव अेमदनगर में है सो लेवण वासतै

पंवार सेरकरण वगैरे आया है सो ले जासी अर अेमदनगर में हमें मालूम कोई है नहीं सो जोधपुर उणारै आयो तो अेमदनगर सिरकार मांनु दिरावै ईण ताछ दरखासत ईडर वाळां कीवी तरै अेमदनगर खालसै कर सीरकार अंगरेजां थांणौ बैसाण दीनो। अर पंवार सेरकरण जोधपुर रो कोटवाळ वगेरै जोधपुर सुं गया था तिणां नुं सारा नुं अटकाय कैद कर दीया रा समाचार श्री हजूर में मालम हुवा तरै जोधपुर सुं अजंट मालकम साहब कनै आबूजी ईण कांम बाबत म्हैलीया—

१ रावराजा बाहादरसा रिधमल

१ सिंघवी कुसलराज

१ म्हेतो रूपराम अेमदनगर रौ

१ उकील भं० सीवचंद आगै थोईज

१ नायब उकील लालो ईसरीप्रसाद थोईज

ईणां सारां जणां मालकम साहब सुं परउत्तर कीयो जद साहब कह्यौ कै अै मुकदमा मंमोई ईलाके रा है सो मंमोई हातै का जाब मंमोई कै लाठसाहब कै इकत्यार है हमारा लीखणा तो वडै साहब कुं है सो म्हाराजा साहब कै लिहाज से हम रपोट जरूर करेंगे परंत अै मामला मुसकल का है क्युकै श्री म्हाराज साहब कुं महाराज कंवार जसवंतसिंघजी कुं अेमदनगर से जोधपुर बुलाणै का क्या जरूर था। पछै अै मुसायब तो आबू ऊपर दस वीस दिन रह जातरा देवतावां री कर पाछा जोधपुर दर कुचां आय गया..........। पछै श्री हजूर साहबा १ उकील तो मंमोई मेलीयो अेमदनगर रो ईमरतलाल अर १ उकील सईयद अकबर अली घोड़ा फेरणीयों री उसताद पदवी वाळो सो विलायत गयौ सुणीयो नै १ उकील आसोपो उतमराम नुं कलकत्ता लाठ साहब कने मेलीयो सो लाठ साहब हवा खावण नुं सपाटु रै पाड़ां गयो सो उतमराम पीण सपाटु रै पाड़ां लाठ साहब कनै गयौ।

३१. अधिक—मिती पोस नीमी सुद १५ ओर ठाकुर पोकरण वभुतसिंघजी अर सोभावत उमजी आसोपो हीरालाल सवाईराम रौ बेटो अै तीनू जणां नुं जैपर बाईजी श्री चांदकवरबाईजी री सगाई रो टीको जैपर रा राजाजी श्री रामसिंघजी सुं कीनी तिण रो लेने दर कूचां जैपुर गया। दसतूर मुजब सारा नुखता हुवा, घणा दिन उठै रया तिंण में कांण मुलायजा में फरक रेह गयो, जैपुर में चामू सामोद रा रावळां रो राज में कथन ने ठा० वभूतसिंघजी रा नाथावत सासरा सो ऊमजी रै कुरब कायदा में ठा० वभूतसिंघजी सुं सुकन कम

रह्यो। पछै जोधपुर आया जद उमजी श्री हजूर में मालम करी कै जैपर में मारी ईजत ठा० वभूतसिंघजी घड़ती कराई, वगैरे अरज करी। पछै ठा० वभूतसिंघजी गढ़ ऊपर श्री हजूर रै मुजरै आया वातां हुई तिण में श्री हजूर ठा० वभूतसिंघजी सुं पूरो लुखास खायो, तरै ठाकुर पण मन में कुंद होय गया अर पोकरण री सीख कर तुरत चढ गया अर मन में जांणीयो के बंदगी करतां अफुटी वैराजी हुवै सुं जांणी देखी जासी।

३२. पाठभेद—पोस सुद २ श्री हजूर री असवारी कायलांणा सुं गढ़ पधारीया अर दीवाणगी म्हेता विजैमल फौजराज वगसी रौ बेनोई किसनगढ़ रौ वासी रै हुई श्री हजूर साहव तौ फोजराज ने धामी सुं लीवी नहीं नै इण नुं दीराई। सिरदारां रो २४ ठिकांणावाळां २३ कलम मुलक रै बंदबसत वगैरे री दीवी थी जथावंदी रो रासो खड़ो करीयो थो सो फौजराज मुसदी पैसा सुं खटनटी कर पोकरण ठा० वभूतसिंघजी सुं समजास मिलावट कर गुगदो ढिसमस कर ढीलो पाड़ दीनो, जिण बंदगी में दीवांणगी फोजराज ता० हुय विजैमल नुं हुई, पैला नांव विजैसिंघ थौ सो अठारे राज में मुसदी नुं सिंघ लिखीजै नहीं तिण सुं मल लीखण रो फुरमायो.......... । श्रोर फोजराज रो कामैती सिं० जसरूप सवाईराम आसोपा रै रासा में फोतेपोळ री वायकी बावत अटकाव में थो जिण नुं पण सीख हुई। दीवांणगी रो सिरपाव में दुपटो हुवो। दीवांणगी तागीरात राव राजमल री। राजमल रै दीवांणगी समत १९०१....... नुं हुई थी सो कुल म्हीना..........दीन रही।

३३. पाठभेद—भादरवा सुद ४ जोधपुर रै चोंतरे री मुसरफी थांनवी गवईया हरदेव बलदेव रा छोटाभाई रै हुई। तागीरात.......... ।

३४. अधिक—मिती प्र० असाढवद-१ श्री हजूरसा रा लसकर श्री हरदवारजी रा डेरां सुं तथा म्हैरठ रा डेरा सुं पाछा घिरतां रा समाचार आया कै हरदुवार ऊपर मुकाम...... ....रया हंमें उठा सुं फौज रौ कूच जेठ सुद..........हुवो सो वरसगांठ रो उछब म्हैरठ में हुवो अर फेर बगीयां भाड़ै कीवी है सो श्री हजूर साहब तो पछाड़ी डाक में पधारसी नै लसकर अगाड़ी रवांने हो जासी सो मथुराजी पधारसी..........

३५. अधिक—असाढ सुद ६ खबर लसकर श्री हजूर साहबां रा सुं आई कै श्री हजूर रै लसकर रा डेरा रामगढ़ हुवा अर हमें जैपुर पधारण री ताकीद है..........जिण ऊपर जैपुरा मुसाहबा जैपुर रा अजंट साहब नुं केफीयत लिख नै दीवी के म्हाराज श्री तखतसिंघजी गंगाजी जावती बखत यहां आया था तो

बहोत दीन रया अर फेर सुणीजै है के मुथराजी तो पधार गये हैं अर फेर यहां पधारेंगे तो हमारे रांज की आपसै ओ दरखासत है के यहां अब नहीं पधारें तो बहोत अच्छी वात है क्युके यहां पधारणा में हमारे राज में हर सुरत सै राज के काम में हरज पड़ता है ईण वगैरे लंबी चवड़ी लिखावट कर जैपुर रा अजंट साहब नुं दीवी तिण केफीयत री नकल जैपुर रे अजंट आबूजी वडा साहब नुं म्हैली अर वडा साहब उण केफीयत री नकल जोधपुर रा उकीला नुं दीवी अर श्री हजूर साहवां रा लसकर सु पिण आबूजी ऊपर लीखावट आई कै श्री हजूर साहबा रौ पधारणो जैपुर हुसी बाईजीसा सुं मीलसी अर जैपुर वाळा ईण बात सुं राजी नहीं है सो ओड़ी नी हुवै के जैपुर वाळां रा कैणां सुं वडो साहब मंजूर कर लेवै तो ईण में आंपणी बात लोकिक में बेढब दीसै सो हर सुरत सुं उदम उपाव उतर पडुतर कीजो। पण जैपर हुय जोधपुर पधारण में ठीक है तिण ऊपर जोधपुर रा उकीलां वडै साहब सुं पड़उत्तर कीयो के म्हारा हजूर सा रो पधारणो जैपुर बाईजीसा सुं मीळ पछै जोधपुर पधारसी सो ईण वात सुं जैपुर वाळां नाराज है तो म्हे खरच सरभरा जैपुर रै राज सुं नहीं लेसां पिण बाईजी सा सुं मिलणो तो जरूर हुवो जोईजै आ वात जैपुर वाळा दरखासत करे है सो वेकायदे री छोटी वात करै है, अर ओड़ीज मरजी जैपुर वाळां री है तो म्हांरै श्री हजूर साहव जैपुर में थोड़ा हीज दिन रहै बाईजीसा सुं मीळ तुरत जोधपुर पधार जासी जद वडै साहव आ वात मंजूर कर लीवी। और खवर आई के श्री हजूर रा डेरा जैपुर रै गांव कोसांणै हुवा।

असाढ सुद ७ दु० डेरा लसकर रा खास जैपुर हुवा। म्हाराजा रामसिंघजी श्री हजूर साहवा रै सांमा..........विराज ने घाट तांई दसतूर मुजब पधारीया।

पछै वाईजीसा सुं मिलण नै जनांना सहेत म्हैलां में पधारीया श्री हजूरसा उठैईज अरोगीया। जैपुर में मुकांम..........रया पछै दूजा असाढ वद.......... नुं जैपर सुं विदा हुवा सो डैरा गांव..........पछै..........सांभर डेरा हुवा.......... सांभर सुं डेरा गांव..........हुवा पछै किसनगढ़ डेरा हुवा किसनगढ़ रा राजाजी सांमा कोस..........तांई..........ने आया पछै श्री हजूर गढ़ में जनांना कंवरां सहेत म्हैला में पधारीया। मुकांम रया मीजमांनी हुई। श्री हजूर उठैहीज अरोगीया ओर सदामंद रो दसतूर है कै जोधपुर रा राजाजी किसनगढ़ पधारै तरै किसनगढ़ वाळा राजाजी रुपीया ५०००) नीजर करै है री पटानवेस धनरूप ख्यात लारली रो दसतूर देख हजूर में अरज करी सो श्री हजूर म्हैरवांणी रै राहा सुं माफ कीया..........पछै..........किसनगढ़ सुं कूच दु० असाढ़.......... हुवो सो डेरा.......... ।

दूजा असाढ़ सुद २ श्री हजूर जनांना कंवरां सहैत श्री गंगाजी सुं जात्रा कर साथ खुसी रै पधारीया। दसतुर मुजब सांमैळौ सेखावतजी रै तळाव तांई गाजां वाजां सुं वधाया। वडबेड़ा वनीजीया, पछै परबारा बाळसमंद दाखल हुवा............।

पछै सुद ५ गुरवार श्री हजूर बाळसमंद सुं हाथी विराजीया लारै खवासी में ठा० आऊवो कुसालसिंघजी नागोरी दरवाजा मारग होय सिरै बाजार सींणगारीयो, बजार होय फतैपोळ मारग गढ़ दाखल हुवा। सीलक हुई तोंपां रा तीर १२७ आसरै छूटा।

श्री हजूर तीरथजात्र करण सारू जोधपुर सुं फागण सुद ४ कूच कर पधारीया था नै पाछा दूजा असाढ़ सुद ५ गुरवार गढ़ दाखल हुवा। सो कुल मास ५ दीन १ सुं पधारीया।

दूजा असाढ़ सुद ६ सुकर वडा साहव लारन साहेब आबूजी सुं आया तिणां री पेसवाई में मुसायब रोयट तांई सदामंद मुजब गया नै श्री हजूर साहब रातैनाडे १ डेरो खड़ो पैली हुय गयो थो जिणमें दाखल हुय अधघड़ी तांई विराजीया रया जितरै वडो साहब जालामंड मारग सुं आय गयो तरै डेरा मांय सुं घोड़े विराज सांमा पधारीया। मुलाखात दसतूर मुजब हुई पछै वडौ साहब तो बजार मारग हुय सूरसागर दाखल हुवा नै श्री हजूर साहब गढ़ दाखल हुवा।

दु० असाढ़ सुद ७ सन वडा साहब अर अजंट साहब श्री हजूर साहवां कनै मुलाकात करण सारू गढ ऊपर गया, दसतूर मुजब पेसवाई वगैरे सारो कांम हुवो कुरसीयां ऊपर मुलाकात हुई। अर रूस री ने रूम री लड़ाई री जीकर घंटे १ तक वडा साहब वातां कीवी। पछै आसाढ सुद ८ वडो साहब डाक में नागौर होय वीकानेर गया उठै मुकाम ४ तथा ५ हुवण री वडा साहब कयो सुं उणी मुजब सफर हुसी। अौर श्री हजूर री असवारी बाळसमंद सुं सूरसागर वडा साहब कने पधारीया सो वडो साहब अर अजंट साहब घोड़ां असवार होय श्री हजूर रै सांमा रावटी तांई गयो फेर पेली तरफ गया।

३७. पाठभेद—आसोज वद १२ नुं जोधपुर रो अजंट मीसन साहब वडा साहब कनै सोजत चढीयो। जारे उकील सिं० सांवतराज नै चांपावत पीरदान गया

सो आगै वडो साहब तो आऊवै जाय झगड़ो सरू कीयो सो झगड़ो आगे हुतो थो सो तोपां री लड़ाई दुतरफी हुई तिण में काळां रा ने आऊवै में रजपूत लोग था जिणां रा पग छूट गया नै पाछा आऊवा में वड़ गया सिं० कुसलराज पण हाजर थो। और काळा लोग २० पचीस मुवा घायल हुवा।

और अजंट मीसन साहब हुती लड़ाई में दिसा भुलो होय वडा साहब री फोज रै भरोसे काळा लोगां री फोज में भूल नै परो गयो सो काळा लोगां री निजर चढ गयो जरै उणी सायत बंदूक री दे मार नांखोयो, अर २ असवार राजा रा था सो पण मारीया गया। अजंट री लोथ लेवण वासतै बडै साहब बजीरसिंघ नु मेलीयो सो लोथ दीवी नहीं नै सुणी कै आसोप रो ठाकुर पिण आऊवै में हीज थो जिण अेड़ा आखर कया कै अजंट रो माथो तो आऊवा रे दरवाजै टेर देसां पण लोथ तो देवां नहीं।

३८. पाठभेद—गिरांयट साहब आगै जोधपुर में अजंट थो सो म्हेरठ री फौज में अपसर थो सो तीन दिन री लड़ाई में खाणो खाय सकीयो नहीं पांणी पी सकीयो नहीं सो पछै दसतां लाग चौथे दिन मर गयो। अर दिली भीळ गई, काळा लोग मारिया गया। बाकी था सो जीव ले ले भाग गया रा समाचार लागा तो पका परंत श्री हजूर फुरमायो के बडा साहब री चीठी आयां पको तोल आवसी। और पंजाब री तरफ गीसती फौज अंगरैजां री हजार ४००० थी गोरा वगैरे सु पिण दिली आय सांमल हुवा।

३९. पाठभेद—काती सुद ५ सुकर और खबर आई फौज मांह सु कै जायल रूपाथल आसपास थोड़ा आदमीया रै काळा लोगां सु राज री फौज वाळां रै झगड़ो हुय गयौ सो काळां री तीख रही। राज री फौज में मुसायब सिं० कुसळराज फेर खीची उमेदकरण तथा नाजर.......... तथा मु० पुनमचंद था सो मतै मतै चालै सारां री सला अेक हुवै तो गांवा रो विगाड़ हूण देवे नहीं पिण सो हाल तो रईयत चु थीजै है जिणरो बंदोबसत हाल है नहीं।

४०. पाठभेद—मिगसर सुद ६ रवि, खबर आई कै काळा लोग आऊवै वाळां जिणां लारै जोधपुर रे राज री फौज ठाकुर कुचांमण केसरीसिंघजी अर सिं० कुसलराज वगैरे है जठा सु समाचार आया जंभर ईलाका रो सेर नांरनोल जठै डेरा हुवा अर दिली समाचार अंगरेजा रै घर में पैला लिखावट गई थी के छावणी अेरणपुर का वदमास लोक छावणी विगाड़ आऊवां में जोधपुर का

अजंट कुं मार मारवाड़ ढुंढाड़ में जुलम करता उदर की तरफ आवै है सो ईस वदमास लोगां कुं सजा संगीन मिलणां चाहियै। सो उण चीठी री लिखावट सुं दिली सुं जरणैल साहब आदमी ३००० तीन हजार सुं अर तोपां ६ हाथी जुतीयोड़ी गोळा २५ पचीस सेर रा खावै जिसी तोपां साथै नै मिगसर वद " (अमावस) नुं नारनोल आया सो अेरणपुरा री छावणी वाळा लोग सांमा कोस १ जाय जरणैल सुं जगड़ो कीयो सुं जरणैल मारीयो गयो गोळै री लाग नै, घोड़े चढीयै रै लागी तरे जरणैल अपसर मारीयो गयो, तिण नुं तो उसी बगत डोळी में घाल लीयो नै झगड़ो सरू राखीयो अर जोधपुर अर जैपुर री फौज थी नुं कयो कै तम चारू गिरदं बंदवसत रखो सो ये वदमास भाग सकै नहीं सो तोपां री लड़ाई दिली री फौज रा गोरां ईसी कीवी जिणसुं वदमासां रा पग कचा पड़ नारनोल में बड़ गया। कितराक भाग गया किताक मारीया गया तोपां वगैरे अंगरेजी असवाब थो सो सारो दिली री फोजवाळां रे हाथै लागो अर घोड़ां रा असवार तो हुती लड़ाई में नाठ गया मतै मतै अर पाळा लोग था सो २०० अढाई सै मारीया गया। वारोठीया गुलर आलणीयावास धणकोली बाजुवास वगैरे था सो सारा मतै मतै पड़ पड़ भाग गया। काळा लोग वदमासां री फौज विगड़ गई लारै रया जिणा नुं मारीया तथा पकड़ लीया ससतर खोस लीना पछै। सैर नारनोल फोज अंगरेजीवाळां लूट लीनो। अर तोपां सुं मार विखेर नांखीयो। अर काळा लोगां झगड़ो चोखो कीयो तिणां री तारीफ सिरकार अंगरेजी में हुई कारण कै थोड़ा मिनखां झगड़ा चोखा-चोखा घणां आदमीयां सुं कीया तिण री तारीफ है।

४१. अधिक—और डीसै री छावणी री तरफ विलायत सुं गोरां री फोज आई है साथै आदमी गोरा १००० बाकी १००० दूजा चढीया पाळा घोड़ा ऊंट गाडीयां दुरसत कारखांनै सुं आवै है। तोपां नग १३ मोटी-मोटी है तिणां रै सांमा सरभरा वगैरे री मदत मुद्दे म्हा वद ७ नुं चढीया, साथे जमीत रा घोड़ा रास नीवाज़ रा छै।

४२. अधिक—और सुणी कै वारोठीया ठा० आऊवा रा उदेपुर ईलाका में है परंत उदेपुर वाळा पकड़ावण री वात में नहीं। तिण वासतै दिवांण विजैमल सांमल था वडै साहव रा सिकतर सो तरक खाय अर वडा साहब पास गया अर दिवांण विजैमल नुं हाल हुकम है के कांकड़ ऊपर फौज हाल साबत रखौ।

४३. अधिक—असाढ वद २ सोम श्री हजूर सुं फुरमायो कै कायलांणे में नवो सैर वसवावणो जिण बाबत सारा मुसायबां नुं फुरमायो अर बजार रा म्हाजनां

नु पण बुलाया, पछै सारा जणां सला मीलाय अरज करी कै अठै स्हेर बसण लायक जगा नहीं है जिणसु हाल मोकुब राखीयो ।

४४. अधिक—म्हा सुद १ प्रथम गुर और केसरकंवर बाई म्हाराज श्री पिरथीसिंघजी री बाई श्री हजूर साहबा रै वडा भाईजी अैहमदनगर में राज करता था जिणां रै बाई जीणां रो सगपण जैसलमेर रा रावळ रणजीतसिंघजी सु करण मुदै व्यास धनरूप मोठालाल रै बेटा री मारफत जोसी साहबराम नै व्यास परसोतम हसतै उमेदसिंघजी सोभावत तथा पटानवेस पंचोळी धनरूप री मारफत मालम कराई अर तजबीज होती पछै तुरत हीज काळा लोगां रै नै अंगरेजां रे फिसाद खड़ो होय गयो तिण सु जेज पड़ गई अर खास परवांणो व्यास धनरूप रे नांवै पटानवेस धनरूप री मारफत रो लिखीजीयो । पछै हमार श्री हजूर पटानवेस धनरूप अर गोपालराव नु फुरमायो के जैसलमेर री तरफ सु रावळजी रौ सगपण केसरकुंवर बाई रौ करण वासतै जेसलमेर रा व्यास धनरूप री तरफ सु आदमी हुवै तिणां नु बुलाय सगपण री बात करलो अर जैसलमेर समाचार मैलो सो सावो थापण में आवै । तरै पटानवेस धनरूप जोसी साहबराम जोधपुर रो वासी अर जैसलमेर रो व्यास परसोतम धनरूप री दुकान ऊपर है तिणां नु बुलाय कह्यौ कै थांरै रावळजी रो सगपण केसरकंवर बाईजी सु करण री घणा दिनां सु म्हां हसतै करो छो सो म्हे श्री हजूर में अरजां कर वात जमाई है सो जेसलमेर कासीद हमार चलाय देवौ जद साहबराम ने परसोतमदास कह्यौ व्यासजी धनरूपजी रै नांवै कागद थे लिख दो अर म्हैई लिख देसां अर कासीद चलाय देवां । जद पटानवेस धनजी तरफ रा नै गोपालराव री तरफ सु कागद व्यास धनरूप रै नांवै लिखीजीया कै पैलो ब्याव अठै हुसी दसतूर मुजब पछै दूजा ब्याव भलां ही मरजी आवै जठै कीजौ । वगैरे समाचार लिख कासीद जैसलमेर रवांनै कीयौ । साहबराम परसोतम हसतै ।

म्हा सुद २ संन । ओर श्री हजूर साहबां पटानवेस धनरूप नै गोपालराव नु फुरमायो कै जेसलमेर कासीद चलायो है जिणरो जाब मोड़ो भुगतसी लंबी दूर है सो अठा सु घोड़ां री डाक बैसाण दो सो समाचार तुरत भुगतै, जद हुकम मुजब डाक में घोड़ा २० तथा २५ री डाक जोधपुर विचै नै जैसलमेर विचै बैस गई । अर अठै ब्याव री सरबरा त्यारी हो रही है ।

डाक बैठी सो म्हैता विजैसिंघ हसतै बैठी है सो जाब पाछो आयां तोल पड़सी पिण सुणी है कै बीकानेर रो उमराव म्हाजन रो ठाकुर री बेटी सुं रावळजी रौ सगपण हुवौ है सो डोळो आवसी सो ब्याव डोळा रो पैला करसी ।

४५. अधिक—अोर सुणी कै काळा फिसादी लोग घाटै सुं उतर गांव सारण सीरीयारी अर सांडोयो वगड़ी वीजवो नारलाई वगैरे गांवां में लूट खोस विगाड़ कीयो ।

अोर राव राजमल रा बेटा री जांन फलौधी ढंढां रै परणीजण रो चढो आदमी १००० आसरै । अौर जैसलमेर रा रावळजी रै डोळो परणोजण सारू म्हाजन रा ठाकुर अमरसिंघ री बेटी सुं ब्याव थपीयो सो जैसलमेर ईलाका रो गांव कोठा में म्हाजन रा ठाकुर रो सासरो है जठै वींनणी आपरै नांनांणै है जो ब्याव थपीयो । तिण रा समाचार वीकानेर रै राजाजी नुं पोहता तरै वीकानेर राजाजी वडै साहब नुं खलीतो लिखीयो कै जैसलमेर वाळा म्हाजन आय नै किऊनी (क्यूं नी) परणीजै है सो या रसम हमारे नहीं है सो ईसका बंदोबसत होणा चाहिये, नहीं तो फिसाद खड़ा होसी । जद वडा साहब वीकानेर रा अर जैसलमेर रा उकीलां नुं आबूजी ऊपर कह्यौ कै ईसका न्याव महाराजा तखतसिंघजी करै जिस मुजब तम दोनूं मंजूर कर लेणा ।

फागण वद ३ रवि । अौर जेसलमेर डाक केसरकंवर बाईजी रो सगपण करण वासतै घोड़ां री डाक समाचार भुगतावण बाबत बैठी है तिण में समाचार जैसलमेर वाळां रा आया कं फागण वद ४ तांई जोधपुर सुं भला आदमी आवै जैसलमेर तो उणां सुं वात कर पछै जोधपुर आवण नुं तईयार छां अर फागण वद ४ तांई नहीं आया तो पछै गांव कोठा में म्हाजन रा ठाकुरां री बेटी सुं ब्याव कर लेसी, दूसरी वात आ लिखी कै फतैपोळ तोरण वंनीजसी .... ।

तीसरी वात आ लिखी कै जैसलमेर रा उमराव तथा मुसदी चाकरां नुं जैसलमेर में कुरब है उण मुजब हुवौ जोईजै, जोधपुर में........... ।

ईण ताछ कलम दस बारै फेर गेलाई री लिखी जिण ऊपर सागै कागद लै जैसलमेर वाळां नुं ऊंचा बुलाया सो व्यास गोरीदास ने परसोतम अै दोनूं जणा गढ उपर गया तथा मांहलेवाग राजमैलां गया । मुसाहब सारा भेळा हुवा रात रा कागद जैसलमेर रा आया तिकै मुसाहवां बाच सारो अैवाळ श्री हजूर मालम कीयो जद श्री हजूर साहब पूरा तकरार में आय फुरमायो कै छोटो राज है जिणी मुजब अोछा कांमैती है, अोर जिणी मुजब री अोळी लिखावट है ।

सो अे कागद लाया है तिणां नुं तो सीख देवो ने केहे देवो के आगा सुं फेर ईण सगपण री वात म्हांरी सिरकार में कीजो मती । अर जो कदास करसो तो अठै सुणवाई होसी नहीं । ने आपणी डाक घोड़ां री बैठी है सो उठाय लेवो जद गोरीदास परसोतमदास नुं मुसाहबां श्री हजूर रा फुरमावणा मुजब केह दीया जद इणां मुसाहवां नुं कयो कै अेकवार म्हांनु श्री हजूर में लेजावो तो म्हांरै अरज रूबरू करणी हैं सो करां जद मुसाहवां अरज करी जद आप फुरमायो कै ईणां नुं मांह लावण रो क्युं ही जरूर है नही जद मुसायवां ईणां नुं खुलास देखाय सीख दीवी, सो फीका पड़ आपरै ठीकांणै गया, डाकां उठाय लीवी । सो ईण ब्याव करण सुं रावळजी रो बाप ठाकर केसरीसिंघजी जैसलमेर में मुकत्यार तिणां जांणीयो कै सायत जो ओ ब्याव रावळजी रो जोधपुर हुय गयो तो म्हारी मालकी उठ जासी जिण सुं आंटा बेड़ीयां घाल ब्याव होण दीनो नहीं । खुद रावळजी जिणां रो तो मन जोधपुर परणीजण नुं परंत बटीयो की हुई नही । पछै व्यास धनरूप जैसलमेर रो ठा० केसरीसिंघजी नुं कह्यो कै इण सगपण करण री म्हैनत में ५ बरस हुवा है करतां नुं सो नीठ काम सही कीयो अर बखत परणीजण री आई है टीकै री बखत लीलड़ पाछो करो हो सो ठाकुरां घणा पिसतावसो पिण ठाकुर तो वात मांनी नही नै म्हाजन रा ठा० री बेटी गांव कोठा में जाय रावळजी नुं परणाय लाया । ब्याव २ कीया १ तो रावळजी रो छोटा भाई बैरीसालजी रो सो अै दोनूं भाई नै उवै दोनूं बैनां रा ब्याव हुवा । सो इण वात सुं बीकानेर रा राजाजी म्हाजन रा ठाकुर अमरसिंघजी सुं पूरा वैराजी हुवा कै थे डोळो जैसलमेर रा मुलक में ले जाय व्याव कीया ने म्हां कनै आगै आखर कीया था कै ब्याव करूंला नहीं जो करूं तो राज विकानेर रो गुनैगार, सो पछै बीकानेर रै म्हराजाजी माजन रै ठाकुर सुं वैराजी हुय म्हाजन रो ठिकांणो खालसे पटा समेत जबत कर माजन में हाकम बैसांण दीयौ । सो माजन रो ठाकर अमरसिंघ जैसलमेर जाय हकीकत केही जद खरच रो बंदोबसत कर दीयो सो घणा दिनां पछै पाछो बीकानेर वाळा रुपीया ठैराय ठिकांणै बैसांण दीयो ।

४६. अधिक– भा० सुद ९ सन । ओर खबर मंमोई बंदर सुं आई म्हाजनां री चीठीयां में कै सिरकार अंगरेज ईण तरै रो हुकम जारी कीयो है कै जो सेठ साहुकार वेपार विणज कर कमावतं है अर नफा लेता है जिसके पास सै सईकड़ै अेक लार रु० ४) चार रुपीयै—सहीकड़े लार सिरकार अंगरेजी में भर देवै, साहुकारां का रोज नांवा खाता की सुह सै हीसाब देख तीसरै का तिजै म्हीनै ले लेणा ।

अौर ईसी मुजव जो दुकान में गुमासता साल पावै है जिसके पास से भी चार रुपीया सईकड़ै के हेसाव लेणा जिण ऊपर वोपारीयां उजर कीयो जद सिरकार का बोहोत रुपीयै खरच उठा है जिस वासतै तमारै पास सै हम मांगकर लेते हैं सो तय जमा खातर सै हम को दो सो पांच वरस तक तो लेंगे पीछे नहीं लेंगे।

४७. अधिक—अौर कांणाणै वावत करणोत रतनसिंघ गादी बेठण रो दावो करते नु घणा वरस हुवा अंगरेजां री सिरकार में तथा राज में तिण नु कांणोणो श्री हजूर सहवां म्हैरबान होय ईनायत कीयो रु० २००००) वीस हजार ठैरीया जिणरी कीसतां ठैरी है। अर सिरकार री पेटी रो हीज खत हूवो है सो आई पैदास पेटी वाळा ले लेसी ने कीसत भर देसी अर ठाकुर रो रोजीनो वाजवी खरच जरूरत रो होसी जिण रो ईकरोजो वंद जासी सो रुपीया व्याज सुधा उतरणा है तो मुसकल परंत गांव रो ठाकुर वाजसी नै रोटी कपड़ो पैदास मांह सु लैसी, पिण हाल दुतरफो कांम ठीक हो गयो।

अोर अजंटी सूरसागर में मुनसी सारणपुर रो वासी नोकर थो सो उठा सु मोकुब होय गयौ तिणरी सुपारस अजंट साहव राज में कर नोकर रखाय दीयो।

प्र० आसोज सुद १५ जोसी हंसराज परवतसर सु अजमेर मुसायबां सांमल आय पोतां रा समाचार आज मालम हुवा है।

दु० आसोज वद २ श्री हजूर री असवारी कायलांणे री तरफ पधारीया सो उठासु तखतसागर कांनी पधारीया।

अोर खबर आई के बारोठीया ठाकर आऊवो मीमच री छावणी रो साहब तिलवट साहब री साथै नसीरावाद री छावणी आया साथै घोड़ा ४० आदमी ८० ऊंट १४ सु आया सो सुणीजै है के ईण री पंचायती कोरट नसीरावाद री छावणी होवण री तजबीज थी सो हमें कोरट अजमेर में हुसी।

बारोटीया ठाकुर री मदत में मीमच री छावणी रो तीलवट साहब ने बुरक साहब अै दोनु पूरा मदत में छै सो ईणां री मदत देखतां आऊवा रा ठाकर री सफाई कराय पाछौ ठीकांणै बेसांण देसी बारोठीया ठाकुर आऊवा री केणवट है कै जोधपुर रा अजंट मीसन साहब जो आऊवा री लड़ाई में मारा गया है जिणनु काळा लोग नसीरावाद री छावणी रा आऊवै मारग वेहेता आया था तिणां रा हाथ सु मुवा है म्है नहीं मारीयौ ईणरी तेहकीकात साहब

लोग भलां ही करावै जो म्हां माथै मोसन साहब मारीया साबत मुदौ हुय जाय तो सिरकार ग्रंगरेजी रो गुनैगार, जितरी सजा सिरकार हम कुं देवै जिए में उजर म्हरो नहीं ।

४८. **अधिक**—ग्रासोज वद १२ गुर ग्रौर खबर ग्रजमेर सुं ग्राई कै ग्राऊवै रै ठाकुर री पंचायत ग्रजमेर में ठैरी है तिरा री हाल जेज है कारण कै १ पंच वडा साहब रो सीकतर ईणां सांमल है तिको घोड़ै सुं पड़ गयो है सो हाल दूजी मयाद पर कोरट हुसी ।

ग्रौर ग्रठा सुं मुसायब गया तिणां मांहला बाकी रा तो ग्रजमेर में छै ने जोसी हंसराज ग्रर म्है तो विजैमल नसीराबाद री छावणी में छै । ग्रौर ग्रसवारी म्हामींदर रे विराजे है ।

४९. **अधिक**—ग्रौर नसीराबाद री छावणी ग्रजमेर सुं मुसाहवां रा समाचार ग्राया कै ठाकुर बारोठीया ग्राऊवा रा ईजार ग्रंगरेजी सिरकार रा पंचां कोरट कर लीया सो म्हांनु तो सांमल राखीया नहीं नै म्हांरे परपुट ईकतरफा लीया है ग्रर ईजारां री नकलां री रपोट सदर में ग्रंगरेजां मेली है सो पाछो जाब ग्रायां खुलासो होसी सो म्हे ग्रठै सारा जणा हाजर हां तिणां नुं कांई हुकम है जोधपुर उरा ग्रावां कै ग्रठैईज बैठा रहां रा समाचार श्री हजूर में मालम हुवा, तिण उपर हुकम श्री हजूर सुं फुरमायो कै जोसी हंसराज म्हेतो विजैमल ग्रर सैबाजखां ग्रै तीन जणां हाल उठै हीज रहो रपोट रो जाब सदर सुं ग्रावै जितरै, नै बाकी रा हरजीवण ग्रर मु० समरथमल ग्रठै भलां ही ग्रा जावो सो हुकम मुजब रैहसी ने ग्रासी ।

५०. **पाठभेद**—ग्रौर घिरत रो वाड़ो राज रो है श्रीवाणची दरवाजै जठा सुं सुं घ्रि० री ताकां २ बावरी जणा ४ उपरवाड़ै कर काढी जिणां लार परभात रा पग खोज ले गया सो सोजतीयै दरवाजै बारै घास री डुंगरी में ताकां लादी । ग्रर चोर बावरी लादा सो ३ तो नास गया नै १ जणो हातै सोजतीये दरवाजे ने मेड़तीयै दरवाजा विचला भाखर में छिप गयो तिण नुं घेर लीयो सो घड़ी सायत तो बावरी रूं भट कीवी न्याहत राज री बार वाळा मार माथो काट लाया, पाछली रात रा । कोटवाळी रो कांम सेरकरण रो भाई नारकरण करै छै ।

परिशिष्ट—2

नामानुक्रमणिकाएं

पुरुष व स्त्री नामानुक्रमणिका

के

षां

षीं

षु

षे

गं

ग

गा

गि

गी

गे

गो

गौ

घे

चं

च

चां

ची

चु

चै

धी

धु

नं

न

नां

ना

पं

प

म

मां

मा

मि

मी

मु

मू

रि

रु

रू

रो

ल

ला

लि

व

वा

वि

वे

सं

स

सां

सा

सिं

सि

सी

सु

सू

से

सै

सो

हं

ह

हा

हिं

हि

ही

हु

हे

ग्राम, नगर, देश नामानुक्रमणिकाएं

इं

इं

ई

उ

अै

ओ

ग

गां

गी

गु

गूं

गू

गो

घ

घां

घो

चं

चां

निं

नी

पं

प

पां

पा

बु

बूं

बे

बो

भं

भ

भां

भा

भीं

भी

भें

भो

मं

म

मां

मा

मी

मुं

मु

मूं

मे

मो

र

रा

रि

री

रू

रो

सां

सा

सि

सी

सुं

सु

सू

परिशिष्ट—3

ख्यात में उल्लिखित पॉलीटिकल एजेण्टों की सूची

एजेण्ट के नाम	ख्यात में मारवाड़ी रूप	समय अवधि
केप्टिन जॉन लडलो	लडलू साब	ई० सन् 1839 से 1844
केप्टिन आर० एस० फ्रेंच	फिरंच साहव	सन् 1844 से 1845
केप्टिन एच० एच० ग्रीथेड		सन् 1845 से 1848
डी० ए० मालकम	मालकम साहब	सन् 1848
केप्टिन हाड कास्टल	हेड कासल साहव	सन् 1851
ले० कर्नल सर आर० शेक्सपीयर	सगसपीर साहव	सन् 1851 से 1857
केप्टिन जी० एच० मॉक मेसन	मेसन साब	सन् 1857 (अस्थायी)
(1857 में आउवा में मारा गया)		सन् 1857 से 1858
मेजर आर० मारीसन	मेरीसन साहव	सन् 1858 (अस्थायी)
ले० कर्नल डब्लू एन्डरसन		सन् 1858 से 1859
केप्टिन जे० सी० ब्रुक	बुरक साहव	सन् 1859 से 1865
मेजर ई० सी० ईम्पी	अेमी साहव	सन् 1865 से 1868
ले० कर्नल जे० सी० ब्रुक	बुरक साहव	सन् 1868 से 1870
मेजर ई० सी० ईम्पी	अेमी साहव	सन् 1870 से 1872-73